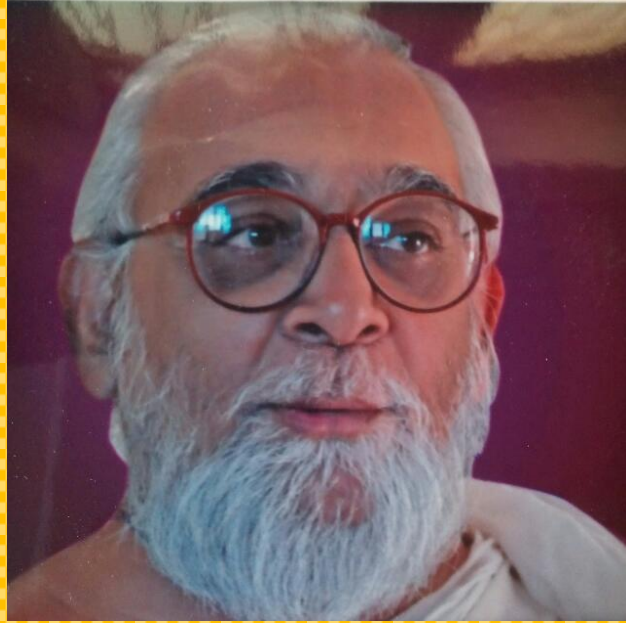


नमो नमो निम्मलदंसणस्स  
पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागरगूरूभ्यो

३

# आगम-सागर-कोषः

[मूल शब्दसंकलनकर्ता:- पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज]



(प्राकृत-संस्कृत-शब्द एवं तेषाम् ससंदर्भ-व्याख्या सह)

कोष-रचयिता

## मुनिश्रीदीपरत्नसागरजी महाराज

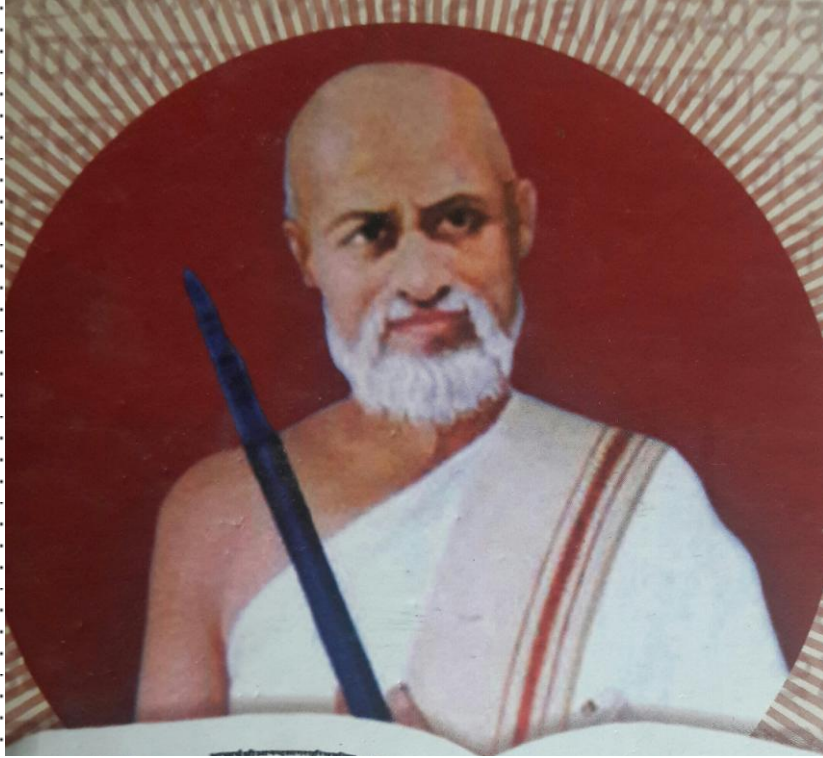
[M.com. \_ M.Ed. \_ Ph.D. \_ श्रुतमहर्षि]

नमो नमो निम्मलदसणस्स  
पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागरगुरुभ्यो नमः

# आगम-सागर-कोषः - ३

[मूल शब्दसंकलनकर्ता:- पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी

..पूज्यपाद् आचार्य श्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज..



(प्राकृत-संस्कृत-शब्द एवं तेषाम् ससंदर्भ-व्याख्या सह)

कोष-रचयिता

## मुनिश्री दीपरत्नसागरजी महाराज

[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

12/11/2018 सोमवार, २०७९ कार्तिक सुद ५

**Type Setting: - आशुतोष प्रिन्टर्स, जेतपुर Mobile: 9925146223**

**It's a Net publication of 'jainelibrary.org' [North America]**

### “आगम-सागर-कोषः” विषयक किञ्चित् स्पष्टीकरण

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेबने अपने युगमे आगमो के बहोत से शब्दो एवं उन की व्याख्याओ का चयन किया था, किन्तु ईसे शब्दकोष के रुपमे संकलन और मुद्रण पूज्य आचार्यश्री कंचनसागरसूरिजी आदिने करवाया | ईस कोष का नाम ‘अल्प-परिचित-सैद्धान्तिक-शब्दकोषः’ रक्खा. परन्तु इसमे शब्दार्थ भी है, बहोत स्थान पर शब्दो की आगमिक व्याख्याए भी है और शब्दो के बीच अनेक स्थान पर खास नाम भी है |

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य सूर्योदयसागरसूरिजी कि सूचना एवं उनसे हुए विचार-विमर्श अनुसार हमने ईस ‘कोष’ के अध्ययनमे देखा की —कई जगह पर सिर्फ शब्द है, कई जगह शब्द और संदर्भ है मगर अर्थ नहि है, कई जगह पर संदर्भ के नाम है मगर पृष्ठांक नहि है तो कहीं कहीं शब्दो के अ-कारादि क्रममे गलति दिखी है | ऐसी अनेक मर्यादाओ का उल्लेख स्वयम् आचार्यश्री कंचनसागरसूरिजीने ‘अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष’ भाग -१ मे किया है |

हमने ईस कोष की रचना करते वक्त सिर्फ पूज्यपाद आनन्दसागर सूरीश्वरजी महाराज द्वारा संचित शब्दो एवं व्याख्याओ को ध्यानमे ले कर ईस ‘कोष’ की रचना की है | रचना करते वक्त विशेषावश्यकभाष्य, उपदेशमाला, तत्त्वार्थसूत्र और पउमचरियं के शब्द निकाल कर सिर्फ आगमो के शब्दो को हि स्थान दिया है | अनेक स्थानो पर प्रत्यय या विभक्ति को हटा कर ‘शब्दकोष’ के नियमानुसार मूल शब्द रख दिये है, परिणाम स्वरुप जहा जहा समान शब्द प्राप्त हुए, उन शब्दो को एकसाथ रख कर उन के संदर्भ वहि नीचे जोड दिये है, कहीं कहीं एक हि शब्द की व्याख्या से पता चलता है की ये शब्द भले एक है मगर ‘अर्थ’ कि द्रष्टि से वे शब्द भिन्न भिन्न है, तो उन शब्दो को अलग अलग भी कर दिया है | जहा प्राकृत और संस्कृत दोनो शब्द है, वहा प्राकृत शब्द को पीछे से आगे ले कर बोल्ड टाईपमे रक्खे है | ऐसे अनेक परिवर्तन कर के कोष का उपोगिता मूल्य बढ़ाकर हमने ईस कोष की रचना की है |

हमने ईस ‘कोष’ का नाम “आगम-सागर-कोषः” पसंद किया है | यहा सिर्फ आगमिक शब्दो को हि स्थान दिया है इसिलिए ‘आगम’ शब्द पसंद किया, सागरजी महाराज द्वारा शब्द संचित हुए इसिलिए ‘सागर’ शब्द लिया, ईस कोषमे शब्द, खासनाम और व्याख्याए तिनो का समावेश हुआ है इसिलिए शब्दकोष नाम कि जगह सिर्फ कोष [Dictionary] शब्द रक्खा है |

ईस ‘कोष’ को हमने पांच भागोमे प्रगट किया है, करीब 1200 पृष्ठोमें रहे हुए ईस ग्रन्थमे 41,000से ज्यादा शब्दो [+नामो+धातु]का समावेश हुआ है | अनेक शब्दो की व्याख्याए भी है और इन शब्दो या व्याख्याओ के आगमसंदर्भ भी दिये है | इस के साथ हम एक मर्यादा का भी स्वीकार कर लेते है- इस कोष के मूल संपादनमे बहोत से शब्द और अनेक व्याख्याए समाविष्ट नहीं हुइ है, इसिलिए यहा पर भी अनेक शब्द और व्याख्याए छूट गए है | शब्दो और खास-नामो के लिए आप हमारा [१] आगम सद्दकोसो भाग १ से ४ और [२] आगम नाम एवं कहाकोसो देख सकते है, और व्याख्याओ के लिए हम भविष्यमें ‘जैन आगम कोषः’ बनाने का आयोजन कर रहे है | परमात्मा की कृपा हुइ तो मेरे पांच-सो नब्बे [590] प्रकाशनो की तरह ‘जैन-आगम-कोषः’ भी अवश्य आप के कर-कमलोमें समर्पित हो जायेगा |

...मुनि दीपरत्नसागर.....

### ← संक्षेप-सूचि →

| क्रम | आगम का नाम                  | संक्षेप  | क्रम | आगम का नाम                | संक्षेप  |
|------|-----------------------------|----------|------|---------------------------|----------|
| ०१   | आचाराङ्ग                    | आचा०     | २४   | चतुःशरणप्रकीर्णक          | चतु०     |
| ०२   | सूत्रकृताङ्ग                | सूत्र०   | २५   | आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक | आतु०     |
| ०३   | स्थानाङ्ग                   | स्था०    | २६   | महाप्रत्याख्यानप्रकीर्णक  | महाप०    |
| ०४   | समवायाङ्ग                   | सम०      | २७   | भक्तपरिज्ञाप्रकीर्णक      | भक्त०    |
| ०५   | भगवती(अङ्ग)                 | भग०      | २८   | तन्दुलवैचारिकप्रकीर्णक    | तन्दु०   |
| ०६   | ज्ञाताधर्मकथाङ्ग            | ज्ञाता०  | २९   | संस्तारकप्रकीर्णक         | संस्ता०  |
| ०७   | उपासकदशाङ्ग                 | उपा०     | ३०   | गच्छाचारप्रकीर्णक         | गच्छा०   |
| ०८   | अन्तकृद्दशाङ्ग              | अन्त०    | ३१   | गणिविद्याप्रकीर्णक        | गणि०     |
| ०९   | अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग        | अनुत्त०  | ३२   | देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णक    | देवे०    |
| १०   | प्रश्नव्याकरणाङ्ग           | प्रश्न०  | ३३   | मरणसमाधिप्रकीर्णक         | मरण०     |
| ११   | विपाकश्रुताङ्ग              | विपा०    | ३४   | निशीथछेदसूत्र             | निशी०    |
| १२   | औपपातिकोपाङ्ग               | औप०      | ३५   | बृहत्कल्पछेदसूत्र         | बृह०     |
| १३   | राजप्रश्नीयोपाङ्ग           | राज०     | ३६   | व्यवहारछेदसूत्र           | व्यव०    |
| १४   | जीवाजीवाभिगमोपाङ्ग          | जीवा०    | ३७   | दशाश्रुतस्कन्धछेदसूत्र    | दशाश्रु० |
| १५   | प्रज्ञापनोपाङ्ग             | प्रज्ञा० | ३८   | जीतकल्पछेदसूत्र           | जीत०     |
| १६   | सूर्यप्रज्ञप्त्युपाङ्ग      | सूर्य०   | ३९   | महानिशीथछेदसूत्र          | महानि०   |
| १७   | चन्द्रप्रज्ञप्त्युपाङ्ग     | चन्द्र०  | ४०   | आवश्यकमूलसूत्र            | आव०      |
| १८   | जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्युपाङ्ग | जम्बू०   | ४१   | ओघनिर्युक्तिमूलसूत्र      | ओघ०      |
| १९   | निरयावलिकोपाङ्ग             | निर०     | ४१   | पिण्डनिर्युक्तिमूलसूत्र   | पिण्ड०   |
| २०   | कल्पवतन्त्रिकोपाङ्ग         | कल्प०    | ४२   | दशवैकालिकमूलसूत्र         | दशवै०    |
| २१   | पुष्पिकोपाङ्ग               | पुष्पि०  | ४३   | उत्तराध्ययनमूलसूत्र       | उत्त०    |
| २२   | पुष्पचूलिकोपाङ्ग            | पुष्प०   | ४४   | नन्दीचूलिकासूत्र          | नन्दी०   |
| २३   | वृष्णिदशोपाङ्ग              | वृष्णि०  | ४५   | अनुयोगद्वारचूलिकासूत्र    | अनुओ०    |
| ---  | देशीय शब्द                  | दे०      | ---  | चूर्णि                    | चू०      |

**सूचना-** [१] उपरोक्त ४५ आगमों के जो शब्द या व्याख्या संदर्भ इस कोष में शामिल किये हैं, उसमें ६ छेदसूत्रों और चन्द्रप्रज्ञप्ति के अलावा बाकी सभी आगमों श्री सागरानन्दसुरिजी महाराज संपादित प्रतों से हैं, चन्द्रप्रज्ञप्ति के संदर्भ सूर्यप्रज्ञप्ति अनुसार हैं, सिर्फ ६ सूत्रों के संदर्भ हस्तपोथी से लिए हैं।

[२] यहां आगमों के जो संदर्भ दिये हैं, वे उन आगमों की प्रत या पोथी के पृष्ठ-अंक हैं।

[३] हमारा प्रकाशन “संवृत्तिक आगम सुत्ताणि” भाग १ से ४० में ये सभी आगम मुद्रित हैं।

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

बाल ब्रह्मचारीश्री नेमिनाथाय नमः

पूज्य-आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

टकारः

टंक- उपकरणविशेषः। प्रज्ञा० २७। टङ्कं-नतिदोषे

दृष्टान्तः। आव० ५२६। छिन्नटङ्कम्। अनुयो० १७३।

छिन्नतटं टङ्कम्। नन्दी० २२८। टङ्कः-छिन्नटङ्कः।

आव० ९९। भग० २३८। एकदिशि छिन्नः। ज्ञाता० ६७।

टंकण- अनार्यविशेषः। भग० १७०। टङ्कणः

मिलेच्छविशेषः। सूत्र० ९३।

टंकणओ- टङ्कणकः-म्लेच्छजातिविशेषः,

आचार्यशिष्य-योर्दृष्टान्ते नामविशेषः। आव० ९६।

टंकणा- टङ्कणा-उत्तरापथे टङ्कणानामानो म्लेच्छाः।

आव० ९९।

टकारठकारडकारढकारणकारप्रविभक्तिनामा- सप्तदशो

नाट्यविधिः। जीवा० २४७।

टक्करा- खड्डुका। उचत्त० ६२।

टगकं- अवचूलम्। औप० ६३।

टप्पर- अनालीनः। प्रश्न० ८२। जीवा० २७३। जम्बू० ११३।

टाल- टालं-अबद्धास्थि, कोमलफलादि। दशवै० २१९।

टाला- टालानि-अनवबद्धास्थीनि, कोमलास्थीनि। आचा० २९१।

टिंटियावेति- आस्फालयति। आव० १२३।

टिट्टिआविंति- परस्परं ताडनेन टिट्टीतिशब्दोत्पादनपूर्वकं  
वादयन्ति। जम्बू० ३९२।

टिट्टियावेति- शब्दायमानं करोति। ज्ञाता० ९६।

टेंकणा- चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२।

टेम्बरूपं- फलविशेषः। आचा० ३४९।

टोप्परिया- टोप्परिका- । आव० ४१२।

टोलगइ- टोलगति-टोलगतयः-उष्ट्रादिसमप्रचाराः। भग०

३८। येन तिड्डवदुत्प्लुत्यप्लुत्यलु विसंस्थुलं वन्दते

तत्। कृति कर्मणि पञ्चमो दोषः। आव० ५४३, ५१२।

टोलगति- टोलाकृतयः-अप्रशस्ताकाराः। जम्बू० १७०।

टोलागइ- टोलाकृतिः-अप्रशस्ताकारः। भग० ३०८। टोल-

गतयः-उष्ट्रादिसमप्रचाराः। जम्बू० १७०।

ड्डाइ- तिष्ठति। आव० ५७८।

ड्डाण- स्थानं-अवस्थारूपकालः। व्यव० ४४९ अ।

- X - X - X - X -

ठ

ठप्पाइं- स्थाप्यानि-असंव्यवहार्याणि। अमुखराणि

स्वस्व-रूपप्रतिपादनेऽप्यसमर्थानि।

गुर्वनधीनत्वेनोद्देशाद्यविषयभूतानि। अनुयो० ३।

ठवण- पात्रकं च निक्षिप्यते-एकदेशे स्थाप्यते। ओघ० ११८।

ठवणकुला- सेज्झातरमामगाइ कुला ठवणकुला। निशी०

२०७ अ। स्थापनाकुलानि, लोके गर्हितानि कुलानि।

व्यव० १६० अ। स्थापनाकुलानि। ओघ० ६५।

ठवणकुलापुच्छणया- स्थापनाकुलानि पृच्छति

भिक्षार्थम्। ओघ० ५६।

ठवणसच्चा- स्थापनासत्या-

पर्याप्तिकसत्याभाषायास्तृतीयो भेदः। प्रज्ञा० २५६।

ठवणा- पज्जुसणा, वासावासो, पढमं समोसरणं,

जेट्ठोग्गहो। निशी० ३३६ अ। अणागाढजोगणिकखेवो।

निशी० १९८ अ। स्थाप्यत इति स्थापना।

सत्याभाषायास्तृतीयो भेदः। स्था० ४८९।

प्रज्ञापनामात्रम्। निशी० २८३ अ। व्यवस्था। बृह० १४७

अ। स्थापना-वस्तुसं-स्थानरूपा। जम्बू० ११।

स्थापनाउदाहरणस्य तृतीयो भेदः। दशवै० ३५।

स्थापना-लक्षणं-लकारादिवर्णानामा-कारविशेषः। आव०

२८१। सद्भावासद्भावरूपा प्रतिकृतिः स्थापना। आचा०

९१।

ठवणाकप्पो- स्थापनाकल्पः। बृह० २६० अ।

ठवणाकम्मे- स्थापनं-प्रतिष्ठापन स्थापना तस्याः

कर्म-करणं स्थापनाकर्म येन ज्ञातेन परमतं

दूषयित्वा स्वम-तस्थापना क्रियते तत् स्थापनाकर्म।

स्था० २५३।

ठवणापाहुडिया- या भिक्षाचरेभ्यः स्थापिता भिक्षा स्था-

पनाप्राभृतिका। आव० ५७५।

ठवणादिणं- पर्युषणादिवसः। बृह० २७७ अ।

ठवणिज्जा- परुवणिज्जा। निशी० १३२ अ।

ठवणिज्जाइं- स्थापनीयानि। अनधिकृतानि। अनुयो० ३।

ठवयंति- पर्युवासयंति। निशी० ३२२ अ।

ठविंतगदोसो- स्थापनादोषः। आव० ८३८।

ठविअगदोसा- स्थापनाकृताश्चैवं दोषा भवन्ति। ओघ०

१४८।

ठविएल्लग- स्थितः। आव० ६९८।

ठवितं- न्यस्तम्। उत्त० ३४८।

ठवियं- स्थापितम्। भग० २३१। स्थापितं-प्रयोजने  
याचितं गृहस्थेन च तदर्थं स्थापितं यत्। प्रश्न० १५४।

ठविय- यत्प्रायश्चित्तमापन्नस्तत्तस्य स्थापितं कृतं, न  
वाह-यितुमारब्ध इत्यर्थः। स्था० ३२५।

ठवियगो- विस्मृतः। आव० ४१६।

ठविया- आवण्णो। निशी० १३९ आ। मासादीय छद्मं, जं  
पुण भासादी आवण्णं णिक्खित्तंति वेयावच्चड्डया  
ठवियं कज्जति सा। निशी० १३९ अ।

ठवेति- गृण्हाति। निशी० ३३७ अ।

ठाइउं- स्थातुम्। आव० ७७८।

ठाओ- अवकाशः। बृह० २९३ अ। निशी० ५१।

ठागं- अवकाशम्। बृह० ६१ अ।

ठाणं- स्थानम्। सम० ३९। स्थापनं एषणा दोष इत्यर्थः।

निशी० २०२ अ। कायोत्सर्गः। बृह० ११२ अ।

कायोत्सर्गः। ओघ० ५८। तिष्ठत्यनेनेति स्थानं

कारणम्। प्रज्ञा० २९०। स्थानं-ऊर्ध्वस्थानं,

निषीदनस्थानं, त्वगवर्तनस्थानं च। प्रश्न० १०७।

तिष्ठन्त्येऽतेषु सत्सु शाश्वते स्थाने प्राणिन इति

स्थानानि महाव्रतानि। आव० २६४। स्थानं-ऊर्ध्वस्थानं

कायोत्सर्गः। आव० २६६। स्थीयते-ऽस्मिन्निति स्थानं

दुर्गतिगमनादिकम्। पक्षमभ्युपगतमित्यर्थः। सूत्र० १५२।

तिष्ठन्ति-विशेषा अस्मिन्निति स्थानं सामान्यम्। प्रज्ञा०

५०२। कायोत्सर्गः। औप० ४०। तिष्ठत्यस्मिन्निति

स्थानं क्षीणकर्मणो जीवस्य स्वरूपं लोकाग्रं वा। औप०

१५। का-योत्सर्गस्थानं निषीदनस्थानं वा। ज्ञाता० २०६।

पदार्थः, सङ्ख्यास्थानं वा। प्रज्ञा० १४७। तिष्ठतिविशेषा

अस्मिन्निति स्थानं सामान्यमेकवर्णं द्विवर्णं

त्रिवर्णमित्यादि रूपम्। जीवा० १९। उस्सग्गो। निशी०

५६ आ। दारं। निशी० ६७ अ। तिष्ठति-

अनवस्थाननिबन्धनकर्माभावेन सदा-ऽवस्थितो भवति

यत्र तत् स्थानं-क्षीणकर्मणो जीवस्य स्वरूपं लोकाग्रं

वा। भग० ७। स्थानं-प्रदेशवृद्ध्याविभागः। भग० ७१।

पादन्यासविशेषलक्षणम्। भग० ३२३। अवगाहः। पिण्ड०

२२। ऊर्ध्वस्थानम्। आव० ५२९। अवकाश-लक्षणम्।

आव० ५९२। आश्रयः। आव० ६४५। निमित्तं, भेदः,

पर्यायः। आव० ६६१। कायोत्सर्गः। आव० ७३४।

ऊर्ध्वस्थानम्। आव० ७८०। व्यवहारतः सिद्धक्षेत्रं,

निश्च-यतो यथाऽवस्थितं स्वं स्वरूपम्। जीवा० २५६।

स्थानं-आलयः। दशवै० ७६। स्थानं-एकत्रैव स्थितिः।

दशवै० १५५। तिष्ठन्त्यस्मिन्निति स्थानं-सामान्यं

यथैकवर्णं द्विवर्णमित्यादि। भग० २०। आसनम्। भग०

१२५। भेदः। भग० २३६। उत्कटादि। पिण्ड० १२९।

स्थानम्। आचा० ४२४। कार-णम्। स्था० १८७।

कायोत्सर्ग उपवेशनं वा। स्था० ३१४।

ठाणइल्ला- गोमिया। निशी० ११ आ।

ठाणगुणे- स्थानं वा स्थितिर्गुणः-कार्यं यस्य स

स्थानगुणः, स हि स्थिति परिणतानां

जीवादिनामपेक्षाकारणतया स्थानं-कार्यं करोति, स्थाने

वा स्थितौ गुणः-उपकारो यस्मात् स तथा। स्था० ३३४।

ठाणपदे- स्थानपदं-प्रज्ञापनायां द्वितीयपदम्। भग०

१४२, ९६१, ६४।

ठाणपयं- स्थानपदं-प्रज्ञापनायां द्वितीयं पदम्। जीवा०

१६३।

ठाणा- स्थानानि-स्वस्थानादीनि। प्रज्ञा० ७२।

ठाणाइं- स्थानानि-प्रज्ञापनायां द्वितीयं पदम्। प्रज्ञा० ६।

ठाणाइए- स्थानं कायोत्सर्गादिकमतिशयेन ददाति

गच्छतीति वा स्थानातिदः, स्थानातिगः। भग० ९२४।

ठाणाइया- ऊर्ध्वस्थानं निषीदस्थानं त्वगवर्तनस्थानं

तद-भिग्रहविशेषणाददति विदधति। प्रश्न० १७२।

ठाणातिते- स्थानायतिकः स्थानातिगः, स्थानातिदो वा

कायोत्सर्गकारी। स्था० ३९७।

ठाणुकुडुए- स्थानं-आसनमुत्कुटुकं-आधारे

पुतालगरूपं यस्यासौ स्थानोत्कुटुकः। भग० १२५।

ठाणुप्पाइयमहो- अपूर्वः कोप्युत्सवः। ज्ञाता० ७३। बृह०

२८१ आ।

ठामि- तिष्ठामि-करोमि। आव० ७७९।

ठायंतओ- तिष्ठन्। आव० ६३१।

ठायंति- स्वपन्ति। ओघ० ९२।

ठावका- स्थापकाः-गृहस्थधर्मे दारादिसङ्ग्रहणात्।

ज्ञाता० २४२।

ठावणं- अपुनर्ग्रहणं तथा स्थापनं, न्यासः, परित्यागः।

जम्बू० १४८।

ठसि- स्थितवान्। आव० २२८।  
 ठहि- स्थितिः स्थानम्। आव० ७०८।  
 ठिअप्पाण- स्थितात्मा-महासत्त्व। दशवै० २०३।  
 ठिइ- स्थितिशब्देन देवभवो जीवितं च। जम्बू० १५४।  
 स्थितिः क्वचिद्विवक्षित भवे जीवेनायुः कर्मणा वा यत्  
 स्था-तव्यं सा। भग० २८। स्थितिः-  
 आहारयोग्यस्कन्धपरिणामे-नावस्थानम्। भग० २०।  
 ठिइचरमे- स्थितिचरमः। प्रज्ञा० २४५।  
 ठिइपदं- प्रज्ञापनायां चतुर्थं पदम्। भग० ५३५।  
 ठिएपागो- स्थितिपाको नामानुभागः। प्रज्ञा० ३३०।  
 ठिइबंधज्झवसाण- स्थितिबन्धस्य कारणभूताध्यवसाय-  
 स्थानम्। अनुयो० २४०।  
 ठिइवडिया- स्थितौ-कुलमर्यादायां पतिता-अन्तर्भूता या  
 प्रक्रिया पुत्रजन्मोत्सवसम्बन्धिनी सा स्थितिपतिता।  
 ज्ञाता० ४१। स्थितिपतिता-कुलक्रमागता  
 वर्द्धमानकादिका पुत्रज-न्मक्रिया। विपा० ५१।  
 ठिइवडियावाए- स्थितू-कुलस्य लोकस्य वा मर्यादायां  
 पति-तागता या पुत्रजन्ममहप्रक्रिया सा स्थितिपतिता।  
 भग० ५४४।  
 ठिई- स्थितिः-अभावः। जीवा० ३४६। जम्बू० ४६२। सूर्य०  
 २८१। स्थितिः-वेदनाकालः। प्रज्ञा० ६०२। मर्यादा। भग०  
 ५४५। स्थितिः-प्रज्ञापनायाश्चतुर्थं पदम्। प्रज्ञा० ६।  
 स्थीयते-अवस्थीयते अनया आयुः  
 कर्मानुभूत्येतिस्थितिः, आयुः कर्मानुभूति  
 जीवनमिति। प्रज्ञा० १६९। आहारयोग्य-  
 स्कन्धपरिणामत्वेनावस्थानम्। प्रज्ञा० ५०१।  
 ठिओ- स्थितः-कायोत्सर्गेणेषन्नतादिता। आव० ५९४।  
 ठिक्करिय- ठिक्करिका-कपालम्। आव० ३९६।  
 ठिच्चा- स्थाता-आसीनो भवति। सम० ५९।  
 ठितकप्पा- स्थितकल्पिकाः-प्रथमचरमजिनसाधवः।  
 बृह० २५४ आ।  
 ठिति- ठिति-नरकावस्थानरूपा नरकायुष्करूपा। भग०  
 ६४३।  
 ठितिपए- प्रज्ञापनायाश्चतुर्थपदम्। भग० २६, ८४२।  
 ठितिपकप्पं- स्थितौ-अवस्थाने बलिचञ्चाविषये  
 प्रकल्पः-संकल्पः स्थितिप्रकल्पः। भग० १६७।  
 ठिती- साद्यपर्यवसितमुक्तिस्थितेर्हेतुत्वात्। स्थितिः,

अहिंसाया द्वाविंशतितमं नाम। प्रश्न० ९९।  
 ठितीओ- स्थितः। आव० ८३८।  
 ठितिणामं- यद्यस्मिन् भवे उदयमागतमवतिष्ठते तद्  
 गतिजा-तिशरीरपञ्चकादिव्यतिरिक्तं स्थितिनाम।  
 प्रज्ञा० २१७।  
 ठितीणामनिहत्ताउए- स्थितिर्यत्नेन भवेन स्थातव्यं  
 तत्प्रधानं नाम तेन सह निधत्तमायुः  
 स्थितिनामनिधत्तायुः। प्रज्ञा० २१७।  
 ठितीपए- स्थितिपदं-प्रज्ञापनायां चतुर्थं पदम्। जीवा०  
 ३८५।  
 ठितो- णिसण्णो, उब्भतो। निशी० ३५ आ।  
 ठिय- ऊर्ध्वस्थित उपविष्टो वा। बृह० ३२ आ।  
 ठियकप्प- स्थितकल्पः प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थकालः।  
 प्रज्ञा० ६४।  
 ठियनिसन्नो- स्थितनिषण्णः। उत्त० २१९।  
 ठियप्पा- स्थित आत्मा यस्याऽसौ स्थितात्मा। आव०  
 ७८२।  
 ठियलेसा- स्थितलेश्या - अवस्थिततेजोलेश्याकाः।  
 प्रज्ञा० ९९।  
 ठियलेस्सा- स्थिलेश्या-अवस्थिततेजोलेश्याकाः। जीवा०  
 १७५।  
 ठियल्लओ- स्थितः। उत्त० १६८।  
 - X - X - X - X  
 ड  
 डंको- डङ्कः-भक्षणदेशः। आव० ६०५।  
 डंगरा- लाकुटिधारकाः स्तेनाः। बृह० २७३ आ। निशी०  
 ३५८ आ।  
 डंड- डण्डः-दण्डिकः। आव० ६९०। बाहुप्पमाणो। निशी०  
 २१३ आ।  
 डंडगि- उत्तरापथे कुंभकारकडस्स णगरे रण्णो। निशी०  
 ४४ आ।  
 डंडपती- डंडउग्गमेति जो सो डंडपती। निशी० १५८।  
 डंडपरिहारो- महंता जण्णकंबली सरडिता डंडपरिहारो।  
 निशी० २२६ आ।  
 डंडाइए- दण्डायतिकः-दण्डस्येवायतं-संस्थानं यस्यास्ति  
 सः दण्डायतिकः। प्रश्न० १०७।  
 ठंठारक्खितो- रण्णो वयणेण इत्थिं पुरिसं वा अंतेपुरं  
 णीणंती, पवेसेति वा एस डंडारक्खितो। निशी० २७१ आ।

डंडिए- राजा। निशी० १५१ आ।

डंडिमं- दण्डेन-निग्रहेण निर्वृत्तं-राजदेयतया  
व्यवस्थापितं दण्डिमम्। विपा० ६३।

डंबइल्ला- देशविदेशः। आव० १४७।

डंभणा- यैरग्निप्रतापितैर्लोहशलाकादिभिः परशरीरेऽङ्क  
उत्पा-द्यते तानि दम्भकानि। विपा० ७१। दम्भः-  
मायाप्रयोगः। प्रश्न० १०९।

डक्को- दष्टः। उत्त० २१३। निशी० ५२ अ। आव० ५६६।

डगरं- बोलं। निशी० १३२ आ।

डगलं- अदीहं विसमं चक्कलियागारेण जं खंडं तं डगलं  
भण्णति। निशी० ३४४ अ। निशी० १२४ आ। निशी०  
३५७ आ।

डागलका- इष्टकाखण्डाः। ओघ० १२३। पुतनिर्लेपनाय  
लेष्टकाः। बृह० ६८ आ।  
अधिष्ठानप्रोञ्छानार्थमिष्टकाख-ण्डका लघुपाषाणकाः।  
ओघ० १२२। प्रोञ्छनलेष्टकाः। बृह० ३०६ अ।

डगलग- डगलकः-

पुरीषोत्सर्गानन्तरमपानप्रोञ्छनकपाषाणा-दिखण्डरूपः।  
पिण्ड० ९। डगलकः-अपानप्रोञ्छनार्थं लघु-पाषाणः।  
ओघ० १३०।

डगलगा- उवलमादि। निशी० ७३ अ।

डगला- पुतप्रोञ्छनोपयोगिनो लेष्टवः। बृह० २५३ अ।

डत्ति- ड इति। आव० ७८२।

डब्ब- वामः। बृह० १४८ अ।

डमर- स्वराष्ट्रक्षोभः। सूत्र० २७८। परराजकृत उपद्रवः।  
जीवा० २८३। कायवाङ्मनोभिस्ताडनादिगहनम्। आव०  
३९९। दुरितविशेषः। भग० ८। परकीयग्रामादिदाहकर-  
णरतिकं राज्यम्। बृह० ८१ आ। प्राणिघातादिभि-  
स्तद्वर्जकः। उत्त० ३५७। विड्वरस्थानम्। प्रश्न० ३९।  
राजकुमारादिकृतवैराज्यादि। विड्वरः। औप० १२।  
डमरः-स्वदेशोत्थो विप्लवः। व्यव० १७२ अ। डमरः-  
विड्वरः। प्रश्न० ४३। डमराणि-परराजकृतोपद्रवाः।  
जम्बू० ६६। राजकुमारादिकृतविड्वराः। ज्ञाता० ६।  
निरया० ४ डमरः- एकराज्य एव  
राजकुमारादिकृतोपद्रवः। भग० १९८। राज-  
कुमारादिकृतविकृतविड्वराः। राज० ११।

डमरकर- विड्वरकारिणः। भग० ४७९। परस्परेण कलह-

विधायकाः। ज्ञाता० ५८। डमरकरः-विड्वरकारी। औप०  
६९। कायवाङ्मनोभिस्ताडनादिगहनकरणशीलः। आव०  
४९९।

डमराङ्गं- डमरकानि-अशोभनानि। आव० ५५७।

डमराणि- कुमारादिव्युत्थानादीनि। स्था० ४६३।

डल्ला- गवां चरणार्थं यद्वंशदलमयं महद्भाजनं डल्लेति  
प्रसिद्धं तद् गोकलिञ्चमुच्यते। जम्बू० ५८।

डसू- पच्चंतिया आरुद्धा दंतेहिं दसंति तेण डसू। निशी०  
४३ अ।

डसेज्जा- दशेत्। आव० ४०५।

डहणं- दहनं-उल्मुकादिभिः। आव० ५८८।

डहणो- दहनः-आचारविषये हुताशनब्राह्मणलघुपुत्रो  
मायाब-हुलः। आव० ७०७।

डहर- लघुतरम्। बृह० १५८ आ। डहरकम्। ओघ० २१५।  
लघुः। सूत्र० ३५६। डहरः-अपरणितः बालः। दशवै० २४४।  
आषोडशवर्षीयः। व्यव० २४५। क्षुल्लकः। ओघ० ७७।  
लघवः। कुन्थवादयः सूक्ष्मा वा। सूत्र० २२३।

डहरए- डहरकं-लघु। ओघ० १६९।

डहरओ- डहरकः। ओघ० १५९। लघुः। आव० ३०२, ३७१,  
४१५।

डहरगं- यावत् परिपूर्णानि पञ्चदशवर्षाणि

षोडशाद्वर्षादर्वाक् वा तड्डहरकम्। व्यव० २४५ अ।

आसोलसगं तु डहरगं जन्मपर्यायेण। व्यव० ११२ आ।

डहरकः- बालकः। उत्त० ३९५। डहरकः। ओघ० १६३।  
व्यव० २४८ अ। क्षुल्लकः। आव० ८२३।

डहरतरतो- लघुतरः। निशी० ३५० आ।

डहरिआ- लघ्वी। आव० ६६६।

डाइणि- डाकिनी-शाकिनी। प्रश्न० ५२।

डाए- डायं-शाकम्। पिण्ड० ८४।

डाग- शाकम्। आचा० ३३९। डालप्रधानं शाकम्। आचा०  
४११।

डागो- पत्तसागो। निशी० १२८ आ, १९२ आ।

वस्तुलादिभर्जिका। प्रश्न० १६३। डाकः-वास्तुलकादिभ-  
र्जिका। भग० ३२६।

डामरिओ- डामरिकः-विग्रहकारी। प्रश्न० ३६।

डायं- पत्रशाकः। आव० ७२६।

डालं- वृक्षशाखा। दशवै० १५४।

डालंडालिओ- इओ इओ पडिहिंडइ डालंडालिओ। निशी० २८७ आ।  
 डालगं- आमश्रलक्षणखण्डानि। आचा० ४०५। शाखेकदेशः।  
 आचा० ३५४।  
 डाला- वृक्षशाखा। दशवै० २१८।  
 डिंगरा- पादमूलिया। निशी० १४४ अ।  
 डिंडिम- कंशकांस्यभाजनम्। आचा० ३५७। डिण्डिमः-  
 प्रथमप्रस्तावनासूचकः। पणवविशेषः। जम्बू० १०१।  
 जीवा० २६६। प्रथमप्रस्तावनास्तम्बकः पणवविशेषः।  
 राज० ५०। गर्भः। बृह० २५८ आ।  
 डिंडीर- फेनः प्रचुरधवलः। प्रश्न० ५०।  
 डिंडीरोत्कर- फेनपुञ्जः। जम्बू० ५५।  
 डिंब- स्वदेशोत्थो विप्लवः। जीवा० २८३। डिम्बानि-स्वदे-  
 शोत्थविप्लवाः। जम्बू० ६६। डिम्बः-परानीकश्रृगालिकः।  
 सूत्र० २७८। डिम्बः। औप० १२। ज्ञाता० ६। भग० १९८।  
 स्था० ४६३। राज० ११।  
 डिंभ- डिक्करुवं। निशी० १३ अ। अर्भकरूपाणि। ओघ०  
 ५१। अर्भकः। ओघ० ५१। डिम्भः-लघुबालः। आव० ७१७।  
 डिंभक्खोभ- डिंभक्षोभः-गन्त्रीक्षोभः। ओघ० १४२।  
 डिक्करिका- दारिका। आचा० ४१३।  
 डिक्करओ- पुत्रः। आव० ८९३।  
 डिक्करुवं- डिंभो। निशी० १३ अ। डिम्भरूपम्। उत्त०  
 ३०१।  
 डित्थं- अनर्थकं शब्दं निरर्थकमभिधीयते तत्। आव०  
 ३७५।  
 डुंग- डुङ्गः-शिलावृन्दं, चौरवृन्दं वा। भग० ३०७। जम्बू०  
 १६८।  
 डुंब- सुस्वराः। जम्बू० १६९। डुम्बो-मिष्ठः। पिण्ड० ११५।  
 डूसग- गुच्छाविशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
 डेपनं- लङ्घनम्। व्यव० २२३ अ।  
 डेरगं- लघु। आव० ४०४।  
 डेवण- उत्पलवनम्। गच्छ०। लङ्घनम्। ओघ० ३४।  
 देहल्या-देः उल्लंघनम्। ठमणा० ४०९।  
 डेविंती- गच्छन्ति-परिभुंजन्ति। बृह० ३९ आ।  
 डेवेमि- लङ्घयामि-अतिक्रमामि। आव० २६४।  
 डोंगर- डुङ्गराः-डुङ्गनां-शिलावृन्दानां चौरवृन्दानां  
 चास्ति-त्वात् डुङ्गराः-शिलोच्चयमात्ररूपाः। भग० ३०७।

बिलं। निशी० ७० अ। निशी० ४२ आ। डुङ्गराः-  
 शिलोच्चयमात्ररूपाः। जम्बू० १६८। डोङ्गरः-पर्वतः।  
 ओघ० २०।  
 डोंडिणि- ब्राह्मणी, नोआगमेऽप्रशस्ते दृष्टान्तः। आव०  
 ५५।  
 डोंब- डोम्बः-मातङ्गः। उत्त० १०२। मंठो। निशी० १०७  
 अ।  
 डोंबा- जातिभेदः। नि० ४३। येषां गृहाणि सन्ति गीतं च  
 गायन्ति ते। व्यव० २३१। डोम्बाः-लङ्खकाः-चाण्डाल-  
 विशेषगायकाः। व्यव० ४१९ आ।  
 डोंबिल- म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५।  
 डोए- दर्वी-वर्द्धकिः। कर्मजायां बुद्धौ चतुर्थो दृष्टान्तः।  
 नन्दी० १६५। डोयः-बृहदारुमस्तकः। महान्श्रचट्टुकः।  
 पिण्ड० ८४।  
 डोओ- डोवः-कुण्डिका। आव० ४२७।  
 डोगगरं- पव्वओ। निशी० २६३ आ।  
 डोडकिता- वल्लयः, फलाभिमुखवल्लयः। जम्बू० २०९।  
 डोडिणि- ब्राह्मणी अप्रशस्तभावोपक्रमे दृष्टान्तः।  
 अनुयो० ४९।  
 डोडिनी- अप्रशस्तभावोक्रमे दृष्टान्तः। स्था० १५५।  
 डोब- डोम्बः-चिलातदेशवासी म्लेच्छविशेषः। प्रश्न० १४।  
 डोबा- हस्तिमिठः। बृह० २५६ आ।  
 डोबिलग- डोबिलकः-चिलातदेशवासीम्लेच्छविशेषः।  
 प्रश्न० १४।  
 डोल- तिड्डकाः। बृह० २५६ आ।  
 चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२।  
 चतुरिन्द्रियजन्तुभेदः। उत्त० ६९६।  
 डोल्लति- कम्पते। निशी० ३४६ अ।  
 डोवलियं- दर्वी। आव० ८४४। इङ्गुदीतैलान्वितम्। आव०  
 ८५७।  
 डोहलो- दोहदः-स्त्रिया गर्भस्थितौ या इच्छा। आव० ५०४।  
 - x - x - x - x -  
 ढ  
 ढंक- काकः। भग० ३०९। ढङ्कः-लोमपक्षिविशेषः। जीवा०  
 ४१। ढङ्कः-प्रियदर्शनाप्रतिबोधकः कुम्भकारविशेषः।  
 उत्त० १५६। ढङ्कः-कुम्भकारविशेषो यः श्रमणोपासको  
 जातः। प्रियदर्शनाप्रतिबोधकः। आव० ३१३।  
 ढंकयित्वा- पिधाय। ओघ० १५०।

ढंका- ढङ्कारः-काकविशेषः। जम्बू० १७२। लोमपक्षि-  
विशेषः। प्रजा० ४९।  
ढंकादी- ढङ्कादिः। आव० ३४८।  
ढंकिउं- छादित्वा। आव० ६६१।  
ढंकुण- चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। प्रजा० ४२।  
ढढो- ढण्डः- ढण्डकुमारः, जन्मान्तरनाम्ना कृषिपारासरः  
वासुदेवसुतः, अलाभपरीषहे दृष्टान्तः। उत्त० ११८।  
ढक्का- भेरी। राज० २५।  
ढक्किंत- ढक्कयताम्। बृह० २५ आ।  
ढक्कितो- स्थागितद्वारः। व्यव० १३८ अ।  
ढक्कियं- स्थगितम्। दशवै० ९४।  
ढक्केति- स्थगयन्ति। बृह० १६७ अ।  
ढक्केउं- स्थगयित्वा। आव० ६५१।  
ढङ्ढरं- यत् महता शब्देनोच्चारयन् वन्दते, कृति  
कर्मणि एकत्रिंशत्तमो दोषः। आव० ५४४।  
ढङ्ढरं- महान्तं स्वरम्। ओघ० १३७।  
ढङ्ढरसरो- ढङ्ढरस्वरः-महास्वरेण भाषकः। बृह० ५४  
आ।  
ढङ्ढराभासा- ढङ्ढरभाषा-स्थूरस्वरभाषा। व्यव० ५४ आ।  
ढङ्ढरेण- उच्चैः। ओघ० १७७।  
ढिंक- ढिङ्कः पक्षिविशेषः। प्रश्न० ८।  
ढिंकणे- चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। उत्त० ६९६।  
ढिंकुणा- ढिंकुणा, मत्कुणाः। जम्बू० १२४।  
ढुक्कइ- ढौकत। आव० ३६९।  
ढुक्काहि- व्रज। आव० ३९६।  
ढुक्को- स्पृष्टः। आव० ३५१। आश्रितः। आव० ३९९।  
ढुक्कोमि- आगतोऽस्मि। आव० ८१२।  
ढेक्कियं- दृप्तम्। आव० ७१९।  
ढेणिकालः- तिङ्ङः। अनुत्त० ४।  
ढेणिया- ढेणिका-कङ्कढेणिका, पक्षिविशेषः। अनुत्त० ४।  
ढेणियालग- ढेणिकालकः-पक्षिविशेषः। प्रश्न० ८।  
ढौढसिवा- हेलना। आव० २१९।  
ढौक्कति- ढौकयति। बृह० ७८ अ।  
ढायं- गमनं-मिलितुम्। आव० ३८३।  
- X - X - X - X -  
ण

णं- एनम्। आव० १७५। पिण्ड० १२२। एत्तम्। उत्त० १८५।  
इमं भरतराजा इत्यर्थः। जम्बू० २३३। निश्चितम्। प्रजा०

३०३। निश्चिये। प्रजा० ३०३। तम्। बृह० १२३।  
णंगलई- साधारणबादरवनस्पतिकायः। प्रजा० ३४।  
णंगला- नङ्गला-ग्रामविशेषः। आव० २०५।  
णंगलिअ- लाङ्गुलिका-  
गलकावलम्बितसुवर्णादिमयहलधारिणो भट्टविशेषः।  
जम्बू० १४२।  
णंगोला- नाङ्गोलिक नामा अन्तरद्वीपः। प्रजा० ५०।  
णंगोलाभंगसिरोधरे- लाङ्गलाभङ्गवत्-  
सिंहादिपुच्छवक्रीकर-णमिव शिरोधरा ग्रीवा यस्य स।  
जाता० ९६।  
णंतं- (देशी०) वस्त्रशिल्पम्। आव० १३२।  
णंतंए- गच्छमपेक्ष्य सदौपग्रहिकं नन्तकं-  
मृताच्छादनसमर्थं वस्त्रम्। आव० ६२९।  
णंतगं- अणंतगं-कम्बलादिवस्त्रम्। ओघ० ३४। वस्त्रम्।  
बृह० ६८ अ।  
णंद- नन्दः-पाटलीपुत्रे राजा। उत्त० १०५। राजगृहे  
मणिकारश्रेष्ठी। जाता० १७८। नन्दः-कुसुमपुरराजा।  
दशवै० ५२। नन्दः-चन्द्रगुप्तनिष्काशितः। दशवै० ९१।  
नन्दः-गङ्गायां नाविकविशेषः। आव० ३८९। नन्दः-  
परिणामिकी-बुद्धिदृष्टान्ते वणिग्विशेषः। आव० ४३६।  
सम० २९। जाता० १७८, १५२।  
णंदग- नन्दकः-खड्गविशेषः। प्रश्न० ७७।  
णंदण- सप्तमो बलदेवः। आव० १५९। मायोदाहरणे  
कोशलपुरे श्रीमतीकान्तिमती पिता। आव० ३९४। जम्बू०  
३५९।  
णंदणवण- नन्दनवनं-विजयपुरनगर उद्यानम्। विपा०  
९५। रैवतके उद्यानम्। जाता० ९९।  
णंदनवणकूडे- नन्दनवनकूटं, नन्दनवनकूटनाम। जम्बू०  
३६७।  
णंदणवने- नन्दनवनं, नन्दयति-आनन्दयति  
देवादीनिति नन्दनम्।  
णंदा- नन्दति नन्दयतीति वा नन्दः-समृद्धः  
समृद्धिप्रापको वा। जाता० ५५। स्था० २३०, २३१। नन्दा-  
पूर्वदिगूचकवास्तव्या दिक्कुमारी। आव० १२२। नन्दा-  
सुगुप्ता-मात्यपत्नी मृगावतीवयस्या च। आव० २२२।  
नन्दा-अच-लभ्रातृमाता। आव० २५५। नन्दा-  
दक्षिणदिग्भाव्यञ्जनपर्व-तस्य दक्षिणस्यां पुष्करिणी।

जीवा० ३६४। नन्दा-उत्तर-पूर्वरतिकरपर्वतस्य  
दक्षिणस्यामीशानदेवेन्द्रस्य कृष्णराजस्य राजधानी।  
जीवा० ३६५। नन्दापौरस्त्यरुचकवास्तव्या द्वितीया  
दिक्कुमारी। जम्बू० ३९१।  
णंदावत्त- महाशुक्र कल्पे विमानम्। सम० २९। दृष्टिवादे  
सूत्रस्य द्वादशमभेदः। सम० १२८। निशी० ५५अ।  
नन्द्यावर्तः-गृहविशेषः। जम्बू० २०९। नन्द्यावर्तः-  
अष्टम-ङ्गलेषु अष्टमं मङ्गलम्। जम्बू० ४१९।  
णंदि- द्वादशतूर्यसङ्घातः। जम्बू० ५३। नन्दिः। राज०  
६८।  
णंदिआवत्त- नन्द्यावर्तः-प्रासादविशेषः। जम्बू० १०६।  
नन्द्यावर्तः जम्बू० ४०५।  
णंदिकर- नन्दिकरः-वृद्धिकरः ज्ञाता० १८।  
णंदिघोसा- नन्दिघोषा-स्तनितकुमाराणां घण्टा। जम्बू०  
४०७।  
णंदिकला- वृक्षविशेषः। ज्ञाता० १९४।  
णंदियगो- नन्दितकः। उत्त० २७२।  
णंदिरुक्खे- नन्दिवृक्षः-बहुबीजकवृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
णंदिवद्धणा- नन्दिवर्धना पूर्वदिगुचकवास्तव्या  
दिक्कुमारी। आव० १२२। नन्दिवर्धना-  
पौरस्त्यरुचकवास्तव्यां चतुर्थी दिक्कुमारी। जम्बू० ३९।  
नन्दिवर्धना-दक्षिण-दिग्भाव्य-ञ्जनपर्वतस्योत्तरस्यां  
पुष्करिणी। जीवा० ३६४।  
णंदिवद्धणे- नन्दिवर्धनः-श्रीदामराजस्य कुमारः। विपा०  
७०।  
णंदिस्सरा- नन्दिस्वरा-वायुकुमाराणां घण्टा। जम्बू०  
४०७।  
णंदी- नन्दी-भगवत्प्रियमित्रम्। आव० २२२। स्था० ३९३।  
णंदीतूरं- नन्दीतूर्य-मङ्गलतूर्यम्। उत्त० ३०२।  
णंदीफले- नन्दीफलं षष्ठाङ्गे पञ्चदशं जातम्। उत्त०  
६१४।  
णंदीसरो- नन्द्या-समृद्धयईश्वरः-स्फातिमान्  
नन्दीश्वरः। जीवा० ३६५।  
णंदीसरोदे- नन्दीश्वरोदः-नन्दीश्वरे द्वीपे समुद्रः।  
नन्दीश्वर-रयोरुदकं यत्रासौ, नन्दीश्वरवरं द्वीपं  
परिवेष्ट्य स्थित इति, नन्दीश्वरं प्रतिलग्नमुदकं यस्या  
सौ वा। जीवा० ३६५।

णंदुत्तरा- नन्दुत्तरा पूर्वदिगुचकवास्तव्या दिक्कुमारी।  
आव० १२२। नन्दोत्तरा-पौरस्त्य रुचकवास्तव्या प्रथमा  
दिक्कुमारी। जम्बू० २९१। स्था० २३०, २३१।  
णंदोत्तरा- नन्दोत्तरा-दक्षिणदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्य  
पूर्वस्यां दिशि पुष्करिणी। जीवा० २६४।  
उत्तरपूर्वरतिकरपर्वतस्य पूर्वस्यामीशानदेवेन्द्रस्य  
कृष्णाऽभिधाग्रमहिष्याः राजधानी। जीवा० ३६५।  
ण- वाक्यालङ्कारे। उत्त० १८१। णगारो देसिवयणेण  
पाद-पूरणे। निशी० २१अ।  
णउलओ- नकुलकः। दशवै० ३५।  
णउलगं- नकुलकम्। उत्त० २७६।  
णउलो- नकुलः। प्रश्न० ८।  
णओ- नयः। प्रज्ञा० २८४।  
णकरं- ण करा जत्थ तं णकरं। निशी० ७०आ।  
णक्का- मत्स्यविशेषः। प्रज्ञा० ४४।  
णक्खत्तं- नक्षत्राणि। सूर्य० १००। नक्षत्रं-राज्याभिषेको-  
पयोगि श्रुत्यादित्रयोदशनक्षत्राणामन्यतरत्। जम्बू०  
२७३।  
णक्खत्तविजये- विचयनं-विचयो नक्षत्रविचयः-  
नक्षत्राणां स्वरूपनिर्णयः। सूर्य० १७५।  
णक्खत्तसंवच्छरे- यावता कालेनाष्टाविंशत्यपि नक्षत्रैः  
सह क्रमेण योगपरिसमाप्तिस्तावान् कालविशेषो  
द्वादशभिर्गुणितो नक्षत्रसंवत्सरः। सूर्य० १५३। स्था०  
३४४।  
णक्खत्तसीमच्छेए- नक्षत्रसीमाच्छेदः। सूर्य० २४७।  
णक्खत्ता- नक्षत्राणि-अश्विन्यादिरेवत्यन्तानि,  
सोमस्याजोप-पातवचननिर्देशवर्तिन्यो देवताः। भग०  
१९५।  
णगधारा- पर्वतनितम्बः। निशी० ३४५आ।  
णगरं- करो जत्थ न विज्झति णगरं। निशी० २२९। अ।  
नगरम्। सूत्र० ३०९।  
णगरगुत्तिय- नगरगुप्तिकः। विपा० ५२।  
णगररक्खिओ- कोटवालो। निशी० १९५अ।  
णगरविण्ह- नगरविनष्टः। आव० ६६।  
णगराति- नैतेषु करोऽस्तीति नकराणि। स्था० ८६।  
णगा- पव्वता। निशी० १९आ।  
णगारमग्गे- अनगारमार्गः-उत्तराध्ययनेषु

पञ्चत्रिंशत्तममध्यय-नम्। उत्त० ९।  
**णग्गई-** न्यग्गतिः-क्षत्रीयपरिव्राजके तृतीयः। औप० ९१।  
**णग्गती-** नग्गतिः-द्रव्यव्युत्सर्गे गान्धारजनपदे  
 पुरिमपुरनगरेऽधिपतिः, यः पुष्पिताम्रं दृष्ट्वा सम्बुद्धः  
 सः। आव० ७२०।  
**णग्गोधपरिमंडलं-** न्यग्रोधपरिमण्डलं-न्यग्रोधवत्  
 परिमण्डलं यस्य यथा न्यग्रोध उपरिसम्पूर्णः  
 प्रमाणोऽधस्तुहीनस्तद्वत् यत्संस्थानं, नाभेरुपरि  
 संपूर्णमधस्तु न तथा, उपरिविस्तार-बहुलमिति भावः,  
 द्वितीयं संस्थानम्। जीवा० ४२।  
**णग्गोह-** न्यग्रोधः, वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३२। भग० ८०३।  
 सम० १५२।  
**णग्गोहमंडले-** न्यग्रोधमण्डलं-विस्तारबहुलं संस्थानम्।  
 आव० ३३७।  
**णच्चाविय-** नर्तयितव्यः। ओघ० १०८।  
**णज्जति-** जायते। आव० ३००।  
**णट्ट-** गीतेण विरहितं णट्टं। निशी० १। नटाः-नाटयि-  
 तारः। नृत्यन्ति स्म नृत्ताः-नृत्यविधायिनः। जम्बू०  
 १२३।  
**णट्टमालए-** नृत्तमालकः-खण्डप्रपाताधिपतिः। जम्बू०  
 ७४।  
**णट्टमालगे-** नाट्यमालकः, नृत्तमालकः। जम्बू० २५५।  
**णट्टमाला-** नृत्तमालाः। जम्बू० ९८।  
 एकोरुकद्वीपेवृक्षविशेषः। जीवा० १४५।  
**णट्टवाइत्तं-** नर्तकीत्वम्। बृह० २४७ आ।  
**णट्टविही-** नाट्यविधिः-सामान्यतो नर्तनविधिः। जीवा०  
 २४७। नृत्यविधिः-नाट्यकरणप्रकारः। जम्बू० २५५।  
**णट्टेहिं-** द्वात्रिंशत्पात्रोपलक्षितैर्नाट्यैः। उत्त० ३८६।  
**णट्टमतीते-** चक्षुर्ज्ञानस्य विषयानिश्चायकत्वात्। ज्ञाता०  
 २३०।  
**णट्टसण्णे-** नष्टसंज्ञो मनसो भ्रान्तत्वात्। ज्ञाता० २३०।  
**णट्टसुतीते-** नष्टश्रुतिको-निर्यामकशास्त्रेण  
 दिगादिविवेचनस्य करणे अशक्तत्वात्। ज्ञाता० २३०।  
**णड्वेलंबं-** बालरोदनदि। निशी० १०६ आ।  
**णडा-** णाडगाणि णट्टे वा। निशी० ४३ आ। निशी० २८४  
 आ।  
**पडेइ-** णडेइ-बाधते। आव० २१८।

**णत्तंभागा-** नक्तंभागानि-चन्द्रस्य समयोगीनि। स्था०  
 ३६८।  
**णत्ता-** नप्ता-पुत्रपुत्रः। जम्बू० १४९।  
**णत्तिण्णो-** गिलाणो। निशी० ८२ आ।  
**णत्ती-** जप्तिः, आदेशः। बृह० १९२ आ।  
**णत्तुणिअत्ति-** नप्तः। दशवै० २१५।  
**णत्थं-** न्यस्तं-साध्वर्थमुपकल्पितं, अर्द्धदत्तं वा। सूत्र०  
 १०९।  
**णदिणिसेज्जा-** नदीतीरे नैषेधिकी। मरण०।  
**णदीमहो-** नदीमहः-नदीसत्क उत्सवः। जीवा० २८१।  
**णपुंसगवेदो-**  
 तणकद्वमहासंचयचिविधिघणघोरजणियमणुवसंतो  
 तत्तलकखणो महाणगरइडाहसमाणो। निशी० ३१।  
**णपुंसगवेय-** नपुंसकवेदः-स्त्रीपुंसोरप्यभिलाषः। जीवा०  
 १८।  
**णभसेणो-** नभःसेनः-उग्रसेनपुत्रः। आव० ९४।  
**णमंसइ-** नमस्यति-प्रणमति। जम्बू० १५९।  
**णमंसण-** नमस्यनं-प्रणमनं। ज्ञाता० ४५।  
**णमंसमाणे-** नमस्यन्-प्रणमनम् अभिमुखः। ज्ञाता० १०।  
**णमइ-** नमति-प्रहवीभवति। उत्त० ६५।  
**णमि-** नमिः-श्रीऋषभस्वामि महासामन्तकच्छसुतः।  
 जम्बू० २५२। आव० १५१। नमिः-  
 परीषहोपसर्गादिनमनात् एक-विंशतितमो जिनः। आव०  
 ५०६।  
**णमिपव्वज्जा-** नमिप्रव्रज्या-उत्तराध्ययनेषु  
 नवममध्ययनम्। उत्त० ९।  
**णम्मोक्कार-** नमस्कारः-नमस्करणम् 'णमो अरहंताणं'  
 अयम्। दशवै० १८०। आव० ६८५।  
**णमोक्कारसहिता-** नमस्कारसहितः। आव० ८३८।  
**णयगई-** नयगतिः-यन्नयानां नैगमादीनां  
 स्वस्वमतपोषणं, यद्वा यन्नयानां सर्वोषां  
 परस्परसापेक्षाणां प्रमाणाबाधितवस्तुव्यवस्थापनं सा।  
 प्रज्ञा० ३२९।  
**णयणकंता-** नयनकान्ताः-लोचनाभिरामाः  
 परिणयनभर्तारो वा। प्रश्न० ७०।  
**णयमाला-** एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः। जीवा० १४५।  
**णयरगुत्तिय-** नगरगुप्तिकः। आव० ३७१।

णयरमयहरो- नगरमहत्तरः। आव० ४२६।  
 णयरिबाहिरिया- नगरीबाहिरिका। आव० ४२६।  
 णयवादसुहूमया- णेगमादिसत्तणया एक्केक्कते  
 सत्तविधो तेहिं सभेदा जा दव्वपरूवणा दिट्ठिवाए  
 कज्जति। निशी० ६७आ।  
 णरकन्ता- नरकान्तानदीदेवीकूटम्। जम्बू० ३८०।  
 णरवाम- पुरुषव्यामः-सुप्रसारितः। जम्बू० २९।  
 णरसीहरूव- नरसिंहरूपः। ज्ञाता० २१९।  
 णल- पर्वतविशेषः। प्रज्ञा० ३३।  
 णलगिरि- प्रद्योतनस्य हस्तिः। निशी० ३४८आ।  
 णलदाम- नलदामा कुसुमपुरे कोलिकः। दशवै० ५२।  
 णलिअंगे- नलिनाङ्ग-चतुरशीत्या लक्षैः पद्मैः। अनुयो०  
 १००।  
 णलिणंगं- नलिनाङ्ग-चतुरशीतिः पद्मशतसहस्राणि।  
 जीवा० ३४५।  
 णलिण- नलिन-ईषद्रक्तं पद्मम्। राज० ८। नलिनं चतुर-  
 शीतिर्नलिनाङ्गशतसहस्राणि। जीवा० ३४५। नलिनं-  
 चतुर-शीत्या लक्षैर्नलिनाङ्गैः। अनुयो० १००। नलिनो  
 विजयः। जम्बू० ३५७। जलरुहविशेषः। प्रज्ञा० २३।  
 णलिणकूड- नलिनकूटं वक्षस्कारपर्वतः। जम्बू० ३४६।  
 नलिनकूटं नाम वक्षस्कारपर्वतः। जम्बू० ३४६। स्था०  
 ३२६।  
 णलिणा- नलिना, पुष्करिणी नाम। जम्बू० ३३५। स्था०  
 ८०। जम्बू० ३६०।  
 णलिणावई- नलिनावती विजयः। सलिलावतीति पर्यायः।  
 जम्बू० ३५७।  
 णलिणिगुम्मं- नलिनिगुल्मं-सौधर्मकल्पे विमानविशेषः।  
 उत्त० १६०। आव० ३१६। पुष्कलावतीविजये  
 पुण्डरीकिणीनगर्यामुद्यानविशेषः। उत्त० ३२६।  
 णलिणिवणे- पुण्डरीकिणीनगर्या उद्यानविशेषः। ज्ञाता०  
 २४२।  
 पल्लग- नल्लकः। जम्बू० १०१।  
 णावं- नवं-अभिनवम्। सूर्य० १८।  
 णवंतेपुरं- जोव्वणयुत्ता परिभुंजमाणीओ। निशी० २७१।  
 णवग- पासत्थादि पंच काहिकादी चउरो। निशी० ९२।  
 णवग्गाइ- प्रत्यासन्नानि। बृह० ४३आ।  
 णवणीइआगुम्मा- नवनीतिका गुल्माः। जम्बू० ९८।

णवणीतं- नवनीतं-मक्षणम्। जीवा० १९२।  
 णवणीयं- नवनीतं-मक्षणम्। सूर्य० २९३।  
 णवपज्जए- नवं-प्रत्यग्रं प्रतापितस्यायोधनकुट्टनेन  
 तीक्ष्णं कृतस्य पायनं-जलनिबोलनं यस्य  
 तन्नवपायनम्। भग० ६५०।  
 णवपज्जणए- नवं-प्रत्यग्रं पायनं-लोहकारेण तापितं  
 कुट्टितं तीक्ष्णधारीकृतं पुनस्तापितानां जले निबोलनं  
 यस्य तत्। ज्ञाता० ११६।  
 णवमिआ- नवमिका-पाश्चात्यरूचकवास्तव्या षष्ठी  
 दिक्कुमा-रीमहत्तरीका। जम्बू० ३९१।  
 णवमिका- नवमिका-पश्चिमरूचकवास्तव्या षष्ठी  
 दिक्कुमारी। आव० १२२।  
 णवमिया- नवमिका  
 दक्षिणपश्चिमरतिकरपर्वतस्यापरस्यां  
 गोस्तूपराजधान्यधिष्ठात्री शक्रदेवेन्द्रस्य  
 तृतीयाऽग्रमहिषी। जीवा० ३६५। नवमोत्क्षेपस्य  
 षष्ठमध्ययननाम। ज्ञाता० २५३।  
 णवमीपक्ख- नवमीपक्षः-अष्टमीदिवसः, नवमीदिवसः  
 जम्बू० १४१।  
 णवयए- नवत्वक्-दुष्प्रतिलेखितदूष्यपञ्चके चतुर्थो  
 भेदः। आव० ६५२।  
 णवरी- केवल इत्यर्थः। निशी० १०आ।  
 णवायए- नवायतः-नव हस्तायतः। ज्ञाता० ६६।  
 णविया- नविकाः-अग्रेतन भवभाविनी। ज्ञाता० २४१।  
 णहसिहा- नखाग्राः। निशी० १९०आ।  
 णहा- नखा-नखराः। ज्ञाता० १३९।  
 णांगोली- नाङ्गोलिकः-अन्तरद्वीपविशेषः। जीवा० १४४।  
 णाइ- जातिः-सजातीयः। भग० १६३। जातिः-समानजा-  
 तीयाः। विपा० ५८।  
 णाइए- नादितं, प्रतिरवः। जम्बू० १९२।  
 णाइलो- नागिलः-श्रमणोपासकः, चम्पायां  
 सुवर्णकारकुमार-नन्दिनो मित्रम्। आव० २९६।  
 णाई- जातिः-मातुलादिस्वजनः। औप० ८९। जातिः-  
 सजातीयः। औप० १०३। ज्ञाताः-क्षत्रिया ज्ञातं वा वस्तु-  
 ज्ञातं विद्यते यस्य स ज्ञाती, विदित समस्तवेद्य इति।  
 सूत्र० ३९६।  
 णाए- ज्ञातं-प्रसिद्धं दृष्टान्तभूतं प्रधानं वा। सूत्र० १५०।

णाओ- निश्चये नायनं-विशिष्टस्थानप्राप्तिलक्षणं  
यस्मिन् सति सः न्यायः-सम्यक्चारित्रावाप्तिरूपः  
चारित्र्ययोगः। सूत्र० १९७।

णाग- द्रुमविशेषः। जम्बू० ४६। नागः-भवनपति विशेषः।  
जम्बू० १२३। नागो-वक्षस्कारः पर्वतः। जम्बू० ३५७।  
नागः- द्रुमविशेषः। जीवा० २००। नागः-द्वीपविशेषः।  
समुद्रविशेषश्च। जीवा० ३७०। नागः-नागवंशप्रसूतिः।  
औप० २७।

णागदंतगा- नर्कुटिकौ, अङ्कुलिकौ। जम्बू० ५०।

णागदंत- नागदन्तः- अङ्कुटकः। राज० ६४। जीवा० ३६१।

णागदत्ता- सम० १५१।

णागदत्ते- नागदत्तः-मणिपुरनगरे गाथापतिः। विपा०  
९५।

णागनत्तु- नागनप्ता वरुणनामा। भग० ३२०।

णागपुर- नगरविशेषः। ज्ञाता० २५२।

णागपुष्प- नागुष्पं नागकेसरकुसुमम्। जम्बू० १८३।

णागभद्रो- नागभद्रः-नागद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। जीवा०  
३७०।

णागमहाभद्रो- नागमहाभद्रः  
नागद्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। जीवा० ३७०।

णागमहावरो- नागमहावरः-  
नागसमुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। जीवा० ३७०।

णागरगो- नागरः। पौरः। आव० ४०९।

णागलया- लताविशेषः। प्रज्ञा० ३२। वल्लीविशेषः। प्रज्ञा०  
३२।

णागवरो- नागवरः-नागसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। जीवा०  
३७०।

णाडङ्जो- नाटकीयः-नाटकप्रतिबद्धपात्रः। ज्ञाता० ४०।  
आव० ३५६।

णाडगविही- नाटकविधिः  
अभिनयप्रबन्धप्रपञ्चनप्रकारः। जम्बू० २५९।

णाढाङ्- नाद्रियते। आव० ३७४।

णाणं- ज्ञानम्। आव० ७९३।

णाण- ज्ञानं-श्रुतज्ञानम्। स्था० ६४। ज्ञातम्। स्था० ३२७।

णाणकुशील- कषायकुशीलोऽप्ययं नवरं क्रोधादिना  
विषयादि-ज्ञानं प्रयुञ्जानो ज्ञानकुशीलः। स्था० ३३७।

णाणत्तं- विसेसो। निशी० १३३। वर्णादिकृतं

नानात्वम्। भग० ७४१।

णाणनाणोपग- ज्ञानज्ञानोपगतः-ज्ञानमिह श्रुतज्ञानं  
तेन ज्ञानं अवगमः प्रक्रमाद् यथावत्क्रियाकलापस्य  
तेनोपगतो युक्तः। उत्त० ४८७।

णाणपवायं- (ज्ञान प्रवादः) पञ्चमं पूर्वनाम। स्था० १९९।

णाणपुलात- ज्ञानपुलाकः-पुलाकस्य प्रथमो भेदः, ज्ञान-  
निस्सारत्वं य उपैति स पुलाकः। उत्त० २५६। स्खलित-  
मिलितादिभिरतिचारैर्ज्ञानमाश्रित्यात्मानं असारं कुर्वन्  
ज्ञान-पुलाकः। स्था० ३३७।

णाणमोहे- ज्ञानं मोहयति आगच्छतीति ज्ञानमहः-  
ज्ञानावर-णोदयः। स्था० ९६।

णाणसंकिलेसे- ज्ञानस्य सङ्कलेशः-अविशुद्ध्यमानतास्र  
ज्ञान सङ्कलेशः। स्था० ४८९।

णाणविण- ज्ञानविनयो-मत्यादिज्ञानानां  
श्रद्धानभक्तिबहु-मानतद्  
दृष्टार्थभावनाविधिग्रहणाभ्यासरूपः। भग० ९२४।

णाणायरे- ज्ञानाचारः-श्रुतज्ञानविषयः कालाध्ययविनय-  
ध्यानादिरूपो व्यवहारोऽष्टधा। सम० १०८।

णाणायारे- आचरणमाचारः-व्यवहारो ज्ञानं-श्रुतज्ञानं  
तद्विषय आचारः कालादिरष्टविधो ज्ञानाचारः। स्था०  
६४। आचरणमाचारो ज्ञानादिविषयाऽसेवत्यर्थः।  
ज्ञानाचारः-कालादिरष्टधा। स्था० ३२९।

णाणिदे- ज्ञानेन्द्रः-ज्ञानेन ज्ञानस्य ज्ञाने वा इन्द्रः  
परमेश्वरो ज्ञानेन्द्रः  
अतिशयवच्छ्रुताद्यन्नज्ञान्तरवशविवेचितवस्तुवि-  
स्तारः-केवली वा। स्था० १०४।

णाणिङ्ढी- ज्ञानर्द्धिः-विशिष्टश्रुतसम्पत्। स्था० १७३।

णाणुप्पायं- ज्ञानस्योत्पादनमुत्पत् ज्ञानोत्पत्। उत्त०  
३२२, २८४, ३०६।

णात- दृष्टान्तः। निशी० २८५। ज्ञातं-ज्ञायते अस्मिन्  
सति दार्ष्टान्तिकोऽर्थ इति अधिकरणे कप्रत्ययो-  
पादानात् ज्ञातं-आख्यानकरूपं उपमानमात्रं उपमिति  
मात्रम्। स्था० २५४।

णातगं- ज्ञातकं-स्वजनम्। बृह० १८८।

णाता- समर्थो गीयत्यो वा। निशी० २२१।

णाभी- लोकनाभिः, मेरुनाम। जम्बू० ३७५। ऋषभदेव-  
पिता। सम० १५०। नाभिः-मध्यः। आव० ४३७। नाभिः-

चतुर्दशं कुलकरनाम। जम्बू० १३२। सगडरहाङ्गण भवइ।  
दशवै० १११।

णाभोगे- अनाभोगः-विस्मृतिः। स्था० ४८४।

णाम- यथाभूतार्थनिरपेक्षमभिधानमात्रं नाम। आचा० ९१।  
नामपदं-अव्युत्पन्नेतरभेदाद् द्विधा। प्रश्न० ११७।  
नामकर्म-णउत्तरप्रकृतिविशेषरूपः। प्रज्ञा० २१७।  
विभक्तिपरिणामेन नाम्नेति। जम्बू० १५। प्राकृतत्वात्  
विभक्तिपरिणामेन नाम्ना। जम्बू० ४७। नाम-  
शास्त्रीयउपक्रमः। आचा० ३। णाम इति पादपूरणे, अहवा  
णाम इत्युपसर्गः अयं वार्थविशेषः। निशी० ९९।  
पादपूरणे, अवधारणे। निशी० २१२। शिष्यामन्त्रणे।  
जम्बू० ३१।

णामगं- नामकं प्रतिज्ञा। उत्त० १०१।

णामधेज्जा- सार्थकाणीत्यर्थः। निशी० ५३।

णाय- निश्चित आयः। लाभः न्यायः मुक्तिः। उत्त०  
२१३। जातं-सामान्येनावगतम्। भग० ६५। जातं  
सामान्यतः। भग० ३१६। जातं-ग्रन्थः। आव० ६७७।  
उदाहरणम्। ज्ञाता० १०। दृष्टान्तः। बृह० २६। जातः-  
इक्ष्वाकु-वंशविशेष-भूतः। औप० २७। जातः-  
उदारक्षत्रियः। उत्त० २७०। नावः। उत्त० १५०।

णायए- णायकः प्रणेता,  
यथावस्थितवस्तुस्वरूपप्रणेतृत्वम् च। सूत्र० २५४।  
प्रधानः न्यायको वा। ज्ञाता० ६७। जातिबन्धुः। सूत्र०  
१७१। जातकः-स्वजातीयः यद्वा जातकः-संवासादिना  
जातः-सहज परिचितः। जम्बू० १२३।

णायग- स्वामिनो ज्ञानादि प्रापका वा। व्यव० २३५।  
णायगो-स्वजनः। निशी० २६८। स्वजनः नात-  
गोप्रजायमानः। निशी० २५३।

णायज्झयणा- ज्ञातानि-  
दृष्टान्तास्तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि  
षष्ठाङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धवर्त्तानि। सम० ३७।

णायपुत्ते- जातपुत्रः-वर्तमानतीर्थाधिपतिर्महावीर इति।  
उत्त० २७०।

णाय- ज्ञाताः-उदारक्षत्रियाः। बृह० १५२। कुलार्यभेदः।  
प्रज्ञा० ५६।

णारए- नारदः। आव० ९१।

णारदो- द्वारकायां ऋषिः। आव० ९४।

णारायं- नाराचम्। जीवा० ११७। नाराचाः-सर्वलोहबाणः।  
जम्बू० २०६।

णारायणो- कमलामेलोदाहरणे द्वारकाधिपतिः,  
नारायणः-कृष्णः। आव० ९४।

णारी- नारीकूटं-नारीकान्तानदीसुरीकूटम्। जम्बू० ३७७।

णारीकन्ता- नारीकान्ता-नदीविशेषः। जम्बू० ३७९।

णारीकन्ताए- नारीकान्तायाः। जम्बू० ३७९।

णालंद- सूत्रकृताङ्गस्य त्रयोविंशमध्ययनम्। उत्त० ६१६।

णालंदइज्जं- सूत्रकृताङ्गस्य त्रयोविंशमध्ययनम्। सम०  
४२।

णालंदा- नालंदा-राजगृहे शाखापुरम्। आव० १९९।

णालबद्धा- माता-पिता-भ्राता आदि। निशी० ३०।

णालातिबद्धेणं- निशी० २११।

णालिआ- नालिका-यष्टिविशेषः। जम्बू० ९४।

णालिएरिवणं- नालिकेरवनम्। जीवा० १४५।

णालिएरी- वलयविशेषः। प्रज्ञा० ३३।

णालि- घडिया। निशी० २२।

णालिआ- नालिका। आव० ३६०।

णालिउ- घडिउदग गलेणो व लक्खितो कालो। निशी०  
११८।

णाले- नालं-कन्दोपरिमध्यवर्त्यवयवः। जम्बू० २८४।

णावणिज्जुत्तीए- एतेहिं सुत्तपदेहिं सव्वे  
उग्गमुप्पादणएसणा दोसा य सूचिता तेण। निशी० ६३  
।

णावत्ति- पसत्ती। निशी० १२१।

णावमज्जे- (णायमेज्जा) नाचमेत-न निर्लेपनं कुर्यात्।  
सूत्र० १८१।

णावाकडए- नावाकटकं-नौशकलम्। आव० ४०१।

णावाकडओ- नावाकटकं नौशकलम्। आव० २१४।

णावागती- नावागतिः। यन्नाव महानद्यादौ गमनं,  
विहायोगतेः सप्तमो भेदः। प्रज्ञा० ३२७।

णावाभूयं- नौभूतं-नौतुल्यम्। जम्बू० २२०।

णावावाणियगा- नौवाणिजकाः-पोतवणिजः। ज्ञाता०  
१३६।

णावासंठिते- नौसंस्थितम्। सूर्य० १३०।

णाविय- णाविकः-कैवर्त्तः। ज्ञाता० १५९।

णाविया- नौका-द्रोणिका। भग० २१९।

णासकरणं- णासारिसादिरोगणासणत्थं णासकरणं। नि० ८९ अ।  
 णासिऊणं- नण्ट्वा। दशवै० ११।  
 णासिककं- नासिक्यं, पारिणामिकीबुद्धिदृष्टान्ते नगरम्। आव० ४३६।  
 णासो- नियतं निश्चितं वाऽऽसनं-नामादिरचनात्मकं क्षेपणं न्यासः-निक्षेपः। उत्त० ७२।  
 णाह- नाथः-योगक्षेमकारिन्। ज्ञाता० १६७।  
 णाहरा- सणप्फया। निशी० ८ आ।  
 णितं- निर्गच्छन्। ओघ० ९०। निन्तो निर्गच्छन्। आव० २६५।  
 णिताणं- निर्गच्छत्। निशी० १२० आ।  
 णिंदणया- निन्दनं-आत्मनैवात्मदोषपरिभावनम्। उत्त० ५७९।  
 णिंदुयं- निर्दुतं निर्यातं, मृतमिति। विपा० ५१।  
 णिंदू- निन्दुः-म्रियमाणप्रजनिका स्त्री। आव० २०५।  
 निन्दुः-मृतापत्यप्रयुः। आव० ३६७।  
 णिंब- निम्बः, एकास्थिकवृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३१।  
 णिंबोलियाए- निम्बगुलिका-निम्बफलं, निर्बोलिता निमज्जिता। ज्ञाता० १९९।  
 णिअंसेइ- निवासयति-परिधापयति। जम्बू० १६१।  
 णिअग- निजकाः-मातापितृभ्रात्रादयः। जम्बू० २७०।  
 णिअमो- नियमः शौचादिः। जम्बू० ५२२।  
 णिअल्लओ- निजकः। दशवै० ११।  
 णिइंति- निर्यान्ति-निर्गच्छन्ति। प्रश्न० ११५।  
 णिइयं- नैत्यिकं-सार्वदिकमवस्थितं मनुष्यपोषादिप्रमाणम्। प्रश्न० १५४।  
 णिउडुकुडिया- निकृत्युत्कटता। आव० २०६।  
 णिउण- निपुणम्। प्रश्न० ३६। सुहुमो। निशी० १३ अ।  
 णिउत्तो- नियुक्तः। आव० ८१९।  
 णिउर- वृक्षविशेषः। ज्ञाता० १६१।  
 णिओइओ- चोदितो। निशी० ९१ अ।  
 णिओगी- नयोगी-कृत्यकरः। उत्त० ३०५।  
 णिओगे- नयोगः-उपकरणम्। जम्बू० ४०३।  
 णिओदणं- भिक्खूकरो। निशी० ३२८ अ।  
 णिकट्टा- निकृष्टा-कोशाद्वहिष्कृता असियष्टिः। ज्ञाता० २३९।

णिकाईयं- निकाचितम्। उत्त० १७४।  
 णिकायकाय- निकायकायः षड्जीवनिकायः। दशवै० १३४।  
 णिककंड- निष्कवचा, निरावरणाः। जम्बू० २१। निष्क-  
 इकटाः- निष्कवचा, निरावरणाः। औप० ११५।  
 णिककंतारं- निर्गतः कान्तारान्निष्कान्तारस्तन्निष्क्रमितारं वा। स्था० ११८।  
 णिकक- सर्वथा विगतमलः। ज्ञाता० ५३।  
 णिकका- सारणी। निशी० ७२ आ। अन्नेकवाडसंजु-त्ताओ णिकका। निशी० ७० आ।  
 णिकिकव- निष्कृपः-मम दुःखिताया अप्रतीकारत्। ज्ञाता० १६७।  
 णिककोडणं- निष्कोटनं-बन्धनविशेषः। प्रश्न० ५६।  
 णिककोरणं- मुहस्स अवणयणं णिककोरणं। निशी० १२१ आ।  
 णिकखमइ- निक्षिप्यते। दशवै० ५४।  
 णिकखमणं- निष्क्रमणम्। आव० ५१४। णिप्फेडणं। निशी० २५८ आ।  
 णिकखमे- निष्क्रमेत्-गच्छत्। उत्त० ५९।  
 णिकिखत्तं- णाम गरलिगाबद्धं स्थापयति। निशी० ८३।  
 णिकिखत्तचरगा- गोचरचर्यायामभिग्रहविशेषः। निशी० १२ आ।  
 णिकिखवति- गोपयति। निशी० ८३ आ। पहे मुच्चंति। निशी० २१३ अ। गोपयति। नि० ८३ अ।  
 णिकिखुडं- निष्कुटं भागम्। जम्बू० २५५। निष्कुटंकोणव-  
 त्तिभरतक्षेत्रखण्डरूपम्। जम्बू० २१८।  
 णिकिखुडाणि- निष्कुटानि-अवान्तरक्षेत्रखण्डरूपाणि। जम्बू० २१८।  
 णिकिखेवगणिक्खित्तं- निक्षेपकनिक्षितम्। आव० ६७।  
 णिगओ- निगमः-वणिग्जननिवासः। प्रश्न० ५२। निगमः-  
 कारणिकः, वणिग् वा। औप० १४। निगमः-  
 प्रभूततरवणिग्वर्गावासः। प्रज्ञा० ४७।  
 णिगमण- निगमनं-प्रतिज्ञाहेत्वोः पुनर्वचनं निगमनम्। दशवै० ६२।  
 णिगमा- निगमः-कारणिकाः, वणिजः। जम्बू० ११०।  
 वणिग्विशेषाः। बृह० ४५ अ।  
 णिगरिअ- निगरितं-सारिकृतम्। जम्बू० १११।

णिगिणं- णग्गं। निशी० ३८ अ।  
 णिगिणाउ- मुक्तपरिधाना। आच० ३७१।  
 णिगिणिणं- नाग्न्यम्। उत्त० २५०।  
 णिगुंजमाणी- निगुञ्जन्ती-अव्यक्तशब्दं कुर्वन्ती।  
 ज्ञाता० १५८।  
 णिगुणं- निगुणं-निहतगुणम्। प्रश्न० ३६।  
 निगुहिज्जा- अवगूहयेत्-पच्छादयेत्। आचा० ३५४।  
 णिगोय- निगोदाः-कुटुम्बानि। जम्बू० १७१।  
 णिगंथा- खमणा। निशी० ९८ अ।  
 णिगमं- वणिग्या जत्थ केवला वसन्ति तं निगमं। निशी०  
 २२९ अ।  
 णिगमए- प्रस्थानम्। निशी० १५८ अ।  
 णिगयरिणो- कृतप्रत्युपकारा। निशी० २९२ अ।  
 णिगया- निर्गता-जे तवं बोलीणा छेदादिपत्ता। निशी०  
 १२२ अ।  
 णिगिलिओ- निर्गिलितः। आव० ३९५।  
 णिगुणा- निर्गुणाः-उत्तरगुणविकलाः। जम्बू० १७१।  
 णिगू- गुच्छाविशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
 णिगोहवरपायव- न्यग्रोधवरपादपः। जम्बू० १५०।  
 णिगधरिस- कषपटः। निशी० २४२ अ।  
 णिगघाए- निर्घातः-वैक्रियाशनिप्रपातः। प्रज्ञा० २९।  
 णिगघाएति- गालयति। निशी० ११७ अ।  
 णिगघाओ- निर्घातः-गगने व्यन्तरकृतो महाध्वनिः।  
 प्रश्न० ५१।  
 णिगघायण- निर्घातनं-विश्लेषणम्। जम्बू० १५०।  
 णिगघिण- निर्घृणः-निर्दयः। ज्ञाता० १६७।  
 णिगघोसो- निर्घोषः महाध्वनिः। औप० ७३। निर्घोषः  
 महाध्वनिः। प्रश्न० २०।  
 णिचचणियंसणं- जं दिया रातो य परिहिज्जेह। निशी०  
 १६२ अ।  
 णिचचालोए- अष्टाशीतौ महाग्रहे चतुष्पष्ठितमः। स्था०  
 ७९।  
 णिचचालोयं- नित्यमालोको-दर्शनं-दृश्यमानता यस्य तत्  
 नित्यालोकम्। जीवा० ३९९।  
 णिच्छउ- परमार्थः। निशी० ९७ अ।  
 णिच्छय- निश्चयः-निर्णयः निर्गतकर्मचयो निश्चयः-  
 मोक्षः। प्रश्न० २। तत्त्वानां निर्णयः। ज्ञाता० ७।

णिच्छल्लेति- त्वचं अवणेति, महामणिं प्रकाशयति।  
 निशी० ११६ अ।  
 णिच्छाणं- निःस्थानं-स्थानवर्णितम्। विपा० ५७।  
 णिच्छुब्भते- आददाति-तुदति। आव० १०२।  
 णिच्छुहति- निस्पृशति। उत्त० २७७।  
 णिच्छुढं- निष्ठयूतम्। दशवै० ३८।  
 णिच्छुभति- धाडयति। निशी० ३०३ अ।  
 णिजुता- नियुक्ता-स्थापिता। जम्बू० २१२।  
 णिजुद्धं- नियुद्धम्। उत्त० १९२। सव्वसंधिविक्खोवणं  
 णिजुद्धं। निशी० ७१ अ।  
 णिज्जंतो- नीयमानः। आव० ६३१।  
 णिज्जरापोगलो- निर्जरापुद्गलः-अपगतकर्मभावः- पर-  
 माणुः। प्रज्ञा० ३०३।  
 णिज्जाणं- णगर गाम वा जं ठियं तं। निशी० २६५ अ।  
 निर्याणं-अनावृत्तिकगमनम्। औप० ८०।  
 णिज्जणियकेणाइ- नगरनिर्गमगृहाणि। भग० ६१७।  
 णिज्जाणिया- रायादियाण निग्गमणं ठाणं। निशी० २६५  
 अ।  
 णिज्जामिय- निर्यामितः। उत्त० १३३।  
 णिज्जास- निर्यासः रसः। जम्बू० १००। निर्यासः। ओघ०  
 १००।  
 णिज्जाहि- निर्यास्यति-निर्गमिष्यति। स्था० ४५९।  
 णिज्जिए- निर्जितः भग्नबलम्। जम्बू० २७७।  
 णिज्जितं- उपार्जितम्। निशी० १०६ अ।  
 णिज्जुत्ती- निर्युक्तिः निश्चयेन आदौ वा युक्ता  
 अर्थास्तेषां युक्तिः निर्युक्तार्थव्याख्या वा। आव० ६७।  
 णिज्जूढा- कालावधीए जे ठप्पा कया ते णिज्जूढा।  
 निशी० १९९ अ। जे ठप्पा कया। निशी० ४५ अ।  
 णिज्जूह- गवक्खो। निशी० ८४ अ। निर्युहोद्वारो-  
 परितनपाश्वर्वविनिर्गतदारुः। जम्बू० १०७। णिज्जूहकं-  
 निर्युहकं-द्वारपाश्वर्वविनिर्गतदारुः।  
 णिज्जूहंतो- परित्यजन्। पिण्ड० १७६।  
 णिज्जूहिऊण- परित्यज्य। उत्त० ६६८।  
 णिज्झर- निज्झराः-गिरितटादुदकस्याधः पतनानि  
 तान्येव सदावस्थायीनि। जम्बू० ६६।  
 णिज्झवणा- निः-आधिक्येन यान्ति प्राणिनः प्राणास्तेषां  
 नि-र्यातां-निर्गच्छतां प्रयोजकत्वं निर्यापना,

प्राणवधस्याष्टाविंशतितमः पर्यायः। प्रश्न० ६।  
 णिड्वियं- निष्ठितम्। आव० ५५८।  
 णिड्वेति- मारेज्जा। निशी० १३३ आ।  
 णिड्ढाणं- णिप्फत्ती। निशी० ३३ आ। जं सव्वगुणोववेयं  
 सव्व संभरसंभियं तं। दशवै० १२२।  
 णिड्ढाणकहा- निष्ठानकथा शतपञ्चशतरूपका, निष्ठानं  
 यावत् शतसहस्रमिति, भक्तकथायाश्चतुर्थभेदः। आव०  
 ५८१।  
 णिड्ढावेति- व्यापादयति। निशी० ३०३ आ।  
 णिड्ढि- निष्ठितोऽपनेतव्यद्रव्यापनयनमाश्रित्य निष्ठां  
 गतः वि-शिष्टप्रयत्नप्रमार्जितकोष्ठागारवत्। जम्बू०  
 ९६।  
 णिड्ढियं- परिसमत्तणं। दशवै० ११२ आ।  
 णिड्ढिया- कालगता। निशी० २०७ आ।  
 णिड्ढुहति- निष्ठीवति। उत्त० ३५६।  
 णिणा- निनादः-प्रतिशब्दः। औप० ७३। निनादः-  
 प्रतिध्वनिः। जम्बू० १९२ आ।  
 णिण्णं- खड्डा। निशी० १२९ आ।  
 णिण्णओ- निर्णयः-निर्वचनम्। बृह० १२५ आ।  
 णिण्णय- निर्णयः। आव० ९७।  
 णिण्णाइं- (देशी) अधोगच्छति। उत्त० २९३।  
 णिण्हवो- जो पुच्छिओ संतो सव्वहा अवलवइ। दशवै०  
 १२४।  
 णितंब- नितम्बः-कटकः। जम्बू० २४२।  
 णितावादी- नियतं-नित्यं वस्तु वदति यः स। स्था० ४२५।  
 णितितो- णिच्चमवत्थाणातो णितितो। निशी० ९१ आ।  
 एते संधारगादि दव्वे कालदुगातीतं अपहिरंतो। निशी०  
 १४३ आ।  
 णितियं- धुवं, सासतं। निशी० १४२ आ। णिच्चणिमंतं।  
 निशी० ९० आ।  
 णितियादि- नित्यवासादि। ओघ० ५६।  
 णित्थक्क- अनवसरज अनुरक्ता य ममाकाण्डे एव  
 त्यागा दित्यर्द्धम्। जता० १६७।  
 णित्थरहल्लेज्ज- फोडणं। निशी० ५७ आ।  
 णित्थरिउं- पारं प्राप्तुम्। महाप०।  
 णित्थरिहिह- ज्ञाता० २४०।  
 णित्थारणा- निस्तारणा-तत्पारप्रापणा। जम्बू० २३७।

णिदाणा- भवान्तरीयाः धर्मोत्साहपराकृताः  
 प्रार्थनाविशेषाः-दुर्लभबोध्यादिफलाः नवभेदाः दशा०।  
 णिदाहो- निदाघः एकादशं मासनाम। सूर्य० १५३।  
 णिदोच्चं- निभर्यम्। निशी० ७१ आ।  
 णिद्वा- निद्रा-सुखप्रतिबोधलक्षणा। भग० २१८।  
 णिद्धारो- निर्धारः। आव० ८५५।  
 णिद्देज्जं- पुवं पडिहारितो दत्तो इदाणि णिद्देज्जं  
 देहित्ति। निशी० १७७ आ।  
 णिद्धं- स्निग्धं-मनोहरम्। जीवा० २६७। स्निग्धं-  
 स्नेहलम्। जीवा० २६९।  
 णिद्धंधस- अत्यन्तमैहिकामुष्मिकापायशङ्काविकलः  
 अत्यन्तं जन्तुबाधनिपेक्षो व परिणामोऽध्यवसायो वा।  
 उत्त० ६५६।  
 णिद्धमा- पासत्थ। निशी० ७६ आ।  
 णिद्धबंधणपरिणामे- स्निग्धबन्धनपरिणामः-स्निग्धस्य  
 सतो बन्धनपरिणामः। प्रश्न० २८८।  
 णिद्धमण- निर्धमनम्। आव० ६४।  
 णिद्धमहुरणिवायविणीयववहारा-  
 घृतगुडसद्वसतिविनयादिजा-तपक्षव्यवहाराः। व्यव०  
 २५३।  
 णिद्धम्मो- निर्गतो धर्मात्-श्रुतचारित्रलक्षणादिति  
 निर्धर्मः। प्रश्न० ५।  
 णिद्धा- स्निग्धा। आव० २६२।  
 णिद्धाइऊण- निर्गत्य। आव० २१६।  
 णिद्धाइस्संति- निर्द्धाविष्यन्ति-शीघ्रया गत्या  
 निर्गमिष्यन्ति। जम्बू० १७१। निर्गमिष्यन्ति। जम्बू०  
 १७६।  
 णिद्धुणे- निर्धुनोति-निततरामपनयति। उत्त० १८५।  
 णिद्धो- स्निग्धः स्वस्मिन् रूपेऽत्यर्थमुत्कटः। जीवा०  
 १८७।  
 णिधणं- निधनं पर्यवसानम्। प्रश्न० ५।  
 णिन्नामए- निश्चयेन नामयेत् निर्नामयेत्-अपनयेत्।  
 सूत्र० २३७।  
 णिपुरो- नन्दीवृक्षः। आचा० ३४८।  
 णिप्पंका- कलङ्कविकला कर्द्धमरहिता वा। जम्बू० २१।  
 णिप्पंको- निष्पङ्कः-आर्द्रमलरहितः अकलङ्को वा। औप०  
 ११५।

**णिप्पचचक्खाणपोसहोववासा-**

निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासा-असत्पौरुष्यादिनियमा  
अविद्यमानाष्टम्यादिपर्वोपवासाश्चे-त्यर्थः। जम्बू०  
१७१।

**णिप्पडिकम्मया-** प्रशस्तयोगसङ्ग्रहायैव

निष्प्रतिकर्मशरीरता सेवनीया, योगसङ्ग्रहे षष्ठो योगः।  
आव० ६६३।

**णिप्पिवासो-** निर्गतः पिपासाया वध्य प्रति स्नेहरूपाया  
इति निष्पिपासः। प्रश्न० ५।

**णिककडइ-** निःसरति। दशवै० ६१।

**णिप्फाव-** औषधिविशेषः। प्रज्ञा० ३३। निष्पावाः-वल्लाः।  
जम्बू० १२४। वल्ला। निशी० १४४ आ। निशी० १२० अ।

**णिप्फिडति-** निस्सरति। आव० ९६।

**णिप्फिडिओ-** निष्काशितः। आव० ४२६।

**णिप्फिडिता-** निर्गता। आव० ३४०।

**णिप्फिडिया-** निर्गता। दशवै० ९८।

**णिप्फेडओ-** निस्फोटः स्थानं स्वातन्त्र्यं वा। आव० ५१५।

**णिप्फेडियं-** निष्कासितं भूमौ पातितम्। आव० ३६९।

**णिप्फेडो-** निर्गमः। आव० ३५५।

**णिब्बंधो-** निर्बन्धः। आव० ५६५।

**णिब्बुडो-** निमग्नः। आव० १८२।

**णिब्भरा-** मत्ता। निशी० २२ आ।

**णिमग्गजला-** निमग्नं जलं यस्यां सा निमग्नजला।  
जम्बू० २३०।

**णिमित्त-** निमित्तं-अङ्गस्फुरितादि। प्रश्न० ४०। निमित्तं  
अनागतार्थपरिज्ञानहेतुर्गन्धः। ओघ० १४।

**णिमित्तिं-** नैमित्तिकः। आव० ५६०।

**णिम्मंसा-** निर्मासा। ज्ञाता० ३३।

**णिम्मला-** निर्मला-आगन्तुकमलरहिता। जम्बू० २१।  
फुल्ला। निशी० १०३ आ। अमिला। निशी० २५५ अ।

**णिम्मलो-** निर्मलः-कठिनमलरहितः। औप० ११५।

**णिम्माया-** निष्णाता-निपुणा। आव० ६७४।

**णिम्मिय-** न्यस्तः। ज्ञाता० १४।

**णिम्मैरा-** निर्मर्यादाः-अविद्यमानकुलादिमर्यादाः। जम्बू०  
१७१।

**णिम्मोअणं-** संठवणं। निशी० १२३ अ।

**णियंठ-** निर्गतो ग्रन्थात्-मोहनीयकर्माख्यादिति।

निर्गन्धः। भग० ८९०। अब्भिन्तरबाहिरगन्धणिग्गतो।

उत्त० २५७।

**णियंसेइ-** नियस्ते-परिधत्ते। जीवा० २५३।

**णियइयाओ-** नैयतिवयः-नियता न तु त्रिप्रभृतय इति  
पञ्चैवेत्यर्थः। भग० ४४।

**णियए-** नियतः एकस्वरूपत्वात्। भग० ११९।

**णियगो-** निजकः। उत्त० २२६। निजकः-गोत्रीयः। औप०  
८९।

**णियच्छति-** नियच्छति निश्चयेन यच्छति-अवतरति-  
युज्यते। सूत्र० ३५। गच्छति-प्राप्नोति। बृह० ७९ आ।

**णियट्टिबायरो-** क्षपकश्रेण्यन्तर्गतः क्षीणदर्शनसप्तको  
जीवाग्रामो निवृत्तिबादरः, भूताग्रामस्याष्टमं  
गुणस्थानम्। आव० ६५०।

**णियडि-** निकृतिः-बकवृत्त्या कुर्कुटादिकरणेन  
दम्भप्रधानव-णिकश्चोत्रीयसाध्वाकारेण परवञ्चनार्थं  
गलकर्त्तकानामिवाव स्थानम्। सूत्र० ३२९। परस्य  
व्यञ्जकत्वेन अधि कायक्रिया णियडी। निशी० २८९  
आ।

**णियमपगंपं-** नियमप्रकम्पः-कायोत्सर्गः। बृ. १३० आ।

**णियमसा-** नियमेन-अवश्यभावेन। उत्त० ६५१, ५३५,  
५४४।

**णियमसो-** नियमशः-नियमात्। उत्त० ७६।

**णियमारक्खिओ-** सव्वपगईओ जो रक्खति सो णियमार-  
क्खिओ। निशी० १९५ अ।

**णियमो-** निगमः-वणिग्जनप्रधानस्थानम्। प्रश्न० ६९।  
नियमः-पिण्डविशुद्ध्यादिउत्तरगुणः।  
द्रव्याद्यभिग्रहः। प्रश्न० १३२। अवश्यम्भावी। प्रश्न०  
१३३।

**णिययवित्ती-** नियतवृत्तिः। व्यव० ३९१ अ।

**णियया-** सदैव स्वस्वरूपा। व्यव० २७।

**णियाग-** णियगः-स्वजनः। निशी० १४० आ। नियागः-  
मोक्षमार्गः सत्संयमो वा। सूत्र० २६६। संयमो विमोक्षो  
वा। सूत्र० ३०२।

**णियाणमरणे-** ऋद्धिभोगादिप्रार्थना निदानं तत्पूर्वकं  
मरणं निदानमरणम्। स्था० ९३।

**णियोग-** नियोगः-आज्ञा० जम्बू० १६९।

**णिरंगणो-** निरञ्जनः-कौशाम्ब्यां राजमल्लः। उत्त०

१९३।

गिरन्तरता- निरन्तरभूमिस्पर्शिता। बृह० २२३ आ।

गिरई- निरति देवानन्दाया नामान्तरम्। जम्बू० ४९२।

गिरविक्रय- निराकृता-अपास्ता। उत्त० ३१९।

गिरणुगगहकसिणं- छम्मासिए पडुविए पंचमासा चउवीसं  
च दिवसा वूढा, ताहे अण्णं छम्मासियं आवणो ताहे तं  
वहति पुविल्लिस्स छद्दिणा जो सो। निशी० १३५ आ।

गिरति- निसृजति। बृह० १४४ आ।

गिरभिग्गहो- दंसणसावगो। निशी० १२० अ।

गिरयपडिरुविया- निरयप्रतिरूपिका नरकसदृशी। ज्ञाता०  
६२।

गिरयविभत्ति- सूत्रकृताङ्गस्य पञ्चममध्ययनम्।

उत्त० ६१४।

गिरवच्चो- निरपत्यः-शिष्यगणरहितः। आव० २४०।

गिरवलावे- निरपलापः-आचार्यस्यापरिश्रावित्वम्। प्रश्न०  
१४६।

गिरवेक्खो- निरपेक्षः। आव० ८२०।

गिरालए- निरालयः-वसतिप्रतिबन्धवन्ध्यः, यथोचितं  
सत-तविहारित्वात्। जं० प० १४९।

गिरालोआ- निरालोकाः-निरस्तप्रकाशा

निरस्तदृष्टिप्रसरा वा। जम्बू० १६७।

गिरुंभिऊण- निरुध्य। महाप०।

गिरुच्चारो- निरुच्चारः-निरुद्धपुरीषोत्सर्गः,  
अविद्यमानसञ्चरणः नष्टवचनोच्चारणो वा। प्रश्न०  
५७। प्राकारस्योर्ध्वं जनप्रवेशनिर्गमवर्जितः। उच्चारः-  
पुरीषं तद्विसर्गार्थं यज्ज-नानां बहिर्निगमनं तदपि सः।  
ज्ञाता० १४९।गिरुद्धपरियागो- जस्स तिण्णि वरिसाणि परियायस्स  
संपु-ण्णाणि। निशी० ८४ अ।गिरुद्धा- निरुद्धा। आव० ३४५। निरुद्धा-मूर्छिता निरुद्ध-  
चेष्टा। उत्त० १६०।गिरुवकिट्ठ- निरुपक्विलष्टः-व्याधिना प्राक् साम्प्रतं वाऽ-  
नभिभूतः। जम्बू० ९०।गिरुवद्दवा- निरुपद्रवा-अविद्यमानराजादिकृतोपद्रवा।  
औप० २।गिरुवमा- गिरगया उवमा जत्थ दृष्टान्ताभावः। निशी०  
१४६ आ।

गिरुवहत- ण अञ्जणखञ्जणोवलित्तं ण वा

अग्गिविदड्ढं मूसगखइयं वा। निशी० १३८ आ।

गिरुवहय- निरुपहतः-स्फोटादिदोषविरहतः। ज्ञाता० ६७।

गिरुक्क- निल्लुकः-अन्तर्हितः। ज्ञाता० १५३।

गिरुक्का- निलीनाः। आव० ९०।

गिरिल्लेव- निर्लेपः-

अत्यन्तसंश्लेषात्तन्मयतागतवालाग्रलेपाप-

हारादपनीतधान्यलेपकोष्ठागारवत्। जम्बू० ९६।

गिरिल्लेवगो- रजकः। आव० ५६२। रयगो। निशी० १२६।

गिरिल्लेवणं- गिरगंधं। निशी० २२२ अ।

गिरिल्लेवेति- धोवति। निशी० २११ अ।

गिरिवज्जंति- निष्पद्यन्ते। मरण०।

गिरिवज्जे- स्वपिति। ओघ० ८४।

गिरिवण्णेति- अवलोकयति-पश्यति। आव० ६८८।

गिरिवन्ना- निवन्नाः-सुप्ताः। ज्ञाता० १२६।

गिरिवाणतडं- निपानतटम्। दशवै० ९४।

गिरिवाय- निपातः-पतनम्। ज्ञाता० २६।

गिरिवायगंभीरा- निवाता-वायोरप्रवेशात् किल महद् गृहं  
निवातं प्रायो न भवति तत आह निवातगम्भीरा,  
निवाता सती गम्भीरा निवातगम्भीरा, निवाता सती  
विशाला इत्यर्थः। राज० ५८।गिरिवारणं- नितरां वार्यते-निषिध्यतेऽनेन शीतवातादीति  
निवारणं सौधादि। वस्त्रादि वा। उत्त० ८८।

गिरिवारितो- निवारयन्तम्। उत्त० ३०५।

गिरिविज्जए- शेते। उत्त० ५५१।

गिरिविज्जणं- निर्विजनम्। आव० ५०६।

गिरिविट्ठो- परिणीओ। निशी० १४५ अ।

गिरिविण्णो- निर्विण्णः-निविष्टः। उत्त० २२४।

गिरिवुज्झमाणि- अश्ववादीनां नीयमाना। आचा० ४१३।

गिरिवुड्ढित्ता- निर्वेष्टय-हापयित्वा। सूर्य० १२।

गिरिवुड्ढेमाणे- निर्वेष्टयन्-हापयन्। सूर्य० १२, ३८।

गिरिवेण्ति- समर्पयति। निशी० ३३२ अ।

गिरिवेदनं- आख्यानम्। निशी० ७३ आ।

गिरिवेदे- निवेदयित्वा। ओघ० ५७।

गिरिवेसण- महाघरस्स परिवाघरा गिरिवेसणं। निशी० १८७  
अ। आसमंतावसा समादि सत्थद्वानां। निशी० २२९ अ।

निशी० १२७ आ। गृहम्। निशी० ७३ अ।

**णिव्वक्खा-** गिल्लज्जा। निशी० १७ अ।  
**णिव्वण-** निर्घणः छिद्रग्रन्थ्यादिदोषरहितः। जम्बू० २४१।  
**णिव्वत्तणाहिकरणिया-** यच्चादितस्तयोर्निर्वर्तनं सा निर्वर्तना-धिकरणिकी। स्था० ४१।  
**णिव्वया-** निर्घताः महाव्रताणुव्रतविकलाः। जम्बू० १७१।  
**णिव्ववितियं-** उण्हवेऊण। निशी० ६० अ।  
**णिव्वहणा-** निर्वहणा-वधूवरम्। बृह० २४ आ।  
**णिव्वहति-** विफलीभवति। निशी० ८ अ।  
**णिव्वाघाडमं-** गिरुअस्स-अखुतदेहस्स णिव्वाघाडमं। निशी० ५३ अ। निर्व्याघातिमं-व्याघातिमान्निर्गतं स्वाभा-विकम्। सूर्य० ३६६।  
**णिव्वाण-** घनघातिकर्मतुष्टयक्षयेण केवलज्ञानावाप्तिः। सूत्र० १९८। सम० १५४।  
**णिव्वाय-** निर्वातः-निर्व्याघातः। ज्ञाता० ४१।  
**णिव्वाव-** निर्वापकथा-दशपञ्चरूप्यका इयञ्च व्यञ्जनभेदादि-रिति प्रशंसनं द्वेषणं वा। भक्तकथाया द्वितीयो भेदः। आव० ५८१। निशी० ३३ आ।  
**णिव्वावकहा-** पक्वापक्वान्नभेदा व्यञ्जनभेदा वेति निर्वापकथा। स्था० २०९।  
**णिव्विड्डं-** निर्व्विष्टं ससेवम्। दशवै० १८१।  
**णिव्विड्डकप्पड्ढिती-** निर्व्विष्टा-आसेवितविवक्षितचारित्रा अनुपहारिका इत्यर्थः, तत्कल्पस्थितिर्यथा प्रतिदिनमायाममात्रं तपो भिक्षा तथैवेति। स्था० १६७।  
**णिव्विण्णकामभोगो-** निर्व्विण्णकामभोगः। आव० ५१२।  
**णिव्विण्णो-** निर्व्विण्णः। आव० ३४३।  
**णिव्विन्नवरा-** निर्व्विण्णा वराः परिणेतारो यस्याः सा निर्व्विण्ण-वराः। ज्ञाता० २५०।  
**णिव्वियतिए-** निर्व्विकृतिकः-निर्गतघृतादिविकृतिकः। औप० ४०।  
**निव्विसओ-** निर्व्विषयः। आव० ५२।  
**णिव्विसताणि-** निर्व्विषयीकृतौ। आव० ३५१।  
**णिव्विसति-** प्रविशति। निशी० २९४ आ।  
**णिव्विसमाणो-** पच्छित्तं वहंतो। निशी० १३९ अ।  
**णिव्विस्सो-** अमंसमक्खी। निशी० १४० अ।  
**णिव्वूड-** निर्व्वृतिहेतुत्वात्। निर्व्वृत्तिः-क्षीणमोहावस्थेति। सूत्र १९७। निर्व्वृत्तिः-निर्वाणं-सकलकर्ममलापगमनेन स्वस्व-रूपलोभतः परमं स्वास्थ्यं तद्धेतुः

सम्यग्दर्शनाद्यपि कारणे कार्योपचारात् निर्व्वृत्तिः। प्रज्ञा० ४।  
**णिव्वुड्ढी-** निर्व्वृद्धि वृद्धेरभावः। जम्बू० ४३७।  
**णिव्वुती-** निर्व्वृत्तिः-मथुरायां पर्वतराजाः सुता। आव० ३४४।  
**णिव्वुतो-** निर्व्वृतः-मुक्तिपदवीमधिरूढः। बृह० २३१ अ।  
**णिव्वुया-** निर्व्वृता-स्वस्थीभूतेन्द्रिया। बृह० २१७ अ।  
**णिव्वेडेइ-** निर्व्वेष्टयति-मुञ्चति। सूर्य० ४९।  
**णिव्वेडेउं-** उत्तरं दातुम्। आव० ७०६।  
**णिसंतं-** निशान्तं-अवधारितम्। सूत्र० १४४।  
**णिसंत-** गिरय। नि० चू २०८ आ।  
**णिसंते-** नितरां-अतिशयेन शान्तः-उपशमवान्, अन्तः क्रोधपरिहारेण बहिश्च प्रशान्ताकारतया निःशान्तः। उत्त० ४६।  
**णिसंतपडिणिसंत-** निशान्तप्रतिनिशान्ते-अत्यन्तं भ्रमणाद्वि-रते निशान्तेषु वा गृहेषु प्रतिनिशान्ते-विश्रान्ते-निलीनेअ-त्यन्तजनसञ्चारविरह इत्यर्थः। ज्ञाता० ९८।  
**णिसग्ग-** पारिद्धावणियासमिती। निशी० ३१ अ।  
**णिसज्जण-** जंघा। निशी० १५५ आ।  
**णिसज्जा-** निषधा-समपुतोपवेशनादिका। प्रश्न० १०७।  
**णिसड्डं-** णदत्तं। निशी० २४६ आ, २९१ अ। जं णिदेज्जं दिण्णं तं णिसड्डं। निशी० १०५ आ।  
**णिसड्डतेण-** अक्कंतिया वेला अवहरंति। निशी० १६।  
**णिसड्डा-** खरा। निशी० २४५ आ। निस्सृष्टा-निर्लज्जा। बृह० १७९ आ।  
**णिसडे-** निषधः-वृषभः। जम्बू० ३०८। यादवविशेषः। ज्ञाता० २०३। निषधः-वर्षधरपर्वतः। जम्बू० ३०८।  
**णिसण्णो-** निषण्णः-उपविष्टः। ओघ० २२।  
**णिसम्म-** निशम्य-हृदये परिणमय्य। जीवा० २४३।  
**णिसह-** निषधः-उत्तरकुरौ प्रथमद्रहनाम। जम्बू० ३५५, ३०४। नितरां सहते स्कन्धे पृष्ठे वा समारोपितं भारमिति निषधो-वृषभः, तत्संथानसंस्थितानि-वृषभसंस्थितानि निषधाश्चत्र देवाधिपत्यं परिपालयति, तेन निषधाकारकूट-योगान्निषधदेवयोगाद्वा निषधः। जम्बू० ३१०।  
**णिसहकुडे-** निषधकूटं-नन्दनवनकूटनाम। जम्बू० ३६७।

निषधवर्षधराधिपवासकूटम्। जम्बू० ३०८।  
**णिसा-** निशेव नित्यान्धकारत्वात् निशा-नर्कभूमिः। सूत्र० ४०१।  
**णिसाओ-** निषादः-ब्राह्मणेन शूद्र्यां जातिः। उत्त० १८२।  
**णिसाते-** निषीदन्ति स्वरा यस्मिन् स निषादः। स्था० ३९३।  
**णिसामिअ-** निशम्य-आकर्ण्य  
 तत्राक्षिप्तचित्ततयेतिभावः। उत्त० ४३४।  
**णिसासमणो-** निःश्वसन्तीव अधोगमनसाधर्म्यात्  
 तद्गतज-ननिःश्वाससाधर्म्याद्वा निःश्वसन्ती। ज्ञाता० १५८।  
**णिसिद्धं-** निषेधनं-निषेधम्। बृह० २२३ आ। निसृष्टम्।  
 आव० ३६७। अनुज्ञातम्। पिण्ड० ११३।  
**णिसिरणा-** परिद्वावणिया। निशी० ८७ आ।  
**णिसिरामो-** प्रयच्छामः। आचा० ३५०।  
**णिसिरिय-** निसृज्ज-पातयित्वा। सूत्र० ३१४।  
**णिसीयणं-** उवविसणं। निशी० ६० अ।  
**णिसीयति-** निषीदति-उपविशति। जीवा० २०१।  
**णिसीयव्वं-** निषीदितव्यं-उपवेष्टव्यं  
 संदंशकभूमिप्रमार्जनादि-न्यायेनेत्यर्थः। ज्ञाता० ६१।  
**णिसीहं-** अपकाशम्। निशी० २३ अ, १८७ अ।  
**णिसीहादि-** छेदसुत्तं। निशी० ३० आ।  
**णिसीहिया-** समुण्ढाण णिमित्तं णिसीहिया। निशी० २२३ अ। नैषेधिकी-निषीदनस्थानम्। जीवा० २०५।  
 निषदनस्थानम्। जम्बू० ५१।  
**णिसुढंते-** आद्रीभवत्सु। निशी० २४५ आ।  
**णिसेगो-** शुकपुद्गलाहरणलक्षण ओजः। बृह० १०४ अ।  
**णिसेज्जणा-** पुत्ता। निशी० २४७ अ।  
**णिसेज्जा-** निषद्या। आव० २२७। निषद्या स्त्रीभिः-कृता  
 माया, स्त्रीव सती वा। सूत्र० ११०। निषद्या-प्रणिपत्य  
 पृच्छा (गौतमस्य तिसुः अनियताः शोषाणां। आव०)  
 एगाए निसज्जाए एक्कारस अंगा चोद्धसहिं।  
 चोद्धसपूव्वाणि नं०)  
**णिस्संचार-** द्वारापद्वारैः जनप्रवेशनिर्गमवर्जितः।  
 ज्ञाता० १४९।  
**णिस्संसो-** नृशंसाः-निःशूकः, निष्क्रान्तो वा शंसायाः  
 श्लाघाया इति। प्रश्न० ५। नृशंसः-निस्तृशो जीवान्।

विहिंसन् मनागपि न शङ्कते, निशंतो वा परप्रशंसा  
 रहितः। उत्त० ६५६।  
**णिस्सरणं-** प्रस्खलम्। बृह० १५८ आ।  
**णिस्सरणणंदी-** निःसरणेन-गच्छादेर्निर्गमेन नन्दति यो  
 नन्दिर्वा यस्य सः। स्था० २१७।  
**णिस्साकरउ-** जो किंचि अववादपदं लभिता मुसलं  
 पक्खिवइ। निशी० १४९ अ।  
**णिस्साणं-** आलंबणं। निशी० १०२ आ।  
**णिस्सारो-** निस्सारः। आव० ३५३।  
**णिस्सासनिरुंभण-** निःश्वासं निरुणद्धि-नासिकां दृढं  
 गृह्णाति निःश्वासनिरोधार्थम्। ओघ० ८४।  
**णिस्सीला-** निश्शीलाः-गताचाराः। जम्बू० १७१।  
**णिस्सेस-** निःश्रेयसो-मोक्षः। उत्त० ३०५। निःश्रेयसः-  
 निश्चितकल्याणः। राज० १०२।  
**णिहए-** निहतः-अपहतसर्वसमृद्धिः। जम्बू० २७७।  
**णिहइ-** निहत्य-निवेश्य। जम्बू० १८७।  
**णिहणाहि-** निजहि। आव० ३९६।  
**णिहणिऊण-** निहत्य। दशवै० ५९।  
**णिहया-** णिक्खाया। निशी० ७२ आ।  
**णिहरति-** निर्हरति-अपनयति उद्धरति। सूत्र० ३१३।  
**णिहा-** कोहमाणादि। दशवै० ३३ आ।  
**णिहाणपउत्तं-** निधानप्रयुक्तम्। आव० ३५७।  
**णिहाय-** निधाय-परित्यज्य। सूत्र० २४०, ४१०।  
**णिहालेयव्वं-** निभालयितव्यः। उत्त० ५१।  
**णिहिअ-** निहितः-उप्तः। जम्बू० २४३।  
**णिहिणिउं-** निहितुम्। उत्त० २२१।  
**णिहितं-** पक्खितं। निशी० ८२ आ।  
**णिहिरण्णो-** निर्हिरण्यः-असारः। ओघ० १८८।  
**णिहुए-** निभृतः-अनुयुक्तः। सूत्र० १७३।  
**णिहुओ-** प्रशान्तवृत्तिः। औप० ४८।  
**णिहुय-** उपशान्तः। प्रश्न० ४३।  
**णिहुया-** करचरणिदिण्णु जे सत्था अच्छंति ते णिहुया।  
 निशी० ९ अ।  
**णिहे-** निहा-माया। सूत्र० १७३।  
**णिहोडणा-** निवारणम्। व्यव० २४३।  
**णीअदुवारं-** नीचद्वारं-नीचनिर्गमप्रवेशः। दशवै० १६७।  
**णीइ-** निर्गच्छति। ओघ० १५९। निरेति-निर्गच्छति।

आव० ११२। निस्सरति। आव० १०२।  
 णीइआ- गुल्मविशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
 णीणवेंति- प्रापयन्ति। बृह० १४२ आ।  
 णीणाविता- आनायिता। आव० ३५७।  
 णीणावितो- निष्काशितः-दापितः। उत्त० १६८। निष्का-  
 शितः। आव० ३१८।  
 णीणाविय- अपनायितः। आव० ४३४।  
 णीणिओ- नीतः। आव० २०४।  
 णीणितो- णिव्वूढो-घाडितेत्यर्थः। निशी० ३१ आ।  
 णीणियं- निष्काशितम्। आव० ४०९। आनीतम्। उत्त०  
 १५९।  
 णीणिया- चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषाः। प्रज्ञा० ४२।  
 णीणेइ- निष्काशयति। उत्त० ४५५।  
 णीणेऊण- निष्काशय। उत्त० ११८।  
 णीणेति- निष्काशयति। आव० २९७।  
 णीणेतुं- निर्गमितुम्। आव० ३४८।  
 णीणेहि- व्यपनय। आव० २२६।  
 णीता- नेत्रा-स्वस्थानं प्रापिता। ज्ञाता० २२१।  
 णीति- णिगगच्छति। निशी० ३४ आ।  
 णीती- नीतिः निर्गमप्रवेशरूपा। आव० ३४६।  
 णीध- निर्गच्छत। आव० १९१।  
 णीमे- नीपः, वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
 णीरए- नीरजाः निर्गततरजः  
 कल्पसूक्ष्मवालाग्रोऽपकृष्टधान्यरजः कोष्ठागारवत्।  
 जम्बू० ९६।  
 णील- नीलः, मरकतमणिः। जम्बू० ११३।  
 णीलवंतद्देहे- उत्तरकुरुषु नीलवदद्रहो नाम द्रहः। जम्बू०  
 ३२९।  
 णीलवंते- नीलवान् दिग्हस्तिकूटं द्वितीयः। जम्बू० ३६०।  
 जम्बूद्वीपे द्वीपे नीलवन्नाम्ना द्वितीयः  
 वर्षधरपर्वतः। जम्बू० २७७।  
 णीली- गुच्छविशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
 णीलीगुलिया- नीलीगुलिका-नीलीगुटिका। जम्बू० ३३।  
 णीलीभेए- नीलीभेदो-नीलीच्छेदः। जम्बू० ३३।  
 णीले- अष्टाशीतौ महाग्रहे पञ्चविंशतितमः। स्था० ७९।  
 नीलवत्कूटं-नीलवद्वक्षस्काराधिपकूटम्। जम्बू० ३७७।  
 णीलोभासे- अष्टाशीतौ महाग्रहे पञ्चविंशतितमः। स्था०

७९।  
 णीवातय- वनस्पतिविशेषः। भग० ८०३।  
 णीवट्टमाणो- निवर्त्तमानः। उत्त० १३९।  
 णीवारे- निवारः-सूकरादीनां पशूनां  
 वध्यस्थानप्रवेशनभूतो-भक्ष्यविशेषः। सूत्र० २५८।  
 निवारः-भक्ष्यविशेषः। सूत्र० ११४।  
 णोसकं- निशङ्कं-अविद्यमानसन्देहम्। भग० ५४।  
 णीसङ्ग- निसृष्टं-प्रकामम्। बृह० १२९ आ। निसृष्टः-नार-  
 केर्विमुक्त आत्यन्तिको वा। प्रश्न० २०।  
 णीसन्दं- निष्पन्दः। प्रज्ञा० ६।  
 णीसरइ- निःसरति। दशवै० ६१।  
 णीसवमाणो- निश्रवयन्-यस्मात्सामायिकं प्रतिपद्यते  
 तदावरण कर्मनिर्जयन्। आव० ३४०।  
 णीसहो- निस्सहः। उत्त० १९३।  
 णीहट्टु- निःसार्य। आचा० ४०१।  
 णीहारि- निर्हारि-प्रबलो गन्धप्रसरः व्यापि वा। आव०  
 २३१।  
 णीहारिम- निहारिमा-दूरदेशगामिनी। औप० ८।  
 यद्वसतेरेक-देशे विधीयते तत्ततः शरीरस्य निर्हरणात्-  
 निस्सारणान्निर्हा-रिमम्। स्था० ९४।  
 यत्पादपोषगमनमाश्रयस्यैकदेशे विधी-यते  
 तन्निर्हारिमम्। भग० ६२५।  
 णीहारी- नीहारी-अतिक्रामी। औप० ७८।  
 णीहि- निर्गच्छ। आव० ३९४।  
 णीहू- अनन्तकायभेदः। भग० ३००, ८०४।  
 णीहूय- कन्दविशेषः। उत्त० ६९१।  
 णीहूया- निर्व्यापारा। व्यव० २५४।  
 णुज्झ- नुद्य-सौंदर्यम्। व्यव० १७३ आ।  
 णुवन्नो- अनुपन्नस्त्वग्वर्तितः। बृह० २३७ आ।  
 णुवोहेज्जा- उपबृंहयेत्-परिणामवृद्धिं कुर्यात्। दशवै० ४८।  
 णूणं- नूनं एवमर्थे। भग० १४। नूनं-  
 उपमानावधारणतर्कप्रश्न-हेतुषु। प्रज्ञा० २४६।  
 निश्चितम्। ज्ञाता० ६६।  
 णूमं- दवियं, भिन्नं। निशी० ७० आ। माया। सूत्र० ३४।  
 गहनं, मायेति। सूत्र० ५२। प्रच्छन्नं गिरिगुहादिकम्।  
 सूत्र० ८९, ३०७। न्यवमम्। सम० ७१। सूत्र० ३०७।  
 णूमए- आच्छादयेत्। बृह० १७७ आ।

णूमगिहं- भूमिघरं। निशी० ६९आ।  
 णूमियं- गोपितम्। उत्त० ११५।  
 णूमैति- नूमन्ति-गोपयन्ति। ज्ञाता० २२७।  
 णूमेस्सति- स्थापयिष्यति। निशी० १५४अ।  
 णैति- निर्गच्छन्ति। आव० ६३२।  
 णे- आत्मनिर्देशः। निशी० ३३०। अस्माकम्। बृह० ८८।  
 नो-अस्माकम्। सूत्र० ११३। नः। भग० १००।  
 णेउणिअ- नैपुण्यं-आलेख्यादिकला लक्षणम्। दशवै०  
 २४९।  
 णेउणियवत्थु- निपुणं वस्तु-अनुप्रवादपूर्वं  
 आलापकविशेषः। उत्त० १६३।  
 णेउरं- नुपुरं-पादभूषणम्। आव० ३४९।  
 णेउरपंडिया- नुपुरपण्डिता। उत्त० ४९६।  
 णेउरा- द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः। प्रज्ञा० ४१।  
 णेक्कंतितो- व्यतिक्रमः। निशी० २०२अ।  
 णेक्कारो- जुगुच्छितो, कोलिगजातिभेदो णेक्कारो।  
 निशी० ४३आ।  
 णेगमं- वणियवग्गो जत्थ वसति तं णेगमं। निशी० ७०  
 आ। निगमेषु वा भवो नैगमः, निगमाः-  
 पदार्थपरिच्छेदाः। आव० २८३। न एकं नैकं-प्रभूतानि,  
 नैकैर्मानैः-महासत्ता-सामान्यविशेषज्ञानैर्मिमीते  
 मिनोतीति वा नैकमः। आव० २८३। नैकेन-  
 सामान्यविशेषग्राहकत्वात् तस्यानेकेन ज्ञानेन मिनोति-  
 परिच्छिनत्तीति नैकमः, अथवा निगमाः-निश्चिता-  
 र्थबोधास्तेषु कुशलो भवो वा नैगमः, अथवा नैको गमः-  
 अर्थमार्गो यस्य स प्राकृतत्वेन नैगमः। स्था० १५२।  
 नैगमः। प्रज्ञा० २८४। नयविशेषः। प्रज्ञा० ३२७।  
 णेगामोसा- न एके आमर्शाः अनेकामर्शाः, अनेकस्पर्शाः।  
 ओघ० ११०।  
 णेड्डं- नीडम्। आव० १८९। गृहम्। आव० ३९५।  
 णेति- उत्पादयति, करेति। निशी० २०५आ।  
 णेत्तं- नेत्रम्। सूत्र० ३१२।  
 णेदूर- म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५।  
 णेमा- भूमेरूर्ध्वं निष्क्रामन्तः प्रदेशाः। जम्बू० ४२। णेमा  
 नाम भूमिभागादूर्ध्वं निष्क्रामन्तः प्रदेशाः। जम्बू० २३।  
 णेमी- बाह्यपरिधिः। जम्बू० ३७। नेमिः-बाह्यपरिधिः।  
 जीवा० १९२।

णेमिपासेसु- नेमिपार्श्वेषु। जम्बू० २०९।  
 णेमी- नेमिः-कृतिकर्मदृष्टान्ते भगवान्। आव० ५१५।  
 नेमिः-धारा। जम्बू० २०४।  
 णेम्मं- निभ-सदृशम्। प्रश्न० १३४। विज्जादिएहिं  
 रुक्खादी णमिज्जंतीति णेम्मं वट्टं सिक्खा विज्जंतस्स  
 अंगाणि णमि-ज्जंति। निशी० ७१अ।  
 णेयगहणत्तणं- ज्ञायते इति ज्ञेयं-धर्मास्तिकायादि  
 तद्गहनत्वं गहवरत्वं ज्ञेयगहनत्वम्। आव० ५९७।  
 णेयव्वं- नेतव्यं-संवेदनविषयतां प्रापणीयं प्रापयितव्यम्।  
 उत्त० ८। नेतव्यं-स्मृतिपथं प्रापणीयः। जम्बू० २७।  
 णेयाउय- न्यायेन चरति-प्रवर्तत इति नैयायिकः-  
 न्यायोपपन्नः। उत्त० १८५। निश्चित आयो-लाभो  
 न्यायः-मुक्तिरित्यर्थः स प्रयोजनमस्येति नैयायिकः।  
 उत्त० २१३।  
 णेवत्थं- नेपथ्यं-देशनेपथ्यं-  
 स्त्रीपुरुषाणामाभूषणसम्बन्धीवि-चारः।  
 देशकथायाश्चतुर्थो भेदः। आव० ५८१।  
 णेवत्थकहा- तासामेव अन्यतमायाः  
 कच्छाबन्धादिनेपथ्यस्य यत्प्रशंसादि नेपथ्यकथा।  
 स्था० २०९।  
 णेवालं- नेपालं-देशविदेशः। उत्त० १०६।  
 णेसज्जिते- नैषद्यिकः-समपदपुतादिनिषद्योपवेशी।  
 स्था० ३९७।  
 णेसत्थिएसु- सालिमादियं पोतिएसु। निशी० ३२७आ।  
 णेसप्प- निधौ नैसर्पनामनि। जम्बू० १५८। नैसर्पः-नव-  
 निधौ प्रथमः। स्था० ४४८।  
 णेहावगाढ- स्नेहावगाढं-स्नेहव्याप्तम्। ज्ञाता० १९९।  
 णेहिं- तैः-एतैः। उत्त० ३५६। तैः। आव० ११६।  
 णोइंदियओ- मणो। निशी० ८५आ।  
 णोमालिआगुम्मा- नवमालिकागुल्माः। जम्बू० ९८।  
 णोमालिय- गुल्मविशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
 णोल्लिय- नोदिता-स्वदेशगमनवैमुख्येन  
 यमपुरीगमनाभिमु-खीकृता। ज्ञाता० १६८।  
 णोसुअ- नोश्रुतं प्रत्याख्यानम्। आव० ४७९।  
 ण्हं- निपातः पूरणार्थो वर्तते। आव० १६७। वाक्यालङ्कारे  
 अवधारणे वा। सूत्र० ४१०। प्रश्न० २०।  
 णहवणं- स्नपनं-सौभाग्यपुत्रादयर्थं वध्वादेर्मज्जनम्।

प्रश्न० ३९।

ण्हाण- स्नानम्। आव० ४१, ८३। स्थयात्रा स्नानं वा।

बृह० १८७ अ। अर्हत्प्रतिमास्नपनम्। बृह० ६१ आ।

ण्हाणगोल्लो- स्नानीयाद्रः। उत्त० २१९।

ण्हाणपीठं- स्नानपीठम्। आव० ३५६। ओवारा, कामजलं।

निशी० ८३ आ। स्नानपीठं-स्नानयोग्यं आसनम्।

जम्बू० १८९।

ण्हाणमल्लिआ- स्नानयोग्या मल्लिकाविशेषः। जम्बू० ३५।

ण्हाणाई- स्नानादि। ओघ० १५१।

ण्हाणि- स्नापय। णिण्ड० १२४।

ण्हाणिओ- स्नपितः। आव० २५८।

ण्हाणोवदाइ- स्नानोदकदायिका। जाता० ११७।

ण्हारु- स्नायवः शरीरान्तर्वर्धाः। जाता० २२२। भग० ४६९।

स्नायूनि। सम० १५०। स्नायु-शेषशिरा। जीवा० ३४।

ण्हारुणि- स्नायुः। प्रश्न० ८। स्नायवः-शरीरान्तर्वर्धाः।

जम्बू० २०१।

ण्हाविई- नापिती। आव० ३९६।

ण्हाविओ- नापितः-क्षौरकारः। आव० ४२६।

ण्हाविता- कम्मजुंगिताविसेसो। निशी० ४३ आ।

ण्हाविय- नापितः-। आव० २२४। नापितः-मुण्डनकारः।

दशवै० १०५। निशी० ९ आ।

ण्हावियसालिग- नापितशाला। आव० ३९०।

ण्हुया- स्नुषा-वधूः। दशवै० ९७।

णहे- अनयोः। उत्त० ३९४।

ण्होरगं- निहोरकम्। बृह० १२ अ।

- X - X - X - X

त

त- तावत्। प्रजा० ७। तदा। आव० ३५८।

तंगंधं- तद्गन्धं तादृग्गन्धवत्। ओघ० २२३।

तंजहा- तद्यथा-वक्ष्यमाणभेदकथनप्रकाशनार्थः। प्रजा०

७। तद्यथा-प्रतिज्ञातार्थोदाहरणम्। आचा० १३।

तद्यथा। सम० १५०। तद्यथा-उपप्रदर्शनार्थः। आचा० १३०।

तंडवेति- ताण्डवयति ताण्डवरूपं नृत्यं करोति। जीवा०

२४७।

तंडुल- यूपविशेषः। सूर्य० २९३।

तंडुलीयक- हरितविशेषः। प्रजा० ३१।

तंत- तन्यतेऽनेनास्मादस्मिन्निति वा अर्थ इति तन्त्रम्।

आव० ८६। तन्त्रं-तुरीवेमादिः। भग० २५४। तान्तः-कायेन

खेदवान्। जाता० १३९। तान्तः-तरकाण्डकाङ्क्षावान्।

जाता० २२७। तान्ता-मनःखेदेन। विपा० ४१।

तंतमस्सति- आक्रन्दति। दशवै० ११।

तंतयं- तन्त्रं-वेमविलेखन्याञ्छनिकादि, तस्माज्जातं

तन्त्रजं, उभयत्र वस्त्रं कम्बलो वा। उत्त० १२२।

तंतवा- चतुरिन्दियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२। प्रजा० ४२।

तंतिसमं- नट्टभेओ। निशी० १ अ। तन्त्रीसमं-वीणा-

दितन्त्रीशब्देन तुल्यं मिलितं च। स्था० ३९४।

तंती- तन्त्री वीणा। जम्बू० ६१। सूर्य० २६७। प्रजा० ८९।

जीवा० २१७। तन्त्री-वीणाविशेषः। प्रश्न० १५९।

तंतु- तन्यते भवोऽनेनेति तन्तुः-भवतृष्णा। उत्त० ५०५।

तंतुअं- तन्तुकम्। आव० ३५५।

तंतुग्गयं- तूरिवेमादेरुत्तीर्णमात्रम्। भग० ३७६।

तंतुवाए- तन्तुवायः। अनुयो० १४९।

तंतुवाय- पटकारकः। प्रश्न० ३०। तन्तुवायः-

शाटिकाकारः। आव० ४२१।

तंतुवायसाला- कुविन्दशाला। भग० ६६३।

तंतुवाया- तन्तुवायाः-कुविन्दाः। प्रजा० ५६।

तंतू- सूत्राष्टिका। बृह० ९ आ।

तंदुल- तन्दुलं-औषधिः। आव० १३१। तन्दुला-निस्त्व-

चितकाणाः। जम्बू० १०४।

तंदुलकणिया- तन्दुलकणिका। आव० ८५५।

तंदुलपलम्बं- भुग्नशाल्यादितन्दुलानिति। आचा० ३५७।

तंदुलमच्छा- तन्दुलमत्स्यः मत्स्यविशेषः। जीवा० ३६।

जलचरविशेषः। जीवा० १२९। प्रजा० ४४।

तंदुलीयकं- हरितभेदः। आचा० ५७। हरितविशेषः। जीवा० २६।

तंदुलेज्जग- वनस्पतिविशेषः। भग० ८०२।

तंदुलेज्जगतणे- हरितविशेषः। प्रजा० ३३।

तंदुलेयकं- हरितविशेषः। उत्त० ६९२।

तंदुलोदयं- तन्दुलोदकम्। आव० ६२०।

तंबं- ताम्रं-शुभ्रं(शूल्वं)। प्रश्न० १५२। ताम्रं-पृथिवीभेदः।

आचा० २९। ताम्रा-रक्ताः। जम्बू० ११०। ताम्रम्। प्रजा०

२७।

तंबकरोडयं- ताम्रकरोटकम्। प्रजा० ३६०।

तंबगाइ- चतुरिन्द्रियजीवभेदः। उत्त० ६९६।  
 तंबागर- ताम्राकरः-यस्मिन्निरन्तरं महामूषास्वयोदलं  
 प्रक्षिप्य ताम्रमुत्पाद्यते सः। जीवा० १२३।  
 तंबायं- तम्बाकं ग्रामः। आव० २०७।  
 तंबिता- ताम्रमयाः। निशी० ४३ आ।  
 तंबिया- ताम्राः। आव० ३५६।  
 तंबे- ताम्रम्। प्रजा० ३६०।  
 तंबोलीआ- नारुकाया नवमभेदः। जम्बू० १९३।  
 तंबोली- ताम्रबूली-नागवल्ली। जम्बू० ४६। जीवा० २००।  
 तंससण्ठाणपरिणया- त्र्यस्रसंस्थानपरिणताः। प्रजा० ११।  
 तंसे- संस्थानविशेषः। भग० ८५८। त्र्यस्रःसंस्थानविशेषः।  
 प्रजा० २४२।  
 तअ- ततः-विस्तीर्णः, विस्तृतनामकः। जम्बू० २१९।  
 तइओ- तृतीयः। बृह० २२५ अ।  
 तइयकसाया- तृतीयकषायाः-अप्रत्याख्यानावरणः। आव०  
 ७८।  
 तइया- सञ्जातत्वचः। ज्ञाता० ११९।  
 तउअ- पृथिवीभेदः। आचा० २९।  
 तउयं- त्रपुक्-वड्गम्। प्रश्न० १५२। त्रपु। प्रजा० २७।  
 तउस- त्रपुषः। दशवै० ६१। त्रपुषम्। प्रजा० ३७।  
 तउणमिंजगा- त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। उत्त० ३९५।  
 तउसमिजिया- त्रपुषभिज्जिका त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः।  
 जीवा० ३२।  
 तउसी- वल्लीविशेषः। प्रजा० ३२। वनस्पतिविशेषः। भग०  
 ८०३।  
 तओ- तक्रः। उत्त० ८६। तदनन्तरं तक्रो वा प्राणी। उत्त०  
 १८२।  
 तओसिमिंजिया- त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। प्रजा० ४२।  
 तकारथकारदकारधकारनकारप्रविभक्ति- नामा  
 अष्टादशो नाट्यविधिः। जीवा० २४७।  
 तकेत- परम्परतो। निशी० २१ आ।  
 तक्क- तर्कः-विमर्शः। भग० ५९। स्था० ४६६। तर्कर्ण  
 तक्को-विमर्शः अवायात् पूर्वा इहाया उत्तरा प्रायः शिरः  
 कण्डूयनादयः पुरुषधर्मा। स्था० २१। तक्रं-तक्राख्यम्।  
 पिण्ड० १६८।  
 तक्कणं- तर्कणं प्रार्थनम्। बृह० ३१२ अ।  
 तक्कर- तस्कराः-सर्वदा चौर्यकारिणः। जम्बू० ६६। चौरः।

ज्ञाता० ८०। तदेविकं करोतीति तक्करो। निशी० ३८  
 आ। तदेव कुर्वन्तीति तस्कराः-सर्वकालं चौर्यकारिणः।  
 उत्त० ३१२।  
 तक्करघराणि- तस्करगृहाणि-तस्करनिवासान्  
 शृङ्गाटकादीनि प्राग् व्याख्यातानि। उत्त० ८१।  
 तक्करट्टाणाणि- तस्करस्थानानि-  
 शून्यदेवकुलागारादीनि। ज्ञाता० ८१।  
 तक्करत्तणं- तस्करत्वं-अधर्मद्वारस्य नवम नाम।  
 प्रश्न० ४३।  
 तक्करपओगे- तक्करप्रयोगः चौराणां हरणक्रिया  
 प्रेरणम्। आव० ८२२।  
 तक्कलि- वलनाकारवृक्षविशेषः। भग० ८०३।  
 तक्कलिमत्थए- तक्कली-कन्दली तन्मस्तकं-  
 तन्मध्यव-र्त्तीगर्भः। आचा० ३४९।  
 तक्कली- वलयविशेषः। आचा० ५७। प्रजा० ३३। कन्दली।  
 आचा० ३४९।  
 तक्कसेणे- अतीतायां उत्सर्पिण्यां पञ्चमः कुलकरः।  
 स्था० ५१८।  
 तक्का- तर्का स्वकीयविकल्पना। सूत्र० ३७। तर्कः एवमेव  
 चायमर्थ उपपद्यते इत्यादिरूपा। दशवै० १२५।  
 तक्कारो- तदेव-चौर्यं करोतीत्येवंशीलः तस्करः। प्रश्न०  
 ४६।  
 तक्कि- याञ्चा। बृह० १८० अ।  
 तक्किया- तर्कयित्वा-पर्यालोच्च। आचा० २३७।  
 तक्की- उपजीवकः। बृह० २६९ अ।  
 तक्कोयणं- तक्रोदनं-तक्रसहितमोदनम्। ओघ० ४९।  
 तक्खणओलुग- तत्क्षणमेव-प्रव्रजामीतिवचनश्रवणक्षण  
 एव अवरुणं-म्लानम्। भग० ४६७।  
 तक्खलम्हासती- तत्स्थानवर्ती। निशी० २०८ अ।  
 तक्षः- रथः। उत्त० ४१३। सूत्रधारः। अनुयो० २२३।  
 तक्षकः- रथकारः। अनुयो० ४१३।  
 तगर- सुगन्धिद्रव्यम्। अनुयो० १५४।  
 तगए- गन्धद्रव्यविशेषः। भग० ७१३। प्रश्न० १६२।  
 ज्ञाता० २३२। गन्धद्रव्यम्। जीवा० १९१। जम्बू० ३५।  
 तगरसमुगगयं- तगरसमुदगकम्। जीवा० २३४।  
 तगरा- सुव्यवहारकाचार्यस्थानम्। व्यव० २५७ अ।  
 नगरीविशेषः। उत्त० ९०, १००।

तगरायडं- तगरासमीपं नगरम्। अनुयो० १४९।

तग्गयं- तद्गतं-तत्संसूचकम्। जीवा० २६९।

तच्चंपि- त्रिरपि। आव० २६२।

तच्च- तथ्यां-अविपरिता। उत्त० ४७२। अवितथा। उत्त०

५५५। तत्त्वरूपः ऐदम्पर्यसमन्वितः। ज्ञाता० १७७।

तच्चकम्म- तथ्यानि-सत्फलानि अव्यभिचारितया यानि  
कर्माणि क्रियास्तत्। उपा० ४०।

तच्चणिओ- तच्चनीकःबौद्धः। दशवै० ५४। आव० ४११।

तच्चणिय- तच्चनीकः बौद्धः। दशवै० ४७।

तच्चणियसङ्को- तच्चनीकश्राद्धः। आव० ७९९।

तच्चणिओ- तच्चनीकः बौद्धः। आव० ४१९। तच्चनीकः  
बौद्धः। आव० २९५। दशवै० ५३।

तच्चनिकः- बौद्धः। आव० ५६५।

तच्चन्नि- तच्चनीकः बौद्धः। औप० ७४।

तच्चा- तत्त्वानि-वस्तूनामैदम्पर्याणि। स्था० ४९१।

तच्चावातो- तत्त्ववादी-शतानीकराजो धर्मपाठकः। आव०  
२२२।

तच्चावातेति- तत्त्वानि-वस्तूनामैदम्पर्याणि तेषां  
वादस्त-त्ववादः, तथ्यो वादः-सत्यो वादस्तथ्यवादः।  
स्था० ४९१।

तच्चासत्तराङ्गिदिया- सप्तरात्रिन्दिवानि-अहोरात्राणि यासु  
ताः सप्तरात्रिन्दिवास्ताश्च तिस्रो भवन्तीति। सम० २१।

तच्चिण्णगा- चरगविसेसो। निशी० ३१ अ।

तच्चित्ते- तस्यामेव चित्तं-भावमनः सामान्येन वा मनो  
यस्य स तच्चित्तः। विपा० ५३।

तच्छण- तक्षणं-क्षुरादिना त्वचस्तनूकरणम्। विपा० ४१।  
त्वचः-क्षुरप्रादिना तनूकरणम्। ज्ञात० १८३।

तच्छमान- तक्षणुवान्-तनूकुर्वन्। अनुयो० २२३।

तच्छिओ- तक्षितः त्वगपनयनतः। उत्त० ४६१।

तजाए- तज्जातः सट्क् शब्दैः आचार्य प्रत्युत्तरदाता  
शिष्याः। आव० ७२६।

तज्जङ्- तर्जयति-अङ्गुलिशिरश्चालनेन तिरस्करोति।  
भग० १६६।

तज्जण- तर्जन्-ज्ञास्यसि रे इत्यादि वचनम्,  
वचनविशेषः। प्रश्न० ५६। परं प्रति ज्ञास्यसि रे।  
जाल्मेत्यादि भणनम्। औप० १०७।

तज्जणा- तर्जना-शिरोऽङ्गुल्यादिस्फोरणतो ज्ञास्यसित

रे जाल्मेत्यादिभणनम्। औप० १०३। तर्जना-

असूयादिभिः। दशवै० २६७। ज्ञास्यसि रे जाल्मेत्यादि  
भणनम्। अन्तः १८। तर्जना-तर्जनीचालनेन ज्ञास्यसि रे  
दुष्ट इत्यादि भणनरूपा। प्रश्न० १०९।

तज्जना- तर्जना-अङ्गुलिभ्रमणभूत्क्षेपादिरूपा। उत्त०  
४६५।

तज्जमाणे- कृतावष्टम्भान् तर्जयन् ज्ञास्यथ रे यन्मम  
इदं च इदं च न दत्स्वेत्येव भेषयन्। विपा० ४०।

तज्जा- तर्जा-हस्तादिना चौर्य प्रति प्रेषणादि  
संज्ञाकरणम्। प्रश्न० ५८।

तज्जाङ्गी- तज्जातीया-त्वग्दोषा। आव० ७१०।

तज्जातं- वेच्चं। राज० ३७। द्रव्यप्रकारः। स्था० २९८।

तज्जातदोसे- तस्य गुर्वादेर्जातं-जातिः प्रकारो वा  
जन्ममर्म-कर्मादिलक्षणः तज्जातं तदेव  
दुष्णमितिकृत्वा दोषस्तज्जा-तदोषः,  
तथाविधकुलादिना दूष्णमित्यर्थः अथवा तस्मात्-  
प्रतिवाद्यादेः सकाशाज्जातः  
क्षोभान्मखस्तम्भादिलक्षणो दोषस्तज्जातदोषः। स्था०  
४९२।

तज्जातपारिस्थापनिकी- पारिस्थापनिक्याः प्रथमो भेदः  
आव० ६१९।

तज्जातीयरूवं- तज्जातीयरूपम्। आव० ६७६।

तज्जायं- तज्जातं-तुल्यजातीयम्। आव० ६२२।

तज्जायसंसृष्टकप्पिय- यत्प्रकारं देयं द्रव्यं तज्जातेन  
तत्प्र-कारेण-द्रव्येण ये संसृष्टे हस्तभाजने ताभ्यां  
दीयमानं ग्राह्य-मित्येवंरूपः कल्पः समाचारो यस्य सः  
तज्जातसंसृष्टक-ल्पिकः। प्रश्न० १०६।

तज्जायसंसृष्टचरण- तज्जातेन देयद्रव्याविरोधिना यत्  
संसृष्टं हस्तादि तेन दीयमानं यश्चरति स  
तज्जातसंसृष्टचरकः। औप० ३९।

तज्जिओ- तर्जितः भर्त्सितोऽत्यन्तपीडित इति। उत्त०  
८९।

तज्जियं- तर्जितं यत् न कुप्यसि नापि प्रसीदसि  
काष्ठशिव इवेत्यादि तर्जयन् निर्भर्त्सयत् वन्दते,  
अङ्गुल्यादिभिर्वा तर्जयन्, कृति कर्मणि  
एकोनविंशतितमो दोषः। आव० ५४४।

तज्जिय- तर्जयित्वा-भयमुपदर्शय। आव० ३४१।

तज्जेज्जा- तर्जयामि। उपा० ४२।  
 तज्जेति- जास्यसि पापे ! इत्यादि भणनतः। जाता० २००।  
 तत्तुति- समानकुलगणसंघवर्तिन्यः भगिनी वा। व्यव० २४८।  
 तटाक- कासारः। नन्दी० १५३।  
 तट्ट- तट्ट-स्थालम्। प्रजा० ७६।  
 तट्ट- त्वष्टा-द्वादशं मुहूर्तनाम। सूर्य० १४६। तष्ट- घट्टितम्। सूत्र० १६५। त्वष्टा-त्वष्टनामको देवस्तेन त्वाष्ट्री चित्रेत्य-परनाम। जम्बू० ४९९।  
 तडं-तीरं- निशी० ९८आ।  
 तडउडा- तडवडा-आउली। जम्बू० ३४।  
 तडउडाकुसुमं- आउली तस्याः कुसुमं तडवडाकुसुमम्। जम्बू० ३४।  
 तडतडं- त्रटत्रटत्। उत्त० ११३।  
 तडतडंत- तटतटायमानाः-तथाविध ध्वनिं विदधानाः। जाता० १५९।  
 तडफडंता- भृशं आकुलतया गमनागमनं कुर्वाणाः। बृह० ।  
 तडफडा- गमनैः। बृह० ५५आ।  
 तडफडेति- विवदति। निशी० ११२आ।  
 तडवडा- आउली। जीवा० १९१। राज० ३३।  
 तडाग- खननसम्पन्नमुत्तानविस्तीर्णजलस्थानम्। उपा० १०।  
 तडागं- तडागं। प्रजा० २६७। सरः। जम्बू० १२३। जीवा० १८९। तडागः-कासारः। भग० २३७।  
 तडागमहो- तडाकमहः-तडाकसत्क उत्सवः। जीवा० २८१।  
 तडि- तटी-पार्श्वम्। अनुत्त० ६।  
 तडिओ- आरामिकः। आव० २९५। बद्धः। आव० ४२१।  
 तडिग- तटिकः। आव० ३८४।  
 तडिगा- उपानहौ। ओघ० ३४।  
 तडिगादिडेवणय- उपानहौ परिधाय डेवनं-लङ्घनमग्नेः कृत्वा व्रजति। ओघ० ३४।  
 तडितं- पिंजितं रुतं। बृह० ११६आ।  
 तडियकप्पडिओ- तटिकार्पटिकः। आव० ११५।  
 तडी- चिंचणी। बृह० ३०आ। तटी-नद्यादीनां तटम्। जाता० ६७। आव० २७४। छिण्णटेका। निशी० ३०।  
 तड्डेति- लाएति। निशी० १२४आ।

तण- तृणं। विरणादि। उत्त० ३७०। तृणानि-कुशजंजुकाऽ-जुनादीनि। प्रजा० ३०। तृणं दर्भादि। दशवै० २२९। आचा० ३०। वीरणादि। भग० ३०६।  
 तणइओ- तनूजः। आव० ३४४।  
 तणकड- तृणकाष्ठः। आव० ४२३।  
 तणगं- तृणविशेषः। सूत्र० ३०९।  
 तणपणए- तृणपञ्चकं-शालि १ व्रीहि २ कोद्रव ३ रालको ४ ५ रण्यतृणलक्षम्। आव० ६५२।  
 तणपणगं- तृणपञ्चकम्। स्था० २३४।  
 तणपिंडिगा- तृणपिण्डिका-तृणभारः, तृणभारः, तृणपूलिका वा। आव० ६६७।  
 तणपिंडियं- तृणपिण्डिका। आव० ६८२।  
 तणपीढगं- पलालमयं तणपीढगं। निशी० ६२आ।  
 तणपूलिअं- तृणपूलम्। आव० १५२।  
 तणफासा- तृणस्पर्शः अशुषिरतृणस्य दर्भादेः परिभोगः, सप्तदशपरीषहः। आव० ६५७।  
 तणबेंटका- त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२।  
 तणबेंटिया- त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। प्रजा० ४२।  
 तणमूल- तृणमूलम्। प्रजा० ३४।  
 तणयं- सत्कम्। आव० ३१४। उत्त० १६०।  
 तणवणस्सइकाइए- तृणवनस्पतिकायिकाः बादरवनस्पति-कायिकान्। जम्बू० १६८।  
 तणवणस्सइकाइय- तृणवनस्पतिकायिकाः- बादरवनस्पतयः। भग० ३०६।  
 तणवणस्सइगणो- तृणवनस्पतिगणः-बादरवनस्पतीनां समुदायः। प्रश्न० १२।  
 तणवणस्सति- तृणवद्वनस्पतयः तृणवनस्पतयः। स्था० ५२१। बादरावनस्पतयोऽग्रीबीजादयः। क्रमेण कोरण्टका उत्पलकन्दा वंशाः शल्लक्यो वटा एवमादयः। स्था० ३२५। तृणवनस्पतयो बादरा इत्यर्थः। स्था० १२२।  
 तणवणस्सतिकातिता- वनस्पतिः स एव कायः शरीरं येषां ते वनस्पतिकायाः त एव वनस्पतिकायिकाः तृणप्रकारा वनस्पनिकायिकास्तृणवनस्पतिकायिका बादरा इत्यर्थः। स्था० १८६।  
 तणवत्थुल- वनस्पतिविशेषः। भग० ८०२।  
 तणसाला- दब्भादितण्डाणं अवोपगासं तणसाला। निशी० २६५आ।

तणसूए- तृणसूकं-तृणाग्रम्। भग० ६७७।  
 तणसूयं- तृणाग्रम्। भग० ३७६।  
 तणसोल्लिअ- मल्लिकापुष्पम्। जम्बू० २१२। ज्ञाता० २२२।  
 तणहार- तृणहारकः त्रीन्द्रियजीवभेदः, त्रीन्द्रियजन्तु जीवा० ३२। उत्त० ६९५। प्रज्ञा० ४२।  
 तणहारिगो- तृणहारकः। आव० ६७९।  
 तणु- तनु-तनुकम्। तनवः प्रतलाः। जम्बू० ११०।  
 तणुअंतं- प्रश्रवणपरिणामि। तन्दु०।  
 तणुअ- तन्तुकः-सूक्ष्मोर्णा। जम्बू० १०७।  
 तणुइ- तन्वी-शेषपृथिव्यपेक्षयाऽतितनुत्वात्, ईषत्प्राग्भाराया तृतीयं नाम। प्रज्ञा० १०७।  
 तणुए- तनुकं लघु सुजरम्। ज्ञाता० १७७।  
 तणुओ- तनुकः-कृशम्। आव० ७६४।  
 तणुतणूइ- अतितनुत्वात्तनुतनुरिति, ईषत्प्राग्भारायाश्चतुर्थं नाम। स्था० ४४०। तनुभ्योऽपि तन्वी मक्षिकापत्रतोऽपि पर्यन्तदेशेऽतितनुत्वात् तनुतन्वी, ईषत्प्राग्भारायाश्चतुर्थं नाम। प्रज्ञा० १०७।  
 तणुनमियं- तनु-कृशं नतं तनुनतमीषन्नतम्। जीवा० २७५।  
 तणुय- तनुकं, सुजरम्। भग० ६७२। तनुकः-दरिद्रः। भग० १०१। प्रतलम्। ज्ञाता० १३८।  
 तणुया- तनुः-शरीरं तत्र जाता तनुजा। उत्त० ४०७।  
 तणुल- तनुः-शरीरं सुखस्पर्शतया लाति-अनुगृह्णाति इति तनुलं तनु सुखादि। जम्बू० १०७।  
 तणुवाए- तनुवातः-विरलपरिणामो घनवातस्याधस्थायी। जीवा० २९। तनुवातः-विरलपरिणामो घनवातस्याधस्थायी। प्रज्ञा० ३०।  
 तणू- तनुः-बोन्दिः शरीरम्। प्रज्ञा० १०८।  
 तणूति- तनुः-ईषत्प्राग्भारायास्तृतीयं नाम। स्था० ४४०।  
 तण्डुल- युष उपयोगी। सूर्य० २९३।  
 तण्णगाइ- तर्णकाणि-वत्सरूपाणि। बृह० ३१७ अ।  
 तण्हा- तृष्णा-प्राप्तार्थानामव्ययेच्छा। भग० ५७३। धनाद्या-कांक्षापरिग्रहस्य सप्तविंशतितमं नाम। प्रश्न० ९२। तृष्णा-द्रव्याव्ययेच्छा। प्रश्न० ९७। तृष्णा-विद्यमानद्रव्याव्ययेच्छा। प्रश्न० १२४। प्राप्तद्रव्यस्याव्ययेच्छा। प्रश्न० ४४। तृष्णा-

द्रव्यादिविषया। उत्त० ५९०। सति मुच्छा। उत्त० ६२३।  
 तण्हाइओ- तृष्णादितः-पिपासितः। प्रश्न० १९।  
 तण्हाएत्तो- तृषितः। उत्त० ८७।  
 तण्हागेहि- तृष्णागुद्धिः-तृष्णा-प्राप्ताद्रव्यस्याव्ययेच्छा गुद्धिः अप्राप्तस्य प्राप्तिर्वाञ्छा, तृतीयाधर्मद्वारस्याष्टाविंशतितमं नाम। प्रश्न० ४४।  
 तण्हावुच्छेअणं- तृड्व्यच्छेदनं- तद्विषयावभिलाषनिवृत्तिः। आव० ८५१।  
 तत- तत वीणादि। प्रश्न० ८। ततं-वादित्रविशेषः। जम्बू० ४१२। आउज्जविसेसो। निशी० १ अ। तन्त्रीवर्धादि-बद्धमातोद्यम्। स्था० ६३। वीणा-विपञ्चीबद्धीसकादि तन्त्रीवादयम्। आचा० ४१२। ततं-वीणादिकम्। जम्बू० १०२। ततः ततो वा। उत्त० २५६। ततः-तको बालः। उत्त० २८०। तत्र। उत्त० १५६।  
 ततगइ- ततस्य ग्रामनगरादिकं गन्तुं प्रवृत्तत्वेन तच्चाप्राप्तत्वेन तदन्तरालपथे वर्तमानतया प्रसारितक्रमतया च विस्तारं गतस्य गतिस्ततगतिः, ततो वाऽवधिभूतग्रामादेर्नगरादौ गतिः। भग० ३८१।  
 ततगती- तता-विस्तीर्णा सा चासौ गतिश्च ततगतिः, यं ग्रामं सन्निवेशं वा प्रति प्रतिष्ठितो देवदत्तादिस्तं ग्रामादिकं यावद-द्यापि न प्राप्नोति तावदन्तरा पथि एकैकस्मिन् पदन्यासे तत्तद्देशान्तरप्राप्तिलक्षणा गतिरस्तीति ततगतिः। प्रज्ञा० ३२६।  
 तता- विस्तीर्णा। प्रज्ञा० ३२८।  
 ततोपाए- ततः प्रभृति। ओघ० ७३।  
 ततोहुत्तो- ततः सकाशात्। उत्त० १५६।  
 तत्- सर्वलिङ्गवचनेष्वव्ययम्। प्रज्ञा० ८।  
 तत्करा- आसङ्गः सम्बन्धः-तत्कराः-रागद्वेषकारिणः। आचा० २१९।  
 तत- तप्तं-तापितम्। ज्ञाता० ९। तप्तं-तापितम्। विपा० ३४। तत्त्वं-वस्तुस्वरूपम्। प्रश्न० ३५। तप्तं संक्रान्ततापम्। भग० १६६। तापः। भग० ३०७।  
 तत्तजला- तप्तजला, अन्तरनदी नाम। जम्बू० ३५२। स्था० ८०।  
 तत्तजुत्त- तोत्रयोन्क्रः-प्राजनकबन्धनविशेषः। मर्माघट्टनाह-नाभ्यामिति। उत्त० ४६०।  
 तत्तडिया- सरचनाका। गच्छा ०।

तत्ततवो- तप्तं तपो येन स तप्ततपाः। सूर्य० ४।  
 तत्तऽनिव्वुडं- तप्तानिर्वृतं-अप्रवृत्तत्रिदण्डम्। दशवै०  
 १८५।  
 तत्तफासुअ- तप्तप्रासुकं तप्तं सत्प्रासुकं त्रिदण्डोद्वृत्तं,  
 नोष्णोदकमात्रं, प्रतिगृहणीयाद् वृत्त्यर्थम्। दशवै० २२८।  
 तत्तमासगाइओ- तप्तमाषकादिः-द्रव्यप्रत्ययः। आव०  
 २८०।  
 तत्तवती- अर्जुनराज्ञी। विपा० ९५।  
 तत्तानिव्वुडभोइत्तं- तप्तानिर्वृतभोजित्वं-तप्तञ्च  
 तदनिर्वृतञ्च-अत्रिदण्डोद्वृत्तं चेति विग्रहः, उदकमिति  
 विशेषणान्यथानु-पपत्त्या गम्यते, तदभोजित्वं-  
 मिश्रसचित्तोदकभोजित्वम्। दशवै० ११७।  
 तत्ति- तप्तिः। पिण्ड० ७३। व्यापारः। बृह० ४० अ।  
 तत्तिला- अर्थिनः। ओघ० ७१। यत्नवती, परायणा।  
 नन्दी० ६४।  
 तत्तिल्लो- दक्षः। आव० २११।  
 तत्ती- तप्तिः चिन्ता। आव० ६८३। तप्तिः-तापः। उत्त०  
 ४३३। गवेषणं पालनं वा। प्रश्न० ६७। तप्तिः-सारा।  
 व्यव० १७१ अ।  
 तत्त्वज्ञः- सर्वज्ञस्तीर्थकृत्। आव०।  
 तत्त्वानुरूपं- विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता, पञ्चदशो  
 वचना-तिशयः। सम० ६३।  
 तत्थ- तस्मात्। व्यव० ७७ आ। त्रस्तः-न उद्विग्नः।  
 उत्त० ४६१। त्रस्तम्। भग० १६६।  
 तत्थगए- तत्रगतः। आव० ७२६।  
 तत्था- त्रस्ता उद्विग्नाः-सञ्जातभया  
 भयप्रकर्षाभिधानायै-कार्थाः। विपा० ४३। ज्ञाता० ९४।  
 नष्टाः। जम्बू० २३९।  
 तत्पदं- तस्य पद्यते-गम्यते येनार्थस्तत्पदं-अभिधानम्।  
 आचा० २३१।  
 तत्परं- तत्र द्रव्यपरं तावत्तदुपतयैव वर्तमानं-  
 परमन्यत्तत्परम्। आचा० ४१५।  
 तत्रस्था- स्वरूपस्था। आव० ३३८।  
 तथा- आनन्तर्ये। आव० १०।  
 अवधिज्ञानसारूप्यप्रदर्शनार्थः। आव० ८।  
 तथाकारः- गुर्वादिषु ब्रुवाणेषु यथाऽदिशत यूयं तथैवेति  
 भणनम्। बृह० २२२ अ।

तथाज्ञानः- जानत्प्रश्नः। स्था० ३७६।  
 तथाभव्यत्वं- भव्यत्वभेदः। प्रज्ञा० ११२।  
 तथारूपः- तथाविधोऽविजातव्रतविशेष इत्यर्थः। भग०  
 ६६४।  
 तदंतरे- यवनिकान्तर इत्यर्थः। उत्त० ४२५।  
 तदज्झवसाणे- तस्यामेवाध्यवसानं-  
 भोगक्रियाप्रयत्नविशेष-रूपं यस्य स तदध्यवसानः।  
 विपा० ५३।  
 तदङ्गोवउत्ते- तदर्थ-तत्प्राप्तये उपयुक्तः-उपयोगवान् यः  
 स तदर्थोपयुक्तः। विपा० ५३।  
 तदन्नं- तदन्यत्-तस्मात् घृतादेः अन्यत्-क्षीरगुडादि।  
 ओघ० १७०।  
 तदन्नवत्थुते- तस्मात्-परोपन्यस्ताद्  
 वस्तुतोऽन्यदुत्तरभूतं वस्तु यस्मिन्नुपन्यासोपनये स  
 तदन्यवस्तुकः। स्था० २५४।  
 तदन्नवयणे- तदन्यवचनम्, तस्माद्-  
 विवक्षितघटादेरन्यः पटादिस्तस्य वचनम्। स्था० १४१।  
 तदप्पियकरणे- तस्यामेवार्पितानि-द्वौकतानि करणानि  
 इन्द्रियाणि येन स तदर्पितकरणः। विपा० ५३।  
 तदुपरि- तत्र जङ्घार्द्धप्रमाणे उदकसंस्पर्शं संघट्टः,  
 नाभिप्रमाणे उदकसंस्पर्शं लेपः, तत उपरि उदकसंस्पर्शं  
 तदुपरि। व्यव० २५ आ।  
 तदुद्भवो- तदुद्भवः-शरीरोद्भवो गण्डादिः। आव० ७६४।  
 तदुभयपतिष्ठि- तदुभयप्रतिष्ठितः-  
 आत्मपररूपोभयप्रति-ष्ठितः। प्रज्ञा० २९०।  
 तदेककदेसभाए- तदेकदेशभागे मंदरादिवाप्यादिषु। प्रज्ञा०  
 ७९।  
 तदेककदेसो- तदेकदेशः। द्रव्यहेतुभूतः। आव० ३२७।  
 तद्ववं- तद्रव्यं-पटादेर्द्रव्यं तन्त्वादि। आव० २७८।  
 तद्ववसुद्धी- यद् द्रव्यमन्येन द्रव्येण सहासंयुक्तं तच्छुद्धं  
 भवति क्षीरं दधि वा असौ तद्द्रव्यशुद्धिः। दशवै० २११।  
 तद्ववकरणं- तद्द्रव्यमिति तस्यैव पटादेर्द्रव्यं तद्द्रव्यं-  
 तन्त्वादि, तदेव कारणमिति द्रष्टव्यम्। आव० २७८।  
 तद्वव्यनानाता- द्रव्यनानाताया भेदः। आव० २८१।  
 तद्विद्धी- तस्य आचार्यस्य दृष्टिस्तद्वृष्टिः। सततं  
 वर्तितव्यं हेयोपादेयार्थेषु, यदि वा तस्मिन् संयमे  
 दृष्टिस्तद्वृष्टिः स एव वाऽऽगमो दृष्टिस्तद्वृष्टिः।

आचा० २१५।

तद्विवसं- प्रतिदिनम्। बृह० २९३ अ। प्रतिदिवसं-दिने दिन इत्यर्थः। व्यव० २९७ आ।

तद्वेककदेशेण- तेषां-द्रव्याणामेकदेशेन इत्यर्थः। स्था० २९०।

तद्वेसे- तस्य देशस्तद्देशः। दशवै० ३५।

तद्वोस- त्वग्दोषः-कृष्टी। ओघ० १६३। तद्वोषः। दशवै० ३५। निशी० १८८ आ।

तद्वोसाई- त्वग् दोषा त्वग्दोषं क्षयव्याध्यादिः। व्यव० १९० आ।

तद्वोसी- त्वग्दोषी-कृष्टी। पिण्ड० १३९।

तद्वितो- तद्वितः-तस्य हितः। आव० १५५।

तद्विय- तद्वितः-तस्मै हितं तद्वितमित्याद्यर्थ्याभिधायको यः प्रत्ययः। प्रश्न० ११७।

तद्युक्तं- बलीवर्द्धादिभिः। स्था० २४०।

तनु- स्तोत्रं मन्दं यतनयेति। उत्त० ४११।

तनुवर्गणा-

भेदाभेदपरिणामाभ्यामौदारिकादियोग्यताऽभिमुखा।

आचा० ३५।

तन्नगं- बालवच्छं। निशी० ५९ अ।

तन्त्रपालः- दण्डनायकः। भग० ३१८।

तन्निवेशणे- तस्य-गुरोर्निवेशनं-स्थानं यस्यासौ तन्निवेशनः, सदागुरुकुलवासी। आचा० २१५।

तपआचारः- अनशनादिभेदो द्वादशधा। स्था० ३२५, ६५।

तपः- सिद्धत्वे दशमः भेदः। स्था० २५। लिङ्गः। स्था० ३३७। तपःप्रायश्चित्तः-त्रिविधे प्रायश्चित्ते द्वितीयम्। बृह० ४८ आ।

तपःक्षपणं-

सम्यगुपक्रमेणानुदीर्णोदीरणदोषक्षपणवदन्यनिमित्तप्रक्रमेणापरिक्लेशम्। दशवै० २७४।

तपति- दुनोति। स्था० ३६४।

तपसदं- जं बहुदेवसियं। दशवै० ८१ आ।

तपोऽर्ह- प्रायश्चित्तविशेषः। व्यव० १८७ आ।

तप्प- तपः काष्ठसमुदायविशेषः। प्रज्ञा० ५४२। नन्दी० ८८। उडुपकः। भग० ५२४। तपः-मत्स्यग्रहणार्थं

तरकाण्ड-विशेषः। प्रश्न० १३।

तप्पक्खिओ- तद्पाक्षिकः-तस्य हितैषी। बृह० १९५ अ।

तप्पक्खिय- तप्पाक्षिकः-तस्य सोमस्य प्रयोजनेषु सहायः। भग० १९६। तप्पाक्षिकः-केवलिपाक्षिकः स्वयंबुद्धः। भग० २२२।

तप्पडिख्वगववहारे- तत्प्रतिरूपकव्यवहारः-अधिकृतेन सदृशस्य प्रक्षेपः। आव० ८२२।

तप्पढमं- तत्प्रथमं तत्कालम्। जीवा० २७१।

तप्पण- वण्णवलादिणिमित्तं घयादिणेहपाणं तप्पणं। निशी० ८१ अ। तर्पणं-स्नेहादिभिः शरीरबृंहणम्। विपा० ४१। स्नेहद्रव्यविशेषैर्बृंहणम्। ज्ञाता० १८३।

तप्पणादूयलिया- मथ्यमानसाक्तुकः। दशवै० ५९।

तप्पती- तप्यते-पीड्यते क्लेशभागभवति। सूत्र० १८३।

तप्पागारे- तप्राकारः-उडुपकाकारः। आव० ४१।

तप्पूरक्कारे- पुरस्करणं पुरस्कारः-सर्वकार्येष्वग्रतः स्थापनं, तस्य-आचार्यस्य पुरस्कारस्तत्पुरस्कारः।

आचा० २१५।

तप्रादिरूप- आकारविशेषः। प्रज्ञा० ५३६।

तबरि- गुच्छाविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

तब्भत्तिय- तद्भक्तिकः-तत्र सोमे भक्तिः-सेवा बहुमानो वा यस्य स तद्भक्तिकः। भग० १९६।

तब्भव- तद्भवमरणं, मरणस्य सप्तमो भेदः। उत्त० २३०। तस्मिन् भवे जीवितं तद्भवजीवितम्। आव० ४८०। तत्थेवकाए उब्भवो। निशी० १८८ आ।

तब्भवजीवियं- तद्भवजीवितं तस्यैव पूर्वभवस्य समानजाती-यतया सम्बन्धि जीवितम्। स्था० ७। तद्भवजीवितम्। दशवै० १२२।

तब्भवजीवो- तद्भवजीवः तद्भव एवोत्पन्नः। दशवै० १२१।

तब्भवमरणं- जंमि भवे वट्टइ तस्सेव भवस्स हेउसु वट्टमाणो आउयं बंधित्ता पुणो तत्थोववज्जिउकामस्स जं मरणं तब्भवमरणं। निशी० ५२ आ। यस्मिन् भवेतिर्यग्मनुष्य-भवलक्षणे वर्तते जन्तुस्तद्भवयोग्यमेवायुर्बद्ध्वापुनः तत्क्षयेण म्रियमाणस्य यद्भवति तत्तद्भवयोग्यमेवायुर्बद्ध्वा पुनर्मिमा-णस्य मरणं तद्भवमरणम्। स्था० ९३।

तब्भविय- तद्भविकमरणं-यस्मिन्नेव मनुष्यभवादौ मृतः। पुनस्तस्मिन्नेवोत्पद्य यन्म्रियते इति। उत्त० २३०।

तब्भारिया- तस्य सोमस्य भार्या इव भार्या अत्यन्तं

वश्य-त्वात्पोषणीयत्वाच्चैति तद्भार्याः, तद्भारो वा येषां  
 वोढव्यत-याऽस्ति ते तद्भारिकाः। भग० १९६।  
 तद्भाव- तद्भावः। स्था० ३३१। तस्य भावस्तद्भावः पुंवेदः।  
 व्यव० १७५ आ।  
 तद्भावणाभावि- तद्भावना-कामध्वजाचिन्तया  
 भावितो-वासितो यः स तद्भावनाभावितः। विपा० ५३।  
 तमंतमेति- तमस्तमा यतः प्रबलान्धकारतया परिणमते।  
 बृह० १९७ आ।  
 तमंपविट्- तमःप्रविष्ट इव तमःप्रविष्टः। भग० ३१२।  
 तमंपविट्वा- तमःप्रविष्टाः-अज्ञानमग्नाः। प्रश्न० ९८।  
 तम- तमयिति-खेदयति जनलोचनानीति तमः। उत्त०  
 ३८। दुःखसमुद्घातेन सदसद्विवेक  
 प्रध्वसित्वाद्यातनास्थानम्। अज्ञानरूपं,  
 ज्ञानावरणादिरूप महत्तरं तमः। सूत्र० २२।  
 कण्हचउद्दसीए राओ भासरदव्वाभावो। निशी० ३०२।  
 आ। तमः-अज्ञानम्, बद्धस्पृष्टनिदयत्तं ज्ञानावरणीयं  
 वा। आव० ७८८। अप्कायपरिणामरूपोऽन्धकारः। स्था०  
 २१७। तमः-अंधकाररूपत्वात्। भग० २६९। नरकः। उत्त०  
 ४००। कृष्णचतुर्दशी रात्री ध्वान्तम्। बृह० १५४ आ। न  
 किञ्चित्पश्यतीत्यर्थः। निशी० ३०२ आ।  
 तमतमप्पभा- तमःतमःप्रभा। प्रज्ञा० ४३।  
 तमतमा- अतिशयतमोरूपद्रव्ययुक्ता पृथ्वी। अनुयो०  
 ८९। प्रकृष्टं तमस्तमस्तमः। तमस्तमःप्रभेत्यर्थः। भग०  
 ६८। तमस्तमः-प्रभा नाम्नी सप्तमी पृथिवी। भग० ६८।  
 तमतिमिरं- रातो जदा रयरेणु धूमिगा भवति तदा  
 तमतिमिरं। निशी० ३०२ आ। सरजो धूमिकादिकं  
 कृष्णचतुर्दशी रात्रि तमः। बृह० १५४ आ।  
 तमतिमिरपडलं- समेध दुर्दिनरजोधूमकादिकं  
 कृष्णचतुर्दशी-रात्रिध्वान्तं तदा तमतमिरपडलम्। बृह०  
 १५४ आ। रातीए रायादिआ मेह दुद्धिं व भवति,  
 अंधकारविशेषः। निशी० ३०२ आ।  
 तमतिमिरपडलविद्धंसणं- तमस्तिमिरपटलविध्वंसनः-  
 अज्ञा-नतिमिरवृन्दविनाशनम्। आव० ७८८।  
 तमपडलमोहजालपडिच्छन्न- तमःपटलमिव तमःपटलं-  
 ज्ञानावरणं मोहो-मोहनीयं तदेव जालं मोहजालं ताभ्यां  
 प्रतिच्छन्ना-आच्छादिता ये ते तमःपटलमोहजालप्रति-  
 च्छन्नाः। भग० ३१२।

तमप्पभा- तमःप्रभा। प्रज्ञा० ४३।  
 तमबलपलज्जणे- तमो बलेन-अन्धकारबलेन सञ्चरन्  
 प्रलज्जते इति तमोबलप्रलज्जनः प्रकाशचारी। स्था०  
 २४९। तमो-मिथ्याज्ञानं अन्धकारं वा तदेव बलं तत्र वा  
 अथवा तमसि-उक्तरूपे बले च सामर्थ्यं प्ररज्यतेरति  
 करोति इति तमोबलप्ररज्जनः। स्था० २४९।  
 तमरय- तमोरजसी-अज्ञानपातके। सम० ११५।  
 तमस- तमसं तमोवत्। दशवै० १६७।  
 तमःप्रभा- नरकपृथ्वी। आव० ३६३। कृष्णद्रव्योपलक्षिता  
 पृथ्वी। अनुयो० ८९।  
 तमा- रात्रिस्तदाकारत्वात्तमाऽन्धकारेत्यर्थः। भग० ४९३।  
 स्था० १३३। तमा-अन्धकारयुक्तत्वेन रात्रितुल्यत्वाद्-  
 धोदिशश्च। स्था० ४७८। अधोदिक्। आव० २१५। तमो-  
 रूपद्रव्ययुक्ता पृथ्वी। अनुयो० ८९।  
 तमाल- वनस्पतिविशेषः। भग० ८०३।  
 तमालपल्लवं- तमालपत्रम्। उत्त० १४२।  
 तमालपत्रं- पत्रविशेषः। जीवा० २३६।  
 तमाले- वलयविशेषः। प्रज्ञा० ३३।  
 तमिसगुहा- तमिश्रगुहा। आव० १५०।  
 तमुए- भगवतीसूत्रस्य षष्ठशतकस्य  
 तमस्कायार्थनिरूपणार्थः पञ्चमः। पञ्चमोद्देशकः। भग०  
 २५०।  
 तमुकाए- तमस्कायः अन्धकारराशिरूपत्वात्। भग०  
 २७०।  
 तमुक्काए- तमसां-तमिश्रपुद्गलानां  
 कायोराशिस्तमस्का। भग० २६८।  
 तमुक्कातेति- तमसः-  
 अपकायपरिणामरूपस्यान्धकारस्य कायः-  
 प्रचयस्तमस्कायः। स्था० २१७।  
 तमूयत्ता- तमस्त्वं अत्यन्तान्धतमसत्वं जात्यन्धता,  
 अत्यन्ताज्ञानवृत्ता वा। सूत्र० ३१६।  
 तमोकसिय- तमसि काषी तमसि कषितुं-शीलं यस्य सः।  
 पराविज्ञाताः क्रियाः कुर्वन्तीत्यर्थः। सूत्र० ३१३।  
 तमोरुवत्ता- तमोरूपता-अन्धबधिरता। सूत्र० ४२२।  
 तम्मण- तन्मनाः द्रव्यमनः प्रतीत्य विशेषोपयोगं वा।  
 विपा० ५३। औप० ६०। तत्रैव अर्थादौ मनः-  
 विशेषोपयोगरूपं यस्य सः। भग० ८९।

तम्मुत्ती- तेनोक्ता सर्वसङ्गेभ्यो विरतिर्मुक्तिः। आचा०  
२१५।

तम्मुहो- तन्मुखः। आव० ४११।

तय- ततं-मृदङ्गपटहादि। जीवा० २४७। ततं-वीणादिकम्।  
भग० २१७। जीवा० २६६। ततं-विस्तीर्णम्। उत्त० ४०७।  
त्वक्-वल्कलम्। औप० ७। बाह्यवल्कम्। स्था० १८६।  
तिलतुसतिभागमेत्तं। निशी० ३५५अ।

तया- त्वक्-छल्ली। जम्बू० २९। त्वचः-छल्लयः। प्रजा०  
३१। त्वक्। सूत्र० ३१२। त्वक्-त्वग्निवासारं  
भोक्तव्यमित्यर्थसूचकत्वात् त्वगुच्यते,  
साद्यौरूपमानम्। दशवै० १८। त्वक्-चातुर्जातकाङ्गम्।  
उत्त० १४२। त्वचासनादिकम्। जम्बू० १४७।

तयाहारा- तृणाहाराः। निर० २५।

तयाविस- त्वग्विषः। आव० २७४, ४२६।

तयाविसा- त्वचि विषं येषां ते त्वग्विषाः। जीवा० ३९।  
प्रजा० ४६।

तरंगवती- कामकथायां अनुभूतमधिकृत्य  
निजानुभवनिवेद-यित्री। दशवै० १९०।  
मिश्रकथाव्याख्याने स्त्री। दशवै० ११४। धर्मकथाविशेषः।  
व्यव० ११३आ। बृह० १६अ।

तरङ्ग- पोतः। ओघ० ३१।

तरन्ति- शक्नुवन्ति। ओघ० ७५।

तर- तरः वेगो बलं वा। जम्बू० ५३०। भग० ४८०। औप०  
७०। शय्यातरः। बृह० १४७आ।

तरई- तरति-क्षेमेण वर्तते। पिण्ड० १२३।

तरच्छ- तरक्षवः मृगादनाः। जम्बू० १२४। तरक्षुः व्याघ्र-  
विशेषः। भग० १९१, ३०९। ज्ञाता० ७०। तरक्षुः-व्याघ्र-  
जातिविशेषः। प्रजा० २५४। तरक्षः-व्याघ्रविशेषः। प्रश्न०  
७। तरक्षः-सनखपदश्चतुष्पदविशेषः। जीवा० ३८।  
तरच्छ-वनजीवाः। मरण० ।

तरणं- बाहू। आव० ५९। णित्थारणं। निशी० ९५अ।

तरणीयं- उडुप नद्यादि। आव० ५९।

तरति- शक्नोति। निशी० २७अ।

तरपण्णं- तरपण्यम्। बृह० १६०आ।

तरपन्नं- तारणमूल्यम्। निशी० ७८अ।

तरमल्लिहायणा- तरो-वेगो बलं वा तथा  
'मल्लमल्लिधारणे' ततश्च तरो धारको वेगादिकृत्

हायनः-संवत्सरो वर्तते येषां ते तया यौवनवन्तः। भग०  
४८०। जम्बू० २६५।

तरसि- शक्नोषि। आव० ३०५।

तरा- त्वरा-मानसौत्सुक्यम्। जम्बू० ३८८।

तरामि- शक्नोमि। दशवै० ७९।

तरियव्वो- तरणीयः। ज्ञाता० १६९।

तरी- तरिका-उडुपः। पिण्ड० १०२।

तरुगणा- तरुगणाः नालिकेर्यादयारामाः। दशवै० १९३।

तरुगणगणो- तरुगणगणः-वृक्षगुच्छादिवृन्दसमूहः।  
प्रश्न० २४।

तरुण- प्रवर्द्धमानवयाः। अनुयो० १७६। नवम्। जीवा०  
२७१। प्रत्यग्रः। ज्ञाता० २२२। तरुणः-उदग्च्छत्। जम्बू०  
१८३। तरुणः-प्रवर्द्धमानवयाः  
विशिष्टवर्णादिगुणोपेतमभिनवं वस्तुजातम्। जीवा०  
१२१। यद् द्वयं विशिष्टवर्णादिगुणोपेतमभिनवं च  
तत्तरुणम्। राय० २२। वर्धमानवयाः, वर्णादि-  
गुणोपचितः। उपा० ४६। अर्वाक् चत्वारिंशतो वर्षेभ्यः।  
व्यव० २४५। चत्ता सत्तरुणो। व्यव० ११२आ। जन्म-  
पर्यायेण षोडशवर्षाण्यारभ्य यावच्चत्वारिंशद्वर्षाणि  
तावत्तरुणः। व्यव० २४५अ। तरुणः-प्रथमकुमारत्वे  
वर्तमानः। व्यव० १४३अ।

तरुणइत्ते- तरुणः युवा। दशवै० १०५।

तरुणगं- अभिनवम्। भग० ६८४। अहुणुद्वियं। दशवै० ८६।

तरुणदिवायरनयणो- तरुणदिवाकरनयनः-रक्ताक्षः।  
आव० ५६६।

तरुणधम्मो- तस्य तावन्तं कालमसमापयन् तरुणधम्मो  
अविपक्वपर्यायः। बृह० १२९आ। जस्स वा सुत्तस्स जो  
कालो भणितो तं अपूर्ततो तरुणधम्मो भवति। निशी०  
८१अ।

तरुणा- तरुणा अभिनवा कोमलेति। अनुत्त० ४।

तरुणरहस- रोगः। ओघ० ६४।

तरुणसहयरि- तरुणसहचरी-युवतिमयूरा। ज्ञाता० २६।

तरुणा- असञ्चता। दशवै० १८५।

तरुणिमानः- तारुण्यम्। नन्दी० १६१।

तरुणी- अपरिपक्वा। आचा० ३२३।

तरुणीपरिकम्म- तरुणीपरिकर्म युवतीनामङ्गसत्क्रिया  
वर्णा-दिवृद्धिरूपा। जम्बू० १३८।

तरुपडणे- तरुपतनम्। स्था० १३।

तरुपतनस्थानानि- यत्र मुमूर्षव एवानशनेन  
तरुवत्पतितास्तिष्ठन्ति तरुभ्यो वा गत्र पतन्ति।  
स्था० ।

तरोमल्लिन- बलाधायिनो वेगाधायिनो वा। ज्ञाता० ५८।

तरोमल्लिहायणे- तरोमल्लिहायनः तरोधारको-  
वेगादिधारको हायनः संवत्सरो यस्य सः यौवनवानिति।  
जम्बू० ५३०।

तरोमल्लो- तरोधारकः वेगादिकृत्। जम्बू० २६५।

तर्कणं- मनसा यदि मह्यमसौ ददातीति विकल्पनम्।  
उत्त० ५८७।

तर्कुः- वनीपकः। प्रश्न० १५४।

तर्पणालोडिकयेति- सक्त्वालोडनेन

जलाद्यालोडितसक्तु-भिरित्यर्थः। स्था० २६१।

तर्ष- तृष्णा। उत्त० १८३।

तलं- रूपम्। औप० १६। उपरितनो भागः। जीवा० १८९।  
प्रतिष्ठानम्। प्रश्न० ६३। हस्तपुटम्। जीवा० २६६।  
भूमिका। जीवा० १०३। तालवृक्षः। अनुयो० १७७।  
घटिकाकालः। बृह० ७। हस्ततलः। जम्बू० ६३। तलः-  
तालवृक्षः। जीवा० १२२। तलः-हस्तकः। जीवा० १६०।  
तलः-हस्ततलः। जीवा० २१७। तलः-उपरितनो भागः-  
सूर्यः ६९।

तलउदाडा- गुच्छाविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

तलणं- तलनम्। प्रश्न० १४।

तलताला- हस्तमालाः। सूर्य० २६७। ज्ञाता० २३३। प्रश्न०  
१५९।

तलपत्त- तलपत्राणि-तालाभिधानवृक्षवर्णानि। ज्ञाता०  
२३१।

तलभंगय- तलभङ्गकम्। औप० ५५। तलभङ्गकं-  
भूषणविधि-विशेषः। जीवा० २६९। तलभङ्गकं-  
बाहवाभरणम्। औप० ४९। तलभङ्गकः-  
बाहवाभरणविशेषः। प्रज्ञा० ९१। जीवा० १६४।  
तलभङ्गकं-बाहवाभरणम्। जम्बू० १०६।

तलवर-

परितुष्टनरपतिप्रदत्तरत्नालङ्कृतसौवर्णपट्टविभूषि-  
तशिराः। अनुयो० २३।

परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषितः। स्था० ४६३।

प्रभुस्थानीयो नगरादिचिन्तकः। उत्त० ३४३। तलवरः-  
परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषितः।

राजस्थानीयः। प्रज्ञा० ३२७। भग० ३१८, ४६३। तलवरः-  
प्रतुष्टनरपतिवितीर्णपट्टबन्धः-विभूषितो राजस्था-  
नीयः। भग० ११५। तलवरः-

सन्तुष्टनरपतिप्रदत्तसौवर्णप-

ट्टालङ्कृतशिरस्कचौरादिशुद्धयधिकारी। जम्बू० १२२।

तलवरः-राजवल्लभः, राजसमानः। अन्त० १६। राजप्र-  
तिमाचामर-विहितो तलवारो। निशी० २७० अ। तलवरः-  
परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषितः। औप० १४।

तलवरः- परितुष्टनरपतिवितीर्णपट्टबन्धविभूषितः।

राजस्थानीयः। औप० ५८। तलवरः-कृतपट्टबन्धराज-  
स्थानीयः। प्रश्न० ९६। तलवरः- राजप्रसादवानु

राजोत्था-सनिकः। विपा० ४०। तलवरः-

परितुष्टनरपतिप्रदत्तरत्ना-लङ्कृतसौवर्णपट्ट

विभूषितशिराः। जीवा० २८०। परितुष्टन-

रपतिप्रदत्तसौवर्णतलवर-पट्टालङ्कृतशिरस्कः। बृह० २५५  
आ। राजवल्लभः। भग० ४६३।

तलवरा- तलवराः-परितुष्टनृपदत्तपट्टबन्धविभूषिता  
राजस्था-नीयाः। जम्बू० १९०।

परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषिताः। राज० १३१।

तला- तलौ-हस्ततलौ। जीवा० १६२। प्रज्ञा० ८९। हस्तकाः।

प्रज्ञा० ८६। सम० १३८। जम्बू० ७६। औप० ५।

तलंभूमिका। प्रज्ञा० ८०। हस्ततालाः। प्रश्न० १५९।

तलाग- तडागः। प्रश्न० ८। तडागः-पुरुषादिकृतो

जलाशय-विशेषः। प्रश्न० १३४। तडागः-कृतको

जलाशयविशेषः। प्रश्न० १६१। तडागः-खानितो

जलाशयविशेषः। अनुयो० १५९।

तलागाति- तडागादीनि। स्था० ८६।

तलानि- मध्यखण्डानि। स्था० ४३५।

तलाय- तडागम्। प्रज्ञा० ७२। तडागः-कृत्रिमजलाशय-  
विशेषः। भग० ३७३।

तलिगा- सोपानत्काः उपानद्रूपादाः। ओघ० ५५।

तलिका-चर्मपञ्चके प्रथमो भेदः। आव० ६५२।

तलिणो- तलिनः प्रतलः। औप० १९। जीवा० २७२। प्रश्न०  
८१।

तलिना- सूक्ष्मा। बृह० ११३ अ।

तलिय- तल्पं-शयनीयः। जाता० २०५।  
 तलिया- उवाहणा। निशी० ६०अ। तलिका। स्था० २३४।  
 तलिका-उपानहः। बृह० १०१अ। पात्रीवि-शेषाः। भग०  
 ५४८।  
 तल्लग- तल्लकः-सुराविशेषः। जम्बू० १००।  
 तल्लिच्छा- तत्तद्विवक्षितं वस्तु लब्धुमिच्छत इति  
 तल्लिप्सुः। जाता० ९८।  
 तल्लेश्य- प्रत्युपेक्षणाभिमुखः। औघ० ११६।  
 तल्लेस- तल्लेश्यः कामध्वजा शुभात्मपरिणामविशेषः।  
 विपा० ५३। तल्लेश्यः-तच्चितः। औघ० ११७। तल्लेश्यः-  
 भगव-द्वचनगतशुभात्मपरिणामविशेषः। लेश्यादि-  
 कृष्णादिद्रव्यसा-चिव्यजनित आत्मपरिणामः। औप०  
 ६०।  
 तव- तपः-अनशनादि। प्रश्न० १३२। तपः-उत्तराध्ययनेषु  
 त्रिंशत्तममध्ययनम्। उत्त० ९। तपः-भद्रमहाभद्रादि।  
 उत्त० १२८। तपोमदः-यत्तपसो मानम्। आव० ६४६।  
 तपस्त्या-गयोः सतो निर्वर्तितवान्। जाता० १२३। स्था०  
 २००। तपः-अनशनादिपूर्वकर्मनिर्जरणफलम्। प्रश्न०  
 १०२। तपः-धर्मध्यानादि। सूर्य० ४। तपः-अनशनादि।  
 सूर्य० ४। जम्बू० ५२२। दशवै० ११०। तपः-  
 भक्तपरिजानादिकमशनम्। उत्त० ७०७। तपः-  
 धर्मध्यानादि। भग० १२। तपः-पृथिव्यादिसंघट्टनादौ  
 निर्विग(कृ)तिकादि। आव० ६७४। तपः-ध्यानम्। जाता०  
 ९।  
 तवए- तक्कं-सुकुमारिकादितलनभाजनम्। विपा० ५८।  
 तवकरणं- तपःकरणं तपःकृतिः। आव० ४६६।  
 तवगं- तापिका। प्रश्न० १४।  
 तवणा- तपनं रविकरनिकरसन्तापरूपम्। उत्त० ५९९।  
 तवणि- घृतपात्रविशेषः। औप० ९९।  
 तवणिज्जं- तपनीयं-आरक्तं सुवर्णम्। जम्बू० २४। जीवा०  
 १८१, ८६४। तपनीयं-सुवर्णविशेषः। सूर्य० २६४। प्रजा०  
 ९९। जीवा० २७३, १७५। तपनीयं रक्तसुवर्णम्। जम्बू०  
 ५४।  
 तवणिज्जपट्ट- तपनीयपट्टः-रक्तस्वर्णमयपट्टकाः लोके  
 महलू इति प्रसिद्धौ। जम्बू० २११।  
 तवणिज्जमया- तपनीयमयानि रक्तस्वर्णमयानि।  
 जम्बू० २८४।

तवणिज्जुज्जलंबूसगं- तपनीयोज्ज्वललम्बूसकम्।  
 आव० १२४।  
 तवणीयपवरलंबूस- पलम्बन्तमुत्तदामम्। आचा० ४२३।  
 तवति- तपति-तप्तो भवति। जीवा० २४८।  
 तवतेणे- तपस्तेनः-क्षपकरूपकल्पः। दशवै० १८९।  
 तपस्ते-नः-परसम्बन्धि तप आत्मनि परप्रतिपत्तितः  
 सम्पादयंस्त-पस्तेनः। प्रश्न० १२५।  
 तवतेयसिरी- तपस्तेजःश्रीः। आव० ७९३।  
 तवनियम- तपोनियमो-नियत्रितं तपः। सम० ११७।  
 तवविणय- तपोविनयः-अपनयति तपसा तमः-अज्ञानं  
 उपनयति च स्वर्ग-मोक्षं यः स विनयः। दशवै० २४१।  
 तवसंजमपडियारं- तपःसंयमप्रतिकारः-तपः संयमावेव  
 प्रतिकारः। आव० ५८६।  
 तवसंजमो- तपःसंयमः तपःप्रधानः संयमः। आव० ३२६।  
 तपःसंयमः-तपः-अनशनादिस्तत्प्रधानः संयमः  
 पञ्चाश्रव-विरमणादिः। उत्त० १४४।  
 तवसमाही- तपःसमाधिः-तृतीयं विनयसमाधिस्थानम्।  
 दशवै० २५५।  
 तवसा- अनशनादिना। जम्बू० १६।  
 तवस्सी- विकिडुतवकारी। निशी० १४आ। अनशनादि  
 विचित्रतपो युक्ताः सामान्यसाधवो वा। जाता० १२३।  
 तपस्वी -उग्रतपश्चरणरतः। दशवै० ३१। तपस्वी-  
 विकृष्टक्षपकः। दशवै० २०५। तपस्वी-तपोऽस्यास्तीति,  
 विकृष्टाष्टमादि तपोऽनुष्ठानवान्। उत्त० ८४।  
 तपस्वीनिदानादिविरहिततया प्रशस्ततपोऽन्वितः।  
 उत्त० १८५। करवीरलताभ्रामकः कश्चित्। उत्त० २९५।  
 शिष्यः। औप० ३३। विचित्रानशना-दिलक्षणं तपोविद्यते  
 यस्य सः सामान्यसाधुर्वा। आव० ११९।  
 तवाइसओ- तपोऽतिशयः। दशवै० १०५।  
 तवारिह- तपोऽर्ह-निर्विकृतादिकं तपः। औप० ४२।  
 निर्विकृ-तिकादि तल्लक्षणां शुद्धिं यदर्हत्यतिचारजातं  
 तत्ततोऽर्हम्। भग० ९२०।  
 तवैति- तापयन्ति। सूर्य० ६३। तपन्ति मन्दाङ्गाररूपतां  
 प्रतिपद्यन्ते। जम्बू० ४१९।  
 तवेइ- तपति अपनीतशीतं करोति, यथा वा सूक्ष्मं पिपी-  
 लिकादि दृश्यते तथा करोति। भग० ७८।  
 तवोकम्मं- तवःकर्म। आव० १८८। तपःकर्म-

तपोऽनुष्ठानम्। दशवै० १९९।

तवोवहाणे- तपउपधानं विशिष्टतपोविशेषः। सूत्र० १४९।

तपउपधानं-अनशनादिकम्। बृह० २१५आ। तपउपा-  
धानं-द्वादशविधं तपः। सम० १०७।

तव्वं(चं)णिगि- रत्तपडा। निशी० ७७ आ।

तव्वइरित्तदंसणे- तद्व्यतिरिक्तदर्शने

अभिग्रहीतमिथ्यादर्शन-प्रत्ययिकीक्रियायाः द्वितीयो  
भेदः। आव० ६१२।

तव्वज्जं- तद्वर्जः बुद्बुदवर्ज-वर्षम्। आव० ७३३।

तव्वणिय- रक्तपट्टलिङ्गः। आव० ६२८। तद्वर्णिकः,

तच्च-णिकः-बौद्धः। आव० ६३६।

तव्वणिगिणी- तद्वर्णिकी। आव० ६४०।

तव्वणियसङ्ग- तच्चनिकश्राद्धी। आव० ७९९, ८००।

तव्वत्थुए- तदेव-परोपन्यस्तसाधनं वस्त्विति-उत्तरभूतं  
वस्तु यस्मिन्नपन्यासोपनये स तद्वस्तुकः। स्था०  
२५९।

तव्वत्थूपन्नास- तद्वस्तूपन्यासः, उपन्यासस्य प्रथमो  
भेदः। दशवै० ५५।

तव्विवरीए- यादृशं वस्तु स्वप्ने दृष्टं

तद्विपरीतस्यार्थस्य जाग-रणे यत्र पाप्तिः स  
तद्विपरीतस्वप्नो यथा कश्चिदात्मनं मेध्यविलिप्तं  
स्वप्ने पश्यति जागरितस्तु मेध्यमर्थं कञ्चन  
प्राप्नोतीति। भग० ७०९।

तव्विहायरियविरहो-

तद्विधः-सम्यगविपरीततत्त्वप्रतिपादन-कुशलः  
आचर्यतेऽसावित्याचार्यः सूत्रार्थावगमार्थं मुमुक्षुभिरा-  
सेव्यत इत्यर्थः, तस्य विरहः-अभावः  
तद्विधाचार्यविरहः आव० ५९७।

तसरेणु- त्रस्यति-पौरस्त्यादिवायुप्रेरितो गच्छति यो रेणुः  
स त्रसरेणुः अनुयो० १६३।

पौरस्त्यादिवायुप्रेरितस्त्रस्यति गच्छ-तीति त्रसरेणुः।

स्था० ४३५। त्रस्यति-पौरस्त्यादिवायुप्रे-रितो गच्छति यो  
रेणुः स त्रसरेणुः। भग० २७७। जम्बू० ९४।

तसवाइया- त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२।

तसा- त्रसाः तेजोवायुद्धीन्द्रियादिकाः। सूत्र० १५५। त्रसाः-

त्रसन्ति अभिसन्धिपूर्वकमनभिसन्धिपूर्वकं वा  
ऊर्ध्वमध-स्तिर्यक् चलन्तीति त्रसाः-तेजोवायवो

द्वीन्द्रियादयश्च। जीवा० ९। तसा-त्रसन्ति-

उष्णाद्यभितप्ताः सन्तो विवक्षि-तस्थानादुद्विजन्ते  
गच्छन्ति च छायाद्यासेनार्थं स्थानान्तर-मिति त्रसाः-

द्वीन्द्रियादयाः। प्रजा० ४७४। त्रस्यन्तीति त्रसाः-

चलनधर्म्मार्णः त्रसनामकर्मोदयवर्त्तित्वात् त्रसाः। स्था०  
१३४। त्रस्यन्तिर-तापाद्युपतप्तौ छायादिकं प्रत्यभि-  
सर्पन्तीति त्रसाः-द्वीन्द्रियादयः। उत्त० २४४। त्रसाः-  
तेजोवायवो गतियोगात् त्रसाः। स्था० १२४।

तसिए- शुष्कः-आनन्दरसशोषात्। ज्ञाता० ६८।

तसिया- त्रसनं त्रस्तं-दुःखदुद्वेजनम्। दशवै० १४१।

उद्वीग्नः। ज्ञाता० ९४। भग० १६६।

तस्करावस्कन्दः- चौरावपातः। नन्दी० ६३।

तस्सन्नी- तस्य संज्ञा तत्संज्ञा-तज्ज्ञानम्। आचा० २१५।

तस्साभवइ- तस्या भवति। आव० २२५।

तस्सेवी- यमपराधमालोचयिष्यति तमेवासेवते यो गुरुः

स तत्सेवी तस्मै यदालोचनं तदपि तत्सेवीति। भग०

९१९। य दोषा आलोचयितव्यास्तत्सेवी यो गुरुस्तस्य

पुरतो यदालो-चनं स तत्सेविलक्षण आलोचनादोषः।

स्था० ४८४।

तह- तथा तथैव। भग० १२१। सेवकः सन् यथैवादिष्यते

तथैव यः प्रवर्तते सः। स्था० २२४, २१४।

तहक्कार- सूत्रव्याख्यानादौ प्रस्तुते गुरुभिः कस्मिंश्चिद्

वचस्युदिरिते सति यथा भवन्तिः प्रतिपादयन्ति तथैवै-

तदित्येवं करणं तथाकारः-अविकल्पगुर्वाज्ञाभ्युपगमः।

अनुयो० १०३। मगच्छा० १२०। तथाकरणं तथाकारः स

च सूत्रप्रश्ना-दिगोचरः, यथा भवद्भिरुक्तं तथैवेदमित्येवं

स्वरूपः वाचनाप्रतिश्रवणयोः उपदेशे सूत्रार्थं कथने

अवितथमेतदिति तथाकारः, प्रतिश्रवणे च तथाकारः।

स्था० ४९९।

तहणाणे- यथा वस्तु तथा ज्ञानं यस्य तत्तथाज्ञानं

सम्यदृष्टि-जीवद्रव्यं तस्यैवावितथज्ञानत्वात्, अथवा

यथा तद्वस्तु तथैव ज्ञानं-अवबोधः

प्रतीतिर्यस्मिंस्तत्तथाज्ञानम्। स्था० ४८१।

तहत्ति- यथापूर्वसाधवो गृह्णन्ति। ओघ० १५५।

तहनाणे- यथा प्रच्छनीयार्थं प्रष्टव्यस्य ज्ञानं तथैव

प्रच्छक-स्यापि ज्ञानं यत्र प्रश्ने स तथाज्ञानः

ज्ञानत्प्रश्नः। स्था० ३७६।

तहमेय- यद्भवद्भिः प्रतिपादितं तत्तथैवेत्यर्थः। ज्ञाता०  
४७। आप्तवचनावगतपूर्वाभिमतप्रकारवत्। भग० ४६७।  
तहा- तथाशब्दः-अनुक्तसमुच्चयार्थः। उत्त० ५१५। तथा  
निर्देशे। आव० ४६६।  
तहाकारो- तथाकारः-सूत्रप्रश्नगोचरः यथा भवद्भिरुक्तं  
तथेद-मित्येवंस्वरूपः। आव० ३५९।  
तहाभाव- यथा वस्तु तथा भावः-अभिसन्धि यत्र ज्ञाने  
तत्तथा भावं, अथवा यथैव संवेद्यते तथैव भावो-बाह्यं  
वस्तु यत्र तत्तथाभावम्। भग० १९३।  
तहामुत्ति- तहामूर्ति-कथञ्चित्तत्स्वरूपम्। दशवै०  
२१४।  
तहारूपं- तथारूपं तथाविधस्वभावं  
भक्तिदानोचितपात्रमित्यर्थः। भग० २२६। तथारूपं-  
तथारूप उचितस्वभावः कश्चनपुरुषः श्रमणा वा  
तपोयुक्तः। उपलक्षणत्वादस्योत्तरगुणवान्नित्यर्थः।  
भग० १४१।  
तहारुव- तथारूपं सङ्गतारूपम्। भग० १५५।  
तहारुवा- तत्प्रकारस्वभावाः - महाफलजननस्वभावाः।  
निर० ७।  
तहितहिं- तत्र यत्र देशे एकः। जीवा० १८१। तस्यैव देशस्य  
तत्र-तत्रैकदेशे। जम्बू० ४४।  
तहिए- तथ्याः-सत्याः। ज्ञाता० १७७।  
तहिया- तथ्याः-अवितथा निरूपचरितवृत्तयः। उत्त०  
५६२।  
ता- तावत्-क्रमार्थः। सूर्य० ९।  
ताइ- त्राता-आत्मारामः साधुः। दशवै० २०६।  
ताइणं- त्रायिनां त्रायिणां वा। उत्त० ४९९।  
ताई- त्रायी त्रायी वा। उत्त० ३५३। त्रायी वा त्रायीमोक्षम्।  
भगवान् सर्वस्य परित्राणशीलः। सूत्र० ३९४।  
ताए- त्रायः सुदृष्टमार्गोक्तिः। दशवै० २६२।  
ताओ- तातेत्यामन्त्रणम्। ज्ञाता० ३४।  
ताडणं- ताडनं उरःशिरःकुट्टनकेशलुञ्चनादि। आव० ५८७।  
ताडनं- वधः। आव० ५८८।  
ताडिओ- ताडितः-आहतः। उत्त० ४६१।  
ताणं- त्राणं-बन्धुभिः पालनं जरातो वा रक्षणम्। उत्त०  
१९३। त्राणं-स्वकृतकर्मणो रक्षणम्। उत्त० २२१। तानः-  
तानकः। भग० ५४२। आव० ६६१।

तात्पर्य- आसेवां विदितकर्मपरिणामो विदध्यात्। आचा०  
११८।  
तान- तता तन्त्री तानी भण्यते। स्था० ३९७। अनुयो०  
१३३।  
ताप- सविता। स्था० १३३।  
तापक्षेत्रं- उदयास्तान्तरं, प्रकाशक्षेत्रम्। जम्बू० ४५५।  
उदयास्तान्तरम्। जम्बू० ४४२।  
तापिका- कटकद्वितयोपेता लोहस्थाली(तवी)। भग० ८५।  
तामरसे- जलरुहविशेषः। प्रजा० ३३।  
तामलि- तापसविशेषः। उत्त० ६८। भग० ५१४।  
तामालित्त- तामलिप्तः-ईशानेन्द्रस्य  
वैक्रियरूपकरणादिसा-मथ्योपदर्शने बालतपस्वी। भग०  
१६४।  
तामलित्तग- तामलित्तिकः सैन्धवः। व्यव० २०४ अ।  
तामलिप्ती- सिन्धुसौवीरदेशे नगरी। बृह० २२९ आ।  
वङ्गेषु तामलिप्ती आर्यक्षेत्रम्। प्रजा० ५५।  
तामलिप्तीईशानेन्द्रस्य  
वैक्रियरूपकरणादिसामथ्योपदर्शकतापसनगरी। भग०  
१६१।  
तामली- तामलिप्तनगर्या गाथापतिः। भग० १६१।  
तामसबाणाः- यः पर्यन्ते सकलसंग्रामभूमिव्यापि  
महान्धत-मसरूपतया परिणमन्ते। जीवा० २८३।  
सकलसंग्रामभू-मिव्यापि महान्धसरूपतया परिणताः  
प्रतिवैरिवाहिनीषु विघ्नोत्पादका भवति। जम्बू० १२५।  
तामलिप्ति- नगरविशेषः। उत्त० ६०५।  
तायओ- त्रायते-सन्तानं करोति पालयति च सर्वापदभ्य  
इति तातः-स एव तातकः। उत्त० ३९८।  
तायत्तीस- त्रायस्त्रिंशः महत्तरकल्पः पूज्यस्थानीयः।  
औप० ५३।  
तायत्तीसए- त्रायस्त्रिंशकः गुरुस्थानीयाः देवाः। जम्बू०  
१५९।  
तायत्तीसगा- त्रायस्त्रिंशाः मन्त्रिविकल्पाः। भग० ५०२।  
मन्त्रिकल्पाः। भग० १५४। महत्तरकल्पाः पूज्याः। स्था०  
११७।  
तायत्तीसा- त्रायस्त्रिंशाः पूज्या महत्तरकल्पाः। उपा०  
२७।  
तार- ताराः तारकाः अर्धचन्द्राः। जम्बू० २१९।

तारए- संसारसागरमिति गम्यते तेन तथा तारयति  
 परानप्युपदेशवर्तिन इति तारकः। सम० ५।  
 ताराओ- तारकः-अन्यांस्तारयतीति। जीवा० २५६।  
 तारगा- पूर्णभद्रयक्षेन्द्रस्य चतुर्थी अग्रमहिषी। स्था०  
 २०४।  
 तार(य)गं- ताराग्रं तारापरिमाणमभिधेयम्। सूर्य० ९।  
 तारगगहा- तारकाकाराग्रहाः तारकग्रहाः। स्था० ३५५।  
 तारय- तारकः-द्विपृष्ठवासुदेवशत्रुः। आव० १५९।  
 तारया- यक्षेन्द्रस्य चतुर्थी अग्रमहिषी। भग० ५०४।  
 तारा- ताराः-ज्योतिष्कभेदविशेषः। प्रजा० ६९। ताराः  
 अश्विन्यादिनक्षत्राणि। सूत्र० ४०२। सुभूममाता। आव०  
 १६१। कार्तवीर्यपत्नी। आव० ३९२।  
 ज्योतिष्कविमानानि  
 अधिकारान्नक्षत्रजातीयज्योतिष्कानां विमानानीत्यर्थः  
 जम्बू० ४९९। ज्योतिर्विमानरूपा। स्था० ३६। भग० १९५।  
 भरतक्षेत्रे सप्तमचक्रवर्तिमातृनाम। सम० १५२।  
 तारारूपाणि- तारका एव। सम० १४०।  
 तारारूव- तारारूपं-तारकजातीयम्। सम० १६। स्था०  
 ४४८। तारारूपाः-तारिकारूपाः। जम्बू० २९२। तार-  
 कमात्रम्। स्था० ११५। तारारूपः तारिकारूपः। जीवा०  
 १९९।  
 तारावलि- पञ्चमनाट्यभेदः। जम्बू० ४१६।  
 तारुवत्ता- तद्रूपता-नीललेश्यास्वभावः। भग० २०५।  
 ताल- तालाभिधान एकः। भग० ३६९। कंशिकादिशब्दवि-  
 शेषः। स्था० ३९६। वृक्षविशेषः। स्था० १८५, ५००।  
 हस्ततालः। स्था० ६३। हस्तताला समुत्थ उपचारा-  
 च्छब्दः। अनुयो० १३२। तालवृक्षफलविशेषः। बृह० १३५  
 आ। तालः-हस्तगमः। दशवै० ८८। ताडः। सम० ८०३।  
 कंशिका जम्बू० ६३। गीतादिमानकालः। जम्बू० १३७।  
 तालः-घनवाद्यविशेषः। जम्बू० २०६। वलयविशेषः।  
 प्रजा० ३३। तालः। जीवा० २६६। कंसिका। जीवा० १६२,  
 २१७। प्रजा० ८९।  
 तालउडं- तालपुटं  
 तालमात्रव्यापात्तिकरविषकल्पमहितमिति।  
 विषविशेषः। दशवै० २३७। ज्ञाता० १९०।  
 तालए- आवत्तणपेडियाए। निशी० ५९ आ।  
 तालजंघ- तालो वृक्षविशेषः। स च दीर्घस्कन्धो भवति

तत-स्तालवज्जङ्घे यस्य तत्। ज्ञाता० १३७।  
 तालणा- ताडना चपेटादिदानानि। औप० १०३।  
 चपेटादिदा-नम्। प्रश्न० १०९। ताडना-  
 करादिभिराहननम्। उत्त० ४५६।  
 तालतोयाणि- तालतोयानि। बृह० १७३ अ।  
 तालनं- चपेटादिना हननम्। औप० १०७।  
 तालपलंब- फलविशेषः। आचा० ३४८। तालप्रलम्बः। भग०  
 ३६९।  
 तालपिशाच- पिशाचविशेषः। स्था० ५०२। पिशाचभेदवि-  
 शेषः। प्रजा० ७०।  
 तालपिसाय- तालवृक्षाकारोऽतिदीर्घत्वेन पिशाचः तालपि-  
 शाचः। ज्ञाता० १३७।  
 तालपुटं- विषविशेषः। उत्त० ३१८। सद्यो घाति यत्रौष्ठ-  
 पुटान्तर्वर्तिनि तालमात्रकालविलम्बतो मृत्युरुपजायते  
 तत्। उत्त० ४२९।  
 तालपुडं- तालपुटं विषविशेषः। आव० ३७४। जेणं ताला  
 संपुडिज्जङ्घे तेणं भरेणं मारयतीति। दशवै० १२७ अ।  
 तालफलं- प्रलम्बं फलविशेषः। दशवै० १७६।  
 तालवेंटं- तालपत्राशाखेत्यर्थः। निशी० ६० आ।  
 तालयंटं- तालवृन्तं वायूदीरकमेव द्विपटादि। प्रश्न० ८।  
 तालवंटं- तालवृन्तं तालाभिधानवृक्षपत्रवृन्तं पतच्छोट  
 इत्यर्थः। ज्ञाता० ४८।  
 तालवृन्तं- वीजनकम्। उत्त० ९०। व्यजनम्। जम्बू०  
 ४११।  
 तालवंटं- तालवृन्तं विद्याविशेषः। व्यव० १३३ आ। भग०  
 ४७४।  
 तालसमं- नट्टविशेषः। निशी० १ अ। यत्परस्पराहतह-  
 स्ततालस्वरानुवर्ति भवति तत् तालसमम्। स्था०  
 ३९६। यत्परस्पराभिहतहस्ततालस्वरानुसारिणा स्वरेण  
 गीयते तत्। अनुयो० १३२।  
 तालसुसंपुटं- परस्पराहतहस्ततालस्वरानुवर्ति यद्  
 गीतं तत्, यद् मुरजकंशिकादीनामातोद्यानामाहतानां  
 यो ध्वनिर्यश्च नृत्यन्त्या नर्तक्याः पादोत्क्षेपस्तेन  
 समं तत् तालसुसंप्रयुक्तम्। जम्बू० ४०।  
 तालसुसंप्रयुक्तं-परस्पराहतहस्तताल-स्वरानुवर्ति यद्  
 गीतं तत्, यद् मुरजकंसिकादीनामातोद्यानामाहतानां  
 यो ध्वनिर्यश्च नृत्यन्त्या नर्तक्याः पादोत्क्षेपस्तेन

समं तद्वा। जीवा० १९५।  
 ताला- कंसिकाः। प्रश्न० १५९।  
 तालाचरा- तालाद्यादिभिः विद्याविशेषैः चरन्ति  
 तालाचरा। निशी० १६७ आ। तालादानेन प्रेक्षाकारिणः।  
 राज० २। ज्ञाता० ४०। प्रेक्षाकारी। विपा० ६३।  
 तालाद्यादि- विद्याविशेषः। निशी० १६७ आ।  
 तालायर- तालाचरः-तालादानेन प्रेक्षाकारी। औप० ३।  
 तालाचरा नटाः। बृह० १०३ आ। तालाचरः तालादानेन  
 प्रेक्षाकारी दण्डपाशिको वा। औप० ७२। तालाचरः प्रेक्षा-  
 कारिविशेषः। प्रश्न० १४१।  
 तालायरा- तालाचराः प्रेक्षाकारिविशेषः। जम्बू० ११४।  
 चारणाः। औघ० २२३। नर्तकचट्टादयः। बृह० २७३ आ।  
 भडचेडण्डादिया। निशी० ३६८ आ।  
 तालिअटे- तालवृन्तं व्यजनविशेषः। दशवै० १५४, २२८।  
 जम्बू० १९१।  
 तालिज्जंताणं- ताडनम्। राज० ६२।  
 तालियंट- तालवृन्तं-मयूरपिच्छकृतव्यजनमित्यर्थः।  
 आचा० ३४५। तालाभिधानवृक्षपत्रं वृन्तं तत्पत्रच्छोट  
 इत्थर्थः। भग० ४६८। तालवृन्तं-व्यजनकम्। आव० १२२।  
 तालवृन्तं-वीजनकम्। प्रश्न० १६३।  
 तालियंटक- तालवृन्तकं व्यजनविशेषः। प्रश्न० १५२।  
 तालु- काकुदम्। जीवा० २७३। काकुन्दम्। ज्ञाता० १३८।  
 आचा० ३८।  
 तालुग्घाडणीए- विद्याविशेषः। निशी० ७६ आ।  
 तालेइ- ताडयति हस्तादिना। भग० १६६।  
 तालोदा- तालोदकानि। बृह० १७३ आ।  
 ताव- तावत्। स्था० ४९७। तापः-आतापनामकर्मोदया-  
 द्रविमण्डलानामुष्णः प्रकाशः। जम्बू० ४३३।  
 तावखित्तं- तापक्षेत्रं सूर्यातपव्याप्ताकाशखण्डम्। जम्बू०  
 ४५३।  
 तावखेत्तपुव्व- तापक्षेत्रपूर्व आदित्योदयमधिकृत्य यत्र  
 या पूर्वादिक्। दशवै० ८५।  
 तावणिज्जं- तापीनयं-तापसहम्। भग० ६७२।  
 तावण्णत्ता- तस्या इव नीललेश्या इव वर्णो यस्याः सा  
 तद्वर्णा तद्भावस्तत्ता तद्वर्णता। भग० २०५।  
 तावस- तवेष्टिओ। दशवै० ३३ आ। तापसः-कौशाम्ब्यां  
 श्रेष्ठिविशेषः। उत्त० ९९। तापसः-

परिशटितपत्राद्युपभोग-वान् बालतपस्वी। प्रज्ञा० ४०५।  
 पतितपत्राद्युपभोगवान् बालतपस्वी। भग० ५०।  
 तावसपल्लि- तापसपल्ली। आव० ३९१।  
 तावसा- भिक्षुविशेषः। निशी० ९८ आ।  
 ताविया- तापिका। आव० ८५४।  
 तावेइ- तापयति अपनीतशीतं करोति। जम्बू० ४६१।  
 निशी० १५ आ।  
 तासणं- त्रासनं फेत्कारादिवचनं भयकारि। प्रश्न० १६०।  
 तासणओ- त्रासः आकस्मिकं भयं  
 अक्रमोत्पन्नशरीरकम्पमनः  
 क्षोभादिलिङ्गितत्कारकत्वात् त्रासनकः। प्रश्न० ५।  
 ताहो- तदा तस्मिन् काले। ओघ० ११५।  
 तिंता- उल्ला। निशी० ४६ आ। भिन्ना किलन्ना आर्द्रा।  
 दशवै० ९६।  
 तिंतिण- सखेदं वचनम्। भग० ९१९।  
 तिंतिणि- तिंतिणी यत्र तत्र वा स्तोकेऽपि कारणे  
 करकरायणं। व्यव० २३० आ।  
 तिंतिणिए- तिन्तिणिकोऽलाभे सति खेदाद् यत्  
 किञ्चनाभि-धायी। स्था० ३७४।  
 तिंतो- किलन्नः। निशी० ८१ आ।  
 तिंदुग- एकादशतीर्थङ्करस्य चैत्यवृक्षनाम। सम० १५२।  
 तिन्दुकः- त्रीन्द्रियजीवविशेषः। उत्त० ६९५।  
 तिंदुगुज्जाणं- तिन्दुकोद्यानं श्रावस्त्यामुद्यानविशेषः।  
 उत्त० १५३।  
 तिंदुयं- तिन्दुकं तेन्दुरुकीफलम्। दशवै० १७६। प्रज्ञा०  
 ३६४। तिन्दुकं श्रीवस्त्यामुद्यानविशेषः। उत्त० ४९८।  
 फलविशेषः। प्रज्ञा० ३७, ३२८। वनस्पतिविशेषः। भग०  
 ८०३।  
 तिंदुसय- तेन्दूसकः। आव० १८१। ज्ञाता० १८४।  
 ति- तृतीया सप्तरात्रिकी। आव० ६४७।  
 तिअं- त्रिकं-कटिभागः। उत्त० ४७४।  
 तिउइई- त्रुट्यति अपगच्छति। आचा० २९०।  
 तिउड- त्रिकूटनामवक्षस्कारपर्वतः। जम्बू० ३५२।  
 तिउडग- त्रिपुटकाः धान्यविशेषः। दशवै० १९३।  
 तिउण- त्रिगुणं त्रिःप्रदक्षिणीकृत्य। आव० २३३।  
 तिउलं- त्रीन् मनः प्रभृतीन्-तुलयति तुलामारोपयति  
 कष्टा-वस्थीकरोतीति त्रितुलम्। प्रश्न० १५६। तोदकः-

व्यथकः। उत्त० ४७५।

तिउला- तीन मनोवाक्कायांस्तुल्यति अभिभवति या सा  
त्रितुला। प्रश्न० १७। त्रीनपि  
मनोवाक्कायलक्षणानर्थास्तु-लयति, जयति  
तूलारूढानिव वा करोति त्रितुला। ज्ञाता० ६८।

तिकट्टु- इतिकृत्वा। आव० ७९३।

तिकट्टुय- त्रिकटुकं शुण्ठीमरिचपिप्पल्यात्मकम्। उत्त०  
६५३।

तिकणइयाइ- नयत्रिकाभिप्रायाच्चिन्त्यन्ते यानि तानि  
नयत्रि-कवन्तीति त्रिकनयिकानि। सम० ४२।

तिकूडा- शीतामहानाद्याः दक्षिणतटे स्थितः  
वक्षस्कारपर्वत-विशेषः। स्था० ८०।

तिक्ख- तीक्ष्णा भेदिका। भग० ५४०। तीक्ष्णः-कटुः। उत्त०  
६५३। तीक्ष्णा वेगवती। भग० ३०६।

तीक्ष्णाछेदकरणात्म-कम्। दशवै० २०१। तीक्ष्णा  
निशिताः। उत्त० ३४९।

तिक्खदाढ- तीक्ष्णाः निशिता दंष्ट्रा एव यस्य स तीक्ष्ण  
दंष्ट्रः। उत्त० ३४९।

तिक्खसिंगे- तीक्ष्णे निशिताग्रे शृङ्गे विषाणे यस्य स  
तीक्ष्ण-शृङ्गः। उत्त० ३४९।

तिक्खा- परुषा। भग० ७६७।

तिक्खुत्तो- त्रिकृत्वः। आव० १२४, ३५९। त्रीन् वारान्  
त्रिकृत्वा। भग० १४।

तिखुत्तो- तिण्णिवारा। निशी० २१८अ।

तिग- त्रिकं यत्र रथ्यात्रयं मिलति। औप० ४। त्रिकम्।  
आव० १३६। त्रिकं यत्र स्थाने रथ्यात्रयमीलको भवति।  
औप० ५७। त्रिकं-रथ्यात्रयमीलनस्थानम्। भग० १३७,  
२००, २३८। त्रिकः-जीवाजीवनोजीवराशित्रयं  
तदभ्युपगन्तरोपि तथैव त्रिकाः। उत्त० १५२। त्रैराशिकः-  
राशित्रयख्यापकः। आव० ३११। त्रिकं-त्रिपथसमागमः।  
अनुयो० १५९। यत्र रथ्यानां त्रयं मिलति। स्था० २९४।  
कटिभागम्। उत्त० ४७५।

तिगडुगाईयं- त्रिकटुकादिकं  
सुण्ठीपिप्पलीमरिचकादिकम्। पिण्ड० ६५।

तिगपरिहीणो- त्रिकेण ज्ञानदर्शनचारित्रलक्षणेन हीनः।  
ओघ० १७३।

तिगिंछि- किंजल्कः। स्था० ४८२।

तिगिंछिकूडे- तिगिंछी-

किंजल्कस्तत्प्रधानकूटत्वात्तिगिंछि-कूटः। स्था०  
४८२।

तिगिच्छ- विमानविशेषः। सम० ३८। चिकित्सा। ज्ञाता०  
११३। आव० ३४८।

तिगिच्छकूडे- उत्पातपर्वतः। भग० १७२।

तिगिच्छा- रोगप्रतिकारः। निशी० ६५अ। रोगप्रति-  
कारः। पिण्ड० १२१, १३२। चिकित्सा। व्यव० १९५अ।  
मतिविभ्रमः। आव० ८१५। प्रश्न० १०९।

तिगिच्छायणसगोत्ते- ज्येष्ठागोत्रनाम्। सूर्य० १५०।

तिगिच्छायणे- चिकित्सायनं-ज्येष्ठागोत्रम्। जम्बू०  
५००।

तिगिच्छि- प्राकृते पुष्परजःशब्दस्य तिगिंछि इति  
निपातः देशी शब्दो वा। जम्बू० ३०७।

तिगिच्छिकूट- शिखरिणिवर्षधरे एकादशकूटनाम्। स्था०  
७२। उत्पातपर्वतः। प्रश्न० ९६। उत्पातपर्वतः। स्था०  
३७६। चमरेन्द्रस्य उत्पातपर्वतनाम्। स्था० ४८२। सम०  
३३। तिगिच्छिद्रहपतिकूटम्। जम्बू० ३८१।

तिगिच्छिद्रह- तिगिंछिः पौष्परजस्तत्प्रधानो  
द्रहस्तिगिंछिद्रहो नाम द्रहः। जम्बू० २०६।

तिगिच्छिते- चैकित्सिकं आयुर्वेदः। स्था० ४५१।

तिगिच्छी- नगरीविशेषः जितशत्रुराजधानी। विपा० ९५।

तिगुणं- तिसवाराः। ओघ० ११७।

तिगुणुकंडो- त्रिगुणं त्रीन् वारान् यावत् उत्-प्राबल्येन  
कण्डवं-छटनं यस्य स त्रिगुणोत्कण्डः। पिण्ड० ६५।

तिघरंतरं- गृहत्रयात्परतः तृतीयान्तरात्परतः। निशी०  
१८७।

तिचक्खू- त्रिचक्षुः उत्पन्नमावरणक्षयोपशमेन ज्ञानं च  
श्रुत्वा-वधिरूपं दर्शनं च अवधिदर्शनरूपं यो धारयति  
वहति स तथा य एवंभूतः सः  
चक्षुरिन्द्रियपरमश्रुतावधिभिरिति वक्तव्यं स्यात्। स्था०  
१७१।

तिजमलपदं- त्रयाणां यमलपदानां

समाहारस्त्रियमलपदम्, चतुर्विंशत्यङ्कस्थानलक्षणं  
अथवा तृतीयं यमलपदं षोडशा  
नामङ्कस्थानानामुपरितनाङ्काष्टकलक्षणमिति  
वर्गषट्कलक्षणम्। अनुयो० २०६।

तिष्ठइ- तिष्ठति वर्तते आसेवते। दशवै० २४३।

तिष्ठाणं- तिस्त्रो वाराः। ओघ० १९३। मणिबन्धहस्ततल-  
भूमिकालक्षणम्। बृह० १०७ आ। तिस्रो वाराः आ। आव०  
६४२।

तिष्ठाणकरणसूदं- त्रीणि स्थानानि उरःप्रभृतीनि तेषु  
करणेन क्रियया शुद्धं त्रिस्थानकरणशुद्धम्। जीवा० १९५।  
त्रीणि स्थानानि उरःप्रभृतीनि तेषु करणेन क्रियया  
विशुद्धम्। अथवा उरःकण्ठशिरस्सु श्लेष्मणा  
अध्व्याकुलेषु विशुद्धेषु प्रशस्तेषु यद्गीयते  
तदुरःकण्ठशिरोविशुद्धत्वात् त्रिस्थान-करणविशुद्धम्।  
जम्बू० ४०।

तिष्ठाणकरणसुद्धा- त्रिस्थानकरणशुद्धाः-  
आदिमध्यावसान-रूपेषु त्रिषु स्थानेषु करणेन क्रियया  
यथोक्तवाहनक्रियया शुद्धा अवदाता न  
पुनरवस्थानव्यापारणरूपदोषलेशेनापि कलङ्कि-ताः।  
जीवा० ३६६।

तिणय- त्रिनतं मध्यपार्श्वद्वयलक्षणे स्थानत्रयेऽवनतम्।  
भग० १९४।

तिणहत्थय- तृणपूलकः। भग० ९८४।

तिणिस- तिनिशाभिधानतरुसम्बन्धि। भग० ४८१।

तिनिशः वृक्षविशेषः। स्था० २१९। तैनिशं

तिनिशदारुसम्बन्धि। जीवा० १९२।

तिनिशद्रुमसम्बन्धि। जम्बू० ३७। वृक्ष-विशेषः। निशी०  
१४४ आ। तिनिशः वृक्षविशेषः। दशवै० २३९। उत्त० १७।

तिण्ण- तीर्णः भवार्णवं स्वयमवतरितः। जीवा० २५६।

तीर्णः शक्तः। आव० ६१७। तीण इव तीर्णः। सम० ४।

तितिकखइ- तितिक्षते दैन्याभावात् क्रमेण वा  
मनःप्रभृतिभिः। भग० ४९८।

तितिकख्या- तितिक्षार्थं सहनार्थम्। ओघ० १९०।

तितिकखसि- तितिक्षसे दैन्यावलम्बनेन। ज्ञाता० ७१।

तितिकखा- तितिक्षा परीषहजयः। प्रश्न० १४६। तितिक्षा  
परीषहजयः, योगसङ्ग्रहे नवमो योगः। आव० ६६४।

तितिकखेमि- तितिक्षामि। स्था० २४७।

तित्त- तिक्तः कोसातक्यादिवत्। उत्त० ६७६।

श्लेष्मनाश-कृत् तिक्तः। स्था० २६। तिक्तः-यदुदयात्।

जन्तुशरीरेषु तिक्तो रसो भवति यथा मरिचादीनां

तिक्तरसनाम। प्रज्ञा० ४७३।

तित्तगं- निशी० १९५ अ। तिक्तकं एलुकवालुङ्कादि।

दशवै० १८०।

तित्तालाउयं- कटुकतुम्बकम्। ज्ञाता० १९९।

तित्तिथ- तित्तिकः चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः।

प्रश्न० १४।

तित्तिर- तित्तिरः पक्षिविशेषः। प्रश्न० ८।

तित्तिरा- लोमपक्षिविशेषः। जीवा० ४१। प्रज्ञा० ४९।

तित्ती- तृप्तिः तृप्तहेतुत्वात्तृप्तिः अहिंसाया दशमं  
नाम। प्रश्न० ९९। तृप्तिः धाणिः। स्था० १३।

तित्थंकरो- तीर्थङ्करः जिनः प्रशस्तभावकरविशेषः।

आव० ४९९।

तित्थं- जन्मजरामरणसलिलसम्भृतं

मिथ्यादर्शनाविरतिगम्भीरं महाभीमकषायपातालं

दुरवगाहमहामोहावर्तभीषणं रागद्वेषपवनविक्षोभितं

विविधानिष्टेष्टसंयोगवियोगवीचीनिचयसङ्कुलं

उच्चैस्तरमनोरथसहस्रवेलाकलितं संसारसागरं तरन्ति

येन तत्तीर्थं। सकलजीवाजीवादिपदार्थसार्थप्ररूपकं

अत्यन्तावद्यं

शेषतीर्थान्तरीयाविज्ञातचरणकरणक्रियाधारं

सकलत्रैलोक्या-

न्तर्गतविशुद्धधर्मसंपत्समन्वितमहापुरुषाश्रयमविसंवा

दि प्रवचनम्। नन्दी० २१। तीर्थतेऽनेनेति तीर्थम्। स्था०

३२। तीर्थ-घट्टः। जम्बू० २००। तीर्थं तीर्थतेऽनेनेति

प्रवचनं सङ्घो वा। आव० ८६। तीर्थते

संसारसागरोऽनेनेति तीर्थं

यथावस्थितसकलजीवाजीवादिपदार्थसार्थप्ररूपकं परम-

गुरुप्रणीतं प्रवचनम्, तच्च निराधारं न भवति इति

सङ्घः प्रथमगणधरो वा। प्रज्ञा० १९। त्रिषु वा

क्रोधाग्निदाहो-

पशमलोभतृष्णानिरासकर्ममलापनयनलक्षणेषु

ज्ञानादिलक्ष-णेषु वा अर्थेषु तिष्ठतीति त्रिस्थम्। स्था०

३३। तीर्थं पवित्र-ताहेतुः, तरणोपायश्च। प्रश्न० १३६।

तीर्थभूतदेवद्रोण्यादि। ज्ञाता० ८१। तीर्थम् चातुर्वर्णः

श्रमणसङ्घः। आव० १३४। तीर्थं गणधरः। आव० २३३।

तीर्थं वा गणधरः। आव० २८७। तरन्ति तेन

संसारसागरमिति तीर्थं प्रवचनम् सङ्घः। भग० ७।

चाउवण्णो समणसंघो दुवालसंघं वा गणिपिडगं। निशी०

७७ अ। तीर्थम्, त्रिस्थम् त्र्यथं वा, जनं तरन्ति येन  
संसारसागरमिति तीर्थं प्रवचनं सङ्घः। सम० ३।  
पुण्यक्षेत्रम्। उत्त० ३७३। गणधरः प्रवचनं श्रुतमित्यर्थः।  
उत्त० ५८४। तीर्यते संसारसागरोऽनेनेति तीर्थ-  
यथावस्थि-तसकलजीवाजीवादिपदार्थसार्थप्ररूपकं  
परमगुरुप्रणीतं प्रवचनं सङ्घः प्रथमगणधरो वा। नन्दी०  
१३०। त्रयो वा क्रोधाग्नि-दाहोपशमादयार्थाः कलानि  
यस्य तत् त्र्यर्थम्, त्रयो-ज्ञानादयोऽर्थाः वस्तूनि यस्य  
तत् त्र्यर्थम्। स्था० ३३।  
जीवाजीवादिपदार्थसार्थअत्यन्तानवद्यशेषतीर्थान्त-  
रीयाविज्ञातचरणकरणक्रियाधारं त्रेलोकयान्तर्गतविशुद्ध-  
धर्मसम्पत्समन्वितमहापुरुषाश्रयं अविशं-वादि  
प्रवचनं च। तीर्थं श्रुतज्ञानम्। आव० २३५। तीर्यते  
संसारसमुद्रोऽनेनेति तीर्थं प्रवचनम्। राज० १०९।  
**तित्थगर-** तीर्थ-प्रवचनं तदव्यतिरेकाच्चेह सङ्घस्तीर्थं  
तत्करणशीलत्वात् तीर्थकरः। भग० ७। तीर्थकरः तीर्यते  
संसारसागरसमुद्रोऽनेनेति तीर्थं तत्करणशीलः। जीवा०  
२५५। तरन्ति येन संसारसागरमिति तीर्थं प्रवचनं  
तदव्य-तिरेकादिह सङ्घस्तीर्थं तस्य  
करणशीलत्वात्तीर्थकरः। सम० ३। तीर्थकरः  
द्वादशाङ्गप्रणायकः। प्रश्न० १०४।  
**तित्थगरनाम-** यदुदयवशात्  
अष्टमहाप्रातिहार्यप्रमुखाश्चतुस्त्रिंशदतिशयाः  
प्रादुष्यन्ति तत् तीर्थकरनाम। प्रजा० ४७५।  
**तीर्थकरनामगोत्रं-** तीर्थकरत्वनिबन्धनं नाम तीर्थकरनाम  
तच्च गोत्रं च-कर्मविशेष एवेत्येकवद्भावात्  
तीर्थकरनामेति गोत्रं-अभिधानं यस्य तत्। स्था० ४५५।  
**तित्थगरपडिरुवं-** तीर्थकरप्रतिरूपम्। आव० १२४।  
**तित्थधम्म-** तीर्थमिह गणधरस्तस्य धर्मः-आचारः  
श्रुतधर्मप्र-दानलक्षणस्तीर्थधर्मः, यदि वा तीर्थं प्रवचनं  
श्रुतमित्यर्थस्त-द्धर्मः स्वाध्यायः। उत्त० ५९४।  
**तित्थभेय-** तीर्थभेदः तीर्थमोचकः। प्रश्न० ४६।  
**तित्थभेय-** णाणाङ्गमगगविराहणाहत्थंति भणियं होइ।  
आव० ६६२।  
**तित्था-** तीर्थानि चक्रवर्तिनः  
समुद्रशीतादिमहानद्यवतारलक्ष-णानि तन्नामक  
देवनिवासभूतानि। स्था० १२३।

**तिदंड-** त्रिदण्डः। भग० ११३।  
**तिदंडी-** त्रिदण्डी सुवर्णपुरुषकारीपरिव्राजकः। आव० ४५२।  
**तिदिसं पगासगा-** त्रिदिशं प्रकाशकानि। आचा० ४३०।  
**तिदिसिं-** त्रिदिशि तिसृषु दिक्षु। जीवा० २३६।  
**तिदुला-** तौदिका-त्रीन्-प्रस्तावात् मनोवाक्कायान्  
दोलतीव स्वरूपचलनेन त्रिदुला। उत्त० १२१।  
**तिनयं-** त्रिनतं आदिमध्यावसानेषु नमनभावात्। जीवा०  
२५९।  
**तिनिशलता-** सञ्ज्वलनमानभेदः। दशवै० १०१।  
**तिन्नं-** तिस्रो वाराः। ओघ० २१७। स्तिमित आर्द्धतां गतः।  
जाता० ११४।  
**तिपट्ट-** एकः संस्तारकपट्टकः द्वितीय उत्तरपट्टकः  
तृतीयश्चो-लपट्टकः। ओघ० १३२।  
**तिपरियल्लं-** त्रिःपरिवर्तं त्रयः परावर्तकाः वेष्टनानि।  
ओघ० २१४।  
**तिपासियं-** त्रिपासितं त्रीणि वेष्टनानि दवरकेन  
दत्त्वापासितं पाशबन्धनं। ओघ० २१४।  
**तिपुड-** धान्यविशेषः। दशवै० ९२।  
**तिप्पंति-** प्रतिजागरति। गच्छा०।  
**तिप्पइ-** तेपते क्षरति ददाति। पिण्ड० ९३।  
**तिप्पइय-** त्रिपदिका। जीवा० २४७।  
**तिप्पणया-** परिदेवनता। सूत्र० ३६८। दशवै० १५।  
**तिप्पति-** तिप्यति सुखाच्यावयति। सूत्र० ३२५।  
**तिप्पमाण-** भयात् प्रस्वेदलालादि तर्पणं। जाता० १५९।  
**तिप्पयंतो-** निन्दयन्। सम० ५४।  
**तिप्पावणया-** तेपापना 'तिपृष्टे पृक्षरणार्थं' इति वचनात्  
शोकातिरेकादेवाश्रुलालादिक्षरणप्रापणा। भग० १८४।  
**तिभाग-** त्रिसंख्या भागासिभागाः। जम्बू० ६८।  
**तिमासिआ-** द्वादशे तृतीयभिक्षुप्रतिमा। सम० २१।  
**तिमिङ्गल-** तिमिङ्गलः महामत्स्यतमः। प्रश्न० ७।  
**तिमि-** तिमिः महामत्स्यः। प्रश्न० ७।  
**तिमितिमिङ्गिला-** मत्स्यविशेषः। प्रजा० ४४।  
**तिमिरं-** तिमिरसम्पाद्यो भ्रमः। प्रजा० ३५६।  
पित्तुदयविकारेण दव्वचरिवंदियस्य सवलीकरणं।  
निशी० ३०२ अ। वनस्पतिविशेषः। भग० ८०२। तिमिरं  
निकाचितं ज्ञानावरणीयम्। आव० ७८८। पर्वगविशेषः।  
प्रजा० ३३।

तिमिरविद्धंसे- तिमिरं अन्धकारं विध्वंसयति अपनयति  
तिमिरविध्वंसः। उत्त० ३५१।  
तिमिश्रगुहा- गुहाविशेषः। नन्दी० २२८।  
तिमिसंधारं- तमिस्रान्धकारं अत्यन्ततमः। प्रश्न० ९०।  
तिमिसगुह- तमिश्रगुहा। आव० १५०, ६८७।  
तिमिसगुहा- वैताड्यनवकूटे सप्ततमः। जम्बू० ३४१।  
तिमिसगुहाकूड- तमिस्रगुहाधिपदेवस्य निवासभूतं कूटं  
तिमि-सगुहाकूटम्। जम्बू० ७७।  
तिमिसा- तमिस्रा रजनी। प्रश्न० ९८।  
तिमिस्स- तमिस्रगुहा। प्रश्न० १६।  
तिमिस्सयावेण्ड- शल्यायते। आव० ४२२।  
तिमीतिमिगिलामच्छो- मत्स्यविशेषः। जीवा० ३६।  
तिम्मणं- व्यञ्जनम्। ओघ० १३३।  
तिम्मिअ- तीमित। आव० १३१।  
तिय- त्रिपथयुक्तं स्थानं त्रिकम्। ज्ञाता० २८। त्रिकं  
रथ्या-त्रयमीलनस्थानम्। प्रश्न० ५८। त्रिकं यत्र रथ्यात्रयं  
मिलति तत्। जीवा० २५८।  
तियचउक्कं- त्रिकचतुष्कम्। आव० ६७५।  
तियभंगो- त्रिकरूपो भङ्गः त्रिकभङ्गः भङ्गत्रयम्। भग०  
८६।  
तिरंजली- तिरोहिताञ्जलिः। व्यव० २३७ आ।  
तिरवंडिय- त्रिखण्डिकः स्तेनः। दशवै० ५२।  
तिरासिय- त्रैराशिकः गोशालकमतानुसारी  
निहणवविशेषः। सूत्र० ४५।  
तिरिअवेइया- तिर्यग्वेदिका यत्र सण्डासमध्ये हस्तौ  
नीत्वा प्रतिलिख्यते सा। ओघ० ११०।  
तिरिक्खजोणिया- तिर्यग्गतिप्रायतिर्यग्लोके योनयस्तत्र  
जाताः तिर्यग्लोके योनयः-उत्पत्तिस्थानानि ये ते  
तिर्यग्योनिजाः। जीवा० ३३।  
तिरिघट्टना- तिर्यग्घट्टना-प्रत्युपेक्षाणां कुर्वन् वस्त्रेण  
तिर्यक् कुट्यादि घट्टयति। ओघ० १०९।  
तिरिच्छसंपाड- तिर्यक् सम्पततीति तिर्यक्संपातः  
पतङ्गादिः। दशवै० १६४।  
तिरिच्छा- तिरिश्चीना अननुकूला  
सदनुष्ठानप्रतिधातिका। सूत्र० ३१९।  
तिरियंकडु- तिर्यक्कृत्वा अपहस्त्य, हस्तयित्वा वा। सूत्र०  
९०।

तिरियंकरेइ- तिर्यक्करोति। सूर्य० ४६।  
तिरियंभित्ति- तिर्यग्भित्तिः शकटोर्ध्ववदादौ  
सङ्कटामग्रतो विस्तीर्णा। आचा० ३०२।  
तिरिय- नो प्रतिकुलं नो अनुकुलं वितिरिच्छ तिरियं।  
निशी० ६३ आ। तिर्यक्। सूर्य० ४५। तिर्यक्भित्तिप्रदेशः।  
जीवा० २०६। तिर्यक् दिशः अनुदिशश्च। आचा० ६३।  
तीरितं तीरं पारं प्रापितम्। प्रश्न० ११३।  
तिरियलोए- रुचकस्याधस्तान्नवयोजनशतानि  
रुचकस्योप-रिष्टान्नवयोजनशतानि तिर्यग्लोकः।  
प्रज्ञा० १४४।  
तिरियलोयतट्ट- तट्टं-स्थालं तिर्यग्लोके तट्टमिव  
तिर्यग्लोकतट्टं तस्मिंश्च  
स्वयम्भूरमणसमुद्रवेदिकापर्यन्ते अष्टादशयोजनश-  
तबाहल्ये समस्ततिर्यग्लोके च। प्रज्ञा० ७६।  
तिरियलोयपरं-  
रुचकसमाद्भूतलभागान्नवयोजनशतानिगत्वा  
यज्ज्योतिश्चक्रस्योपरितनं तिर्यग्लोकसम्बन्धि  
एकप्रादेशिकमा-काशप्रतरं तत् तिर्यग्लोकप्रतरम्। प्रज्ञा०  
१४४।  
तिरियवाए- तिर्यगुद्गच्छन् यो वाति वातः स  
तिर्यग्वातः। प्रज्ञा० ३०। यस्तिर्यग्वाति वातः स  
तिर्यग्वातः। जीवा० २९।  
तिरीडंति- किरिटं च मुकुटं धारयन्ति ये ते। सम० १५८।  
तिरीड- तिरीटं मुकुटम्। प्रश्न० ७७। तिरीटं शिखरत्रयोपेतं  
मुकुटमेव। प्रश्न० ४८। किरीटानि मुकुटानि  
शिखरत्रयोपे-तानि। जम्बू० २०५।  
तिरीडपट्टए- वृक्षविशेषस्यवल्कभवंवस्त्रम्। बृह० २०१  
आ।  
तिरीडपट्टते- वृक्षत्वङ्मयम्। स्था० ३३८।  
तिरीडो- वृक्षविशेषः। बृह० २०१ आ।  
तिरीलोपट्टो- तिरीडरुक्खस्स वागो तस्स तंतू पट्टसरिसो  
सो तिरीलोपट्टो। निशी० २५४ आ।  
तिरो- तिरोहितम्। बृह० १५९ आ।  
तिर्यक्- पार्श्वतः। ओघ० १६८।  
तिर्यगानुपूर्वी- द्वितीयानुपूर्वी नाम। प्रज्ञा० ४७३।  
तिर्यग्गामिनी- नदीति तिर्यक् छिनत्ति सा। व्यव० २५  
आ।

तिर्यग्मनुजान्- जातमात्रबालकान् तिरश्च  
अश्ववत्सकादीन्। ओघ० १६६।  
तिर्यग्वेदिका- जानुनोः पार्श्वतो हस्तौ नीत्वा  
वेदिकायास्तृतीयः प्रकारः। स्था० ३६२।  
तिलंतिलं- तिलशः। विपा० ४७।  
तिलंबणा- त्रिलम्बनः त्रिकवलः कवलत्रयप्रमाणः। ओघ०  
१९०।  
तिल- तिलाः धान्यविशेषः। दशवै० १९३। औषधिविशेषः।  
प्रजा० ३३। तिलः अष्टाशितौ महाग्रहे एकत्रिंशत्तमः।  
जम्बू० ५३५। स्था० ७९। वनस्पतिविशेषः। भग० ८०२।  
तिलए- तिलकः वृक्षविशेषः। प्रजा० ३२। तिलकः  
सप्तदश-तीर्थकरस्य चैत्यवृक्षनाम। सम० १५२।  
भविष्यकालिनः प्रथमवासुदेवस्य प्रतिशत्रुः। सम० १५४।  
तिलकः भित्त्यादिषु पुण्ड्रम्। सूर्य० २६४। प्रजा० ९९।  
तिलकः। अनयो० २१२।  
तिलओ- तिलकः भित्त्यादिषु पुण्ड्रम्। जीवा० १७५, ३७१।  
तिलकंटओ- तैलकण्टकः कोकिलच्छदः प्रजा० ३६२।  
तिलक- धान्यवान् श्रेष्ठी। सूत्र० १९४। आधायाः  
परावर्तित-द्वारे श्रेष्ठी, वसन्तपुरे श्रेष्ठिविशेषः। पिण्ड०  
१००।  
तिलकीडय- तिलकीटकः तिलकृमिः। आव० ६२४।  
तिलकखागिया- तिलखादिका। आव० ६९७।  
तिलग- तिलकं वृक्षविशेषः। आव० ५१३।  
वनस्पतिविशेषः। भग० ८०३। निशी० ६१ अ। तिलकः  
विशेषको ललाटाभरणम्। औप० ५५।  
तिलगचोद्दसं- तिलकं ललाटाभरणं रत्नमयं चतुर्दशं यत्र  
तत्तिलकचतुर्दशम्। जम्बू० २१७।  
तिलगचोद्दसगं- तिलकचतुर्दशकं अलङ्कारविशेषः।  
आव० ६५। तिलकचतुर्दशकं आभरणविशेषः। आव० ९८।  
तिलगरयण- तिलकरत्नं पुण्ड्रविशेषः। जीवा० २०५।  
भित्त्यादिषु पुण्ड्रविशेषः। जम्बू० ५४। पुण्ड्रविशेषः।  
जम्बू० ४९।  
तिलगबणे- तिलकवनम्। भग० ३६।  
तिलत्थंबओ- तिलस्तम्बः। आव० २१२।  
तिलपप्पडओ- जो आगमेहि तिलेहि कीरड्। दशवै० ८६।  
तिलपप्पडग- तिलपर्पटः पिष्टतिलमयः। दशवै० १८५।  
तिलपर्पटिका- शङ्कुलिः। दशवै० १७६।

तिलपिड- तिलपिष्टः। तिललोदः। दशवै० १८५।  
तिलपीलगचक्क- तिला कीडगा वा छुट्टेज्जा। निशी० ६१  
आ।  
तिलपुप्फवण्णे- अष्टाशितौ महाग्रहे द्वात्रिंशत्तमः।  
जम्बू० ५३५। स्था० ७९।  
तिलमक्खियं- तैलमक्षितम्। औघ० १४०।  
तिलय- तिलकं एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः। जीवा० १४५।  
तिलको विशेषको भूषकत्वात्। भग० ५४१। तिलकाः  
भित्त्यादिषु पुण्ड्राणि। सम० १३९। तिलकः वृक्षविशेषः।  
जीवा० २२९।  
तिलयवणं- तिलकवनम्। आव० १८६।  
तिललोम- तिलखलः। व्यव० ४०५ अ।  
तिलसंगुलिया- तिलफलिका। भग० ६६४।  
तिलसक्कुलिया- तिलशङ्कुलिका तिलप्रधाना  
पिष्टमयपो-लिका। आचा० ५८।  
तिलसिंगा- तिलफलिका उत्कटिकाभेदे तिस्रः। प्रजा०  
२६६।  
तिलसंगलिया- तिलशिम्बा। आव० २१२।  
तिलहारगकपडुगो- तिलहारकशिषुः। आव० ७६८।  
तिलुक्क- त्रैलोक्यं  
भवनपतिव्यन्तरनरविद्याधरवैमानिकादि-  
समुदायलक्षणः। अनयो० ३७।  
तिलोदक- तत्प्रक्षालनजलम्। स्था० १४७।  
तिलोदगं- तिलोदकं तिलैः केनचित्प्रकारेण  
प्रासुकीकृतमुद-कम्। आचा० ३४६।  
तिल्लपूयं- तैलप्रधानं पूषम्। आचा० ३५२।  
तिवड्- त्रिपदी। आव० १६८। त्रिपदी भूमौ पदत्रयः न्यायः  
पदत्रयस्योन्नमनं वा। जम्बू० २६५। त्रयाणां पदानां  
समाहारस्त्रिपदी-मल्लस्येव रङ्गभूमौ  
पदत्रयविन्यासविशेषः। अन्त० १६।  
तिवई- त्रिपदी मल्लस्येव रङ्गभूम्यां गतिविशेषः।  
जाता० २३२।  
तिवग्गो- त्रिवर्गः त्रैलोक्यं धर्मार्थकामा वा। आव० ४२३।  
वत्थव्वगसंजूया संजेतोओ आगंतुगसंजता यतिवग्गा।  
निशी० १५५ आ।  
तिवति- त्रयाणां पदानां समाहारस्त्रिपदी-मल्लस्येव  
रङ्गभूमौ पदत्रयविन्यासविशेषस्ताम्। अन्त० १६।

**तिवलिय-** त्रिवलिका। भग० १६७।

**तिवायणं-** त्रिपातनं-त्रीणि कायवाङ्मनांसि यद्वा त्रीणि देहायु-रिन्द्रियलक्षणानि पातनं चातिपातो-विनाशः त्रयाणां काय-वाङ्मनसां पातनं-विनशनं त्रयाणां देहायुरिन्द्रियरूपाणां पातनं वा विनाशनम्। पिण्ड० ३७।

**तिवायणा-** त्रयाणां मनोवाक्कायानां त्रिभ्यो वा देहायुष्केन्द्रि-यलक्षणेभ्यः प्राणेभ्यः पातना-जीवस्य भ्रंसना त्रिपातना अतिशयवती यातना प्राणेभ्यो जीवस्य वेति, प्राणवधस्य दशमः पर्यायः प्रश्न० ५।

**तिविड-** त्रिपृष्ठः सिंहमारकः। व्यव० १६६ आ। त्रिपृष्ठः श्रेयांसजिनकालभावि प्रथमवासुदेवः सम० ८८। त्रिपृष्ठः जनपजोपद्रवकारी विषमगिरिगुहावासी महाकेसरीमारकः। प्रश्न० ७५।

**तिविडू-** भविष्यकालभावी नवमो वासुदेवः। सम० १५४। त्रिपृष्ठः प्रथमवासुदेवः। आव० १५९।

**तिव्व-** तीव्रा झगिति शरीरव्यापिका। भग० २३१। तीव्रः दुःसहः। आचा० १५०। बृहद्धारोपेतम्। आचा० ३३३। तीव्रः विशुद्धः। आव० २८। तीव्रं तिक्तं निम्बादिद्रव्यं तदिव तीव्रः। भग० ४८४।

**तिव्वदेसिय-** तीव्रं बृहद्धारोपेतं देशिकं बृहत्क्षेत्रव्यापि तीव्रं च तद्देशिकं तीव्रदेशिकम्, तीव्रदेशिका महतिदेशेऽन्धकारोपेता। आचा० ३३३।

**तिव्वप्परिणामा-** तीव्रपरिणामाः प्रबलाविर्भूतस्वरूपाः। आचा० १५०।

**तिव्वलज्ज-** तीव्रलज्जः उत्कृष्टसंयमः। दशवै० १९०।

**तिव्वेव-** तीव्रवैरः अनुबद्धविशेषः। ज्ञाता० ८१।

**तिव्वा-** तीव्रारौद्राः। आव० १९१। तीव्राः। जीवा० १८७। तीव्रा-तीव्रानुभागबन्धजनिता। प्रश्न० १९।

**तिव्वाभिलासे-** तीव्राभिलाषः अध्यवसायित्वम्। आव० ८२५।

**तिव्विड्डं-** अप्पफलं। दशवै० ८३ आ।

**तिसन्धि-** त्रिसन्धि आदिमध्यावसानेषु सन्धिभावात्। जीवा० २५९।

**तिसन्धिय-** त्रिसन्धितं त्रिषु स्थानकेषु कृतसन्धिकं नैकाङ्गि-कमित्यर्थः। भग० १९४।

**तिसरय-** त्रिसरिकम्। ज्ञाता० २२।

**तिसला-** चतुर्विंशतितमतीर्थकरस्य माता। सम० १५१।

विदेहदिन्ना प्रियकारिणी महावीरस्वामिनः माता।

आचा० ४२२। त्रिशला सिद्धार्थक्षत्रियपत्नी। आचा० ४२१।

आव० १७९। त्रिशला वर्द्धमानमाता। आव० १६०। त्रिशला महा-वीरजननी। भग० २६८।

**तिसाङ्गो-** तृषितः। आव० ४२६।

**तिसाकालो-** गिम्हो। निशी० ७५ आ।

**तिसामासो-** ज्येष्ठ आषाढो वा। बृह० १४३ आ।

**तिसालयं-** त्रिशालकं। जीवा० २६९।

**तिसिरा-** त्रिशालकम् मत्स्यबन्धविशेषः। विपा० ८१।

**तिसूलं-** त्रिशूलं प्रसिद्धं शस्त्रविशेषः। आव० ६५१।

**तिसोवाण-** त्रयाणां सोपानानां समाहारः त्रिसोपानम्। जम्बू० ४२।

**तिसोवाणपडिरूवगं-** त्रिसोपानप्रतिरूपकं त्रिसोपानं च तत् प्रतिरूपकं-प्रतिविशिष्टरूपं यस्य तत् च। जीवा० १९८। त्रिसोपानप्रतिरूपकं प्रतिविशिष्टरूपकं त्रिसोपानम्। जीवा० २८९।

**तिसोवाणपडिरूवग-** एकद्वारं प्रति निगामप्रवेशार्थं त्रिदिगभिमु-खास्तिस्रः सोपानपङ्क्तयः। स्था० २३२।

**तिहि-** तिथिः रिक्तार्केन्दुदग्धादिदुष्टतिथिभ्यो भिन्ना तिथिः। जम्बू० २७३।

**तिहिपव्वणी-** तिथिपर्व। आव० ४२२।

**तिही-** तिथिः मदनत्रयोदश्यादिः। प्रश्न० १५५।

मदनत्रयोद-श्यादितिथिषु। भग० ४३७। ज्ञाता० ८१।

मदनत्रयोदशीप्र-भृतिः। ज्ञाता० ५६।

**तीतं-** अतीतम्। भग० ६६।

**तीतद्धा-** अनादावतीतः कलः। भग० ४७।

**तीताण-** अतीता। स्था० ७६।

**तीमनं-** शाकः। पिण्ड० १३५।

**तीयं-** त्रैतं त्रिकम्। सूत्र० ६७।

**तीरं-** तीरावर्त्तिजलापूरितं स्थानम्। जीवा० १९७। तटम्। जीवा० १२३।

**तीरङ्-** शक्यते। आव० ३२४।

**तीरङ्गता-** तीरयित्वा पारं नीत्वा। उत्त० ५७२। तीरयित्वा अध्ययनादिना परिसमाप्य। उत्त० ५७२।

**तीरङ्गी-** संसारतीरभूतो मोक्षस्तदर्थी तीरार्थी। सूत्र० २९८।

तीरं पारं भवार्णवस्यर्थं यत इत्येवं शीलस्तीरार्थी

तीरस्थायी वा तीरस्थितिः। स्था० १८१।

तीरावेति- तीरयति समर्थं करोति। व्यव० १४७ अ।  
 तीरियं- पूर्णऽपि कालावधौ किञ्चित्कालावस्थानेन  
 तीरितं। आव० ८५१।  
 तीरियकज्ज- तिरिकार्यः समाप्तकार्यः। व्यव० १४५ अ।  
 तीरिया- तीरं पारं नीता। स्था० ३८८।  
 तीरेड- तीरयति पूर्णऽपि तदवधौ स्तोककालावस्थानात्।  
 भग० १२४। पूर्णऽपि काले स्तोककालमवस्थानात्।  
 ज्ञाता० ७३। पूर्णऽपि कालावधावनुबन्धात्यागात्। उपा०  
 १५।  
 तीर्थ- श्रुतम्। भग० ६।  
 तीसड़- त्रिंशत्। आव० ६३४।  
 तीसए- तिष्यकः शक्रसामानिकविकुर्वणाविवरणे  
 अनागारः तिष्यकाभिधानोऽनगारः। भग० १५८।  
 तीसगुत्त- तिष्यगुप्तः जीवप्रदेशिका सम्बन्धी निहनवः।  
 स्था० ४१०। तिष्यगुप्तः श्रीमहावीरशासने चतुर्थो  
 निहनवः। उत्त० १५३। तिष्यगुप्तः वस्वाचार्यशिष्यः।  
 उत्त० १५८। तिष्यगुप्तः यस्माज्जीवप्रदेशाउत्पन्नाः स  
 आचार्यविशेषः। आव० ३११। तिष्यगुप्तः  
 चतुर्दशपूर्विवसुनामाचार्यशिष्यः। आव० ३१४।  
 तिष्यगुप्तः वसुनामाचार्यशिष्यः। आव० ३१५।  
 तुंगारो- तुङ्गारः दक्षिणपूर्वो वातविशेषः। आव० ३८६।  
 तुंगिक- तुङ्गिकगणो व्याघ्रापत्यगोत्रम्। नन्दी० ४९।  
 तुंगीय- तुङ्गिकः सन्निवेशविशेषः। आव० २५५।  
 तुंगीया- नगरीविशेषः। भग० १३४, १३६।  
 तुंगीसिहरं- तुङ्गिशिखरम्। उत्त० ११७।  
 तुंडं- मुखम्। आव० ९३।  
 तुंडिय- तुण्डिकः यात्रासिद्धो वणिग्विशेषः। आव० ४१४।  
 तुंडिलः- जातबृहज्जठरः। उत्त० २७५।  
 तुंब- ज्ञातायां षष्ठाध्ययनम्। आव० ६५३। तुम्बं  
 अरकनिवे-शस्थानम्। जम्बू० २०४। तुम्बं-षष्ठाङ्गे षष्ठं  
 जातम्। सम० ३६। उत्त० ६१४। तुम्बं-अलाबुः। ज्ञाता०  
 १०। तुम्बं फलविशेषः। प्रज्ञा० ३७।  
 तुंबक- तुम्बकः-अलाबुतुम्बयोर्लम्बत्ववृत्तत्वकृतभेदः।  
 जम्बू० २४४।  
 तुंबभूओ- तुम्बभूतः। आव० २६३।  
 तुंबभूयं- तुम्बभूतं आधारसामर्थ्यान्नाभिकल्पम्। प्रश्न०  
 १३४।

तुंबरवः- गन्धर्वभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।  
 तुंबवण- तुम्बवनं। उत्त० ३२१। तुम्बवनं  
 सन्निवेशविशेषः। आव० २८६।  
 तुंबवीणा- तुम्बा युक्ता वीणा येषां ते तुम्बवीणः  
 तुम्बवीणावा-दकः। जीवा० २८१।  
 तुंबवीणिय- तुम्बवीणिकः। औप० ३। प्रश्न० १४१।  
 अनुयो० ४६।  
 तुंबा- तुम्बा ज्योतिष्केन्द्रसूर्यस्याभ्यन्तरिका पर्षत्।  
 जीवा० १७६।  
 तुंबाग- तुम्बाकं त्वग्मिज्जान्तर्वर्ति आर्द्रा वा  
 तुलसीवेत्यन्ये। दशवै० १७६।  
 तुंबी- वल्लीविशेषः। प्रज्ञा० ३२। वनस्पतिविशेषः। भग०  
 ८०३।  
 तुंबेणउरेपडिअं- तुम्बेनोरसि पतितम्। आव० १७६।  
 तुंबेति- मच्छिजालसरिसं जालं काऊण अलाबुगाण  
 भरिज्जति। निशी० ४५ अ।  
 तु- भव्यकर्मविशेषणार्थः। आव० ४३८। पुनः। आव०  
 २८५। पुनः। आचा० २२९। तु शब्दो भाषामात्रार्थः। सम०  
 १२७। हेतौ। व्यव० ४७ अ। तुः भाषामात्रः। प्रश्न० १५६।  
 अधिकारार्थसंसूचनार्थः। प्रज्ञा० ५५४।  
 तुअइति- त्वग्दर्शनं कुर्वन्ति वामपार्श्वतः परावृत्य  
 दक्षिणपार्श्वेनावतिष्ठन्ते दक्षिणपार्श्वतो वा परावृत्य  
 वामपार्श्वेनावतिष्ठन्ते इति। जम्बू० ४६।  
 तुअइणं- त्वग्वर्तनं निमज्जनम्। ओघ० ५८।  
 तुच्छं- अल्पम्। प्रश्न० ६३, १०६। ज्ञाता० ११३। अल्पं  
 रिक्तम्। आव० ६४३। द्रमकस्य काष्ठहारकादेः कथ्यते,  
 अथवा पूर्णो जातिकुलरूपाद्युपेतस्तद्विपरितस्तुच्छो,  
 विज्ञा-नवान्। वा पूर्णस्ततो अन्यस्तुच्छः। आचा० १४५।  
 तुच्छः उन्मादः। सूत्र० २५०। तुच्छः यदृच्छाभिधायितया  
 निःसारः। उत्त० २२७।  
 तुच्छकुलं- असारकुलम्। आव० १७८।  
 तुच्छकुलानि- अल्पमानुषाणि अगम्भीराशयानि वा।  
 स्था० ४२०।  
 तुच्छत्तं- तुच्छत्वं निःसारता। प्रज्ञा० ३०३।  
 तुच्छत्ता- निस्सारता। भग० ७४२।  
 तुच्छोसहिभकखणया- तुच्छौषधिभक्षणता  
 असारौषधिभक्षणता। आव० ८२८।

तुज्झतो- त्वदीयः। आव० ७०८।

तुज्झ- भवन्तः। ओघ० ८०।

तुज्झच्चयं- तावकीनम्। आव० ९९।

तुष्ट- तुष्टाः आन्तरप्रीतिभाजः। उत्त० ४४१। तुष्टः-तोषं कृतवान्। जीवा० २४३। तुष्टः हृष्टःसन्तोषवत्। भग० ११९।

तुष्टा- तुष्टा हृष्टा। दशवै० २५०।

तुष्टि- तुष्टि इच्छानिवृत्तिः। जम्बू० १५१। आचा० ४२४।

तुडिअंग- त्रुटिताङ्ग द्रुमगणविशेषः। जम्बू० १०२। चतुर- शीत्या लक्षौः पूर्वेः गुणितं। त्रुटिताङ्गम्। अनुयो० १००।

तुडि- चतुरशीत्या गुणितं लक्षैस्त्रुटिताङ्गैः त्रुटितम्। अनुयो० १००। सूर्य० ९१। भग० २१०, २७५, ८८८। तुटिकम् अन्तःपुरम्। सूर्य० २६७। जीवा० ३८४। तुडिकं नाम वर्गः। भग० ५०५।

तुडिओ- तुटिकः अभ्यन्तरपर्षत्सत्कस्त्रीजनः। जम्बू० ५५२।

तुडितंगा- त्रुटितानि तूर्याणि तत्कारणत्वात् त्रुटिताङ्गाः। तूर्य-दायिनः। स्था० ५१७।

तुडियंग- चतुरशीत्या लक्षैः। पूर्वेः गुणितं त्रुटिताङ्गम्। सूर्य० ९१। भग० २१०, ८८८। चतुरशीतिः पूर्ववर्षशतसहस्राणि एकं त्रुटिताङ्गम्। जीवा० ३४५।

तुडियंगा- तूर्याङ्गसम्पादकाः। सम० १८।

तुडियंगति- पूर्वाणि चतुरशीतिलक्षगुणितानि त्रुटिताङ्गानि। स्था० ८६।

तुडिय- त्रुटिकः बाहुरक्षिकः। भग० १३२, ४४७। त्रुटिका शेषतूर्यम्। सूर्य० २६७। भग० १५४, ५०६। वादित्रसमुदयो त्रुटिः। निशी० ७१ आ। सूर्यमणीमादयं तुडियं। निशी० २५४ आ। थिग्गलं देसी भासाए सामयिगी वा एस पडिभासा। निशी० १२४ आ। तुटितं बाहुरक्षिकः। प्रजा० ८८। वादित्रम्। जीवा० २१७। आतोदयम्। जीवा० २२७। तुडितं भूषणविधिविशेषः। जीवा० ३६९। प्रजा० ९१। तुहितं बाशुरक्षकः। जीवा० १६२, १६४, १५३। चतुरशीतिस्त्रुटि-ताङ्गशतसहस्राणि एकं त्रुटितम्। जीवा० ३४५। त्रुटिताङ्गः। आव० ११०। तुटीतानि बाहुरक्षकाः। उपा० २६।

तुडिया- असुरकुमारस्य लोकपालानां द्वितीयाऽग्रमहिषी, धर-णस्य लोकपालानां द्वितीया अग्रमहिषी। स्था०

१२७। तुटीकाः बाहुरक्षिकाः। औप० ४९। प्रश्न० ७१। त्रुटिता-पिशाचकुमारेन्द्रस्य मध्यमिकापर्षत्। जीवा० १७१। त्रुटिता-ज्योतिष्केन्द्रसूर्यस्य मध्यमिका पर्षत्। जीवा० १७६।

तुडियाणि- त्रुटितानि मृणालिकाः। आचा० ३६३।

तुणगं- वत्थच्छिद्दे पुणणवकरणं तुडियं। निशी० १०४।

तुण्ण- तूणकः तान्त्रिकः तन्त्रीवादकः। अनुयो० १४९।

तुण्णाओ- तन्तुवायः। आव० ४२७।

तुण्णाग- सीवनकर्मकर्त्ता। नन्दी० १६५। तुन्नवायः। आव० १८७।

तुण्णागदार- तूर्णकदारकः सूचिकः। अनुयो० १७६।

तुण्णागा- तुन्नाकाः सूच्याजीविनः। प्रजा० ५६।

तुण्हक्को- तूष्णीकः। आव० १८८, २६२।

तुत्त- तोत्रं प्राजनकः। उत्त० ५४८।

तुत्तगो- पाङ्गगो। आव० ७९७।

तुत्ततो- भग्गो। निशी० ३५१ आ।

तुन्दपरिमृजः- द्रमकः। आचा० ३१४।

तुन्नणं- तोदणम्। आव० ६५१।

तुन्निए- कलाकौशलत-पूरितच्छिद्रम्। बृह० ९२ आ।

तुपइणं- संस्तारकेशयनम्। बृह० २०७ आ।

तुप्प- पुणमयकलेवरवसा। निशी० ४७ आ।

तुप्पतरयं- स्निग्धतरम्। ओघ० १९६।

तुप्पियं- स्नेहितम्। विपा० ४७।

तुप्पोड्ड- मृष्ठः। ओघ० ५५।

तुप्पोड्डा- तुप्रा मक्षिता मदनेन वा वेष्टिताः

शीतरक्षादिनिमित्त-मोष्ठा येषां ते तुप्पोष्ठाः। अनुयो० २७।

तुबरं- कषायद्रव्यं आमलकादि। जम्बू० ४११।

तुब्भच्चया- त्वदीया। आव० ६३२।

तुमंतुम- तुमन्तुमः हृदयस्थः कोषविशेषः एव। भग० ९२४। तिरस्कारप्रधानमेकवचनान्तं बहुवचनोच्चारणयोग्ये। सूत्र० १८३।

तुयइंतं- त्वगवर्त्तनं स्वपनम्। दशवै० १५५।

तुयइंति- निषण्णा आसते। भग० ६१८।

तुयइणं- त्वगवर्त्तनम्। आव० ६५४। निमजनं क्रियते।

ओघ० १३०। आव० ६५४। शयनम्। ओघ० २१४।

तुयइति- त्वगवर्त्तनं करोति। जीवा० २०१।

तुयद्वियव्वं- त्वग्वर्तितव्यं शयनीयं,  
सामायिकाद्युच्चारणपूर्वकं शरीरप्रमार्जनां विधाय  
संस्तारकोत्तरपट्टयोर्बाहूपधानेन वाम-पार्श्वत  
इत्यादिना न्यायेनेत्यर्थः। ज्ञाता० ६१।

तुयट्टेज्ज- शयीत। भग० ९०।

तुय- कुसुमोदकादि। बृह० २४६ आ।

तुयावइत्त- तोदं कृत्वा तोदयित्वा व्यथामुत्पाद्य या  
प्रव्रज्या दीयते। स्था० २७६, १२९।

तुरंतो- त्वरयन्। आव० ६१७। त्वरितम्। निशी० ३१९ आ।

तुरमाणभोज्ज- त्वराभोज्यम्। तन्दु० ।

तुरमिणी- नगरीविशेषः। बृह० ११३ अ।

तुरली- णालिया अपव्वा। निशी० ६० आ।

तुरिओ- त्वरितः। ओघ० १५५।

तुरितं- त्वरितं शीघ्रम्। आव० ९६। त्वरितः शीघ्रम्।  
ज्ञाता० ३५।

तुरिमिणि- णगरीविसेसो। निशी० २५८ अ।

तुरियं चवलं- त्वरितचपलं अतिचटुलतया। ज्ञाता० १६२।

तुरियं- त्वरिता-आकुला न स्वाभाविक्या आन्तराकूततः।  
ज्ञाता० ३६। त्वरितं-वचनचापल्यतः। प्रश्न० १२०।  
त्वरि-तत्त्वं मनस औत्पुल्यात्। ज्ञाता० ९९। त्वरितत्वं  
मनसमु-खक्षेपे। प्रश्न० १२९।

तुरियकरणं- त्वरितकार्यं जातम्। ओघ० १७७।

तुरियगई- त्वरितगतिः मानसौत्सुक्यप्रवर्तित  
वेगवद्गतिः। भग० १७८।

तुरियणिद्धा- त्वरितनिद्रा मरणनिद्रा। आव० ३४६।

तुरिया- त्वरिता-आकुला। भग० ५२७। त्वरिता-आकुलता  
न स्वभावजेत्यर्थः। भग० १६७। त्वरितः त्वरावान्। भग०  
१७८।

तुरी- वस्त्रवननोपकरणः। आचा० २२८।

तुरुक्कं- तुरुष्कं सिल्हकम्। प्रश्न० ७७। जीवा० १६०,  
२०६। जम्बू० ५१, १४४। प्रजा० ८७। औप० ५। ज्ञाता० ४०।  
सिल्हकाभिधानं गन्धद्रव्यम्। सम० ६१।

तुरुक्कधूव- सेल्हकलक्षणो धूपः। उपा० ५।

तुरुक्का- तुरुष्कः सुगन्धिद्रव्यविशेषः। आव० १०१।

तुरुक्ख- गंधद्रव्यम्। निशी० २७६ आ।

तुरुतुंबगा- त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। प्रजा० ४२।

तुरुमिणिदत्त- दारुणमिथ्यात्वः। भक्त० ।

तुरुमिणिणगरी- नगरीविशेषः। निशी० २५८।

तुरुविणी- तुरुमिणी नगरी, यत्रजितशत्रुराजा। आव०  
३६९।

तुलयति- अभिभवति। प्रश्न० १७। जयतीति। स्था० ४६९।

तुलसी- भूतानां चैत्यवृक्षः। स्था० ४४२। भग० ८०२।  
गुच्छविशेषः। प्रजा० ३२। आचा० ५७।

तुलसे- हरितविशेषः। प्रजा० ३३।

तुला- इयत्तापरिच्छेदहेतुः। उत्त० ६८७। अनुयो० १५४।

तुलाकोटिकानि- नूपुराणि। औप० ५५।

तुलासंठि- तुलासंस्थितं पुनर्वसुनत्रस्थानम्। सूर्य० १३०।

तुलिया- तोलयित्वा गुणदोषवत्तया परिभाष्य। उत्त०  
२८९। परीक्षात्मानं धृतिदाढ्यादिगुणान्वितमिति। उत्त०  
२५३।

तुल्यं- समचतुरस्रम्। जीवा० ४२।

तुल्लविसेसाहियं- परस्परापेक्षया तुल्यत्वेन विशेषेण  
असङ्ख्य-भागादिनाऽधिकं  
पूर्वकालबद्धकर्मापेक्षयाऽधिकतरं तुल्यविशेषाधिकम्।  
भग० ९६१।

तुवरं- सकषायम्। उत्त० ६५३।

तुवर- धान्यविशेषः। निशी० ५२ आ।

तुवरपत्ते- पलाशपत्रादीनि। बृह० १०६ अ।

तुवरफल- हरीतक्यादयः। निशी० ४७ आ।

तुवरफला- हरीतकीप्रभृतीनि। बृह० १०६ अ।

तुवरिका- सौराष्ट्रिका। दशवै० १७०।

तुवरिमद्विया- ते पुढविपरिणामा वणिण्या जेण सुवण्णं  
वणि-ज्जाति, सोरद्विया तुवरिमद्विया भण्णति। निशी०  
२१८।

तुवरी- तुवरी-धान्यविशेषः। दशवै० १९३। भग० ८०२।

तुषमुखं- बीजसूक्ष्मम्। स्था० ४३०।

तुषाग्निः- तुषसत्कोऽग्निः। जीवा० १२३।

तुष्टः- महितः। आव० ७५९।

तुससाला- सालिमादितुसट्ठाणं तुससाला। निशी० २६५  
आ।

तुसा- क्रोद्रवादीनि। स्था० ४१९।

तुसारं- तुषारं हिमम्। ज्ञाता० ६९। जीवा० ११९।

तुसार- तुषारः हिमम्। आव० २०४।

तुसारपुंजं- तुषारपुञ्जम्। जीवा० ११९।

तुसिओ- तुषितः। आव० १३५।  
 तुसिणिया- तूष्णीका मूका। दशवै० १०८।  
 तुसिणी- तूष्णी मूकता। आव० ५४८।  
 तुसिता- सुप्रतिष्ठाभविमानवासी षष्ठो लोकान्तिकदेवः।  
 स्था० ४३२।  
 तुसिय- तुष्टः सुप्रतिष्ठाभविमानवासी षष्ठो  
 लोकान्तिकदेवः। भग० २७१। ज्ञाता० १५३।  
 तुसोदण- तुषोदकं व्रीहयुदकम्। स्था० १४७।  
 तुसोदगं- तुषोदकं पानकभेदः। आचा० ३४६।  
 तुहगा- कन्दविशेषः। उत्त० ६९१।  
 तुह- तावकीनम्। आव० ५६५।  
 तुहिनं- हिमम्। स्था० २८७।  
 तूडिअ- वृटिकं बाहवाभरणम्। जम्बू० १०६।  
 तूणइल्ल- तूणाभिधानवादयविशेषवान्। औप० ३, ४।  
 प्रश्न० १४१। अनुयो० ४६। जीवा० २८१।  
 तूणइल्ला- तूणाभिधानवादयविशेषवन्तः। राज० २।  
 ज्ञाता० ४०।  
 तूणक- वाद्यविशेषः। प्रश्न० १५९।  
 तूणीरा- तूणाः। जम्बू० २०६।  
 तूमणया- देशी० स्थगनम्। व्यव० १२१ आ।  
 तूयरी- तुवरी आढकी। पिण्ड० १६८।  
 तूरंतो- त्वरयन्। मरण०। त्वरमाणः। ओघ० ६५।  
 तूर- वाद्य। आव० १४५।  
 तूरपत्ति- निशी० १६७ आ।  
 तूरपइ- तूर्यपतिः नटमहत्तरः। बृह० १०३ आ।  
 तूल- तूलः अर्कतूलः। सूर्य० २९३। अर्कतूलम्। ज्ञाता० ६।  
 अर्कतूलम्। जम्बू० ५५। जीवा० २१०।  
 तूलकं- तूलम्। उत्त० ६५३।  
 तूलकडं- अक्कादितूलनिष्पन्नम्। आचा० ३९३।  
 तूलि- तूलिका। स्था० २३४।  
 तूलिअं- तूलिका। गच्छा ०।  
 तूलिया- तूली संस्कृतरुतादिभृताऽर्कतूलादिभृता वा। बृह०  
 २२० आ।  
 तूलियाओ- तूलिका बालमध्यश्चित्रलेखाकूर्चिकाः।  
 ज्ञाता० १४४।  
 तूली- तूली अप्रतिलेखितदूष्यपञ्चके प्रथमः। आव०  
 ६५२। एगबहुकमेरगा तुल्ली, अक्कडोडगाइतूलभरिया

वा तूली। निशी० ६१ आ।  
 तूवरो- तुवरः कषायः। जीवा० २४४।  
 तूष्णीका- पिशाचभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।  
 तूसीणिए- तूष्णीको वचनरहितः। ज्ञाता० ८५।  
 तूहं- तीर्थम्। बृह० ३० आ। तीर्थं गवां जलपानस्थानं  
 निपानमित्यर्थः। बृह० ६२ आ।  
 तेंदु- तिन्दुकः बहुबीजकवृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
 तेंदुओ- गन्धर्वाणां चैत्यवृक्षनाम। स्था० ४४२।  
 तेंदुगं- तिन्दुकं वाणारस्यां तिन्दुकवनोद्याने  
 यक्षायतननाम। उत्त० ३५६। तिन्दुकं  
 श्रावस्त्यामुद्यानः। आव० ३१२।  
 तेंदुयं- टेम्बरूयम्। आचा० ३४९।  
 तेंदुयवणं- तिन्दुकवनं वाणारस्यामुद्यानविशेषः। उत्त०  
 ३५६।  
 तेंदूसं- तिन्दुसं-फलविशेषः। प्रज्ञा० ३७। तेंदूसए-कन्दुकः।  
 ज्ञाता० १५८।  
 तेंबुरुमिंजिया- त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२।  
 तेअ- तेजः-परासहनीयः पुण्यः, प्रतापः। जम्बू० १८२।  
 तेजसः-शारीरम्। जम्बू० २१९।  
 तेअतली- तेजस्तलीनः जातिवाचकः शब्दः। जम्बू० १२८।  
 तेआ- तेजाः त्रयोदशीरात्रिनाम। जम्बू० ४९१।  
 तेउ- तेजः उष्णः। आचा० २४५। बृह० ३०९ आ।  
 तेउफासे- तेजःस्पर्शाः-उष्णस्पर्शाः। आचा० ३१०।  
 तेउलेसा- तेजोरूपालेश्या येषां ते तेजोलेश्याः। स्था० १००।  
 तेउलेसे- तेजोलेश्या-विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवा  
 ते-जोज्वाला यस्य सः। सूर्य० ५। तेजोलेश्या  
 विशिष्टतपोज-न्यलब्धिविशेषप्रभवा तेजोज्वाला।  
 जम्बू० १६।  
 तेउलेस्से- तेजोलेश्या तपोविभूतिजं तेजस्वित्वं  
 तैजसशरीर-परिणतिरूपं महाज्वालाकल्पम्। स्था०  
 १४९।  
 तेउसिहे- अग्निशिखस्य द्वितीयो लोगपालः। स्था०  
 १९७।  
 तेऊ- अग्निशिखस्य प्रथमो लोगपालः। स्था० १९७। तेजो-  
 योगात्तेजांसि-अग्नयस्तद्वर्तिनो जीवा अपि। उत्त०  
 ६९३।  
 तेऊलेसा- तेजो-वह्निस्तद्वर्णालेश्या लोहितवर्णीत्यर्थः

तेजो-लेश्या। स्था० १७५।

तेज- तेजः तेजोलेश्या। भग० ६७३। तेजः-

शरीरस्थकान्तिः। स्था० ४२१। तेजः तपोमाहात्म्यम्।

उत्त० ३६५। तेजः शरीरार्चिः। भग० १३२। तेजः-

शरीरप्रभवम्। प्रज्ञा० ८८। तेजः-तजसं-उष्मलिङ्गं

भक्ताहारपरिणमनकारणम्। प्रज्ञा० ४०९। तेजः-ज्ञानं,

भावतमो विनाशकत्वात्। प्रश्न० १५८। तेजः

शरीरसम्बन्धिरोचिः प्रभावो वा। औप० ५०।

तेरण- तेजसा कान्त्या। उपा० २६।

तेओगकडुम्मे- त्र्योजःकृतयुग्मे द्वादशादयः। भग० ९६४।

तेओगकलिओए- त्र्योजकल्योजे त्रयोदशादयः। भग० ९६४।

तेओगतेओगे- त्र्योजत्र्योजराशौ तु पञ्चदशादयः। भग० ९६४।

तेओगदावरजुम्मे- त्र्योजद्वापरे तु चतुर्दशादयः। भग० ९६४।

तेओय- त्रेतौजः। सूर्य० १६७।

तेगिच्छि- चिकित्सकः वैद्यः। ओघ० ५३।

तेगिच्छिपुत्तो- चिकित्सकपुत्रः चिकित्सामात्रकुशलस्य पुत्रः। विपा० ४०।

तेगिच्छिसाला- चिकित्साशालं आरोगशाला। ज्ञाता० १८०।

तेगिच्छी- चिकित्सकः चिकित्सामात्रकुशलः। विपा० ४०।

तेज- विशिष्टसंवेदनप्रभवा धर्मदेशना। नं० अनुयो०।

तेजितं- उपचितम्। प्रज्ञा० ९१।

तेण- स्तेनाः उपकरणापहारिणः। व्यव० १४अ। यः।  
स्था० ७। स्तेनः-चौरः। ओघ० २३। स्तेनाः चौराः। जम्बू० ६६। स्तेनः-भगवददत्तग्रहाणात् अन्यापदेशयाचनाद्वा न मां कश्चिज्जानातीति भावयन् चौराःसौ। दशवै० १८८।

तेणतेणो- अपडुप्पन्नं बालं हरंतो तेणो स तेणो तं सेहं बाहिं गामादियाण ठवेत्ता अप्पणा भिक्खस्स पविट्ठो एत्थंतरे जो तं सेहं अण्णो उप्पोसेत्ता हरति सो तेणतेणो। निशी० ४५अ।

तेणयबंधो- यत्रमध्येनैव पात्रककाष्ठस्य दवरके याति तावद् यावत्सा राजिः सीविता भवति सः स्तेनकबन्धः।

ओघ० १४६।

तेणाहडे- स्तेनाहतं चौरानीतम्। उपा० ७।

तेणिक्कं- स्तैनिक्यं स्तेयं, तृतीयाधर्मद्वारस्य त्रयोदशं नाम। प्रश्न० ४३।

तेणियं- स्तैन्यं यत्परेभ्यः खल्वात्मनं गूहयन् स्तेनक इव वन्दते, कृतिकर्मणि षोडशो दोषः। आव० ५४४।

तेणेव- तेन तस्मिन्। सूर्य० ६।

तेतलि- वनस्पतिविशेषः। भग० ८०३।

तेतलिपुरं- यत्र कनकरथो राजा। आव० ३७३।

तेतलिसुओ- तेतलिसुतः कनकरथराजोऽमात्यः। आव० ३७३।

तेतलिसुतः- अमात्यविशेषः। विपा० ८८।

तेतलीतिय- तेतलिसुतः। स्था० ५१०।

तेत्तली- षष्ठाङ्गे चतुर्दशं ज्ञातम्। सम० ३६।

तेनाहडे- स्तेनाहतं-चौरानीतम्। आव० ८२२।

तेनिस- तैनिशं-तिनिशानिधानवृक्षसम्बन्धिः। भग० ३२२।

तेपते- क्षरति सञ्चलति मर्यादातो भ्रश्यति निर्मर्यादो भवतीति यावत्। आचा० १३६।

तेपन्नता- तेपनता तिपेः-क्षरणार्थत्वादश्रुविमोचनम्। स्था० १८९।

तेप्पिऊण- कल्पयित्वा। ओघ० १२२।

तेवुरणमिंजिया- त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। प्रज्ञा० ४२।

तेमासिए- त्रैमासिकः। आचा० ३२७।

तेयंसी- दीप्तशरीरत्वात्। सम० १५६। तेजस्वी-तेजः शरीर-प्रभा तद्वांस्तेजस्वी। ज्ञाता० ६। तेजस्विनः शरीरप्रभायुक्ताः। भग० १३६।

तेय- तेजः शरीरप्रभवम्। जीवा० १६२। माहात्म्यम्। बृह० २१२आ।

तेयए- तेजसोविकारः तैजसम्। प्रज्ञा० २६८। तैजसं-तेजः-पुद्गलानां विकारः। जीवा० १४। तेजसोभावस्तैजसं उष्मा-दिलिङ्गसिद्धम्। स्था० २९५।

रसाद्याहारपाकजननं तेजो-निसर्गलब्धिनिबन्धनं च तेजसो विकारस्तैजसम्। अनुयो० १९६।

तेयतली- तेजश्च तलं च रूपं येषां ते तेजस्तलिनः, भारतवर्षं मनुष्यभेदः। भग० २७६।

तेयते- तेजते-दीप्यते। उत्त० १८६।

तेयनिसगग- तेजोनिसर्गः। आव० २१४। भगवत्यां  
पञ्चदशशते प्रकरणम्। भग० ६९५।  
तेयफासं- तेजःस्पर्शः-उष्णरूपतापरिणतनरककुडयादि-  
स्पर्शः। जीवा० १२८।  
तेयलिपुत्त- कनकरथभूपस्यामात्यः। ज्ञाता० १८४।  
तेयलिपुर- कनकरथनृपस्य नगरी। ज्ञाता० १८४।  
तेयली- तेतलिसुताभिधानोऽमात्यः। ज्ञाता० १०। ज्ञातायां  
चतुर्दशाध्ययनम्। आव० ६५३। तेतलिः-षष्ठाङ्गे  
चतुर्दशं ज्ञातम्। उत्त० ६१४।  
तेयलेसे- तेजोलेश्या विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवा  
तेजो-ज्वाला। भग० १२।  
तेयलेस्स- तेजोलेश्या सुखासिका। भग० ६५७। शरीरदीप्तं  
सुखासिकां वा। स्था० १४५।  
तेयलेस्सा- तेजोलेश्या  
विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवा तेजोज्वाला। औप०  
८४।  
तेयल्लेसे- विशिष्टतपोजन्यलब्धिविषयप्रभवा  
तेजोज्वाला। ज्ञाता० ७।  
तेयसं- तैजसं यदुदयात्तैजसशरीरप्रायोग्यान्  
पुद्गलानादाय तैजसशरीररूपतया परिणमयति  
परिणम्य च जीवप्रदेशैः सह परस्परानुगमरूपतया  
सम्बध्यति तत्। प्रज्ञा० ४६९। तेजसं-तेजःपुद्गलानां  
विकारः तैजसम्। प्रज्ञा० ४०९।  
तेयस्सि- तेजस्वी दीप्तिमान्। आचा० ३६४।  
तेया- तेजोमयं तेजसम्। आव० ३६। तेजा  
त्रयोदशीरात्रिनाम्। सूर्य० १४७।  
तेयालगपट्टण- पट्टणविसेसो। निशी० ४४आ।  
तेयाहिय- ज्वरविशेषः। भग० १९८।  
तेयोए- यस्तु त्रिपर्यवसितः स त्र्योजः। स्था० २३७।  
तेयोगे- त्रिभिरादितः एव कृतयुग्माद्वोपरिवर्त्तिभिरोजो  
विषम-राशि विशेषस्त्र्योजः। भग० ७४४।  
तेरासि- त्रैराशिकः नपुंसकः। पिण्ड० १५७।  
तेरासिओ- त्रैराशिकः नपुंसकम्। बृह० २५२आ।  
तेरासिय- त्रिनीराशिभिर्दिव्यन्ति जिगीषन्तीति  
त्रैराशिकाः। उत्त० १५३।  
तेरासिया- त्रीन् राशीन् जीवाजीवनोजीवरूपान् वदन्ति ये  
ते त्रैराशिकाः। औप० १०६।

तेलसमुग्गए- तैलसमुद्गकः सुगन्धितैलाधारविशेषः।  
जीवा० २१४।  
तेल्लं- तैलम्। आव० ८३१।  
तेल्लकुडो- तैलकुम्भः। आव० ३१०।  
तेल्लकेला- तैलकेला तैलाश्रयो भाजनविशेषः। भग०  
६९४। तैलकेला सौराष्ट्रप्रसिद्धो मृन्मयस्तैलस्य  
भाजनविशेषः। निर० ४, ३४। ज्ञाता० १४।  
तेल्लचम्म- तैलाभ्यक्तस्य यत्र स्थितस्य सम्बाधना  
क्रियते तत् तैलचर्म। ओप० ६५।  
तेल्लदोणी- तैलद्रोणी। आव० २२७।  
तेल्लभायणं- तैलभाजनम्। आव० ६४१।  
तेल्लसमुग्गया- तैलसमुद्गकौ सुगन्धितैलाधारविशेषौ।  
जम्बू० ५९।  
तेल्लियं- तैलिकं तिलपीडनकर्म। आव० ८२९।  
तेल्लिया- तेल्लं। निशी० २४४आ।  
तेलुक्क- त्रयोलोकासिलोकाः  
भवनपतिव्यन्तरविद्याधरज्यो-तिष्कवैमानिकाः  
त्रिलोका एव त्रैलोक्यम्। नन्दी० १९२।  
तेवच्छिवाडिया- कृष्णलेश्याया वर्णदृष्टान्तः। प्रज्ञा०  
३६०।  
तैजसबन्धनं- यदुदयात् तैजसपुद्गलानां गृहीतानां  
गृह्यमा-णानां च परस्परं कार्मणपुद्गलैः सह  
सम्बन्धस्तत्तैजसबन्ध-ननाम्। प्रज्ञा० ४७०।  
तैजससङ्घातनाम- यदुदयवशात्  
तैजसशरीररचनाऽनुकारिस-ङ्घातरूपा जायते  
तत्तैजससङ्घातनाम्। प्रज्ञा० ४७०।  
तैजससमुद्घातः- तैजसेन हेतुभूतेन समुद्घातः  
तैजसशरीर-नामकर्माश्रयः। जीवा० १७।  
तैतिलं- स्त्रीविलोचना परनाम, चतुर्थं करणम्। जम्बू०  
४९४।  
तैलाग्निः- तैलसत्कोऽग्निः। जीवा० १२३।  
तोंडं- तुण्डं मुखविभागो भल्लीरूपः। जम्बू० २०१।  
तोए- तोयं सम्बन्धहेतुः स्नेहः। प्रश्न० १५७।  
तोहा- चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। प्रज्ञा० ४२।  
तोडे- पल्लवौ। निशी० १७९आ।  
तोड्डकरूपे- यत्रागतावचलतया तिष्ठत इति। जम्बू०  
२२४।

**तोण-** इषुधिः। निर० १८। इषुधिः-भस्त्रकम्। औप० ७१।  
 बाणाश्रयः। जीवा० १९३। तोणः-शरधिः। भग० ३२२।  
 तूणाः-तूणीराः। जम्बू० २०६। भस्त्रकाः। जम्बू० २१२।  
 तूणः-शर-भस्त्रादिः। ज्ञाता० २३९। बाणाश्रयाः। जम्बू०  
 ३७। तोणशरधिः। प्रश्न० ४८। तोणीरः-शरधिः। प्रश्न०  
 ४७।  
**तोत्त-** तुद्यते-व्यथ्यतेऽनेनेति तोत्रं प्राजनको  
 व्यथोपजनकं वचनं वा। उत्त० ६२। जम्बू० २२५।  
**तोत्तए-** तोत्रकम्। दशवै० ८९।  
**तोत्तगवेसए-** तोत्रं प्राजनको व्यथोपजनकं वा  
 गवेषयतिः-अन्वेषयतीति तोत्रगवेषकः। उत्त० ६२।  
**तोत्र-** निहन्यमानानामश्रवानां शब्दः। जम्बू० २०६।  
**तोमर-** तोमरः-बाणविशेषः। प्रश्न० २१। तोमरम्। जीवा०  
 ११७। तोमरः-गदाकारशस्त्रविशेषः। आव० ६५१। तोमरं-  
 आयुधविशेषः। भग० १८२। तोमराः-बाणविशेषः। जम्बू०  
 २१२।  
**तोमरगं-** तोमराग्रम्। जीवा० १०६।  
**तोयं-** पूर्वाषाढा। जम्बू० ४९९। स्नेहः। औप० ३५, १९।  
 तोयमिव बन्धहेतुत्वात्तोयं स्नेहः। स्था० ४६४।  
**तोयधारा-** पञ्चमा दिक्कुमारी। जम्बू० ३८३।  
 ऊर्ध्वलोक-वास्तव्या दिक्कुमारी। आव० १२२।  
**तोयपट्टं-** तोयपृष्ठं जलोपरितनभागः। औप० ४६। प्रश्न०  
 ६१।  
**तोयली-** वलयविशेषः। प्रज्ञा० ३३।  
**तोरणं-** प्रश्न० ८। द्वारादिसम्बन्धि। जीवा० २५८।  
 तोरणानि प्रतोलीद्वारेषु। प्रज्ञा० ८६। तोरणम्। अनुयो०  
 १७। तोरणः द्वारादिसम्बन्धिः। प्रज्ञा० ७१।  
**तोरणसंठिओ-** तोरणसंस्थितः। जीवा० २७९।  
**तोसलि-** आचार्यविशेषः। आचा० २६२। देशविशेषः।  
 निशी० २१आ। बृह० १७५आ। नगरविशेषः। बृह० २६७  
 आ। तोसलिग्राम। आव० २१९।  
**तोसलिओ-** तौसलिकः मणिप्रतिमारक्षको राजा। व्यव०  
 १५४आ।  
**तोसलिपुत्तो-** तोसलिपुत्रः आचार्यः। आव० ३०१।  
**तोसलिपुत्ता-** तोसलिपुत्राः आर्यरक्षितधर्माचार्याः। आव०  
 २९६। आर्यरक्षितस्याचार्याः। उत्त० ९६।  
**तोसलिविषयं-** देशविशेषः। बृह० १७५आ।

**तोसलिविसए-** देशविशेषः। निशी० ३१५, २५४।  
**तोसलिविसयं-** देशविषयः। निशी० १५२आ।  
**तोसलीए-** नगरविशेषः। निशी० १५आ।  
**तोहाडिका-** खरमुही। आचा० ४१२।  
**त्तिकडु-** इतिकृत्वा-इतिनिश्चयं विधाय सम्प्रलम्भाः  
 योद्धुमिति। ज्ञाता० २२१। इतिकृत्वा-उच्चार्य। जम्बू०  
 १४३।  
**त्थिकको-** विश्रान्तः। आव० ४०८।  
**त्थिगगलयं-** पडिया। निशी० १२५आ।  
**त्थिमिए-** स्तिमितं-निर्भयम्। विपा० ३९।  
**त्थिमिय-** स्तिमितं-स्थिरं  
 स्वचक्रपरचक्रादिभयवर्जितत्वात्। भग० ७। स्तिमिता  
 भयवर्जितत्वेन स्थिरा। ज्ञाता० १। स्तिमिता-  
 स्वचक्रपरचक्रतस्करडमरोदिसमुत्थभयकल्लोल-  
 मालाविवर्जिता। सूर्य० १।  
**त्थोभं-** स्तोभकः निपातः। आव० ३७६।  
**त्यक्तं-** उज्झितं छदितम्। पिण्ड० १६९।  
**त्यक्तद्रव्यसम्यक्-** जडं परित्यक्तं  
 यद्भारादितत्त्यक्तद्रव्यसम्यक्। आचा० १७६।  
**त्यागः-** तपः। सम० १२१।  
**त्रपुषफलं-** खादिमे फलविशेषः। आव० ८११।  
**त्रपुषी-** वल्लीविशेषः। प्रज्ञा० ३०। जीवा० २६, १३६। उत्त०  
 ६९२। आचा० ३०।  
**त्रप्वाकरः-** यस्मिन्निरन्तरं महामूषास्वयोदलं प्रक्षिप्य  
 त्रपुउ-त्पाट्यते सः। जीवा० १२३।  
**त्रसनाम-** त्रसन्ति उष्णाद्यभितप्ताः सन्नो  
 विवक्षितस्थानादुद्वि-जन्ते-गच्छन्ति च  
 छायाद्यासेवनार्थं स्थानान्तरमिति त्रसाः-  
 द्वीन्द्रियादयस्तत्पर्यायपरिणतिवेद्यं नामकर्मापि  
 त्रसनाम। प्रज्ञा० ४७४।  
**त्रसरितन्तुः-** कौसेयम्। जीवा० २६९।  
**त्रिकल्पपर्युषितः-** स्थविरकल्पिको जिनकल्पिको वा।  
 आचा० २८०।  
**त्रिपिटकादिसमयवृत्तयः-** सामायिकाः। दशवै० १२७।  
**त्रियाम-** पूर्वात्रमध्यरात्रापररात्रलक्षणो यमाश्रित्य  
 रात्रिस्त्रिया-मेत्युच्यते। स्था० १२८।  
**त्रिलोकरेखा-** आजाराधनखण्डनादोषदोषदृष्टान्ते

चन्दावतं-सान्तःपुरिका। पिण्ड० ७६।  
 त्रिवासरवटकं- कुथितस्वस्वभावचलिते दृष्टान्तः। जीवा०  
 २८२।  
 त्रिशला- वर्द्धमानस्वामिनः मातृनाम। सम्० ८९।  
 त्रिशूल- शक्तिः। सम्० १५७।  
 त्रिशूलानि- वरशक्तयः। जम्बू० २१२।  
 त्रुटितं- वादित्रम्। जीवा० १६२।  
 त्रेहः- अवश्यायः। प्रज्ञा० २८। दशवै० १५३। जीवा० २५।  
 उसा। निशी० ८३अ।  
 त्रैराशिकः- राशित्रयम्। सूर्य० १४।  
 त्रैराशिककरणं- प्रज्ञा० ४८०।  
 त्रैविद्यब्राह्मणः- सामज्ञो ब्राह्मणः। औ० २०४।  
 त्रैविद्यवृद्धः- वैदिकः। दशवै० १२७।  
 त्वंगनिका- बाधाविशेषः। उत्त० ७८।  
 त्वक्- छविः। जीवा० ११४। छल्ली। जीवा० १८७।  
 त्वग्विष- चर्मविषः। नन्दी० १६३।  
 त्वचा- त्वग्विशेषः। जीवा० १३६।

- x - x - x - x -

थ

थंडिल- छारचितीवज्जितं केवलं मडयददृष्टाणं। निशी०  
 १९२आ। स्थण्डिलं उच्चारभूमिः। आव० ५७८। अचित-  
 भूमी। निशी० ३८आ। यदुदयेन हयात्मा सदसद्विवे-  
 कविकलत्वात्स्थण्डिलवद्भवति स स्थण्डिलः-क्रोधः।  
 सूत्र० १८०।  
 थंडिल्लं- स्थाण्डिलं-भूभागः। आव० ६४२। स्थण्डिलम्।  
 आव० ३४८। स्थण्डिलः। आव० १९५।  
 थंभ- स्तम्भं जात्याद्यभिमानम्। आव० ३४६। स्तम्भः  
 मानः। दशवै० २४२। स्तम्भः। आव० १९६। स्तम्भः  
 मानः। आव० ८४८। जात्यादिसमुत्थोऽहङ्कारः। उत्त०  
 १५१।  
 थंभण- ग्रीवायां धमण्यादीनां तिष्ठतो  
 वाऽऽत्मनोऽङ्गप्रदेशानां स्तम्भनम्। प्रज्ञा० ३२९।  
 थंभणता- स्तम्भनता स्तम्भनया या यथा तावदुपविष्टः  
 स्थितो यावत् सुप्तः पादादिः स्तब्धो जातः। स्था०  
 २८०।  
 थंभणया- स्तम्भनं ऊर्ध्वीकरणम्। औप० ९३।  
 स्तम्भनताव-ङ्कगतेर्देवित्यो भेदः। प्रज्ञा० ३२८।  
 स्तम्भनता-तावदुपविष्टः स्थितो यावत्सुप्तः स्तब्धो

जातः, हन्यन्नादि। आव० ४०५।  
 थंभय- स्तम्भकः- आदर्शकगण्डप्रतिबन्धप्रदेशः,  
 आदर्शक-गण्डानां मुष्टिग्रहणयोग्यः प्रदेशः। जीवा०  
 २१३।  
 थंभिज्जा- स्तम्भनीयात्-स्तब्धो भवेत् मादयेदित्यर्थः।  
 स्था० ४७३।  
 थंभुग्गया- स्तम्भोद्गता-स्तम्भोपरिवर्तिनी। जीवा०  
 २२७, ३५९।  
 थ- निपातः। आव० १३७। वाक्यालङ्कारे। ज्ञाता० १४९।  
 निपातः पादपूरणे। बृह० १७१आ।  
 थक्क- स्थितम्। ओघ० १३२। अवसरः। आव० ४००।  
 उत्त० २१४। थक्कः-देशः। काले। निशी० १७८आ।  
 निशी० ६आ। प्रस्तावः। व्यव० १३६आ।  
 थक्कारेति- थक्कइत्येवं महता शब्देन करोति। जीवा०  
 २४८।  
 थक्केथक्कावडियं- अवसरे अवसरानुरूपमापतति तत्।  
 पिण्ड० ६३।  
 थण- स्तनम्। आव० ७६८। स्तनम्। आव० ५७८।  
 थणदुद्धगंधियमुहो- बालः। निशी० ८०आ।  
 थणियकुमारा- स्तनितकुमाराः-भवनपतिभेदविशेषः।  
 प्रज्ञा० ६९। स्तनितकुमाराः-  
 वरुणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्तिनो देवाः। भग०  
 १९९।  
 थणियकुमारीओ- स्तनितकुमार्यः  
 वरुणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्तिन्यो देव्यः। भग०  
 १९९।  
 थंद्ध- स्तब्धं जात्यादिमदस्तब्ध-कृतिकर्मणि द्वितीयोः  
 दोषः। आव० ५४३। स्तब्धं-सुदृढम्। जम्बू० २३५।  
 स्तब्धाय स्वभावत एव मानप्रकृत्या विनयभ्रंशकारिणे।  
 सूर्य० २९६।  
 थप्पगा- स्थाप्या अवन्दनीयाः। बृह० ३०५अ।  
 थरथरंत- कम्पमानः। पिण्ड० १६३। भृशं कम्पमानः।  
 बृह० ७१अ।  
 थल- स्थलं आकाशः। ओघ० ३२। आकाशः। बृह० १६१।  
 आ। इह कवलप्रक्षेपणाय मुखे विड्विंते यदाकाशं भवति  
 तत् स्थलम्। व्यव० ३३३आ। आगासं। निशी० ४६आ।  
 जलपरिहारेण स्थितो नदि-कूर्परपथः। बृह० १६२अ।

स्थलं-धुल्युच्छयरूपम्। भग० ३०७।  
 थलचर- स्थलचरः मनुष्यादिकः। दशवै० ५५।  
 थलपट्टणं- थलेण जस्सभंडं आगच्छति। निशी० ७० आ।  
 आनंदपुराति। निशी० २२९ आ। स्थलपत्तनं-यत्र  
 स्थलपथेन भाण्डानामागमस्तद् द्वितीयं पत्तनम्।  
 प्रश्न० ३८।  
 थवयं- स्थलजं कोरण्टकादि। जीवा० १३६।  
 विचिकिलादि। जम्बू० ३९०।  
 थलयरं- स्थलचरजं पुद्गलविशेषः। आव० ८५४।  
 थलयर- स्थले चरन्तीति स्थलचराः। प्रजा० ४३।  
 थलाइं- स्थलानि तटभूमयः। जम्बू० १७१।  
 थली- देवद्रोणी। नि० ७५ आ। निशी० १४३ आ। बृह०  
 १६५ आ। स्थलिका-देवद्रोणी। बृह० ९१ अ, १३० आ।  
 थवइय- स्तबकवान्। ज्ञाता० ५। औप० ७। स्तबकितं  
 सञ्जातपुष्पस्तबकम्। भग० ३७।  
 थवइयाओ- स्तबकिताः सञ्जातपुष्पस्तवकाः। जम्बू०  
 २५।  
 थवईरयणे- स्थपतिरत्नं वर्धकिरत्नम्। जम्बू० २१०।  
 थाइणि- स्थायिणि प्रतिवर्षप्रसविनी वडया। बृह० २३६।  
 थाणइल्लग- प्राहरिकः। आव० ६९०।  
 थाणइल्ला- आरक्षकाः। निशी० ११४ आ।  
 थाणयं- स्थानम्। आव० ९०।  
 थाणु- स्थाणुः। जीवा० २८२।  
 थामवं- स्थामवान् बलवान् शीतातपादिसहनं प्रति  
 सामर्थ्यवान्। उत्त० ६५, ११०।  
 थामो- प्राणः। ओघ० १८९।  
 थारुकिणिया- थारुकिनिकाः। जम्बू० १०१।  
 थाल- स्थालः। जीवा० २३४, २७६। जम्बू० ४१०। थालः।  
 जम्बू० १०१। स्थालं-अन्तःपरिधिरूपम्। जम्बू० २०४।  
 थालइ- गृहितभाण्डाः। औप० ९०। भग० ४१९।  
 थालगं- स्थालकं कोशकादि। सूत्र० ३२४।  
 थालपाणए- स्थालं त्रुं तत्पानकमिव दाहोपशमहेतुत्वात्  
 स्थालपानकम्। भग० ६८०।  
 थालिपागाइ- स्थालीपाकः। जम्बू० १२३।  
 थाली- स्थाली। आव० २००। उषा। जीवा० १०५। उखा।  
 भग० ३२६। स्थाली पिठरी। सूर्य० २९३। स्थाली-बृहद्-  
 भाजनविशेषः। ओघ० १६९।

थालीपागो- स्थालीपाकः। जीवा० २८१।  
 थालीपागसुद्धं- स्थालीपाकशुद्धं स्थाल्यां उखायां पाको  
 यस्य तत्स्थालीपाकं, अन्यत्र हि पक्वमपक्वं वा न  
 तथाविधं स्या-दितीदं विशेषणं, शुद्धं-भक्तदोषवर्जितं,  
 ततःकर्मधारयः स्थालीपाकेन वा शुद्धम्। भग० ३२६।  
 स्था० ११७।  
 थालीसंठितो- स्थालीसंस्थितः- आवलिकाबाह्यस्य षष्ठं  
 संस्थानं, उषा संस्थितः। जीवा० १०४।  
 थावग- स्थापकः विकल्पभेदः। दशवै० ५७।  
 थावचसुता- बारवइवणिया। निशी० १०४ आ।  
 थावच्चा- द्वारवत्यां गाथापत्ती। ज्ञाता० १००।  
 थावच्चापुत्ते- थावच्चापुत्रः। अनुत्त० ३। द्वारवत्यां  
 सार्थवाह-पुत्रः। ज्ञाता० १००। अनुत्त० ३।  
 थावते- स्थापयति पक्षमक्षेपेण प्रसिद्धव्याप्तिकत्वात्  
 समर्थ-यति, यथा परिव्राजकधूर्तं लोकमध्यभागे दत्तं  
 बहुफलं भवति तच्चाहमेव जानामीति मायया  
 प्रतिग्राममन्यान्यं लोकमध्यं प्ररूपयति सति  
 तन्निग्रहाय कश्चित् श्रावको लोकमध्यस्यैक-त्वात्  
 कथं बहुषु ग्रामादिषु तत्सम्भव इत्येवंविधोपपत्त्या  
 त्वद्वर्शितो भो लोकमध्यभागो न भवतीति पक्षं  
 स्थापितवा-निति स्थापकः। स्था० २५४।  
 थावरं- स्थावरं अप्रतिहारिकम्। बृह० २४४ आ। स्थावरं च  
 यद्भवति न परकीयोपस्करवद् याचितं  
 कतिपयदिनस्थायि। ओघ० २११।  
 थावरा- उष्णाद्यभितापेऽपि तत्स्थानपरिहारासमर्थाः  
 सन्त-स्तितष्ठन्तीत्येवं शीलाः स्थावराः पृथिव्यादयः।  
 जीवा० ९।  
 थासग- स्थासकाः-दर्पणाकारा अश्वालङ्काराः। जम्बू०  
 २६५। स्थासकाः-दर्पणाकारा अश्वालङ्कारविशेषः।  
 जम्बू० २३५। स्थासकः-आदर्शकाकारः। औप० ७०।  
 स्थासकः-दर्पणः। विपा० ४७। स्थासकः-दर्पणाकार  
 आभरणविशेषः। जम्बू० ५३०।  
 थासय- स्थासकः दर्पणकृतिः स्फुरकादिषु भवति।  
 अनुत्त० ५।  
 थाह- जत्थ णासिया ण बुड्डति तं थाहं। निशी० ७८। आ।  
 स्ताघं-अर्वाक् नासिकाया यत् जलं। यत्र मासिका न  
 बुड्डति तत् स्ताघम्। बृह० १६१ अ। स्ताघः। आव०

३७४।

थिङ्- स्त्री पुरुषादिर्वा। भग० २५३।

थिग्गल- आकाशथिग्गलविषयम्। प्रज्ञा० २९३।

प्रदेशपतित-संस्कृतम्। आचा० ३४१। जं घरस्स दारं  
पुव्वमासातपडि-पूरियं दारं। दारमेव संधारवत्तं  
पडिढक्कियं। दशवै० ७६ आ। थिग्गलं चित्तं  
द्वारादि। दशवै० १६६। शकलम्। मरण०। गिम्हे  
वातागमद्वा गवक्खादिछिड्डे करेति। निशी० २३२ आ।

थिबुकं- बिंदुं। निशी० पह० ६७ आ।

थिबुगो- स्तिबुकः उस्साबिंदु। आव० ८४५।

थिबुय- स्तिबुकम्। प्रज्ञा० ४११।

थिमिओदयं- स्तिमितोदकं यस्याधःकर्दमो नास्ति।

औप० ९४।

थिमित- स्तिमितं-स्थिरं कायचापल्यादिरहितं च। प्रश्न०  
१३३। स्तिमितः-अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्य पञ्चमम-  
ध्ययनम्। अन्त० १।

थिमिया- स्तिमिता-

स्वचक्रपरचक्रादिसमुत्थभयकल्लोलमा-लावर्जिता।

जम्बू० १४।

थिमियमेयणीया- स्तिमितमेदनीका निर्भयत्वेन

स्थिरविश्व-म्भराश्रितजना। प्रश्न० ६९।

थिमियमेङ्गीय- स्तिमितमेदनीकं-

निर्भयमेदिनीनिवासिजनम्। प्रश्न० ९२।

थिमिया- स्तिमिता भयवर्जितत्वेन स्थिरा। औप० १।

थिर- सुप्रतिष्ठानं दृढं वा। बृह० २४४ आ। दृढसंघयणो।

निशी० ५६ आ। स्थिरः-दृढसंहननः। ओघ० ३४। स्थिरः-

असङ्ख्येकालावस्थायी। सूत्र० ६। स्थिरः-संह-

ननधृतिभ्यां बलवान्। पौनःपुन्यकरणेन परिचितो वा

कृत-योगः। आव० ५९३। धितिसंघयणेहिं बलवं अहवा

दरिसणे पव्वज्जाए वा धिरो अचलेत्यर्थः। निशी० १३१

आ। यथास्थितम्। ओघ० १०८। अप्रकम्पः। ज्ञाता० १६।

स्थिरं च यद्भवति सुप्रतिष्ठानं तत्। ओघ० २११। स्थैर्य-

अभ्युप-गतापरित्यागः। दशवै० ३९। स्थिरः निष्पन्नः।

दशवै० २१९। स्थिरः-धृतिसंहननाभ्यां बलवान्। व्यव०

११३ आ।

थिरङ्- स्थिरति स्थिरीभवति। व्यव० १९ आ।

थिरगहत्थे- स्थिरौ अग्रहस्तौ यस्य सः स्थिराग्रहस्तः।

जीवा० १२१। स्थिरः प्रकृतपटं पाटयतोऽकम्पोऽग्रहस्तो-  
हस्ताग्रं यस्य सः। अनुयो० १७५।

थिरपङ्गो- स्थिरप्रतिज्ञः-यो न भवितमन्यथा करोति।

आव० ८६०।

थिरपरिवाडी- स्थिरपरिपाटी स्थिरपरिचितग्रन्थस्य सूत्रं  
न गलति। दशवै० ५। स्थिरपरिपाटिः, परिचितग्रन्थस्य  
सूत्रार्थ-गलनासम्भवात्। आचा० २।

थिरीकरण- स्थिरीकरणं-धर्माद् विषीदतां तत्रैव  
स्थापनम्। प्रज्ञा० ५६। स्थिरीकरणं-धर्माद्विषीदतां सतां  
तत्रैव स्था-पनम्। दशवै० १०२।

थिरूगा- अनन्तकायभेदः। भग० ३००।

थिल्लिथिल्ली- वाहनविशेषः। उत्त० ४३८। लाटानां

यदङ्ग-पल्लाणं रूढं तदन्यविषयेषु थिल्लीत्युच्यते।

अनुयो० १५९। वेसरादिव्यविनिर्मितो यानविशेषः।

जम्बू० १२३। थिल्ली-वेगसरादिव्यविनिर्मितो

यानविशेषः। सूत्र० ३३०। थिल्ली- लाटानां

यदश्वपल्यानं तदन्यविषयेषु थिल्लीत्युच्यते। भग०

१८७, २३७। लाटानां यद् अङ्गपल्लाणं रूढं तदन्य-विषये

थिल्लिरित्युच्यते। जीवा० २८२।

थिल्लीओ- लाटानां यानि अङ्गपल्यानानि

तान्यन्यविषयेषु थिल्लीओ। भग० ५४७।

थिविथिवंत- गुंजन्। तन्दु०। अतिशयेन। तन्दु०।

थिवथिवित- अनुकरणशब्दोऽयम्। विपा० ७४।

थिचोरो- स्त्रियाः आकाशात् स्त्रियमेव वा चोरयति

स्त्रीरूपो वा यश्चौरः स स्त्रीचौरः। प्रश्न० ४६।

थिणं- स्त्यानर्द्धिः स्त्याना-चैतन्यऋद्धिर्यस्यां सा

स्त्याना। आव० ८४। इद्धं चित्तं तं थीणं। निशी० ३६ आ।

थीणद्धी- स्त्याना-पिण्डीभूता ऋद्धिः-आत्मशक्तिरूपा

यस्यां स्वापावस्थायां सा स्त्यानर्द्धिः। प्रज्ञा० ४६७। इत्थं

चित्तं तं थीणं जस्स अच्चंत दरिसावरणकम्मोदया सा

थीणद्धी। निशी० ३६ आ।

थीणा- स्त्याना-पिण्डीभूता। प्रज्ञा० ४६७।

थीणागेद्धी- स्था० ४४७।

थीपरिण्णा- स्त्रीपरिज्ञा-सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे

चतुर्थम-ध्ययनम्। आव० ६५१। उत्त० ६१४।

थीपुरिससंजोए- अशुचिस्थानभेदः। प्रज्ञा० ५०।

थीविलोअणं- स्त्रीविलोचनं तैतिलमिति वा, चतुर्थ

करणम्। जम्बू० ४९३।  
 थीहू- अनन्तकायभेदः। भग० ३००। कन्दविशेषः। उत्त० ६९१। भग० ८०४।  
 थुंडइ- गुच्छाविशेषः। प्रजा० ३२।  
 थुई- स्तीतिः। आव० ७९१।  
 थुडं- खन्धः। राज० ६।  
 थुल्ल- स्थूलः। ओघ० २१६।  
 थुल्लतो- स्थूरः। उत्त० ३२५।  
 थुल्लसमणओ- स्थूलश्रवणकः गौतमः। आव० २८७।  
 थुवंति- स्तूयन्ते-अभिष्टूयन्ते अभिनन्दयते। भग० ६७०।  
 थूणं- लेपं। निशी० ३३६ अ।  
 थूणा- वेली। निशी० ८३ अ। स्थूणा। प्रजा० २९३। स्थूणा नगरी। आव० १७१। स्थूणा-ऊर्ध्वतिर्यक्करणयो- गात्सङ्घातशाटविरहादुभयशून्या। आव० ४६२।  
 थूणामंडव- स्थूणाप्रधानो वस्त्राच्छादितो मण्डपः स्थूणाम-ण्डपः। ज्ञाता० ९३।  
 थूभं- स्तूपम्। ओघ० १३। स्तूपः-पीठविशेषः। जम्बू० १२३। इट्टगादिचिया विच्चा थूमो। निशी० १९२ अ। स्तूपः-चित्तिविशेषः। प्रश्न० ८। स्तूपः-चैत्यस्तूपः। राज० १२१।  
 थूभकरंडं- स्तूपकरण्डं ऋषभपुरे उद्यानम्। विपा० ९४।  
 थूभमहो- स्तूपमहः स्तूपसत्क उत्सवः। जीवा० २८१। आव० ३२८।  
 थूभसंठिओ- स्तूपसंस्थितः। जीवा० २७९।  
 थूभिदे- स्तूपः-पारिणामिकबुद्धौ एकविंशतितमो दृष्टान्तः। नंदि० १६५।  
 थूभिया- स्तूपिका शिखरम्। राज० ३६।  
 थूभियाए- स्तूपिका-शिखरम्। जम्बू० ४७। जीवा० ३७९। प्रजा० ९९। सूर्य० २६४। स्तूपिका-लघुशिखररूपा। जीवा० २०५, ३६०।  
 थूभियागे- स्तूपिका लघुशिखररूपा। जम्बू० ४९।  
 थूलंते- उच्चारपरिणामि। तन्दु० ।  
 थूल- स्थूलः अत्यन्तमांसलोऽयं मनुष्यादिः। दशवै० २१७। स्थूलं-एरण्डकाष्ठादि। दशवै० १४७।  
 थूलगं- परिस्थूलवस्तुविषयोऽतिदुष्टविवक्षासमुद्भवः स्थूलः। आव० ८२०।  
 थूलभद्र- अन्तिमचतुर्दशपूर्वधरः। निशी० १४६ अ।

स्थूलभद्रः-स्त्रीपरीषहे दृष्टान्तः। उत्त० १०४।  
 योगसंग्रहे-शिक्षादृष्टान्ते कल्पकवंशप्रसूतस्य नवमनन्दराजमन्त्रिशक-टालस्य ज्येष्ठः पुत्रः यः शिक्षायोगवान् आचार्यो जातः। आव० ६७०। संभूअस्स सीसो। निशी० २४३ अ। स्थूलभद्रः- बहुश्रुतआचार्यविशेषः। उत्त० १३०। स्थूल-भद्रः- कल्पकवंशप्रसूतशकटालज्येष्ठपुत्रः। आव० ६९३। स्त्रिया अजेता मुनिः। मरण० ।  
 थूलभद्रसामो- स्थूलभद्रस्वामी। आव० ४२५।  
 थूलवया- स्थूलं-अनिपुणं यतस्ततो भाषितया वचो यस्य सः स्थूलवचाः। उत्त० ४९।  
 थूला- स्थूला। आव० ८५५।  
 थूलेसरो- स्थूलेश्वरः-इहलोकगुणविषये व्यन्तरविशेषः। आव० ८२४।  
 थूलं- स्थूलम्। आव० ९०।  
 थूहं- स्तूपम्। आव० ५०५।  
 थेज्जे- स्थैर्यधर्मयोगात् स्थैर्यः। भग० १२२।  
 थेर- सट्टिवरिसे विसेसेणं जुन्नसरीरे। निशी० ६५ अ। स्थविरः-यो गच्छस्य संस्थितिं करोति। जाति(जन्म) श्रुतपर्यायैर्वा स्थविरः। दशवै० ३१। स्थविरः-सीदतां स्थि-रीकरणहेतुः। दशवै० २४२। स्थविरः- श्रुतपर्यायवृद्धः। प्रव-चनगुरुः। दशवै० २८४। स्थविरः- जातिश्रुतपर्यायभेदाभिन्नः। आव० ११९। चरगादिएहिं दंसणातो परीसहोवसग्गेहिं वा चरणातो अतिकक्खडपच्छित्तछणेण वा भावतो ण चालि-ञ्जति सो थिरो। निशी० १४३ अ। स्थेरः आचार्यो गुरुर्वा। आव० ६५४। स्थविरः-स्थविरकल्पिकः। ओघ० १६५। धर्मपरिणत्या निवृत्तासमञ्जसक्रियामतिः। स्थविर इव स्थविरः, परिणतसाधुभाव आचार्यः। जीवा० ४। स्थविरः। प्रजा० ३२७। श्रुतादिभिर्वृद्धत्वात् स्थविरः। ज्ञाता० ७। स्थाविरः-श्रुत वृद्धः। भग० १३६। जातिश्रुतपर्यायभेदाभिन्नाः स्थविरः। ज्ञाता० १२३। स्थविरः- गणधरः। दशवै० २५५। स्थविरः-महावीरजिनशिष्यः श्रुतवृद्धः। भग० १००। सीदमानान् साधुन् ऐहिकामुष्मिकापायप्रदर्शनतो मोक्षमार्गं स्थिरी करोतीति स्थविरः। व्यव० १७२ अ। प्रवर्तित्व्यापारितेष्वर्थेषु यो यत्र यतिः सीदति सत्

विद्यमानं बलं यस्य स सद्बलः तथाभूतः सन्  
प्रचोदयति स स्थिरक-णात् स्थविरः। व्यव० १७२ अ।  
स्थविरः-एकसप्तत्या-दिवर्षः। व्यव० २४५।

**थेरकंचुङ्जज्ज**— स्थविरकञ्चुकी-अन्तःपुरप्रयोजननिवेदकः  
प्रतीहारो वा। भग० ४६०।

**थेरकप्पडित**— स्थविरकल्पस्थितः। आव० २९२।

**थेरा**— स्थविरा-गच्छवासिनः। बृह० २३० अ। आयरिया।  
निशी० ३०८ अ। आचार्यः। बृह० ११२ अ। स्थविराः-  
आचार्याः। बृह० २६० अ। आचार्याः-  
वयःश्रुतपर्यायस्थविराः। भग० ६७५।

**थेरी**— संजतीविसेसा। निशी० १३२ अ। स्थविरा। आव०  
२२०।

**थेरोवघाई**— स्थविराः-आचार्यादिगुरवः

तानाचारदोषेणशील-दोषेण च  
ज्ञानादिभिर्वोपहन्तीत्येवंशीलः स एव चेति स्थवि-  
रोपघातिकः। सम्० ३७। स्थेरोपघाती-आचार्योपघाती,  
षष्ठमसमाधिस्थानम्। आव० ६५३।

**थेव्वणं**— उपमर्दनम्। बृह० २४१ अ।

**थेहा**— दट्ठणं। निशी० ६३ अ।

**थोर**— स्थूलः। ज्ञाता० ६८।

**थोवंदे**— स्तोकं ददस्व-स्वल्पं प्रयच्छ। ओघ० ६७।

**थोव**— स्तोकम्। भग० २८। स्तोकः-स्वल्पः। आव० ५६८।  
स्तोकः-सप्तप्राणप्रमाणः। भग० २११। स्तोकः-  
सप्तप्राणाः उच्छवासनिःश्वास य इति गम्यते स  
स्तोकः। भग० २७६। सप्तप्राणाः उच्छवासनिःश्वास य  
इति गम्यते स स्तोकः। जम्बू० ९०। सप्तोच्छवासरूपः।  
ज्ञाता० १०४। सप्तानप्राणप्र-माणः स्तोकः। सूर्य० २९२।  
स्तोकः-सप्तप्राणा एकः स्तोकः। जीवा० ३४४।

**थोवय**— स्तोककाः-चातकाः। ज्ञाता० २७।

**थोवावसेस**— स्तोकावशेषा-कालवेला उद्घाटावशेषा।  
आव० ७३२।

**थोवेति**— स्था० ८५।

- X - X - X - X -

द

**दंड**— प्राणिनो दण्डयतीति दण्डः परितापकारी। आचा०  
२७४। दण्डनं दण्डः-अपराधिनामनुशासनम्। स्था०  
३९१। सूत्रार्थकरणम्। ओघ० २०२। दण्डनं दण्डः-  
अतिपातात्मकः। उत्त० २९३। आज्ञा अपराधे दण्डनं वा

सैन्यं वा। स्था० ३४३। विनाशनम्। सम्० २५। बाहुष्प-  
माणो। निशी० १२३ अ। अपराधानुसारेण राजग्राह्यं  
द्रव्यम्। भग० ५४४। दण्डः-ऊर्ध्वाध आयतः शरीरबाहल्यो  
जीवप्रदेशः। जम्बू० २७१। दण्डः-दण्ड इव दण्डः

ऊर्ध्वाध आयतः शरीरबाहल्यो

जीवप्रदेशकर्मपुद्गलसमूहः। भग० १५४। ज्ञाता० ३४।

तथाविधपरिक्लेशे धनहरणा-दिको दण्डः। ज्ञाता० ११।

दण्डः-वंशयष्टादिः। कूर्पराभि-घातः। उत्त० ३६४।

दण्डिकः। आव० ३६१। दण्ड इव दण्डः-ऊर्ध्वाध आयतः

शरीरबाहल्यो जीवप्रदेशसमूहः। जीवा० २४४। दण्डः।

सामान्यग्रामाधिपः। आव० ८१९। दण्डयति

पीडामुत्पादयतीति दण्डः-दुःखविशेषः। सूत्र० १३२।

शरीरघनयोरपहारः। विपा० ६५। दण्डयतीति दण्डः-

पापोपादानसंकल्पः। सूत्र० ३०६। दण्डनायकः। विपा०

६१। बृह० २३६ अ। दण्डः- योगसंग्रहे आपत्सु

दृढधर्मत्वदृष्टान्ते अनगारविशेषः। आव० ६६७।

यमुनावक्रे ऋषिः। संस्ता०। बाणघातसहो मुनिः।

मरण०। प्रायश्चित्तम्। व्यव० १७२ अ। दण्डः। प्रश्न०

५८। दण्डिकः-राजदण्डधारी द्वारपालकः। उत्त० १७९।

दण्डकः ओघ० २१८। आव० २७३। चतुर्हस्तमानः।

अनुयो० १५४। दण्डः-सङ्घट्टनपरिता-पनादिलक्षणः।

दशवै० १४३। यथापराधं राजग्राह्यं द्रव्यम्। जम्बू० १९४।

दण्डः-उत्कालः। पिण्ड० १०। दण्डः-

षण्णवत्यङ्गुलप्रमाणः। भग० २७५। दण्डो हि चतुःकर

उक्तः, करश्चतुर्विंशत्यङ्गुलः एवं चतुर्विंशतौ

चतुर्गुणितायां षण्णवतिः स्यादे-वेति। सम्० ९८।

**दंडई**— कुम्भकारकडे नगरे राया। बृह० १५३ अ।

**दंडईरण्णो**— दण्डकीराजा-जितशत्रुराजामाता। उत्त०  
१४४।

**दंडए**— दण्डकः। ओघ० २१७।

**दंडिओ**— नृपः। बृह० ३१३ अ।

**दंडकारण्यं**— अरण्यविशेषः। प्रश्न० ८७।

**दंडग**— चित्रलतादण्डकैः। ओघ० ५५।

**दंडगपमज्जणी**— दण्डकप्रमार्जणी-वसतिप्रमार्जनाय

रजोहर-णविशेषः। बृह० २५३ अ।

**दंडणायग**— दण्डनायकः-तन्त्रपालः। राज० १४०। दण्ड-  
नायकाः-तन्त्रपालाः। जम्बू० १९०।

दंडणीई- दण्डनीतिः सामादिश्चतुर्विधा। जम्बू० २५९।  
 दंडनायक- दण्डनायकः-तन्त्रपालः। औप० १४।  
 दंडनायक- प्रतिनियतकटकनायकः। प्रश्न० ७९।  
 दंडनायक- दण्डनायकः-तन्त्रपालकः। भग० ४६३। तन्त्र-  
 पालः। भग० ३१८। आरक्षकः। दशवै० १६६।  
 दंडनीई- दण्डनीतिः हक्कारमक्कारधिककारभेदभिन्ना।  
 आव० ११३।  
 दंडनीति- दण्डनं दण्डः-अपराधिनामनुशासनं तत्र तस्य  
 वा स एव वा नीतिः-नयो दण्डनीतिः। स्था० ३९८।  
 दंडपयारो- दण्डप्रचारः सैन्यविचरणं। दण्डप्रकारो वा  
 आज्ञा-विशेषः। प्रश्न० ७४।  
 दंडपरिहार- महती जीर्णकम्बलिका। बृह० ११३ अ।  
 दंडपहो- दण्डपथः गोदण्डमार्गः, लघुमार्गः,  
 प्रमुखोज्ज्वलो वा। सूत्र० २३४।  
 दंडपासगो- दंडपाशकः-खरकार्मिकः। ओघ० ८९।  
 दंडप्पयारा- दण्डप्रकारः आज्ञाविशेषो नीतिभेदविशेषो वा।  
 दण्डप्रचाराः-सैन्यविचरणम्। सम० १५३।  
 दंडफरुस- दंडपारुष्य व्यसनं अनपराधे स्वल्पे वापराधे  
 अत्युग्रदण्डं निर्वर्तयति तत्। बृह० १५७ अ।  
 दंडभटभोजो- दण्डभटभोजिकः। आव० ३४४, ३७८।  
 दंडमाईया- दण्डादिका-घरणिपातच्छुप्ताङ्कयुद्धप्रभृतयः।  
 पिण्ड० १३०।  
 दंडय- दण्डकिः-कुम्भकारकृतनगरे राजा। व्यव० ४३२।  
 दंडयगहियगहत्थो- गृहीतदंडाग्रहस्तः। उत्त० १३५।  
 दंडयत्ता- दंडयात्रा। आव० ३७८।  
 दंडरक्खो- दण्डरक्षः। आव० ४०१।  
 दंडरयणे- चक्रवर्तिनश्चतुर्थं रत्नम्। स्था० ३९८।  
 दंडवई- कटुककृतगोष्ठीणन्दोद्ग्राहकः। बृह० १९१ अ।  
 दंडवासत्थाणं- दण्डावासस्थानम्। आव० ६७१।  
 दंडवासिया- गामिया। निशी० १९४ अ।  
 दंडविरिए- दण्डवीर्य-पुरुषयुगे दृष्टान्तः। स्था० ४३०।  
 दंडसंपुच्छणि- दण्डसंपुच्छनी-दण्डयुक्ता सम्मार्जनी।  
 जम्बू० ३८८।  
 दंडसमादाने- समादीयते कर्म एभिरिति समादानानि  
 कर्मो-पादनहेतवः, दण्डा एव मनोदण्डादयः  
 प्राणव्यपरोपणाध्य-वसायरूपाः समादानानि  
 दण्डसमादानानि। जीवा० १२१।

दंडातिते- दण्डायतिकः-प्रसारितदेहः। स्था० ३९७।  
 दंडादिपणगं- दंडविदंडयष्टिवियष्टिनालिकारूपं  
 दंडादिपञ्चकम्। बृह० २५३ अ।  
 दंडायतिते- दण्डस्येवायतिः-दीर्घत्वं पादप्रसारणेन यस्य  
 स दण्डायतिकः। स्था० २९९।  
 दंडिअ- दण्डिकः। आव० ९१, ६३६।  
 दंडिका- राजकुलानुगता। बृह० प० ६५ अ।  
 दंडिखंडवसणं- दण्डिखण्डवसनम्। विपा० ७४।  
 दंडिय- दण्डिकः। ओघ० ११८। आव० ७३८। उत्त० १३९।  
 दंडिकः-करणपतिः। व्यव० ६३ अ।  
 दंडिया- दण्डिका-मुद्रा। बृह० ३३ अ। दण्डिकाः-  
 अन्यराजानः। ओघ० ११९।  
 दंडी- दण्डी-कृतसन्धानं जीर्णवस्त्रम्। ज्ञाता० २००।  
 दंडेइ- शकटावयवविशेषः दण्डः। षण्णवतिरङ्गुलानि।  
 जम्बू० ९४।  
 दंत- दान्तः-य इन्द्रियनोइन्द्रियाणि दमयति। दशवै०  
 १५७। दान्तः-उपशमं नीतिः। ज्ञाता० ७०। दशवै० ११९।  
 दान्तः। आव० १९२। गजादीनां दान्ताः। दशवै० १९३।  
 दान्तः-क्रोधादिदमनाद्द्वयन्तो वा रागद्वेषयोरन्तार्थं  
 प्रवृत्तत्वात्। भग० १२३। दान्तः-दमं ग्राहितः,  
 असमजञ्जसचेष्टया व्यावर्णितः। उत्त० ५३।  
 गुरुभिर्दमंग्राहितः विनयितः। औप० ३३। दान्तः-  
 इन्द्रियनोइन्द्रियदमनेन दान्तः। सूत्र० २९८।  
 दंतकम्मे- दान्तकर्म-गजविषाणविषया रूपनिर्माणक्रिया।  
 प्रश्न० १६०।  
 दंतकम्माणि- दान्तकर्माणि-दान्तपुत्तलिकादीनि। आचा०  
 ४१४।  
 दंतकारे- शिल्पभेदः। अनुयो० १४९।  
 दंतखज्जयं- मोदगासोगवट्टिमादी। निशी० ३७ अ।  
 दंतचक्को- दंतपुरणगरे राया। निशी० १२८ अ। दान्त-पुरे  
 नृपः। व्यव० १०७ अ। दान्तचक्रः, द्रव्यव्युत्सर्गं  
 दान्तपुरनरेशः। आव० ७१७। दान्तचक्रः, योगसंग्रहे  
 निरप-लापदृष्टान्ते दान्तपुरनगराधिपतिः। आव० ६६६।  
 दान्तचक्रो दान्तपुरनृपतिः। उत्त० ३०१।  
 दंतनिवाय- दान्तनिपातः-दशनच्छेदविधिः,  
 संप्राप्तकामस्य षष्ठो भेदः। दशवै० १९४।  
 दंतपहोयणा- दंतप्रधावनं अङ्गुल्यादिना क्षालनम्।

दशवै० ११७।

दन्तपुरं- दन्तपुरं द्रव्यव्युत्सर्गे नगरम्। आव० ७१७।  
दन्तपुरं-योगसंग्रहे निरपलापदृष्टान्ते दन्तचक्रराजो  
नगरम्। आव० ६६६। नगरविसेसो। निशी० १२८अ।  
दन्तचक्र-रायाए नगरं। व्यव० १०७अ। दन्तपुरं-  
दन्तचक्रराज-धानी। उत्त० ३०१।

दन्तमणि- दन्तमणिः-प्रधानदन्तः, हस्तिप्रभृतीनां  
दन्तजो वा मणिः। प्रश्न० १५३।

दन्तमाला- दन्तमालाः भरते द्रुमगणविशेषः। जं० प० ९८।  
एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः। जीवा० १४५।

दन्तवक्के- दान्ता-उपशान्ता यस्य वाक्येनैव शत्रवः स  
दान्तवाक्यः चक्रवर्त्ती। सूत्र० १५०।

दन्तवर्ण- दन्तवेदम्। ओघ० १७२।

दन्तवाणिज्ज- दन्तवाणिज्यं-  
हस्तिदन्तादिक्रयविक्रयक्रिया। आव० ८२९।

दन्तवेयणा- दन्तदेवना-दशनपीडा। भग० १९७।

दन्तारा- शिल्पार्यभेदः। प्रज्ञा० ५६।

दन्तिककं- पुण्णो तन्दुलोद्वो। निशी० ३९आ। तन्दुला, सव्वं  
वा दन्तखज्जयं। निशी० ३७अ। मोदकादिकं दन्तखाद्यं  
तन्दुलचूर्णो वा। मोदकमण्डकादिकं यद्बहुविधं  
दन्तखाद्यकं तद्वन्तिकम्। बृह० १२६अ। तन्दुलचूर्णः।  
बृह० १२९अ।

दन्तिककचूर्ण- तन्दुललोद्वः। बृह० १२९अ।

दन्तिलगं- दन्तुरः। आव० २११।

दन्तलिया- दन्तिलिका-स्कन्ददासी। आव० २०१।

दन्तो- साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। प्रज्ञा० ३४।

दन्तुक्खलिय- फलभोजी। औप० ९०। भग० ४१९।  
फलभोजिनः। निर० २५।

दन्ते- ददति। पिण्ड० १६२।

दन्दिखंडो- दण्डीखण्डः। आव० ४२६।

दंशः- चतुरिन्द्रियजीवविशेषः। प्रज्ञा० २३।

दंष्ट्रा- आशी। प्रज्ञा० ४७। क्षुल्लहिमवदंष्ट्रा। जीवा० १४५।

दंस- दर्शनं दर्शः। आव० ८२। पञ्चमः परीषहः। आव०  
६५६।

दंसणं- दर्शनं-स्वस्वविषये सामान्यग्रहणं  
रूपसामान्यग्रहण-लक्षणम्। प्रज्ञा० ५२७। दर्शनं-रूपम्।  
जाता० ११। सामा-न्यविशेषात्मके वस्तुनि

सामान्यग्रहणात्मको बोधः। प्रज्ञा० ४५३। दर्शनं-  
आकारः। जीवा० २०७। दर्शनं सम्यग्दर्शनम्। आव०  
५८०। दशवै० १०१। ओघ० ९। दर्शनम्। आव० ७९३।  
दर्शनं-सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि सामान्यावबोधः  
रूपसामान्यपरिच्छेदः। जीवा० १८। दर्शनं-सम्यक्त्वम्।  
स्था० ६५। भग० ५१। दर्शनं-वर्णादिपरिणतसूत्रानुसारः।  
दशवै० १७७। दर्शनं-प्रस्थातुर्दृष्टिपथः। जम्बू० २६२।  
दर्शनं-सामान्योपलब्धिरूपं  
चक्षुरचरक्षुरवधिकेवलाख्यम्। आचा० ६८। दर्शनप्रतिमा  
श्रावकस्य प्रथमा प्रतिज्ञा। आव० ६४६। दर्शनं-रुचिरूप  
आत्मनः परिणामः। भग० ३५०। अनुभवनम्। भग०  
७१०। ईहावग्रहौ हि दर्शनं-सामान्यग्राहकत्वात्  
श्रद्धानम्। स्था० २३। दृश्यन्ते श्रद्धीयन्ते पदार्था  
अनेनास्मादस्मिन् वेति दर्शनं-दर्शनमो-हनीयस्य क्षयः  
क्षयोपशमो वा दृष्टिर्वा दर्शनं-दर्शनमोहनी-  
यक्षयाद्याविर्भूतस्तत्त्वश्रद्धानरूप आत्मपरिणामः।  
स्था० २४। दृष्टिः-रुचिस्तत्त्वानि प्रति। स्था० ३०।  
शुद्धाशुद्ध-मिश्रपुञ्जत्रयरूपमिथ्यात्वमोहनीयम्। स्था०  
१५१। अभिप्रायो यदि वा दृश्यते यथावस्थितं  
वस्तुतत्त्वमनेनेति दर्शनं उपदेशः। आचा० १७२।  
अभिप्रायः। आचा० २२७। दर्शनं-रूपम्। निर० ४। राज०  
११। दर्शनम्। स्था० ३३७। प्रमेयस्य परिच्छेदनम्। भग०  
६५९। दर्शनं क्षायिक-भावापन्नं सम्यक्त्वम्। जम्बू०  
१६१। सेवनम्। बृह० २०३अ। दृश्यते  
तत्त्वमस्मिन्निति दर्शनम्। उत्त० ५५६। दृष्टिर्दर्शनं-  
तत्त्वेषु रुचिः। स्था० ४८। दर्शनं-प्रकाशनं  
उपनिबन्धनम्। सम० ११६। आकारः। जम्बू० ५२।  
दंसणकसायकुशील- दर्शनमाश्रित्य कषायकुशीलो  
दर्शनक-षायकुशीलः। भग० ८९०।  
दंसणपक्खो- दर्शनपक्षः-योऽप्रत्याख्यानकषायोदयवति  
श्रावके भवति। आव० ५३३।  
दंसणपरीसह- दर्शनं-सम्यग्दर्शनं, सहनं चास्य  
क्रियादिवा-दिनां विचित्रमतश्रवणेऽपि निश्चलचित्ततया  
धारणम्। सम० ४०। दर्शनपरीषहः-दर्शनं-सम्यग्दर्शनं  
तदेव क्रियादिवादिना विचित्रमतश्रवणेऽपि सम्यक्  
परिषह्यमाणं निश्चलचित्ततया धार्यमाणं परीषहः,  
दर्शनं दर्शनव्यामोहहेतुरैहिकामुष्मिकफ-

लानुपलम्भादिः स एव परीषहः। उत्त० ८३।  
 दंसणपुलाए- दर्शनमाश्रित्य पुलाकस्तस्यासारताकारी  
 विरा-धको दर्शनपुलाकः। भग० ८९०।  
 दंसणपुलाते- कुदृष्टिसंस्तवादिभिर्दर्शनपुलाकः। स्था०  
 ३३७।  
 दंसणबलिया- परैरक्षोभ्यदर्शनाः। औप० २८।  
 दंसणमोहणिज्ज- दर्शनं मोहयतीति दर्शनमोहनीयं  
 मिथ्यात्व-मिश्रसम्यक्त्वभेदम्। स्था० ९७।  
 दंसणवापन्नग- दर्शनं-सम्यक्त्वं व्यापन्नं-भ्रष्टं यस्य स  
 दर्शन-व्यापन्नकः-निहनवः। भग० ५१।  
 दंसणविणए- दर्शनविनयः-सम्यग्दर्शनगुणाधिकेषु  
 शुश्रूषादि-रूपः। भग० ९२४।  
 दंसणविणय- दर्शनविनयः विनयस्य प्रथमो भेदः। दशवै०  
 ३१। श्रद्धानः कर्म विनयति यस्माद् दर्शनविनयः,  
 दर्शनाद्विनयः दर्शनविनयः। दशवै० २४१।  
 दंसणसंकिलेसे- दर्शनस्य सङ्कलेशः-अविशुद्ध्यमानता  
 स दर्शनसङ्कलेशः। स्था० ४८९।  
 दंसणसावए- दर्शनं-सम्यक्त्वं तत्प्रतिपन्नः श्रावको  
 दर्शनश्रावकः, श्रद्धानां प्रथमा प्रतिमा। सम० १९।  
 दंसणा- दर्शना-उपदर्शका। सम० ११६।  
 दंसणायारे- दर्शनं-सम्यक्त्वं तदाचारो-  
 निःशङ्कितादिरष्टधैव दर्शनाचारः। स्था० ३२५।  
 दंसणिंदे- दर्शनेन्द्रः-क्षायिकसम्यग्दर्शनी। स्था० १०४।  
 दंसणिज्ज- दर्शनीयं-द्रष्टुं योग्यं, दर्शनेन  
 तृप्तिरसम्भवात्। सूर्य० २६४। दर्शनीयं दर्शनयोग्यम्।  
 प्रजा० ८७। आदेय-दर्शनः। ज्ञाता० ३५।  
 दंसणिङ्ढी- दर्शनर्द्धिः प्रशमादिरूपा। दशवै० ११३।  
 दर्शनर्द्धिः-प्रवचने निःशङ्कितादित्वं प्रवचनप्रभावक-  
 शास्त्रसम्पद्वा। स्था० १७३।  
 दंसणेण अइभद्वए- भद्रदर्शनः। ज्ञाता० २२०।  
 दंसमसग- दंशाश्च मशकाश्च दंशमशका, उभयेऽप्येते  
 चतुरि-न्द्रिया महत्त्वामहत्त्वकृतश्चैषां विशेषोऽथवा  
 दंशो दंशनं-भक्षणमित्यर्थः, तत्प्रधाना मशका  
 दंशमशकाः। पञ्चमः परीषहः। सम० ४१।  
 दंसिज्जंति- उपमामात्रतः दश्यन्ते। सम० १०९।  
 दंसिय- दर्शिता-श्रवणगोचरं नीता उपदिष्टा। प्रजा० ४।  
 दंसेइ- तदभिधेयप्रत्युपेक्षणादिक्रियादर्शनेन दर्शयति।

भग० ७११।  
 दंसेति- तदभिधेयप्रत्युपेक्षणादिक्रियादर्शनेन दर्शयति।  
 स्था० ५०२।  
 दइअ- दतिकः। अनुयो० १५२।  
 दइउ- दतिउ-चकखल्लाउडुओ जेण तरिज्जइ। ओघ० ३३।  
 दइए- दतिकः। स्था० ३३९। दयितः-वल्लभः। उत्त० ४५१।  
 दइओ- ऊर्ध्वमपाटितेनापनीतमस्तकेन  
 निकर्षितचर्मन्तर्व-  
 त्तिर्त्तिसर्वास्थ्यादिकचवरेणापरचर्ममयस्थिगलकस्थगि  
 तापान-च्छिद्रेण  
 सङ्कीर्णमुखीकृतग्रीवान्तर्विवरेणाजापश्वोरन्यतस्य  
 शरीरेण निष्पन्नश्चर्ममयः। प्रसेवकः  
 कोत्थलकापरपर्यायो दतिः। पिण्ड० १८।  
 दइत- दयितः-वल्लभः। ज्ञाता० १६७।  
 दउदरे- दकोदरं-जलोदरम्। ज्ञाता० १९३।  
 दओधसि- उदकौघे वा  
 गङ्गादिनामुन्मार्गगामित्वेनागच्छति सति तेन  
 प्लाव्यमानानामित्यर्थः। स्था० ३०९।  
 दओदराइ- दकोदरं-जलोदरम्। जम्बू० १२५।  
 दकभवणं- उदकचवनं-उदकगृहम्। आचा० ३४१।  
 दकरय- दकरजः-उदककणः। जीवा० २७२।  
 दकवारकः- भाजनविधिविशेषः। जीवा० २६६।  
 दक्खं- दक्षस्य भावो दाक्ष्यं-अविलम्बितकारित्वम्।  
 उत्त० ४९। सिङ्घं करेति। निशी० ३३२ आ। स्था० ३०२।  
 दक्षः-कार्याणामविलम्बितकारी। औप० ६५। जीवा०  
 १२२। जम्बू० ३८८। शीघ्रकारी। अनुयो० १७७। भग०  
 ६३१। दक्षः-उत्तरत्यानां धरणेन्द्रस्य  
 पादत्राणीकाधिपतिः औत्तराहाणं बलिवर्जितानां दक्षो  
 नाम्ना पदातिपतिः। जम्बू० ४०८।  
 दक्खत्तं- दक्षत्वं-आशुकारित्वम्। आव० ३४६। उत्त०  
 १४४।  
 दक्खिण- दक्षिणा। आव० २००।  
 दक्खिणकूलग- यैर्गङ्गाया दक्षिणकूल एव। भग० ५१९।  
 दक्षि-णकूलकः यैर्गङ्गाया दक्षिणकूल एव वस्तव्यम्।  
 औप० ९०।  
 दक्खिणकूला- यैर्गङ्गादक्षिणकूल एव वस्तव्यम्। निर०  
 २५।

दक्खिणा- दक्षिणा। आव० ६३०। दक्षिणा-दक्षिण-मथुरा।  
 आव० ६८८।  
 दक्खिणावहो- दक्षिणापथः। आव० १७४। बृह० २२७ अ।  
 दक्षिणपथः-दक्षिणादिग्विभागः। आव० ९९।  
 दक्खिण्णे- दक्षिणा। उत्त० २८६।  
 दक्खु- पश्यतीति पश्यः-सर्वज्ञः। दक्षो वा निपुणः। सूत्र०  
 ७३। द्रष्टा-अतीतानागतव्यवहितसूक्ष्मपदार्थदर्शी। सूत्र०  
 ७४।  
 दक्षिण- दक्षिणपार्श्वनियुक्तत्वादनुकूलगुणत्वाद्वेति।  
 स्था० २१६। दक्षिणत्वं-सरलत्वम्,  
 पञ्चत्रिंशद्वचनातिशये षष्ठः। सम० ६३।  
 दक्षिणपूर्व- आग्नेयकोणः। सूर्य० २२।  
 दगंगुलिगा- वक्को। निशी० ४५ अ।  
 दग- अष्टाशीतौ महाग्रहे त्रयत्रिंशत्तमः। जम्बू० ५३५।  
 स्था० ७९। दकं-अप्कायः। आव० ५७३। उदकम्। प्रज्ञा०  
 ३६१। उदकं-जङ्घार्द्धप्रमाणम्। ओघ० ३२। पाणि-यघरं  
 प्रवादि। निशी० १० अ। उदकं-जङ्घार्द्धप्रमा-णम्। ओघ०  
 ३२।  
 दगकलसं- दककलशम्। जम्बू० ३८९।  
 दगकुम्भयं- दककुम्भकम्। जम्बू० ३८९।  
 दगगब्भा- दकस्य-उदकस्य गर्भा इव गर्भा दकगर्भाः-  
 काला-न्तरे जलवर्षणस्य हेतवस्तत्संसूचका इति  
 तत्त्वमिति। स्था० २८७।  
 दगघट्टो- जत्थ अद्धजंघा जाव उदगं। निशी० ३४१।  
 दगच्छड्डणमत्तए- उदकप्रतिष्ठापनमात्रकं-  
 उपकरणधावनोद-कप्रक्षेपस्थानम्। आचा० ३४०।  
 दगतीरं- दगब्भासं। निशी० २६५ अ। सिंचनवीचिस्पृ-  
 ष्टानि न नयनदृष्टपूराणि मनुष्यादिस्थानं त्ववश्यं  
 सिंचनवीचि-स्पृष्टलक्षणानि दगतीरम्। मनुष्यास्त्रियो  
 वा जलार्थिन आगच्छन्तः साधुं यत्र स्थितं दृष्ट्वा  
 तिष्ठन्ति निवर्तते वा तद्दृक्तीरम्। बृह० ३० अ।  
 दगतुंडो- दकतुण्डः पक्षिविशेषः। प्रश्न० ८।  
 दगतूर- उदके मुरवादिर्तूयाणां शब्दकरणम्। बृह० ३२ अ।  
 दगथालगं- दकस्थालकं-कांस्यादिमयं जलपात्रम्। जम्बू०  
 ३८९।  
 दगपंचवण्णे- अष्टाशीतौ महाग्रहे चतुस्त्रिंशत्तमः। स्था०  
 ७९।

दगपहो- जेण जणो दगस्स सो दगपहो। निशी० २६५।  
 दगपिप्पली- हरितविशेषः। प्रज्ञा० ३३।  
 दगभवण- उदकभवनं-पानीयगृहम्। दशवै० १६६।  
 दगभवनं- उदकभवनं-उदकगृहम्। आचा० ३४०।  
 दगमंडवगा- दकमण्डपकाः-स्फटिकमण्डपकाः। जम्बू०  
 ४४। जीवा० २००।  
 दगमंडवा- स्फटिका मण्डपाः। राज० ७९।  
 दगमंडवो- उदकमण्डपः-उदकक्षरणयुक्तः। प्रश्न० १६३।  
 दगमग्गो- दगवाहो। निशी० २६५ अ।  
 दगमट्टि- दममृत्तिका चिकखलम्। आव० ६७३।  
 दगमट्टिआ- दकसंयुक्तमृत्तिका  
 विवेकद्रव्यप्रयोगपूर्विका तद्विवेचनकलाप्युपचाराद्  
 दृक्मृत्तिका। जम्बू० १३७। उद-कमृत्तिका  
 अचिराप्कायाद्रीकृता मृत्तिका। आचा० २८५।  
 उदकप्रधाना मृत्तिका। आचा० ३२२। चिकखल्ला।  
 निशी० ८३ अ।  
 दगमास- वासा। निशी० १०९ अ।  
 दगरए- उदकरजः-उदकगणाः। प्रज्ञा० ३६१। जीवा० २१०।  
 पानीयकणाः। जीवा० १६४। दकरजः-उदकबिन्दुः। बृह०  
 १९२ अ।  
 दगरक्खसो- उदकराक्षसः-  
 जलमानुषाकृतिर्जलचरविशेषः। सूत्र० १६०।  
 दगरय- दकरजः-श्लक्ष्णोदककणिका। आव० ४४३।  
 दगलेव- उदकलेपो-नाभिप्रमाणजलावगाहनम्। सम० ३९।  
 दगवण्णो- दकवर्णः अष्टाशीतौ महाग्रहे चतुस्त्रिंशत्तमः।  
 जम्बू० ५३५।  
 दगवार- उदककुम्भः-पानीयघटः। दशवै० १७२।  
 दगवारओ- पाणयगड्डयओ। दशवै० ७९।  
 दगवारग- दगवारकः-जलघटः। जम्बू० १०१।  
 दगवाहो- दगमग्गो। निशी० २६५ अ।  
 दगसंसड्डहडा- दगसंसृष्टाहता-उदकसम्बद्धानीता  
 हस्तमा-त्रोदकसंसृष्टा वा भावना। आव० ५७६।  
 दगसीम- वेलंधरनागराजस्य चतुर्थ आवासपर्वतः। स्था०  
 २२६। दकसीमः-मनःशीलाकभुजगेन्द्रस्यावासपर्वतः।  
 जीवा० ३११।  
 दगसूगरिया- परिव्वायगा। निशी० १७२ अ।  
 दगसोकरो- परिव्राजकः। आव० ४००।

**दच्छतरो**— सांयात्रिकयानपात्रेभ्यः सकाशात् दक्षतरो वेग-  
वान्नित्यर्थः। प्रश्न० ५१।

**दच्छिसि**— द्रक्ष्यसि। आव० ५०९। भग० ११३।

**दङ्गा**— दंष्ट्राः। व्यव० २८ अ।

**दङ्ढ**— दाहः-कर्मदलिकदारूणां ध्यानाग्निता  
तद्रूपापनयनमक-र्मत्वजननम्। भग० १६। दग्धं-  
स्वस्वभावापनयनेन भस्मीकृतम्। आव० ५८२। दाहः-  
अग्निना दार्वी(दयर्था)-दिविषयो दाहः भग० १९।

**दङ्ढच्छवी**— दग्धच्छविः-शीतादिभिरुपहतत्वक्। प्रश्न०  
५२।

**दङ्ढप्पङ्गो**— दृढप्रतिज्ञः। भग० ६५३।

**दङ्ढिल्लयं**— दग्धम्। आव० ८३९।

**दढ**— दृढः-विश्रुतसिकारहितः परीषहोपसर्गैः निष्प्रकम्पो  
वा। आचा० १२२। गाढः। उत्त० ३४९। निष्प्रकम्पम्।  
नन्दी० ४६। षण्मासीं यावद् शक्यभोगम्। षण्मासान्  
यावत् ध्रियते तद् ईदृशं दृढम्। बृह० २३८ अ। दृढं-  
अतिनिबिडच-यापन्नम्। जीवा० १२१।

**दढक्खमाइया**— महाश्रवपत्यादयः। व्यव० १७६ अ।

**दढघणू**— आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां भरतक्षेत्रे अष्टमः  
कुलकरः। स्था० ५१८। आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां  
ऐरावतक्षेत्रे षष्ठः कुलकरः। सम० १५३।

**दढधम्म**— दृढो धर्म्मो यस्य, आपद्यपि  
तत्परिणामाविचलनात् अक्षोभत्वादित्यर्थः स  
दृढधर्म्मोति। स्था० २४२। दृढधर्म्मा य आपद्यपि  
धर्म्मान्न चलतीति। स्था० ४८४। दृढः-स्थिरो निश्चलो  
धर्म्मो यस्य स। ओघ० २०२।

**दढनेमी**— दृढनेमिः-अन्तकृद्दशानां चतुर्थवर्गस्य  
दशममध्ययनम्। अन्त० १४। दृढनेमिः-  
समुद्रविजयस्य चतुर्थः सुतः। उत्त० ४९६।

**दढपङ्गन्**— दृढप्रतिज्ञः। भग० ५४४, ६९५। अन्त० ४।  
विपा० ५१। दृढप्रतिज्ञः-भव्यविशेषः। विपा० ४४।

**दढप्पहारी**— दृढप्रहारी-कौशाम्ब्यां रथिकः। उत्त० २१४।  
गाढप्रहारः। ज्ञाता० २३९।

**दढभूमि**— दृढभूमिः। आव० २१६।

**दढमित्तो**— दृढमित्रः-योगसंग्रहे निरपलापदृष्टान्ते  
दन्तपुरनगरे धनमित्रवणिजमित्रम्। आव० ६६६।  
धणमित्तस्स आलावं-तस्स वयंसो। निशी० १२८ अ।

धणदत्त सार्थवाहस्य मित्रम्। व्यव० १०७ अ।

**दढरह**— निरयावलया पञ्चमवर्गेऽष्टममध्ययनम्। निर०  
३९। भरतक्षेत्रे अतीतायामुत्सर्पिण्यां अष्टमः कुलकरः।  
स्था० ५१८। भरतक्षेत्रे अतीतायामवसर्पिण्यां अष्टमः  
कुलकरः। सम० १५०। शीतलजिनिपिता। आव० १६१।  
सम० १५१। लोकपालाग्रमहिषीणां तृतीया पर्षत्। स्था०  
१२७। दृढ-रथा-पिशाचकुमारेन्द्रस्य बाह्या पर्षत्। जीवा०  
१७१।

**दढाउ**— दाढादालः। जीवा० १२१।

**दढाउणा**— दृढायुरप्रतीतः। स्था० ४५६।

**दढाऊ**— आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां चतुर्विंशतिकायां  
पञ्चमतीर्थ-करस्य पूर्वभवनाम। सम० १५४।

**दण्ड**— दुष्प्रयुक्तमनोवाक्कायलक्षणो हिंसामात्रं वा एकत्वं  
चास्य सामान्यनयोदेशाद् एवं सर्वत्रैकत्वमवसेयम्।  
सम० ५।

**दण्डपालः**— नगररक्षकः। उत्त० ४९५।

**दण्डपाशिकः**— राजप्रेष्यः। आचा० ३३४।

**दण्डा**— दुष्प्रणिहितमनोवाक्कायलक्षणः। प्रश्न० ९७।

**दण्डिकः**— राजा। ओघ० १२०।

**दतिए**— वायफुण्णो दतितो। निशी० ४५ अ।

**दत्त**— क्रीडनधात्रीदोषविवरणे सिंहाचार्यशिष्यः। पिण्ड०  
१२५। भरतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां पञ्चमः  
कुलकरः। सम० १५३। स्था० ३९८। दत्तः-  
सङ्गमस्थविराचार्यस्य शिष्यः। उत्त० १०८। दत्तः-  
तगरानगर्या वास्तव्यो वणिक्। उत्त० ९०। दत्तः-  
भद्राभिधिगजातीयपुत्रः धिगजातिनृपतिः। आव० ३६९।  
दत्तः-नित्यवासदृष्टान्ते सङ्गमस्थविरशिष्यः। आव०  
५३६। सङ्गमथेराणामायरियाणं सीसो। निशी० ९५ अ।  
कुल्लइरपुरे दुशिष्यः। मरण०। निरयावल्यां तृतीयवर्गे  
सप्तममध्ययनम्। निर० २१, ३६। दत्तः-सप्तमो  
वासुदेवः। आव० १५९। मेतार्यपिता। आव० २५५। दत्तः-  
रोहीटकनगरे गाथापतिः। विपा० ८२। दत्तः-चम्पानगर्या  
नृपतिः। विपा० ९५।

**दत्ताणुन्नायसंवरो**— दत्तं च-वितीर्णमन्नादिकमनुज्ञातं  
च-प्रति-हारिकपीठफलकादि ग्राह्यं, इत्येवरूपः संवरो  
दत्तानुज्ञातसं-वरः। प्रश्न० १२३।

**दत्ति**— दत्तिः सकृद्भक्तादिपात्रपातलक्षणा। प्रश्न० १०६।

दत्तिआ- दत्ता च कन्या पित्रादिना परिणीयत इति।

आव० १२९।

दत्तिते- दत्तयः-सकृद्भक्तादिकेपलक्षणा। स्था० २९८।

दत्तिय- दात्रिका। आचा० ६१।

दत्तिलायरिअ- आचार्यविशेषः। दशवै० ७।

दत्ती- यत्सिक्थकमप्येकशः क्षिपति एका दत्तिः। आव० ८४४। दत्तिः-एकक्षेपभिक्षालक्षणा। औप० ३९।

दत्तीओ- दत्तयः-एकप्रक्षेपप्रदानरूपाः। स्था० १३९।

दत्तिः-सकृत्प्रक्षेपलक्षणा। स्था० १५०।

दत्तेसणा- दत्तं दानं तस्मिन्

एषणातद्गतदोषान्वेषणात्मिका दत्तैषणा। उत्त० ५९।

ददर- चीवरावनद्धं कुण्डिकादिभाजनमुखम्। जम्बू० ४९।

ददरः-बहलः, दर्दराभिधानाद्रिजातश्रीखण्डो वा

चपेटारूपः। ज्ञाता० ४०। घनं-चपेटाभिघातः,

सोपानवीथीः। सम० १३८। गलदर्दरःवचनाटोप इत्यर्थः।

प्रश्न० ४६। दर्दरः-आच्छादनम्। आव० ६२५। बहलं

चपेटाकारः। राज० ३६। मुखे घनेन चीवरेण बन्धनम्।

बृह० २९९ अ। दर्दरः-वादयविशेषः। जीवा० १०५। बहलः

चपेटाप्रकारो वा। जीवा० १६०, २२७। औप० ५। प्रज्ञा० ८६।

दर्दरः-चीवरावनद्धं कुण्डिकादिभाजनमुखम्। जीवा०

२१४, २४४। लघुपटहः। जीवा० ३६६, २६९। पर्वतविशेषः।

ज्ञाता० २२२। चन्द-नोत्पत्तिखानिभूतः पर्वतः। जम्बू०

४१२। दर्दरः-निरन्तरकाष्ठफलकमयो निःश्रेणिविशेषः।

पिण्ड० ११०।

ददरए- दर्दरकः-मुखबन्धनं वस्त्रखण्डम्। पिण्ड० १०५।

ददरओवीलको- दर्दरेणोपपीडयति-जातमनो बाधं

करोतीति दर्दरोपपीडकः। प्रश्न० ४६।

ददरओवीलग- दर्दरेण गलदर्दरेण-वचनाटोपेन

अपत्रीडयति-गोपायन्तमात्मस्वरूपपरं

विलज्जीकरोतीति स दर्दरापत्री-डकः। प्रश्न० ४६।

ददरग- दर्दरिको-यस्य चतुर्भिश्चरणैरवस्थानं भुवि स

गोधा-चर्मावनद्धो वाद्यविशेषः। जम्बू० १०१।

ददरपिहण- दर्दरपिधानं-वस्त्रबन्धनम्। बृह० २७ अ।

ददरमलयसुगंधे- दर्दरमलयसुगन्धः। जम्बू० ४१०।

ददरयसंठिय- दर्दरसंस्थितः-आवलिका बाह्यस्य षोडशं

संस्थानम्। जीवा० १०४।

ददरियं- लिप्तम्। निशी० ५९ आ।

ददरेति- बध्नाति। निशी० २२अ।

ददु - ददुः-क्षुकुष्ठविशेषः। भग० ३०८। जम्बू० १७०।

ददुर- मणिकारश्रेष्ठिजीवः। भक्त०। राहोः पञ्चमनाम।

भग० ५७५। देवविशेषः। ज्ञाता० १७८। दुर्दुरटः-

चर्मावनद्धमुखः कलशः। प्रश्न० १५९।

ददुरवडिंसए- सौधर्मकल्पे विमानविशेषः। ज्ञाता० १७८।

ददु- पसिद्धं। निशी० १२७ आ। तब्भवो दोसो। निशी०

१८८ आ।

ददू- सप्तमं महाकुष्ठम्। प्रश्न० ३६१। महाकुष्ठविशेषः।

आचा० २३५। त्वगोगविशेषः। पिण्ड० ९।

दधिघणो- दधिघनः-घनीभूतं दधि। जम्बू० ४९। जीवा०

२०५।

दधिमुहा- पर्वतविशेषः। सम० ७७।

दधिवासुया- दधिवासुका-वनस्पतिविशेषः। जम्बू० ४५।

जीवा० २००।

दधिवाहणो- दधिवाहनः-चम्पानगर्यधिपतिः। आव०

२२३।

दधी- दधि। प्रज्ञा० ३६१।

दन्तपुत्तलिका- दन्तकर्मणि दृष्टान्तः। आचा० ४१४।

दन्तवण- दन्तपावनं-दन्तमलापकर्षणकाष्ठम्। उपा० ४।

दन्ताः- दशनाः। आचा० ३८।

दप्प- व्यायामवल्गनादिषु व्यापृततया यो

निष्कारणेऽनादर उपस्थापनायाः स दर्पः। व्यव० ६५

अ। दर्पिका-या कारणमन्तरेण प्रतिसेवा क्रियते सा।

व्यव० ४७ आ। दर्पः। मनस्विनीमानदलनोत्थो गर्वः।

उत्त० ४२८। अकत्तत्वं। निशी० २५ आ। दर्पः-

देहदृप्तता। सोभाग्याद्यभिमानः। अब्रह्मणोऽष्टमं

नाम। प्रश्न० ६६। दर्पः-वल्गनादिः। भग० ९१९। स्था०

४९४। दर्पः-दृप्तता। भग० ५७२।

दप्पणं- दर्पणं अष्टममङ्गले प्रथमम्। जम्बू० ४१९।

दर्पणकः-आदर्शकदण्डः। औप० २०। दर्पणः-दर्पणगण्डः।

जीवा० १७०। प्रश्न० ८०।

दप्पणिज्जं- दर्पणीयं-बलकरः। औप० ६५। उत्साहवृद्धिहे-

तुत्वाद् दर्पणीयम्। जीवा० २७८।

दप्पणिज्जे- दर्पणीयमुत्साहवृद्धिहेतुत्वात्। जम्बू० ११९।

दर्पणीयं-बलकरमुत्साहवृद्धिकरमित्यन्य इति। स्था०

३७५।

दप्पायमाणो- दर्पायमाणः। उत्त० २११।  
 दप्पिया- दप्परागदोसाणुगया दप्पिया। निशी० ७९अ।  
 दब्भ- समूलम्। निर० २६। दर्भः-मूलसहितः दर्भः। भग०  
 २९०, ८०२। कुशः। प्रश्न० १२८। समूलः। विपा० ७२।  
 दर्भमयी। प्रश्न० १३। अग्रभूतः। ज्ञाता० ११४।  
 दब्भकम्मताणि- दर्भकर्मान्तानि। आचा० ३६६।  
 दब्भकुरा- तृणविशेषः। प्रज्ञा० ३३। भग० ८०२।  
 दब्भपुष्पय- दर्भपुष्पः-दर्वीकरसर्पविशेषः। प्रश्न० ८।  
 दब्भा- दार्भायनं-चित्रानक्षत्रस्य गोत्रम्। जम्बू० ५००।  
 दब्भेया- विद्याविशेषः। अन्या दर्भ-दर्भविषया भवति  
 विद्या यथा दर्भैरपमृज्यमान आतुरः प्रगुणो भवति।  
 व्यव० १३३आ।  
 दमओ- द्रमकः। आव० ४२१।  
 दमगभत्तं- दमगा-आरम्भका तेषिं भत्तं दमगभत्तं।  
 निशी० २७२अ।  
 दमगा- जे पढमं विणयं गोहेति ते दमगा। निशी० २७७।  
 दमगो- दरिद्रो। निशी० ३५०अ। दरिद्रः। निशी० १६७अ।  
 दमणं- दमनं-शिक्षाग्राहणम्। प्रश्न० २२।  
 दमणको- दमनकः-पुष्पजातिविशेषः। प्रश्न० १६२।  
 दमणग- हरितविशेषः। प्रज्ञा० ३३।  
 दमणगपुड- पुष्पजातिविशेषः। ज्ञाता० २३२।  
 दमदंत- पांडवकौरवसाम्यवान्। मरण०। दमदन्तः-  
 हस्तिशीर्षनगरे राजा। ज्ञाता० २०८। आव० ३६५।  
 दमसेणे- दमसेनः-कृष्णवासुदेवधर्माचार्यः। आव० १६३।  
 दमिलि- द्राविडी। भग० ४६०। ज्ञाता० ४१।  
 दमीसरे- दमिनः-उद्धतदमनशीलास्ते च  
 राजानस्तेषामीश्वरः-प्रभुः। यद्वा दमिनः-  
 उपशमिनस्तेषां सहजोपशमभावत ईश्वरो दमीश्वरः।  
 उत्त० ४५१।  
 दम्मंतो- दमितः। उत्त० ५३।  
 दम्म- दम्यः-दमनयोग्यः। आचा० ३९१।  
 दम्मा- दम्यः-दमनीयः (गोरथकः)। दशवै० २१७।  
 दयइ- दयते-पालयति। आचा० २७५।  
 दया- देहिरक्षा, अहिंसाया एकादशं नाम। प्रश्न० ९९।  
 दयाधम्म- दयाप्रधानो धम्मो दयाधर्मः,  
 दशविधयतिधर्मरूपः यतिधर्मः। उत्त० २५३।  
 दयामनका- वराकका। ओघ० १५७।

दर- द्रुतम्। बृह० १०५आ। अर्धम्। बृह० १२१आ। अद्धं।  
 निशी० ७७अ। ईषद्। व्यव० ४९अ।  
 दरदर- शीघ्रम्। निशी० १६अ।  
 दरहिंडिए- अर्द्धहिण्डिते। ओघ० १०४।  
 दरि- दरी-पर्वतकन्दरा गुहा। भग० १७४। शृगालादिकृत  
 भूविवरविशेषः। भग० ६८३। दर्यो-गुहाः। जम्बू० ६६।  
 दरिअ- निम्नतरप्रदेशः अधोग्रामादिः। भग० ४३६।  
 दरिद्धेरा- दरिद्रस्थविराः नाम पाषण्डस्थाः। आव० २०४।  
 दरिद्रो- फल्लो। निशी० ४५अ।  
 दरिय- द्रुतः-बलोन्मतः। आव० ७१९। गर्विष्ठः। आचा०  
 ७५।  
 दरिसण- दर्शनं सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि  
 सामान्यग्रहणा-त्मको बोधः। स्था० ४४७। मतं। निशी०  
 ११आ। दर्शनं-आगमः। सूत्र० ३७।  
 दरिसणपुलाओ- दर्शनपुलाकः, पुलाकस्य द्वितीयो भेदः।  
 उत्त० २५६।  
 दरिसणावरणिज्ज- दर्शनावरणीयं-  
 दर्शनमोहनीयमभिगृह्यते। भग० ४३२।  
 दरिसणिज्जं- दर्शनीयं-दर्शनयोग्यम्। जीवा० १६१। दर्श-  
 नीयः-नयनमनोहारी। जीवा० ३४३।  
 दरिसणिज्जा- दर्शनयोग्या, यां पश्यतश्चक्षुषी श्रमं न  
 गच्छतः। जम्बू० २१। यां पश्यच्चक्षुर्न श्राम्यति। ज्ञाता०  
 १३।  
 दरिसावं- दर्शनम्। दशवै० १०३। निशी० १५अ। व्यव०  
 १७अ।  
 दरिसावेउ- दर्शयतु। दशवै० ४१।  
 दरी- कुसाराती। निशी० १२९अ। मूषिकादिकृता लघ्वी  
 खड्ग। जीवा० २८२। जम्बू० १२४। शृगालादिउ-  
 त्कीर्णभूमिविशेषः। ज्ञाता० ३६। कन्दरविशेषः। ज्ञाता०  
 ६७। दरी-सुरङ्गा गुफा च। आव० ६७७। आचा० ४११।  
 दर्दरिका- गोधिका-वादयविशेषः। अनुयो० १२९।  
 दर्दर- पर्वतविशेषः। भग० ४७७।  
 दर्दरिका- वादयविशेषः। स्था० ३९५।  
 दर्पण- कार्याभावे। बृह० २२२आ।  
 दर्भ- तृणविशेषः। आचा० २८५।  
 दर्वी- वर्द्धकिः। नन्दी० १६५।  
 दर्वीकर- सर्पविशेषः। सम० १३५। प्रश्न० १०।

दर्शन- आर्यभेदः। सम० १३५। दृष्टिः-चक्षुर्ज्ञानं नयमतं  
वा। स्था० १८३।  
दर्शनतः- दर्शनग्रन्थं प्रयुञ्जानो दर्शनतः। स्था० ३३७।  
दर्शनलालसं- अवलोकचलम्। आव० ७८४।  
दर्शनानि- नयाः। स्था० १९९।  
दर्शनोपसम्पत्- दर्शनप्रभावनीयशास्त्रपरिज्ञानार्थमेव  
दर्शनोप-सम्पदिति। आव० २७०।  
दर्शनप्रभावकसम्मत्यादिशास्त्र-विषया। स्था० ५०१।  
दलं- चूर्णम्। जम्बू० ४२२।  
दलन्ति- प्रयच्छन्ति। बृह० २८१।  
दलण- दलिकं-कारणम्। भग० ६६५।  
दलणज्ज- दद्यात्। आचा० २८०।  
दलनिकर- दलवृन्दम्। ज्ञाता० १६८।  
दलयमाणे- ददत् न कृतप्रत्युपकारो भवेदिति। स्था०  
११९।  
दलामि- दलयामि-तुभ्यं ददामि। ज्ञाता० ३६।  
दलाह- ददध्वम्। उत्त० ३६१। दत-प्रयच्छत। ज्ञाता०  
११९।  
दलिअं- द्रव्यं वस्तु वा। ओघ० ३७।  
दलियं- दलिकं-परममेधावी आचार्यपदयोग्यः। बृह०  
१३४।  
दवः- द्रवः-जलम्। पिण्ड० १२। द्रवः-परिहासः। औप० ५१।  
जीवा० १७२। प्रज्ञा० ९६। द्रवः-विकृतिविशेषः। आव०  
८५४। द्रवः-कर्मग्रन्थिद्रावणाद् द्रवः-संयमः। सूत्र० ३१६।  
द्रव-द्रुतार्थवाचकः। बृह० १२४। द्रवं-पानकम्। ओघ०  
१०१। पानीयः। पिण्ड० १७५। सौवीर-द्रवादिकं अलेपकृतं,  
दुग्धतैलवसाद्रवघृतादि च। बृह० २०६।  
द्रवः- संयमः। आचा० ७७, १९३। द्रवं-तण्डुलधावनादि।  
पिण्ड० ९२।  
द्रवउदगं- द्रवोदकम्। निशी० ४५।  
द्रवकारगा- द्रवकारकाः-केलिकराः। जम्बू० २६४।  
द्रवकारिओ- परिहासकारिणीः। भग० ५४८।  
द्रवगुडो- द्रवगुडः-गुडभेदः, द्रवीभूतो गुडविशेषः। आव०  
८५४।  
द्रवग्निदावणया- दवाग्निदापनता-त्रयोदशं कर्मादानम्।  
आव० ८२९।  
द्रवदव- द्रुतं द्रुतं तथाविधालम्बनं विना त्वरितम्। उत्त०

४३४। द्रुतं द्रुतं। बृह० २८८। अन्त० २०।  
द्रवदवचार- द्रुतद्रुतचारः विंशत्यसमाधौ प्रथमं स्थानम्।  
आव० ६५३।  
द्रवदवचारि- द्रुतं द्रुतं चरति-गच्छति, सोऽनुकरणशब्दतो  
द्रवदवचारि, असमाधौ प्रथमं स्थानम्। सम० ३७।  
द्रवदवस्सं- अब्भुयं। द्रुयं। दशवै० ७६।  
द्रवदव्व- द्रुतं द्रुतं त्वरितम्। दशवै० १६६।  
द्रवरकः- सूत्रम्। जीवा० २३७।  
द्रवरिका- जीवा-प्रत्यञ्चा। सूर्य० २३३।  
द्रवविरोह- द्रवेण काञ्जिकेन सह विरोधः। द्रवविरोधः  
द्रवं-उदकं तेन निर्लेपनं करोति सागारिकपुरत इति।  
विनाशः। ओघ० ४८।  
द्रवसील- द्रवशीलं-भासइ द्रुयं द्रुयं गच्छए य दरिउव्व  
गोविसासरए सव्व द्रुयद्रुयकारी फुइइ व ठिओवि  
दप्पेण। बृह० २१३। द्रवशीलः-दर्प्पाद्  
द्रुतगमनभाषणादि। स्था० २७५।  
द्रविण- रागादिभावरहितत्वाद् द्रव्यं, द्रवति-गच्छति  
तांस्तान् जानादिप्रकारानिति द्रव्यं। साधोरूपमानम्।  
दशवै० ८४। द्रव्यकायः-त्र्यादिघटादिद्रव्यसमुदायः।  
दशवै० १३४। द्रव्य-कायः-रागद्वेषरहितः भिक्षुपर्यायः।  
दशवै० २६२। द्रव्यः-द्रव्यानुयोगः। दशवै० ४।  
द्रविण जीविय- द्रव्यमेव सचेतनादिभेदं  
जीवितव्यहेतुत्वाज्जी-वितं द्रव्यजीवितम्। स्था० ७।  
रागदोसविमुक्को। दशवै० १४५।  
द्रविय- वीर्यं, णूमं। निशी० ७०। द्रविकं-समुदायः  
भग० ९२। विशिनष्टि-रागद्वेषविरहाद्-द्रव्यभूतः  
कर्मग्रन्थिद्रावणाद्वा। द्रवः-संयमः स विद्यते  
यस्यासौ द्रविकः। आचा० ३०९। द्रव्यं-संयमः स विद्यते  
यस्यासौ द्रविकः। आचा० २९२। द्रव्यः-भव्यः-  
मुक्तिगमनयोग्यः। आचा० २४६।  
द्रवियणुजोगे- द्रवतीति द्रव्यं तस्यानुयोगः द्रव्यानुयोगः-  
सदसत्पर्यालोचनारूपः। ओघ० ८।  
द्रविया- द्रविका नाम रागद्वेषनिर्मुक्ताः, द्रवः-संयमः  
सप्तद-शविधानः कर्मकाठिन्यद्रवणकारित्वाद्-  
विलयहेतुत्वात् स येषां विद्यते ते द्रविकाः। आचा० ७७।  
द्रवियाणि- अटव्यां घासार्थं राजकुलावरुद्धभूमयः। आचा०  
३८२।

**दवियाणुओगे-** अनुयोजनं-सूत्रस्यार्थेन सम्बन्धनं  
अनुरूपोऽनुकूलो वा योगः-सूत्रस्याभिधेयार्थं प्रति  
व्यापारोऽनुयोगः, व्याख्यानमिति भावः, द्रव्यस्य-  
जीवादेरनुयोगो-विचारो द्रव्यानुयोगः, यज्जीवादेर्द्रव्यत्वं  
विचार्यते स द्रव्यानुयोगः, द्रवति-गच्छति तांस्तान्  
पर्यायान् द्रूयते वा तैस्तैः पर्यारिति द्रव्यं-  
गुणपर्यायवानर्थः, तत्र सन्ति जीवे ज्ञानादयः सहभा-  
वित्वलक्षणा गुणाः न हि तद्वियुक्तो जीवः कदाचनापि  
सम्भवति, जीवत्वहानेः, तथा पर्याया अपि  
मानुषत्वबाल्यादयः कालकृतावस्थालक्षणस्तत्र  
सन्त्येवेति, अतो भवत्यसौ गुण-पर्यायवत्त्वात्  
द्रव्यमित्यादि द्रव्यानुयोगः। *स्था० ४८१।*

**दविल-** द्रविडः-चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः। *प्रश्न० १४।*

**दव्वंतो-** द्रव्यायमाणः। *उत्त० २७९।*

**दव्व-** द्रव्यं-वस्तु। *आव० ७६८।* द्रव्यं-ओदनादि। *आव० ८४४।* द्रव्यं-त्रिकालानुगतिलक्षणं पुद्गलादिवस्तु।  
*प्रश्न० ११७।* द्रव्यं-रिक्थम्। *प्रश्न० ५३।* द्रव्यं  
सामान्यम्। *जीवा० ९८।* इह द्रव्यतस्तुल्यत्व वदता  
संमूर्च्छिमसर्वप्रभेदनिर्भेद-बीजं  
मयूराण्डकरसवदनभिव्यक्तदेशकालक्रमं प्रत्यवबद्धवि-  
शेषभेदपरिणतेर्योग्यं द्रव्यम्। *प्रज्ञा० १८४।*  
वर्तनादिलक्षणो द्रव्यकालः। *आव० २५७।*  
द्रव्यजीवितंसच्चित्तादि। *आव० ४७९।* द्रव्यः-भव्यो  
मुक्तिगमनयोग्यः, रागद्वेषविर-हाद्वा  
द्रव्यभूतोऽकषायी। *सूत्र० १७०।* सर्वत्रान्वयि सामान्य-  
मुच्यते द्रवति-गच्छति तान् तान् पर्यायान् विशेषानिति  
वा द्रव्यम्। *जम्बू० २६।* द्रव्यं-पूर्वोपात्तं कर्म। *दशवै० ६८।*  
द्रव्यं-जीवाजीवभेदः। *अनुयो० १०५।* यत्रस्थास्त  
उत्पद्यन्ते उत्पद्य चावतिष्ठन्ते प्रलीयन्ते च तद्  
द्रव्यम्। *उत्त० ५५७।* द्रव्यं-हिरण्यम्। *निशी० ४५६ अ।*  
द्रवति-गच्छति तांस्तान्पर्यायानिति द्रव्यं-अतीत-  
भविष्यद्भावकारणं अनु-भूत-  
विवक्षितभावमनुभविष्यद्विव-क्षितभावं वा  
वस्त्वित्यर्थः। *अनुयो० १४।*

**दव्वकाल-** द्रव्यार्द्धं सार्द्धम्। *स्था० ३६८।* द्रव्यकालः-वर्त-  
नादिलक्षणः। *दशवै० ९।*

**दव्वगुणो-** द्रव्यगुणः-द्रव्यम्। *आचा० ८५।*

**दव्वचरणं-** गतिचरणं भक्खणाचरणं आचरणाचरणं च।  
*निशी० १ अ।*

**दव्वट्ट-** शकटादिचक्राणामुद्धिमूले वा यो लोहमयः पट्टो  
दीयते स द्रव्यार्त्तः। *आचा० ३५।*

**दव्वट्टया-** द्रव्यमेवार्थस्तस्य भावः द्रव्यत्वं वा द्रव्यार्थता।  
*अनुयो० ६७।* द्रव्यं च तदर्थश्चेति द्रव्यार्थस्तस्य भावो  
द्रव्यार्थता प्रदेशगुणपर्याधारता अवयविद्रव्यतेति  
यावत्। *स्था० १०।* द्रव्यार्थता-द्रव्यास्तिकनयमतम्।  
*जीवा० १८३।* द्रव्यमेवार्थः तात्त्विकः पदार्थः प्रतिज्ञायां  
यस्य न तु पर्यायाः स द्रव्यार्थः-  
द्रव्यमात्रास्तित्वप्रतिपादको नयविशेषः। तद्भावो  
द्रव्यार्थता, द्रव्यमात्रास्तित्वप्रतिपादकनयाभिप्राय इति  
यावत्। *जम्बू० २६।*

**दव्वट्टाणाउय-** द्रव्यं-पुद्गलद्रव्यं तस्य स्थानं-भेदः परमा-  
णुद्विप्रदेशिकादि तस्यायुः-स्थितिः, अथवा  
द्रव्यस्याणुत्वा-दिभावेन यत्स्थानं तद्रूपमायुः  
द्रव्यस्थानायुः। *भग० २३६।*

**दव्वट्टो-** द्रवति गच्छति तान् तान् पर्यायान् विशेषानिति  
वा द्रव्यमिति व्युत्पत्तेर्द्रव्यमेवार्थः तात्त्विकः पदार्थो  
यस्य न तु पर्यायः स द्रव्यार्थः-  
द्रव्यमात्रास्तित्वप्रतिपादकोनयविशेषः। *जीवा० ९८।*

**दव्वणुमणं-** द्रव्यगोपनम्। *उत्त० २२१।*

**दव्वतिंतिण-** द्रव्यतिंतिणिकः। *बृह० १२६।* जं अग्गीए  
दढं तिडितिडेति तं दव्वतिंतिणं। *निशी० ८० अ।*

**दव्वतिथ-** द्रव्यतीर्थ-मागधवरदामादि। *आव० ४९८।*

**दव्वथओ-** द्रव्यस्तवः-पुष्पगन्धधूपादिः। *आव० ४९२।*

**दव्वदेवो-** यो हि पुरुषादिर्मृत्वा देवत्वं प्राप्स्यति  
बद्धायुष्कः अभिमुखनामगोत्रो वा स योग्यत्वाद्  
द्रव्यदेवः। *आव० ६७८।*

**दव्वधम्म-** द्रव्यधर्मः। *दशवै० २१।* द्रव्यधर्मः-

धर्मास्तिकायः तिकतादिर्वा द्रव्यस्वभावः गम्यादिर्वा  
धर्मः कृतीर्थिको वा धर्मः। *आव० ४९७।*

**दव्वपडिबद्धा-** द्रव्यप्रतिबद्धा। *निशी० १०६ आ।*

**दव्वपरंपरा-** द्रव्यपरम्परा। *दशवै० ४९।*

**दव्वपाणा-** द्रव्यप्राणाः-आयुःप्रभृतयः। *जीवा० १४०।*

**दव्वभावभासा-** तत्र द्रव्यं प्रतीत्योपयुक्तौर्या भाष्यते सा

द्रव्यभावभाषा। भावभाषाभेदः। दशवै० २०८।

**द्रव्यभावसंकोचपयत्थो-** द्रव्यसङ्कोचनं करशिरः

पादादिस-ङ्कोचः, भावसङ्कोचनं विशुद्धस्य मनसो  
नियोगः, द्रव्यभावस-ङ्कोचन-प्रधानः पदार्थः

द्रव्यभावसङ्कोचनपदार्थः। आच० ३७९।

**द्रव्यभिक्षु-** क्रियाविशिष्टविदारणादिदारुसमन्वितो,  
द्रव्यं भिनत्तीति कृत्वा। द्रव्यभिक्षुः-अपारमार्थिकः।  
दशवै० २६०।

**द्रव्यभूतो-** अणुवओत्तो, भावशून्येत्यर्थः। निशी० ६४ अ।

**द्रव्यमन्द-** द्रव्यमन्दः-अतिस्थूलोऽतिकृशो वा। आचा० ७०।

**द्रव्यमूढो-** बाहिरितो धूमेणाकुलितो मुज्झति, अंतो  
धत्तूरगेण मदणकोद्वोदणेण ववा भुत्तेण मुज्झति।  
जो वा पूर्वदिङ् द्रव्यं कालंतरेण दिङ्मि ण याणति सो  
द्रव्यमूढो। निशी० ४१ आ।

**द्रव्यरूपं-** यत् मनःपर्याप्तिनामकर्मोदयतो  
मनःप्रायोग्यवर्गं णादलिकमादाय मनस्त्वेन परिणमनं  
तत् द्रव्यरूपं मनः। प्रजा० ३११।

**द्रव्यलेसं-** द्रव्यलेश्यावर्णः। भग० ५७४।

**द्रव्यवगगण-** समानजातीयद्रव्याणां राशिद्रव्यवर्गणा।  
भग० २४।

**द्रव्यविसेसो-** द्रव्यविशेषः-द्रव्यपरिणामः। भग० २३७।

**द्रव्यविहङ्गम-** धारयत्येवं तद्द्रव्यं यस्तं द्रव्यविहङ्गमं  
इति, द्रव्यं च तद् विहङ्गमश्चेति द्रव्यविहङ्गमः।  
दशवै० ६९।

**द्रव्यसंकोचणं-** द्रव्यसङ्कोचनं करशिरःपादादिसंकोचः।  
जम्बू० १०। आच० ३७९।

**द्रव्यसम्म-** यथा अवयवलक्षणनिष्पत्तेः  
कर्तुःतन्निमित्तचित्त-स्वास्थ्योत्पत्तेः यदर्थं वा कृतं  
तस्य शोभनानुकरणतया समाधानहेतुत्वाद्वा  
द्रव्यसम्यग्। आचा० १७५।

**द्रव्यसाम-** द्रव्यसाम। उत्त० ५३३।

**द्रव्यसारो-** द्रव्यसारः-द्रव्यलक्षणसारः, परिग्रहस्य दशमं  
नाम। प्रश्न० ९२।

**द्रव्यशीले-** तीच्छीलः-यो हि फलनिरपेक्षस्तत्स्वभावादेव  
क्रियासु प्रवर्तते सः तच्छीलः-द्रव्यशीलः,  
प्रावरणाभरण-भोजनादिषु। सूत्र० १५३।

**द्रव्यशुद्धं-** द्रव्यशुद्धं द्रव्यतः शुद्धेन प्राशुकादिनेति। विपा०

९२। द्रव्यं-ओदनादिकं शुद्धं उदग्मादिदोषरहितं यत्र दाने  
तत्। भग० ६६१।

**द्रव्यहलिया-** कुहणविशेषः। प्रजा० ३३।

**द्रव्यापाय-** अपायस्य प्रथमः प्रकारः। द्रव्यादपायो  
द्रव्यापायः, अपायः-अनिष्टप्राप्तिः द्रव्यमेव वा अपायो  
द्रव्यपायः अपाय-हेतुत्वादित्यर्थः। दशवै० ३५।

**द्रव्याभिओगो-** द्रव्याभियोगः-द्रव्यसंयोगजश्चूर्णः। ओघ०  
१९३।

**द्रव्याभिगहचरण-**

भिक्षाचर्यायास्तद्वत्तश्चाभेदविवक्षणाद् द्रव्या-  
भिगहचरणो भिक्षाचर्या। भग० ९२१।

**द्रव्यायंके-** द्रव्यातङ्कः-आतङ्कभेदः। आचा० ७५।

**द्रव्याचार-** आचरणं आचारः, द्रव्यस्याचारो द्रव्याचारः,  
द्रव्य-स्य यदाचरणं तेन तेन प्रकारेण  
परिणमनमित्यर्थः। दशवै० १०१।

**द्रव्यासण्णं-** द्रव्यासन्नं-जं धवलघरआरामाईणं आसण्णे  
वोसिरइ। ओघ० १२३।

**द्रव्यिदियाइं-** द्रव्येन्द्रियाणि-निर्वृत्युपकरणलक्षणानि।  
भग० ८७।

**द्रव्यी-** दर्वी-फणा। जीवा० ३९। प्रजा० ४७। दर्वीलधीयान्-  
दारुहस्तकः। पिण्ड० ८४। दर्वी-डोवसदृशा। दशवै० १७०।  
हस्तिविशेषः। प्रजा० ३३। दर्वी। आचा० ३४२।

**द्रव्यीकरा-** दर्वीकराः-फणभृतः। प्रश्न० ३७। दर्वीव  
दर्विफणा तत् कारणशीला दर्वीकराः, अहिभेदविशेषः।  
प्रजा० ४६।

**द्रव्यवहाण-** उप-सामीप्येन धीयते-व्यवस्थाप्यत  
इत्युपधानं द्रव्यभूतमुपद्यानं द्रव्योपधानम्। आचा०  
२९७।

**द्रव्योवरम-** द्रव्योपरमः-द्रव्यान्यथात्वम्। भग० २३६।

**द्रव्योवाय-** द्रव्योपायः, उपायभेदः। दशवै० ४०।

**द्रव्योसह-** द्रव्यौषधं पिप्पल्यादि। दशवै० १९३।

**द्रव्यकन्धरः-** रावणः। प्रश्न० ८७।

**द्रव्यदशकिकायाः-** शतम्। व्यव० ३४७ आ।

**द्रव्यधामाचारी-** इच्छामिच्छत्यादिका। ओघ० १।

**द्रव्यरथः-** अयोध्याधिपतिः, रामपिता। प्रश्न० ८७।

**द्रव्यविध-** चक्रवालसमाचारो, सामाचारीविशेषः। व्यव०  
१९।

दशा- दशाध्ययनप्रतिबद्धा ग्रन्थ पद्धतयः। प्रश्न० १।  
 दशारादयः- करुपागतश्रीप्रार्थनाप्रणयभङ्गकारिणः  
 दशवै० २४७।  
 दशार्णभद्रः- दशार्णपूरे राजा। स्था० ५१०।  
 दसंग- दशानामङ्गानां समाहारो दशाङ्गी। उत्त० १८७।  
 दशा-ङ्गानि-भोगोपकरणानि वक्ष्यमाणान्यस्येति  
 दशाङ्गः। उत्त० १८७।  
 दस- दशा - भागः। उत्त० १४४।  
 दसउरं- दशपुरं, प्रद्योतनमोचने नगरम्। उत्त० ९६।  
 दसकालिअं- दशवैकालिकम्। आव० ६१।  
 दसगुण- दशगुणः-एकगुणकालापेक्षया दशाभ्यस्तः।  
 स्था० ५२७।  
 दसण्णकूड- दशार्णकूटं-गजाग्रपदोत्पत्तौ यत्र महावीरस्य  
 समवसरणं जातम्। आव० ६६९। दशार्णकूटः-  
 पर्वतविशेषः। आव० ३५९।  
 दसण्णपुरं- दशार्णपुरं दशार्णभद्रराजधानी। आव० ३६९।  
 दशार्णपुरं यत् परावर्त्य एडकाक्षनाम नगरं जातम्।  
 आव० ६६९।  
 दसण्णभद्रो- दशार्णभद्रः दशार्णपुरनगरे राजा। आव०  
 ३५९। दशार्णभद्रः-गजाग्रपदोत्पत्तिविषये  
 दशार्णपुरगनराधिपतिः। आव० ६६९।  
 दसण्ण- दशार्णः, देशविशेषः। उत्त० ४४८।  
 दसण्णा- दशार्णाः जनपदविशेषः। प्रज्ञा० ५५।  
 दसतीण- औषधिविशेषः। प्रज्ञा० ३३।  
 दसदसमिया- दशदशमिका-भिक्षुप्रतिमाविशेषः। अन्त०  
 २९। दश दशमानि दिनानि यस्यां सा दशदशमिका।  
 सम० १००।  
 दसद्धवणं- दशार्द्धवर्णं-पञ्चवर्णम्। जम्बू० ९८। दशार्द्धव-  
 र्णकुसुमविशेषः। आव० २३१।  
 दसधणू- निरयावल्यां पञ्चमवर्गे एकादशममध्ययनम्।  
 निर० ३९। स्था० ५१८। ऐरवतक्षेत्रे  
 आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां षष्ठः कुलकरः। सम० १५३।  
 दसपलयं- दशपलमानम्। आव० १९४।  
 दसपुर- दशपुरम्। व्यव० ३१९। अ। नगरविसेसो। निशी०  
 १०९। अ। दशपुरं-आर्यरक्षितविहारस्थानम्। उत्त० १७३।  
 दशपुरं-पुरविशेषः। आव० २९२। सोमदेवब्राह्मण-  
 वासतव्यं नगरम्। आव० २९६। दशपुरं-

अबद्धिकनिहनवो-त्पत्तिस्थानम्। आव० ३१२।  
 दसमुद्रिताणंतकं- दशमुद्रिकानन्तकं-  
 हस्ताङ्गुलिसम्बन्धिमु-द्रिकादशकम्। जीवा० २५३।  
 दसमुद्रियाणंतयं- दशमुद्रिकानन्तकं-  
 हस्ताङ्गुलिमुद्रिकादश-शकम्। भग० ४७७।  
 दसरह- निरयावल्यां पञ्चमवर्गे सप्तममध्ययनम्।  
 निर० ३९। भरतक्षेत्रेऽतीतायामवसर्पिण्यां नवमः  
 कुलकरः। सम० १५०। दशरथः-नारायणवासुदेवपिता।  
 सम० १५२। आव० १६३। भरतक्षेत्रेऽतीतायामुत्सर्पिण्यां  
 नवमः कुलकरः। स्था० ५१८।  
 दसहा- दशविधाइच्छाकारादिलक्षणा सामाचारी। आव०  
 २५८।  
 दसा- दशा। आव० ६१। अनुभागेन युक्तो विभागो दशा।  
 निशी० २८। अ। दशा-वर्त्तिः। जम्बू० १०२। दशा-  
 अवस्थाश्चरितगतिसिद्धिगमनलक्षणा। नन्दी० २०८।  
 दसाउ- वर्षदशकप्रमाणः कालकृता अवस्थाः। स्था० ५१९।  
 दशाधिकाराभिधायकत्वाद्दशा इति। स्था० ५०६।  
 दसार- दशार्हाः-समुद्रविजयादयो दशवसुदेवान्ताः। सम०  
 १३२। दशाराः-वासुदेवाः। सम० १५६। दशारः-त्रिपृ-  
 ष्ठवंशः। आव० १६७। दशार्हाः-बलदेववासुदेवाः। वासु-  
 देवाः। जम्बू० १६६। वासुदेवः। ज्ञाता० २२०।  
 दसारकुलनंदणो- दशारकुलनन्दन। औघ० १७९।  
 दसारचक्क- दशार्हचक्रं-यदुसमुहः। उत्त० ४९०।  
 दसारवग्ग- दशारवर्गः-दशारसमुदायः हरिवंशराजानः।  
 दशवै० ३६।  
 दसारसीह- दशारसिंहः-अरिष्टनेमिपितृव्यपुत्रः।  
 प्रधानदर्शन-वतोऽपि चारित्रेण विनाऽवरगतिप्राप्तिः।  
 आव० ५३२। दशा-हंसिंहः-कृष्णः। उत्त० ६९।  
 दसारा- दसाराः-समयभाषया वासुदेवाः। स्था० ७६।  
 दशाराः-हरिवंशकुलोद्भवाः। सूत्र० २६९। दशार्हाः-समुद्र-  
 विजयादिकाः। अन्त० २। ज्ञाता० १००, २२०। दशार्हाः-  
 उत्त० ४९२।  
 दसुगाययणाणि- दस्यूनां-चौराणामायतनाति-स्थानानि।  
 आचा० ३७७।  
 दसुय- दस्युः-देशप्रत्यन्तवासी चौरः। उत्त० ३६६।  
 दसेज्ज- दशेत्। आव० ४०५।  
 दस्युः- अदत्तहारः। आचा० १२३।

दह- हृदः-नद्यादीनां निम्नतरः प्रदेशः। उपा० १०। हृदः-  
पद्महृदादि। प्रजा० ७२। हृदा। प्रजा० २६७। भग० ९२,  
२३७। सूत्र० ३०७। ज्ञाता० ३६।  
दहगालनं- हृदगलनं-हृदस्य मध्ये मत्स्यादिग्रहणार्थं  
भ्रमणं, जननिःसारणं वा। विपा० ८०।  
दहण- शरीराद्यवयवस्य वाताद्यपनयनार्थं दहनम्।  
आचा० ५०।  
दहनं- केवलिसमुद्घातध्यानाग्निना वेदनीयस्य  
भस्मसात्क-रणं, शेषस्य च  
दग्धरज्जुतुल्यत्वापादनम्। आचा० २९८।  
दहपती- हृदपतिः-नदप्रधानो महाहृदः। प्रश्न० ९६।  
दहपवहणं- हृदपवहणं हृदजलस्य प्रकृष्टं वहनम्। विपा०  
८०।  
दहमलनं- हृदमलनं हृदस्य मध्ये पौनःपुन्येन परिभ्रमणं,  
जले वा निःसारिते पङ्कमर्दनं थोहरादिप्रक्षेपेण  
हृदजलस्य विक्रि-याकरणम्। विपा० ८०।  
दहमह- हृदमहः-हृदसत्क उत्सवः। जीवा० २८१। आचा०  
३२८।  
दहमहणं- हृदमथनं-हृदजलस्य  
तरुशाखादिभिर्विलोडनम्। विपा० ८०।  
दहवहणं- हृदवहनं-स्वत एव हृदाज्जलनिर्गमः। विपा०  
८०।  
दहाति- द्रहाः-हृदः। स्था० ८६।  
दहावई- द्रहावती, कुण्डनाम। जम्बू० ३४६।  
दहावती- द्रहा-अगाधजलाशयाः सन्त्यस्यामिति द्रहावती  
महानदीनाम। जम्बू० ३४६।  
दहिकूरं- दधिकूरम्। आव० ४३४।  
दहिघणे- दधिघनः-दधिपिण्डः। प्रजा० ३६१।  
दहिफोल्लङ्- वल्लीविशेषः। प्रजा० ३२।  
दहिमुहं- दधिमुखाः-प्रत्येकमञ्जनकानां  
दिक्चतुष्टयव्यवस्थि-तपुष्करिणीमध्यवर्तिनः  
षोडशेति। स्था० ४८०। दधि-मुखः-वरुणस्य पुत्रस्थानीयो  
देवः। भग० १९९। दधिमु-खाः-दधिवदुज्ज्वलवर्णं मुखं-  
शिखरं रजतमयत्वाद् येषां ते। जम्बू० १६३।  
पर्वतविशेषः। ज्ञाता० १५५। दधिमुखाः-  
अञ्जनकचतुष्टयपार्श्ववर्तिपुष्करिणीषोडशमध्यभाग  
वर्तिनः पर्वताः। प्रश्न० ९६।

दहियं- दधि। आव० १९८।  
दहिवण्णो- धर्मनाथजिनस्य चैत्यवृक्षः। सम० १५२।  
दहिवन्न- दीपकुमारस्य चैत्यवृक्षः। स्था० ४८७। भग०  
८०३। दधिपर्ण-वृक्षविशेषः। प्रजा० ३२।  
दहिवासुया- दधिवासुका-वनस्पतिविशेषः। राज० ८०।  
दहिवाहणो- दधिवाहनः-चम्पानगर्या नृपतिः। उत्त०  
३००। दधिवाहनः-द्रव्यव्युत्सर्गं चम्पानरेशः  
करकण्डुपिता च। आव० ७१६।  
दाइति- दर्शयन्ति। बृह० १०४ आ।  
दाइतुच्चारई- उच्चारप्रश्रवणस्थानानि। ओघ० ७७।  
दाह- विकल्पार्थो निपातः। बृह० २४१ आ। अभिप्राय-  
दर्शनम्। निशी० १३८ अ।  
दाइआ- दर्शिता। आव० १५१। दायिका-गोत्रिकाः। जम्बू०  
१४२।  
दाइओ- दर्शितः। आव० ३९८।  
दाइगो- दायदः। आव० ४८७।  
दाइतो- दर्शितः। उत्त० ३०३।  
दाइय- दर्शितम्। आव० ६४, ७००। दायदाः-पुत्रादयः।  
ज्ञाता० ५१।  
दाइयविप्परद्धो- दायदधाटितः। आव० ५५७।  
दाउं- स्वहस्तेन दातुम्। व्यव० २२७ आ।  
दाए- दानम्। ज्ञाता० ३९।  
दाएइ- दर्शयति। आव० १६७।  
दाएज्जसु- दर्शयेः। उत्त० २१६।  
दाएति- दर्शयति। आव० ३४८।  
दाएह- दर्शयत। उत्त० १००।  
दाकलसं- कलशस्तु लघुतरः। भग० ६८४।  
दाकुंभग- दह कुम्भो महान्। भग० ६८४।  
दाक्षपानक- पानकभेदः। आचा० ३४६।  
दाडिमं- फलविशेषः। प्रजा० ३६५। भग० ८०३।  
दाढा- दंष्ट्रा-आसीः। आव० ५६६। दंष्ट्राः-आस्यः। आव०  
५६६। सक्थि। जम्बू० १६२।  
दाढि- दंष्ट्रा-दशनविशेषः। प्रश्न० ८।  
दाढिआलि- दाढिकालि-सदशवस्त्रपरिधानरूपा दृश्यमाना  
धौतपोतं वा। बृह० २२० अ।  
दाढिगाली- दंष्ट्रागाली, दुष्प्रतिलेखितदूष्यपञ्चके  
पञ्चमो भेदः। आव० ६५२। स्था० २३४।

दाढियाए- उत्तरौष्ठस्य। भग० ६८४।  
 दाढीयाली- धोयपुत्ती। निशी० ६१ अ।  
 दाढुडिअ- उद्धृतदंष्ट्रम्-उत्खातदंष्ट्रम्। दशवै० २७६।  
 दाणंतराइए- यदुदयवशात् सति विभवे समागते च  
 गुणवति पात्रे दत्तमस्मै महाफलमिति जानन्नपि दातुः  
 नोत्सहते तद्वा-नान्तरायम्। प्रज्ञा० ४७५।  
 दाणं- दानं-अशनादिप्रदानम्। आव० ६०४। दानं-लब्ध-  
 स्यान्नादेर्गर्लानादिभ्यो वितरणम्। प्रश्न० १२९। दानं-  
 स्वप-रानुग्रहार्थमर्थिने दीयत इति दानम्। सूत्र० १५०।  
 दानं-दानं श्राद्धकः। ओघ० ४७।  
 दाणकम्मे- दानकर्म-अङ्कनार्थं गिरिकरक्तसूत्रेण  
 रेखादानम्। जम्बू० २०९।  
 दाण्हा- दानार्थं-साधुवादनिमित्तं यो ददाति। दशवै०  
 १७३।  
 दाणमाणसंगहीता- दानमानसंगृहीता। आव० ६८८।  
 दाणमाणसंगहीया- दानमानसंगृहीता। आव० ३४९।  
 दाणरुई- दानरुची। आव० ११०।  
 दाणव- दानवः-भुवनपतयः। उत्त० ४३०।  
 दाणवयं- दानव्रतं-वितरणनियमः। प्रश्न० ३२।  
 दाणविप्पणासो- दानविप्रणाशः-दत्तापलापः। प्रश्न०  
 १२५।  
 दाणसङ्ग- दाणरुची। निशी० १९९ आ, २८२ अ।  
 दाणा- दाणसङ्ग। निशी० ८९ आ।  
 दाणामा- दानमयी। भग० १७४।  
 दाणिं- इदानीं-सम्प्रति। भग० १७६। इदानीम्। मरण०।  
 इदानीम्। उत्त० ३८७।  
 दाणिसिं- देशीयभाषयेदानीम्। उत्त० ३८७।  
 दाथालगं- उदकार्द्र-स्थालकम्। भग० ६८०।  
 दाथालय- उदकार्द्र स्थालकम्। भग० ६८४।  
 दानं- शुद्धिः। भग० ७६९। शिष्येभ्यो निसर्गः। आव० ६८।  
 दानव- भवनपतिदेवविशेषः। स्था० ४५९।  
 दानश्राद्ध- श्रावकविशेषः। उत्त० ६६७। आव० ८४६।  
 दाम- पुष्पदामं रत्नविचित्रम्, चतुर्दशस्वप्ने पञ्चमः  
 स्वप्नः। आव० १७८। ज्ञाता० २०।  
 दामओ- रज्जुः। आव० १८८।  
 दामकं- दामकं-रज्जुमयपादसंयमनम्। प्रश्न० ५६।  
 दामगंठी- दामग्रन्थिः-रज्जुग्रन्थिः। आव० ८२०।

दामङ्गो- कुञ्जरानीकाधिपतिविशेषः। स्था० २०३।  
 दामणि- दामनी-पशुबन्धनम्। सूर्य० १३०।  
 दामणिसंठिते- दामनिसंस्थितम्। सूर्य० १३०।  
 दामणी- दामनिः-पशुरज्जुसंस्थानम्। जम्बू० ५०१।  
 प्रश्न० ८४।  
 दामण्णगो- दामन्नकः-परलोकफलविषये  
 मणिकारश्रेष्ठिपुत्रस्य उदाहरणम्। आव० ८३३।  
 दामनी- द्वात्रिंशतलक्षणेषु लक्षमणम्। जीवा० २७६।  
 दामा- दामा-पाशकविशेषः। विपा० ५९।  
 दामिओ- दामितः। आव० ३९९।  
 दामिणि- दामिनी। प्रश्न० ७०। गवादीनां बन्धविशेषभूता  
 रज्जुः। भग० ७१२।  
 दाय- दायः-सामान्यदानम्। औप० ६। दानम्। विपा० ७७।  
 पर्वदिवसादौ दानम्। ज्ञाता० ८३। दायं-धनविभागम्।  
 जम्बू० १४२।  
 दायग- दायकं-दायकदोषदुष्टं, षष्ठ एषणादोषः। पिण्ड०  
 १४७। दाता-बालवृद्धाद्ययोग्यः। एषणादोषायाः षष्ठो  
 भेदः। आचा० ३४५।  
 दायगसुद्ध- दायकशुद्धं-यत्र दाता औदार्यादिगुणान्वितः।  
 विपा० ९२। यत्राशंसादिदोषरहितत्वात् दायकः शुद्धः।  
 भग० ६६१।  
 दायणा- दापना दर्शना दापना वा, प्ररूपणाविशेषः। आव०  
 ३८२।  
 दायणे- दर्शयति। ओघ० ५३।  
 दारं- अपत्यादिसमुदाओ। निशी० १४७ आ। द्वारम्।  
 जीवा० २६९। द्वारं-प्रासादादीनान्। जीवा० २५८। प्रश्न०  
 ८। द्वारं-प्रतोतिः। आव० १३६। ज्ञाता० ८१। द्वारं-  
 उपायः। प्रश्न० ११२। द्वारं-प्रवेशमुखम्। प्रश्न० १३६,  
 दशवै० १४। द्वारं-व्याख्यानमुखम्। उत्त० ७३। द्वारं-  
 प्राकारद्वा-रिकाः। औप० ३। द्वारम्। ओघ० २३। द्वारं-  
 खड्गिका। भग० २३८। द्वारं-ग्रामस्य मुखं,  
 ग्रामप्रवेशः। बृह० १ अ। द्वारं-विजयादि। प्रज्ञा० ७१।  
 द्वारं-प्रवेशमुखम्। दशवै० ४। द्वारं-शाखामयम्। दशवै०  
 १८४।  
 दारए- दारयति-स्फोटयति। ज्ञाता० ८१।  
 दारगरुवं- दारकरूपम्। आव० ३४३।  
 दारगसाला- लेखशाला। बृह० १०७ अ।

दारगोउर- गोपुरद्वाराणि। सम० १३८।  
 दारचेडाओ- द्वारपिण्डयो-द्वारशाखे। जम्बू० ४८।  
 दारपाए- द्वारपातः-रन्ध्रकरणम्। पिण्ड० ९४।  
 दारपिंडी- द्वारपिण्डी-द्वारशाखा। जीवा० ३५९।  
 दारवालो- द्वारपालः। आव० १७३।  
 दारसाहा- द्वारशाखा-द्वारपिण्डी। जीवा० ३५९।  
 दारा- अणुओगा। निशी० ७९ आ। द्वाराणीव द्वाराणि-  
 प्रवेशमुखानि, एकस्थानकाध्ययनपुरस्यार्थाधिगमोपाया  
 इत्यर्थः। स्था० ४। द्वाराणि-उपायाः। स्था० ३१६।  
 अर्थागमस्योपायः। सम० ११। द्वाराणि। अनुयो० १७१।  
 दाराइ- प्रवेशमुखानि। जम्बू० ५।  
 दारिद्र्यं- दरिद्रता। नन्दी० १५५।  
 दारिय- दारिका-डिक्करिका। आचा० ४१३। दारिका। आव०  
 ३७१।  
 दारुआ- दारुकं-काष्ठकम्। जम्बू० ३६।  
 दारुए- दारुकः। उत्त० ३७९। दारुकः-अन्तकृद्दशानां  
 तृतीयवर्गस्य द्वादशममध्ययनम्। अन्त० ३।  
 दारुकम्मगारो- दारुकर्मकरः-वर्धक्यादिः। दशवै० ३६०।  
 दारुग- दारुकं-काष्ठम्। उत्त० ४१३। दारुकः। उत्त०  
 ११८।  
 दारुगदंडे- दारुदण्डकम्। बृह० १७३ आ।  
 दारुण- दारुणं-अनिष्टम्। दशवै० २३२। रौद्रः। ज्ञाता०  
 ८०। असह्यम्। आचा० १९४। दारुणसीलं-दारुणं  
 कक्कसं वा। दशवै० १२३।  
 दारुणपरिणामो- दारुणपरिणामः-पापानां कर्मणां चौर्यादि  
 कृतानामशुभविपाकः। दशवै० ११३।  
 दारुणा- दारयन्ति जनमनांसीति दारुणाः-  
 विलपिताः-क्रन्दितादयः। उत्त० ३०८। दारयन्ति  
 मन्दसत्त्वानां संयमविषयां धृतिमिति दारुणाः। उत्त०  
 ११२।  
 दारुते- दारुकः-वासुदेवस्य पुत्रः, अरिष्ठनेमिनाथस्य  
 शिष्यः। स्था० ४५७।  
 दारुदंडयं- आग्रभागे उर्णिकादशायुतो दण्डः,  
 दण्डस्याग्रभागे उर्णिकादशिका बध्यन्ते तत्  
 दारुदण्डकम्। बृह० १०३।  
 दारुपव्वय- दारुनिर्मापित इव पर्वतकः दारुपर्वतकः।  
 जीवा० २००।

दारुपव्वयगा- दारुनिर्मापिता इव पर्वतकः। जम्बू० ४४।  
 दारुमडे- भरतक्षेत्रे आगामिन्यां चतुर्विंशतिकायां  
 द्वाविंशति-तमतीर्थकरस्य पूर्वभवनाम। सम० १५४।  
 दारुसंकम- दारुसङ्क्रमः। आचा० २०२।  
 दालः- सूपः। प्रश्न० १४१।  
 दालाणि- अवट्टिगाणि। दशवै० १११।  
 दालित्ता- विदार्य। प्रज्ञा० ४८। दलयित्वा-विदार्य। जीवा०  
 ४०।  
 दालिम- दाडिमं-फलविशेषः। प्रज्ञा० ३२८। दाडिमं-वृक्ष-  
 विशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
 दालिमपाणगं- पानकभेदः। आचा० ३४७।  
 दालियंबं- दालिकाम्लं इड्डिकादि। प्रश्न० १६३।  
 दालिय- विदार्य। आचा० ३२९।  
 दाली- राजिः। ओघ० १२६।  
 दावए- दद्यात् दापयेद्वा। भग० ३७५।  
 दावणं- दापयति। ओघ० ४३।  
 दावदए- षष्ठाङ्गे एकादश ज्ञातम्। ज्ञातम्। उत्त० ६१४।  
 दावदविओ- द्रावद्रविकाः-द्रुतद्रुतगामी। बृह० १२४ आ।  
 दावद्वे- षष्ठाङ्गे एकादशं ज्ञातम्। सम० ३६। आव०  
 ६५३। ज्ञाता० १०। समुद्रतटे वृक्षविशेषः। ज्ञाता० १०।  
 दावर- द्वापरः-समयपरिभाषया द्वितीयकलिः। बृह०  
 १८० आ। द्वापरं-द्विकम्। सूत्र० ६७।  
 दावारंग- उदकवारकम्। भग० ६८०।  
 दावरजुम्म- द्वाभ्यामादित एव  
 कृतयुग्माद्वोपरिवर्तिभ्यां यदपरं युग्मं  
 कृतयुग्मादन्यत्तन्निपातनविधे द्वापरयुग्मम्। भग०  
 ७४४। द्विपर्यवसितो द्वापरयुग्मः। स्था० २३७।  
 द्वापरयुग्मे द्वाषष्टिः। सूर्य० १६७।  
 दावरजुम्मकडजुम्मे- द्वापरकृतयुग्मेऽष्टादयः। भग०  
 ९६४।  
 दावरजुम्मकलियोगे- द्वापरकल्योजे नवादयः। भग०  
 ९६४।  
 दावरजुम्मतेओए- द्वापरत्रयोजराशावेकादशादयः। भग०  
 ९६४।  
 दावरजुम्मदावरजुम्मे- द्वापरद्वापरे दशादयः। भग०  
 ९६४।  
 दास- दासः-आजन्मावधिकिङ्करः। व्यव० ३३७ आ।

अङ्कितः। व्यव० २७८। दासः। उत्त० २२५। दास्यते-  
 दीयतेऽस्मै इति दासः-पोष्यवर्गरूपः। उत्त० १८८।  
 दासः-आमरणं क्रयक्रीतः। जीवा० २८०। दासाः-  
 गृहजातादयः। उत्त० २६५। चेटकः। प्रश्न० ३८।  
 दासचेड- दासचेटः। उत्त० १४८। आव० ३४३।  
 दासचेडए- दासस्य भृतकविशेषस्य चेटः-कुमारकः दास-  
 चेटः। ज्ञाता० ८०।  
 दासा- दासीपुत्रादयः। स्था० ११४। गृहदासीपुत्रः। ज्ञाता०  
 ८१। गृहजातकाः। बृह० ६० आ।  
 दासि- गुच्छाविशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
 दासी- चेटिका। प्रश्न० ३८। घटयोषित्। सूत्र० १०९।  
 दास्यः-अङ्कपतिताः। उत्त० २६२।  
 दासेइ- दासः-आमरणं क्रयक्रीतः, गृहदासी पुत्रो वा।  
 जम्बू० १२२।  
 दाह- कषायाः। आव० ५९। दाहः। भग० १९७।  
 दाहज्जरो- दाहज्वरः। आव० ९८।  
 दाहवक्कंती- दाहव्युत्क्रान्तिः-दाहोत्पत्तिः। ज्ञाता० २००।  
 दाहा- प्रहरणविशेषः, दीर्घवंशाग्रन्यस्तदात्ररूपः। विपा०  
 ५९।  
 दाहिण- दक्षिणादिग्भावी दक्षिणः। सूर्य० १६।  
 दाहिणइढं- दक्षिणार्द्ध-दक्षिणभागः। जम्बू० ४८२।  
 दाहिणइढभरहकूडे- दक्षिणार्द्धभरतनाम्ना देवस्य  
 निवासभूतं कूटं, दक्षिणार्द्धभरतकूटम्। जम्बू० ७७।  
 दाहिणतुंगारो- दक्षिणतुङ्गारः-दक्षिणपूर्ववातभेदः। आव०  
 ३८७।  
 दाहिणपच्चत्थिमेल्लं- दक्षिणपश्चिमे। सूर्य० २१।  
 दाहिणपुरत्थि- दक्षिणपौरस्त्यः-दक्षिणपूर्वः,  
 आग्नेयकोण इत्यर्थः। सूर्य० २२।  
 दाहिणभुयंते- दक्षिणभुजान्तः-दक्षिणपार्श्वः। सूर्य० २८७।  
 दाहिणवाए- यो दक्षिणदिशः समागच्छति वातः स  
 दक्षिण-वातः। प्रज्ञा० ३०। दक्षिणवातः-यो दक्षिणवाया  
 दिशः समागच्छति वातः सः। जीवा० २९।  
 दाहिणवियावो- दक्षिणवीजायः। आव० ३८७।  
 दाहिणवेयालो- दक्षिणवैतालो-दक्षिणसमुद्रतीरम्। प्रज्ञा०  
 ३२७।  
 दाहिणहुत्तो- दक्षिणमुखः। आव० २१५।  
 दाहिणा- दक्षिणा वाचाला सन्निवेशः। आव० १९५।

मथुरापु-रीद्वयमध्ये एका। आव० ४५६।  
 दिइय- दृतिः। आव० ६२१।  
 दिक्करिगा- दुहिता। आव० ४००।  
 दिक्खंति- पश्यन्ति। निशी० २०५ अ।  
 दिक्खिओ- त्ति वृत्तं भवति। निशी० ६७ आ।  
 दिगम्बर- मतविशेषः। प्रज्ञा० ६०।  
 दिगाई- दिशामादिः प्रभवो दिगादिः। सूर्य० ७८।  
 दिगाचार्यः- आचार्यस्य द्वितीयो भेदः। स्था० २९९।  
 दिगिच्छा- बुभक्षा(देशी ०)। उत्त० ८२।  
 दिगिच्छा- बुभक्षा। भग० ३८९। बृह० ७३ आ। बृह० २०१  
 आ। आचा० ३१४। क्षुधा। बृह० १३१ आ।  
 दिगिच्छापरीसहे- दिगिच्छा-बुभक्षा सैव  
 मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषह्यते इति परिषहो  
 दिगिच्छापरीषहः। सम० ४०।  
 दिच्छसि- द्रक्ष्यसि। उत्त० ४९५।  
 दिज्जह- दद्यात्। दशवै० १०३। दद्याः। दशवै० ५७।  
 दिङ्गत- दृष्टमर्थमन्तं नयतीति दृष्टान्तः,  
 अतीन्द्रियप्रमाणादृष्टं संवेदननिष्ठां नयतीत्यर्थः।  
 दशवै० ३४। दृष्टः-अन्तः परि-च्छेदो  
 विवक्षितसाध्यसाधनयोः सम्बन्धस्याविनाभावरूपस्य  
 प्रमाणेन यत्र सः दृष्टान्तः। प्रज्ञा० ५३२। दृष्टान्तः-  
 उदाहरणम्। दशवै० ३३।  
 दिङ्गतपरिणामगो- दृष्टान्तेन विवक्षितमर्थं  
 परिणामयत्यात्मबुद्धावारोपयतीति  
 दृष्टान्तपरिणामकः। व्यव० ४५० अ।  
 दिङ्गतिओ- दार्ष्टान्तिकः-दृष्टान्तपरिच्छेद्यः। आव०  
 ८६२।  
 दिङ्गतिओ- दार्ष्टान्तिकः-प्रथमोऽभिनयविधिः। जीवा०  
 २४७। दृष्टान्तिकं-अभिनयविशेषः। जम्बू० ४१२।  
 दिङ्ग- दृष्टः-प्रतिपादितः। बृह० १५९ आ। दर्शितः। उत्त०  
 ३५६। दृष्टः-उपलब्धः। ओघ० ५४। दृष्टं-साक्षात् स्वयमु-  
 पलब्धः। औत्पात्तिक्यादिबुद्धिः। भग० १००। दृष्टः-  
 वैद्य-वद्वष्टक्रियः। क्रियाकुशलः। ओघ० ४२।  
 उपलभ्यस्वरूपः। ज्ञाता० २०५।  
 दिङ्गपाठी- दृष्टः-उपलब्धश्चरकसुश्रुतादि येन स  
 दृष्टपाठी। ओघ० ४२। आधीतवेज्जक इति। निशी०  
 २११ अ।

**दिङ्मदिङ्**— दृष्टादृष्ट, यत् तमसि व्यवहितो वा न वन्दते, कृतिकर्मणि त्रयोविंशतितमो दोषः। *आव० ५४४।*

**दिङ्मलाभिते**— दृष्टस्यैव भक्तादेर्लामस्तेन चरतीति तथैव दृष्टलाभिकः। *स्था० २८९।*

**दिङ्मलाभिय**— यो दृश्यमानस्थानादानीतं गृह्णाति सः दृष्टिला-भिकः। *प्रश्न० १०६।*

**दिङ्मसारा**— सारः-विवक्षितः परमार्थः, उपयोगेन दृष्टः सारो यथा सः दृष्टसारः। *नन्दी० १६४।*

**दिङ्मसाहम्मव**— दृष्टेन पूर्वोपलब्धेनार्थेन सह साधर्म्यं दृष्टसाधर्म्यं तद्गमकत्वेन विद्यते यत्र तद् दृष्टसाधर्म्यवत्। *अनुयो० २१६।*

**दिङ्मा**— दृष्टा-साक्षाद्धर्मसाधकत्वेनोपलब्धा। *दशवै० १९६।*

**दृष्टा**— विहितत्वेनोपलब्धा। *उत्त० ५३२।*

**दिङ्माभङ्ग**— दृष्टाभाषितः। *भग० १६७।*

**दिङ्मि**— दर्शनवान् दर्शनी दर्शनमस्यातीति। *आव० ५३०।*

**दृष्टिः**— स्वविषये लोचनप्रसारणलक्षणा। *आव० ५३०।*

**विलोकितम्**। *जाता० १६८। मतम्। जाता० ११०।*

**दिङ्मिपडिघाय**— दृष्टिप्रतिघातः-दर्शनाभावः। *भग० १७५।*

**दिङ्मिपण्व**— दृष्टिप्रश्नवं ईषदश्रुविमोचनम्। *पिण्ड० १४०।*

**दिङ्मिपरिचितो**— जो एसणा विधिं जाणति सो दिङ्मि परिचितो भणति, अहवा सावगो गहियाणुव्वओ, अवती वा सम्मदिङ्मि दिङ्मि परिचितो भणति। *निशी० ११५ आ।*

**दिङ्मिप्पहाणे**— दृष्टिप्रधानः-युगप्रधानः। *व्यव० ३३७ आ।*

**दिङ्मिया**— दृष्टिः-दर्शनं श्रद्धानं येषां ते दृष्टिकाः, रुचितजिनव-चनाः। *स्था० ३०।* दृष्टिजा-विंशतिक्रियामध्ये षष्ठी। *आव० ६१२।*

**अश्रवादिचित्रकर्मादिदर्शनार्थं गमनरूपा**। *स्था० ३१७।*

**दृष्टेर्जाता दृष्टिजा दृष्टं-दर्शनं वस्तु वा निमित्ततया यस्यामस्ति सा दृष्टिका-दर्शनार्थं वा गतिक्रिया, दर्शनाद् वा यत्कर्मादेति सा दृष्टिजा दृष्टिका वा।** *स्था० ४२।*

**दिङ्मिवाइयं**— दृष्टिवादिकं-पूर्वविशेषः। *आव० ६१८।*

**दिङ्मिवाए**— दृष्टयो-दर्शनानि-नयाः पतन्ति-अवतरन्ति यस्मिन्नसौ दृष्टिपातः-द्वादशमङ्गम्। *स्था० १९९।*

**दृष्टयो-दर्शनानि वदनं वादो दृष्टीनां वादो दृष्टिवादः, दृष्टीनां वा पातो यत्रासौ दृष्टिपातः सर्वनयदृष्टय**

**एवेहाख्यायन्तः।** *सम० १२९।* श्रोत्रपेक्षया सूक्ष्मजीवादिभावकथनं-अन्ये त्वभि-दधति। आचारादयो ग्रन्था एव परिगृह्यन्ते आचाराद्यभि-धानम्। *दशवै० ११०।*

**दिङ्मिवातअकखेवणी**— दृष्टिवादः-श्रोत्रपेक्षया नयानुसारेण सूक्ष्मजीवादिभावकथम्, आचारादयो ग्रन्था एव परिगृह्यन्ते आचाराद्यभिधानादिति। *स्था० २१०।*

**दिङ्मिवातेति**— दृष्टीयो-दर्शनानि वदनं-वादो दृष्टीनां वादो दृष्टिवादः दृष्टीनां वा पातो यस्मिन्नसौ दृष्टिपातः। *स्था० ४९१।*

**दिङ्मिवादीयं**— दृष्टिवादिकं-ग्रन्थविशेषः। *आव० ६१७।*

**दिङ्मिविपरिआसिआदंडे**— दृष्टेः-बुद्धेर्विपर्यासिका विपर्यसिता वा दृष्टिविपर्यासिका दृष्टिविपर्यासिता वा मतिभ्रम इत्यर्थः तया दण्डो प्राणिवधो दृष्टिविपर्यासिकादण्डो दृष्टिविपर्या-सितादण्डो वा। *सम० २५।*

**दिङ्मिविसो**— दृष्टिविषः। *आव० १९५।*

**दिङ्मिसंपन्नया**— दृष्टिसम्पन्नता-सम्यग्दृष्टिता। *स्था० १२०, ५२४।*

**दिङ्मि**— दृष्टिः चक्षुर्द्वारोत्पन्नदर्शनरूपा। *अनुयो० १८२।*

**दृष्टिः** दर्शनं, रुचिः तत्त्वानि प्रति। *स्था० ३०।* दृष्टिः-दर्शनं स्वतत्त्वमिति। *राज० १३३।* दृष्टिः-सम्यग्दर्शनात्मका हेतु-भूताबुद्धिः। *उत्त० ४४७।* दृष्टिः-सम्यग्दर्शनरूपा। *दशवै० १०२।* दृष्टिः-बुद्धिः। *सम० २५।*

**भग० ४७१।** *उत्त० १५१।* दृष्टिः-अन्तःकरणप्रवृत्तिः। *सूत्र० ३१८।* दृष्टिः-जिनप्रणीतवस्तुतत्त्वप्रतिपत्तिः। *जीवा० १८।* *प्रजा० ३८७।* दृष्टिविपर्यासक्रिया। क्रियायाः पञ्चमो भेदः। *आव० ६४८।*

**दिङ्मिएसंपाओ**— दृष्टेः पुनःसंपातः-स्त्रीणां कुचाद्यवलोकनम्, संप्राप्तकामस्य प्रथमो भेदः। *दशवै० १९४।*

**दिङ्मिवाय**— दृष्टिवादः। *आव० ३०१।*

**दिङ्मिविपरिआसि**— दृष्टिविपर्यासदण्डः-यो मित्रस्याप्यमित्रो-ऽयमितिबुद्ध्यवधः। *स्था० ३१६।*

**दिङ्मिविपरियासो**— स्त्रीदर्शनानुरागतस्तदावलोकनं दृष्टिविपर्यासः। *आव० ५७५।*

**दिङ्मिविस**— दृष्टिविषः-नेत्रविषः, उरःपरिसर्पविशेषः।

जीवा० ३९।

दिङ्गिविसलद्धिओ- दृष्टिविषयलब्धिमान्। आव० २८९।

दिङ्गिविसा- दृष्टौ विषं येषां ते दृष्टिविषाः। जीवा० ३९।  
प्रज्ञा० ४६।

दिङ्गिसूल- दृष्टिशूलः-नेत्रशूलम्। ज्ञाता० १८३।

दिङ्गिसेवा- दृष्टिसेवा-भावसारं तदृष्टेर्दृष्टिमेलनम्,  
संप्राप्तका-मस्य द्वितीयो भेदः। दशवै० १९४।

दिणयर- चतुर्दशस्वप्ने सप्तमम्। ज्ञाता० २०।

दिणारो- दीनारः-सुवर्णनिष्कविशेषः। आव० ६७१।

दिण्ण- दत्तः-तापसविशेषः। आव० २८७। पार्श्वजिनस्य  
प्रथमः शिष्यः। सम० १५२। दत्तं-वितीर्णं

भृतिभक्तलक्षणं द्रव्यभोजनस्वरूपम्। ज्ञाता० १५३।

श्रेयांसतीर्थकरस्य पूर्व-भवनाम। सम० १५१। दत्तः-  
नमिजिनप्रथमभिक्षादाता। सम० १५१। आव० १४७।

दिण्णवियारे- दत्तविचारं-यत्र कार्पटिकादिर्न कोऽपि  
वार्यते तत्। व्यव० ३०१अ।

दिण्णय- चन्द्रप्रभजिनस्य प्रथमः शिष्यः। सम० १५२।

दित्तं- दीप्तम्। जीवा० ३८६। दीप्तः-तेजस्वी दृप्तो वा  
दर्प-वान्। भग० ४५९। रक्तम्। ज्ञाता० ८०। दृप्तः-  
उन्मत्तः। पिण्ड० १६३। दीप्तः, दृप्तःमारकः। ओघ०  
१२०। दीप्तः-तेजस्वी। सूत्र० ४०७। दृप्ताः-मदो-  
न्मत्ततया दर्पाध्माताः। जीवा० १८८। दीप्तः-दीप्यते  
स्म भास्करः। जीवा० ३४१। दीप्तः-प्रसिद्धः दृप्तो वा  
दर्पितो वा। भग० १३४।

दित्तचित्ते- दृप्तचित्तः-पुत्रजन्मादिना दर्पवच्चित्तः  
उन्मत्त एवेति। स्था० ३०५। दृप्तचित्तो हर्षातिरेकात्।  
स्था० ३१५।

दित्तचित्ता- लाभादिमदेन परवशीभूतहृदया।  
हर्षातिरेकेणा-पहतचित्ता सा दीप्तचित्ता। बृह० २१०  
अ। बृह० २३६अ।

दित्ततवो- दीप्तं जाज्वल्यमानदहन इव  
कर्मवनमहनदहनस-मर्थतया ज्वलितं तपो-  
धर्मध्यानादि यस्य सो दीप्ततपः। सूर्य० ४।

दित्तरुवे- दीप्तं रूपमस्येति दीप्तरूपः। उत्त० ३५८।

दित्तवयणं- दीप्तवचनं-कुपितवचनम्। प्रश्न० १६०।

दिता- दीप्ता-रोषणा। आव० ७१९। दीप्ता-उज्ज्वला  
ज्वालाकराला वा। उत्त० ४५७।

दिताङ्- दीप्तानि-प्रसिद्धानि दृप्तानि वा-दर्पवन्ति।  
स्था० ४२१।

दिती- दीप्तिः-दीपनम्। ज्ञाता० १७०।

दिन- अहोरात्रवाची। जम्बू० १५०।

दिनारो- दीनारः-सुवर्णमुद्रा। आव० ४२२।

दिन्न- दत्तः-न्यस्तः ज्ञाता० ४०। उत्त० ३२१।

दिप्पणिज्जे- दीपनीयं-अग्निवृद्धिकरं, दीपयति  
जठराग्निमिति दीपनीयम्। जम्बू० ११९।

दियग्गं- दिवाग्रं दिवपरिमाणम्। सूर्य० ११।

दियह- दिवसः। आव० २९२।

दिया- द्विजः-पक्षी। आचा० २४८। द्विजाः-  
संस्कारापेक्षया द्वितीयजन्मानः उत्त० ५२३।

दियापोए- द्विजः-पक्षी तस्य पोतः-शिशुः द्विजपोतः।  
आचा० २४८।

दिरिकयपयारो- जं दिक्खियेण आयरियव्वन्ति। दशवै०  
३२।

दिलि- ग्राहभेदः। सम० १३५।

दिलिवेढय- दिलिवेष्टः-ग्राहभेदः। प्रश्न० ७।

दिली- ग्राहविशेषः। प्रज्ञा० ४४। जीवा० ३६।

दिवड्ढं- द्वे च अधिकमर्थं तस्मिन् तद् अध्यर्थं  
द्व्यर्थम्। आव० ३९।

दिवड्ढखेत्तं- सार्द्धक्षेत्रम्। आव० ६३४। पुत्तलकद्वयं  
उत्तरात्रयं पुनर्वसुरोहिणीविशाखा इति  
षट्पञ्चचत्वारिंशत्मुहूर्तानि नक्ष-त्राणि।  
पञ्चचत्वारिंशन्मुहूर्तभोग्यम्। बृह० १४८अ।

दिवड्ढखेत्ता- द्वितीयमपार्द्धं यत्र तत् द्व्यपार्द्धं  
सार्द्धमित्यर्थः क्षेत्रं येषां तानि। स्था० ३६७।

दिवस- दिवसः-चतुष्प्रहरात्मकः यद्वा  
आकाशखण्डमादित्येन स्वभाभिव्याप्तं तत् दिवसः।  
आव० २५७। अहोरात्रं सूर्य-प्रकाशवतः कालविशेषः।  
जम्बू० ४९१।

दिवसखेत्तं- दिसक्षेत्रम्। सूर्य० १२।

दिवसखेत्तस्स- दिवसलक्षणस्य क्षेत्रस्य  
दिवसस्यैवेत्यर्थः। सम० ८६।

दिवसचरिमं- दिवसचरमम्। आव० ८५३।

दिवसतिही- तिथेर्यः पूर्वार्द्धभागः स दिवसतिथिः। सूर्य०  
१४९।

दिवसदेवसिअं- दिवसदैवसिकम्। आव० ५२।  
 दिवसदेवसिया- दिवसदैवसिको। आव० ४१६।  
 दिवसभयत- प्रतिदिवसं नियतमूल्येन कर्मकरणार्थं यो  
 गृह्यते स दिवसभृतकः। स्था० २०३।  
 दिवा- दिवसः। भग० २४७।  
 दिवागरे- दिवाकरः। सूर्यः। उत्त० ३५१।  
 दिविच्चिगा- द्वैप्या-द्वीपसम्बन्धिनः। भग० २१२।  
 दिविङ्ग- द्विपृष्ठः-द्वितीयो वासुदेवः। आव० १५९।  
 दिविय- द्वीपिनं-चित्रकम्। आचा० ३३८।  
 दिव्व- द्यौः स्वर्गः तद्वासी देवोऽप्युपचाराद् द्यौस्तत्र  
 भवो दिव्यो वैमानिकसम्बन्धी। स्था० २७४। दिव्यः-  
 देवभवः। भग० ६७३। दिवि भवः दिव्यः अतिप्रधानः  
 इत्यर्थः। सूर्य० २६७। दिव्यः-स्वर्गसम्बन्धी प्रधान  
 इत्यर्थः। स्था० ४२१। दिव्यम्। आव० १८८। दिवि भवं  
 दिव्यम्, प्रधानं च। जीवा० १६२। ज्ञाता० १३१। दिव्यं-  
 व्यन्तराद्यद्दृष्टासादिविषयम्। आव० ६६०। देवीनामिदं  
 दैवं, अप्सरोऽमरसम्बन्धि। दशवै० १४८।  
 दिव्वचूर्ण- दिव्यचूर्णम्। आव० २७७।  
 दिव्वतुडियं- दिव्यत्रुटितं-दिव्यतूर्यम्। जीवा० २४५।  
 दिव्वरणपज्जत्तो- दिव्यरत्नपर्याप्तः। आव० ४१३।  
 दिव्वा- दिव्वा स्वर्गसम्भवा प्रधाना वा। स्था० १४४।  
 दिव्वा-प्रधाना। भग० १६७। देवगतिः। ज्ञाता० ३६।  
 दिव्वाइ- दिव्वानि। भग० ६६२। अतिप्रधानाः। जम्बू० ६३।  
 दिव्वागा- मुकुलीअहिभेदविशेषः। प्रज्ञा० ४६।  
 दिव्वाणुभाव- देवानुभावः-भाग्यमहिमाऽथवा  
 दिव्येनदेवसम्बन्धनाऽनुभावः-  
 अचिन्त्यवैक्रियादिकरणमहिमा। जम्बू० २०२।  
 दिशं- आचार्यलक्षणम्। व्यव० २०४आ।  
 दिसंतु- प्रयच्छन्तु। आव० ४१०।  
 दिस- दिशेति व्यपदेशः प्रव्रजनकाले उपस्थानकाले वा य  
 आचार्य उपाध्यायो वा व्यपदिश्यते सा तस्य दिशा  
 इत्यर्थः। निशी० २९०आ। भगवत्या दशमशतके प्रथम  
 उद्देशकः। भग० ४९२।  
 दिसमूढो- विवरीतदिसा गेणहति। निशी० ४१आ।  
 दिसा- दिसादाहकरणं-दिग्दाहकरणम्। आव० ७३५।  
 दिशतीति दिक्, अतिसृजति व्यपदिशति द्रव्यं द्रव्यभागं  
 वा। आचा० १३।

दिसाकुमारा- दिक्कुमाराः-  
 वैश्रमणस्याज्ञोपपातवचननिर्देश-वर्तिनो देवाः। भग०  
 १९९। भवनपतिभेदविशेषः। प्रज्ञा० ६९। प्रज्ञा० ६९।  
 दिसाकुमारीओ- दिक्कुमार्यः-  
 वैश्रमणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्तिन्यो देव्यः। भग०  
 १९९।  
 दिसाचक्कवाल- एकत्र पारणके पूर्वस्यां दिशि यानि  
 फलादीनि तान्याहृत्य भुङ्क्ते, द्वितीये तु  
 दक्षिणस्यामित्येवं दिक्चक्र-वालेन तत्र तपःकर्मणि  
 पारणककरणं तत्तपःकर्म दिक्चक्र-वालम्। निर० २६।  
 एकत्रपारणके पूर्वस्यां दिशि यानि फलादीनि तान्याहृत्य  
 भुङ्क्ते द्वितीये तु दक्षिणस्यामित्येवं दिक्चक्रवालेन  
 यत्र तपःकर्मणि पारणककरणं तत्तपःकर्म  
 दिक्चक्रवालेन। भग० ५२०।  
 दिसाचरा- दिशं-मेरां चरन्ति-यान्ति मन्यन्ते भगवतो  
 वयं शिष्या इति दिक्चराः देशाटा वा। भग० ६५९।  
 दिसाजत्ता- दिग्ग्यात्रा। आव० ५५५। दिग्ग्यात्रा-व्यवहारः।  
 आव० ६८८, ७०५।  
 दिसाणुवाए- दिशामनुपातो-दिगनुपातः दिगनुसरणं  
 दिशोऽधिकृत्य वा। प्रज्ञा० ११४।  
 दिसादाहा- दिग्दाहाः-अन्यतरस्यां दिशि  
 छिन्नमूलज्वलन-ज्वालाकरालिताम्बरप्रतिभासरूपः।  
 अनुयो० १२१। जीवा० २८३। दिशो दिशि वा दाहो  
 दिग्दाहः।  
 दिसादीअ- दिशामाहिः-प्रभवो दिगादिः, तथाहि  
 रुचकादिशां विदिशां च प्रभवो रुचकश्चाष्टप्रदेशात्मको  
 मेरुमध्यवर्ती ततो मेरुरपि दिगादिरित्युच्यते, मेरोः  
 पञ्चदशमनाम। जम्बू० ३७५।  
 दिसापालो- दिक्पालः। आव० ४००।  
 दिसापेक्खिणो- उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फलपुष्पादि  
 समुच्चिन्वन्ति। औप० ९०।  
 दिसापेक्खिणो- उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फलपुष्पादि समु-  
 पचिन्वन्ति। भग० ५१९। उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फलपु-  
 ष्पादि समुच्चिन्वन्ति। निर० २५।  
 दिसापेक्खितावसो- दिक्प्रोक्षिततापसः। आव० ३५६।  
 दिसाबंध- दिग्बन्धः-पदे स्थाप्यमानः। व्यव० २१२आ।  
 निशी० २६५आ।

**दिसायत्ति**— दिग्यात्रा-देशान्तरगमनं प्रयोजनं येषां  
तानि दिग्यात्रिकानि। उपा० ३।

**दिसायरिओ**— दिशाचार्यः-आचार्यविशेषः। दशवै० ३१।

**दिसावाणिज्जं**— दिशावाणिज्यम्। उत्त० २१०।

**दिसाविचारिणो**— दिशासु विशेषेण-मेरुप्रादक्षिण्यनित्यचा-  
रितालक्षणेन चरन्ति-परिभ्रमन्तीत्येवंशीलाः विचारिणः  
उत्त० ७०२।

**दिसासोत्थिअ**— दिक्स्वस्तिकः-दक्षिणावर्त्तस्वस्तिकः।  
औप० १९।

**दिसासोवत्थिअ**— दिक्सौवस्तिको-दिक्प्रोक्षकः-दिक्प्रधानः  
स्वस्तिको, दक्षिणावर्त्तः स्वस्तिक इत्यन्ये। जम्बू०  
११२। दिक्प्रधानः स्वस्तिको दिक्स्वस्तिको  
दक्षिणावर्त्तः प्रश्न० ८१। दिक्सौवस्तिकः-दिक्प्रोक्षको  
दक्षिणावर्त्तः। स्वस्तिकः-जीवा० २७२।

**दिसासोवत्थियं**— आरणकल्पे देवविमानविशेषः। सम्०  
३८।

**दिसासोवत्थिया**— दिक्प्रधानाः स्वस्तिकाः। जम्बू० ४५।

**दिसासोवत्थियासनं**— यस्याधोभागे दिक्सौवस्तिका  
आलि-खिताः सन्ति तद् दिक्सौवस्तिकासनम्। जीवा०  
२००।

**दिसासोवत्थियासणाङ्गं**— येषामधोभागे  
दिक्सौवस्तिकादिक्प्रधानाः स्वस्तिकाः आलिखिताः  
सन्ति। जम्बू० ५६।

**दिसाहत्थिकूडा**— दिक्षु ऐसान्यादिविदिक्प्रभृतिषु  
हस्त्याकाराणि कूटानि दिग्हस्तिकूटानि। जम्बू० ३६०।  
शीताशातोदयो-रुभयकूलवर्त्तीनि पूर्वादिषु दिक्षु  
हस्त्याकाराणि कूटानि दिशाहस्तिकूटानि। स्था० ४३९।

**दिसिदाधे**— एकतरदिग्विभागे महानगरप्रदीपनकमिव य  
उद्योतो भूमावप्रतिष्ठितो गगनतलवर्त्ती स दिग्दाहः।  
स्था० ४७९।

**दिसिदाह**— अन्यतमदिगन्तरविभागे उपरि  
प्रकाशोऽधस्ता-दन्धकार ईदृक् छिन्नभूलो दिग्दाहः।  
आव० ७३५। दिग्दाहः-अन्यतमस्यां दिशि  
अधोऽन्धकाराः उपरि च प्रकाशात्माका  
दह्यमानमहानगर प्रकाशलल्याः। भग० १९६। दिशि  
पूर्वादिकायां छिन्नमुलो दाहः प्रज्वलनदिग्दाहः। व्यव०  
२४१ आ।

**दिसिपडिवज्जावणं**— दिक्प्रतिपादनं

अचित्तसंयतपारिष्ठापनि-कीविधि प्रतिदिक्प्रदर्शनम्।  
आव० ६३९।

**दिसिविभागो**— दिग्विभागः-अचित्तसंयतपारिष्ठापनिकीं  
प्रति दिक्प्रदर्शनं दिक्प्रतिपादनम्। आव० ६३९।

**दिसिभाए**— दिशां भागः दिग्विभागो वा भागो  
गगनमण्डलस्य दिग्भागः। भग० ६।

**दिसोदिसं**— दिशाश्च विदिसाश्च दिसोदिसं। निशी० २०४  
आ। एकस्या दिशः सकाशादन्यां दिशं दिशोदिशम्।  
प्रश्न० १९। दिशोदिशं-सर्वास्वप्येकेन्द्रियादिषु भावदिक्षु।  
आचा० ४३०।

**दिसोदिसि**— दिशः सकाशादन्यस्यां दिशि अभिमतदिक्  
त्या-गाद्विगन्तराभिमुखेनेत्यर्थः दिशोदिशः, अथवा  
दिगेवोपदिग् नाशनाभिप्रायेण यत्र प्रतिषेधने  
तद्विगपदिक्। भग० ३१९।

**दिस्स**— दृष्ट्वा-अवलोक्य। उत्त० ४९०।

**दीण**— दीनः-द्रव्यदैन्यमङ्गीकृत्य म्लानवदनः। दशवै०  
१८६। दीन-दीनः-शृगालत्वविहारी। आचा० २५३।

**दीणाजाती**— दीनं-दैन्यवन्तं पुरुषं दैन्यवद्वा यथा भवति  
तथा याचत इत्येवंशीलो दीनयाची दीनं वा, यातीति  
दीनयायी दीना वा-हीना जातिरस्येति दीनजातिः। स्था०  
२०६।

**दीणपन्ने**— दीनप्रज्ञः-हीनसूक्ष्मार्थालोचनः। स्था० २०७।

**दीणमणे**— दीनमनाः-स्वभावत एवानुन्नतचेताः। स्था०  
२०७।

**दीणरूवे**— दीनरूपः-मलीनजीर्णवस्त्रादिनेपथ्यापेक्षया।  
स्था० २०७।

**दीणववहारे**— दीनव्यवहारः-

दीनान्योऽन्यदानप्रतिदानादिक्रिय हीनविवादो वा। स्था०  
२०७।

**दीणसंकप्पे**— दीनसङ्कल्पः-उन्नतचित्तस्वाभाव्येऽपि  
कथञ्चि-द्धीनविमर्शः। स्था० २०७।

**दीणसीलाचारे**— दीनशीलसमाचारः-हीनधर्मानुष्ठानः।  
स्था० २०७।

**दीणा**— दीना-दैन्यवती। विपा० ४९।

**दीणार**— दीनारं-सुवर्णमुद्रा। दशवै० ३७।

**दीणारमालिया**— दीनारमालिका-भूषणविधिविशेषः।

जीवा० ३६९।

दीणारो- दीनारः। आव० ३४१। निशी० ३३० अ।

दीणोभासी- दीनवदवभासते प्रतिभाति-अवभाषते वा  
याचत इत्येवंशीलो दीनावभासी दीनावभाषी वा। स्था०  
२०७।

दीनदिङ्गी- दीनदृष्टिः-विच्छायत्तक्षुः। स्था० २०७।

दीपिया- द्वीपिकाः-चित्रकाः। ज्ञाता० ७०।

दीप्तिमान्- पराधृष्यः। आचा० ३।

दीर्घकालद्रव्यप्रसूतिप्ररूपी- बहुरतः। आव० ३११।

दीर्घकालिक- सञ्जायास्तृतीयो भेदः। सम० १८।

दीर्घबाहुः- नामविशेषः। सम० १५९।

दीर्घसेनः- नामविशेषः। सम० १५९।

दीर्घा- स्थूला। जम्बू० १७४।

दीव- द्वीपः। प्रज्ञा० ७१। प्रदीपः-ज्योतिः। निशी० ४८ अ।

द्वीपः दीपो वा। प्रश्न० १०३। जीवा० २२१। द्वाभ्यां

मुखेन करेण च पिबतीति द्वीपः-हस्त्येव। जीवा० १२२।

द्वीपः-जलेनावृतं क्षेत्रम्। जम्बू० २९३। दीप्यत इति

दीपः। उत्त० २१२। द्वीपम्। जम्बू० ५३८। मोहनीयस्य

स्थाने पञ्चमम्। आव० ६६१। सुराष्ट्रादक्षिणसमुद्रे

स्थलम्। बृह० २२७ अ। दीपः-प्रकाशकं वस्तु। स्था०

५१७। दीप-शाखाः- प्रदीपकार्यकारिणः। सम० १८।

द्विर्गता आपोऽ-स्मिन्निति द्वीपः। आचा० २४७।

द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां स्थान-

दातृत्वाहाराद्युत्पलक्षणाभ्यां प्राणिनः पान्तीति

द्वीपाः- जन्त्वावासभूतक्षेत्रविशेषः। अनुयो० ९०।

दीवकुमारा- द्वीपकुमाराः-भवनपतिभेदविशेषः। प्रज्ञा०

६९। द्वीपकुमाराः-

वैश्रमणस्याजोपपातवचननिर्देशवर्तिनो देवाः। भग०

१९९।

दीवकुमारीओ- वैश्रमणस्याजोपपातवचननिर्देशवर्तिन्यो

देव्यः। भग० १९९।

दीवगं- दीपकं-रथवीरपुर उद्यानम्। उत्त० १७८। दीपकं-

रथवीरपुरे उद्यानविशेषः। आव० ३२३।

अधिकार्थोदीपकम्। व्यव० २५१।

दीवगचंपए- दीपकचम्पकः-दीपाच्छादनं कोशिकः। भग०

३१३। दीपस्थगनकम्। भग० ३७७।

दीवचंपए- दीपचम्पकः-दीपस्थगनकम्। राज० १४१।

दीवणं- आगमनकार्याविर्भावनम्। ओघ० ४०।

दीवणिज्ज- दीपनीयं-अग्निवृद्धिकरं, दीपयति हि

जठराग्नि-मिति वा। जीवा० २७८। दीपनीयं-

अग्निबलजनकम्। स्था० ३७५।

दीवत्तं- द्विधागतलवणोदस्य आपोऽस्मादिति

अन्वर्थवशाद् दीपत्वम्। जम्बू० ९।

दीवप्पण्डे- प्रकर्षेण नष्टो दृष्ट्यगोचरतां गतः प्रणष्टो

दीपोऽस्येति प्रणष्टदीपः। उत्त० २१२।

दीवसिहा- दीपशिखा इव दीपशिखाः। जम्बू० १०२।

दीपशिखाः-द्रुगमणविशेषः। जीवा० २६६। जम्बू० १०२।

दीपशिखाः-ब्रह्मदत्तराज्ञी सागरदत्तसुता। उत्त० ३७९।

दीवा- द्वीपाः। अनुयो० १७१।

दीवाति- द्वीपाः। स्था० ८६।

दीवायण- द्वैपायनः-महर्षिर्यः शीतोदकबीजहरितादिपरि

भोगात्सिद्धः। सूत्र० ९५। आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां

चतुर्विंश-तिकायां विंशतितमतीर्थकरस्य पूर्वभवनाम।

सम० १५४। द्वैपायनः-परिव्राजकविशेषः। औप० ९१।

दीवि- द्वीपि-चित्रकः। प्रश्न० १६२।

दीविण- चित्रकविशेषः। प्रज्ञा० २५३।

दीविग- द्वीपिनः-चित्रकः। जम्बू० १२४।

दीविचगा- द्वैप्या-द्वीपसम्भवाः। ज्ञाता० १७२।

दीवित- द्वीपिकः-चित्रको मृगमारणाय। प्रश्न० १३।

दीवियंमि- दीपिते-कथिते। ओघ० ९३।

दीविय- द्वीपः-चित्रकः श्वापदविशेषः। जीवा० १०७।

द्वीपी-चित्रकः। जम्बू० ३१।

शाकुनिकपुरुषसम्बन्धीपञ्जरस्थिति-त्तिरो द्वीपिका

उच्यते। ज्ञाता० २३३। द्वीपिकः- चित्रकः। जीवा० २८२।

द्वीपिकेन चित्रकेण चरतीति द्वीपकः। प्रश्न० १५।

द्वीपिकः-चित्रकाभिधानोनाखरविशेषः। प्रश्न० ७।

पीपीलियः-पिपीलिकः पीपीतिकारिकः पक्षिविशेषः।

प्रश्न० ८। चतुष्पदविशेषः। भग० १९१।

दीवियमडे- द्वीपिमृतः-मृतचित्रकदेहः। जीवा० १०६।

दीविया- सनखपदश्चतुष्पदविशेषः। प्रज्ञा० ४५। जीवा०

३८। निशी० ८८ अ।

दीवियाचक्कवालवंदं- ह्रस्वो दीपो दीपिका तासां

चक्रवालं-सर्वं परिमण्डलरूपं वृन्दं

दीपिकाचक्रवालवृन्दम्। जीवा० २६६।

दीवेइ- दीपयति। आव० २६०।  
 दीवेत्ता- दीपयित्वा-निवेद्य। ओघ० १५६।  
 दीवेह- दीपयत-कथयत प्रकाशयत। व्यव० १३४आ।  
 दीहंवेगे- दीर्घह्रस्वयोः। स्था० ४३।  
 दीह- दीर्घो दीर्घवर्णाश्रितो दूरश्रव्यो वा मेघादिशब्दवत्।  
 स्था० ४७१। दीर्घः-दीर्घपृष्ठः। उत्त० ३७७। दीर्घ-अनादौ  
 केषाञ्चिदपर्यवसिते चेति। उत्त० २३३। दूरम्। व्यव०  
 ३१२अ। दीर्घ-अल्पपृथुलं बहूच्छ्रयम्। बृह० २४९अ।  
 उलंबगं। निशी० ५४आ।  
 दीहगइपरिणामः- दीर्घगतिपरिणामः।  
 विप्रकृष्टदेशान्तरप्राप्तिपरिणामः। प्रज्ञा० २८९।  
 दीहजाइओ- दीर्घजातीयः। दशवै० ५०।  
 दीहडक्को- सर्पदृष्टः। आव० ७८३।  
 दीहदंते- भरतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां  
 द्वितीयश्रृङ्गवर्त्ती। सम० १५४। दीर्घदन्तः-  
 अनुत्तरोपपातिकदशानां प्रथम-वर्गस्य  
 षष्ठममध्ययनम्। अनुत्त० १।  
 दीहपिड्ड- यवोनामराजानस्य सचिवः। बृह० १९१अ।  
 दीहबाहु- चन्द्रप्रभजिनस्य पूर्वभभवनाम्। सम० १५१।  
 सम० १५४।  
 दीहमद्धं- दीर्घाद्धं-दीर्घकालं दीर्घाध्वं वा दीर्घमार्गम्। प्रश्न०  
 ९१। ज्ञाता० ८९। दीर्घाद्धं-दीर्घकालं दीर्घो वाऽध्वा तप्प-  
 रिभ्रमणहेतुः कर्मरूपो मार्गो यस्मिंस्तत्। उत्त० ५८५।  
 भग० ५७२। दीर्घाद्धं दीर्घा अद्धा कालो यस्य तद् दीर्घाद्धं,  
 मका-रआगमिकः, दोर्घो वाऽध्वा मार्गो  
 यस्मिंस्तद्दीर्घाध्वम्। स्था० ४४। दीर्घाद्धं जीर्घकालं  
 दीर्घाकालं दीर्घाध्वं वा दीर्घमार्गम्। भागच्छा० ३४।  
 दीहरत्तं- दीर्घरात्रं-यावज्जीवम्। सूत्र० १५२।  
 दीहराय- दीर्घरात्रः-मोक्षः। आव० ६५८। दीर्घरात्रं  
 यावज्जीवम्। आचा० २०८।  
 दीहलोग- दीर्घलोकः-वनस्पतिः। आचा० ५२। दीर्घलोकः-  
 पृथिव्यादिः। आचा० ५३।  
 दीहसुत्तं- णामकत्तति। निशी० २२६अ।  
 दीहसेणे- दीर्घसेनः-अनुत्तरोपपातिकदशानां  
 द्वितीयवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। अनुत्त० २।  
 दीहामयव्विप्पमुक्को- दीर्घाणि यानि-स्थितितः  
 प्रक्रमात्क-र्माणि तान्यामया इव-रोगा इव

विविधबाधाविधायितया दीर्घमयास्तेभ्यो विप्रमुक्तो  
 दीर्घमयविप्रमुक्तः। उत्त० ६३९।  
 दीहासणं- दीर्घासनं-शय्यारूपमासनम्। जीवा० २००।  
 दीहासणाइं- शय्यारूपाणि। जम्बू० ४५।  
 दीहिया- दीर्घिका-ऋजुलघुनदी। प्रज्ञा० ७२। दीर्घिका  
 सारणी। भग० २३८। औप० ३, ९३। अनुयो० १५९। जीवा०  
 १९७। जम्बू० ४१। ऋजुसारिणी। औप० ८। प्रश्न० १६०।  
 जीवा० १८८। जम्बू० ३०। ज्ञाता० ५। दीर्घिका-  
 ऋज्वीनदी। प्रज्ञा० २६७।  
 दुंदुभए- दुन्दुभकः-अष्टाशितौ महाग्रहे अष्टादशः। जम्बू०  
 ५३४। स्था० ७८।  
 दुंदुभि- दुन्दुभिः-भेर्याकारा सङ्कटमुखी। राज० २५।  
 भेर्याकारा कङ्कटमुखी देवातोद्यविशेषः। राज० ४९।  
 दुंदुभिसर- दुन्दुभिस्वरः-वर्चस्वरो नादः। सम० १५८।  
 दुंदुभी- भेरी। प्रश्न० ४८।  
 दुंदुहि- दुन्दुभी-भेक्काविशेषः। भग० ४७६। दुन्दुभिः-  
 देववादयम्। जम्बू० १९२। दुन्दुभिः देववादयविशेषः।  
 भग० २१६।  
 दुंदुहिससरो- दुन्दुभिवत्स्वरो यस्य स दुन्दुभिस्वरः।  
 जीवा० २०७।  
 दुंदुही- दुन्दुभिः मेर्याकारा सङ्कटमुखी। जीवा० २४५।  
 दुंदुहीओ- दुन्दुभयो देवानकाः। उत्त० ३६९।  
 दुंदुहे- दुन्दुभिः, सर्पविशेषः। उत्त० ३५४।  
 दुः- अभावार्थे। आचा० १३६।  
 दुःख- उष्णम्। आचा० १५१।  
 दुःखासिका- वेदना। स्था० १८१। परितापना ओघ० ६५।  
 आचा० १३९।  
 दुःप्रसभः- तीर्थव्यवच्छेदकाले सूरिः। व्यव० ४०२अ।  
 दुःसंहतं- दुःखेन संहियते-मील्यते स्मेति। उत्त० ३७५।  
 दुअं- द्रुतं-यत् त्वरितं गीयते त्वरितगाने हि  
 रागतानादिपुष्टि-रक्षरव्यक्तिश्च न भवति। जम्बू० ४०।  
 द्रुतनाम नाट्यं, द्रुतमिति शीघ्रं  
 गीतवादयशब्दयोर्यमकसमकप्रपातेन पादत-  
 लशब्दस्यापि समकालमेव निपातो यत्र तत् द्रुतं  
 नाट्यम्। जम्बू० ३१७।  
 दुअकखरिआ- द्यक्षरिका। उत्त० १०७।  
 दुअद्धखित्त- द्यर्धक्षेत्रम्। जम्बू० ४७८। द्वितीयमर्द्ध

यस्य तत् द्यवर्द्ध-सार्धमित्यर्थः, द्यवर्द्धमर्द्धाधिकं क्षेत्रमहोरात्रप्रमितं चन्द्रयोगयोग्यं येषां द्यवर्द्धक्षेत्राणि।  
सूर्य० १७७।

दुआइक्ख- दुराख्येयं-कृच्छ्राख्येयं वस्तुतत्त्वम्। स्था० २९६

दुइओ- द्वितीयः। उत्त० २२३।

दुइज्जंतो- द्वितीयान्तः-पाषण्डी गृहस्थः। आव० १८९।

दुइज्जमाणा- द्रवन्ति इतस्ततो दोलायमानानि। जम्बू० २३५।

दुकूलं- वस्त्रविशेषः। भग० ४६०। कार्पासिकं-  
अतसीमयम्। भग० ५४०। वृक्षविशेषः। भग० ४६०।

दुकोडी- विसोहिकोडी अविसोहीकोडी। निशी० ९१।

दुककडगरिहा- ऐहिकान्यभविक्पापनिन्दम्। चतु० ।

दुक्करं- दुःखेन क्रियत इति दुष्करं-दुरनुष्ठानम्। उत्त० ११६। दुष्करं-अपूर्वकरणतो ग्रन्थिभेदः। भग० २८९।

दुक्कराङ्गं- दुःखेन क्रियन्ते करोतेः  
सर्वधात्वर्थत्वाच्छक्यन्ते दुष्कराणि दुःशकानि। उत्त० ६६५।

दुक्काल- दुष्कालः धनधान्यादिसमृद्धिहीनःकालः। भग० १९९। दुष्कालो-धान्यमहार्घतादिना दुष्टः कालः। जम्बू० ६६।

दुक्कुट्टिओ- दुष्कृष्टः। आव० ६२२।

दुक्खं- दुःखं-दुःखकारणं वा कर्म लोकसंयोगात्मकं वा।  
आचा० १४५। अज्ञानं मोहनीयं वा। आचा० १५३। दुःख-  
यतीति दुःखं-संसारः। उत्त० ६२१। दुःखहेतुम्। उत्त० ६२४। दुःखयतीति दुःखं-अष्टप्रकारं कर्म तत्फलं वाऽसा-  
तोदयादिरूपम्। सूत्र० १३। दुःखयतीति दुःखं-पापं कर्म।  
उत्त० २६२। सांसारिकं सुखमपि वस्तुतो दुःखमिति  
दुःख-हेतुत्वाद् दुःख कर्म। भग० ३८। दुःखं-दुःखहेतु  
कर्म। भग० २९०। दुःखहेतुः। भग० ४८४। दुःखं  
दुःखविषयको भग-वत्याः प्रथमशतके द्वितीय  
उद्देशकः। भग० ६। दुःखयतीति दुःखः। उत्त० ११९।  
दुःखानि कर्माणि। उत्त० २९३।

दुक्खसंभवा- दुःखं पापकर्म ततः संभवः उत्पत्तिर्येषां ते  
दुःखसम्भवाः। उत्त० २६२। इहान्यजन्मनि च  
दुःखभाज-नम्। उत्त० २६८।

दुक्खसावयाङ्गण- दुःखश्रवापदाकीर्णः। ज्ञाता० १६९।

दुक्खाययणं- दुःखायतनम्। उत्त० ३२९।

दुक्खावणा- दुःखापना-मरणलक्षणदुःखप्रापणा, अथवा  
इष्ट वियोगादिदुःखहेतुप्रापणा। भग० १८४।

दुक्खाविज्जइ- दुःख्यते। आव० ४०५।

दुक्खुव्वेअ- दुःखाद् उद्वेगो यस्य स दुःखोद्वेगः। आचा० ११९।

दुखुरा- द्विखुरा-गवादयः। उत्त० ६९९। द्विखुरा-  
उष्ट्रादि-चतुष्पदाः। जीवा० ३८।

दुगंछे- जुगुप्साकर्म-यदुदयेन च  
विष्ठादिबीभत्सपदार्थेभ्यो जुगुप्सते तत्। स्था० ४६९।

दुगंधी- दुर्गन्धी-सुनन्दश्रावकस्य द्वितीयो भवः। उत्त० १२३।

दुग- क्रियाविषयमेकसमयमनुभूयमानं  
उपचारात्तत्प्रतिज्ञाताऽपि द्विकः। उत्त० १५२।  
एकसमये द्वे क्रिये समुदिते द्विक्रियं त-दधीयते  
तद्वेदी वा द्वैक्रियः, कालभेदेन  
क्रियाद्वयानुभवप्ररूपी। आव० ३११।

दुगाउयं- द्विगव्यूतं-क्रोशद्वयम्। ओघ० ७८।

दुगुंछणा- जुगुप्सा। आचा० ७५।

दुगुंछमाण- जुगुप्समानः-निन्दन्परिहरन्। आचा० ११४।  
जुगुप्समानः। उत्त० २२८।

दुगुंछा- जुगुप्सा प्रवचनखिंसा। स्था० १३८। विचिकित्सा  
अनेषणीयशङ्का। आचा० ३३२। जुगुप्सा-  
अस्नानादिमलि-नतनुसाधुहीलना। उत्त० ३६१।

दुगुंछामि- जुगुप्सामि-निन्दामि। आव० ३६४।

दुगुंछामोहणिज्जं- यदुदयवशात् पुनः शुभमशुभं वा वस्तु  
जुगुप्सते तत्, जुगुप्साजनकं मोहनीयं  
जुगुप्सामोहनीयम्। प्रज्ञा० ४६९।

दुगुंछिय- जुगुप्सितं-छिम्पकादि। ओघ० १५६।

दुगुंछिया- जुगुप्सिकता-निन्दिताः। ओघ० १२०।

दुगुल्ल- दुकुलं-कार्पासिकं वस्त्रम्। राज० ३७। दुकुलं  
गौडवि-षयविशिष्टकार्पासिकम्। आचा० ३९४।

कार्पासिकं वस्त्रम्। जीवा० २१०। कार्पासिकमतसीमयं  
वा वस्त्रम्। सूर्य० २९३। वस्त्रम्। जम्बू० २८५। ज्ञाता०  
२७। जीवा० २३२। वृक्षविशेषः। तदवल्कलाज्जातं दुकुलं-  
वस्त्रविशेषः। ज्ञाता० २७। दुकुलानीति दुकुलो  
वृक्षविशेषः, तस्य वल्कं गृहीत्वा उदूखले जलेन सह

कुट्टयित्वा बुसीकृत्य सूत्रीकृत्य च व्यन्ते यानि तानि।  
प्रश्न० ७०। दुकूलः-वृक्षविशेषः। प्रश्न० ७०। ज्ञाता० २७।  
रुक्खो। निशी० २५४ आ। दुकूलं-वस्त्रजातिविशेषः।  
जीवा० २६९।

दुकूल- गौडविषयविशिष्टं कार्पासिकं दुकूलम्।  
वृक्षविशेषस्तस्य वल्कं गृहीत्वा उदूखले जलेन सह  
कुट्टयित्वा बुसीकृत्य च व्ययते यत्तद् दुकूलम्। जम्बू०  
१०७।

दुगोत्तफुसिया- वल्लीविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

दुग्ग- दुर्गाणि-जलदुर्गाणि, पर्वता एव दुर्गाणि। बृह० १८६  
अ। कष्टसाध्यः। भग० ४८४। दुर्गाणि-खातवलयप्राकारा-  
दिदुर्गमाणि। जम्बू० १६८। दुरधिगमाः। सम० १११। जं  
अटविमज्जे भिल्लपुलिंदचाउवन्नजणवयमिस्सं  
दुग्गं। निशी० २१ अ। दुर्गमं-स्थानम्। बृह० २२९ अ।  
दुर्गदुष्प्रवेशम्। विपा० ६२। दुर्ग-जलस्थलदुर्गरूपम्।  
प्रश्न० ५०। दुर्ग-व्यसनम्। प्रश्न० ६३। दुर्ग-प्रकारः।  
आव० ७३२। दुर्ग-दुःखाश्रयणीयम्। भग० २३१। दुर्गः-  
जलदुर्गा-दिकः। भग० १७४। दुर्ग-  
खातवलयप्राकारादिदुर्गमम्। भग० ३०७।

दुग्गइवड्ढणं- दुर्गतिवर्धनं-संसारवर्धनम्। दशवै० २००।

दुग्गए- दुर्गतः-दरिद्रः। स्था० २४९।

दुग्गओ- दुर्गौः-गलिबलिवर्द्धः। दशवै० २५०।

दुग्गता- दुर्गताः-दुःस्थाः। स्था० १४७।

दुग्गतिप्पवाओ- दुर्गतौ नरकादिकायां कर्त्तारं-  
प्रपातयतीति दुर्गतिप्रपातः, दुर्गतौ वा प्रपातो यस्मात्  
सः, प्राणवधस्याष्टादशमः पर्यायः। प्रश्न० ५।

दुग्गम- दुःखेन गम्यत इति दुर्गमं भावसाधनोऽयं,  
कृच्छ्रवृत्ति-रित्यर्थः। स्था० २९६। दुर्गमः-कृच्छ्रगतिकः।  
प्रश्न० २०।

दुग्गय- दुर्गतः-दरिद्रः। उत्त० २२६।

दुग्गा- दुर्गा-कोट्टक्रिया सैव महिषारूढरूपा। ज्ञाता० १३९।  
दुर्गा-महिषारूढाऽऽर्या। अनुयो० २६।

दुग्गासे- दुःखेन ग्रासो यत्र तद् दुर्गासः-दुर्भिक्षम्। पिण्ड०  
८८।

दुग्गुच्चपव्वओ- दुर्गोच्चपर्वतः। आव० ३८४।

दुग्गूढं- दुर्गूढं-दुष्प्रावृत्तम्। बृह० ५५ आ।

दुग्घट्टा- दुर्घटा-दुराच्छादा। प्रश्न० ६०।

दुग्घासं- दुर्गासं-दुर्भिक्षम्। बृह० २३ अ।

दुघण- दुघणम्। राज० २२। जीवा० १२१। दुघणः-मुद्ग-  
रविशेषः। प्रश्न० ४८।

दुचक्कगं- द्विचक्रकं-शकटम्। बृह० ७७ आ। द्विचक्रं-  
गन्त्रिका। ओघ० १४०।

दुचक्कलेवो- द्विचक्रलेपः-शकटलेपः। बृह० ८२ अ।

दुचक्का- द्विचक्रा-गडिआ। ओघ० १३५।

दुच्चय- दुष्टः-कर्मद्रव्यसञ्चयः। भग० २८९।

दुच्चिण्ण- दुश्चीर्णः-परस्त्रीगमनादिदुराचारः। बृह० ९८  
अ। दुश्चीर्ण-दुश्चरितं मृषावादनपारदार्यादि। ज्ञाता०  
२०५।

दुच्चिन्न- प्रमादकषायजदुश्चरितजनितं दुश्चरितं,  
दुश्चरितहेतु वा, मद्यपानाश्लीलानृतभाषणादि वा।  
दशवै० २७४।

दुजडी- अष्टाशीतौ महाग्रहे चतुरशीतितमः। स्था० ७९।

दुज्जंतु- दूयन्तां-लूयन्ताम्। प्रश्न० ३९।

दुज्जम्मजात- दुर्जन्मजातः। आव० ५७८।

दुज्जोहण- दुर्योधनः। ज्ञाता० २०८।

दुज्झाओ- दुष्टो ध्यातो दुर्ध्यातः-आर्त्तरौद्रलक्षणः  
एकाग्रचित्ततया। आव० ५७१, ७७८।

दुड्ढण्डो- दुष्टव्रणः-कुण्ठी। उत्त० २१८।

दुड्ढस्सो- दुष्टाश्वो गर्दभः। बृह० २४० अ।

दुड्ढस्स- दुष्टाश्वः गर्दभः। ओघ० ७१।

दुड्ढाण- द्विः। स्था० ३३०।

दुड्ढे- दुष्टः-द्विष्टः तत्त्वं प्रज्ञापकं वा प्रति, स  
चाप्रज्ञापनीयो, द्वेषेणोपदेशाप्रतिपत्तेः। स्था० १६५।

दुणापाणियं- दुर्गन्धपानीयम्। आव० ५५६।

दुणिसीहिया- दुर्निषीधिका-कष्टस्वाध्यायभूमिः। प्रश्न०  
१६४।

दुतं- दुतं त्वरितम्। स्था० ३९६। जम्बू० ४१७।

दुहंतदोस- दुष्टं दमनं दुर्दान्तं तच्च प्रक्रमाच्चक्षुषस्तदेव  
दोषो दुर्दान्तदोषः। उत्त० ६३१।

दुद्दाइ- अवसंपण्णाणवि न देइ। निशी० ८३।

दुद्धं- दुग्धम्। आव० १९८।

दुद्धकाओ- दुग्धकायो नाम दुग्धघटकस्य कापोती। आव०  
५५५।

दुद्धजाई- दुग्धजातिः-आस्वादतः क्षीरसदृशी। जीवा०

२६५।

दुद्धर- दुर्द्धराणि-प्राणातिपातादिनिर्वृतिलक्षानि। पञ्च महाव्र-तानि। प्रजा० ५। दुर्द्धरं-गहनम्। स्था० ३६४।

दुद्धरः- प्रतिस्पृद्धिनामनिवार्यः। प्रश्न० ७३।

दुद्धरिसं- दुर्द्धर्ष-अनभिभवनीयम्। प्रश्न० १३६।

दुद्धरिसतरा- दुष्प्रघृष्यतरौ-भवतः-दुःखेन परिभूयेते दुर्जय-तरौ। ओघ० १४९।

दुधोयतरा- दुष्करतरधावनप्रक्रियम्। भग० २५१।

दुनाम- द्विरूपं सत् सर्वस्य नाम द्विनाम। अनुयो० १०९। द्वयोर्वा नाम्नोः समाहार द्विनामं वा। अनुयो० १०९।

दुन्नरा- दुर्नयः-स्त्र्यादिसंस्तकस्थानवासः। बृह० ५आ।

दुन्निक्कमा- दुःखेन नितरां क्रमः, क्रमणं यस्यां सा दुर्निष्क्रमा दुरतिक्रमणिया। जम्बू० १६९।

दुन्नामधिज्ज- दुर्नामधेयं-पुराणः प्रतित इति कुत्सितनामधेयं च। दशवै० २७६।

दुपओआरं- द्वयोः पदयोः-स्थानयोः पक्षयोर्विवक्षितवस्तुत-द्विपर्ययलक्षणयोरवतारो यस्य तद् द्विपदावतारम्। स्था० ३९।

दुपक्ख- द्वौ पक्षावस्येति द्विपक्षं-कर्मबन्धनिर्जरणं प्रतिपक्ष-द्वयसमाश्रयणात्। सप्रतिपक्षमनैकान्तिकं, पूर्वापरविरुद्धा-र्थाभिधायीतया विरोधिवचनमिति। सूत्र० २१६। दृष्टः पक्षो दुष्पक्षः असत्प्रतिज्ञाभ्युपगम्। सूत्र० ९१।

दुपडोयार- द्वयोः प्रत्यवतारो यस्य तत् द्विप्रत्यवतारमिति, स्वरूपवत् प्रतिपक्षवच्चेत्यर्थः। स्था० ३९। द्विप्रकाराः जीवाश्चाजीवाश्च। आव० ४७७।

दुपमज्जिय- दुष्प्रमार्जितं-तृतीयमसमाधिस्थानम्। आव० ६५३।

दुपयं- द्विपदं-शकटम्। ओघ० १४१। दासीमयूरहंसादि। आव० ८२६।

दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे- द्विपदचतुष्पदप्रमाणातिक्रमः। आव० ८२५।

दुप्पउत्त- अकुसलमणो। दशवै० ६०। दुष्प्रयुक्तः-दुःसा-धितः। ओघ० २२७।

दुप्पउत्तकाइया- दुष्टं प्रयुक्तं-प्रयोगः कायादीनां यस्य स दुष्प्रयुक्तस्तस्य कायिकी दुष्प्रयुक्तकायिकी। प्रजा०

४३६।

दुप्पउत्तकायकिरिया- दुष्टं प्रयुक्तो दुष्प्रयुक्तः स चासौ कायश्च दुष्प्रयुक्तकायस्तस्य क्रिया दुष्प्रयुक्तकायक्रिया, दुष्टं प्रयुक्तं-प्रयोगो यस्य स दुष्प्रयुक्तस्तस्य कायक्रियादुष्प्रयुक्त काय-क्रिया। भग० १८२। दुष्प्रयुक्तस्य-दुष्टप्रयोगवतो दुष्प्रणिहि-तस्येन्द्रियाण्याश्रित्येष्टानिष्टविषयप्राप्तौ मनाक् संवेगनिर्वेद-गमनेन, तथा अनिन्द्रियमाश्रित्यशुभमनःसङ्कल्पद्वारेणाप-वर्गमार्गं प्रतिदुर्व्यवस्थितस्य प्रमत्तसंयतस्येत्यर्थः काय-क्रिया दुष्प्रयुक्तकायक्रिया। स्था० ४१।

दुप्पउलि- दुष्पक्वः-अस्विन्नः। आव० ८२८।

दुप्पउलिओसहिभक्खणया- दुष्पक्वौषधिभक्षणता-अस्वि-न्नौषधिभक्षणता। आव० ८२८।

दुप्पए- अधोभागाप्रतिष्ठिते- प्रतिष्ठा नरहिते। ओघ० २११।

दुप्पडियसुप्पडिओ- दुष्टं प्रस्थितः-प्रवृत्तो दुष्प्रस्थितः दुरा-चारविधातेतियावत् सुष्ठु प्रस्थितः सुप्रस्थितः सदनुष्ठानक-र्तेति। उत्त० ४७७।

दुप्पडिकंत- मिथ्यादर्शनाविरतिजदुष्पराक्रान्तजनितं दुष्परा-क्रान्तं, दुष्पराक्रान्तं, दुष्पराक्रान्त हेतु वा, वधबन्धनादि वा। दशवै० २७४।

दुप्पडिकंतो- दुष्प्रतिक्रान्तः-दुःशब्दोऽभावार्थस्तेन प्रायश्चित्तप्रतिपत्त्यादिना-अप्रतिक्रान्तः-अनिवर्तितविपाक इति विपा० ३८।

दुप्पडिताणंदे- दुष्प्रत्यानन्दः-उपकृतेन कृतमुपकारं यो नाभिमन्यते। स्था० २४९।

दुप्पडिबोहिणि- सद्धम्मे दुक्खं बुज्झंति। निशी० ४३।

दुप्पडियाणंदे- दुष्प्रत्यानन्दः-साधुदर्शनादिना नानान्दयत इति। विपा० ३९।

दुप्पडियारं- दुःखेन-कृच्छ्रेण प्रतिक्रियते कृतोपकारेण पुंसा-प्रत्युपक्रियत इति खलप्रत्यये सति दुष्प्रतिकरं-प्रत्युपकर्तु-मशक्यमिति यावत्। स्था० ११७।

दुप्पडिलेहं- दुष्प्रतिलेखितदूष्यपञ्चकम्, दूष्यपञ्चकस्य द्वितीयो भेदः।

पल्हवी ऋकौतपी स्रावर ऋवत्वक् ४६ष्ट्रागाली श्लेदभि-न्नम्। आव० ६५२।

दुष्पडिलेहणा- दुष्प्रत्युपेक्षणा-दुर्निरीक्षणा। आच० ५७६।  
 दुष्पडिलेहियदूस- दुष्प्रतिलेखितमदुष्यम्। स्था० २३४।  
 दुष्पणिहिआ- दुष्प्रणिहिताः-अनिरुद्धा। दशवै० २२६।  
 दुष्पडिहियजोगी- दुष्प्रणिहितयोगी-सुप्रणिधिरहितः  
 प्रव्रजितः। दशवै० २२६।  
 दुष्पणवणिज्जा- दुःखचरणकरणजातामाताओत्तिर  
 धम्मं पणविवज्जन्ति। निशी० ४३ अ।  
 दुष्पन्नवणिज्जाणि- दुष्प्रजाप्यानि-दुःखेन  
 धर्मसञ्ज्ञोपदेशेना-नार्यसङ्कल्पान्निवर्त्यन्ते। आच०  
 ३७७।  
 दुष्पमज्जणा- दुष्प्रमार्जना-अविधिना प्रमार्जना। आच०  
 ५७३।  
 दुष्पमज्जियचारि- दुष्प्रमार्जितचारी,  
 तृतीयमसमाधिस्थानम्। सम० ३७।  
 दुष्पयं- न पुष्पकमूले स्थितम्। बृह० २४१ अ।  
 दुष्परककंत- दुष्परक्रान्तं  
 प्राणिघातादत्तापहारादिकृतानां प्रकृत्यादिभेदेन। भग०  
 २०५।  
 दुष्परिकम्मतराए- दुष्परिकर्मतरं-  
 कष्टकर्तव्यतेजोजननभङ्ग-करणादिप्रक्रियम्। भग०  
 २५१।  
 दुष्पस्स- दुःखेन दर्शयते इति दुर्दशं,  
 उपपत्तिभिर्दःशकंशि-ष्याणां प्रतीता वारोपयितुं  
 तत्त्वमिति। स्था० २९७।  
 दुष्पहंस- दुःखेन प्रघर्ष्यन्ते-पराभूयन्ते केनापीति  
 दुष्प्रघर्षाः। उत्त० ३५३। दुष्प्रघर्षकः-अन्यैर्दुरभिभवः।  
 उत्त० ३४९।  
 दुष्पुत्तं- पुष्पकमूलेषु न पङ्क्तिं। निशी० ४१ अ। जं  
 ठविज्जंतं उद्धं ठायति चालियं पुण पलोद्वति नं दुष्पुत्तं।  
 निशी० १२५ अ।  
 दुब्बल- दुर्बलः-वाध्यादिरोगाक्रान्तः। ओघ० ५०।  
 दुब्बलदेहो- दुर्बलदेहः-कृशशरीरः। ओघ० ७१।  
 दुब्बलपच्चामित्ते- अबलप्रातिवेशिकराजः। स्था० ४६३।  
 दुब्बलयरो- दुर्बलतरः। आच० ४१६।  
 दुब्बलसरीरो- रोगपीडितो दुब्बलसरीरो तवसोसियसरीरो  
 वा। निशी० ६५ अ।  
 दुब्बलि- दुर्बलिका। आच० २३८।

दुब्बलिय- दौर्बल्यं-श्रमम्। आच० ३८०। विद्यायां  
 योग्यः। निशी० ७९ अ।  
 दुब्बलियपूसमित्तो- दुर्बलिकापुष्पमित्रः। आच० ३०८।  
 दुब्बलियापूसमित्त- दुर्बलिकापुष्पमित्रः। उत्त० १७३।  
 दुब्भगाकरा- सुभगमपि दुर्भगमाकरोतीति दुर्भगाकरा,  
 विद्या-विशेषः। सूत्र० ३१९।  
 दुब्भपुप्फो- उरःपरिसर्पविशेषः। जीवा० ३९।  
 दुब्भि- अशुभः-मनोजो यो न भवति। स्था० २५।  
 दुब्भिकख- दुर्भिक्षं-भिक्षाचराणां भिक्षादुर्लभत्वम्। जम्बू०  
 ६६।  
 दुब्भिकखभत्तं- दुर्भिक्षकाले भिक्षुकाणां निर्वाहार्थं  
 दुर्भिक्षभ-क्तम् यद् विहितं भक्तं तद्। भग० २३१। यद्  
 भिक्षुकार्थं दुर्भिक्षे संस्क्रियते तत्। औप० १०१।  
 दुर्भिक्षभक्तम्। स्था० ४६०।  
 दुब्भिकखया- दुर्भिक्षता दुर्भिक्षभावः। आच० ८४४।  
 दुब्भिगंध- दुरभिगन्धः-तीव्रतरदुष्टगन्धः। ज्ञाता० १७७।  
 दुब्भिसद्व- अशुभशब्दः। प्रजा० २८९।  
 दुब्भिसद्वत्ता- दुष्टशब्दता। ज्ञाता० १७७।  
 दुब्भिसद्वपरिणामे- अशुभः शब्दपरिणामः। जीवा० ३७३।  
 दुब्भी- असुभं रसेण उववेयं पि भोयणं दुब्भिगंधं ण  
 पूजितं दुब्भिं। निशी० ।  
 दुब्भुतिया- कृष्णवासुदेवस्य तृतीया भेरी। बृह० ५६ अ।  
 दुब्भूइ- दुर्भूतिः-अशिवम्। बृह० २६३ अ।  
 दुब्भूए- दुः इति निन्दितं भूतं-भवनमस्येति दुर्भूतः  
 दुराचार-तया निन्द्यो भूतः। उत्त० ४३६।  
 दुब्भूय- दुर्भूतं-अशिवम्। जीवा० २८४। दुष्टाः-जन धान्या-  
 दीनामुपद्रवहेतुत्वाद् भूताः-सत्त्वा  
 यूकानत्कुणोन्दुरतिङ्गप्र-भृतयो दुर्भूता इत्यर्थः।  
 भग० १९८।  
 दुब्भगणामे- दुर्भगनाम यदुदयादुपकारकृदपि जनस्य  
 द्वेष्यः तत्। प्रजा० ४७४।  
 दुब्भाग- ऊनोदरतायास्तृतीयो भेदः, त्रयोदशभ्य आरभ्य  
 यावत् षोडश तावद् द्विभागोनोदरता। दशवै० २७।  
 द्विभागा। स्था० १४९।  
 दुब्भागपत्तोमोअरिया- द्विभागप्राप्तावमोदरिका। औप०  
 ३८।  
 दुब्भागप्पत्ते- द्विभागः अर्द्धं तत्प्राप्तो द्विभागप्राप्तः

आहारः द्विभागो वा प्राप्तोऽनेनेति द्विभागप्राप्तः  
साधुः। भग० २९३।  
दुभिक्ष- दुर्भिक्षं-दुष्कालः भिक्षुकाणां भिक्षाचर्याऽक्षमः-  
कालः। भग० २००।  
दुभिक्षभत्तं- अडविणिग्गयाणं भुक्खत्ताणं जं  
दुब्भिक्षे राया देति। तं। निशी० २७२ अ।  
दुम- असुरकुमारेन्द्रस्य सप्तमः सैन्याधिपतिः। स्था०  
४०६। दुमः-अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य  
सप्तममध्ययनम्। अनुत्त० २। पदान्यनीकाधिपतिः।  
जम्बू० ४०७। दोसु माओ दुमो। निशी० १० आ।  
आनतकल्पे देवविमान-विशेषः। सम० ३५।  
दुमणं- दुवनमुपतापनम्। प्रश्न० ३८।  
दुमपत्तयं- दुमपत्रकं-उत्तराध्ययनेषु दशममध्ययनम्।  
उत्त० ९, ३३३। सम० ६४।  
दुमपुष्पिया- दुमपुष्पिका-दशवैकालिके  
प्रथममध्ययनम्। दशवै० १५। दुमपुष्पिका-धम्मो  
मंगलं। ओघ० २०३। दोसु माओ दुमो पुष्प विकसणे  
दुमस्स पुष्पं दुमपुष्पं तेणदुम-पुष्पेण जत्थ उवमा  
कीरइ तमज्झयणं दुमपुष्पिया। निशी० १० आ।  
दुमसेणे- नवमबलदेववासुदेवयोः पूर्व भवीयधर्माचार्यः।  
सम० १५३। दुमसेनः-अनुत्तरोपपातिकदशानां  
द्वितीयवर्गस्य अष्टममध्ययनम्। अनुत्त० २।  
दुमा- भूमीयआगास य दोसु माया। दशवै० ५।  
दुम्मण- दुर्मन्ना-दैन्यादिमान् द्विष्ट इत्यर्थः। स्था०  
१३१।  
दुम्मणिअ- दौर्मनस्यं-दुष्टमनोभावः। दशवै० २५४।  
दुम्मेह- घोसंतस्स वि जस्स गंधो न ठायति स दुम्मेहो।  
निशी० ३६ आ। अन्तकृद्दशानां तृतीयावर्गस्य  
दशममध्य-यनम्। अन्त० ३। द्रव्यव्युत्सर्गे  
पाञ्चालजनपदे काम्पील्यन-गराधिपतिः य इन्द्रकेतुं  
दृष्ट्वा संबुद्धः। आव० ७१६। उत्त० २९९, ३०३। ज्ञाता०  
२१३। प्रश्न० ७३।  
दुम्मेहा- दुर्मधसः-दुर्बुद्धयः। उत्त० ५३०।  
दुय- द्रुतं-यत्त्वरितं गीयते, गीतस्य द्वितीयो दोषः।  
जीवा० १९४।  
दुयओ- द्विका-द्विपरिणामो द्विपदो वा। भग० ३३१।  
दुयक्खर- दासः। आव० ६९०।

दुयगाणि- द्वे। आव० ३५०।  
दुयग्गावि- (देशीपदं) प्रक्रमाच्च द्वावपि दम्पती। उत्त०  
३९४।  
दुयड्ढपोरिसी- द्व्यर्द्धपौरुषी-सार्द्धपुरुषप्रमाणा छाया।  
सूर्य० ९१।  
दुयादुयं- अतिशयद्रुतम्। तन्दु०।  
दुरंत- दुरन्तं-दुष्टफलम्। प्रश्न० ६६। दुःखेनान्तः-पर्यन्तो  
यस्य तद् दुरन्तम्। उत्त० २३३। दुरन्तानि-  
दुष्टावसानानि। भग० १७४।  
दुरंतपंतलक्खणे- दुरन्तप्रान्तलक्षणः-दुरन्तानि-  
दुष्टावसा-नानि अत एव प्रान्तानि अमनोज्ञानि  
लक्षणानि यस्य सः। भग० १७४। दुरन्तानि-  
दुष्टपर्यन्तानि प्रान्तानि-अपसदानि लक्षणानि यस्य  
सः। ज्ञाता० १३९।  
दुरणुपालओ- दुःखेनानुपाल्यत इति दुरनुपालः, स एव  
दुरनु-पालकः। उत्त० ५०२।  
दुरत्थाया- (देशी) बहिरर्थाभिधायकम्। बृह० १७० अ।  
दुरप्पा- दुरात्मता-दुष्टाचारप्रवृत्तिरूपः। उत्त० ४७९।  
दुरभिगंधं- मृतकलेवरादिवत्। जीवा० २८२। दुष्टगन्धः  
ज्ञाता० १६१। तीव्रतरदुष्टगन्धः। आव० ७७१। ज्ञाता०  
१७७।  
दुरभिगंधनामे- दुरभिगन्धः-यदुदयाद् दुरभिगन्धः  
शरीरेषू-पजायते यथा लशूनादिनां तत्। प्रजा० ४७३।  
दुरहिड्डिअ- दुरधिष्ठिं-दुराश्रयम्। दशवै० १९२।  
दुरहियास- दुरधिसहया। भग० २३१। दुरधिसहयः। भग०  
४८४।  
दुरारद्धं- दुरारब्धम्। आव० ३८७।  
दुरासय- दुःखेनासाद्यतेऽभिभूयत इति दुरासदः  
दुरभिभवः। दशवै० ९५।  
दुरासया- दुःखेनाश्रीयन्ते अभिभवबुद्ध्याऽऽसाद्यन्ते वा  
जेतुं सम्भावयन्त केनापीति दुराश्रया दुरासदा वा। उत्त०  
३५३।  
दुरिड्डं- दुरष्टिं दुर्नक्षत्रं दुर्यजनं वा। दशवै० ६५।  
दुरूक्कं- ईषत्पिष्टम्। आचा० ३४८।  
दुरूत्तर- दुरत्तारः-अकुशलानुबन्धतोऽत्यन्तदीर्घः।  
दशवै० २०६।  
दुरूणियं- दुरुपनीतं-दुष्टमुपनीतं

निगमितमस्मिन्निति। दशवै० ५२।

दुरुवणीए- दुष्टमुपनीतं-निगमितं-योजितमस्मिन्निति  
दुरुपनीतं परिव्राजकवाक्यवत्। स्था० २५९।

दुरुहइ- आरोहति। राज० ४१।

दुरुहिउं- आरोहुम्। आव० २६२।

दुरुय- दुरूपाणि-विरूपाणि। ज्ञाता० ५१।

दुरूवा- दुःस्वभावाः। भग० ३०८।

दुरुहिज्जा- आरुहेत्। आचा० ३७९।

दुरोदरं- द्युतम्। उत्त० ४२६।

दुध्यातः- दुष्टचिन्ताविषयीकृतः। ज्ञाता० १९२।

दुर्भिक्षं- दुरितविशेषः। भग० ८।

दुलुड्डलेमो- भ्राम्यामः। निशी० २९२आ।

दुर्लभं- दुर्लभं-अनिवृत्तिकरणम्। भग० २८९। दुर्लभे  
दुर्भिक्षे। ओघ० १५०।

दुर्लभदव्वं- सतपागसहस्सपागादि वा त्रिकटुकादि वा।  
निशी० ९६।

दुर्ललियगोडी- दुर्ललितगोष्ठी। आव० ३५३।

दुर्लहलंभ- दुर्लभलाभः। आव० ३४५।

दुल्लु लेमि- गवेषयामि। निशी० १७७आ।

दुवए- कांपिल्यपुरे राजा। ज्ञाता० २०७।

दुवक्खरग- दासः। निशी० ६५आ।

दुवक्खरियाओ- वेसस्त्रिया। निशी० ११८आ।

दुवक्खरिया- द्रव्यक्षरिका वेश्या। आव० ४२९।

दुवग्गोवि- (देशीवचनत्वात्) द्वावपि। बृह० २६०आ।

दुवामतराए- दुर्वाम्यतरकं-दुस्त्याज्यतरकलङ्कम्। भग०  
२५१।

दुवार- द्वारम्। निशी० ९५आ। सीसदुवारिया। निशी०  
१९१आ।

दुवारपिंडो- द्वारपिण्डः-द्वारशाखा। जीवा० २०४।

दुवारबाह- द्वारभागः। आचा० ३३८।

दुवारवयण- द्वारमेव वदनं-मुखं द्वारवदनम्। भग०  
३१३।

दुवारा- गौपुच्छिकम्। व्यव० १६५आ।

दुवालसंगे- द्वादशाङ्गानि-आचारदीति यस्मिंस्तद्  
द्वादशाङ्गम्। सम० १०७।

दुवासपरियाए- द्विवर्षपर्यायः। ज्ञाता० १५५।

दुविड्डु- आगमिन्यामुत्सर्पिण्या अष्टमो वासुदेवः। सम०

१५४।

दुवित्तए- द्रोतुं विहर्तुम्। बृह० १५२आ।

दुविहनियत्ती- श्रावकत्वप्रव्रजतित्वाभ्यां निवृत्तिरिति।  
स्था० ३३०।

दुव्वए- दुर्व्रतः-व्रतवर्जितः। विपा० ३९। असम्यग्रताऽथवा  
दुर्व्ययः आयनिरपेक्षव्ययः कुस्थानव्ययो वा। स्था०  
२४८।

दुव्वण्ण- दुर्वर्णः-दुष्टशरीरच्छविः। जम्बू० ११६।

एकस्मिन्नपि न पतति इत्यर्थः। निशी० १२५आ।

दुव्वलचरित्तो- विणा कारणेन मुलुत्तरगुणपडिसेवणं  
करोति। निशी० १०२आ।

दुव्वा- वीया। निशी० २५५आ। दूर्वा-हरितविशेषः। भग०  
३०६।

दुव्विअड्डा- दुर्विदग्धा-मिथ्याऽहङ्कारविडम्बिता।  
नन्दी० ६४।

दुव्विचिन्तिओ- दुर्विचिन्तितः। आव० ७७८।

दुष्टोविचिन्तितो दुर्विचिन्तितः चलचित्ततयाऽशुभ  
एव। आव० ५७१।

दुव्वियडा- दुर्विवृता-परिधानवर्जिता। बृह० २५८आ।

विवृता-अनावृता सा चोत्तरीयापेक्षयाऽपि स्यादतो  
दुःशब्देन विशेष्यते दुष्टुविवृता-दुर्विवृता-  
परिधानवर्जिता, विवृतोरुका दुर्विवृता। स्था० ३१३।

दुव्विवद्धिया- दुर्विदग्धा। बृह० ५८आ।

दुव्विसुज्झो- दुःखेन विशोध्यो-विशोधयितुं निर्मलतां नेतुं  
शक्यो दुर्विशोध्यः। उत्त० ५०२।

दुव्वुड्डी- दुर्वृष्टिः-धान्याद्यनिष्पत्तिहेतुः। भग० १९९।

दुष्प्रणिहितकायिकी- प्रमत्तसंयतस्य क्रिया।

कायिकीक्रियाया द्वितीयो भेदः। आव० ६११।

दुष्प्रत्युपेक्षणं- दुष्टं-उद्भ्रान्तचेतसा प्रत्युपेक्षणम्। आव०  
८३६।

दुष्प्रभः- कार्पटिकः। पिण्ड० ७१।

दुष्प्रमार्जितचारित्वं- तृतीयमसमाधिस्थानम्। प्रश्न०  
१४४।

दुष्टव्रणादि- नोकर्मद्रव्यदोषो-दुष्टव्रणादिः। आव० ३८९।

दुसन्नप्पाणि- दुःसञ्ज्ञाप्यानि-दुःखेनार्यसञ्ज्ञां  
ज्ञाप्यन्ते। आचा० ३७७।

दुसमयड्ढिईयं- द्वौ समयौ यस्याः सा द्विसमया

तथाविधा स्थितिरस्येति, द्विसमयस्थितिकम्। उत्त०  
५९५।

दुसालयं- द्विशालकं-द्रुमगणविशेषः। जीवा० २६९।

दुस्संबोध- दुःखेन सम्बोध्यते-धर्मचरणप्रतिपत्तिं कार्यत  
इति दुस्सम्बोधः। आचा० ३५।

दुस्सण्णप्पा- जदा सद्वा तदा दुक्खं सण्णविज्जन्ति दुस्स-  
ण्णप्पा। निशी० ४३ आ।

दुस्समसुसम- दुष्पमसुषमा-

दुष्पमानुभावबहुलाऽल्पसुषमा-नुभावेति। जम्बू० ८९।

दुस्समा- दुष्पमा अधमकालः। दशवै० २७२।

दुस्साहडं- दुःखेनात्मनः परेषां च दुःखकरणेन सुष्ठु  
आदरा-तिशयेनाहतं उपार्जितं दुःस्वाहतम्। उत्त० २७५।

दुस्सील- दुःशीलः-शुभस्वभावहीनः। विपा० ३९।

दुष्टमिति रागद्वेषादिदोषविकृतं शीलं-स्वभावः  
समाधिराचारो वा यस्या सौ दुःशीलः। उत्त० ४५।

दुस्सीलंपरियागयं- दुःशीलमेव दुष्टशीलात्मकः  
पर्यायस्तमागतं दुःशीलपर्यायागतम्। उत्त० २५०।

दुस्सीला- दुःशीला-पारदारिकाः। बृह० ३११ आ।

दुह- दुःखं तापानुभवरूपं दुःखम्। दशवै० ३९। दोह। बृह०  
६२ आ। दुखं-प्रकृत्यैवासुन्दरा दुःखजननी। दशवै० २७७।

दुहओ- द्वौ। स्था० ५२२। उभयतः। ज्ञाता० १९२। रागद्वे-  
षाभ्यां हतः-द्विहतः। आचा० १६९। दुष्टं हतो दुर्हतः।  
आचा० १६९।

दुहओखहा- नाड्या वामपार्श्वार्वादेर्नाडीं प्रविश्य तदेव  
गत्वाऽ-स्या एव दक्षिणपार्श्वार्वादै ययोत्पद्यते सा  
द्विधाखा। भग० ८६६। उभयतोऽङ्कुशाकारा। स्था०  
४०७।

दुहओवका- यस्यां वारद्वयं कुर्वन्ति सा द्विधावक्रा।  
भग० ८६६। उभयतो वक्रा। स्था० ४०७।

दुहओवत्ता- द्वीन्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४१।

दुहओवि- द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां द्विधा, न शुद्धतादिना  
स्वसम्बन्धिगुणलक्षणैकैकैव प्रकारेण, किन्तु  
स्वसम्बन्ध्याश्रयसम्बन्धिगुणद्वयलक्षणेन।  
प्रकारद्वयेनापीत्यपिशब्दार्थः। उत्त० ३४८।

दुहओवेइया- यत्र बाहवोरन्तारा दवे जानुनी कृत्वा  
प्रतिलिख्यते सा द्विधातो वेदिका। ओघ० ११०।

दुहइ- दुर्घटो दुःस्थगो दुर्निरोधः। उपा० २३। ज्ञाता० १३९।

दुःखितः-दुःखार्तो देहेन। विपा० ४१। दुःखार्तः-देहेन  
दुःखितः। विपा० ४१।

दुहण- दुघणम्। अनुयो० १७७। दुघणो-मुद्गरः। प्रश्न०  
२१। उपा० ४७। दुहणः-टक्करः। प्रश्न० ४८।

दुहत्ता- दुःखिता-दुःखितत्वं दुःखकारित्वं वा द्रोहकत्वं  
वा। स्था० ३९९।

दुहतोणंतए- द्विधा-आयामविस्ताराभ्यामनन्तकं।  
द्विधाननन्तकं प्रतरक्षेत्रम्। स्था० ३४७।

दुहतोनिहसंठिया- उभयतो निषधसंस्थिता।  
उभयतोरथ-स्योभयोः पार्श्वयोर्यो निषधौ। बलीवर्द्धौ  
तयोरिव संस्थितं संस्थानं यस्या। सा। सूर्य० ७१।

दुहतोवत्तो- द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३१।

दुहतोऽवि- द्वावपि। उत्त० ५१७।

दुहसिज्ज- दुःखशय्यातः-नरकादिभवात्। आचा० ४३१।

दुहसेज्जा- दुःखदाः शय्या दुःखशय्याः ताश्च  
द्रव्यतोऽतथा-विधखट्वादिरूपाः भावतस्तु  
दुःस्थचित्ततया दुःश्रमणता-स्वभावाः-प्रवचनाश्रद्धान १  
परलाभप्रार्थन २ कामाशंसन ३ स्नानादिप्रार्थन ४  
विशेषिताः। स्था० २४७।

दुहिलं- दुहिलं-द्रोहस्वभावम्। सूत्रदोष विशेषः। कलुषं वा  
येन पुण्यपापयोः समताऽऽपादयते। आव० ३७५।  
द्रोहवत्। प्रश्न० ११७। द्रोहणशीलो-द्रोग्धा। उत्त० ३४६।

दूआ- दूताः-अन्येषां राज्यं गत्वा राजादेशनिवेदकाः।  
जम्बू० १९०।

दूइ- दूती-परसन्दिष्टार्थकथिका, उद्पादनादोषे द्वितीय।  
पिण्ड० १२१।

दूइजित्तए- द्रोतुं विहर्तुमित्युत्सर्गः। स्था० ३१०।

दूइजित्ता- विहृत्य। सूत्र० ४१८।

दूइज्जंत- परिभ्रमन्। उत्त० ४३१। द्रवन्-वसन्। औप०  
४८।

दूइज्जंतयगामं- द्वितीयान्तकग्रामं-  
पाखण्डिगृहस्थग्रामम्। आव० १८९।

दूइज्जइ- विहरति। ओघ० ६०।

दूइज्जति- रीइज्जति। निशी० १४६ आ।

दूइज्जमाण- द्रवन्-गच्छन्। भग० १०। आचा० ३२४,  
३२६। विहरन्। सूत्र० ८७। गच्छन्। ज्ञाता० ८। दूयमानः-  
अनेकार्थत्वाद्वातूनां विहरन्, एकाकीनः साधुः। आचा०

२१४। गच्छन्। व्यव० २२अ।  
 दूइपलासए- वणिग्ग्रामे चैत्यविशेषः। उपा० १।  
 दूइपलासे- वणिग्ग्रामे उद्यानविशेषः। विपा० ४५।  
 दूएक्काए- दूतकार्यम्। आव० २१४।  
 दूओ- दूतः। उत्त० ३०२।  
 दूढा- दुग्धा। व्यव० ३४५आ।  
 दूता- द्रुवन्तः-ग्रामानुग्रामं गच्छन्तः। बृह० १८४अ।  
 दूतिपलासए- वणिग्ग्रामे चैत्यविशेषः। भग० ५०१, ७५८।  
 दूतिपलासते- वणिग्ग्रामे चैत्यविशेषः। अन्त० २३।  
 दूतिपलासे- वणिग्ग्रामे चैत्यविशेषः। भग० ४३९, ५२३।  
 दूतिपिंडो- गिहिसंदेसगं णेति आणेति वा जं तं णिमित्तं  
 पिंडं लभति सो दूतिपिंडो। निशी० ९६अ।  
 दूबलियापूसमित्तो- दुर्बलिकापुष्पमित्रः। आव० ३०७।  
 दूभग- अणवकारी वि दूभगणामकम्मोदयातो परस्स  
 अरुइकरो दूभगो। निशी० ११७अ।  
 दूभगसत्ताए- दुर्भगः सत्त्वः-प्राणी यस्याः सा। ज्ञाता०  
 १९९।  
 दूभगनिंबोलियाए- निम्बगुलिकेव-निम्बफलमिव  
 अत्यनादेय-त्वसाधर्म्यात् दुर्भगाणां मध्ये निम्बगुलिका  
 दुर्भगनिम्बगुलिगा। दुर्भगानां मध्ये निर्बोलिता-  
 निमज्जिता दुर्भगनिर्बोलिता। ज्ञाता० १९९।  
 दूमगं- दावकं-उपतापकम्। प्रश्न० ४१।  
 दूमण- दवनं-उपतापः। प्रश्न० २२। दुर्मनसः-दुष्टमनः  
 कारिण उपतापकारिणो वा शब्दादयो विषयाः। सूत्र० ६८।  
 धवलनम्। व्यव० ७अ।  
 दूमिय- दूमितं-धवलितम्। भग० ५४०।  
 सुधापङ्कधवलितम्। सूर्य० २९३।  
 दूमिया- सुकुमारलेपेन सुकुमारीकृतकुड्या सेटिकया  
 धवली-कृतकुड्या च। बृह० ९२अ।  
 दूय- दूतः-अन्येषां राजादेशनिवेदकः। भग० ३१९।  
 दूयत्ता- दूतता। उत्त० ११५।  
 दूयेत्- गच्छेद्। आचा० ३८२।  
 दूर- अत्यर्थम्। प्रश्न० ६३। दूरं-विप्रकृष्टम्। भग० १३।  
 विप्रकर्षः। ज्ञाता० ९।  
 दूरगती- दूरगतिः। भग० १३२।  
 दूरमूलं- अनादिकम्। भग० २१७।  
 दूरमोगाढे- दूरमधोऽवगाहय। ओघ० १२३।

दूरल्लकूविए- दूरीयकूपिका-भृगुकच्छहरण्यां  
 ग्रामविशेषः। आव० ६६४।  
 दूरालय- दूरे-सर्वहेयधर्मभ्य इत्यालयो दूरालयः मोक्षः।  
 आचा० १६९।  
 दूरल्लकूविया- दूरीयकूपिका-भृगुकच्छहरण्यां  
 ग्रामविशेषः। आव० ६६५।  
 दूरूव- दूरुपं-विरूपम्। भग० ४७०।  
 दूर्वा- हरितविशेषः। आचा० २८५।  
 दूसं- वस्त्रम्। आचा० ३४७। भग० ७९। दूष्यं-वस्त्रजातिः।  
 जीवा० २८०। वत्थं। निशी० ११८आ।  
 दूसणा- दूषणा-आम्लरसता। बृह० १९४आ।  
 दूसणयं- दूष्यपञ्चकम्। आव० ६५२।  
 दूसमदूसमा- दुःषमदुःषमः-एकविंशतिवर्षसहस्रप्रमाणः  
 कालः। भग० २७६।  
 दूसमसूसमं- दुष्पमसुषमा-चतुर्थारकप्रतिभागः। स्था०  
 ७७।  
 दूसमसूसमा- दुःषमसुषमः। भग० २७५।  
 दूसमा- दुष्टु समा दुष्पमा-दुःखरूपा। स्था० २७। दुःषमः-  
 एकविंशतिवर्षसहस्रप्रमाणः कालः। भग० २७६।  
 दूसरनाम- दुःस्वरनाम यदुदयवशात् स्वर  
 श्रोतृणामप्रीयते तत्। प्रज्ञा० ४७४।  
 दूसरयण- दूष्यरत्नं-प्रधानवस्त्रम्। जम्बू० १८९।  
 दूसहनिसड्ड- दुस्सहदत्त। मरण० ।  
 दूसि- देशी० दूष्यं-मथितं तक्रम्। प्रज्ञा० ३५९।  
 दूसिकादि- अच्छिमलो। निशी० १९०आ।  
 दूसियं- दूषितं-कलुषितम्। आव० ८४८।  
 दूसी- दूषितः-नपुंसकपुरुषयोः नपुंसकस्त्रीवेदयोर्निन्दकः।  
 बृह० ७आ। दूसितो वेदो जस्स स दूसी भण्णति, दोसु  
 वा थीपुरिसवेदेसु रज्जति जो सो वा दूसी, दो वा  
 थीपुरिसवेदे सेवति जो सो दूसी, जो थीपुरिसवेदो दूसति  
 सो वा दूसी। निशी० ३१अ।  
 दूसेइ- दूष्यं-वस्त्रजातिः। जम्बू० १२२।  
 दूतिः- बस्तिः। भग० ८२।  
 दूतिकारा- देयडाः। प्रज्ञा० ५८।  
 दूप्तः- मत्तः। उत्त० २४६।  
 दूढप्रहारि- कर्मवशकारके दृष्टान्तः। बृह० ७०अ।  
 दूढमित्रः- धनमित्रसार्थवाहस्य मित्रम्। बृह० ३०८आ।

दृष्ट- शिला। उत्त० ६८९।

दृष्टपरमार्थसारः- दृष्टः-उपलब्धः परमार्थाय-मोक्षाय  
सारः प्रस्तावात्क्षान्त्यादिरूपः प्रधानोपायः परमार्थानां  
वा-ज्ञाना-दीनां सारः-प्रधानं येनासौ दृष्टपरमार्थसारः।  
उत्त० ५३२।

दृष्टपाठी- दृष्टः-उपलब्धश्चरकसुश्रुषादिर्येन स। ओघ०  
४२, ७४।

दृष्टसाधर्म्यवत्- त्रिविधानुमाने तृतीयमनुमानम्। भग०  
२२२।

दृष्टिपथप्राप्तता- चक्षुर्विषयः, चक्षुःस्पर्शः पुरुषच्छाया  
इत्ये-कार्थाः। जम्बू० ४४२।

दृष्टिपात- नानाविद्यास्थानं शास्त्रम्। आचा० ४१९।

दृष्टिरागः- अप्रशस्तपरिणामविशेषः,  
प्रावादुकशतानामात्मी-यात्मीयदर्शनानुरागो दृष्टिरागः।  
आव० ३८७।

दृष्टिवाद- सञ्ज्ञाया द्वितीयो भेदः। सम० १८।

दृष्टिविपर्यासिका- दृष्टेः-बुद्धेर्विपर्यासिका  
दृष्टिविपर्यासिका मतिभ्रम इत्यर्थः। सम० २५।

दृष्टिविपर्यासिता- दृष्टेः-बुद्धेर्विपर्यासिता  
दृष्टिविपर्यासिता मतिभ्रम इत्यर्थः। सम० २५।

दृष्टिविपर्यासितादण्डः- मित्रादेरमित्रादिबुद्ध्या  
विनाशनम्। प्रश्न० १४३।

देउल- देवकुलम्। व्यव० २०५अ।

देउलदरिसणं- देवकुलदर्शनं युद्धप्रवेशे चामुण्डाप्रतिमाप्र-  
णमनम्। पिण्ड० १२९।

देउलिअ- देवकुलपरिपालिका वेषमात्रधारिणः। ओघ०  
४५।

देउलिया- देवकुलिकाः-यक्षादीनामायतनं तत्  
पार्श्ववर्तिनो वा मठाः। बृह० २३५अ। देवकुलिका।  
आव० ३५४।

देज्जं- देयं-अनाभवद्वातव्यम्। विपा० ३९।

देज्जा- दद्यात्-तदग्रतो ढौकयेत्। उत्त० २७२।

देमो- दग्धोभवदभिमतभ्यः। भग० ४७६।

देयडा- देयडाः-दितिकाराः। प्रज्ञा० ५६।

देवंधकार- तमस्कायस्य सप्तमं नाम। देवानामति  
तत्रोद्योता-भावेनान्धकारात्मकत्वाद् देवान्धकारम्।  
भग० २७०।

देवंधगार- देवानामप्यन्धकारोऽसौ तच्छरीरप्रभाया अपि  
तत्राभवतादिति देवान्धकारः। स्था० २१७।

देव- भगवत्याः त्रयोदशशते देवप्ररूपणार्थो द्वितीय  
उद्देशकः। भग० ५९६। दीव्यन्ति-स्वेच्छया क्रीडन्तीति  
देवाः। प्रज्ञा० ४३। देवाः-वैमानिकाः। भग० १३५। दैवः-  
वैमानिकः ज्योतिष्कः। दशवै० २४९। असंयतभाषायां  
दृष्टान्तः। आचा० ३८९। देवशब्देन दवा देव्यश्च  
गृहीता। सम० ६। भगवत्याः द्वादशशते देवभेदविषयो  
नवम उद्देशकः। भग० ५५२। वैमा-निको ज्योतिष्को वा।  
बृह० २६४अ। सामान्यः। अनुयो० २५। राजा। नन्दी०  
१५१। देवो गन्धिलविजये वक्षस्कारः। जम्बू० ३५७। देवः  
अकम्पितपिता। आव० २५५।

देवई- देवकी-कुष्णवासुदेवमाता। सम० १५२। आव० १६२।  
देवकी-वासुदेवमाता। आव० २७२। आगामिन्यामु-  
त्सर्पिण्यां एकादशस्य तीर्थङ्करस्यप पूर्वभवनाम।  
सम० १५४। देवकी-वसुदेवस्य द्वितीया राज्ञी। उत्त०  
४८९।

देवउत्ते- जम्बूद्वीपे द्वीपे ऐरावते  
आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां तीर्थ-ङ्करः। सम० १५४।

देवउल- देवकुलम्। आव० १९०। देवकुलं-देवस्थानम्।  
भग० २३७।

देवकम्मं- देवकर्म-पूर्वसाङ्गतिकदेवप्रयुक्ता क्रिया।  
जीवा० १३०।

देवकम्मणा- देवकर्मणा-देवक्रियया देवतानुभावेन  
शक्त्युप-घातः स्यादिति शेषः। देवश्च कर्मणं च  
तथाविधद्रव्यसंयोगो देवकर्मणम्। स्था० ३९४।

देवकम्मंविहि- देवकर्मविधिः-देवकृत्यप्रकारः  
चिन्तितमात्र-कार्यकरणरूपः। जम्बू० २१०।

देवकहकह- प्रभूतानां देवानां प्रमोदभरवशतः  
स्वेच्छावचनै-र्बोलः- कोलाहलो देवकहकहः। जीवा०  
२४८।

देवकहकहते- देवप्रमोदकलकलः। स्था० २४५।

देवकामा- काम्यन्ते-अभिलष्यन्त इति कामा देवानां  
कामाः देवकामाः-दिव्याङ्गनाङ्गस्पर्शादयः। उत्त०  
१८७।

देवकिब्बिस- देवानां मध्ये किल्बिषाः-पापा अत  
एवास्पृश्या-श्चण्डालप्रायास्तेषामियं दैवकिल्बिषी। बृह०

२१२ आ। देवकिल्बिषभावनाजनितो दैवकिल्बिषः।

स्था० २६४।

देवकी- वसुदेवपत्नी। सूत्र० ३०८। कृष्णमाता। प्रश्न० ७३।

परग्रामदूतीत्वदोषविवरणे धनदत्तदुहिता। पिण्ड० १२७।

देवकुंडि- देवकुलिका। आव० ४३२।

देवकुरा- दक्षिणेन देवकुरवः। स्था० ६९। देवकुरवो नाम कुरवः। जम्बू० ३५४। उत्तरपूर्वरतिकरपर्वतस्योत्तरस्या-

मीशानदेवेन्द्रस्य रामरक्षिताया अग्रमहिष्या राजधानी।

जीवा० ३६५। स्था० २३१। मेरोर्जम्बूद्वीपगतः दक्षिणतः

देवकुरु-नामा विदेहः। जम्बू० ३१०।

देवकुरु- वापीनाम। जम्बू० ३७०। देवकुरं-देवकुरुन्।

जम्बू० ३०८। देवकुरुः द्रहनाम। जम्बू० ३५५। देवकुरुकूटं

सौमनसवक्षस्कारपर्वते चतुर्थं कूटनाम। जम्बू० ३५३।

देवकुरुविद्युत्प्रभववक्षस्कारपर्वते तृतीयं कूटः। जम्बू०

३५५। देवकुरुः द्रहनाम। जम्बू० ३०८। नमिजिनस्य

दीक्षाशिबिका। सम्० १५१। देवकुरुः-कर्मभूमिविशेषः।

प्रज्ञा० ५०।

देवकुरुकूडे- देवकुरुनाम्ना कूटं विद्युत्प्रभववक्षस्कारपर्वते तृतीयं कूटनाम। जम्बू० ३५५।

देवकुरुदहे- देवकुरौ द्वितीयो महदद्रहः। स्था० ३२६।

देवकुलं- देवकुलं-दवालयः। आव० ५८१। देवकुलं- वनगहयारम्। ओघ० ५३। देवकुलं-सशिखरदेवप्रासादः।

प्रश्न० ८। प्रज्ञा० २७।

देवकुलिया- देवानां वातस्येवोत्कलिका देवोत्कलिका।

जीवा० २४८।

देवकूपः- अमरकूपसदृशमतीवोडं कूपम्। व्यव० २२४ अ।

देवगुप्ते- देवगुप्तः-परिव्राजकविशेषः। औप० ९१।

देवच्छन्द- देवच्छन्दको देवोपवेशस्थानम्। जम्बू० ७९।

देवच्छन्दकः। जीवा० २३४।

देवजण्णगो- देवयज्ञः। आव० ६७५।

देवजसे- अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य पञ्चममध्ययनम्। अन्त० ३।

देवजाणरहो- देवयानरथः। आव० ७४०।

देवजुती- देवानां-सुराणां द्युतिः-दीप्तिः

शरीराभरणादिस-म्भवा। युतिर्वा-

युक्तिरिष्टपरिवारादिसंयोगलक्षणा। स्था० १४२।

देवज्जगो- देवार्यकः। आव० २००।

देवज्जय- देवार्यः। आव० १९१।

देवड- जुगुप्सणीयः। व्यव० ४१९ आ। देवडिङ्गरः। व्यव० २३४ अ।

देवतमिस्से- देवतमिश्रं-अन्धकारम्, तमस्कायस्याष्टमं नाम। भग० २७०।

देवती- देवकी-वसुदेवराज्ञी। अन्त० ५।

देवदत्त- धायाः-परावर्तितद्वारे निलयश्रेष्ठिपुत्रः। पिण्ड० १००। अपध्यानाचरिते श्रावकोदाहरणम्। आव० ८३०।

देवदत्ता- रोहितनगरे दत्तसार्थवाहस्य दुहिता। स्था०

५०८। रोहीतकनगरे दत्तगाथापतिसुता। विपा० ८२।

चम्पानगर्या गणिका। ज्ञाता० ९२। गृहपतिसुता,

अन्तकुद्दशासु दुःख-विपाकानां नवममध्ययनम्। विपा०

३५। उदायनदेवीप्रभाव-तीसत्का दासी

सुवर्णगुलिकाऽपरनामा। प्रश्न० ८९। उज्ज-यिन्यां

गणिका। उत्त० २१८। वीतभये प्रभावत्या दासी। उत्त०

९६। देवदत्ता-पुरुषद्वेषिणी गणिकाविशेषः। दशवै०

१०८।

देवदारे- सिद्धायतनस्य प्रथमं द्वारनाम। स्था० २३०।

देवदालि- फलविशेषः। भग० ८०३।

देवदाली- वल्लीविशेषः। प्रज्ञा० ३२। वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३२। रोहिणी। प्रज्ञा० ३६४।

देवदालीपुष्पं- देवदालीपुष्पं-रोहिणीपुष्पम्। प्रज्ञा० ३६४।

देवदिन्न- धनसार्थवाहपुत्रः। ज्ञाता० ८३।

देवदिन्ना- देवेन-दत्ताः-सुलसापुत्राः-देवदत्ताः। आव० ६७६।

देवदीवो- देवद्वीपः-द्वीपविशेषः। जीवा० ३२१।

देवदुन्दुहिसणाहो- देवदुन्दुभिसनाथः-दिव्यः शब्दविशेषः। आव० ४८८।

देवदुहुदुदुकं- देवानुकरणवचनम्। जीवा० २४८।

देवदूसजुयलं- देवदुष्ययुगलं-देववस्त्रयुग्मम्। जीवा० २५३। जम्बू० ४२०।

देवदेव- देवदेवः। आव० २२१। शक्रादिः। आव० ७९०, २२१।

देवपडिक्खोभे- देवप्रतिक्षोभः, परिक्षोभहेतुत्वात् तमुकायस्य द्वादशमं नाम। भग० २७१।

देवपलिक्खोभेति- कृष्णराजेरष्टमं नाम। स्था० ४३२।

देवपलिहे- कृष्णराजेः सप्तमं नाम। स्था० ४३२।

देवपव्वते- चतुर्थो वक्षस्कारपर्वतः। स्था० ३२६।

देवपव्वया- पर्वतविशेषः। स्था० ८०।  
 देवफलिहे- देवपरिघः देवानां भयोत्पादकत्वात्  
 तमुकायस्य एकादशमं नाम। भग० २७१।  
 देवभद्रो- देवभद्रः-देवे द्वीपे पूर्वाद्धाधिपतिर्देवः। जीवा०  
 ३७०।  
 देवभूयं- मरणम्। स्था० ४२३।  
 देवमणि- देवमणिनामा हयानां महालक्षणतया प्रसिद्धः।  
 जम्बू० २३७।  
 देवमल्ले- देवानां सम्बन्धि माल्यं देवमाल्यं वल्यादि।  
 आव० २३०।  
 देवमहाभद्रो- देवमहाभद्रः देवे द्वीपेऽपराद्धाधिपतिर्देवः।  
 जीवा० ३७०।  
 देवमहावरो- देवमहावरः देवे समुद्रेऽपराद्धाधिपतिर्देवः।  
 जीवा० ३७०।  
 देवयं- देवभावो देवता सैव दैवतम्। उत्त० २८२। दैवतं-  
 पर-मदेवता। सूर्य० २६७।  
 देवयपूआ- देवतापूजा यथाभक्तिबल्याद्युपचाररूपा।  
 दशवै० २४०।  
 देवयाभिओगो- देवताभियोगः। आव० ८११।  
 देवर- देवा। आव० ३४५। देवा-पतिलघुभ्राता। आव० ८२४।  
 देवरई- साकेतपुरेशः, नदीक्षिप्तः। भक्त०।  
 देवरन्नेति- देवानामरण्यमिव बलवद्भयेन  
 नाशनस्थानत्वाद् यः स देवारण्यमिति। स्था० २१७।  
 देवरमणं- साहंजनीनगर्यामुद्यानम्। विपा० ६५।  
 सुघोषनगरे उद्यानम्। विपा० ९५।  
 देवराजः- आधायाः प्रामित्यद्वारविवरणे कोशलाविषयये  
 कुटु-म्बी, सम्मतसाधुजननः। पिण्ड० ९८।  
 देवराय- देवराजः-इन्द्रः। आव० ५६६।  
 देवर्द्धि- देवनामिव ऋद्धिर्देवस्य वा राज ऋद्धिः देवर्द्धिः।  
 जम्बू० २४६।  
 देवलासुओ- देवलासुतः-सर्वकामविरक्तताविषये  
 उज्जयिनी-पतिः। आव० ७१४।  
 देवलोए- देवलोकः-भवनपत्याद्याश्रयरूपः। जम्बू० १२७।  
 देवलोग- देवलोकः-देवाश्रयः। भग० ३७।  
 देवलोगपरिगृहिय- देवलोकः-  
 भवनपत्याद्याश्रयरूपस्तथाक्षे-  
 त्रस्वाभाव्यतस्तद्योग्यायुर्बन्धनेन परिगृहीतो येन स

देवलोक-परिगृहितः। जीवा० २८४।  
 देववरो- देवरः-देवसमुद्रे पूर्वाद्धाधिपतिर्देवः। जीवा०  
 ३७०।  
 देववूढा- देवानां व्यूहः सागरादिसाङ्ग्रामिकव्यूह इव यो  
 दुरधिगम्यत्वात् स देवव्यूहः। स्था० २१७।  
 देववूहे- देवानां दुर्भेदत्वाद् व्यूह इव चक्रादिव्यूह इव  
 देवव्यूहः। भग० २७०।  
 देवशर्मा- द्रव्यपूतिनिरूपणे समिल्लपुरे यक्षपूजकः।  
 पिण्ड० ८३। योगद्वारविवरणे कुलपतिः। पिण्ड० १४४।  
 देवशर्मा- आधाया-अभ्याहृतविवरणे शालिग्रामे मङ्खः।  
 पिण्ड० ९७।  
 देवसन्निवायं- देवानां संनिपातः-समागमो रमणीयत्वाद्  
 यत्र स तथा तं देवसन्निपातः-देवसमागमः। भग० १२७।  
 देवसंमो- देवशर्मा ब्रह्मणविशेषः। आव० ४२८।  
 देवसन्नती- देवसंज्ञप्तिः-देवप्रतिबोधनाद्या सा। स्था०  
 ४७४।  
 देवसन्निपाते- देवसन्निपातो-देवसमवायः। स्था० २४५।  
 देवसमुद्रो- देवसमुद्रः। जीवा० ३२१।  
 देवसम्मं- जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अस्यामवसर्पिण्यां  
 द्वादशः तीर्थङ्करः। सम० १५३।  
 देवसिओ- दैवसिकः। आव० ७७८।  
 देवसिणाए- देवस्नातकः-देवरेष्ठो बहूनामुपजीव्यः। सूत्र०  
 ३२६।  
 देवसेण- नृपतिविशेषः। भग० ६८८। स्था० ४५९।  
 देवस्सुए- जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां  
 षष्ठः तीर्थङ्करः। सम० १५३।  
 देवा- दिवं-आगासं तंमि जे वसंति ते। दशवै० ८।  
 वैमानिकज्योतिष्कलक्षणाः। स्था० ४६५। ज्योतिष्कवै  
 मानिकाः। उत्त० ४३०। दीव्यन्ति इति देवाः वैमानिक-  
 ज्योतिष्काः। स्था० २२, १४२। दीव्यन्ति क्रीडन्तीति देवा  
 भवनपत्यादयः। यदि वा दीव्यन्ते स्तूयन्ते  
 जगत्त्रयेणापीति अर्हन्तः। उत्त० ६१६। दीव्यन्ति क्रीडां  
 कुर्वन्ति दीव्यन्ते वा स्तूयन्त वाऽऽध्यतयेति देवाः।  
 भग० ५८५। वैमानिका ज्योतिष्कवैमानिका वा। स्था०  
 १०४। देवाः-देवासुराः। दशवै० २२२। आराध्याः  
 क्रीडाकान्त्यादियुक्ता वा। भग० ५८५।  
 देवाइदेवा- देवान् शेषानतिक्रान्ताः

पारमार्थिकदेवत्वयोगाद्देवाः देवातिदेवाः। भग० ५८५।  
**देवाणंदे-** जम्बूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां  
 चतुर्विंशः तीर्थङ्करः। सम० १५४।  
**देवाणंदा-** देवानन्दा श्रीमहावीर-प्रथममाता। अन्त० ६।  
 भग० ३१८, ५५७। चतुर्दरात्रीनाम। जम्बू० ४९१।  
 देवानन्दा पञ्चदशी रात्रिनाम। सूर्य० १४७। निर० ३५।  
**देवानुप्पिआ-** देवानुप्रिया-ऋजुस्वभावाः। जम्बू० २३२।  
 देवान्-स्वामिनोऽनुकूलाचरणेन अनुप्रीणन्ति इति  
 देवानु-प्रियाः। जम्बू० १६१।  
**देवानुप्पिए-** देवानुप्रियाः वन्द्यपादाः। जम्बू० २०३।  
**देवानुप्पिया-** प्रियामन्त्रणम्। भग० १०१। देवानुप्रियः  
 सरलस्वभावः। औप० २४।  
**देवातिदेवा-** देवानां मध्ये अतिशयवन्तो देवाः  
 देवाधिदेवाः-अर्हन्तः। स्था० ३०३।  
**देवानंदा-** ऋषभदत्तब्राह्मणस्य भार्या। आचा० ४२१।  
 निरत्यपरनाम पञ्चदशी रात्रिनाम। जम्बू० ४९२।  
 ऋषभद-त्तब्राह्मणपत्नी। सम० ८९। आव० १७७।  
**देवानुपूर्वी-** आनुपूर्वीविशेषः। प्रजा० ४७३।  
**देवानुभावं-** उत्तमवैक्रियकरणादिप्रभावम्। सम० १८।  
**देवामेव-** देवानेव भवनवास्यादीनेव। स्था० ३८४।  
**देवारन्ने-** देवारण्यं अन्धकारम्। तमःकायस्य नवमं  
 नाम। भग० २७०।  
**देवावासंतरा-** देवावासविशेषः। भग० ४९९।  
**देवाहिदेवा-** देवानां इन्द्रादीनामधिका देवाः  
 पूज्यत्वाद्देवाधि-देवाः। सम० ४३। देवानामधिकाः  
 पारमार्थिकदेवत्वयोगाद् देवा देवाधिदेवाः। भग० ५८३।  
**देवाहिवई-** देवाधिपतिः देवानां स्वामी। उत्त० ३५०।  
**देविंदामरभवनं-** देवेन्द्रस्येव अमरभवनं  
 देवेन्द्रामरभवनम्। आव० ३७२।  
**देवि-** भगवत्याः दशमे शते चमराद्यग्रमहिषीप्ररूपणार्थः  
 पञ्चम उद्देशकः। भग० ४९२।  
**देविले-** देविलः ऋषिर्यः  
 शीतोदकबीजहरितादिपरिभोगादेव सिद्धः। सूत्र० ९५।  
**देवी-** देविलः अरजिनमाता। आव० १६०। अरचक्रिमाता।  
 आव० १६१। समस्तान्तःपुरप्रधाना भार्या सकलगुणधार-  
 णात्। सूर्य० २। अग्रमहिषी। उत्त० ४५०। कृताभिषेका  
 पट्टराज्ञी। जम्बू० १४। गृहिणी। उत्त० ४८४।

**देवुककलिताते-** देवोत्कालिका देवलहरिः। स्था० २४५।  
**देवेन्द्रावग्रहः-** अवग्रहस्य प्रथमो भेदः। आव० १५६।  
 आचा० १६४।  
**देवोववाए-** जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां  
 त्रयो-विंशः तीर्थङ्करः। सम० १५४।  
**देशकाङ्क्षा-** एकं दिगम्बरादिदर्शनमभिकाङ्क्षते प्रजा०  
 ६०।  
**देशकालाव्यतीतं-** देशकालाव्यतीतत्वं। प्रस्तावोचितता,  
 चतुर्दशो वचनातिशयः। सम० ६३।  
**देशदर्शनावरणीयं-** चक्षुचक्षुरवधिदर्शनावरणीयम्। स्था०  
 ९७।  
**देशमूलगुणप्रत्याख्यानम्-** पञ्चाणुव्रतानि। आव० ८०४।  
**देशशङ्का-** देशविषया शङ्का। आव० ८१४। समाने  
 जीवत्वे कथमेको भव्योऽपरस्त्वभव्य इति शङ्का।  
 दशवै० १०१ प्रजा० ६०।  
**देशिककुटी-** यच्च बहुनामागंतुकानां जनानां स्थानम्।  
 बृह० ९३अ।  
**देशीभाषा-** देशभेदेन वर्णावलीरूपा। ज्ञाता० ४२।  
**देशोत्तरगुणप्रत्याख्यानं-**  
 गुणव्रतत्रयशिक्षाव्रतचतुष्टयभेद-भिन्नम्। आव० ८०४।  
**देस-** षड्भागः। बृह० ८५आ। देशः-खण्डांशः। भग० २७८।  
 देशे-स्थाने। जम्बू० ३३९। देशः-मण्डलम्। पिण्ड० १६२।  
 हत्थसयं। निशी० १८७आ। एक्का-पसती दो वा तिणि  
 वा पसतीतो देसो भण्णति। निशी० ११२अ। देशः-  
 नानाव्रीहिकोद्रवकङ्ग-गोधूमादिनिष्प-त्तिभाक्। आव०  
 ८३७। देशः-प्रदेशः। सूर्य० ९८। देशः-लघु। आव० ६३६।  
 हस्तशतप्रमितं क्षेत्रम्। पिण्ड० १०५। दुशः-भूभागः।  
 आव० ७७४। दिश्यतेप्रदेशापेक्षया सामान-  
 परिणतरूपत्वेऽपि देशापेक्षायां  
 असमानपरिणतिमाश्रित्य विशिष्टरूपतया विवक्ष्यते-  
 उप-दिश्यत इति देशः-त्रिभा-गचतुर्भागादिः। उत्त०  
 ६७२। देशः-द्रव्यदेशः। भग० ८५। भूमेर्महत्खण्डम्। भग०  
 ३८१। देशास्तु लघवः भागाः। जम्बू० १४४।  
**देसकंखा-** देशकाङ्क्षा एकं दर्शनं काङ्क्षति  
 दिगम्बरदर्शनादि। दशवै० १०२।  
**देसकहा-** लाटादिदेशसम्बन्धेन स्त्रीणां वर्णनं देशकथा।  
 प्रश्न० १३९। देशस्य जनपदस्य कथा देशकथा। स्था०

२०९। आव० ५८१।

**देसकालमि-** देशकाले भिक्षावेलायां प्राप्तार्या। ओघ०

१५५।

**देसकाल-** देशकालः देशः प्रस्तावोऽवसरो विभागः पर्यायः

इत्यनर्थान्तरं अभिष्टवस्त्ववाप्त्यवसरः कालः। दशवै०

९। प्रस्तावः। ज्ञाता० १३६। देशकालः। आव० २०३।

**देसगंग-** देशान्तम्। ज्ञाता० १९५।

**देसच्चागी-** अवराहेण पडिसेवित्तेण

णाणदंसणचरित्ताण किंचि धरति सा वि देसच्चागी।

निशी० १०० अ।

**देसच्छन्दकहा-** देशे छन्दो-गम्यागम्यविभागः तस्य कथा

देशच्छन्दकथा। स्था० २१०।

**देसजई-** देशयतिः श्रवाकः। आतु०।

**देसण्णाणे-** देशज्ञानं-विवक्षितद्रव्यं देशतो यदा न

जानाति देशाज्ञानमकारप्रश्लेषात्। स्था० १५४।

**देसतेणो-** सदेसपरदेसे वहरंतो। निशी० ३८ आ।

**देसदेस-** हत्थसता आरतो देसदेसो। निशी० १८७ आ।

जीवा० १४०। दशभागः। बृह० ८५ आ। देशदेशः-

हस्तशतादाराद्धस्तशतमध्यदेशः। पिण्ड० १०५।

**देसधम्मो-** देशधर्मः देशाचारः। स च प्रतिनियत एव

नेपथ्यादिलिङ्गभेदः। दशवै० २२।

**देसनाणावरणिज्जे-** देशज्ञानावरणीयं देशं

ज्ञानस्याऽऽभिनि-बोधिकादिमावृणोतीति

मत्याद्यावरणं तु घनातिच्छादितादि-

त्येषत्प्रभाकल्पस्य केवलज्ञानदेशस्य

कटकट्यादिरूपावरणतुल्यमिति देशावरणम्। स्था०

९७।

**देसनेवत्थकहा-** देशे नेपथ्यं स्त्रीपुरुषाणां वेषः

स्वाभाविको विभूषाप्रत्ययश्च तस्य कथा

देशनेपथ्यकथा। स्था० २१०।

**देशबंध-** द्वितीयादिषु समयेषु तान् गृह्णाति विसृजति

चेत्येवं देशबन्धः। भग० ४००।

**देसभाए-** देशभागः-विभागः। अनुत्त० ६।

**देसभाग-** देशभागः-देशविशेषः। जीवा० १५९। देशभागाः

देशविशेषाः। प्रज्ञा० ८६। देशभागाः देशा एव। औप० ५।

**देसयं-** देशकं प्रवर्तकम्। प्रश्न० ११५।

**देसविकप्पकहा-** देशे विकल्पः-सस्यनिष्पत्तिः

वप्रकृपादि-देवकुलभवनादिविशेषश्च तस्य कथा

देशविकल्पकथा। स्था० २०९।

**देसवित्थारणंतए-** क्षेत्रस्य यो रुचकापेक्षया

पूर्वादयन्यतरदि-ग्लक्षणो देशस्तस्य विस्तारो

विष्कम्भस्तस्य प्रदेशशापेक्षया अनन्तकं

देशविस्तारानन्तकम्। स्था० ३४७।

**देसविरए-** देशविरतः-संयतासंयतः। प्रज्ञा० ३९२।

**देसविहिकहा-** देशे मगधादौ विधिः-विरचना

भोजनमणिभू-मिकादीनां भुज्यते वा यद्यत्र

प्रथमतयेति देशविधिस्तत्कथा देशविधिकथा। स्था०

२०९।

**देससंका-** देशशङ्का तु किं विद्यन्ते अप्कायादयो जीवाः

?। आचा० ४३।

**देससामंतोवणिवाइया-** देशसामन्तोपनिपातिकी प्रेक्षकान्

प्रति यत्रैकदेशेनागमो भवत्यसंयतानां सा क्रिया। आव०

६१३।

**देससिणाण-** देशस्न्नानं

अधिष्ठानशौचातिरेकेणाक्षिपक्षमप्रक्षा-लनम्। दशवै०

११६।

**देसा-** आदेशाः। सूत्र० २६७।

**देसारक्खिओ-** चोरोद्धरणिकः। निशी० १९५ आ।

विषयारक्षिकः। निशी० १७६ आ।

**देसारक्खी-** देशारक्षकः-महाबलाधिकृतः। बृह० ३३ अ।

**देसावगसियं-** देशे-दिग्व्रतगृहीतस्य दिक्परिमाणस्य

विभागे अवकाशः-अवस्थानमवतारो विषयो यस्य

तद्देशावकाशं तदेव देशावकाशिकं-दिग्व्रतगृहीतस्य

दिक्परिमाणस्य प्रति-दिनं सङ्क्षेपकरणलक्षणं

सर्वव्रतसङ्क्षेपकरणलक्षणं वा। स्था० २३७।

दिग्व्रतगृहीतदिक्परिमाणस्यैकदेशः-अंशस्तस्मिन्नव-

काशः-गमनादिचेष्टास्थानं देशावकाशस्तेन निर्वृत्तम्

देशावकाशिकम्। आव० ८३५।

**देसि-** देशविशेषः। बृह० २०३ अ।

**देसिअत्तं-** देशिकत्वं-निपुणमार्गजत्वम्। आव० ३८३।

**देसिआ-** दर्शिता देशिता वा। दशवै० १८०।

**देसिए-** देशिता देशनं देशः कथनमित्यर्थः तदस्यास्तीति

देशिकः। आव० ९६।

**देसिओ-** देशिकः-निपुणमार्गजः। आव० ३८४। देशिकः

अग्रयायी। आव० ७७५।

देसिककदेशविरट्- देशैकदेशविरतिः-देशः-

स्थूरप्राणातिपातः एकदेशः तस्यैव

यथादृश्यवनस्पतिकायाद्यतिपातयोर्विरतिः-निवृत्तिः।

आव० ७८।

देसितो- परदेशवासी। निशी० ३४८ अ।

देसिनेवत्थं- देशीनेपथ्यम्। प्रज्ञा० ९६।

देसिय- दैवसिकं-दिवसनिर्वृत्तं प्रतिक्रमणम्। आव०

५६३। दैवसिकम्। उत्त० ५४५। देशिकं-बृहत्क्षेत्रव्यापि।

आचा० ३३३।

देसिल्लगं- देसविशेषोद्भवम्। बृह० २४१ अ।

देसी- देशीत्यङ्गष्टः। व्यव० २८६ अ। देशविशेषः। बृह०

२२८ अ।

देसेइ- दर्शयति। ज्ञाता० १६९।

देसेण- विवक्षितशब्दसमूहापेक्षया देशेन-देशतः

कांश्चिदि-त्यर्थः। स्था० ४७२।

देसेण सव्वं- देशेन च सर्वेण च यत् प्रवृत्तं देशेन सर्वम्,

देशेन-स्वावयवेन सर्वतः-सर्वात्मना। भग० ८४।

देसोवघायसमुदानकिरिया- देशोपघातसमुदानक्रिया यत्र

देशोपघातेन समुदानक्रिया क्रियते, यथा

कश्चित्कस्यचिद् इन्द्रियदेशोपघातं करोतीति। आव०

६१५।

देसोहि- अवधिप्रकाशयवस्तुनो देशप्रकाशो

अवधिर्देशावधिः। सम० १४५।

देसोही- देशावधिः सर्वजघन्यो मध्यमः। प्रज्ञा० ५३८।

देहंतर- देहान्तरः देहस्यावस्थाविशेषः। आचा० १३७।

देहबलिया- देहबलिमित्येतस्याख्यानं देहबलिका। ज्ञाता०

२००।

देह- आहारपरिणतिजनित उपचयः। अनुयो० २०। देहः-

अभे-दविवक्षया देही। भग० २९३।

देहए- देहति पश्यति। सूत्र० ३३।

देहजडसुद्धी- देहजाड्यशुद्धिः श्लेष्मादिप्रहाणतः। आव०

६६३।

देहपलोयणा- देहप्रलोकनं आदर्शादानाचरितम्। दशवै०

११७।

देहप्परिणाम- देहपरिणामः-प्रतिविशिष्टा शरीरशक्तिः।

आचा० ५०।

देहबलिया- देहबलिका वृत्तिविशेषः। विपा० ७४। आव०

३०४।

देहमाणी- प्रेक्षमाणा। भग० ४६०।

देहलाघवं- शरीरलाघवं यन्नातिकृशो जातिस्थूलः

शरीरेण। व्यव० १०२ आ।

देहव्वावी- देहव्वापी शरीरमात्रं व्याप्तुं शीलमस्येति

आत्मा। दशवै० १३३।

देहाः- पिशाचभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।

देहाणि- देहीदानीम्। उत्त० ३८१।

देही- जीवाः। अनुयो० २४४।

दैवविनियोगः- कर्मव्यापारः। नन्दी० ७२।

दोउयरियं- जलोदरिकम्। विपा० ७४।

दोकिरिता- द्वे क्रिये समुदिते द्विक्रियं तदधीयते

तद्वेदिनो वा द्वैक्रियाः कालाभेदन

क्रियाद्वयानुभवप्ररूपिणः। स्था० ४१०।

दोकिरिया- द्वे क्रिये शीतवेदनोष्णवेदनादिस्वरूपे एकत्र

समये जीवोऽनुभवतीत्येवं वदन्ति ये ते द्वैक्रियाः।

औप० १०६।

दोक्खरो- द्वयक्षरः-दासः। व्यव० ८७ आ।

दोगच्चं- दारिद्र्यं। निशी० ८१ आ। दौर्गत्यम्। आव० ३८५।

दोगुंछी- जुगुप्सी। उत्त० ८६। जुगुप्सते आत्मानमाहारं

विना धर्मधुराधरणाक्षममित्येवंशीलो जुगुप्सी। उत्त०

२६६।

दोगुंदगो- त्रायस्त्रिंशाः। उत्त० ४५१।

दोच्चं- चोरातिभयं। निशी० १३७ आ। चौरादिभयं। बृह०

२२४ आ।

दोच्चंग- द्वितीयाङ्गं मात्रकः। व्यव० १७४ आ। तीमनद्र-

वितरसम्। ओघ० १९२।

दोच्चंपि- द्विरपि। आव० २६२।

दोच्चंपिउग्गहं- केचिदाचार्या गृहस्थविषयं

द्वितीयमवग्रहमिच्छन्ति। बृह० ८९ अ।

दोच्चा- भयम्। बृह० १०९ अ। भयेन। ओघ० ५२।

दोच्चासतराङ्गिदिया- नवमी भिक्षुप्रतिमा। सम० २१।

दोच्चोग्गहो- ततो अम्हे पुणो आगंतुं तुब्भे दोच्चं जग्गहं

अणु-ण्णवेस्सामो, एसो दोच्चोग्गहो। निशी० १७० आ।

पुव्वं पडिहारितो दत्तो इदाणि णिदेज्ज देहित्ति, एस

दोच्चो-ग्गहो। निशी० १७७ आ।

**दोणमुह-** दोणमुखं प्रायेण जलनिर्गमप्रवेशम्। जीवा० ४०।  
 दोणमुखं-बाहुल्येन जलनिर्गमप्रवेशम्। प्रजा० ४८।  
 जीवा० २७९। जलस्थलनिर्गमप्रवेशम्। आचा० २८५।  
 जलपथ-स्थलपथोपेतम्। अनुयो० १४२। दोणयो-नावो  
 मुखमस्येति दोणमुखं-जलस्थलनिर्गमप्रवेशम्। उत्त०  
 ६०५। दोणमुखं जलस्थलपथयुक्तम्। प्रश्न० ६४। जलेण  
 थलेण दोसुवि मुहं दोणमुहं। निशी० २२९ अ। जलपथेन  
 स्थलपथेन द्वाभ्यामपि प्रकाराभ्यां भाण्डमागच्छति  
 तद्वयोः पथोर्मुख-मिति निरुक्त्यत्वात् दोणमुखम्।  
 बृह० १८१। दोणमुखः। सूत्र० ३०९।  
 जलपथस्थलपथोपेतम्। औप० ७४। भग० ३६। ज्ञाता०  
 १४०।

**दोणमुहमारी-** मारीविशेषः। भग० १९७।

**दोणमुहखं-** भग० १९३।

**दोणमुहाति-** दोणमुखानि येषां

जलस्थलपथावभावातस्तः। स्था० ८६।

**दोणाचार्यः-** आचार्यविशेषः। ज्ञाता० २५४।

**दोणा-द्रोणाः-** चतुःसेतिकाप्रमाणः। जम्बू० २४४। द्रोणः-

आढकचतुष्टयनिष्पन्नः। अनुयो० १५१।

**दोणि-** द्रोणी नौः। प्रश्न० ८।

**दोद्वियं-** तुम्बं। निशी० २९६ आ।

**दोद्वियकं-** तुम्बघटितं। निशी० १२३ अ।

**दोब-** म्लेच्छविशेषः। प्रजा० ५५।

**दोभासिअ-** द्वैभाषिकः। आव० ६१४।

**दोमणंसिया-** दौर्मनस्यं-शोकाद्यस्ति यस्याः सा

दौर्मनस्यिका तद्वा सञ्जातमस्या इति दौर्मनस्यिता।

स्था० ३१३।

**दोमिलिवी-** लिपिविशेषः। प्रजा० ५६।

**दोर-** सूत्रदवरकम्। आव० ४७४। दवरकः। ओघ० ९२।

**दोला-** चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। प्रजा० ४२।

**दोवई-** द्रौपदी-दुपदनृपस्य पुत्री। ज्ञाता० २०७। प्रजा० ४०६।

**दोवारिए-** दौवारिकः-प्रतीहारः राजदौवारिको वा। औप०

१४।

**दोवारिय-** दौवारिकः, प्रतीहारः। भग० ३१८।

**दोवारिया-** बारवाला। निशी० २७२ अ। दारे चेव णिविड्ढा

रक्खंति। निशी० २७१ अ।

**दोषपदः-** अपराधस्थानः। उत्त० २९०।

**दोस-** द्वेषः-अप्रीतिलक्षणः। आव० ८४८। दोषः-मालिन्य-  
 करणम्। औप० १६। दोषः रोगादिकः। सूर्य० २९७। दोषः-  
 मालिन्यकारिणी चेष्टा। जीवा० २७७। द्वेषः-अप्रीतिः।  
 आव० ५९७। अनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूपमप्रीतिमात्रं  
 द्वेषः। भग० ८०। दोषः गुणेतरः स  
 चातितादिदोषसामान्यापेक्षया विशेषः। स्था० ४९२।  
 द्वेषः। औप० ७९। अन्यथास्थिते हि वस्तुन्यन्यथा  
 भाषणं दोषः। प्रजा० २५५। द्वेषे निश्चितं मत्सरिणां  
 गुणवत्यपि निर्गुणोऽयमित्यादि। स्था० ४८९। द्वेषणं  
 द्वेषः दूषणं वा दोषः, स चानभिव्यक्तक्रोधमानलक्षण-  
 भेदस्वभावोऽप्रीतिमात्रम्। स्था० २६। दोषः-रागादिकः  
 पूर्वकृतं पापं वा द्वेषो वा। भग० १००। अप्रीतिमात्रम्।  
 ज्ञाता० ७७। दूषयति विशुद्धमप्यात्मनं विकृतिं नयतीति  
 दोषः कर्म। उत्त० ३७३। आत्मनः परस्य वा दूषणम्।  
 भग० ५७२। दोषः-दोषवान्। उत्त० ३०५। दोषः-दूषणः।  
 ज्ञाता० २०५।

**दोसकलिया-** द्वेषयुक्ता। ज्ञाता० १६७।

**दोसद्विरुवज्झाया-** दोषात्तर्तरोपाध्यायौ। आव० ४६५।

**दोसनिस्सिआ-** द्वेषनिसृता, मृषाभाषाभेदः। आव० २०९।

द्वेषनिसृता यत्प्रतिनिविष्टस्तीर्थकरादीनामप्यवर्णं  
 भाषते। प्रजा० २५६।

**दोसपउस-** दोषप्रदोषाः दोषाः इहैव मनस्तापादयः

प्रदोषाश्च परत्र नरकगत्यादयः। उत्त० २९०।

**दोसमहलो-** द्वेषमलिनः द्वेषाक्रान्तमूर्तिः। आव० ५८५।

**दोसमासकयं-** द्वाभ्यां द्विसङ्ख्याभ्यां माषाभ्यां

पञ्चरक्तिका-मानाभ्यां क्रियते-निष्पाद्यत इति

द्विमाषकृतम्। उत्त० २९७।

**दोसवत्तिया-** द्वेषप्रत्ययिकी, विंशतिक्रियामध्ये

एकोनविंशति-तमा। आव० ६१२।

**दोसा-** पारलौकिका अपायाः। बृह० २०४ आ।

**दोसापुरिया-** लिपिविशेषः। प्रजा० ५६।

**दोसिए-** दूष्यं पण्यमस्येति दौषिकः दूष्यव्यवहारी।

अनुयो० १४९।

**दोसिणं-** पर्युषितम्। ओघ० १०४, २५३।

**दोसिणा-** चन्द्रिका। प्रश्न० १६३।

**दोसिणाति-** ज्योत्सना। स्था० ८६।

**दोसिणापक्खो-** ज्योत्सनापक्षः शुक्लपक्षः। सूर्य० २३४।

**दोसिणाभा-** अष्टमोत्क्षेपस्य द्वितीयमध्ययनम्। *ज्ञाता०* २५२। सूर्यस्य द्वितीयाग्रमहिषी। *स्था०* २०४।  
 ज्योत्सनाभा चंद्र-स्य ज्योतिषेन्द्रस्य  
 द्वितीयाऽग्रमहिषी। *जीवा०* ३८४। *भग०* ५०५। चन्द्रस्य  
 द्वितीयाग्रमहिषी। *स्था०* २०४। ज्योत्सना भा चन्द्रस्य  
 द्वितीयाऽग्रमहिषी। *जम्बू०* ५३२।  
**दोसिया-** कर्मर्यभेदविशेषः। *प्रज्ञा०* ५६। वस्त्रवणिजः।  
*निशी०* २४४ अ। वत्थाणिविक्रया दोसिया। *निशी०* ४५  
 अ। दौषिकाः। *व्यव०* ३४० आ।  
**दोसिल्ल-** दोषयुक्तः। *भक्त०* ।  
**दोसीण-** पर्युषिते। *ओघ०* ६७। *निशी०* ७६ अ। दोषीनं-  
 मध्याह्नम्। *ओघ०* १४८। दोषान्नं रात्रिपर्युषितम्।  
*प्रश्न०* १६३। पर्युषितम्। *आव०* २२०, ४६२।  
 पर्युषितान्नम्। *आव०* २०१।  
**दोसीणवेला-** प्रभातवेला उषःकालः। *दशवै०* ३८।  
**दोहणं-** दोहनम्। *आव०* २२६।  
**दोहणवाडगो-** गोवीओ जत्थ दुज्झंति सा। *निशी०* १५९  
 अ।  
**दोहल-** दोहदो-मनोरथः। *ज्ञाता०* २५।  
**दोहारच्छेयणेणं-** द्वौ हारौ-भागौ यत्र छेदने द्विधा वा  
 कारः-करणं यत्र तद् द्विहारं वा। *भग०* ५३५।  
**दौवारिकः-** प्रतिहारः। *उत्त०* ३५४। *नन्दी०* ७३।  
**द्युतव्यसनं-** यत्तु द्युतविनोदेऽनवरतं दीव्यते तत्।  
*बृह०* १५७ अ।  
**द्रमकः-** नैष्ठुर्यवाचकः शब्दः। *दशवै०* २१५। रङ्कः। *नन्दी०*  
 १५६। ग्राममाश्रितस्तुन्दपरिभूजः। *आचा०* ३१४।  
**द्रमिला-** देशविशेषः। *व्यव०* २८ अ।  
**द्रवं-** पानकम्। *ओघ०* १०१।  
**द्रवकारिकाः-** परिहासकारिकाः। *ज्ञाता०* ४४।  
**द्रविडदेशजाः-** द्रविड्यः। *जम्बू०* १४१।  
**द्रव्यं-** ओदनादिकम्। *भग०* ६६३।  
**द्रव्यकायः-** द्रव्यमाश्रित्य कायः। *आव०* ७६७।  
**द्रव्यकात्स्न्यम्-** अशेषपर्याययुक्तम्। *उत्त०* ५५७।  
**द्रव्यकेतनं-** चालिनी परिपूर्णकः समुद्रो वेति। *आचा०*  
 १६३।  
**द्रव्यक्षणः-** द्रव्यात्मकोऽवसरो। *आचा०* १०९।  
**द्रव्यक्षुल्लकः-** परमाणुः। *दशवै०* १००।

**द्रव्यगर्हा-** मिथ्यादृष्टेरनुपयुक्तस्य सम्यग्दृष्टेश्च  
 द्रव्यगर्हा, अप्र-धानगर्हेत्यर्थः। *स्था०* ४३।  
**द्रव्यचूडा-** व्यतिरिक्ता सचिता कुर्कुटस्य अचित्ता  
 मुकुटस्य चूडामणिः मिश्रा मयूरस्य। *आचा०* ३२०।  
**द्रव्यतीर्थता-** द्रव्यतो नद्यादीनां समोऽनपायश्च भूभागो  
 भौतादिप्रवचनं वा। *स्था०* ३३।  
**द्रव्यनिवृत्तिः-** हलकृष्टादिनिवृत्तिः। *आव०* ५५३।  
**द्रव्यप्रत्ययः-** द्रव्यं च तत्प्रत्याय्यप्रतीतिहेतुत्वात्  
 प्रत्ययश्च द्रव्यप्रत्ययः-तप्तमाषकादिः। *आव०* २८०।  
**द्रव्यप्रत्युपेक्षणा-**  
 वस्त्रपात्राद्युपकरणानामनशनपानाद्याहाराणां च  
 चक्षुनिरीक्षणरूपा। *स्था०* ३६१।  
**द्रव्यप्राण-** इन्द्रियादयः। *प्रज्ञा०* ७।  
**द्रव्यमहद्-** अचित्तमहास्कन्धो दण्डादिकरणेन  
 यश्चतुर्भिः समयैः सकललोकमापूरयति। *उत्त०* २५५।  
**द्रव्यलेश्या-** कृष्णादिद्रव्याण्येव। *स्था०* ३२। जीवस्य  
 शुभाशुभपरिणामरूपा। *बृह०* २५६ अ।  
**द्रव्यश्रुतम्-** अक्षरश्रुतम्। *नन्दी०* १८८।  
**द्रव्यसुप्ताः-** निद्राप्रमादवन्तो द्रव्यसुप्ताः। *आचा०* १५२।  
**द्रव्यस्थानम्-** आकाशम्। *उत्त०* ४२२।  
**द्रव्यानुयोग-** अर्हद्वचनानुयोग तृतीयो भेदः-पूर्वाणि  
 सम्मत्या-दिकश्च। *आचा०* १।  
**द्रव्यावधिमरणं-** यानि नारकादिभवनिबन्धनतयाऽऽयुः  
 कर्मद-लिकान्यनुभूय म्रियते, यदि पुनस्तान्येवानुभूय  
 मरिष्यति तदा तद् द्रव्यावधिमरणम्। *उत्त०* २३२।  
**द्रव्यावीचिमरणं-**  
 यन्नारकतिर्यग्नरामराणामुत्पत्तिसमयात् प्रभृ-  
 तिनिजनिजायुः  
 कर्मदलिकानामनुसमयमनुभवनाद्विचटनं तत्।  
*उत्त०* २३१।  
**द्रव्यास्तिकः-** नयविशेषः। *सम०* ४२।  
**द्रव्येन्द्रियाणि-** निर्वर्त्युपकरणरूपाणि। *प्रज्ञा०* २३।  
**द्रव्योपक्रमः-** द्रव्यस्य नटादेः कालान्तरभाविनाऽपि  
 पर्यायेण सहेदानीमेवोपायविशेषतः संयोजनं, द्रव्येण  
 घृतादिना द्रव्ये भूम्यादौ द्रव्यतः घृतादेर्वा उपक्रमः।  
*अनुयो०* ४५। सचेतना-  
 चेतनमिश्रद्विपदचतुष्पदापदरूपस्य द्रव्यस्य परिकर्म

विना-शश्चेति। स्था० ४।  
 द्रव्यौधः- नदीपूरादिकः। आचा० १२४। सलिलप्रवेशः।  
 आचा० ४३१।  
 द्राक्षापानकं- पानकविशेषः। सूर्य० २९३।  
 द्रुतद्रुतगन्तृत्वं- असमाधिस्थानं द्रुतद्वयः। आव० ६५४।  
 द्रुतचारित्वं- प्रथममसमाधिस्थानम्। प्रश्न० १४४।  
 द्रुतनामा- द्वाविंशतितमो नाट्यविधिः। जीवा० २४७।  
 द्रुतविलम्बितं-  
 ऋषभसिंहललितहयगजविलसितमत्तहयग-  
 जविलसिताभिनीयरूपं एकादशं नाट्यम्। जम्बू० ४१६।  
 द्वाविंशतितमं नाट्यम्। ४१७।  
 द्रुतविलम्बितनामा- चतुर्विंशतितमो नाट्यविधिः। जीवा०  
 २४७।  
 द्रुपदः- काम्पिल्यपुरपतिः द्रौपदीपिता। प्रश्न० ८७।  
 द्रुपमन्त्रकं- उत्तराध्ययनानां दशममध्ययनम्। उत्त०  
 ३२०।  
 द्रौणं- त्रिटङ्कसौवर्णिकगणनापेक्षया  
 द्वात्रिंशत्शेरप्रमाणम्। जम्बू० २५२।  
 द्रोणमुखं- जलस्थलपथावुभावपि तद्। स्था० २९४।  
 जलनिर्गमप्रवेशम्। राज० ११४।  
 द्रोणमुखानि- सिन्धुवेलावलयितानि। जम्बू० १२१।  
 द्रोणिका- नौका। भग० २१९।  
 द्रोणी- जलपरिपूर्णा महती कुण्डिका। अनुयो० १५७। नौः।  
 दशवै० २२०। उत्त० ५०९।  
 द्रौपदी- द्रुपदचुलनीसुता धृष्टार्जुनकनिष्ठा। प्रश्न० ८७।  
 द्रवन्द्वः- कलहः। सूत्र० २३४।  
 द्वादशावर्तः- बारसावयं सूत्राभिधानगर्माः  
 कायव्यापारविशेषाः यतिजनप्रसिद्धा यस्मिंस्तद्  
 द्वादशावर्तम्। सम० २४।  
 द्वादशाङ्गं- द्वादशाङ्गानि यस्मिंस्तद्। सम० ५।  
 द्वात्रिंशद्दंडिका- लौकिकं त्वबद्धं श्रुतम्। उत्त० २०४।  
 द्वारं- अर्थागमस्योपायम्। सम० ५३।  
 द्वारघटना- वदनोपपत्तिः। जम्बू० २५९।  
 द्वारमुण्डकं- द्वारशिरः। जीवा० २२६।  
 द्वारवती- द्वारिका। नन्दी० १६१।  
 द्वारविधिः- द्वाराणां विधानम्। आव० ८६।  
 द्वारस्थगनं- कपाटमाश्रित्य। आचा० ३६९।

द्वारिका- कृष्णवासुदेवराजधानी। प्रश्न० ८८।  
 द्विखुरः- चतुष्पदभेदः। सम० १३५।  
 द्वितीयावग्रहः- गृहस्थहस्ताद् वस्त्रं गृहीत्वा  
 गुरुमूलमागम्य तेषां समर्प्य यदि ते तस्यैव प्रयच्छन्ति  
 तदायत्ते भूयोऽप्यवग्रहमनुज्ञाप्यन्त एष  
 द्वितीयावग्रहः। बृह० ८९ अ।  
 द्विदैवतं- विशाखायाः नाम। जम्बू० ४९९।  
 द्विधा-  
 रागद्वेषप्रकारद्वयेनात्मपरनिमित्तमैहिकामुष्मिकार्थं  
 वा। आचा० १६९।  
 द्विधातश्चक्रवालं- द्वयोः परस्परभिमुखदिशोर्जयम्।  
 नाट्ये प्रकारः। जम्बू० ४१५।  
 द्विधातोवक्रं- द्वयोः परस्परभिमुखदिशोः  
 धनुराकारश्रेण्या नर्तनम्। जम्बू० ४१५।  
 द्विधावेदिका- बाहणोरन्तरे द्वे अपि जानुनी कृत्वा।  
 स्था० ३६२।  
 द्विप्रभृतिरानवभ्यः- पृथुक्त्वम्। आव० ३१।  
 द्विपं- जलपथेन नावादि वाहनारूढं भाण्डमुपैति तत्  
 जलप-त्तनम्। बृह० १८१ आ।  
 द्वीपी- चित्रकः। जीवा० १८९।  
 द्वेषझञ्झा- अनिष्टाप्राप्तौ द्वेषझञ्झा। आचा० १७०।  
 द्वेषाक्रान्तमूर्तिः- द्वेषमलिनः। आव० ५८५।  
 द्वैधाभावमापन्नः- एवमिदं न चैवमितिमतिकः। स्था०  
 १७६।  
 द्वैपायनः- द्वैपायनऋषिः, व्यासः। दशवै० ३६।  
 द्वेषदृष्टान्तः। व्यव० १२ अ।  
 द्वौ- मूलधारणौ। बृह० ९२ अ।  
 द्वयक्षरकः- अक्षरकः, दासः। पिण्ड० ११०।  
 द्वयर्द्ध- द्वितीयं अर्द्धमस्येति। सम० ६९।  
 - x - x - x - x -  
 ध  
 धंत- बाढम्। महाप०। अचित्तस्य द्वितीयो भेदः। धंतो  
 दति-याइसु। ओघ० १३३। ध्मातः-अग्निसम्पर्केण  
 निर्मलीकृतः, अग्निसंयोगो वा। जीवा० १९१। यस्तु  
 ध्माते दत्यादौ स ध्मातः। स्था० ३३६। णिरायं। निशी०  
 ३२७ अ। अतिशयेन (देशी०)। बृह० २९७ अ। बृह० १३  
 अ। बाढम्। आव० ४०७। ध्मातः- अग्निसम्पर्कतो  
 निर्मलीकृतः। प्रज्ञा० ३६३।

**धंतधोयरूपद्वे-** ध्मातः- अग्निसम्पर्कतो निर्मलीकृतः,  
धौतो भूमिखरण्टिहस्तसम्मार्जनेनातिनिशितीकृतो यो  
रूप्यमयः पट्टः स ध्मातधौतरूप्यपट्टः। प्रणा० ३६१।

**धङ्गज्जुण-** युवराजविशेषः। द्रुपदचुलण्योः पुत्रः। ज्ञाता०  
२०७।

**धणञ्जय-** धनञ्जयः-सत्योदाहरणे शौर्यपुरे श्रेष्ठी। आव०  
७०५। धनञ्जयः-नवम दिवसनाम। सूर्य० १४७। जम्बू०  
४९०। धनञ्जयः-उत्तराभाद्रपदगोत्रम्। जम्बू० ५००।

**धणञ्जयसगोत्ते-** धनञ्जयसगोत्रम्। सूर्य० १५०।

**धणन्तरी-** धन्वन्तरिः-अप्रतिपतितविभङ्गः  
सप्तमपृथिवीनरक-गमनविषये व्यक्तिविशेषः। जीवा०  
४६०।

**धण-** द्वाविंशतीर्थकरस्य प्रथमभिक्षादाता। सम० १५१।  
धनः-राजगृहनगरे सार्थवाहः। आव० ३७०। धनः-चक्षु-  
रिन्द्रियान्तर्दृष्टान्ते चम्पायां माहेश्वरः  
सार्थवाहविशेषः। आव० ३९९। धनः-वसन्तपुरे  
सार्थवाहः। आव० ३८४। धनः-पाटलिपुत्रे श्रेष्ठी। आव०  
९३। धनं-सुवर्णादि। आव० २०८, ६६२। धनं-गुडशर्करादि,  
गोमहिष्यजाविकाकरभ-तुरगादि वा। आव० ८२६। धनं-  
गवादि, गणिमादि वा। औप० २७। सेट्टिविसेसो। निशी०  
३५१ आ। तंतूहिं समं। निशी० १३८ आ। धनं-  
गणिमादिकम्। भग० १३५। धनं-नरके दशमः  
परमाधार्मिकः। आव० ६५०।

**धणगिरी-** धनगिरिः-इभ्यपुत्रः। आव०। धनगिरिः-  
तुम्बवन-सन्निवेसे गाथापतिः। उत्त० ३३३, ३२१।

**धणगुत्त-** धनगुप्तः-महागिरिशिष्यः। आव० ३१७।  
धनगुप्तः-महागिर्याचार्याणां शिष्यः। उत्त० १६५।

**धणगुत्ता-** धनगुप्ताः-प्रायश्चित्तकरणविषये आचार्याः।  
आव० ७२४।

**धणगोत्र-** राजगृहे धनसार्थवाहपुत्रः। ज्ञाता० ११५।

**धणदत्त-** दन्तपुरे सार्थवाहः। व्यव० १०७ अ। धनदत्तः-  
परग्रामदूतीत्वदोषविवरणे कुटुम्बी। पिण्ड० १२७।  
आधायाः परावर्तितद्वारे तिलकश्रेष्ठिपुत्रः। पिण्ड०  
१००। मूलद्वारविवरणे चन्द्राननापुर्या सार्थवाहः।  
पिण्ड० १४४। सुसुमायाः पिता। नन्दी० १६६। धनदत्तः  
स्वयम्भूवासुदेवपूर्वभवः। आव० १६३। सम० १५३।  
धनदत्तः-पारिणामिक्यां बुद्धौ सुसुमायाः पिता। आव०

४३०।

**धणदेव-** धनदेवः मण्डिकपुत्र पिता। आव० २५५। राजगृहे  
धन्यसार्थवाहपुत्रः। ज्ञाता० ११५। धनदेवः-वर्द्धमानपुरे  
सार्थवाहः। विपा० ८८। वणिक्विशेषः। आव० १८९। उत्त०  
३७९।

**धणधन्नपमाणाङ्कमे-** धनाधान्यप्रमाणातिक्रमः।  
आव० ८२४, ८२८, २८५।

**धणपती-** धनपतिः विपादकशानां द्वितीयश्रुतस्कन्धे  
षष्ठमम-ध्ययनम्। विपा० ८९।

**धणपाल-** धनपालः इभ्यविशेषः। आव० २८९। राजगृहे  
धन्यसार्थवाहपुत्रः। ज्ञाता० ११५। धनपालः  
कौशाम्बीनगर्या अधिपतिः। विपा० ९५।

**धणमित्त-** धनमित्रः-योगसंग्रहे निरपलापदृष्टान्ते  
दन्तपुरनगरे वणिक्विशेषः। आव० ६६६। धनमित्रः-  
संवेगोदाहरणे चम्पायां सार्थवाहः। आव० ७०९।  
धनमित्रः-व्यक्तपिता। आव० २५५। धनमित्रः-  
उज्जयिन्यां वणिक्। उत्त० ८७। दंतपुरे सत्थवाहो।  
निशी० १२८ अ।

**धणरक्खिए-** राजगृहे धन्यसार्थवाहपुत्रः। ज्ञाता० ११५।

**धणवंता-** कोटिसङ्ख्यया हिरण्यं  
मणिमुक्ताशिलाप्रवालर-त्नानि च  
मणयश्चन्द्रकान्ताद्याः मुक्तामुक्तफलानि विद्रुमाणि  
रत्नानि कर्कतनादीनि ते ईदृशाः भवन्ति धनवन्तः।  
व्यव० १७१ अ।

**धणवड-** धनपतिः-वैश्रमणः। ज्ञाता० १००।

**धणवई-** धनपतिः-वसन्तपुरे श्रेष्ठिविशेषः। आव० ३९३।  
धनपतिः-शतद्वारनगरेऽधिपतिः। विपा० ३९।

**धणसंताणगो-** अपेहिण लूतापुङ्गवं संबज्झति। निशी०  
१८२ आ।

**धणसत्थवाहो-** धनसार्थवाहः। आव० ११४।

**धणसम्मो-** धनशर्मा-उज्जयिन्यां धनमित्रवणिक्पुत्रः।  
उत्त० ८७।

**धणसिद्धो-** धनश्रेष्ठि, श्रेष्ठिविशेषः। उत्त० २८६।

**धणसिरी-** धनश्रीः, संवेगोदाहरणे धनमित्रसार्थवाहभार्या।  
आव० ७०९। धनश्रीः-वसन्तपुरे धनपतिधनवाहभगिनी।  
आव० ३९३। धनदत्तभार्या। व्यव० १०७ अ। योगसंग्रहे  
निरपलाभदृष्टान्ते दन्तपुरनगरे धनमित्रवणिजो

धनश्रीर्भार्या। आव० ६६६। धणमित्तसत्थवाहस्स पढमा भज्जा। निशी० १२८आ।

**धणस्सेणे-** धनसेन-नन्दनबलदेवपूर्वनाम। आव० १६३।

**धणावह-** धनावहः-ऋषभपुरनृपतिः। विपा० ९४। धनावहः- कौशाम्ब्यां श्रेष्ठी। आव० २२२। धनावहः-राजगृहनगरे प्रधानः। आव० ३५३। धनावहः-वसन्तपुरे श्रेष्ठिविशेषः। आव० ३९३।

**धणिउज्जालियं-** धणिओज्ज्वालितं-

अत्यर्थमुज्ज्वालितम्। जीवा० २६७।

**धणिओ-** धनिकः-व्यवहारकः। बृह० ७०अ।

**धणिङ्गा-** द्वाविंशतितमो नक्षत्रः स्था० ७७। धनिष्ठा- श्रविष्ठा। सूर्य० १११। जम्बू० ५०६। तृतीयं नक्षत्रम्। सूर्य० २३०।

**धणितं-** बाढम्। आव० ८२०।

**धणिय-** अत्यर्थम्। ओघ० २२७। जीवा० २६७। सम्० १२६। प्रश्न० ५१। आव० ५८४। धनिकाः-स्वामिनः। सम्० ११६। गाढम्। प्रश्न० ५९। अत्यर्थम्। बृह० २१९आ। गाढतरम्। बृह० २२१आ। बाढम्। आतु०।

**धणियतरागं-** बाढम्। आव० ३९१। बाढतरम्। आव० ७०९।

**धणियबंधण-** गाढतरबन्धना, बद्धावस्था, निधत्तावस्था निकाचिता वा। भग० ३४।

**धणु-** धनुश्चतुर्हस्तम्। प्रजा० ४८। धनुः-दशमः परमाधार्मिकः। सूत्र० १२४। सम्० २९। धनुः- कोदण्डम्। उत्त० ३११। धनुः- शस्त्रविशेषः। आव० ६१३। धनुः-कुक्षिद्वयनिष्पन्नम्। अनुयो० १५६। धनुः- दण्डगुणादिसमुदायः। भग० २३०। हस्तचतुष्टयप्रमाणम्। जीवा० ४०। पञ्चदशसु परमाधार्मिकेषु दशमः। उत्त० ६१४।

**धणुओ-** धनुष्कः-ब्रह्मदत्तस्य सेनापतिः। उत्त० ३७७।

**धणुक्क-** धनुष्कं चतुर्हस्तः। अनुयो० १५४।

**धणुगृह-** धनुर्गृहः। जीवा० २८४। जम्बू० १२५। धनुर्गृहः- वातविशेषः। बृह० २१९आ। व्यव० १३८आ।

**धणुपिङ्ग-** मण्डलखण्डाकारं क्षेत्रम्। सम्० ७४।

**धणुपुङ्गे-** धनुःस्पृष्टम्। भग० २२९।

**धणुव्वेओ-** धनुर्वेदः। आव० ४२२।

**धणू-** षण्णवतिरङ्गुलानि धनुः। सम्० ९८। जम्बू० ९४। भग० २७५। धनुः। निर० १८।

**धण्ण-** राजगृहीनगरे धनश्रेष्ठी। व्यव० २६आ। धन्यः-

पार्श्वजिनप्रथमभिक्षादाता। आव० १४७। धन्यः-

अनुत्तरो-पपातिकदशानां तृतीयवर्गस्य प्रथमाध्ययनम्। अनुत्त० २। धन्यं, धर्मधनलब्धुः। भग० ११९। राजगृहे सार्थवाहः। ज्ञाता० ७९। चम्पानगर्या सार्थवाहः। ज्ञाता० १९३।

**धण्णकड-** विमलविनस्य प्रथमपारणकस्थानम्। आव० १४६।

**धण्णा-** धान्या-धान्यापत्राणि। जम्बू० २४४।

**धत्त-** डित्थवदव्युत्पन्न एव यदृच्छाशब्दः। आव० ४७७।

**धत्तरिङ्ग-** धातृराष्ट्रकः-कृष्णचरणाननो हंस एव। प्रश्न० ८।

**धनः-** धनः-मूलद्वारविवरणे श्रेष्ठः। पिण्ड० १४४। चतुष्प- दादि। उत्त० ३३९, ३६०। हिरण्यादि। उत्त० २६१।

**धनकं-** यद्गृहस्थस्य बहिरवस्थितगृहकुट्यादि। ओघ० ५७।

**धनद-** उत्तरद्वारपालनाम। जम्बू० २०९।

**धनदेवः-** विद्यामन्त्रद्वारविवरणं गन्धसमृद्धे नगरे भिक्षुपासकः। पिण्ड० १४१।

**धनप्रिया-** मूलद्वारविवरणे धनश्रेष्ठिपत्नी। पिण्ड० १४४।

**धनमित्त-** धनमित्रः-सार्थवाहः(दन्तानायी)। बृह० ३०८।

**धनवती-** आधायाः निशीथसम्भवे धनावहश्रावकपत्नी। पिण्ड० १०३। विपा० ९५।

**धनशर्म-** तृषापरीषहजेता। मरण०। धनश्रेष्ठी- स्नुषापरीक्षकः। व्यव० ३६आ।

**धनसार्थवाहः-** नामविशेषः। प्रजा० ३२९।

**धनावहः-** आधाया निशीथसम्भवे श्रावकः। पिण्ड० १०३।

**धनुः-** वरधनुपिता। व्यव० १९८आ।

**धनोत्सर्गः-** धनसम्पत्। स्था० १५२।

**धनोहसंचय-** धनं-कनकादिद्रव्यं, तस्यौघः-समूहस्तस्य सञ्चयो-राशीकरणं धनोघसञ्चयः। उत्त० ३३९।

**धन्नन्तरी-** धन्वन्तरी, कृष्णवासुदेववैद्यौऽभ्यः। आव० ३४७। धन्वन्तरीः-कनकरथराजोः राजवैद्यः। विपा० ७५। धन्वन्तरी-तापसभक्तः। आव० ३९१।

**धन्न-** धन्यः। भग० ६६२। धन्यः-धर्मधनलब्धा। भग० १२२। धन्यः-धनलब्धा। प्रश्न० ११६। धन्यः-ऋषभ- पुरस्य स्तूपकरण्डोद्याने यक्षः। विपा० ९४। धन्यः-ज्ञान

दर्शनचारित्रधनः साध्वादिः। आव० ४०७। धान्यं-त्रीहि-  
कोद्रवमुद्गमाषतिलगोधूमयवादि। आव० ८२६। धन्यः।  
आव० ६६७। धन्यः- भद्रासार्थवाह्याः पुत्रः। अनुत्त० ३।  
धान्यं-चतुर्विंशतिभेदम्। दशवै० १९३।

धन्यःधनावहत्वात्। ज्ञाता० ७६।

**धन्नग-** धान्यकं-कस्तुम्भरी। दशवै० १९३।

**धन्नदरा-** धण्णवासणा। निशी० १४७ आ।

**धन्नपुलागं-** निष्पावावल्लादीनि धान्यानि। बृह० २११  
अ।

**धन्नासालिभद्वा-** उपनालदं वैभारेऽनशनिनौ। मरण० ।

धन्ना-सुरादेवगाथापतेर्भार्या। उपा० ३४।

**धन्यक-** शालिभद्रभिगीनीपतिः। स्था० ४७४।

**धमण-** धमनं-महिष्यादीनां वायुपूरणादि। प्रश्न० २२।

धमानं महिष्यादीनां वायुपूरणम्। प्रश्न० ३८। भस्त्रा  
धमातः। आचा० ७४।

**धमणि-** धमनिः-नाडी। प्रश्न० ८।

**धमणिसंताए-** धमनीसन्ततः-नाडीव्याप्तः। भग० १२६।

ज्ञाता० ७६। धमनयः-शिरास्ताभिः सन्ततो व्याप्तो  
धमनि-सन्ततः। उत्त० ८४।

**धमणी-** धमनिः कोष्ठकहड्डान्तरम्। विपा० ४२।

**धमधमंतो-** धमधमायमानः। आव० १९६।

**धमनं-** फूत्कारणम्। दशवै० १५४।

**धमाससारे-** धमासासारः। प्रजा० ३६०।

**धम्मंतेवासी-** धम्मन्तेवासी-धम्मप्रतिबोधनतः शिष्यः,  
धर्मार्थितयोपसम्पन्नो वा। स्था० २४२। अन्ते-समीपे  
वस्तुं शीलमस्येत्यन्तेवासी, धर्मार्थमन्तेवासी  
धम्मन्तेवासी शिष्यः-इत्यर्थः। स्था० ५१६।

**धम्म-** धर्मः-दुर्गतौ प्रयतन्तं सत्त्वसङ्घातं धारयतीति,  
धर्मः पञ्चदशो जिनः, यस्मिन् गर्भगते सति जननी  
दानदयादिके-ष्वधिकारेषु जाती सुधम्मंति तेन  
धर्मजिनः। आव० ५०४। धर्मः-लोलुपतया  
तद्विषयग्रहणस्वभावः। प्रश्न० १३८। धर्मादनपेतः  
धर्म्यः-न धर्मातिक्रान्तः। उत्त० ६४। दुर्गतौ  
प्रपतन्तमात्मानं धारयतीति धर्मः। आव० १३४, २३६।  
जीवस्य स्वभावः धर्मः। दशवै० १२६। धर्मः-  
लोकश्रुतिः। पिण्ड० १४५। धर्मः-श्रुतचारित्रलक्षणः। भग०  
९०। धर्मः-श्रुतचारित्रात्मकः। उत्त० १७। धर्मः-

चारित्ररूपः। जीवा० २५६। धर्मः पर्यायो गुणो विशेषश्च।  
प्रजा० १७९। धर्म्य-न्यायः। व्यव० २०१ अ।

धर्मास्तिकायः। सम० ६। धर्मः-धर्मास्तिकायो  
गत्युपष्टम्भगुणः। स्था० ४०। धर्म लोकधर्मम्। ओघ०

७२। धर्मः-श्रुतचारित्रात्मकः दुर्गति-

प्रपतज्जन्तुधारणस्वभावः। सम० ४।

श्रुतचरणधर्मादनपेतं धर्म्यम्। स्था० १८८। धर्मः-

प्रक्रमाद् गृहस्थधर्मः सम्य-

गृष्टयादिशिष्टाचारिताचारलक्षणः। उत्त० ३९१।

धर्मादनपेतं धर्म्य एषणीयम्। उत्त० ४२८। धर्मः-विशेष

पादपोषगमन-रूपो मरणविशेषः। आचा० २९४। धर्मः-

धारयतीति दुर्गतौ प्रपततो जीवान् धारयतिसुगतौ वा

तान् स्थापयति इति धर्मः, श्रुतचारित्र-लक्षणः। स्था०

२१। धर्मः-विषयाभि-लाषः। स्था० ५१६। धर्मः-समाचारो

व्यवस्था। स्था० ५१५। धर्मः-जिनाज्ञारूपः,

चारित्रलक्षणः। स्था० २४१। धर्मः-चेतनाचेतन

द्रव्यस्वभावं श्रुतचारित्ररूपं वा। आचा० १५४। धर्मः

अविपरीतार्थम्। आचा० २५८। धर्मः चारित्र-रूपः। दशवै०

२७१। दुर्गतौ प्रपतन्तमात्मानं धारयतीति धर्मः। दशवै०

१३। धर्मार्जनव्यापारपरः साधुधर्मपुरुषः। आव० २७७।

धर्मः-श्रुतधर्मादिः। दशवै० २४२। श्रुतचारित्रात्मकम्।

ज्ञाता० ४६। जीवपर्यायः। ज्ञाता० ६९। धर्मः-

वस्तुस्वभावः आचारो वा। उत्त० १२८। धर्म्य-

धर्म्यध्यानम्। आव० ५९०।

जिनप्रणीतभावश्रद्धानादिलक्षणं धर्म्यम्। आव० ५८२।

धर्म-सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे नवममध्ययनम्। आव०

६५१। दसविहसमणधम्मसमणुगतं। दशवै० १४। धर्मः-

पुण्यम्। बृह० १९८ अ। धर्मकारणं यत्तद्धर्मदं धर्मं

एव वा। स्था० ४९६। सूत्रकृताङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धे नवम-

मध्ययनम् सम० ३१। धर्म-अस्तिकायधर्मं श्रुतधर्मादौ

वा। प्रजा० ५९। धर्मः-व्यवहारः। जम्बू० १६७। धर्मः-

धर्मकथानुयोगः। दशवै० ४। ज्ञाणे। भग० ९२३। धर्मः-

श्रुतधर्मश्चारित्रधर्मश्च। प्रजा० ३९९।

**धम्मकहा-** धर्मकथा व्याख्यानरूपा। उत्त० ५८५। धर्मस्य-

श्रुतस्वरूपस्य कथा-व्याख्या धर्मकथा। स्था० ३४९।

धर्मस्य-अहिंसादिलक्षणधर्मस्य कथा धर्मकथा-

आख्यान-कानि। सम० ११९। धर्मकथा-

अहिंसादिधर्मप्ररूपणस्वरूपा। अनुयो० १६।  
पारत्रिककर्मविपाकदर्शनम्। बृह० १०३अ।  
योऽहिंसादिलक्षणं सर्वजप्रणीतं धर्ममनुयोगं वा कथयति  
एषा धर्मकथा। दशवै० ३२। धर्मप्रधाना कथा धर्म-कथा।  
ज्ञाता० १०। इह परत्र सप्रपञ्चं कर्मविपाकोपदर्शनं सा  
धर्मकथा। बृह० १०३अ। धर्मप्रधाना आख्यायिकाः  
उत्तराध्ययनाद्यन्तर्गता आक्षेपण्यादयो वा। बृह०  
१०२।

**धम्मकही-** क्षीराश्रवादियुतो वैराग्यकथी। बृह० ३५आ।  
धर्मकथकः। ज्ञाता० १६९। चतुर्विधां धर्मकथां कथयन्।  
क्षीराश्रवादिलब्धिसम्पन्नतया वैराग्यजननीं धर्मकथां  
विदधाति धर्मकथी। बृह० ३५आ।

**धम्मकाम-** धर्मकामो-निर्जरार्थम्। दशवै० २४६। सूत्रकृता-  
ङ्गस्य नवममध्ययनम्। उत्त० ६१४। सम० १५३।

**धम्मकाय-** धर्मकायः। दशवै० १६१।

**धम्मघोसे-** धर्मघोषः महाघोषनगरे गाथापतिः। विपा०  
९५। धर्मघोषः-आचार्यविशेषः। आचा० ७६। धर्मघोषः-  
संवेगो-दाहरणेऽमात्यः। आव० ७०९। धर्मघोषः-  
सत्वोदाहरणे सर्वशुचिविषये स्वामिज्येष्ठशिष्यः। आव०  
७०५। विमलार्हतः प्रशिष्यः। अनगारविशेषः। भग०  
५४८। आचार्यविशेषः। आव० ३९३। स्थविरविशेषः।  
विपा० ९१। ज्ञाता० ८९, १९६। धर्मघोषः-योगसङ्ग्रहे  
आपत्सु दृढधर्मत्वदृष्टान्ते आपत्सु दृढधर्मवान्  
अनगारविशेषः। आव० ६६७। धर्मघोषः  
उत्तरगुणप्रत्याख्याने वाराणस्यां मासक्षपकोऽनगारः।  
आव० ७१६। धर्मघोषः-अज्ञातोदाहरणे  
कोशाम्ब्यामाचार्यधर्मवसु-ज्येष्ठशिष्यः। आव० ६९९।

**धम्मघोससीसो-** धर्मघोषशिष्यः। उत्त० ९२।

**धम्मचक्के-** तक्षशिलायां धम्मचक्रः दर्शनशुद्धो दृष्टान्तः।  
आचा० ४१८।

**धम्मचरणं-** धर्मचरणं-

बाह्यवेषपरिकरितप्रव्रज्याप्रतिपतिः। जीवा० ७७।  
धर्मचरणं-चरणधर्मसेवनम्। जीवा० ५५।

**धम्मचिंतका-** धर्मचिन्तका धर्मशास्त्रपाठकाः सभासदाः।  
औप० ९०।

**धम्मचिंतग-**

याज्ञवल्क्यप्रभृतिऋषिप्रणीतधर्मसंहिताचिन्तयन्ति

ताभिश्च व्यवहरन्ति ये ते धर्मचिन्तकाः। अनुयो० २५।

**धम्मचिन्ता-** धर्मा-जीवादिद्रव्याणामुपयोगोत्पादादयः

स्वभा-वात्तेषां चिन्ता-अनुप्रेक्षा धर्मस्य वा-  
श्रुतचरित्रात्मकस्य, सर्वजभाषितस्य  
हरिहरादिनिगदितधर्मभ्यः प्रधानोऽयमित्येवं चिन्ता  
धर्मचिन्ता। सम० १७। धर्मध्यानचिन्ता श्रुतधर्म-चिन्ता  
वा। उत्त० ५४३।

**धम्मजस-** वत्सगाचलेऽनशनी। मरण०। धर्मयशः-

उत्तरगुणप्रत्याख्याने वाराणस्यां मासक्षपकोऽनगारः।  
आव० ७१६। धर्मयशः-सत्योदाहरणे सर्वशुचिविषये  
स्वामिलघुशिष्यः। आव० ७०५। धर्मयशः-  
अज्ञातोदाहरणे कोशाम्ब्यामाचार्य-धर्मवसोर्लघुशिष्यः।  
आव० ६९९।

**धम्मजागरिय-** धर्मजागरिका। भग० १२६।

**धम्मजीवी-** धर्मजीवी संयमैकजीवी। दशवै० २०३।

**धम्मज्जियं-** धर्मेण क्षान्त्यादिरूपेणार्जितं-उपार्जितं  
धर्मार्जितम्। उत्त० ६४।

**धम्मज्झाए-** ऐरवतक्षेत्रे आगमिष्यन्त्यां उत्सर्पिण्यां  
पञ्चमस्ती-र्थकरः। सम० सम० १५४।

**धम्मज्झयं-** धर्मध्वजम्। आव० २९०।

**धम्मङ्ग-** धर्मार्थं कुशलानुबन्धिपुण्योपार्जनार्थम्। बृह०  
८८आ।

**धम्मङ्गय-** धर्मार्थ-तत्त्वार्थबोधतस्तेषां धर्मः  
स्यादित्येवमर्थम्। उत्त० २८७।

**धम्मण्णग-** धर्मान्वगः तगरायामाचार्यशिष्यः। व्यव०  
२५६।

**धम्मणग-** धर्मान्वगं सद्व्यवहारकाचार्यः। व्यव० १।

**धम्मतित्थ-** धर्म एव तीर्यते भवाम्भोधिरनेनेति तीर्थं  
धर्मती-र्थम्। उत्त० ४९८।

**धम्मत्थकामा-** धर्मार्थकामाः मुमुक्षवः। दशवै० ४९२।  
आयारकहा। निशी० ६५अ।

**धम्मत्थिकाए-** तत्र जीवपुद्गलानां स्वत एव  
गतिक्रियापरिण-तानां तत्स्वभावधारणाद् धर्मः,  
अस्तयः-प्रदेशास्तेषां कायः-सङ्घातोऽस्तिकायः  
धर्मश्चासावस्तिकायश्च धर्मास्ति-कायः।  
सकललोकव्याप्यसङ्ख्येयप्रदेशात्मकोऽमूर्तद्रव्य-  
विशेषः। अनुयो० ७४।

**धम्मद-** धर्म-चारित्ररूपं ददातीति धर्मदेशकः। जीवा० २५६।

**धम्मदए-** धर्म-श्रुतचारित्रात्मकं  
दुर्गतिप्रपतज्जन्तुधारणस्व-भावं दयते-ददातीति  
धर्मदयः। सम० ४।

**धम्मदेवा-** धर्मदेवाः-धर्मप्रधाना देवाः चारित्रवन्तः।  
स्था० ३०३। धर्मेण-श्रुतादिना देवा धर्मप्रधाना वा देवा  
धर्मदेवाः। भग० ५८३।

**धम्मदेसए-** धर्मदेशकः धर्मम् उक्तलक्षणं देशयति-  
कथयतीति धर्मदेशकः। सम० ४। धर्म-श्रुतचारित्रात्मकं  
देशयतीति धर्मदेशकः। भग० ७।

**धम्मदेसगो-** धर्म-चारित्ररूपं दिशतीति धर्मदेशकः। जीवा० २५६।

**धम्मनायग-** धर्मस्य-क्षायिकज्ञानदर्शनचारित्रात्मकस्य  
नायकः- स्वामी यथावत्पालनाद्धर्मनायकः। सम० ४।  
धर्मस्य नायकः-  
स्वामिनस्तद्वशीकरणात्तत्फलपरिभोगाच्च  
धर्मनायकाः। जीवा० २५६।

**धम्मनियत्तमईया** – धर्मः-चारित्रधर्मः परिगृह्यते  
तस्मात् निवृत्ता मतिर्येषां ते धर्मनिवृत्तमतः। आव० ५३१।

**धम्मपण्णत्ती-** श्रुतधर्मप्ररूपणा। उपा० ३८।

**धम्मपन्नत्ति-** धर्मप्रज्ञप्तिः षड्जीवनिका। दशवै० १२।

**धम्मपय-** धर्मपदं-धर्मफलं सिद्धान्तपदम्। दशवै० २४५।  
धर्मपद-क्षान्त्यादिकम्। आचा० ४३०।

**धम्मपुरिसा-** धर्मः-क्षायिकचारित्रादिस्तदर्जनपराः  
पुरुषाः धर्मपुरुषाः। स्था० १९३।

**धम्मफल-** धर्मफलं अनुत्तरज्ञानादि। दशवै० १२०।

**धम्मबारं-** धर्मद्वारम्। आव० ४३५।

**धम्ममाण-** ध्मायमानः भस्त्रावातेनोद्दीप्यमानः। उपा० २५।

**धम्ममित्त-** षष्ठतीर्थकरस्य पूर्वभवनाम। सम० १५१।

**धम्मयाते-** धर्मतया। आव० ७५८।

**धम्मरुइ-** हड्ढकज्जे उदाहरणं। निशी० १०० अ।

**धम्मरुई-** धर्मः-श्रुतधर्मादिस्तेषु रुचिर्यस्य स धर्मरुचिः।  
उत्त० ५६३। धर्मरुचिः-मालापहृतद्वारविवरणे संयतः।  
पिण्ड० १०८। धर्मरुचिः- आषाढभूतेर्गुरुः। पिण्ड० १३७।

धर्मरुचिः-सहसम्मत्यादिदृष्टान्ते जितशत्रुकुमारः।

आचा० २१। धर्मरुचिः-अनगारविशेषः। जाता० १९७।

आव० ३८९। धर्मरुचिः- जितशत्रुधारिण्योः पुत्रः। आव० ३७२। धर्मरुचिः-उदयो मारणान्तिक इति विषयेऽनगारः  
यस्य कटुकं दौग्धिके मरणम्। आव० ७२३। धर्मरुचिः  
उत्कृष्ट समितिदृष्टान्ते पारिष्ठापनिकीसमित्युपयुक्तः  
साधुविशेषः। आव० ६१८। धर्मः-अस्तिकायधर्म  
श्रुतधर्मादौ वा रुचि-र्यस्य स धर्मरुचिः। प्रजा० ५६।  
धर्मघोषसूरिशिष्यः। प्रजा० १९७।

**धम्मरुक्खे-** वलयविशेषः। प्रजा० ३३।

**धम्मरुची-** धर्मरुचिः अनगारविशेषः। विपा० ९५।

**धम्मरुती-** धर्म-श्रुतादौ रुचिर्यस्य स, यो हि धर्मास्तिकायं  
श्रुतधर्म चारित्रधर्मं च जिनोक्तं श्रद्धत्ते स धर्मरुचिः।  
स्था० ५०३।

**धम्मलातो-** भिल्लमाले णाणकं। निशी० ३३० अ।

**धम्मलेसा-** धर्मलेश्याः-प्रधानलेश्याः। उत्त० ६६१।

**धम्मव-** दुर्गतिप्रसृतजन्तुधारणस्वभावं स्वर्गापवर्गमार्गं  
धर्मं वेत्तीति धर्मवित्। आचा० १५४।

**धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी-** धर्म एव वरं-प्रधानं  
चतुरन्तहेतु-त्वाच्चतुरन्तं चक्रमिव चतुरन्तचक्रं तेन  
वर्तितुं शीलं यस्य सः धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्ती।  
जीवा० २५६। त्रयः समुद्रा-श्चतुर्थो हिमवान् एते चत्वारः  
अन्ताः-पर्यन्ता-स्तेषु स्वा-मितया भवतीति चातुरन्तः  
स चासौ चक्रवर्त्ती च चातुरन्त-चक्रवर्त्ती वरश्चासौ  
पृथिव्याः चातुरन्तचक्रवर्त्ती चेति वरचा-  
तुरन्तचक्रवर्त्ती-राजातिशयः धर्मविषये  
वरचातुरन्तचक्रवर्त्ती धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्ती। सम० ४।  
त्रयः समुद्राश्चतुर्थश्चहिम-वान् एते चत्वारोऽन्ताः  
पृथिव्यन्ताः एतेषु स्वामितया भव-तीति चातुरन्तः स  
चासौ चक्रवर्त्ती च चातुरन्तचक्रवर्त्ती वर-श्वासौ  
चातुरन्तचक्रवर्त्ती च वरचातुरन्तचक्रवर्त्ती-राजाति-  
शयः, धर्मविषये वरचातुरन्तचक्रवर्त्ती  
धर्मवरचातुरन्तचक्र-वर्त्ती, धर्म एव  
वरमितरचक्रापेक्षया वा चतुरन्तं-दानादिभेदेन  
चतुर्विभागं चतसृणां वा  
नरनारकादिगतीनामन्तकारित्वाच्च-तुरन्तं तदेव  
चातुरन्तं यच्चक्रं भवारातिच्छेदात् तेन वर्तितुं शीलं

यस्य स धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्ती। भग० ७।  
**धम्मवसू-** धर्मवसुः-अज्ञातोदाहरणे कोशाम्ब्यामाचार्यः।  
 आव० ६९९।  
**धम्मवीरिये-** धर्मवीर्यः-अनगारविशेषः। विपा० ९५  
**धम्मसण्णा-** धर्मश्रद्धा। जम्बू० १७०। भग० ३०८।  
**धम्मसन्ना-** धर्मसंज्ञा आगमबुद्धिर्मिथ्यात्वम्। स्था०  
 ४८७।  
**धम्मसद्धिओ-** धर्मश्रद्धिकः(तः)। आव० ५२।  
**धम्मसारहि-** धर्मस्य सारथिर्धर्मसारथि, यथा रथस्य  
 सारथी रथं रथिकमश्वंश्च रक्षति एवं  
 भगवांश्चारित्रधर्माङ्गानां संयमा-त्मप्रवचनाख्यानां  
 रक्षणोपदेशार्द्धसारथिर्भवति इति धर्मसारथिः। सम० ४।  
**धम्मसारही-** धर्मरथस्य प्रवर्त्तकत्वेन सारथिरिव  
 धर्मसारथिः। भग० ७।  
**धम्मसाहण-** धर्मसाधनं धर्मोपकरणं वर्षाकल्पादिकम्।  
 उत्त० ५०३।  
**धम्मसीहे-** चतुर्थतीर्थकरस्य पूर्वभवनाम। सम० १५१।  
 धर्मसिंहः-अनगारविशेषः। विपा० ९५। धर्मसिंहः-धर्म-  
 जिनप्रथमभिक्षादाता। सम० १५१। आव० १४७।  
**धम्मा-** धर्म्माः-समाचाराः। बृह० १६६ अ। धर्म्माः-  
 निर्जराहेतवः। स्था० ३८१। ज्ञाता० २५३।  
**धम्माओ भंसेज्जा-** धर्माद् भ्रश्येत् मिथ्यादृष्टिर्वा भवेत्।  
 आव० ७५९।  
**धम्माणुजोगचिन्ता-** धर्मार्थमनुयोगस्य-व्याख्यानस्य  
 चिन्ता धर्मानुयोगस्य वा धर्मव्याख्यानस्य चिन्ता  
 धर्मानुयोगचिन्ता। ज्ञाता० ६२।  
**धम्माणुराग-** धर्मानुरागः-धर्मबहुमानः। भग० ९०।  
**धम्मायरिए-** धर्माचार्यः-प्रतिबोधकः। स्था० २४२।  
**धम्मायरिय-** धर्म्मः-उक्तप्ररूपणादिलक्षणः  
 श्रुतधर्म्मस्तत्प्र-धानाः प्रणायकत्वेनाचार्या  
 धर्म्माचार्यास्तन्मतोपदेष्टारः। स्था० ४१०।  
**धम्मारामे-** धर्मं श्रुतधर्मादौ आडित्यभिव्याप्त्या रमते-  
 रतिमान् भवतीति धर्मारामः धर्म एव  
 सततमानन्दहेतुतया प्रति भव-तिपाल्यतया वा आरामो  
 धर्मारामः। उत्त० ९९।  
**धम्मावतेति-** धर्म्माणां वस्तुपर्यायाणां धर्मस्य वा  
 चारित्रस्य वादो धर्मवादः। स्था० ४९१।

**धम्मिडे-** इष्टधर्मा अतिशयेन धर्मवान्। उत्त० २८५।  
**धम्मियं-** धार्मिकं धर्मानुगतम्। जीवा० २५४।  
**धम्मिल-** धर्म्मिलः सुधर्मपिता। आव० २५५।  
**धम्मिल्ल-** विशिष्टतपश्चरणफलवान्। सूत्र० २९९।  
 इहलोकफले दृष्टान्तः। जम्बू० १९७। केशहस्तः। भग०  
 ४६८। धम्मिल्लः इहलोकफले उदाहरणम्। आव० ८६३।  
**धम्मुत्तरं-** धर्मोत्तरं-चारित्रधर्मोत्तरं। आव० ७८९।  
**धम्मोवाओ-** दुर्गतौ प्रपततमात्मानं धारयतीति धर्मः,  
 तस्य उपायो-द्वादशाङ्गं प्रवचनं अथवा पूर्वाणि  
 धर्मोपायः। आव० १३५। प्रवचनं पूर्वाणि वा। आव० १४०।  
 सामायिका च जीवनिकायभावना वा। आव० १४०।  
**धयप्पडागा-** ध्वज एव पताका ध्वजपताका। ओघ० ७४।  
**धरंति-** धियन्ते तिष्ठन्ति। आव० ६९२।  
**धर-** धरः पद्मप्रभप्रभुपिता। सम० १५०। आव० १६१।  
 ज्ञाता० २०८।  
**धरइ-** धरति-वारयति। जीवा० ३०९। धियते-तिष्ठति।  
 दशवै० १२२।  
**धरच्छ-** धराक्षम्। औप० ५५।  
**धरण-** नृपविशेषः। ज्ञाता० १२१। अन्तकृद्दशायां प्रथमवर्गं  
 षष्ठममध्ययनम्। अन्त० ३। धरणः अन्तकृद्दशानां  
 द्वितीय-वर्गस्य षष्ठममध्ययनम्। अन्त० ३। धरणः  
 रोहीतकनगरस्य पृथ्व्यवतंसकोद्याने यक्षः। विपा० ८२।  
 धरणः-नागकुमा-रेन्द्रः। स्था० ८४। जीवा० १७०।  
 द्वितीयो दक्षिणनिका-येन्द्रः। भग० १५७। ब्रह्मव्रते  
 उपमा। प्रश्न० १३५। आव० २२१।  
 नागकुमाराणामधिपतिः। प्रज्ञा० ९४। अनिक्षिप्तम्।  
 ओघ० ११८। अपायानन्तरमवगतस्यार्थस्याविच्युत्याऽ-  
 न्तर्मुहूर्त्तं कालं यावद्धरणम्। नन्दी० १७७। अर्थानां  
 धृतिः, परिच्छिन्नस्य  
 वस्तुनोऽविच्युतिस्मृतिवासनारूपम्। आव० १०। धरणः  
 दक्षिणनागकुमारनिकायेन्द्रः। स्था० २०५।  
**धरणपरिहरणं-** यत्किमप्युपकरणं सङ्गोपयति  
 प्रतिलेखति च न परिभुङ्क्ते। व्यव० ४५ अ।  
**धरणप्पभे-** स्था० ४८२।  
**धरणा-** अविच्युतिस्मृतिवासनारूपा। दशवै० १२५।  
**धरणिकिलए-** धरण्याः पृथिव्याः कीलक इव  
 धरणिकीलकः। सूर्य० ७८।

धरणिगोयरो- धरणीगोचरः। आव० २८७।  
 धरणिधरा- त्रयोदशतीर्थकरस्य प्रथमा शिष्या। सम० १५२।  
 धरणिसिंगे- धरण्याः शृङ्गमिव धरणिशृङ्गः। सूर्य० ७८।  
 धरणी- पृथ्वी। ओघ० १००। ज्ञाता० २५१। द्वादश-  
 तीर्थङ्करस्य प्रथमा शिष्या। सम० १५२।  
 धरितो- धृतः। आव० ३१०।  
 धरिमं- ऋणद्वयम्। विपा० ६३। जम्बू० १९४। ज्ञाता० ४०।  
 सुवर्णकादि। उत्त० ४८४। आव० १८९।  
 धरिसिया- धर्षिता। आव० ६४।  
 धरिसियामो- धर्षिताः। आव० ३१४। अपभ्राजिताः। आव० ७०१।  
 धरिसेङ्ग- धर्षयति-पराभवति। उत्त० ६२६।  
 धरिसेहि- धर्षयति। दशवै० ४१।  
 धरेङ्ग-धारयति, सङ्घट्टयति। ओघ० ७९।  
 धरेतुं- खमिउं। निशी० ३२अ।  
 धर्म- स्वभावः बोधश्च। आव० ८७। सदाचारो दशविधो वा  
 यतिधर्मः। उत्त० ३६८।  
 धर्मकथानुयोगः- अर्हद्वचनानुयोगभेदः  
 उत्तराध्ययनादिकः। आचा० १।  
 धर्मकायः- भगवद्देहः। दशवै० १९९।  
 धर्मघोषः- आचार्यविशेषः। सूत्र० ३८७। छद्दितदोषदृष्टान्ते  
 साधुः। पिण्ड० १९६।  
 धर्मध्वजः- रजोहरणम्। पिण्ड० ४।  
 धर्मवान्- धर्मिष्ठः। उत्त० २८५।  
 धर्मसिंह- कोल्लपुरे गृध्रपृष्ठकारी। संस्ता०।  
 धर्माः- पर्यया पर्यवा वा भेदाः  
 बाह्यवस्त्वलोचनादिप्रकाराः। स्था० ३४८। पर्यवाः  
 गुणाः विशेषाः। भग० ८८९।  
 धर्मार्थकामाः- धर्मार्थं ये कामयन्ति मोक्षमिति। दशवै० ९१।  
 धर्मे- कर्मणि। बृह० २४३अ।  
 धर्मोपकरणं- वर्षाकल्पादिकम्। उत्त० ५०३।  
 धर्मोपग्रहः- दानविशेषः। प्रश्न० १३५।  
 धर्मः- परिणामः पर्यायः स्वभावः। स्था० ३७५।  
 धर्मकथानुयोगः- अनुयोगस्य द्वितीयो भेदः। स्था० ४८१।

धर्मरुचिः- वाणारसीवास्तव्यनृपः। नन्दी० १६६।  
 धर्मणां- श्रुतभेदानां। स्था० ४४१।  
 धर्मात्- श्रुतचारित्रलक्षणात्। स्था० १५०।  
 धर्मिलः- तपः समाधौ लब्ध्यादिवाञ्छया  
 अनशनादिरूप-तपःकर्त्ता। दशवै० २५७।  
 धवः- मनुष्यः। ओघ० १५०। धवः बहुबीजकवृक्षविशेषः।  
 प्रजा० ३२। भग० ८०३। धारयति तां स्त्रियं धीयते वा तेन  
 पुंसा वा स्त्री दधाति सर्वात्मना पुष्पाति वा तेन कारणेन  
 निरुक्तिवशात् धव इति। व्यव० २७७ आ।  
 धवलगिहं- धवलगृहं। जीवा० २६९।  
 धवलगृहादि- वास्तु। आचा० १२१।  
 धवलधरं- धवलगृहम्। आव० ४४७। प्रजा० १११।  
 धवलपुष्पं- धवलपुष्पं कुन्दकलिका। प्रजा० ९१।  
 धवलय- पाण्डुरं श्वेतम्। ज्ञाता० १५।  
 धवलवलयानि- तथाविधकटकानि। भग० ४६८।  
 धवलहर- धवलगृहं सौधम्। जम्बू० १०७।  
 धवला- सिता। ज्ञाता० १६२।  
 धाइपिंडो- धात्रीपिण्डः-धात्रीवद्बाललालनात् लब्धपिण्डः।  
 आव० ५३६।  
 धाई- धात्री-बालकपरिपालिका। पिण्ड० १२१।  
 धाउ- धातुः गैरिकं लोहादिर्वा। प्रश्न० ३८। यस्मिन्  
 धम्यमाने सुवर्णपतते स धातुः। निशी० ८६ आ। धातुः-  
 पाषाणधात्वादिः। उत्त० ६५३। गैरिका। दशवै० १७०।  
 धाउबिलं- धातुवादः स्वर्णरसादिकः-धातुसिद्धः। आव० ४३४।  
 धाउरत्ता- साटिका। भग० ११६।  
 धाउ- धारकत्वात्पोषकत्वाच्च धातुत्वम्। सूत्र० २६।  
 धाडणी- धाडनी, नाशनी। प्रश्न० ७६।  
 धाडिउ- वयंसो। निशी० ३०० आ।  
 धाडिए- धाटिकः-मित्रम्। बृह० १७६ अ।  
 धाडिओ- धाटिकः-मित्रम्। बृह० ६ आ। निर्धाटितः। आव० ६६। निष्काशितः। आव० ३६९। धाटितः। आव० ९८।  
 धाडिभरण- धाटीभयेन। आव० ७१।  
 धाडियंत- धाड्यमानः-प्रेर्यमानः। प्रश्न० ५९।  
 धाडी- धाटी। आव० २१९, ६९०।  
 धोडेंति- धाटयन्ति। आव० ६५०। प्रेरयन्ति  
 स्थानात्स्थाना-न्तरं प्रापयन्ति। सूत्र० १२५।

धाडेङ्- धाटयन्ति। आव० १९६।  
 धाणं- धाणं-सुभिक्षं विभवो वा। उत्त० १४५।  
 धाणगा- पंडरचवलगा। निशी० १४४ आ।  
 धाणि- धाणिः। दशवै० ८९।  
 धातकीखण्डः- लवणसमुद्रानन्तरं द्वीपः। प्रज्ञा० ३०७।  
 धातगं- धातं सुभिक्षम्। बृह० १५१ अ।  
 धाताय- हननाय। भग० ६८४।  
 धाती- बालं धारयतीति धाती तेण बालेण धोयते धाती  
 पीयतेत्यर्थः सो वा बालो तं धवतीति धाती, तं  
 पिबतीत्यर्थः। निशी० ९३ आ।  
 धातुखोभे- धातुवैषम्यम्। ओघ० ५३।  
 धातुमट्टिया- मट्टिया जोगजुत्ता अजुत्ता वा धम्ममणा  
 सव-ण्णादि भवति सा धातुमट्टिया। निशी० ८७ अ।  
 धातुव्वाओ- धातुर्वादः सुवर्णपातनोत्कर्षलक्षणो  
 द्रव्योपायः। दशवै० ४०।  
 धात्री- स्वापविबोधवत्यौषधिदः। आचा० ६६।  
 धाधाकया- शवाः कृताः, हाहारवः कृतः। उत्त० २०७।  
 धानं- परिच्छेदः। उत्त० ५५७। पोषणम्। जीवा० १९।  
 धान्यमानं- सेतिकाकुड्वादि। जम्बू० २२७। सेतकादि।  
 स्था० १९८।  
 धाम- धर्मः। उत्त० ५२५।  
 धाय- धातं-सुभिक्षम्। दशवै० २२२। आव० ३४१। भातः-  
 नित्यतृप्तः। बृह० २३५ आ। धाता-दाक्षिणात्यपणप-  
 न्निकव्यन्तराणामिन्द्रः। प्रज्ञा० ९८।  
 धायङ्- धातकी-वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३१। लवणसमुद्रं परि-  
 क्षिप्य स्थितो धातकीवृक्षखण्डोपलक्षितो द्वीपः।  
 अनुयो० ९०।  
 धायङ्पत्तरससारो- धातकीपत्ररससारः-धातकीपत्रासवः।  
 जीवा० ३५१।  
 धायङ्गुख- पूर्वाद्धं उत्तकुरुषु नीलवद्गिरिसमीपे  
 धातकीनाम वृक्षः। जीवा० ३२८। भग० ८०३। त्रयोविंशति  
 तीर्थकरस्य चैत्यवृक्षः। सम० १५२।  
 धायङ्गुसंडे- धातकीनां खण्डानि यस्मिन् स धातकीखण्डः,  
 एतादृशो द्वीपविशेषः। आव० ७८८। ज्ञाता० २१३।  
 धायगत्ता- मारकता। भग० ५८१।  
 धारए- धारकोऽधीतानामेषां धारणात्। भग० ११२।  
 धारण- धारणा-विधयेषु निवर्तनलक्षणा। स्था० ३३१।

धारणाअनुभूतार्थवासनाया अविच्युतिः। जम्बू० १८२।  
 धारणगं- धर्मणम्। आव० ८३२।  
 धारणा- यथास्वमत्यवस्थानम्। भग० ३८४।  
 अवगतार्थवि-शेषधरणं धारणा। भग० ३४४।  
 बलहरणाधारभूते स्थूणे। भग० २७६। अप्रच्युतिः,  
 अविस्मृतिः। आव० ६८। अर्हद्गुणाविष्करणरूपा। आव०  
 ७८६। उपभोगः। आव० ३२५। गीतार्थसंविग्नेन  
 द्रव्याद्यपेक्षया यत्रापराधे यथा या विशुद्धिः कृता  
 तामवधार्य यदन्यस्तत्रैव तथैव तामेव प्रयुङ्क्ते सा,  
 वैयावृत्यकरादेर्वा गच्छोपग्रहकारिणो अशेषानुचितस्यो-  
 चितप्रायश्चित्तपदानां प्रदर्शितानां धरणं धारणा। स्था०  
 ३१८। अवगतार्थविशेषधरणं धारणा। आव० १०।  
 निर्णीतार्थधरणम्। अविच्युतिः १ वासना २ स्मृतिश्च  
 ३ नन्दी० १६८। असकृदालोचनादानेन  
 यत्प्रायश्चित्तविशेषधरणं सा। स्था० ३०१।  
 गृहीतस्याविस्मरणे निर्वृतिः। निशी० २५४ आ।  
 अवगतार्थविशेषधरणं धारणा। राज० १३१। दृढस्मृतिः।  
 निशी० २७८ अ।  
 धारणापरिहारो- जं संगोविज्जति पडिलेहिज्जति य ण य  
 परिभुज्जति। निशी० ८९ आ।  
 धारणाभेधावी- पूर्वाधीतयोः प्रभूतयोरपि  
 सूत्रार्थयोश्चिरमवधारणाबुद्धिमान्। बृह० १२५ आ।  
 धारणाया- कुकुभरीउ। दशवै० ९२।  
 धारणाववहार- धारणाव्यवहारो नाम गीतार्थेन  
 संविग्नेनाचार्येण द्रव्यक्षेत्रकालभावपुरुषान्  
 प्रतिसेवनाश्चावलोक्य यस्मिन्नपराधे यत्  
 प्रायश्चित्तमदायि तत्सर्वमन्यो दृष्ट्वा तेष्वेव  
 द्रव्यादिषु तादृश एवापराधे तदेव प्रायश्चित्तं ददाति एष  
 धारणाव्यवहारः, वैयावृत्यकरस्य गच्छोपग्रहिणः  
 स्पर्द्धकस्वामिनो वा देशदर्शनसहायस्य वा  
 संविग्नस्योचितप्रायश्चित्तदानं धारणामेष  
 धारणाव्यवहारः। व्यव० ५ आ।  
 धारणि- धारिणी जितशत्रुराज्ञी। उत्त० ११४।  
 श्रेयांसनाथस्य प्रथमा शिष्या। सम० १५२।  
 धारणिओ- धारणिकः-ऋणधारकः। बृह० ७० अ।  
 धारणिज्जं- लक्खणजुत्तं खंडाखंडिकरणं। निशी० २४४  
 आ।

**धारणी-** श्वेतनृपस्य राज्ञी। राज० ९। जितशत्रुराज्ञी।  
 आचा० २१। धारिणी-महासेनराज्ञी। विपा० ८२।  
 श्रेणिकस्य राज्ञी। ज्ञाता० १२। अदीनशत्रुराजस्य  
 पट्टराज्ञी। विपा० ९०। बलनृपस्य राज्ञी। ज्ञाता० १२१।  
**धारा-** देवछत्रधारकाः। बृह० २७३ आ। सततपातजनिता  
 सन्ततिः। उत्त० ३६९। धारेव धारा-क्रिया। भग० ४७१।  
**धारिज्जन्ति-** धार्यन्ते आसेव्यन्ते। उत्त० ६०७।  
**धारिणि-** धारिणी-अज्ञातोदाहरणे युवराजराष्ट्रवर्धनपत्नी।  
 आव० ६९९।  
**धारिणी-** धनञ्जयनृपपत्नी। आव० १७७। श्रेणिकराज्ञी।  
 अनुत्त० १। वसन्तपुरे जितशत्रुराज्ञी। आव० ३७८। वज्र-  
 सेनराज्ञी। आव० ११७। अन्धकवृष्णिराज्ञी। अन्त० २।  
 चन्द्रावतंसकराज्ञी। उत्त० ३७५। सकलगुणधारणात्  
 धारिणी-जितशत्रुनृपपत्नी। सूर्य० २।  
 विशाखभूतियुवराज-पत्नी। आव० १७२। बलदेवराज्ञी।  
 अन्त० १४। जितशत्रो राज्ञी। जम्बू० ९।  
 एषणासमितिदृष्टान्ते धिग्जातीयचक्रक-रगौतमपत्नी।  
 आव० ६१६। संवेगोदाहरणे चम्पायां मित्रप्रभ-राज्ञी।  
 आव० ७०९। अज्ञातोदाहरणे कोशाम्ब्यामजितसेन-  
 राज्ञी। आव० ६९९। दधिवाहनराज्ञी। आव० १२३। जित-  
 शत्रुराज्ञी। ओघ० १५८। शिवराज्ञो राज्ञी। भग० ५१४।  
 वृष्णिराजपत्नी। अन्त० ३। चम्पायां कोणिकराज्ञी।  
 प्रश्न० १। जितशत्रुराजपत्नी। आव० ३७२।  
 चक्षुरिन्द्रियोदाहरणे-मथुराधिपतिजितशत्रुराज्ञी। आव०  
 ३९८। श्रावस्तिनगर्यां रुक्मिनृपस्य राज्ञी। ज्ञाता० १४०।  
 काम्पिल्यपुरस्य जित-शत्रो राज्ञी। ज्ञाता० १४४।  
 अन्धकवृष्णेर्देवी। अन्त० २। अन्धकवृष्णेर्देवी। अन्त०  
 ३। बलदेवस्य देवी। अन्त० १४। जियसत्तुदेवी। निशी०  
 ३५१ आ।  
**धारित्तए-** धारयितुं परिग्रहे धर्तुम्। बृह० २०१ आ।  
 उवभोगो। स्था० १३८। धर्तुं परिग्रहे। स्था० १३८।  
**धारिया-** धारकाः। आव० ३५७।  
**धारिवारिय-** धाराप्रधानं वारि जलं येषु तानि  
 धारावारिकाणि। भग० ६१७।  
**धारेइ-** धारयति आत्मनि लीनं धत्ते। दशवै० ६८।  
**धारेज्ज-** धारयेत् व्यापारयेत्। भग० २२३।  
**धारेमाणीओ-** धारयन्त्यः-वीजयन्त्यः। जम्बू० ८२।

**धारेमाणे-** धारयन् स्थिरीकुर्वन्। भग० ५४।  
**धारोदयं-** गिरिनिर्झरजलं आन्तरिक्षं वा। बृह० १७१ आ।  
**धालिया-** धारिता। उत्त० १३७।  
**धावं-** धावनम्। आव० १९८।  
**धावणं-** धावनं शीघ्रमृजुगमनम्। जम्बू० ५३०। वेगवद्  
 गमनम्। ज्ञाता० २३२। दशवै० १००। शीघ्रगमनम्।  
 जम्बू० २६५।  
**धावणओ-** लेखहारकः। बृह० २४८ आ।  
**धावनं-** कल्पत्रयप्रदानम्। बृह० २६८ आ। प्रक्षालनम्।  
 आचा० २७७।  
**धाविय-** धावनं-अश्वकलाविशेषः। उत्त० २२३।  
**धाहं-** धावनम्। उत्त० १०२।  
**धिइ-** धृतिः-मानसाऽवष्टम्भलक्षणा, निश्चला। बृह०  
 २१९ आ। मूलोत्तरगुणविषयः प्रतिदिवसमुत्सहमान  
 आत्मपरिणा-मविशेषः। नन्दी० ४५। चित्तस्वास्थ्यम्।  
 सम० ११७। संयमं प्रति चित्तस्वास्थ्यम्। उत्त० २३५।  
 धृतिः-चित्तस्वास्थ्यम्। जीवा० १२३।  
**धिइदुबल-** दुर्बलधृतयो धर्मानुष्ठानं प्रतीति। उत्त० ५५२।  
**धिइमई-** धृतिमतिः धृतिप्रधाना मतिर्धृतिमतिः-  
 अदैन्यम्। सम० ५८।  
**धिइल्लिया-** शालभञ्जिका। आव० ३४४।  
**धिई-** मानसाऽवष्टम्भरूपा। बृह० १४ आ। धृतिः-चित्त-  
 स्वास्थ्यमनुद्विग्नत्वम्। उत्त० ६२२। समाधानं संयमे।  
 आचा० ४३१। धृतिः- पल्योपमस्थितिका देवा। जम्बू०  
 ३०६।  
**धिईकूडे-** धृतिःतिगिच्छिद्रहसुरी तस्याः कूटम्। जम्बू०  
 ३०८।  
**धिईमई-** धृतिमतिः-अदैन्यम्। प्रश्न० १४६। धृतिर्मतिः-  
 धृतिप्रधाना मतिः। योगसंग्रहे षोडशो योगः। आव०  
 ६६४।  
**धिक्कार-** धिगधिक्षेपार्थ एव तस्य करणं-उच्चारणं  
 धिक्कारः। स्था० ३९९।  
**धिक्कारिज्जमाणी-** धिक्क्रियमाणा  
 धिक्शब्दविषयीक्रियमाणा। ज्ञाता० २००।  
**धिग्जातीयः-** नीचपुरुषः। नन्दी० १५२। आचा० १३२।  
**धिग्वर्ण-** मरुकः। दशवै० २५९। उत्त० ६१। धिग्जातीयः-  
 ब्राह्मणः। दशवै० १८४।

धिज्जाइ- धिग्जातीयः-ब्राह्मणः। आव० ६१६।

धिज्जाइओ- धिग्जातीयः। आव० २७३, ३५९।

धिग्जातिकः। आव० १८७।

धिज्जाय- धिग्जातः-ब्राह्मणः। ओघ० २०४।

धिति- धृतिः-विवक्षितं जिनवचनं सत्यमेव नान्यथेति  
मन-सोऽवष्टम्भः। सूर्य० २९६। चतुर्थवर्गे  
तृतीयमध्ययनम्। निर० ३७।

धितिधरे- धृतिधरः अन्तकृद्दशानां षष्ठमवर्गस्य  
षष्ठमध्ययनम्। अन्त० १८।

धितिबलिया- धृतिः वज्रकुड्यवदभेद्यं चित्तप्रणिधानं  
तया बलिकाः-बलवन्तः। बृह० ।

धितिम- धृतिमान् स्वस्थचित्तः। प्रश्न० ११३।

धितिहरे- धृतिधरः-काकन्द्यां गाथापतिः। अन्त० २३।

धिति- धारणं-धृतिः सम्यग्दर्शने सति चारित्रावस्थानम्।  
सूत्र० १९७। धृतिः-चित्तदार्ढ्यं  
तत्परिपालनीयत्वादहिंसाया धृतिरेव अहिंसाया  
अष्टादशमं नाम। प्रश्न० ९९। चित्तस्वा-स्थ्यम्। ज्ञाता०  
५९।

धिम्मरगो- धीवरः। आव० ८२९।

धियारो- अधिकारः। आव० ४२७।

धिसरा- मत्स्यबन्धविशेषः। विपा० ८१।

धी- धीः बुद्धिः। उत्त० २१६।

धीईधणियनिष्पकंपो- धृतिरज्जुबन्धनेन धनिकं-अत्यर्थं  
निष्प्रकम्पः-अविचलो यः स धृतिधनिकनिष्प्रकम्पः।  
औप० ४८।

धीउल्लिका- पुस्तकर्मविशेषः। ओघ० १२९। अनुयो० १३।

धीउल्लिया- शालभञ्जिका। उत्त० १४९।

धीयते- परिच्छिद्यते। प्रज्ञा० ५२७।

धीया- दुहिता। आव० ४२४।

धीयार- धिक्कारः। आव० २००। निशी० १३४ अ। निशी०  
१८६ अ। निशी० १३ अ।

धीर- असहाओ लुद्धगो। निशी० २०० अ। पंडिओ  
तवकरणसूरो वा। दशवै० १६५। धिया राजत इति धीरः,  
अक्षोभ्यो वा। उत्त० ५५। धीरः-अनन्तज्ञानी। आव०  
८४५। अक्षोभ्यः सम्यक्सोढेति। उत्त० ४१५। धीः बुद्धि-  
स्तया राजते स च तीर्थकृद्गणधरो वा। आचा० २०५।  
अक्षोभ्यो। धीविराजितो वा विवेकेन

दुःखसुखकारणतया-ऽवधारय। आचा० १६०।

व्रतपरिपालने स्थिरः। नन्दी० २५०। व्रतानुपालने

स्थिरः। आव० २६। धीमान् परीषहा-द्यक्षोभ्यो वा।

उत्त० २८५। धीः-बुद्धिस्तया राजते इति-धीरः। प्रज्ञा० ५।

आव० ६१९। धीरः-बुद्धिमान् स्थिरो वा। दशवै० ११९।

धीरः-संयतः। दशवै० २२२। धीरः-तीर्थकर-गणधरः।

दशवै० ८६।

धीरपुरिस- एकान्ततो वीर्यान्तरायापगमाद् धीरपुरुषः  
तीर्थ-करो-गणधरश्च। आव० ६१९।

धीरपुरिसपन्नतं- धीरपुरुषप्रजप्तं-  
तीर्थकरगणधरप्ररूपितम्। आव० ८४३।

धीरपुरिसा- धीरेष्वेवैतेषु च ते पुरुषाः-पुरुषकारवन्तो न  
कातरेष्विति धीरपुरुषाः। सम० १५७।

धीरा- सत्त्ववन्तः। उत्त० ४०७। स्थिरा अक्षोभा वा।  
प्रश्न० १०७।

धीवर- अष्टादशश्रेणिनाम। जम्बू० १९४।

धुंधुमारे- धुन्धुमारः संवेगोदाहरणे शिशुमारपुराधिपतिः।  
आव० ७०९।

धुअं- धुवाः तथाविधपुस्तकवैशिष्टरूपस्यापरिहाणेः।  
जम्बू० २५७।

धुआवणं- दव्वावणं। निशी० १७६ अ।

धुण- धुनीहि-विवेचय पृथक्कुरु तदुपरि ममत्वं मा  
विधत्स्वेति भावार्थः। आचा० १४४।

धुणइ- धुनोति पातयति। दशवै० १५९। धुनाति-  
प्रस्फोटयति। ओघ० १११।

धुणण- धूननं-भिन्नग्रन्थेरनिवर्तितकरणेन  
सम्यक्त्वावस्थानम्। आचा० २९८।

धुणति- धूनाति। आव० २०९।

धुतकम्मंसे- धुतं-अपनीतं 'कम्मंसि'त्ति-  
कर्मग्रन्थिकपरि-भाषया सत्कर्मनेनेति धुतकर्माशः।

धुताः कर्मणोऽऽ शाभाग्येन सः। उत्त० १८८।

धुता- धूताः संस्कारापेक्षया त्यक्ताः। प्रश्न० १०७।

धूत- धूर्तः द्युत्तकारः। उत्त० २४८।

धुत्तिमा- धूर्तिमा। ओघ० १५८।

धुन्नं- धूयते रेणुवद्वायुना संसारचक्रवाले भ्राम्यते येन  
तद्धूतं कर्म। सूत्र० ३२६। धून्नं-पापम्। दशवै० २२४।

धुय- ध्रुवं संयमः। सूत्र० १४१। धूतं-धूयतेऽष्टप्रकारं कर्मेति

तद्धृतं-संयमानुष्ठानम्, कर्म वा। सूत्र० ६९।  
**धुरण-** धुरजस्कः। ओघ० २२६। सम्० ४४।  
**धुवसीलया-** अद्वारससीलंगसहस्सेसु सययं उज्जुत्ता।  
 दशवै० १२४।  
**धुरण-** धुरकः। जम्बू० ५३५।  
**धुरतुण्डे-** धुरि। दशवै० १०५।  
**धुवं-** धुवमव्यन्तं सर्वदेत्यर्थः। स्था० ३६३। धुवं कर्म  
 संसारो वा। अनुयो० ३१।  
 अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरस्वभावः। सूत्र० ३७०। धुवं-  
 आचारप्रकल्पे प्रथमश्रुतस्कंधस्य षष्ठमध्ययनम्।  
 प्रश्न० १४५। धुवं-आचाराङ्गस्य षष्ठमध्ययनम्। उत्त०  
 ६१६। नित्यं-संपूर्णं सर्वत्रप्रधानोपसर्जनभावेन वा।  
 दशवै० २३५। निश्चितः अचलत्वाद् धुवः नित्यतरूपः।  
 भग० ११९। धुवत्वं सर्वदैवं भावान्नियतो  
 त्रिकालभावित्वाद् धुवः। स्था० ३३३। दढं थिरं। निशी०  
 २४४। षष्ठम-आचारप्रकल्पः। आव० ६६०। धुवं-  
 पर्वतिथिभाविभोज्यम्। बृह० १९२।  
**धुवकडुच्छुयं-** धूपकडुच्छुकम्। जीवा० २३५।  
**धुवकम्मिओ-** धुवकर्मिको लोहकारादिः। ओघ० ७७।  
**धुवकम्मी-** लोहकारो रहकारो कुंभकारो तंतुकारो। निशी०  
 ३६०। काष्ठसूत्रधारादयः। बृह० १०।  
**धुवगंडिया-** धुवगण्डिका। दशवै० १४०।  
**धुवघडी-** धूपघटी धूपघटिका। जीवा० २०६।  
**धुवचारिणो-** धुवो मोक्षस्तत्कारणं च ज्ञानादि धुवं  
 तदाचरितुं शीलं येषां ते धुवचारिणः। आचा० १२२।  
**धुवण-** ग्लानस्य धावनं प्रक्षालनम्। ओघ० ४१। धावनम्।  
 स्था० ३३९। धुवनं धावनं  
 शुभाध्यवसायान्मिथ्यात्वपुद्ग-लानां  
 सम्यक्त्वभावसंजनमिति। आचा० २९८।  
**धुवनिग्गहो-** अत्रानाचित्वात् क्वचिदपर्यवसितत्वाश्च धुवं  
 कर्म तत्फलभूतः संसारो वा तस्य निग्रहहेतुत्वान्निग्रहो  
 धुवनिग्रहः। अनुयो० ३१।  
**धुवरासी-** धुवराशिः। सूर्य० ४९।  
**धुवराहु-** यः सदैव चन्द्रविमानस्याधस्तात् सञ्चरति स  
 धुव-राहुः। सूर्य० २९०। भग० ५७६।  
**धुवलोअ-** धुवलोचः धुवः प्रतिदिनभावी लोचः। बृह० २२३  
 अ। दिने दिने कुर्वन्तीत्यर्थः। निशी० ३४३।

**धुववन्न-** धुवः अव्यभिचारी स चासौ वर्णश्च धुववर्णस्तं  
 धुवा। आचा० २९५।  
**धुवसीलया-** धुवशीलता  
 अष्टादशशीलाङ्गसहस्रपालनरूपा। दशवै० २३५।  
**धुवा-** धुवा धुवत्वात् त्रिकालभाविनी। जीवा० ९९।  
 त्रिकाला-वस्थायित्वात् धुवा। जम्बू० २७।  
**धुमुलिंती-** दध्यादिमशनती। पिण्ड० १५७।  
**धूः-** चिन्ता। पिण्ड० ३६।  
**धूआ-** पुत्री। जम्बू० १४९। धूता सुता। आव० १५४।  
**धूतं-** धुनातीति धूतं चारित्रम्। आचा० १२२।  
**धूमो-** दोसो। निशी० ४९। धूमः भोजने दोष-विशेषः।  
 भग० १२२। हिंवादिसत्को वधारः। पिण्ड० ८४।  
 आन्तप्रान्तादाताहारद्वेषाच्चारित्रस्याभिधूमनाद्  
 धूमदोषः। आचा० ३५१। अभिभवे। बृह० ४९।  
 मनःशिलादि-सम्बन्धि। उत्त० ४१७।  
 चारित्रेन्धनधूमहेतुत्वात् धूमः द्वेषः। भग० २९२।  
**धूमङ्गाल-** धूमाङ्गारकं द्वेषरागौ। ओघ० १८७।  
**धूमकेउ-** धूमकेतुः धूमचिह्नो धूमध्वजः नोल्कादिरूपः।  
 दशवै० ९५।  
**धूमकेऊ-** धूमकेतुः अष्टात्रिंशत्तमो महाग्रहः। स्था० ७९।  
 जम्बू० ५३५।  
**धूमपलिआमं-** णाम जहा खड्गं खणित्ता तत्थकारी सो  
 छुब्भती तीसे खड्गाए परिपरंतेहिं अण्णाओ खुड्ढाओ  
 खणित्ताओ सुतेदुआदीणि फलाणि छुभित्ता जा सा  
 करीसग खड्गगा तत्थ अग्गी छुब्भति तासिं च  
 तेदुगखड्गणं सो आतंकारी स खड्गं मिलिया ताहे धूमो  
 तेहिं सो तेहिं पिविसन्ता ताणि फलाणि पार्थेति तेणं ते  
 पच्चंति तत्थ जे अपक्का ते धूमपलियाम भण्णति।  
 निशी० १२५।  
**धूमप्पभा-** धूमप्रभा। प्रजा० ४३।  
**धूमप्रभा-** धूमाभद्रव्योपलक्षिता पृथ्वी। अनुयो० ८९।  
**धूमवट्टिं-** धूमवर्ति धूमश्रेणिम्। जम्बू० १९३।  
**धूमवण्णा-** धूमवर्णाः पाण्डुराः। ज्ञाता० २३१।  
**धूमाहिंति-** धूमायिष्यन्ते धूममुद्वमिष्यन्ति। जम्बू०  
 १६७। भग० ३०६।  
**धूमिआ-** धूमिका रूक्षा प्रविरला धूमाभा। अनुयो० १२१।  
**धूमिता-** धूमिका महिकाभेदो वर्णतो धूमिका धूमाकारा

धुमेत्यर्थः। स्था० ४७६।

धूमिया- धूमिका रूक्षा प्रविरला धूमाभा। जीवा० २८३।

धूमिका धूमवर्णा धूसरः। भग० १९६।

धूयं- धूतं-सङ्गानां त्यजनं तत्प्रतिपादकं धूतम्। स्था० ४४४। धूयत इति धूतं प्राग्बद्धं कर्म। सूत्र० ३३१।

धूयवाद- धूतं अष्टप्रकारकर्म धूननं जातिपरित्यागो वा तस्य वादः धूतवादः। आचा० २३९।

धूया- दोग्धि च केवलं जननीं स्तन्यार्थमिति दुहिता। उत्त० ३। दुहिता पुत्र। पिण्ड० १४०।

धूलि- धूलिः पाशुः। जम्बू० १६९।

धूलिणायं- धूलीजातम्। उत्त० १२८।

धूली-धूलिः। ओघ० २१५। धूली पांशुः। भग० ३०७।

धूलीजंधो- धूलिधूसरजंधः। व्यव० २५३ अ।

धूलीवासं- धूलिवर्षः। आव० ७३४।

धूव- धूपः दशाङ्गादिः गन्धद्रव्यसंयोगजः। जम्बू० ५१, १४४।

धूवग्ग्रहणं- धूपग्रहणं धूपभाजनम्। आव० ६८६।

धूवणे- आत्मवस्त्रादेर्धूपनम्, अनागतव्याधिनिवृत्तये धूमपा-नमित्यन्ये व्याचक्षते। दशवै० ११८।

धूपडिग्ग्रहं- धूपप्रतिग्रहं धूपभाजनम्। आव० ७१०।

धूसर- ईषद्धवलम्। आचा० २९।

धृतपूर्ण- योग्यं पानम्। बृह० ५५ अ।

धृतिः- निषधवर्षधरपर्वते षष्ठं कूटम्। स्था० ७२। तिगिचद्रह देवताविशेषः। स्था० ७३।

धुष्टार्जुनः-द्रुपदचुलनीसुतः द्रौपदीज्येष्ठभ्राता। प्रश्न० ८७।

धेज्जं- धैर्यं धुष्टता। प्रश्न० ११६। सत्त्वम्। प्रश्न० १२१।

धेज्जा- ध्येया। विपा० ४२।

धेवए- धैवतः रैवतः अभिसन्धयतेऽनुसन्धयति शेषस्वरानिति धैवतः षष्ठः स्वरः। अनुयो० १२७।

धेवते- अभिसन्धयते अनुसन्धयति शेषस्वरानिति निरुक्तव-शाद् धौवतः। स्था० ३९३।

धोअ- धौतो भूतिखरण्टितहस्तसम्मार्जनेनातितेजितः शोधितः जम्बू० ३५। धौतानि शाणोत्तारेण दीप्तिमन्ति कृतानि। जम्बू० २४२।

धोअणे- धावनं प्रक्षालनम्। आचा० ४१।

धोडग- धोटकः अजात्योऽश्वः। दशवै० १९४।

धोयं- धौतं निर्मलम्। जीवा० १६४। धौतं प्रक्षालितमलम्।

प्रश्न० ८२। धौतम्। आव० ६२०। धौतं प्रक्षालितम्। भग०

२५४। धौतं शोधितं तप्तं च। जीवा० २६७। धौतः- भूति-खरण्टितहस्तसम्मार्जनेनातिनिशितकृतः। प्रजा० ३६३।

जीवा० १९१। धौतः शोधितः। जीवा० १९१। धौतः

शोधितः। राज० ३३।

धोयपुत्ती- भूरिभेदा दाढीयाली। निशी० ६१ अ।

धोया- धौतानां शुद्धस्वरूपाः। स्था० ४४९।

धोरण- गतिचातुर्यम्। जम्बू० २६५, ५३०। चतुरत्वं गतिविषयम्। ज्ञाता० २३२।

धोरिगिणी- नटीमुख्याः। आव० ७०।

धोरुगिणि- धौरुकिनिकाः। ज्ञाता० ४१।

धोरेयसिला- धुरि वहन्ति धौरेयास्तेषामिव शीलं उत्क्षिप्तभार-वाहिता लक्षणं स्वभावो येषां ते धौरेयशीलाः। उत्त० ४०७।

धोवंति- उद्वर्तयन्ती। आव० ३४९।

धोवण- धावनं वस्त्राद्युपकरणचर्मकोश कटाहादिभण्डकविष-यम्। आचा० ४२।

धावितं- फोडितं। निशी० १२८ आ।

धोव्वाण- सर्वेषां प्रक्षालनविधीनाम्। जम्बू० २५८।

ध्मातं- भस्मीकृतम्। प्रजा० ११२। दग्धम्। प्रजा० २।

ध्यानशतकं- ध्यानव्यासार्थप्ररूपकं शास्त्रम्। आव० ५८२।

ध्यामकं- गन्धद्रव्यविशेषः। उत्त० १४२।

ध्यामतेजाः- भ्रष्टतेजाः। भग० ६८४।

ध्यामलं- अस्पष्टम्। आव० ७२५।

धुवः- य एकास्पदप्रतिबद्धः। उत्त० २८९।

धुवं- नित्यम्। व्यव० ३९१ अ।

धुवयं- धुवकं सङ्गीते रागविशेषः। उत्त० २८९।

धुववर्गणा- धुवा-नित्याः सर्वकालावस्थायिन्यः। आव० ३५।

धुवा- धुववर्गणा। आव० ३५।

धुवानन्तरा- प्रदेशोत्तरा। आव० ३५।

ध्वजा- केतुः। जीवा० १८९।

- X - X - X - X -

न

नंगल- लाङ्गलम्, हलम्। दशवै० २१८। लाङ्गलं शीरम्।

प्रश्न० ८। लाङ्गलं हलम्, क्षेत्रोपक्रमणविशेषः। दशवै० ४०।

**नंगलिय-** नाङ्गलिकः

गलावलम्बितसुवर्णादिमयलाङ्गलाका-रधारीभट्टविशेषः  
कर्षको वा। औप० ७३।

**नंगलिया-**

गलावलम्बितसुवर्णादिमयलाङ्गलप्रतिकृतिधारिणो  
भट्टविशेषः कर्षका वा। भग० ४८१।

**नन्तिक्क-** नन्तिक्ताः छिपाः। व्यव० ४१९ आ।

**नन्द-** नन्दः योगसंग्रहे शिक्षादृष्टान्ते पाटलिपुत्रस्य राजा।

आव० ६७०। नन्दो मौर्याणां वंशजातः। व्यव० २८०।

नन्दः नृपतिविशेषः। व्यव० १४० आ। नन्दः पाटलिपुत्रे

राजा। उत्त० १०४। नन्दः-उदायिराजो मन्त्री। वृत्तं

लोहा-सनम्। ज्ञाता० ४३। नन्दं-मङ्गलवस्तु, वृत्तं

लोहासनम्। भग० ५४७। स्थूलभद्रस्वामिनः पितामारितो

नृपः। नन्दी० १६७। नन्दं वृत्तलोहासनम्। जम्बू० ४२३।

नन्दिनामकं सन्निवेशम्। उत्त० ३७९। नन्दः

ब्राह्मणग्रामे उपनन्दस्य भ्राता। आव० २०१। भरतक्षेत्रे

भावितीर्थकरस्य पूर्वभवनाम। सम० १५४। नन्दः-

पारिणामिकीबुद्धिदृष्टान्ते पाटलिपुत्रे शल्लीपतिः। आव०

४३३।

**नन्दगोवं-** नन्दगोपः। व्यव० २४०।

**नन्दण-** नन्दनं भमरस्य विकुर्वणा विषयकोद्देशके

मोचानगर्या चैत्यम्। भग० १५३। मल्लिनाथजिनस्य

पूर्वभवनाम महा-वीरस्वामिनः पूर्वभवनाम। सम० १५१।

रधाणिताधिपती। स्था० ४०६। भरतक्षेत्रे भावि सप्तमो

वासुदेवः। सम० १५४।

**नन्दणं-** नन्दयति आनन्दयति देवादीनिति नन्दनं

देववनम्। जम्बू० ३६३। नन्दनः लक्षणोपेततया

समृद्धिजनकः। उत्त० ४५१। द्वितीयवर्गं

दशममध्ययनम्। निर० १९।

**नन्दणवणं-** नन्दनवनं द्वारवत्यां वनविशेषः। अन्त० १८।

नन्दनवनं मेरुसम्बन्धी उत्तमवनविशेषः। प्रश्न० १३५।

नन्दनवनं रैवतपर्वते वनविशेषः। अन्त० १। नन्दनवनं

मेरो-द्वितीयवनम्। प्रश्न० ८५। रैवतकपर्वतस्य

उद्यानविशेषः। निर० ३९। नन्दन्ति

सुरासुरविद्याधरादयो यत्र तन्नन्दनं वनं-

अशोकसहकारादिपादपवृन्दं च तद्वनं च नन्दनवनम्।

नन्दी० ४६।

**नन्दमाणग-** नन्दमानकः पक्षिविशेषः। प्रश्न० ८।

**नन्दमित्ते-** द्वितीयः विष्णुः। सम० १५४।

**नन्दसिरी-** नन्दश्रीः संवरोदाहरणे भद्रसेनदुहिता। आव०

७१३।

**नन्दसेणिया-** नन्दसेनिका अन्तकृद्दशानां सप्तमवर्गस्य

चतुर्थ-मध्ययनम्। अन्त० २५।

**नन्दा-** नन्दति समृद्धो भवतीति नन्दः तस्यामन्त्रणमिदं

इह च दीर्घत्वं प्राकृत्वात्। जम्बू० १४३। नन्दति

शीतलजिन-माता। आव० १६०। नन्दा एतदभिधाना

शाश्वतीपुष्करिणी। जम्बू० ४१७। नन्दा अन्तकृद्दशानां

सप्तमवर्गस्य प्रथम-मध्ययनम्। अन्त० २५। नन्दा

नन्दयति समृद्धिं नयतीति नन्दा,

अहिंसायाश्चतुर्विंशतितमं नाम। प्रश्न० ९९। नन्दा

संवरोदाहरणे वाराणस्यां जीर्णश्रेष्ठिनो भद्रसेनस्य

भार्या। आव० ७१३। नन्दा पुष्करिणीविशेषः। जीवा०

२२९। सम० १५०। श्रेणिकस्य राज्ञी। निर० ९। ज्ञाता०

११। अभय-कुमारस्य माता। ज्ञाता० ११।

**नन्दावर्त-** चतुरिन्द्रियजीवविशेषः। जीवा० ३२। प्रज्ञा० १,

४। नन्दावर्तः चतुरिन्द्रियजीवभेदः। उत्त० ६९६।

**नन्दी-** नन्दी अतिशयेन महान्। व्यव० ३२४। नन्दिः तुष्टिः

प्रमोदः। आचा० १४३। नन्दन्ति प्राणिनोऽनेनास्मिन्

वेति वा नन्दिः-इदमेव प्रस्तुततमध्ययनं नन्दनं नन्दि

प्रमोदो हर्षः इत्यर्थः। ज्ञानपञ्चकाभिधायकाध्ययनमपि

नन्दिः। नन्दी० १। नन्दिः आविष्टलिंगः। नन्दी० १।

द्वादशतूर्यसङ्घाते नन्दिः। जीवा० २०७। नन्दीः

द्वादशतूर्यनिर्घोषः। प्रश्न० १५९। क्रीडा। आचा० १५९।

**नन्दिआवर्त-** देवविमानविशेषः। सम० ३२। नन्द्यावर्तः।

ब्रह्मलोके देवविमानविशेषः। औप० ५२। आव० २१७।

**नन्दिए-** नन्दितः समृद्धतरतामुपागतः। भग० ११९।

**नन्दिगाम-** नन्दीग्रामः भगवतो वर्धमानस्वामिनः

पितुर्मित्रस्य ग्रामः। आव० २२२।

**नन्दिघोस-** देवविमानविशेषः। सम० १७। तूर्यनादः। ज्ञाता०

५८। द्वादशतूर्यसङ्घातो नन्दी तस्य घोषः। उत्त०

३०५। नन्दीघोषः-द्वादशतूर्यनिनादः। जीवा० १९२।

**नन्दिघोसेण-** नन्दीघोषेण द्वादशतूर्यनिनादात्मकेन यद्वा

आशी-र्वचनानि नान्दी जीयास्त्वमित्यादीनि तद्घोषेण

बन्दिकोला-हलात्मकेन। उत्त० ३४९।

**नन्दिणीपिय-** उपासकदशांगे नवममध्ययनम्,  
नन्दिनीपितृना-मकस्य श्रावस्तीवास्तव्यस्य भगवता  
बोधितस्य संलेखना-दिगतस्य  
वक्तव्यतानिबन्धनान्नन्दिनीपितृनामकमिति। स्था०  
५०९।

**नन्दिपडिगहि-** रोधगद्वाणगादिसु उववज्जति। निशी०  
१११ आ।

**नन्दिपुर-** नन्दिपुरं शाण्डिल्यजनपदे आर्यक्षेत्रम्। प्रजा०  
५५। नन्दिपुरं मित्रराजधानी। विपा० ७९।

**नन्दिफले-** नन्दिवृक्षाभिधानतरुफलानि। ज्ञाता० १०।  
ज्ञातायां पञ्चदशममध्ययनम्। सम० ३६। ज्ञाता० १०।  
आव० ६५३।

**नन्दिमुयंगसंठिय-** नन्दीमृदङ्गसंस्थितः, आवलिका  
बाह्यस्य त्रयोदशं संस्थानम्। जीवा० १०४।

**नन्दिमुयंगो-** नन्दीमृदङ्गः द्वादशविधतूर्यन्तर्गतो  
मृदङ्गः। जीवा० १०५।

**नन्दिय-** नन्दितः समृद्धितरतामुपगतः। भग० ३१७।

**नन्दियावत्त-** द्वीन्द्रियजीवविशेषः। जीवा० ३१। प्रजा०  
४१। नन्द्यावर्तः-नवकोणः स्वस्तिकविशेषः। प्रश्न०  
७०। नन्द्यावर्तः। राज० ८। नन्द्यावर्तः  
प्रतिदिग्नवकोणः स्वस्तिक-विशेषो रुढिगम्यः। औप०  
१०।

**नन्दिरागे-** समृद्धौ सत्यां रागो-हर्षो नन्दिरागः। भग० ५७३।

**नन्दिराय-** नृपविशेषः। ज्ञाता० २०८।

**नन्दिरुख-** वृक्षविशेषः। भग० ८०३।

**नन्दिवद्धन-** नन्दिवर्द्धनः एषणासमितिदृष्टान्ते आचार्यः।  
आव० ६१६। वर्धमानस्वामिनो ज्येष्ठभ्राता। आचा०  
४२२।

**नन्दिवद्धणा-** अञ्जनकपर्वते पुष्करिणीविशेषः। स्था०  
२३०।

**नन्दिसेण-** मथुरायां श्रीदामराजसुतः। स्था० ५०८। नन्दि-  
षेणः ग्लानवैव्यावृत्त्ये श्रद्धावान् साधुविशेषः। आव०  
६१७। पार्श्वपत्यः स्थविरः। आव० २०७। नन्दिषेणः  
पारिणा-मिकीबुद्धयैदृष्टान्तः। आव० ४३०। नन्दिषेण  
श्रेणिक-पुत्रसाधुः। आव० ४३०। श्रेणिकपुत्रः। आव० ६८२।  
जम्बूद्वीपे ऐरवते अवसर्पिण्यां चतुर्थो जिनः। सम०  
१५३।

**नन्दिसेणा-** नन्दिषेणा पूर्वस्यां दिशि  
पूर्वदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्य पुष्करिणी विशेषः। जीवा०  
३६४।

**नन्दिसेन-** शिष्यविशेषः। निशी० २०९ आ।

**नन्दिस्सरो-** नन्दिस्वरः द्वादशतूर्यसङ्घातवत्स्वरो यस्य  
स। जीवा० २०७।

**नन्दी-** प्रमोदः। आचा० १६३। नन्दी-गान्धारस्वरस्यप्रथमा  
मूर्छना। जीवा० १९३। द्वादशतूर्यसङ्घातः। उत्त० ३०५।  
नन्दी- द्वादशतूर्यसमुदायः। भग० ४८१। नन्दीवर्द्धनः  
राजकुमारविशेषः, अन्तकृद्दशासु दुःखविपाकानां  
षष्ठमम-ध्ययनम्। विपा० ३५। नन्दी-  
महेश्वरलघुशिष्यः। आव० ६८६। नन्दीः समृद्धिः। आव०  
७८९। समृद्धिः-हेतुः अकृ-शताहेतुः अदीनताहेतुः  
समृद्धताहेतुर्वा। बृह० १०५ आ। येनाभ्यवहतेन तवे  
संजमे वा नन्दति स एव नन्दी येनाभ्यवहतेन न द्रुतं  
दुयंति स नन्दी, समयसण्णाए वा संथरणं नन्दी। निशी०  
२१ आ।

**नन्दीभाणं-** नन्दीभाजनं नन्दीपात्रम्। ओघ० २१०।

**नन्दीभायणं-** नन्दीभाजनम्। बृह० २४४ आ। महत्पात्रम्।  
निशी० १८ आ।

**नन्दीभाषणं-** नन्दीभाषणं ज्ञानपञ्चकोच्चारणम्। व्यव० २३।

**नन्दीमुह-** नन्दीमुखः पक्षिविशेषः। प्रश्न० ८।

**नन्दीसर-** द्वीपविशेषः नन्दी समृद्धिस्तया ईश्वरो द्वीपो  
नन्दी-श्वरः। अनुयो० ९०। अष्टमो द्वीपः। सम० ९०।  
ज्ञाता० १२७। प्रश्न० ९६। इक्षुवरसमुद्रानन्तरं  
द्वीपस्तदनन्तरं समुद्रोऽपि। प्रजा० ३०७। नन्दीश्वरः  
महेश्वरज्येष्ठशिष्यः। आव० ६८६। नन्द्या-  
पर्वतपुष्करिणीप्रमुखपदार्थसार्थसमुद्भूतात्यद्भूतसमुद्भूता  
ईश्वरः-स्फातिमान्नन्दीश्वरः। जम्बू० १६३।

**नन्दीसरवरो-** नन्दीश्वरवरः द्वीपविशेषः। जीवा० ३५८।  
ज्ञाता० १२७। आव० ८१५।

**नन्दीस्सरवरदीव-** नन्दीश्वरवरद्वीपः। आव० २१६।

**नन्दुत्तरे-** भूतानन्दनागकुमारेन्द्रस्य रथानिकाधिपतिदेवः।  
स्था० ३०२।

**नन्दोत्तरा-** अन्तकृद्दशानां सप्तमवर्गस्य  
तृतीयमध्ययनम्। अन्त० २५।

**नङ्-** नदी सरित्। आव० ५८१।

**नइमह-** लौकीकपूजास्थाने दृष्टान्तः। आचा० ३२८।  
**नइयायतणे-** नद्यायतनानि यत्र तीर्थस्थानेषु लोका  
 पुण्यार्थं स्नानादि कुर्वन्ति। आचा० ४११।  
**नई-** नदी गिरिनद्यादिका। प्रजा० २६७।  
**नउअंगे-** चतुरशीत्या लक्षैरयुतेः नयुताङ्गं,  
 कालमानविशेषः। अनुयो० १००। सूर्य० ९१।  
**नउए-** चतुरशीत्या लक्षैर्नयुताङ्गैः नयुतम्  
 कालमानविशेषः। अनुयो० १००। सूर्य० ९१। भग० २७५,  
 ८८८।  
**नउयं-** चतुरशीतिवर्षलक्षाः पूर्वाङ्गं तच्च पूर्वाङ्गेन  
 गुणितं पूर्वं, पूर्वक्रमेणैकोनविंशतिवारान्  
 चतुरशीतिलक्षाहतं नयुताङ्गं तदपि  
 चतुरशीतिलक्षाभिर्ताडितं नयुतम्। उत्त० २७७।  
**नउल-** नकुलः पाण्डुनृपस्य चतुर्थः पुत्रः। ज्ञाता० २०८।  
 नकुलः। आव० २१७। नकुलः भुजपरिसर्पतिर्यग्योनिकः।  
 जीवा० ४०।  
**नउलगो-** नकुलकः। आव० ४२१।  
**नउला-** भुजपरिसर्पविशेषः। प्रजा० ४६।  
**नउलि-** नकुलीविद्याविशेषः। आव० ३१९।  
**नए-** नयनं नयः नीयते  
 परिच्छिद्यतेऽनेनास्मिन्नस्मादिति वा नयः,  
 सर्वत्रानन्तधर्माध्यासिते वस्तुन्येकांशग्राहको बोधः  
 इत्यर्थः। अनुयो० ४५। नयः न्यायः। औप० ९३। नदः-  
 ह्रदः। ज्ञाता० २६। नयति अनेकांशात्मकं  
 वस्त्वेकांशावलम्बनेन प्रतीतिपथमारोपयति नीयते वा  
 तेन तस्मिंस्ततो वा नयनं वा नयः  
 प्रमाणप्रवृत्त्युत्तरकालभाविपरामर्शः। उत्त० ६७। नयः-  
 प्रतिनियतैकवस्त्वंशविषयोऽभिप्रायविशेषः। सूर्य० ३६।  
**नओ-** नयः नयनं अनन्तधर्मात्मकस्य वस्तुनो  
 नियतैकधर्मा-वलम्बनेन प्रतीतौ प्रापणं नयः। उत्त०  
 ११।  
**नकराणि-** नैतेषु करोऽस्तीति नकराणि। आचा० २५४।  
**नकुल-** च प्रलापः। उत्त० ६९९। परिसर्पविशेषः। प्रजा०  
 ४५।  
**नकुला-** औषधविशेषः। निशी० ७६ अ।  
**नकुलोपगूहं-** स्त्रियाः गुह्यरक्षकं वस्त्रम्। प्रजा० ४३०।  
**नक्क-** नासिका। प्रश्न० ८। मत्स्यविशेषः। प्रश्न० ९।

**नक्कय-** पायकाः। संस्ता०।  
**नक्का-** नासिका। आव० ८२०।  
**नक्कुडिअ-** नर्कुटिकः नागदन्तकः अङ्कुटिकः। जम्बू०  
 ५०।  
**नक्खच्चणी-** नखार्चणी नखहरणिका। बृह० १०१ अ।  
**नक्खत्तमासे-** एकोनितनक्षत्रपर्याययोग एको  
 नक्षत्रमासः। सूर्य० १५३।  
**नक्खत्तसंवच्छरे-** नक्षत्रसंवत्सरः। सूर्य० १६८।  
 पञ्चविधलक्षणः संवत्सरः। सूर्य० १७१।  
**नक्खत्तसेसे-** नक्षत्रशेषः, नक्षत्रार्द्धमासः। सूर्य० २३२।  
**नक्खत्ता-** नक्षत्राः ज्योतिष्कभेदविशेषः। प्रजा० ६९।  
**नक्षत्रमासः-** नक्षत्रेषु भावो नाक्षत्रः स खलु मासः  
 सप्तविंशतिरहोरात्राणि सप्तषष्ठीकृतेन छेदेन  
 छिन्नस्याहोरात्रस्य एक-विंशतिः सप्तषष्ठाः भागः।  
 बृह० १८६ अ। चन्द्रस्य नक्षत्रमण्डलभोगकालो  
 नक्षत्रमासः। स्था० ३४४। अष्टौ मुहूर्तशतानि  
 एकोनविंशत्यधिकानि। सूर्य० ९।  
**नख-** नखरः। आचा० ३८।  
**नग-** पर्वतः। उत्त० ३५२। जीवा० २७०।  
**नगर-** नकरं अकरदायी लोकम्। प्रश्न० ५। कररहितम्।  
 अनुयो० १४२। भग० ३६। नात्र करोऽस्तीति नकरम्।  
 उत्त० ६०५। नगरमिह सैन्यनिवासिप्रकृतयः। भग०  
 ३१८। महामणुस्स संपरिगृहो पंडियसमवाओ। दशवै०  
 १६३। नकरं-नास्मिन् करो विद्यत इति नकरम्। दशवै०  
 १४७। भग० ६७४।  
**नगरगोत्तिय-** नगरगुप्तिकः। आव० ६६७।  
 नगरगुप्तिकः। कोट्टपालः। प्रश्न० ३०।  
**नगरजनवय-** नगरजनपदाः नगरादिलोकाः स्वयमेव  
 पचनपाचनस्वभावा वर्तन्ते यथा भ्रमराः। दशवै० ७३।  
**नगरथेरा-** नगरे स्थापयन्ति दुर्व्यवस्थितं जनं सन्मार्गे  
 स्थिरी-कुर्वन्तीति स्थविराः, ये नगरे व्यवस्थाकारिणो  
 बुद्धिमन्त आदेयाः प्रभविष्णवस्ते नगरस्थविराः। स्था०  
 ५१६।  
**नगरधम्मे-** नगरधर्मः नगराचारः। स्था० ५१५।  
**नगरनिद्धमणं-** नगरनिर्द्धमनं नगरजलनिर्गमनम्। भग०  
 २००। नगरजलनिर्गम क्षालः। ज्ञाता० ८१।  
**नगरमारी-** नगरमारी मारीविशेषः। भग० १९७।

नगररोग- नगररोगः। भग० १९७।

नगराणि- चतुर्गोपुरोद्भासीनि न विद्यते करो येषु तानि  
नकराणि वा कररहितानि। जम्बू० १२१।

नगिण- नग्नः कुचेलवान्। दशवै० २०६।

नगगई- नगगतिः गन्धारजनपदेषु पुरुषपुरनृपतिः,  
यश्चूतवृक्षं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धः। उत्त० २९९।

नगगओ- नग्नः। आव० ३०५।

नगगयमगगो- नग्नमार्गः। तन्दु० ।

नगनरुई- नाग्नये श्रामण्ये रुचिः-इच्छा नाग्नयरुचिः।  
उत्त० ४७९।

नगगेति- नग्नयति। आव० ३०५।

नगगोधो- न्यग्रोधः एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः। जीवा०  
१४५।

नच्च- नृत्यः नृत्यविधायी। जीवा० २८१।

नच्चियव्वं- नर्तितव्यम्। ओघ० १५७।

नच्चेज्ज- पादजंघाउरुकडिउदरबाहु  
अंगुलिदणयणयणपमु-हादिविकारकरणं नृत्यम्। निशी०  
६१ आ।

नजाणति- न जानाति- न सम्यग् विशेषतो गृह्णाति।  
स्था० ३०६।

नजुतं- चतुरशीतिरन्युताङ्कशतसहस्राणि एकं नयुतम्।  
जीवा० ३४५।

नजुतंगं- चतुरशीतिः नयुतशतसहस्राणि एकं  
नयुताङ्गम्। जीवा० ३४५।

नज्जइ- जायते। ज्ञाता० १९२।

नञ्- इह दुःशब्दार्थः। स्था० १५३। सर्वनिषेधवचनोऽयं  
शब्दः। प्रज्ञा० ४६८।

नङ्- गीतविरहितं नृत्यम्। बृह० ३९ आ। नृत्यविधायी  
नर्तकः। अनुयो० ४६। नाट्यं नृत्यम्। स्था० ४५०।  
नाट्यं साभिनयनिरभिनयभेदभिन्नं ताण्डवम्। जम्बू०  
१३७। नाट्यं नृत्यम्। विपा० ४५। नृत्तं-  
करचरणनयनादिपरिस्पन्दविशेषलक्षणम्। आव०  
५२८।

नङ्क- नर्तकः यो नृत्यति स। प्रश्न० १३७।

नङ्कहा- नर्तककथा रमणीयोऽयं नर्तको नवेति। दशवै०  
११४।

नङ्ग- नर्तकः यो नृत्यति सः अङ्किल्लो वा। औप० २।

नङ्मालए- नृत्तमालकः

खण्डप्रपातगुहायामधिष्ठायकदेवविशेषः। स्था० ७१।

नङ्मालयं- नृत्यमाल्यम्। आव० १५१।

नङ्गि- नर्तकी नाट्यम् नर्तनकारिणी च। दशवै० ४०।

नङ्गिअं- करस्य तथा पादस्य भुवः शिरसः अक्षणः  
ओष्ठस्य च एवमादीनामङ्गानां सविकारं चलनं  
नर्तनम्। ओघ० १७७।

नङ्गुल्लगं- नाट्यम्। ज्ञाता० ९६।

नङ्गु- नष्टं सर्वथाऽदृश्यं भूतम्। जीवा० ३४५। जम्बू० ३८९।

नङ्गुडिडा- नष्टक्रीडा। आव० ३९४।

नङ्गुतेये- नष्टतेजाः। भग० ६८४।

नङ्गुल्लओ- नष्टः। आव० १९४।

नङ्- नटः नाटकानां नाटयिता। अनुयो० ४६। नटः  
नाटयिता। प्रश्न० १३७। नटः नाटकानां नाटयिता।  
औप० २। जीवा० २८१। तृणविशेषः। जीवा० १२३।

नङ्कहा- नटकथा रम्योऽयं नटः। दशवै० ११४।

नङ्खइया- नटखादिता नटस्येव  
संवेगविकलधर्मकथाकर-णोपार्जितभोजनादीनां  
खादितं भक्षणं यस्यां सा नटस्येव वा  
खड्वसंवेगशून्यधर्मकथनलक्षणो हेवाकः-स्वभावो  
यस्यां सा। स्था० २७६।

नङ्पिडयं- नटपेटकं लवालवोदाहरणे ग्रामविशेषः। आव०  
७२१।

नङ्गिनि- नडः तृणविशेषस्तत्सत्कोऽग्निः। जीवा० १२३।

नङ्गिओ- नटितः। ज्ञाता० १६९।

नाडिज्जए- नट्यन्ते विनट्यन्ते। प्रज्ञा० ९५।

नणु- ननु अक्षमायां प्रयुज्यमानः शब्दः। दशवै० ६३।

नण्णत्थ- ननु निश्चितं अत्र इहलोके नन्वत्र नान्यत्र वा।  
भग० १७४।

नत्तं- नक्तं रात्रौ। सूर्य० १०४।

नत्तु- नप्ता पौत्रः दौहित्रश्च। भग० ३०९।

नत्तूण- नप्तृणां पौत्राणाम्। निर० २०।

नत्था- नस्ते नासारज्जू। उपा० ४४।

नत्थिकवादी- नास्तिकवादी-लोकायतिकः। प्रश्न० ३१।

नदइ- नदति। जीवा० २४७।

नदिकोप्पर- नद्यास्तीरे आकुण्टितकूर्पराकारं गमनं नद्या  
आ-कुण्टितकूर्पराकारं चलनं नदीकूर्परम्। बृह० १६२ आ।

नदितानि- शब्दवन्ति। जीवा० १६०।  
 नदी- गङ्गासिन्धवादिका। नन्दी० २२८। नदी-सरित्।  
 भग० २३७। ज्ञाता० ३६। बादरअप्कायस्थानेषु स्थानम्।  
 प्रज्ञा० ७२।  
 नदीकच्छ- नदीगहनम्। ज्ञाता० ६७।  
 नन्दः- क्रोधहृतः। भक्त० ।  
 नन्दक- खड्गविशेषः। सम० १५७।  
 नन्दन- छात्राग्रनगर्या राजसुनुः। सम० १०६।  
 नन्दनवनं- मेरुपर्वते वनम्। आव० ४७। ज्ञाता० ९१। कूट-  
 विशेषः। प्रश्न० ९६।  
 नन्दा- श्रेणिकस्य राज्ञी बेन्नात्तटनगरेश्रेष्ठिनः पुत्री  
 अभयकु-मारस्य माता। नन्दी० १५०।  
 नन्दाप्रविभक्ति- त्रयोदशनाट्यभेदः। जम्बू० ४१७।  
 नन्दाप्रविभक्तिचम्पाप्रविभक्त्यभिनयात्मको-  
 नन्दाचम्पाप्र-विभक्त्यात्मकः त्रयोदशो नाट्यविधिः।  
 जीवा० २४६।  
 नन्दि- संनिवेशविशेषः। उत्त० ३८०।  
 नन्दिघोषा- घण्टाविशेषः। भग० ७००।  
 नन्दिणीपिया- उपासकदशानां नवममध्ययनम्। उपा०  
 १।  
 नन्दितः- महितो हृष्टः तुष्टो वा। आव० ७५९।  
 नन्दिवर्धनः- भगवतः वर्द्धमानस्वामिनो भ्राता। आव०  
 १८३।  
 नन्दिवर्द्धनः- राजकुमारविशेषः। स्था० ५०८।  
 नन्दिषेणः- श्रेणिकपुत्रः। नन्दी० १६६।  
 नन्दीमृदङ्गः- एकतः सङ्कीर्णोऽन्यत्रविस्तृतो  
 मुरजविशेषः। राज० ४९।  
 नन्नत्थ- नवरं केवलमिति। औप० ८५।  
 नपुंसकः- षण्डकः। दशवै० ११५, २१५।  
 नपुंसगवे- नपुंसकस्य वेदो नपुंसकवेदः, नपुंसकस्य  
 स्त्रियं पुरुषं च प्रत्यभिलाष इत्यर्थः, तद्विपाकवेद्यं  
 कर्मापि नपुंस-कवेदः। प्रज्ञा० ४६९।  
 नपुंसगवेय- नपुंसकवेदको वर्द्धितकत्वादिभावेन भवति।  
 भग० ८९३।  
 नपू- नपुंसकत्वम्। उत्त० ३१४।  
 नभ- नभाति दीप्यतेति नभः। भग० ७७६।  
 नमंसइ- नमस्यति कायेन प्रणमति। जम्बू० १७। सूर्य० ६।

ज्ञाता० १०। कायेन प्रणमति नात्यासन्ने नातिदूरे  
 उचिते देशे इत्यर्थः। ज्ञाता० १०। नमस्यति तत्प्रह्वैः  
 शब्दैः स्तौति। सूत्र० २७४। नमस्करोति  
 पश्चात्प्रणिधानादियोगेन सामान्येन वा। जीवा० २५६।  
 नमंसण- नमस्करणं वाचा। आव० ४०६। नमस्यनं  
 प्रणमनम्। भग० ११५।  
 नमंसणिज्जं- नमस्यनं प्रणामतः। औप० ५।  
 नमंसति- नमस्यति कायेन प्रणमति। निर० ३। कायेन  
 वन्दित्वा नमस्यित्वा च। राज० ४८।  
 नमंसित्ता- नमस्यित्वा प्रणम्य। स्था० १०८।  
 नमंसे- नमस्यति नमस्करोति। दशवै० २४५।  
 नमः- पूजार्थमव्ययम्। आव० ३७९।  
 नममाणे- नममानः संयमानुष्ठानेन विनयवान्। आचा०  
 २५४।  
 नमयति- प्रवणयति। उत्त० ६४१।  
 नमस्करणं- प्रणामपूर्वकं प्रशस्तध्वनिभिर्गुणोत्कीर्तनम्।  
 आव० ८८८।  
 नमस्कारः- पञ्चमङ्गलकः। ओघ० २०३।  
 नमिः- कच्छपुत्रः। आव० १४३।  
 नमिपव्वज्जा- उत्तराध्ययनानां नवममध्ययनम्। सम०  
 ६४।  
 नमिय- नमितः नामं ग्राहितः। जीवा० २२९, २९४।  
 नमिया- ज्ञातायाः द्वितीयश्रुतस्कंधे पञ्चमवर्गं  
 द्वाविंशतितमम-ध्ययनम्। ज्ञाता० २५२।  
 नमी- नमिः द्रव्यव्युत्सर्गे विदेहजनपदे मिथिलाधिपतिः,  
 यो वलयानि दृष्ट्वा संबद्धः। आव० ७१६, ७१९। नमिः  
 राजा योऽशनादिकमभुक्तैव सिद्धिमुपगतः। सूत्र० ९५।  
 नमिः, विदेहजनपदेषु मिथिलानृपतिः, यो  
 निजदेवीवलयं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धः।  
 नमुचिः- वाराणस्यां ब्राह्मणविशेषः। उत्त० ३७६।  
 नमुचिना- सेवाद्युपायलब्धे दृष्टान्तः। जम्बू० २६७।  
 नमुक्कार- नमस्कारः नमस्कारसहितं प्रत्याख्यानम्।  
 आव० ८५२। नमस्कारः। आव० ५२४, ८००।  
 नय- नयः अनन्तधर्मात्मकस्य वस्तुन एकांशपरिच्छेदः,  
 एकेनैव धर्मेण पुरस्कृतेन वस्त्वङ्गीकारः। जम्बू० ५।  
 अनन्तधर्मात्मकस्य वस्तुन एकांशपरिच्छेदः, नयनं  
 नयः नीयतेऽनेनास्मिन्नस्मादिति नयः। स्था० ४।

नयनं नीय-तेऽने-नास्मादस्मिन्निति वा नयः। *आव०*  
 ५४। नैगमादिः। *ज्ञाता०* ७। 'नडु' प्रापणे अनेकविधमर्थं  
 प्रापयन्तीति नयाः। अहव णिच्छियमत्थं णयतीति  
 णया। *निशी०* १४९ आ। नीतिदर्शनम्। *भग०* ११४। नयः  
 अनन्तधर्मात्मकस्य वस्तुन एकांशपरिच्छितिः।  
*अनुयो०* २१०। अनन्तधर्माध्या-सितं वस्त्वैकेन धर्मेण  
 नयन्ति परिच्छिन्दन्तीति ज्ञानविशेषाः नयाः। *आचा०*  
 ३। द्रव्यास्तिकायाः। *भग०* ६२।

**नयगई-** यन्नयानां नैगमादीनां स्वस्वमतपोषणं  
 यन्नयानां सर्वेषां परस्परसापेक्षाणां  
 प्रमाणाबाधितवस्तुव्यवस्थापनं सा नय-गतिः,  
 विहायोगतेरष्टमो भेदः। *प्रज्ञा०* ३२७।

**नयगती-** नयगतिः, नैगमादिनयानां या गतिः सा  
 सर्वनया अपि वा यामिच्छन्ति सा। *प्रज्ञा०* ३२७।

**नयचक्रं-** द्वादशविध्यादिप्रतिपादकं शास्त्रम्। *उत्त०* ६८।

**नयणं-** नयनं लोचनम्। *प्रश्न०* ८। दृष्टिः। *ज्ञाता०* १६२।

**नयणकी-** नयनकीको नेत्रमध्यताराः। *राज०* ९।

नयनकीका नेत्रमध्यतारा। *ज्ञाता०* ६।

**नयरं-** नगरं अविद्यमानकरदानम्। *प्रश्न०* ३९। नगरं  
 अविद्य-मान करम्। *औप०* ७४। नगरं  
 करविरहितसन्निवेशः। *उत्त०* १०७। न विद्यते करो  
 यस्मिन् तत् नकरं नखादिकः। *जीवा०* २७९।

**नयरवाहिरिया-** नगरबाहिरिका। *उत्त०* २२१।

**नयरमंडल-** नगरमंडलपुरपरिक्षेपपरिसरः। *उत्त०* ४९८।

**नयरमज्झं-** नगरमध्यं सन्निवेशमध्यमागः। *प्रश्न०* ५९।

**नयविही-** नयविधिः नैगमादिभेदः। *उत्त०* ५६५।

नयविधिः नैगमादिनयप्रकारः। *प्रज्ञा०* ५६।

**नयविहूणो-** नयविहीनः ज्ञानगमनक्रियालक्षणनयशून्यः।  
*आव०* ५३१।

**नयाः-** नयन्ति परिच्छिन्दन्ति अनेकधर्मात्मकं सद्वस्तु  
 सा अनवधारणतयैकेन धर्मेणिति नयाः। *स्था०* १५३।  
 नता ईषन्नता। *जीवा०* १८२।

**नयुता-** सङ्ख्याविशेषः। *उत्त०* २७७।

**नर-** पादपूरणार्थं निपातः। *बृह०* १६९ आ। नरः नरव्य-  
 ञ्जनः, न भावनरः। *दशवै०* २५१।

**नरण-** नरान् कायन्ति योग्यतयाऽहवयन्तीति नरकाः।  
*उत्त०* १८२।

**नरकः-** नरहवानकः स्थानविशेषः। *७७।*

**नरकण्ठः-** नरकण्ठप्रमाणो रत्नविशेषः। *जीवा०* २३४।

**नरकान्ता-** रुक्मिवर्षधरपर्वते चतुर्थं कुटम्। *स्था०* ७२,  
 ७४। रुक्मिपर्वतनिर्गता नदी। हृदविशेषः। *स्था०* ७५।

**नरछाया-** छायागतिभेदः। *प्रज्ञा०* ३२७।

**नरदेवा-** नराणां मध्ये देवाः-आराध्या।

क्रीडाक्रान्त्यादियुक्ता वा नराश्च ते देवाश्चेति नरदेवाः।  
*भग०* ५८३।

**नरय-** निरयाः सीमन्तकाद्या अप्रतिष्ठानावसानाः।  
*आव०* ६००।

**नरयावास-** आवसन्ति येषु ते आवासाः नरकाश्च ते  
 आवासा-श्चेति नरकावासाः। *भग०* ६८।

**नरवाहण-** भरुयच्छे राया। *बृह०* २२७ आ। नरवाहनः।  
*आव०* ८९।

**नरवाहणिया-** कार्मार्यभेदविशेषः। *प्रज्ञा०* ५६।

**नरिदं-** लान्तके देवविमानविशेषः। *सम०* २२।

**नरिदकंतं-** लान्तके देवविमानविशेषः। *सम०* २२।

**नरिदुत्तरवडिसंगं-** लान्तके देवविमानविशेषः। *सम०* २२।

**नर्कुटकः-** नागदन्तकः, अङ्कटकः। *जीवा०* २०५।

**नर्त्तकी-** यंत्रकाष्ठमयी। *व्यव०* १९२ अ।

**नर्म-** रागोद्रेकात्प्रहासमिश्रो मोहोद्दीपकः कन्दर्पः। *आव०*  
 ८३०।

**नलः-** शुषिरसराकारः। *स्था०* ४१९। प्रतरभेदविशेषः। *प्रज्ञा०*  
 २६६। तृणविशेषः। *प्रज्ञा०* ३७। नलः- वैश्रमण-  
 ज्येष्ठपुत्रः। *अन्त०* ५। वनस्पतिविशेषः। *भग०* ८०२।

**नलकूबरः-** देवविशेषः। *उत्त०* ४९५।

**नलथंवा-** नलस्तम्बः- अभावुकद्रव्यम्। *ओघ०* २२३।  
 नलस्तम्बः-वृक्षविशेषः। *आव०* ५२१।

**नलदाम-** नलदामः- पारिणामिकीबुद्धिदृष्टान्ते शाखापुरे  
 मत्कोटमारकः। *आव०* ४३५। नलदामः-कुविन्दविशेषः।  
*व्यव०* १४० आ।

**नलवणं-** वनविशेषः। *ओघ०* १५८।

**नलादयः-** सूर्यपाकरसवतीकारकाः। *जम्बू०* २४४।

**नलिं-** नलिकः-शूलिका। *व्यव०* ४१७ अ।

**नलिणंगे-** नलिनाङ्गः, कालविशेषः। *सूर्य०* ९१। *भग०*  
 ८८८।

**नलिण-** भगवत्या एकादशशतके अष्टम उद्देशकः। *भग०*

५११। नलिनः। सूर्य० ९१। नलिनम्। भग० २१०, २७५,  
८८८। देवविमानविशेषः। सम० ३३। नलिन-ईषद्रक्तं  
पद्मम्। जीवा० १७७। ज्ञाता० ९६। प्रत्यकशरीरजीवात्म-  
कवनस्पतिभेदः। प्रज्ञा० ३७। देवविमानविशेषः। सम०  
३५।  
नलिणकूडा- वक्षस्कारपर्वतविशेषः। स्था० ८०।  
नलिणगुम्भं- देवविमानविशेषः। सम० ३५। उत्त० ३७६।  
नलिणतन्तु- नलिनतन्तवः-सूक्ष्मतन्तवः। जम्बू० १०७।  
नलिणगुम्भ- नलिनीगुल्मः विमानविशेषश्च। आव०  
६७०। द्वितीयवर्गऽष्टममध्ययनम्। निर० १९।  
नलिनं- ईषद्रक्तं पद्मम्। राज० ८।  
नलिनगुल्मविमानं- पद्मगुल्मविमानम्। उत्त० ३७६।  
नलिनानि- ईषद्रक्तानि। जम्बू० २६।  
नवंग- नवाङ्गानि द्वे द्वे श्रोत्रे नयने नासिके  
जिह्वैकात्वगेका मनश्चैकम्। ज्ञाता० ४२।  
नव- वरिसो होइ नवो व्रतपर्यायेण। व्यव० ११२आ।  
प्रत्यग्रम्। ज्ञाता० १६८। जीवा० १८८। त्रिवर्षावस्थां  
यावत्। व्यव० २४५।  
नवकमलं- आदित्यबोधं पद्मम्। प्रश्न० ८४।  
नवणीयं- नवनीतं। प्रज्ञा० ३६७। मक्षणम्। आव० ६२४,  
८५४। जीवा० २९०। उत्त० ६५४।  
नवतं- नवत्यधिकम्। सूर्य० २६१।  
नवतय- नवतानि-जीनानि। ज्ञाता० २३२।  
नवतयकुसंतो- नवत्वक्कुशान्तः-  
प्रत्यग्रत्वग्दर्भपर्यन्तरूपः। जीवा० २१०।  
नवधम्म- नवधर्मः- अभिनवश्रावकः। बृह० २७९अ।  
नवनवकिकाया- एकशीतिः। व्यव० ३४७आ।  
नवनवमिया- नवनवमिका-भिक्षुप्रतिमाविशेषः। अन्त०  
२९। नव नवमानि दिनानि यस्यां सा नवनवमिका।  
सम० ८८।  
नवमालिका- गन्धद्रव्यविशेषः। जीवा० १९१।  
गुल्मविशेषः। प्रज्ञा० ३०। उत्त० ६९२। आद्या० ३०। भग०  
३०६।  
नवमिका- शक्रेन्दस्य सप्तमी अग्रमहिषी। भग० ५०५।  
सत्पुरुषस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। भग० ५०४।  
नवयण- नवत्वक्। स्था० २३४।  
नवरं- केवलम्। ओघ० ३४, १९७। स्था० ५९।

नवरि- केवलम्। प्रश्न० १३३।  
नवलकं- नोलीति लोके। नन्दी० १५६।  
नवा- जत्थ गावो ऊसत्थाणा लिहन्ति सा भुज्जमाणी  
णिरुद्धा नवा भण्णन्ति। निशी० १९२आ।  
न विग्रहः- लोकयात्रा। निशी० ३२४आ।  
नवीनः- सम्प्रत्येवापाकतः समानीतः।  
नष्टक्षीरा- विनीता गौः। आव० ५४६।  
नष्टनाशकः- नित्यवासी। आव० ५३५।  
नष्टसंसारः- विनीतसंसारः। आव० ५४६।  
नस्ते- नासिकारज्जु। भग० ४५९।  
नह- नखः नखिकाः। जम्बू० ५७। नखः। आव० १९२।  
करजः। प्रश्न० ८।  
नहनिवाय- नखनिपातः-नखरदनजातिः,  
संप्राप्तकामस्याष्टमो भेदः। दशवै० १९४।  
नहरणं- न धेत्तव्यं। निशी० २४आ।  
नहवाहणो- नभोवाहनः-द्रव्यप्रणिधिषिये कृशसमृद्धो  
भृगुक-च्छनगराधिपतिः। आव० ७१२।  
नहवेयण- नखवेदना। आव० १९२।  
नहवेयणा- नखवेदना नखरपीडा। भग० १९७।  
नहसंठाणा- नखसंस्थाना-नखावत्तीक्ष्णा। ओघ० ३०।  
नहसंदडो- नखसंदष्टः-नखाः संदष्टा  
मुसलादिभिश्चुम्बिता यस्य सः। जीवा० २१३।  
नहसिर- नखशिरः-नखग्रम्। भग० २१८।  
नही- साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। प्रज्ञा० ३४।  
नाइ- जातिः-स्वजनः। उत्त० ३६१। जातिः-स्वजनो  
मातापितृपुत्रकलत्रादिः। सूत्र० ७५। जातिः-स्वजनः।  
उत्त० १८८।  
नाइत- नादितं वादनोत्तरकालभावी सततध्वनिः। राज०  
२५।  
नाइय- नादितं-शब्दानुसारीनादः। औप० ७३। लपितम्।  
ज्ञाता० ५। नादितं- घण्टायामिव  
वादनोत्तरकालभावीसततध्वनिः। जीवा० २४५।  
नादितं-ध्वनिमाप्रम्। भग० ४७६।  
नाइवलं- नातिवलं न मर्यादोल्लङ्घनम्। आद्या० २९१।  
नाई- जातयः-पूर्वापरसंबद्धाः स्वजनाः। आद्या० १३०।  
नाईवगो- जातिवर्गः-स्वजनयोषिद्वर्गः। ओघ० १९९।  
नाए- न्यायः सम्मार्गः। आद्या० १४४।

न्यायनिर्णायकत्वात् न्यायः ज्ञातं वा-  
ज्ञातसामर्थ्यमनुभूततत्प्रसादेन लोकेनेति। ज्ञाता० ३।  
आचा० ४२२।

नाओ- अभिष्टार्थसिद्धेः सम्यगुपायत्वात् न्यायः,  
जीवकर्म-सम्बन्धापनयनान्न्यायः, आवश्यकस्य  
षष्ठः पर्यायः। अनुयो० ३१। नादः-महान् घोषः। जीवा०  
२४५।

नाखरा- सिंहादयः। स्था० २७३।

नागः- भवनपतिविशेषः। जीवा० २८१। अनुयो० २५। द्रुम-  
विशेषः। जीवा० १८२। सीसकम्। प्रश्न० १५२। दशमं  
करणम्। जम्बू० ४९३। नगः-वनगजः। दशवै० २७५।  
नागः-वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३१। नागः-शिक्षायोगदृष्टान्ते  
राजगृहे प्रसेनजित्सत्को रथिकः-सुलसापतिः। आव०  
६७६। नागः-भद्रिलपुरे गाथापतिः। अन्त० ४। भगवत्या-  
द्वादश अष्टम उद्देशकः। भग० ५५२। नागः द्वीपसमुद्र-  
विशेषः। जीवा० ३२१। नागः-यमुनाह्रदवासी घोरविषो  
महानागः। प्रश्न० ७५।

नागकुमारा- नागकुमाराः भुवनपतिः। प्रज्ञा० ६९।  
नागकुमाराः-वरुणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्तिनो  
देवाः। भग० १९९।

नागकुमारोओ- नागकुमार्यः-  
वरुणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशव-वर्तिन्य देव्यः। भग०  
१९९।

नागकेसरं- नागकेसरं-चूर्णविशेषः। आव० ६३६।

नागगृहो- नागगृहः। जीवा० २८४।

नागघरण- उरगप्रतिमायुक्तं चैत्यम्। ज्ञाता० १३१।

नागजण्ण- नागपूजा, नागोत्सवः। ज्ञाता० १३२।

नागजसा- नागयशाः-पन्थकसुता। ब्रह्मदत्तराजी। उत्त०  
३७९।

नागदंत- नागदन्तकः-नर्कुटकः अङ्कुटक इति। जीवा०  
२०५। नागदन्तकः-अङ्कुटकः। जीवा० २१४।

नागदत्तः- नागदत्तः-वैधर्म्योदाहरणे प्रतिष्ठाने  
निर्विण्णकाम-भोगो नागवसुश्रेष्ठिपुत्रः। आव० ६९८।  
नागदत्तः- कषाय-प्रतिक्रमणोदाहरणे श्रेष्ठीपुत्रः। आव०  
५६५। नागदत्तः निष्प्रति-कर्मशरीरतायां विपरिते  
दृष्टान्तः। आव० ६६४।

नागदत्ता- यक्षहरितस्य प्रथमा सुता-ब्रह्मदत्तराजी।

उत्त० ३७९।

नागदमनी- औषधीविशेषः। उत्त० ६३४।

नागपरियावणिया- नागाः नागकुमारास्तेषां परिज्ञा यस्यां  
ग्रन्थपद्धतौ भवती सा नागपरिज्ञा। नन्दी० २०७।

नागपुर- नगरविशेषः। ज्ञाता० २५२।

नागबाणः- महाशस्त्रम्। जीवा० २८३।

नागबाणाः- धनुष्यारोपिता बाणाकारा मुक्ताश्च सन्तो  
जाज्व-ल्यमानासह्योल्का दण्डरूपास्ततः परशरीरे  
सङ्क्रान्ता नग-मूर्तिभूय पाशत्वमश्नुवते। जम्बू० १२५।

नागमह- नागस्य भवनपतिविशेषस्य  
प्रतिनियतदिवसभावी उत्सवः। जीवा० २८१। आचा०  
३२८।

नागमाला- नागमालाः द्रुमगणविशेषः। जम्बू० ९८।

नागयज्ञ- पद्मावत्या देव्या कारितो यज्ञः। स्था० ४०१।

नागरकादि- मैथुने प्रारम्भयन्त्रम्, सम्प्राप्तकामस्य  
द्वादशो भेदः। दशवै० १९४।

नागरपुष्पं- पुष्पविशेषः। जीवा० १३६।

नागरप्रविभक्ति- द्वादशनाट्यभेदः। जम्बू० ४१६।

नागराय- नागराजाः-नागकुमारवराः। स्था० २२८।

नागरिकः- नगरनिवासी। नन्दी० १४९।

नागरी- लिपिविशेषः। नन्दी० १८८।

नागरुक्ख- वृक्षविशेषः। भग० ८०३। भुजङ्गानां  
चैत्यवृक्षः। स्था० ४४२।

नागलया- नागः द्रुमविशेषः स एव लता तिर्यक् शाखाप्रस-  
राभावात् नागतला। जीवा० १८२।

नागवसू- नागवसुः-प्रतिष्ठानगरे श्रेष्ठिः। आव० ६९८।

नागवित्त- भूतानन्द वैदः। भग० ५०४।

नागसिरि- चम्पानगर्या सोमस्य भार्या। आव० १९६।

नागश्रीः-प्रतिष्ठानपुरे नागवसुश्रेष्ठिभार्या। आव० ६९८।

नागसेण- नागसेनः-उत्तरवाचालायां भोजनदाता। आव०  
१९७।

नागार्जुनवाचकाः- ओघश्रुतसमाचारकाः। नन्दी० ५२।

नागिंदो- नागेन्द्रः। आव० १४३।

नागील- कुलवंशविशेषः। व्यव० ६ अ।

नागेन्द्रकुलं- कुलविशेषः। दशवै० २४२।

नाट्यकला- भरतमार्गच्छलिकं लास्यविधानम्,  
द्वासप्तति-कलायां चतुर्थी। सम० ८४।

**नाट्यानीकं-** सप्तमानीकविशेषः। जीवा० २१७।

**नाडङ्गजो-** नाटकीयः नाटकपात्रम्। पिता० ६३।

**नाडग-** नाटकं-चरितानुसारिनाटकलक्षणोपेतम्। स्था० ४५०।

**नाडयं-** नाटकं गीतयुक्तं नाट्यम्। बृह० ३९ आ।

**नाडिक-** कालपरिज्ञाते दृष्टान्तः। स्था० ४०।

**नाण-** ज्ञातिर्ज्ञानमितिभावसाधनः संविदित्यर्थः ज्ञायते वाऽ-नेनास्माद्वेतिज्ञानं तदावरणस्य क्षयः क्षयोपशमो वा, ज्ञायते-ऽस्मिन्निति ज्ञानं आत्मा तदावरणक्षयक्षयोपशमपरिणामयुक्तः जानातीति वा ज्ञानं तदेव स्वविषयग्रहणरूपत्वादिति। स्था० ३४७। ज्ञातिर्ज्ञानं ज्ञायते-परिच्छिद्यते वस्त्वनेनास्मादस्मिन्वेति वा ज्ञानं, जानाति स्वविषयं परिच्छिन्नन्तीति वा ज्ञानं-जानावरणकर्मक्षयोपशमक्षयजन्यो जीवस्य तत्त्वभूतो बोध इत्यर्थः। अनुयो० २। ज्ञानं-अभिप्रायः। आचा० ९९५। ज्ञानं-द्रव्य-पर्यायविषयो बोधः। स्था० १५४। ज्ञानं विशेष-भावबोधः। स्था० ४९। अपायधारणे ज्ञायन्ते परिच्छिद्य-तेऽर्था अनेनास्मिन्नस्माद्वेति ज्ञानं ज्ञानदर्शनावरणयोः क्षयः क्षयोपशमो वा ज्ञातिर्वा ज्ञानम्। स्था० २३। दानविशेषः। प्रश्न० १३५। ज्ञानं-आचारादिश्रुतं। बृह० १००आ। ज्ञानं विमर्शपूर्वको बोधः। उत्त० १२७। ज्ञायते-परिच्छिद्यते वस्त्वनेनेति ज्ञानं-सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि विशेषग्रह-णात्मको बोधः। प्रज्ञा० ४५३। ग्रन्थानुप्रेक्षणरूपम्। प्रश्न० १११। तत्त्वावबोधरूपः। जम्बू० १५१। विशेषबोधः। प्रश्न० १३२। ज्ञानं-मत्यादीनि ज्ञानानि स्वपरपरिच्छेदिनो जीवस्य परिणामाः ज्ञानवरणविगमव्यक्तास्तत्त्वार्थपरिच्छेदाः। आचा० ६८। अपायधारणे ज्ञानम्। स्था० २३।

**नाणगुणं-** ज्ञानगुणम्-ज्ञानमाहात्म्यम्। आव० ५९१।

**नाणगुणमुणियसारो-** ज्ञानेन गुणानां-जीवाजीवाश्रितानां पर्यायाणां च तदविनाभावानां मुणितः-ज्ञातः सारः, परमार्थो येन सः, ज्ञानगुणेन ज्ञानमाहात्म्येन वा ज्ञातः, सारो येन सः, ज्ञानगुणमुणितसारः। आव० ५९१।

**नाणङ्गा-** नानार्था-भिन्नाऽभिधेयानि। भग० १७।

**नाणप्यवाय-** ज्ञानप्रवादः ज्ञानं-मतिज्ञानादिभेदभिन्नं पञ्चप्रकारं तत्प्रपञ्चं वदतीति। नन्दी० २४१।

**नाणत्तं-** नानात्वं-विशेषः। बृह० २२९ आ। नानात्वं भेदः। भग० २९। नानात्वं-परनिरपेक्षमेकस्यैव वर्णादिकृतं वैचित्र्यम्। प्रज्ञा० ३०३। नानात्वं-योऽतिरिक्तो विधिर्भवति। ओघ० १९९। अतिरिक्तः। ओघ० १८३।

**नाणत्ती-** नानाभावः नानाता-भिन्नता। आव० २८९।

**नाणदंसणसंपन्न-** ज्ञानदर्शनसम्पन्नः। दशवै० २२२।

**नाणपज्जवा-** ज्ञानपर्यवान्-

विशिष्टतरवस्तुतत्त्वावबोधरूपाः। उत्त० ५९२। ज्ञानपर्यवाः ज्ञानपर्यायाः ज्ञानविशेषा बुद्धिकृता वाऽविभागपरिच्छेदाः। भग० ११९।

**नाणपडिसेवणाकुशीले-** ज्ञानस्य प्रतिसेवणया कुशीलो ज्ञानप्रतिषेवणाकुशीलः। भग० ८९०।

**नाणपुलाए-** ज्ञानमाश्रित्य पुलाकस्तस्यासारताकारी विराधको ज्ञानपुलाकः। भग० ८९०।

**नाणप्पवायं-** ज्ञानं मत्यादिकं स्वरूपभेदादिभिः प्रोच्यते तत् ज्ञानप्रवादम्। सम्म० २६।

**नाणबलिओ-** ज्ञानबलिकः अव्यभिचारिज्ञानः। औप० २८।

**नाणमायारो-** ज्ञानसेवनाप्रकारः। दशवै० १०६।

**नाणवं-** ज्ञानं-यथावस्थितपदार्थपरिच्छेदकं वेत्तीति ज्ञानवित्। आचा० १५४।

**नाणवसिए-** ज्ञानव्यवसितः। भक्त०।

**नाणविणय-** ज्ञानविनयो मत्यादीनां मत्यादिज्ञानानां श्रद्धान-मस्ति बहुमानतद्दृष्टार्थमावनाविधिग्रहणाभ्यासरूपः। भग० ९२४।

**नाणवुड्ढि-** ज्ञानवृष्टिः शब्दवृष्टिः। आचा० ६८।

**नाणसिद्धा-** ज्ञानसिद्धाः-भवस्थकेवलिनः। दशवै० १२८। नानाता-भिन्नता। आव० २८१।

**नाणामणिपंचवण्णघंटापडायपडिमंडियग्गसिहरं-** आचा० ४२३।

**नाणावंजण-** नानाव्यञ्जनः अनेकप्रकारः दध्यादिभिः। उत्त० ३६१।

**नाणावरणिज्जं-** ज्ञायते-परिच्छिद्यते वस्त्वनेनेति ज्ञानं-सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि विशेषग्रहणात्मको बोधः, आव्रियते-आच्छाद्यते अनेनेति आवरणीयं कृद्धुलमिति वचनात् करणेऽनीयप्रत्ययः, ज्ञानस्यावरणीयं ज्ञानावरणीयम्। प्रज्ञा० ४५३।

**नाणाविरागो-** नानाविधो-विशिष्टो रागो यस्य स  
नानाविरागः। जीवा० २४६।

**नाणाविहदोसो-** त्वक्त्वक्षणनयनोत्खननादिषु  
हिंसाद्युपाये-ष्वसकृदप्येवं प्रवर्तते इति  
नानाविधदोषः। आव० ५९०।

**नाणी-** ज्ञानी-परमार्थवित्। आचा० १६६। ज्ञानी-केव-  
लज्ञानवानित्यर्थः। आचा० ३३१। ज्ञानी-ज्ञानं सकलपदा-  
र्थाविर्भावकं विद्यते यस्यासौ। आचा० १८२।

**नाणुद्देश-** अष्टमशतद्वितीयोद्देशकस्य  
ज्ञानवक्तव्यतार्थमवा-न्तरप्रकरणम्। भग० ९१०।

**नात्रक-** सम्बन्धः। व्यव० १२६ आ।

**नादियं-** नादितं लपितम्। जीवा० १८८।

**नादिया-** नादिता-शब्दवती। जीवा० २२७।

**नानादेसी-** बहुविधा अनार्यप्रायदेशोत्पन्नाः। ज्ञाता० ४१।

**नानापिंड-** नाना-  
अनेकप्रकारोऽभिग्रहविशेषात्प्रतिगृहमल्पा-ल्पग्रहणाच्च  
पिण्ड-आहारपिण्डः, नाना चासौ पिण्डश्च नानापिण्डः  
अन्तप्रान्तादिर्वा। दशवै० ७३।

**नानाविधदोषः-** हिंसाद्युपायेषु दोषो सकृत्प्रवृत्तिरिति।  
स्था० १९०।

**नान्दीपात्र-** भिक्षापात्रम्। पिण्ड० १३४।

**नाभी-** नाभिः-प्रथमजिनपिता। आव० १६१। भरतक्षेत्रे  
अवसर्पिण्यां सप्तमः कुलकरः। स्था० ३९८। आव० १११।  
सम० १५०। नाभिः-शकटस्थाङ्गम्। दशवै० २१८। आचा०  
३८।

**नाभेय-** ऋषभदेवो भगवान्। आचा० ८।

**नाम-** नाम परिणामोऽवगाहनानाम कर्मविशेषः। भग०  
२८०। नामसंभावनायां प्रयुज्यमानोऽयं शब्दः। भग०  
८२। अभि-धानम्। अनुयो० १०५। अलङ्कारार्थः। आव०  
८३१। वाक्य-स्यालङ्कृतौ। प्रश्न० ५। सम्भावनायाम्।  
स्था० ४१९। भग० ८२। अनुयो० १७६। नामशब्दः  
सम्भावनायां। आचा० ३५५। शास्त्रीयोपक्रमे द्वितीयो  
भेदः। आव० ५६। चतुर्था, तद्यथा-गौणं समयजं  
तदुभयजमनुभयजञ्च। पिण्ड० ३। क्षपकोऽभि-धीयते  
उपशमको वा। आचा० १७२। नाम परिणामो धर्मः। भग०  
२८०। नामकर्मण उत्तरप्रकृतिविशेषो जीवपरिणामो वा।  
भग० २७। नाम अभिधानम्। स्था० ४८९। शास्त्रीये

द्वितीयो भेदः। स्था० ४। नाम्नः-कर्मणः  
उत्तरप्रकृतिविशेषो जीवपरिणामो वा। स्था० ३७६। नाम  
सम्भावनेअलङ्कारे। भग० ३७। नाम  
यादृच्छिकमभिधानम्-निश्चयार्थमव्ययमपि। भग०  
११५। संभावने। भग० ७०५। यादृच्छिकमभिधानम्।  
भग० ५६१। नाम आख्या अभिधान नामधेयम्। भग०  
११। नाम नमनं नामकर्मनिर्जरणम्। सूत्र० २५६।  
नामयति गत्या-दिपर्यायानुभवनं प्रति प्रवणयति  
जीवमिति नाम। प्रज्ञा० ४५४। परिणामो धर्मः। सम०  
१४८। स्था० ३७७। नमनं नामः-परिणामो भवाः। भग०  
८९०। विभक्तिपरिणामान्ना-म्नेत्यर्थः। भग० ११।  
पारिभाषिकी सज्जा। विपा० ४२।

**नामए-** सम्भावनायामलङ्कारे। स्था० ४१९।  
वाक्यालङ्कारे। स्था० ४६६।

**नामकम्म-** नमयति गत्यादिविविधभावानुभवनं  
प्रत्यात्मानं प्रवणयति चित्रकर इव करितुरगादिभावं  
प्रति रेखाकृतिमिति नामकर्म। उत्त० ६५१।

**नामकाय-** नामाश्रित्य कायः। आव० ७६७।

**नामगोत्त-** इहान्वर्थयुक्तं नाम सिद्धान्तपरिभाषया  
नामगोत्रम्। सूर्य० २७४।

**नामगोत्रं-** नामगोत्रं यादृच्छिकान्वर्थाभिधानम्। औप०  
५०।

**नामण-** नामनमवनतिकरणम्। दशवै० १००।

**नामधिज्जं-** नामधेयं नाम। दशवै० २०७।

**नामधेज्ज-** नामधेयं नाम। औप० १०२।

**नामधेज्जा-** नामधेयवती प्रशस्तनामधेयवती। नाम  
धार्यहृदि धरणीयं यस्याः सा। ज्ञाता० १४।

**नामधेयं-** प्रशस्तं नाम। भग० ७।

**नामनमस्कारः-** नाम इत्यभिधानम्। जम्बू० १०।

**नामनिगगया-** निर्गतनामा गणिकाविशेषः। आव० २१३।

**नामनिष्पण्ण-** नामनिष्पन्नः निक्षेपभेदः। दशवै० १५।  
नामनिष्पन्न  
आचारशास्त्रपरिज्ञादिविशेषाभिधाननामादि-न्यासः।  
आचा० ३। नामनिष्पन्नः-सामायिकादिविशेषा-  
भिधाननिष्पन्नः। अनुयो० २५१। निक्षेपस्य द्वितीयः  
प्रकारः। आव० ५८।

**नामनिष्पन्नः-** निक्षेपभेदः। स्था० ६।

**नाममुद्रा-** मुद्रिका-अभिज्ञानम्। नन्दी० १५६।  
**नामसच्च-** नामसत्यं नाम कुलमवर्द्धयन्नपि कुलवर्द्धन इत्युच्यते, धनमवर्द्धयन्नपि धनवर्द्धनः इत्युच्यते, अयक्षश्च यक्ष इति। दशवै० २०८।  
**नामसच्चा-** नामसत्या पर्याप्तिकसत्यभाषायाश्चतुर्थो भेदः। नामतः सत्या नामसत्या यथा कुलमवर्द्धयन्नपि कुलवर्द्धन-मिति। प्रजा० २५६।  
**नामसमं-** अभिधानं तेन समं नामसमम्। अनुयो० १५।  
**नामाउडिओ-** आकुटितनामा। अनुयो० २२३।  
**नामागोयं-** इहान्वर्थयुक्तं नाम सिद्धान्तपरिभाषया नामगौत्र-मित्युच्यते। नामगोत्राणि-अन्वर्थयुक्तानि नामानि। जीवा० ३३६।  
**नामानि-** गोत्राणि। स्था० ३८९।  
**नामिकं-** वस्तुवाचकत्वात् अश्व इति। अनुयो० ११३। पदस्य प्रथमो भेदः। आव० ३७९।  
**नामुदए-** अन्ययूथिकः। भग० ३२३। सप्तम आजीविकोपास-कस्य नाम। भग० ३६९।  
**नामे-** नामयति क्षपयति। आचा० १७२।  
**नामेइ-** नामयति-अननुगुणं करोति। दशवै० २१३।  
**नाय-** जातः-कुलविशेषः। आव० १७९। जातः-क्षत्रिय-विशेषः। प्रश्न० २६। जातः-नागवंश्यः जातवंशो वा। औप० ५८। नायः-नयतीति छान्दसत्वात्कर्त्तरि घञ् नायः। आचा० १४५। जातानि उदाहरणानि। उत्त० ६१४। जाताः क्षत्रियाः। आचा० ३०३।  
**नायए-** जातकः-जगत्प्रतीतः क्षत्रियो वा। उत्त० ४४४। जातकः-स्वजनः। आव० १८७। स्वजनपुत्रकः। जाता० ८९। आव० १८७। जातीन्। उत्त० १३४। नायकः प्रभु-न्यायदो-न्यायदर्शी। जाता० ८९।  
**नायओ-** नायकः-सकलजगत्स्वामी जातकः जात एव वा जातकः-उदारक्षत्रियः, न्यायतः। उत्त० ३२१। जातयः-पूर्वापरसम्बन्धिनः स्वजनाः। आचा० २५०। जातयः स्वजनाः। बृह० ७। जातयः-दूरवर्तिनः स्वजनाः। उत्त० १३।  
**नायकुले-** स्वजनगृहम्। उपा० १४।  
**नायकुलवासिणी-** जातिकुलवासिनी नाम यो गृहजामातु-देवता। व्यव० २७७। आ।  
**नायगो-** जातकः - परिचितः। सूत्र० ३२०। नगरकटकादि

प्रधानः। औप ७२। नायकः- प्रधानः। आव० ७७२।  
 पुरसंथुतो पच्छासंथुतो वा। निशी० १२१। आ।  
**नायतो-जातकः-** पूर्वसंस्तुतः। व्यव० ३३९। आ।  
**नायाधम्मकहाओ-** जातानि-उदाहरणानि तत्प्रधानाधर्मकथा जाताधर्मकथा। नन्दी० २३१।  
**नायपुत्ते-** जाताः- क्षत्रियास्तेषां पुत्रः- अपत्यं जातपुत्र वीरव-र्धमानस्वामी। आचा० ३०३। जातपुत्रः-जातः-उदारक्ष-त्रियः सिद्धार्थः तत्पुत्रो वर्धमानः। दशवै० १९९। जातपुत्रः-भगवान् वर्धमानः। दशवै० १९०। आचा० ४२२।  
**नायमुणी-** जातमुनिः-क्षत्रियविशेषरूपो श्रीमन्महावीर इत्यर्थः। प्रश्न० ११३।  
**नायसंड-** जाताखण्डः- वीरजिनस्य निष्क्रमणोदयानः। आव० १६७।  
**नायसंडवणं-** जातखण्डवनम्। आव० १८६।  
**नायसुतो-** जातसुतः-जाताः- क्षत्रियास्तेषां पुत्रः, वीरवर्द्ध-मानस्वामी सूत्र० १४३। जातसुतः। व्यव० ४०२। आ।  
**नाया-** जाताः-इक्ष्वाकुवंशविशेषभूताः। भग० ४८१।  
**नायागयं-** नायागतं स्वस्ववृत्त्यनुष्ठानप्राप्तम्। आव० ८३७।  
**नारए-** जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे उत्सर्पिण्यां विंशतितमजिनस्य पूर्वभवनाम। सम० १५४।  
**नारकद्वितीयोद्देशः-** जीवाभिगमस्य द्वितीय उद्देशः। भग० १३०।  
**नारद-** दृष्टमधिकृत्य वासुदेवे कामकथाकारकः। दशवै० ११०। श्रुतमधिकृत्य पद्मनाभे कामकथाकारकः। दशवै० ११०। उत्त० ६८१। नारदः सत्यो शौचोदाहरणे तापसपुत्रयजदत्त-सुतः। आव० ७०५।  
**नारदमुनि-** द्रौपद्युपरि द्वेषवाहको असंयतः। प्रश्न० ८७।  
**नारदाः-** गन्धर्वभेदविशेषः। प्रजा० ७०।  
**नारयपुत्त-** नारकपुत्रः पुद्गलप्रदेशनिरूपणे महावीरशिष्यः। भग० २४०।  
**नाराचः-** उभयतो मर्कटबन्धः। जीवा० १५।  
**नाराय-** नाराचः-अयोमयो बाणः। उत्त० ३११। नाराचं-मर्कटस्थानीयमुभयोः पार्श्वयोःस्थि नाराचम्। सम० १४९। नाराचं यत्रास्थनोर्मर्कटबन्ध एव केवलस्तत्। जीवा० १५। नाराचः-बाणः। भग० ३१८। नाराचं-उभयतः मर्कट-बन्धनिबद्धकाष्ठसम्पुटोपमसामर्थ्योपेतत्वात्।

भग० १२। उभयतो मर्कटबन्धः। सूर्य० ४। प्रजा० ३७२।  
 जम्बू० १५। नाराचमुभयतोमर्कटबन्धः। राज० ५७।  
 नारायगंग- नाराचाग्रं बाणाग्रम्। जीवा० १०६।  
 नारायण- नारायणः-अष्टम वासुदेवः। आव० ५९, १६६।  
 नारायणः-ऋषिर्यः परिणतोदकादिपरिभोगात्सिद्धः।  
 सूत्र० ९५। कृष्णः। बृह० ३० आ।  
 नारीकन्ता- नारीकन्ता-नदीविशेषः। स्था० ७४। जम्बू०  
 ३७७।  
 नारीकान्ता- ह्रदविशेषः। स्था० ७५। नीलवर्षधरपर्वते षष्ठं  
 कूटम्। स्था० ७२।  
 नारुआ- नवमी श्रेणिः। जम्बू० १०३।  
 नालंद- सूत्रकृताङ्गे सप्तममध्ययनम्। आव० ६५८।  
 नालन्दा- राजगृहनगरस्य बाहिरिका। सूत्र० ४०७।  
 नालएरी- वृक्षविशेषः। भग० ८०३।  
 नालन्दा- नालं ददातीति अर्थिभ्यो यथाऽभिलाषितं  
 ददातीति-राजगृहनगरवाहिरिका। सूत्र० ४०६।  
 नालन्दीयं- नालं ददातीति, सदाऽर्थिभ्यो यथाऽभिलाषितं  
 ददातीति नालन्दा-राजगृहनगरवाहिरिका तस्यां भवं,  
 सूत्र-कृताङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे सप्तममध्ययनम्।  
 सूत्र० ४०६। स्था० ३८७।  
 नालबद्धा- मातापिताभ्राताभगिनीपुत्रोदुहिता इत्येते  
 षडप्यनन्तरवल्लीमधिकृत्य नालबद्धा। बृह० ४२ आ।  
 नालिन्दा- राजगृहनगरे पाटकविशेषः। भग० ६६१।  
 नालि- नाडी-घटिका। जीवा० १०५।  
 नालिआ- नालिका-चतुर्हस्तप्रमाणम्। अनुयो० १५४।  
 नालिका- देहादधिको दण्डकः। बृह० २० आ। ताम्रादि-  
 मयघटिका। अनुयो० ४८।  
 नालिकेरी- वृक्षविशेषः। उत्त० ६७२।  
 नालिया- नालिका-द्युतक्रीडाविशेषः। सूत्र० १८१।  
 नालिका-घटिका। दशवै० ४०। सम० ९८। नालिका-  
 आत्मप्रमाणचतुरङ्गुलाधिका यष्टिका। ओघ० ३३।  
 नालिका सुषिरवंशादिरूपा। भग० १३४। यष्टिविशेषः।  
 भग० २७५, २७७। स्वमानात् चतुरङ्गुलाधा यष्टिः। बृह०  
 १६४ आ। नालिका, घटिका। बृह० ४२ आ।  
 नालियापुष्पं- नालिकापुष्पं-कलम्बुकापुष्पम्। जम्बू०  
 ४५३।  
 नालियेरपाणगं- पानकभेदः। आचा० ३४७।

नालिसंठिय- नाडीसंस्थितः-आवलिकाबाह्यस्य  
 द्वाविंशति-तमं संस्थानम्। जीवा० १०४।  
 नाली- नाडी-त्रसनाडी। भग० ९६०। नाडीकः वनस्पतिवि-  
 शेषः। भगवत्याः एकादशशतके पञ्चम उद्देशकः। भग०  
 ५११।  
 नालीए- नालिका-द्युतविशेषलक्षणा। दशवै० ११७।  
 नाव- नोः-द्रोणी। दशवै० २२०। नौः-तरिका। पिण्ड० १०२।  
 नावणं- दानम्। प्रश्न० ५७।  
 नावाबन्ध- नौबन्धः। बृह० ८२ आ।  
 नावापूरकः- चुलुकः। बृह० ७१ आ।  
 नावासंठिओ- नावासंस्थितः बुधनादुर्ध्वं नाव इव  
 उभयोरपि पार्श्वयोः समतलं भूभागमपेक्ष्य क्रमेण  
 जलवृद्धिसम्भवेन उन्न-ताकारत्वात्। जीवा० ३३५।  
 नाविओ- स ह्युक्तरूपया नावा भवोदधि तरतीति  
 नाविकः। उत्त० ५०९।  
 नावियदुयक्खरओ- नापितदासः। आव० ६९०।  
 नासः- न्यासः-द्रव्यस्य निक्षेपः-परैः समर्पितं द्रव्यम्।  
 उपा० ७। न्यासः- रूप्यकाद्यर्पणम्। आव० ८२१।  
 नासण- नाशनं-कर्मपकृतेः स्तिबुकसङ्क्रमेण  
 प्रकृत्यन्तर-गमनम्। आचा० २९८।  
 नासा- नाशा। आव० १९२। घोणः। प्रश्न० ८२।  
 नासाभेय- नासाभेदः-नासिकाविवरणम्। प्रश्न० २२।  
 नासावहारे- नासापहारः- रूप्यकाद्यर्पणस्यापहारः। आव०  
 ८२०।  
 नासावेदणा- नाशावेदना। आव० १९२।  
 नासिक- नासिक्यपुरं-नगरविशेषः। नन्दी० १६७।  
 नासीर- मृगया। उत्त० ४३८।  
 नासेइ- नाशयति मत्सरादपन्हुते। प्रश्न० १२५।  
 नास्तिकः- लोकायतः। दशवै० १२५। मतविशेषः। उत्त०  
 २७५।  
 नास्तिकाभिप्रायः- लोकायतमतः। दशवै० १२५।  
 नाह- नाथत्वं चास्य योगक्षेमकृन्नाथ इति  
 वचनादप्राप्तस्य सम्यग्दर्शनादियोगकरणेन लब्धस्य  
 तस्यैव पालनेन चेति। सम० ३। योगक्षेमविधाता। उत्त०  
 ४७३। नाथत्वं योगक्षेम-कारित्वम्, नाथः-प्रभुः। भग० ८।  
 योगक्षेमकृत्। नन्दी० १३। नाथः-योगक्षेमकृत्। जीवा०  
 २५५।

नाहवयं- नाथवचनम्। आव० ३१३।  
 नाहि- नैव। भग० १७५। जानीहि। उत्त० ४७३।  
 नाहियवायं- नास्तिकवादः। गच्छा०।  
 नाही- नाभि कुलकर ऋषभपिता। प्रजा० १०९।  
 नि- निर् अपकर्षे अपचये यथा निर्ग्रन्थः। बृह० १३८ आ।  
 निंती- निर्गच्छन्ती। आव० ७०१।  
 निंतो- निर्यान् निष्क्रामन्। पिण्ड० ७६।  
 निंदं- निन्दा गुरुसमक्षमेव हीलना। आव० ५२८।  
 निंदइ- निन्दति कुत्सति। आव० ५८७।  
 निंदण- निन्दनं-मनसा कुत्सा। भग० २२७।  
 निंदणया- निन्दनं-आत्मनैवात्मदोषपरिकुत्सनम्। भग० ७२७।  
 निंदणा- निन्दना-देवदायकदोषोद्घटनम्। प्रश्न० १०९।  
 निन्दना-स्वमनसि कुत्सा। अन्त० १८। निन्दना मनसा कुत्सनम्। औप० १०३। निन्दना-आलोचना विकटना शुद्धिः शल्योद्धरणम्। ओघ० २२५।  
 निंदणिज्ज- हीलनीयो गुरुकुलाद्युद्घटनतः निन्दनीयः। ज्ञाता० ९६।  
 निंदति- निन्दति चेतसा कुत्सति। भग० १६६। मनसाकुत्सति। ज्ञाता० १४९।  
 निंदह- निन्दत मनसा निन्दां कुरुत। भग० २१९।  
 निंदा- आत्माध्यक्षमात्मकुत्सा प्रतिक्रमणस्य पर्यायः, निन्दनं निन्दा। आव० ५५२।  
 निंदु- मृतप्रसवनी। अन्त० ७।  
 निंब- वृक्षविशेषः। प्रजा० ३१, ३६४। भग० ८०३।  
 निंबए- निम्बकः-आचारविषये अम्बर्षिब्राह्मणश्राद्धपुत्रः। आव० ७०८।  
 निंबछल्ली- निम्बत्वक्। प्रजा० ३६४।  
 निंबफणियं- निम्बफणितं निम्बक्वाथः। प्रजा० ३६४।  
 निंबसारे- निम्बसारः निम्बमध्यवर्त्यवयवविशेषः। प्रजा० ३६४।  
 निःकृपं- चंकमणाई सत्तो सुनिक्किवो थावराइ सत्तेसु काउं। च नाणुतप्पइ एरिसओ निक्किवो होइ। बृह० २१५ आ।  
 निःशूकः- निद्धन्धसः। ओघ० १५८।  
 निश्रेयसं- निश्चितं श्रेयः-प्रशस्यम्। स्था० १७७।  
 निःश्वसितोच्छ्वसितसमं-

निःश्वसितोच्छ्वसितमानमनतिक्रमतो यद् गेयं तत्। अनुयो० १३२। स्था० ३९६।  
 निःसम्पन्नम्- असाधारणम्। आचा० ४८।  
 निःसारं- परिफल्गु, सूत्रस्य द्वात्रिंशदोषे सप्तमो दोषः। आव० ३७५।  
 निअडिल्ले- निकृतिमान्-मायापरः। उत्त० ३७९।  
 निअंबो- नितम्बः-पर्वतैकदेशः। ओघ० ३४।  
 निअट्टिअव्वं- निवर्तितव्यम्। ओघ० ७८।  
 निअडि- निकृतिः-मायारूपा। दशवै० १८८।  
 निअव्वय- निरन्वयः-एकान्तोच्छदः। नाशः। दशवै० ४०।  
 निआग- नियागः-नित्यमामन्त्रितः पिण्डः। दशवै० २०३।  
 निआण- निदानं भाविफलाशंसा। दशवै० २६७।  
 निइउमाणाइ- नित्यं उमाणं प्रवेशः। आचा० ३२६।  
 निइए- नित्यः अप्रच्युतिरूपः। आचा० १७९।  
 निइगं- नैतिकं-प्रतिदिनम्। प्रश्न० १४१।  
 निइल्लिओ- निजकः। आव० १५१।  
 निउणं- निपुणं-सूक्ष्मम्। आव० २६५। निपुणं-सूक्ष्मं बहवर्थं च। आव० ६९। नियतगुणं निगुणं वा सन्निहिताशेषसूत्रगुण-मिति यावत्। आव० ६९।  
 निपुणः- सूक्ष्मः। आचा० ३२। दशवै० १९६।  
 उपायारम्भकः। भग० ६३१। निपुणः- सूक्ष्मबुद्धिगम्योऽत्यन्तकामविषयपरमनैपुण्योपेत इत्यर्थः। सूर्य० २९४। निपुणः- उपायारम्भकः। अनुयो० १७७।  
 निउणसिप्पोगए- निपुणशिल्पोपगतः- सूक्ष्मशिल्पसमन्वितः। अनुयो० १७७।  
 निउणा- निपुणाः- दर्शिनः कुशलाः। उपा० ४६। निपुणा- आधाकर्माद्यपरिभोगतः कृतकारितादिपरिहारेण सूक्ष्मा। दशवै० १९६।  
 निउत्त- नियुक्तं-नियोजितम्। आव० ४९८। व्यापारितः। उत्त० ५३६। नितरां युक्तं-सम्बद्धं निकाचितं वेदने वा नि-युक्तम्। भग० २८१। नियुक्तं-नितरां सङ्गतं यत् तत्। ज्ञाता० २३८।  
 निउत्तमणिओइओ- नियुक्तानियोजितः। आव० २३८।  
 निएल्लओ- निजकः। आव० ३०८।  
 निओइए- नियोजितः व्यापारितः। उत्त० ३६५।  
 निओओ- नियोगः ग्रामः। बृह० ३ अ।

**निओग-** नियोगः व्यापारणम्। उत्त० १५२।

**निओया-** निगोदाः अनन्तजीवसङ्घाताः। आचा० ६०।

निगोदाः-

सूक्ष्मबादरानन्तकायिकवनस्पतिजीवशरीराणि।

अनुयो० २४०। कुटुम्बानि। भग० ३०९।

**निकर-** पुञ्जः। ज्ञाता० २२९।

**निकरण-** निकरणं-क्रियाया-इष्टार्थप्राप्तिलक्षणाया

अभावः। भग० ३१२।

**निकरणा-** निश्चयं कर्तुं समर्थो भवति। आचा० ४८।

**निकस-** निकषः-कषपट्टगता कषितसुवर्णरेखा। अनुयो० २१४।

**निकाइतं-** निकाचितं नियमितम्। सूत्र० १७७।

**निकाइयं-** निकाचितं दृढतरं बद्धम्। उपशमनादिकरणाना-  
मविषयीकृतम्। प्रश्न० ९८।

**निकाचनाकरणं-** निदानकरणं एतस्मात्तपः

प्रभृतेश्चक्रवर्त्या-दित्वं मे भूयादिति। स्था० २७५।

**निकाचितं-** निश्चितं प्रमाणम्। स्था० ४३५। निश्चयपूर्वकं  
भणितम्। व्यव० २०९ आ। निबद्धीकृतं गृह्यते तत्।  
व्यव० १६० आ।

**निकामं-** द्वात्रिंशत्कवलाः प्रमाणं भवति त एव

यन्नित्यशः सर्वकलं भुज्यते तन्निकामम्। व्यव० ३३४

आ। निकामं- प्रमाणातीतमाहार प्रतिदिवसमश्नतो

निकाम-भोजनम्। पिण्ड० १७४।

**निकाममीणे-** निकामं-अत्यर्थं यः प्रार्थयते स

निकाममीणा सूत्र० १९०।

**निकाय-** निकाचितं, बद्धम्। आव० ७६६। निकाच्य-व्यव-

स्थाप्य। आचा० १८६। निकायः कायः। उत्त० ६९०।

निकायः-मोक्षः। आचा० ४२। निकायः-नित्यः कायः,

अधिको वा कायः। आव० ७६८।

**निकायकाय-** नित्यः कायो निकायस्तत्सम्बन्धी कायः,

अधिको वा कायो निकायस्तत्सम्बन्धी कायः,

जीवनिकाय-सामान्येव वा, पृथिव्यादिभेदभिन्नः

षड्विधोऽपि जीवनिकायो निकायस्तत्समुदायो वा।

आव० ७६७।

**निकायण-** निधाचनम्। औघ० ४५। निकाचनं पुद्गलानां

परस्परविशिष्टानामेकीकरणमन्योन्यावगाहिता

अग्निप्रतप्तप्र-तिहन्यमानशूचीकलापस्येव

सकलकरणानामविषयतया कर्मणो व्यवस्थापनम्।

भग० २५।

**निकारः-** निश्चयेन नितरां वा नियतं वा क्रियन्ते

नानादुःखा-वस्था जन्तवो येन तन्निकरणं निकारः

शारीरमानसदुःखो-त्पादनम्। आचा० १४२।

**निकासो-** निकाशः सदृशः। जीवा० २१३।

**निकितं-** निकृन्तति छिनत्ति विदारयति। आव० ८०१।

**निकुरुंब-** निकुरम्बः समूहः। भग० १०।

**निकृतिः-** आदरकरणेन परवञ्चनम्। भग० ।

**निकेयण-** निकेतन निश्वासनः। बृह० ८५ आ।

**निकंकड-** निष्कङ्कटा निष्कवचा निरावरणा

निरुपघातेति। राज० ८।

**निकंकडच्छाया-** निष्कङ्कटा-निष्कवचा निरावरणा

निरु-पघाता छाया दीप्तिर्यस्य तत् निष्कङ्कटच्छायम्।

जीवा० १६१।

**निकंकडच्छाया-** निष्कङ्कटच्छायः

निष्कङ्कटानिष्कवचा निरावरणा निरुपघाता वा छाया

दीप्तिर्यस्य सः। प्रज्ञा० ८७।

**निष्कंकटा-** निष्कवचा निरावरणा इत्यर्थः, छाया-शोभा

येषां ते। स्था० २३२।

**निकंकडा-** निष्कङ्कटा निष्कवचा निरावरणा

निरुपघातेति। जीवा० १६१। प्रज्ञा० ८७।

**निकंखिय-** काडक्षणं काडिक्षतं निर्गतं काडिक्षित

यस्मादसौ निष्काङ्क्षितः, देशसर्वकाङ्क्षारहितः। प्रज्ञा०

५६। निष्का-ङ्क्षितः-देशसर्वकाङ्क्षारहितः। दशवै० १०२।

मुक्तदर्शनान्त-रपक्षपातः। ज्ञाता० १०९।

**निकंकप-** निष्कम्पः निःसहः। बृह० १५२ आ।

**निकंकडा-** कोशकादाकृष्टा। विपा० ५९। निर० १८।

**निकंकलं-** निष्कलं-त्रासादिरत्नदोषरहितम्। भग० ६७२।

**निकंकसाओ-** निष्कषायः-कषायरहितः। आव० ७९३।

**निकंकस्सई-** निष्कास्यते। बृह० ५५ आ।

**निककारणवच्छल्लो-** निष्कारणवत्सलः। आव० ४०१।

**निककारणो-** निष्कारणः-निरुपद्रवः। पिण्ड० १४६।

**निककुडं-** निष्कूटं अशठम्। आव० ७९७।

**निककोरणं-** अभ्यन्तरवर्तिनो गिरस्योत्किरणम्। बृह०

१०७ आ।

**निकखंत-** निष्क्रान्तः प्रव्रज्यां गृहितवान्। आचा० ४३।

**निक्रमण-** निष्क्रमणं

सर्वाभ्यन्तरान्मण्डलाद्विहिर्गमनम्। सूर्य० २४३।  
निष्क्रमण-उद्वर्तनम्। आचा० ६९।

**निक्रममाणे-** निष्क्रमणम्। सूर्य० १२।

**निक्रमे-** निष्क्रमेत्। दशवै० १८३।

**निक्रम्य-** निष्क्रम्य-द्रव्यभावगृहात्प्रव्रज्यां गृहीत्वा।  
दशवै० २६५।

**निक्रित्त-** निक्षिप्तं पाकस्थालीस्यम्। प्रश्न० १०६।  
निक्षिप्तं-सचित्तस्योपरिस्थापितं द्वितीयएषणादोषः।  
पिण्ड० १४७। संयमिताः। आचा० २३३। व्यवस्थापितम्।  
आचा० ३४६। विमुक्तम्। ज्ञाता० ३४। यस्तु  
परतरोऽन्यतरको वा यावत् वैयावृत्त्यं करोति,  
तावत्तयोः प्रायश्चित्तं निक्षिप्तं कियते इति तत्।  
व्यव० ९९ अ। निक्षिप्तं-अनुद्वृत्तम्। स्था० २९८।

**निक्रित्तदंडा-** निक्षिप्तदण्डाः-निश्चयेन क्षिप्ताः  
निक्षिप्तः-परित्यक्तः कायमनोवाङ्मयः  
प्राण्युपघातकारि दण्डो यैस्ते। आचा० १८९। निक्षिप्ताः-  
संयमिताः मनोवाक्कायरूपाः प्राण्युपमर्दकारित्वाद्दण्डा  
इव दण्डा यैस्ते निक्षिप्तदण्डाः। आचा० २३३।

**निक्रित्तपुष्पा-** निक्षिप्तपूर्वा पूर्वमेव अस्माभिरात्मकृते  
निष्पा-दिता। आचा० ३६९।

**निक्रित्तसत्थ-** ऐरवते त्रयोदशमतीर्थकृत्। सम० १५३।

**निक्रिवणं-** निक्षेपणं-स्थापनम्। आव० ६१४।

**निक्रिवित्ता-** निक्षिप्य प्रत्युपेक्षणापूर्वकं बद्धा। उत्त०  
५४४।

**निक्रुड-** निष्कुटः गम्भीरप्रदेशः। जम्बू० ३९६।

**निक्रवे-** निक्षेपः। आव० २८। निक्षेपण-  
शास्त्रादेर्नामस्था-पनादिभेदैर्व्यसनं-व्यवस्थापनं  
निक्षेपः। निक्षिप्यते नामा-  
दिभेदैर्व्यवस्थाप्यतेऽनेनास्मिन्नस्माद्वेति वा निक्षेपः।  
अनुयो० ४५। निक्षेपः-न्यासः। ओघ० २९४। निक्षेपणं  
निक्षिप्यते अनेनास्मिन्नस्मादिति वा निक्षेपः-  
पक्रमानीतव्याचिख्यासि-तशास्त्रस्य नामादिभिर्न्यसनं  
न्यासः-स्थापना। जम्बू० ५। निगमनम्। भग० ८१२।  
नामादिविन्यासः। आव० २४। निक्षेपः-  
आवश्यकदेर्नामादिभेदनिरूपणम्, न्यासः, यत्त-  
दोर्नित्याभिसम्बन्धात्तत्र वस्तुनि स निक्षेपः। अनुयो०

१०। निक्षेपः न्यासः। नन्दी० १५६। निक्षेपः मोक्षणः।  
ओघ० १६९। निक्षेपः न्यासः। आव० ४२१। नियतं  
निश्चितं वा नामादिसंभवत्यक्षरचनात्मकं क्षेपणं  
न्यसनं निक्षेपः। उत्त० १०। निपेक्षः निगमनम्। विपा०  
५५। निक्षेपः न्यासकः। प्रश्न० ३६। निक्षेपः-  
निक्षेपणमनेनास्मादस्मिन्निति वा निक्षेपः। आचा० ३।  
**निक्रवेवओ-** निगमनम्। निर० २३। निक्षेपकः-यत् पुनः  
प्रथमं स्वार्थं निक्षिप्य पश्चात् साधूनामनुज्ञायते स।  
बृह० १०२।

**निक्रवेवणिज्जुत्ताणुगम-** निक्षेपनिर्युक्त्यनुगमः  
निर्युक्त्यनु-गमभेदः, निक्षेप एव  
सामान्यविशेषाभिधानयोरोधनिष्पन्नना-  
मनिष्पन्नाभ्यां निक्षेपाभ्यामनुगतः सूत्रापेक्षया  
वक्ष्यमाणलक्षणाश्च। आचा० ३।

**निक्रवेवनिज्जुत्ती-** निक्षेपनिर्युक्तिः  
नामस्थापनादिभेदभिन्नः तस्य तद्विषया वा  
निर्युक्तिः निक्षेपनिर्युक्तिः। अनुयो० २५८।  
निक्षेपनिर्युक्तिः। स्था० ६।

**निक्षेप्तव्यः-** कर्तव्यः। आचा० ११५।

**निग(य)च्छइ-** विशिष्टोदयावस्थं जीवस्तदासादयति,  
विपा-कावस्थं करोति। भग० ६३।

**निगडं-** लोहमयम्। प्रश्न० ५६। आचा० १६५।

**निगम-** निगमः प्रभूततरवणिग्वर्गावासः। जीवा० ४०।

निगमः वणिग्विवासः। उत्त० १०७।

वणिग्विनाधिष्ठितः। ज्ञाता० १४०। निगमः-

प्रभूतवणिग्वर्गावासः। जीवा० २७९। प्रभू-

ततरवणिग्वर्गावासः। राज० ११४। वाणिजक-प्रायः

सन्नि-वेशः। ओघ० ९६। निगमः-पांशुप्राकारनिबद्धं

क्षुल्लकप्राका-रवेष्टितम्। व्यव० १६८ अ। निगमयन्ति

तस्मिन्ननेकवि-धभाण्डानीति निगमः प्रभूततरवणिजां

निवासः। उत्त० ६०५। वणिसंघाओ-वणिकसङ्घातः।

आव० ६६३। निग-मः-स्थानविशेषः। दशवै० ६७। निगमः

कारणिकः वणिग् वा। भग० ३१९। निगमः-

वणिग्विजयप्रधानं स्थानम्। भग० ३६।

**निगमरूप-** निगमरूपम्। भग० १९३।

**निगमा-** निर्गमाः-पूर्वभ्यः उत्तरेषामाधिक्यानि। सम०  
११४। पौरवणिजः। बृह० ९ अ। निगमाः। भग० ४६४।

निगमाः- प्रभूतवणिग्-वर्गावासाः। जम्बू० १२१।  
 निगमाति- वणिग्निवासाः। स्था० ८६।  
 निगरणं- निकरणं-नियतो देशकालादिः। भग० ६५।  
 निगरिय- निगरितं सारीकृतम्। जीवा० २७०। औप० २०।  
 सर्वथा शोधितम्। प्रश्न० ८०।  
 निगामसाइ- निकामशायी-सूत्रार्थवेलाप्युल्लङ्घ्य  
 शयानः। दशवै० १६०।  
 निगामसिज्जा- निकामशय्या-प्रतिदिवसं प्रकामशय्यैव।  
 आव० ५७४।  
 निगिज्ज- निगृह्य यतनया। व्यव० १४७ अ।  
 निगिण्हाति- निराश्रवो भवति। उत्त० ५६१।  
 निगिण्हामि- निगृह्णामि निरुणद्धिम्। उत्त० ५०७। आव०  
 ३२०।  
 निगुंडिउं- जानुभ्यामुपविश्य। आव० ४३४।  
 निगुरुंवो- निकुरुम्बः समूहरूपः। प्रश्न० ८२।  
 निगृहीतः- दण्डितः। नन्दी० १५२।  
 निगृह्य- निग्रहं वचनेन कारयित्वा। स्था० ३२९।  
 निगोदा- अनन्तकायिकजीवशरीराणि। भग० ८९०।  
 निगोयजीवा- साधारणनामकर्मोदयवर्तिनो जीवाः। भग०  
 ८९०।  
 निगगंथ- नैर्गन्थं-सामान्यतः 'यथा यूयं वदथे'ति  
 प्रवचनम्। भग० १२१। नैर्गन्थ्यं-आर्हतम्। आव० ३२६।  
 निगगंथा- निर्गन्थाः साधवः। ज्ञाता० ५१। निर्गन्थः  
 पुलाका-दिपञ्चप्रकाराः। व्यव० ४०२ अ।  
 निगगओ- निर्गतः-निष्क्रान्तः। आव० १३७।  
 निगगच्छइ- निर्गच्छति निश्चयेन गच्छति  
 विशिष्टोदयापन्नमा-सादयति। प्रज्ञा० ४५५।  
 विपाकावस्थं करोति। भग० ६३।  
 निगगच्छे- निर्गच्छति शुध्यति। व्यव० १०३ अ।  
 निगगम- निर्गमः। सूत्र० ३०९। निर्गमनं निर्गमः-  
 सामायिकं निर्गतमित्येवंरूपः। अनुयो० २५८। निर्गमः-  
 निर्गमकथा राज्ञो निर्गमनसम्बन्धी विचारः  
 राजकथायाः प्रथमो भेदः। आव० ५८१।  
 निगगमगो- निर्गमकः प्रस्थानः। बृह० १९० अ।  
 निगगमणं- निर्गमनं  
 सर्वाभ्यन्तरान्मण्डलाद्बहिर्गमनम्। जीवा० ३४५।  
 निर्गमनं दक्षिणायनम्। भग० १४७। निस्सरणमार्गः।

ज्ञाता० ८१।  
 निगगया- निर्गताः ये तपोऽर्ह  
 प्रायश्चित्तमतिक्रान्ताच्छ्रदादि-प्राप्ताः। व्यव० ९७ अ।  
 निगगह- निग्रहः। आव० ४१६। निश्चयः। निशी० ७० अ।  
 निग्रहः-अनाचारप्रवृत्तेर्निषेधनम्। निर० २। राज० ११९।  
 ज्ञाता० ७। इष्टेतरेषु शब्दादिषु रागद्वेषाकरणं निग्रहः।  
 आव० ६६०। निग्रहः-छलादिना पराजयस्थानम्, दोषवि-  
 शेषः। स्था० ४९२।  
 निगगहण- निगृह्णातीति। निग्रहणः। दशवै० ११९।  
 निगगहिओ- निगृहीतः। आव० ३२१।  
 निगगहियं- निगृहीतं नियमितम्। प्रश्न० १२४।  
 निगगीलं- क्षरितं(तन्दु०)  
 निगगुण- निर्गुणः गुणव्रतरहितः। ज्ञाता० २३८।  
 निगगुणा- गुणव्रतैः क्षमादिभिर्वा रहिताः। भग० ५८२।  
 निर्गुणाः-उत्तरगुणविकलाः। भग० ३०९।  
 निगगोहपरिमंडलसंठाणनाम- यदुदयात्तु  
 न्यग्रोधपरिमण्डलं संस्थानं  
 तन्न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थाननाम। प्रज्ञा० ४७२।  
 निगगोहमंडल- नाभेरुपरि न्यग्रोधवन् मण्डलं-  
 आद्यसंस्थान-लक्षणयुक्तत्वेन विशिष्टाकारं  
 न्यग्रोधमण्डलं, न्यग्रोधो-वट-वृक्षः, यथा चायमुपरि  
 वृत्ताकारतादिगुणोपेतत्वेन विशिष्टा-कारो भवत्यधस्तु  
 न तथा। अनुयो० १०१।  
 निगगोहवणे- न्यग्रोधवनं-वटवनम्। भग० ३६।  
 निगघंटु- निर्घण्टुः नामकोशः। औप० ९३। भग० ११२।  
 निगघसो- निकषः कषपट्टे रेखालक्षणः। औप० ८३।  
 निगघाए- निर्घातः वैक्रियाशनिप्रपातः। जीवा० २९।  
 निर्घातः- साभे निरभे वा गगने व्यन्तरकृतो  
 महागर्जितसमो ध्वनिः। आव० ७३६। साभे निरभे वा  
 नभसि व्यन्तरकृतो महाग-र्जितसमो ध्वनिर्निघातः।  
 व्यव० २४१ अ। साभे निरभे वा व्यन्तरकृतो  
 महागर्जितसमो ध्वनिर्निघातः। निशी० ७० अ।  
 निगघाओ- निर्घातः विद्युत्प्रपातः। जीवा० २८३।  
 निगघात- निर्घातः साभे निरभे वा गगने व्यन्तरकृतो  
 महाग-र्जितध्वनिः। स्था० ४७६।  
 निगघाय- निर्घातः। दशवै० ६६।  
 निगघिणं- निर्घृणं निर्गतदयम्। आव० ५८८।

**निग्धिणमणा**— निर्धृणं निर्गतदयं मनः चित्तमन्तःकरणं यस्य स निग्धिणमनाः निर्दयान्तःकरणः। *आव० ५८८।*

**निग्धुङ्**— निर्धृष्ट निर्धोषरूपम्। *प्रश्न० १६०।*

**निग्धूहे**— निर्गूहन्ति निष्काशयन्ति। *व्यव० ५४ आ।*

**निग्धोलियं**— निर्धोलितं रिक्तीकृतम्। *बृह० १६९ अ।*

**निग्धोस**— निर्धोसः ध्वनिः। *आचा० ३५०।* निर्धोषः महाध्वनिः। *जम्बू० १९२।* निर्धोषः महान् ध्वानिः। *जीवा० २४५।* निर्धोषः नादः *प्रश्न० १५९।*

**निघस**— कषपट्टके रेखारूपः। *जम्बू० १५१।* रेखा। *ज्ञाता० ९।* निघर्षः निकषो वा कषपट्टके रेखारूपः। *जम्बू० ३४।* निकषः कषपट्टके रेखारूपः, वर्णः। *सूर्य० ४।* निघर्षः घर्षणम्। *जीवा० १९१।*

**निचये**— निविष्टा निचये कर्मनिचये तदुपादाने वा सावद्यारम्भनिचये निविष्टाः-अध्युपपन्नाः। *आचा० १८४।*

**निचिओ**— निचितः निबिडः। *जीवा० २२७।* *प्रश्न० १५२।*

**निचित**— निबिडीकृतम्। *अनुयो० १७७।*

**निचिय**— निचितः निबिडतरचयमापन्नः। *जीवा० १२१।* निचितः-अविकीर्णः। *प्रश्न० ८२।*

**निच्च**— नित्यः परिणामानित्यतायामपि सत्यां स्वरूपाच्यव-नात्। *सूत्र० ३७०।* नित्यं-सर्वकालं, सामायिकप्रतिपत्तेरा-रभ्यामरणान्तम्। *दशवै० २८३।* नित्यं-अपायाभावेन तदन्य-गुणवृद्धिसंभवादप्रतिपाति। *दशवै० १९९।* अप्रच्युतानुत्पन्न-स्थिरैकस्वभावं नित्यम्। *आचा० २२।* नेत्रं भगम्। *बृह० ३१२ अ।*

**निच्चनियं**— नित्यं निवसनं नित्योपभोग्यम्। *बृह० १०४ अ।*

**निच्चमंडिया**— नित्यमण्डिता सदाभूषणभूषितत्वात्, जम्बूवाः सुदर्शनाया द्वादशं नाम। *जीवा० ३००।*

**निच्चराहू**— यस्तु नित्यराहुः-तथाजगत्स्वभाव्याचचन्द्रेण सह सर्वकालमविरहितं चतुरङ्गुलैरप्राप्तं सत् चन्द्रविमानस्या- धस्ताच्चरति सः। *जीवा० ३३९।*

**निच्चसहाये**— नित्यसहाये अवस्थितसहाये यः सकलदिव-समाचार्येण सह हिंडते। *व्यव० १८३ अ।*

**निच्चसिद्धजत्तो**— नित्यसिद्धयात्रः-स्थलजलचारिपथेषु सदैवाविसंवादितयात्रः। *आव० ४१४।*

**निच्चाउत्त**— नित्यायुक्तः सततोपयुक्तः। *उत्त० ४५६।*

**निच्चालोए**— नित्यालोकः, अष्टाशीतौ महाग्रहे द्वाषष्टितमः। *जम्बू० ५३५।*

**निच्चियपरिवेसिया**— नैत्यिकपरिवेषिका प्रतिदिननियुक्त भक्त-दात्री। *उत्त० २८६।*

**निच्चुज्जोए**— नित्योद्योतः अष्टाशीतौ महाग्रहे पञ्चषष्टितमः। *स्था० ७९।* अष्टाशीतौ महाग्रहे त्रयषष्टितमः। *जम्बू० ५३५।*

**निच्चुव्विग्गो**— नित्योद्विग्नः सदा अप्रशान्तः। *दशवै० १८८।*

**निच्चेड्ड**— निश्चेष्टं-व्यापाररहितम्। *ज्ञाता० ८५, १९८।*

**निच्छओ**— निश्चयः तत्त्वनिर्णयः, विहितानुष्ठानेषु वा अवश्यं-करणाभ्युपगमः। *औप० ३३।*

**निच्छय**— निश्चयः अवश्यंकरणाभ्युपगमः, तत्त्वनिर्णयो वा। *भग० १३६।* निश्चयः वस्तुनिर्णयः। *विपा० ४०।* निश्चयः एकान्तम्। *बृह० २२० अ।* निश्चयः तत्त्वानां निर्णयः विहितानुष्ठानेष्ववश्यमभ्युपगमो वा। *राज० ११९।* *ज्ञाता० ७।*

**निच्छयओ**— निश्चयतः परमार्थतः। *ओघ० २२२।*

**निच्छयकहा**— अववादो रिजुसुत्तादिएहिं सुद्धणएहिं जं कहि-ज्जति। सा। *निशी० २४० अ।*

**निच्छिअ**— निराधिक्ये चयनं चयः-पिण्डीभवनं अधिकश्चयो निश्चयः सामान्यम्। *अनु २६५।* सर्वाधिक्यम्। *आव० ६७।*

**निच्छिड्डपोतो**— निश्चिद्रपोतः। *आव० ३८७।*

**निच्छिण्णछकारण**— निस्तीर्णकारणम्। *आव० ६२८।*

**निच्छिण्णा**— निस्तीर्णा पारगता। *प्रज्ञा० ६११।*

**निच्छिन्नं**— निस्तीर्णं लङ्घितम्। *प्रज्ञा० ११३।*

**निच्छिय**— निः आधिक्येन चयनं चयः अधिकश्चयः निश्चयः सामान्यम्। *आव० २८३।*

**निच्छुड्डा**— निष्काशिता। *दशवै० ९७।*

**निच्छुभइ**— निःक्षिपति बहिःक्षिपति। *भग० ८९।*

**निच्छुभउ**— निष्काशयताम्। *आव० ३५४।*

**निच्छुभण**— गुम्मादेर्निर्वासनं निष्कायेत्। *बृह० ४४ अ।* निष्काशनम्। *पिण्ड० १४०।*

**निच्छुभति**— विक्षिपति आत्मश्लिष्टान् करोति। *प्रज्ञा० ५९१।*

**निच्छुभवो**— निच्छोभः सार्थान्निष्काशनम्। *पिण्ड० ११२।*

**निच्छुहणा-** निःसरास्माद् गेहादित्यादि। *ज्ञाता० २००।*  
**निच्छूढं-** निष्ठयुतम्। *आव० ३९१।* निर्यूढं दृढम्। *व्यव० ४००* आ।  
**निच्छोडणा-** त्यजास्मदीयांस्तीर्थकरालङ्कारानित्यादि।  
*भग० ६८३।* त्यजास्मदीयं वस्त्रादीत्यादि। *ज्ञाता० २००।*  
**निच्छोडियं-** निच्छोडितं अङ्गुल्यादिना निरवयवीकृतम्।  
*पिण्ड० ८९।*  
**निच्छोडेइ-** प्राप्तमर्थं त्याजयति। *भग० ६८३।*  
**निज-** नैयकः। *आव० १९७।*  
**निजका-** मातुलादयः। *भग० ४८३।*  
**निजराजदौवारिका-** नन्दी० ७३।  
**निजुज्झं-** अंगमोटनादियुद्धम्।  
**निजोग-** नियोगः व्यापारः। *व्यव० १५३* आ।  
**निजोगो-** अहिगो जोगो। *बृह० ३३* आ। निर्योगः। *आव० ६९२।*  
**निज्जंत-** निर्यन् अधिकं गच्छन्। *उत्त० ४९०।*  
**निज्जंती-** नीयमाना। *आव० ३९२।*  
**निज्जप्पि-** निर्याप्यं यापनाऽकारकं निर्बलमिति। *प्रश्न० १६३।*  
**निज्जरणं-** निर्जरणं तपः। *औप० ४८।* निर्जरणं-जीवप्रदेशेभ्यः कर्मप्रदेशानां शातनम्। *भग० ५३।*  
**निज्जरा-** निर्जराः निर्जीर्णाः। *प्रज्ञा० ५९९।*  
 निर्जराविपाकात् तपसा वा कर्मणां देशतः क्षपणा।  
*स्था० ४४६।* कर्मपुद्गलानामनुभूय २  
 अकर्मत्वापादनम्, आत्मप्रदेशैः संश्लिष्टानां  
 ज्ञानावरणीयादिकर्मपुद्गलानामनुभूय २  
 शातनमितिभावः। *प्रज्ञा० २९२।* निर्जराविपाकात् कर्म  
 पुद्गलशातनलक्षणा। *सूत्र० ३७९।* अति पुराणीभवनम्।  
*भग० १९।* निर्जराफल- विशेषः। *ओघ० ३७।* निर्जरा  
 पुद्गलानां निरनुभावीकृताना-मात्मप्रदेशेभ्यः शातनम्।  
*भग० २८।*  
**निज्जरे-** निर्जरा-कर्मणोऽकर्मत्वभवनमिति देशनिर्जरा,  
 सर्वनिर्जरायाश्चतुर्विंशतिदण्डकेऽसम्भवात्। *स्था० १९५।*  
**निज्जरेति-** निज्जरयति-त्यजत्याहारितान् वेदितान्।  
 आहा-रपुद्गलान् देशेनापानादिना सर्वेण सर्वशरीरेणैव  
 प्रस्वेदव-दिति। *स्था० १२।*

**निज्जवए-** यस्तथा प्रायश्चित्तं दत्ते यथा परो  
 निर्वोदुमलं भव-तीति। *स्था० ४८६।* निर्यापयति-तथा  
 करोति यथा गुर्वपि प्रायश्चित्तं शिष्यो निर्वाहयतीति  
 निर्यापक इति। *स्था० ४२४।* निर्यापकः-असमर्थस्य  
 प्रायश्चित्तिनः प्रायश्चित्तस्य खण्डशः करणेन  
 निर्वाहकः। *भग० ९२०।*  
**निज्जवणा-** निर्यापना प्ररूपणाविशेषः। *आव० ३८२।*  
**निज्जविए-** निर्यापित-अवश्यं गंतव्यम्। *व्यव० ३६५* अ।  
**निज्जाए-** निर्यातयति समापयति। *ज्ञाता० ६८।*  
**निज्जाण-** निर्याणः निर्गमनम्। *जम्बू० ४०३।* निरुपमं  
 यानं निर्याणं-ईषत्प्राग्भाराख्यं मोक्षपदम्। *आव० ७६९।*  
 निरुपमं यानं निर्याणं-सिद्धक्षेत्रम्। *ज्ञाता० ५१।* निर्याणं  
 पुरस्य निर्गमनमार्गः। *सूर्य० ७१।* निर्याणम्। *आव० ३६६।* निर्याणं अन्तक्रिया। *आचा० १०।* निर्याणं-  
 नगरान्निर्गमः। *स्था० १७३।* निर्याणं निर्गमः। *स्था० २११।*  
**निज्जाणकहा-** निर्याणं निर्गमः तत्कथा निर्याणकथा।  
*स्था० २१०।*  
**निज्जाणमग्गे-** सिद्धक्षेत्रगमनोपायः। *भग० ४७१।*  
**निज्जाणसंठिया-** निर्याणसंस्थिता-निर्याणं-पुरस्य  
 निर्गमन-मार्गः तस्येव संस्थितं-संस्थानं यस्याः सा।  
*सूर्य० ७१।*  
**निज्जामओ-** निर्यापकः। *आव० ३०२।*  
**निज्जामय-** निर्यामकः। *आव० ३८३।*  
**निज्जायकारणो-** निश्चयेन यातं अपगतं कारणं-प्रयोजनं  
 यस्मिन्नसौ। *आव० ८४४।*  
**निज्जावग-** निर्यापयति-आराधयतीति निर्यामकः  
 आराधकः। *ओघ० २०।*  
**निज्जास-** निःशेषेण रस्यत इति निर्यासः, मकरन्दः।  
*दशवै० ६४।*  
**निज्जाससारो-** निर्याससारः-  
 पत्रादिभेदभिन्ननिर्याससारः। *जीवा० २६५।*  
**निज्जिण्णाइं-** क्षीणरसीकृतानि। *भग० ५६९।*  
**निज्जिन्न-** निर्जीर्णाः  
 कात्स्निकानुसमयमशेषतद्विपाकहानि-युक्ताः। *भग० २४।*  
**निज्जिय-** निर्जितः स्वसौन्दर्यातिशयेन परिभूतः। *औप०*

१२।

निज्जिरिया- निर्जीर्णा अनुभूतस्वरूपत्वेन जीवप्रदेशेभ्यः  
परिशाटिता। भग० १८४।

निज्जीण- निर्जीर्ण क्षीणम्। भग० १६।

निज्जीवं- निर्जीवकरणं हेमादिधातुमारणं, रसेन्द्रस्य  
मूर्च्छा-प्रापणं वा। जम्बू० १३९।

निज्जुत्ता- नितरां युक्ताः-सूत्रेण सह लोलीभावेन  
सम्बन्धा निर्युक्ताः अर्थाः। अनुयो० २५८।

निज्जुत्ताणुगमो- निर्युक्त्यनुगमः अनुगमभेदः। आचा०  
३।

निज्जुत्ति- निश्चयेनार्थप्रतिपादका युक्तिः निर्युक्तिः।  
आचा० ४। नितरां युक्ताः-सूत्रेण सह लोलीभावेन  
सम्बद्धा निर्युक्ता- अर्थास्तेषां युक्तिः-स्फुटरूपतापादनं  
एकस्य युक्तशब्दस्य लोपात् निर्युक्तिः-  
नामस्थापनादिप्रकारैः सूत्रविभजनेत्यर्थः। अनुयो०  
२५८। निर्युक्तिः निर्युक्तानामेव सूत्रार्थानां युक्तिः  
परिपाट्या योजनं निर्युक्तयुक्तिरिति वाच्ये  
युक्तशब्दलोपा-न्निर्युक्तिः विप्रकीर्णार्थयोजना। दशवै०  
२।

निज्जुत्तिअणुगम- निर्युक्त्यनुगमः

निर्युक्तिव्याख्यानम्। अनुयो० २५८।

निज्जुत्तिसंखा- निर्युक्तिसङ्ख्या। अनुयो० २३३।

निज्जुत्ती- निर्युक्तिः निः-आधिक्ये योजनं युक्तिः,  
अधिका योजना नियता निश्चिता वा योजना। सूत्र० ४।  
निर्युक्तिः निश्चयेनाधिक्येन वा युक्तिः निर्युक्तिः-  
सम्यगर्थप्रकटनम्। सूत्र० २। निर्युक्तिः- निर्युक्तानां वा  
सूत्रेष्वेव परस्परसम्बद्धा-नामर्थानामाविर्भावं  
युक्तशब्दलोपान्निर्युक्तिः। सूत्र० २। निर्युक्तिः  
निश्चयेनार्थघटना। आचा० ४२। निः-आधिक्ये योजनं  
युक्तिः, सूत्रार्थयोर्योगो नित्यव्यवस्थित एवास्ते  
वाच्यवाचकतयेत्यर्थः अधिका योजना निर्युक्तिः,  
नियता निश्चिता वा योजना। ओघ० ४। सूत्रोपात्ता  
अर्थाः स्वरूपेण सम्बद्धा अपि शिष्यान्प्रति निर्युज्यन्ते  
निश्चितं सम्बद्धा उपदिश्य व्याख्यायन्ते यकया सा।  
पिण्ड० १। निश्चितं निरति-निश्चिताऽधिका वा  
युक्तिरस्यामिति निर्युक्तिः नाम-  
निष्पन्ननिक्षेपनिर्युक्तिः। उत्त० २६२। निर्युक्तिः

पञ्चकल्पः। बृह० २६३ आ।

निज्जुत्तीओ- निर्युक्तयः निर्युक्तानां सूत्रेऽभिधेयतया  
व्यवस्थापितानामर्थानां युक्तिः-घटना विशिष्टा  
योजना निर्युक्त-युक्तः। सम० १८।

निज्जुहणा- निर्द्धारणम्। ओघ० १९२।

निज्जुहियं- निर्यूह्यन्ते-आलापनादिभिर्बहिष्क्रियन्ते।  
बृह० ९५ अ।

निज्जुगं- निर्यूहकं-द्वारोपरितनपार्श्वविनिर्गतदारु।  
प्रश्न० ८।

निज्जुढ- निर्व्यूढम् महतः संक्षेपादुद्धृतम्। भग० १००।

निर्घाटितः। ज्ञाता० ६८। अमनोज्ञः। ओघ० १८१।

निर्यूढं-पूर्वगतादुद्धृत्य विरचितम्। दशवै० ९। महतो  
ग्रन्था-त्सुखावबोधाय

सङ्क्षेपनिमित्तमनुग्रहपरगुरुभिरुद्धृतम्। भग० १००।

निर्यूढःउज्झितप्रायः। बृह० २०६ आ।

निज्जुहंति- निर्यूथयन्ति-

पूर्वलक्षणश्रुतपर्याययूथान्निर्धारयन्ति उद्धरन्ति। भग०  
३५९।

निज्जुह- निर्यूहः गृहैकदेशविशेषः। जीवा० २६९। निर्यूहः  
गवाक्षः व्यव० १३३ अ।

निज्जुहणं- निर्व्यूहनं निष्काशनम्। बृह० १२ अ।

निज्जुहणा- बहिष्करणम्। बृह० ९५ अ। अन्यत्र शोधिं  
कुर्वित्युक्तिः। बृह० १५६ आ।

निज्जुहिऊण- निर्यूहय- अतिवाहय। व्यव० ३५९ आ।

निज्जोग- निर्योगः-उपकरणम्। पिण्ड० १२। परिकरः।

ज्ञाता० ५७। निर्योगः-परिकरः। भग० ४७९। निर्योगः

उपकरणम्। ओघ० १३१। निर्योगः-

उपकरणमर्थान्नाट्यो-पकरणम्। राज० ४९।

निज्झर- निर्झरः-उदकस्य श्रवणम्। भग० २३८।

स्यन्दनम्। ज्ञाता० ६७।

निज्झरणं- निर्झरणं दानम्। व्यव० २०० आ।

निज्झरा- उज्झरा एव सदावस्थायिनो निर्झराः। प्रज्ञा०  
७२।

निज्झाईत- निर्ध्यातः। आव० ४८७।

निज्झाइज्जा- निध्यापयेत् प्रलोकयेत् प्रदर्शयेत्। आचा०  
३४१।

निज्झाइत्ता- निश्चयेन ध्यात्वा चिन्तयित्वा

निर्दध्याया। आचा० ७१। निर्ध्याता-तदेकाग्रचित्ततया  
द्रष्टा। सम० १६। निर्ध्याता प्रबन्धेन निरीक्षिताः। उत्त०  
४२५। निर्ध्याता- दर्शनानन्तरमतिशयेन चिन्तयिता।  
उत्त० ४२५।

निज्झोसइत्ता- निज्झोषयिता-क्षपकः क्षपयिष्यति वा  
तृज-न्तमेतल्लुडन्तं वा। आचा० १६८।

निडवणओ- निष्ठापकः समाप्तिदिवसः। आव० ८४२।

निडवेइ- मारयति। बृह० ४४अ।

निडाइ- निष्ठां याति प्रच्यवतीत्यर्थः। आव० ३३।

निडाणकहा- एतावत् द्रवीणं तत्रोपयुज्यन्त इति  
निष्ठानकथा। स्था० २०९।

निडाणगं- निष्ठानकं-प्रकृष्टमूल्यनिष्पादितम्। प्रश्न०  
१६३।

निडाभासी- निष्ठाभाषी-सावधारणवासी। आचा० ३८६।

निडाविअं- निष्ठापितम्। आव० १५१।

निडिण- निष्ठां गतः, कृतस्वकार्यो जातः। जाता० ७०।  
निष्ठितः-निरवयवीकृतः। भग० ६७६।

निडिय- निष्ठितः-निष्पन्नः। उत्त० २९७। निस्थिनं-  
कृतं-निष्ठां प्राप्तं निस्थितम्। बृह० २००आ। अपनेय-  
द्रव्या-पनयमाश्रित्य निष्ठांगतः। भग० २७७।

निडियडकरणिज्जे- निष्ठितार्थानामिव करणीयम्।  
समाप्त-कृत्यः। भग० १११।

निडियड- निष्ठितार्थः विषयसुखनिष्पिपासः। आचा०  
२५४। निष्ठितार्थः समाप्तप्रयोजनः। मगच्छा० १११।  
निष्ठितार्थः कृत-कृत्यत्वात्। प्रज्ञा० ६१०।

निडियड्डी- निष्ठितार्थः निष्ठितो मोक्षस्तेनार्थो यदि वा  
निष्ठितः-परिसमाप्तः अर्थः-प्रयोजनं यस्य स  
निष्ठितार्थः। आचा० २२९।

निडियाइं कयाइं- निःस्थितानि कृतानि निस्सत्ताकानि  
विहि-तानी। भग० २५१।

निडुर- निष्ठुरं निर्दयम्। भग० २३१। निष्ठुरं-  
मार्दवाननुगतम्। औप० ४२। निष्ठुरं कर्कशशब्दम्।  
आव० ६१७। निष्ठुरा-हक्काप्रधाना। आचा० ३८८।

निडुहसि- निष्ठीवसि। नं० ।

निडाल- ललाटम्। उपा० २१। ललाटं-अलकम्। जीवा०  
२७३। ललाटं-भालम्। प्रश्न० ८२। आव० ४२०।

निणकखू- निस्सारयति। आचा० ३६१।

निण- निम्नं-गम्भीरस्थानम्। जम्बू० २१९।

निणग- म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५।

निणहइया- लिपिविशेषः। प्रज्ञा० ५६।

निणहव- निहनवः-गोपनम्। दशवै० १०५। निहनवः-  
एकान्ता-पलापः। दशवै० २३३। निहनवः निहनहुते  
आगमाभिहितमर्थ-मतिक्लिष्टकर्मोदयात्  
क्युक्तिभिरपनयतीति निहनवः जमा-लिप्रभृतिः।  
उत्त० १८।

निणहवणं- अदृश्यताकारकम्। विपा० ५४।

नित्त- नयत्यर्थदेशं-

अर्थक्रियासमर्थमर्थमाविर्भावयन्तीति नेत्राणि  
चक्षुरादीनीन्द्रियाणि। आचा० १९३। नेत्रशब्देन  
नेत्रसंस्कारकमिह समीराञ्जनादि। उत्त० ४१७।

नित्तलं- निस्तलं अतिवृत्तम्। भग० ६७२।

नित्तुप्पा- निस्तृप्पा अचोप्पडा अवगधारिता वा। बृह०  
२६७आ।

नित्थक्का- निर्लज्जाः। बृह० १५अ।

नित्थरइ- निस्तरति। आव० २०७।

नित्थरिस्सामि- निस्तरिष्यामि। आव० ७९३।

नित्थिण्णो- निस्तीर्णः। आव० १९२, २२१।

नित्यः- नियतः। आव० ७६८।

निदंसिज्जंति- निदर्शयन्ते हेतुदृष्टान्तोपन्यासेन। सम०  
१०९। निदर्शयन्ते हेतुदृष्टान्तोपदर्शनेन। नन्दी० २१२।

निदंसेइ- कथञ्चिदगृहणतोऽनुकम्पया निश्चयेन पुनः  
पुनर्दर्शयति निदर्शयति। स्था० ५०२।  
कथञ्चिदगृहणतोऽनुकम्पया निश्च-येन पुनः  
पुनर्दर्शयति। भग० ७११।

निदड्ढे- निर्दग्धः, रत्नप्रभायां चतुर्थो नरकावासः। स्था०  
३६५।

निदरिसण- निश्चयेन दर्शयतेऽनेन दार्ष्टान्तिक एवार्थ  
इति निदर्शनम्। दशवै० ३४।

निदा- नितरां निश्चितं वा सम्यग् दीयते

चित्तमस्यामिति निदा, चित्तवती सम्यग्विवेकवती  
वा। प्रज्ञा० ५५७। नियतं दानं शुद्धिर्जीवस्य 'दैप्' शोधने  
इतिवचनान्निदाज्ञानमा-भोगः, आभोगवती। भग०  
७६९।

निदाणं- निदानम्। आव० ३१०।

**निदानं**— देवादिऋद्धीनां दर्शनश्रवणाभ्यामितो  
ब्रह्मचर्यादेरनुष्ठा-नान्ममैता भूयासुरित्यध्ययसायः।  
सम० ९।  
**निदाय-** ककारस्य स्वार्थिकप्रत्ययत्वान्निदाम्। भग०  
७६९।  
**निदाह-** अधिको दाहः। आव० ७६८। निदाघः एकादशम-  
मासः। जम्बू० ४९०।  
**निदेजत्वं**— उच्चता। बृह० २१९अ।  
**निदंसण-** निदर्शनं दृष्टान्तः। दशवै० ४४।  
**निद्ध-** निद्रा आलस्यम्। जम्बू० २३७।  
**निद्धओ-** निर्दयः-निर्गतदयः, परानुकम्पाशून्यः। आव०  
५९०।  
**निद्धमुख-** निद्राया मोक्षः पूर्वनिरुद्धायामुत्कलना निद्रा  
मोक्षः- स्वाप इति। उत्त० ५३८।  
**निद्धितुं-** निर्दह्य। आव० ८२९।  
**निद्धी-** निर्दहति। पिण्ड० १७६।  
**निद्धा-** निद्रायणं तु निषण्णस्यैव स्वप्नम्। बृह० २०७  
आ। निद्रासुखप्रबोधा स्वापावस्था  
नखच्छोटिकामात्रेणापि यत्र प्रबोधो भवति  
तद्विपाकवेद्या कर्मप्रकृतिरिति निद्रा। स्था० ४४७।  
सुखप्रबोधा स्वापावस्था निद्रा। जीवा० १२३। नियतं  
द्राति-कुत्सितत्वमविस्पष्टत्वं गच्छति चैतन्यं यस्यां  
स्वापावस्थायां सा निद्रा, निद्राणं निद्रा। प्रज्ञा० ३६७।  
**निद्धाया-** निद्राणा। आव० ५५९।  
**निद्धानिद्धा-** निद्रातोऽतिशायिनी निद्रानिद्रा। प्रज्ञा० ४६७।  
निद्रातिशायिनी निद्रा निद्रानिद्रा दुःखप्रबोधा  
स्वापावस्था। स्था० ४४७।  
**निद्धामत्तो-** निद्रामत्तः-निद्राभिभूतः। आव० ७९१।  
**निद्धारितं-** निर्दारितं-विस्फारितम्। प्रश्न० ४९।  
**निद्धिङ्-** निर्दिष्टः उक्तः। दशवै० १९१।  
**निद्धेस-** निर्देशनं निर्देशः-  
कर्मादिकारकशक्तिभिरनधिकस्य-लिङ्गार्थमात्रस्य  
प्रतिदानं तत्र प्रथमा भवति। स्था० ४२८। निर्देशः-  
उपन्यासः। बृह० अ० १८१अ। आणा। दशवै० १३८।  
निर्देशः-प्रश्निते कार्ये नियतार्थमुत्तरम्। भग० १६८।  
निर्देशः-उत्सर्गापवादाभ्यां प्रतिपादनम्। उत्त० ४४।  
निर्देशः विशेषाभिधानम्, विशेषितश्च। आव० १०४।

निर्देशः गुरोर्निर्वचनं निर्देशः। उत्त० ७९। कार्याणि प्रति  
प्रश्ने कृते यन्नियतार्थमुत्तरम्। ज्ञाता० १५९। निर्देशनं  
निर्देशः विशेषा-भिधानम्। दशवै० ७। निर्देशः-गुरुणा  
पृष्ठार्थनिशेषभाषणम्। उत्त० ७३।  
**निद्धेसवत्ती-** निर्देशवत्ती आज्ञाकारी। दशवै० २५०।  
**निद्धोच्च-** निर्दोत्यं निर्भयम्। व्यव० ९अ। निर्दोत्यम्।  
आव० ७३८।  
**निद्धोस-** निद्धोषः द्वात्रिंशत्सूत्रदोषरहितः। स्था० ३९७।  
निर्दोषः-दोषमुक्तस्य प्रथमो गुणविशेषः। आव० ३७६।  
निर्दोषं-हिसादिदोषरहितम्। अनुयो० १४०। निर्दोषं  
द्वात्रिंश-त्सूत्रदोषरहितम्। अनुयो० १३३।  
**निद्धंत-** निर्धर्मातिः नितरामग्निसंयोगः। जीवा० २६७।  
निर्धर्मातं-भस्मीकृतम्। उत्त० ५२७।  
**निद्धंतमलपावगं-** निर्धर्मातं भस्मीकृतं ततो निर्धर्मातमिव  
निर्धर्मातं मल इवात्मनो विशुद्धस्वरूपघातितया पापमेव  
पापकं येनासौ निर्धर्मातमलपापकः। उत्त० ५२७।  
**निद्धन्धस-** निःशूकः। ओघ० १५८। निद्धन्धसः-अपगत-  
सर्वथादयावासनाकः। पिण्ड० ६९। निद्धन्धसः-प्रवचनो-  
पघातनिरपेक्षः। आव० ५२६। (देशीवचनं) नाधिकृतारंभ-  
विराध्यमानप्राण्यनुकंपापरः। व्यव० ९अ।  
**निद्ध-** स्निग्धं बहुस्तेहम्। पिण्ड० ७०। स्निग्धं-  
स्नेहावगाढम्। आव० ७२६। स्निग्धं-मनोहरम्। जम्बू०  
१०२।  
**निद्धघण-** स्निग्धघनः। ज्ञाता० ६।  
**निद्धमणं-** निर्धमनं निर्दग्धम्। प्रश्न० ८२।  
**निद्धमण्ठाण-** निर्धमनस्थानं उपघसरस्थानम्। ओघ०  
१६२।  
**निद्धमणाई-** निद्धमणादि नगरोदकोपघसरादि  
उपघातस्थानम्। ओघ० १६२।  
**निद्धम्मा-** निर्धर्मः। ओघ० १५०।  
**निद्धया-** स्निग्धता अरुक्षता। ज्ञाता० १७०।  
**निद्धाऊण-** निर्गत्य। उत्त० २१४।  
**निद्धाहिंति-** निर्द्धाविष्यन्ति-निर्गमिष्यन्ति। भग० ३०९।  
**निद्धुणे-** निर्धूय-प्रस्फोट्य। दशवै० २२४।  
**निद्धयं-** निद्धतं अपनीतम्। जीवा० १८८।  
**निद्रायते-** सकलक्षुदादिदोषापगतः सुखासिकाभावेन  
निद्रा-यते-पयलायेत। जीवा० १२३।

**निधत्त-** उद्वर्तनापवर्तनावर्जशेषकरणायोग्यत्वेन व्यवस्थापितम्। प्रज्ञा० ४०२। आचा० २०६। निधत्तं- इह च विश्लिष्टानां परस्परतः पुद्गलानां निचयं कृत्वा धारणं रूढि-शब्दत्वेन निधत्तमुच्यते, उद्वर्तनापवर्तनव्यतिरिक्तकरणाना-मविषयत्वेन कर्मणोऽवस्थानमिति। भग० २५।

**निधाग-** निक्षेपः। अनुयो० ५२।

**निधानं-** निधिः निक्षेपः न्यासः विरचना प्रस्तारः स्थापना च। अनुयो० ५२।

**निधान-** चक्रवर्तिराज्योपयोगीद्रव्यम्। स्था० ४४९।

**निधापालः-** अर्थार्जनपरो दृष्टान्तः। आव० २७७।

**निनाए-** निनादः शब्दः। भग० ३२३। महाघोषः। भग० ४७६।

**निनादः-** शब्दितः। ओघ० ४८।

**निन्दनं-** पश्चात्तापः। ज्ञाता० २०६।

**निन्दा-** कुष्ठी त्वमसीत्यादी। स्था० २६। आत्मसाक्षिका। स्था० १३७। स्वप्रत्यक्षं जुगुप्सा। आव० ४८६।

**निन्दितुं-** अतिचारान् स्वसमक्षं जुगुप्सितुम्। स्था० ५७।

**निन्न-** निम्नः नीचभूभागः। उत्त० ३६१। निम्नं- शुष्कसरः-प्रभृति। भग० ६८३।

**निन्नए-** पुरिमताले अण्डकवणिक्। विपा० ५८।

**निन्नगरा-** निर्नगराः-नगरनिष्क्रान्ताः। भग० ६९१।

**निन्नगा-** निम्नगा नदी। प्रश्न० १३५।

**निपचकखाणपोसहोपवासा-**

निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासाः असत्पौरुष्यादिनियमाः अविद्यमानाष्टम्यादिपर्वोपवासाश्च। भग० ३०९।

**निपतनानि-** प्रवाहरूपतया वहनानि। जम्बू० १२५।

**निपातस्थानं-** तडागम्। नन्दी० ५८।

**निष्पंक-** निष्पङ्कं कलङ्कविकलं कर्दमरहितं वा। जीवा० १६१। प्रज्ञा० ८७। निष्पङ्कः-आर्द्रमलरहितः। औप० १०।

**निष्पंका-** निष्पङ्का आर्द्रमलाभावात् अकलङ्कत्वाद्वा। स्था० २३२।

**निष्पगलो-** निष्प्रगलः। ओघ० ३३।

**निष्पगहया-** यथा तथा रश्म्या

वल्गापरपर्याययोन्मार्गप्र-स्थितस्तुरङ्गमो मार्गेऽवतार्यते तथा गुरुणामप्याज्ञावल्गया साधुः प्रमादत उत्पथप्रतिपन्नोऽपि सन्मार्गेऽवतार्यते इति

प्रग्रहशब्देन गुर्वाज्ञाऽभिधीयते, प्रग्रहो नियन्त्रणा गुर्वाजेति यावत् निर्गतः प्रग्रहादिति निष्प्रग्रहः तस्य भावो निष्प्रग्रहता गुर्वाज्ञाया अभावात् पाणिपादमुखधावनादि निःशङ्कं करोती-त्यर्थः। बृह० १९२ आ।

**निष्पचकखाणपोसहोववासे-**

अविद्यमानपौरुष्यादिप्रत्या-

ख्यानोऽसत्पर्वदिनोपवासश्चेत्यर्थः। ज्ञाता० २३८।

**निष्पङ्क-** निरस्तानि स्पष्टानि व्यक्तानि। उपा० ३९।

निर्गतानि स्पष्टानि। ज्ञाता० ११०। भग० ६८४।

**निष्पङ्कपसिणवागरणो-** निस्पृष्टप्रश्नव्याकरणः। आव० ३१९।

**निष्पङ्कम्भो-** निष्प्रतिकर्मा। आव० २२७।

**निष्पत्ती-** निष्पत्तिः सिद्धिः। स्था० ४४९।

**निष्पाण-** निष्प्राणं उच्छवासादिरहितम्। ज्ञाता० ८५।

**निष्पावकुडो-** निष्पावकुटः वल्लकुम्भः। आव० ३१०।

**निष्पिङ्ग-** निष्पिष्टः सुपेषितम्, पेषणपरिसमाप्तिः। पिण्ड० १६४।

**निष्पिवास-** घोरहृदयः। व्यव० १४० आ।

**निष्पिवासा-** निष्पिपासा निराकाङ्क्षा। प्रश्न० ३६।

**निष्पीलणा-** निष्पीडना अत्यन्तमावलनमात्मिका। उत्त० ८।

**निष्पीलिज्जङ्ग-** निष्पीड्यते। आव० ६२१।

**निष्पुलाए-** जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे उत्सर्पिण्या आगामिचतुर्विंश-तिकायां चतुर्दशो जिनः। सम० १५३।

**निष्पज्जए-** निष्पद्यते निष्पादयति। सूर्य० १७३।

**निष्पण्ण-** सम्यक्सूत्रार्थकुशलः। बृह० २८४ आ।

**निष्पण्णयावणा-** निष्पन्नातापना। औप० ४०।

**निष्पाइयनिष्पन्नं-** निष्पादितनिष्पन्नं स्वार्थं

निष्पाद्य पुनः साध्वर्थं निष्पादनम् निष्पादितेन- गृहिणा स्वार्थं कृतेन निष्पन्नं यत् करम्बादि मोदकादि वा तन्निष्पादितनिष्पन्नम्। पिण्ड० ७९।

**निष्पाईया-** निष्पादिता योग्यतामापादिताः। आचा० ३६४।

**निष्पाव-** निष्पावा (नः) वल्लाः। भग० २७४। निष्पावाः वल्लाः। दशवै० १९३। वल्लाः। भग० ८०२। दशवै० ९२ आ। स्था० ३४४। सत्रिभागकाकण्या

त्रिभागोनगुञ्जाद्वयेन वा निर्वृत्तो निष्पावः। अनुयो०  
१५५।

निष्फेड- निष्फेटः निष्काशनम्। आव० ७००।

निष्फेडिउ- निःस्फिटितुम्। दशवै० ३७।

निष्फेडेह- निष्काशयत। आव० ४२५।

निबद्धा- पर्यायार्थतया

प्रतिसमयमन्यथात्वावाप्तेर्निबद्धाः- सूत्र एव ग्रथिता।  
सम० १०९।

निबद्धाउए- प्रकृतिस्थित्यनुभागबन्धापेक्षया। ज्ञाता०  
१८३।

निबन्धमार्ग- द्वासप्ततिकलायां गीतकलायाः द्वितीयो  
भेदः। सम० ८४।

निबुड्डा- निमग्नाः। उत्त० २३३।

निब्वंथ- निर्बन्धः- आग्राहः। ओघ० ८६।

निब्वलासए- निर्बलं-निःसारमन्तप्रान्तादिकं यद्द्रव्यं  
तदा-शकः- तद्गोजी स्यात्, यदि वा निर्गतं बलं  
सामर्थ्यमस्येति-निर्बलः एवम्भूतः सन्नासीत। आचा०  
२१८।

निब्वहि- निर्बहिः अत्यन्तबहिर्बहिस्तात्तरा। स्था० ३५३।

निब्वुकच्छिन्नधय- निब्वुकच्छिन्नध्वजः-  
निर्मूलनिकृत्तकेतुः रथः। प्रश्न० ४९।

निब्वंछइ- नितरां दुष्टमभिधत्ते। भग० ६८३।

निब्वंछणं- निर्भर्त्सनं-अपसर मे  
दृष्टिमार्गादित्यादिकम्। प्रश्न० १६०।

निब्वंछणा- न त्वया मम प्रयोजनमित्यादिपरुषवचनम्।  
भग० ६८३।

निब्वए- निर्भयः शूरत्वात्। ज्ञाता० ६७।

निब्वओ- निर्भयः इह लोकादिसप्तभयविप्रयुक्तः। आव०  
५९२।

निब्वच्छण- निर्भर्त्सनं-आक्रोशविशेषः। प्रश्न० ५६।

निब्विज्जमाणं- नितरां निर्भिद्यमानं अतिशयेन  
भिद्यमानम्। जीवा० १९१।

निब्वेरिय- प्रसारितानि। उत्तथ० ३६७।

निब्व- नितरां भात इति निब्वम्। ज्ञाता० १६८।

निब्व- छाया। उत्त० ४४२।

निब्विय- निभृतः-परद्यनादानव्यापारादुपरतः। प्रश्न०  
१२४। संयतः। सूत्र० ३८४।

निभेलणं- गृहम्। मरण० ।

निभेल्लंतं- निर्भेलितं-कुक्षितो बहिष्कृतम्। प्रश्न० ४९।

निमंतणा- दशधा सामाचार्या नवमी। भग० ९२०। निम-  
न्त्रणा-अगृहीतेनैवाशनादिनासहं

भवदर्थमशनाद्यानयामि इत्येवम्भूता, दशधा  
सामाचार्या नवमो भेदः। आव० २५९।

अद्याप्यगृहीतेनाशनादिना साधूनामामन्त्रणम्।

अनुयो० १०३। निमन्त्रणा-तेनैवागृहीतेन यथालाभं

युष्मद्योग्यममुकमानेष्ये इति प्रार्थना। बृह० २२२अ।

गृहस्थानामभ्यर्थना। बृह० २४अ।

निमंतंति- निमन्त्रयति। आव० १९८।

निमग्गो- निमग्नः-अन्तःप्रविष्टः। जीवा० २७०।

निमग्नजल- नदीविशेषः। स्था० ७१।

निमज्जनं- त्वगवर्त्तनम्। ओघ० ५८, १३०।

निमज्जए- निमज्जकः स्थानार्थं निमग्ना एव ये  
तिष्ठन्ति। ओप० ९०।

निमज्जगा- स्नानार्थं निमग्ना। भग० ५१९।

निमज्जगा- स्नानार्थं ये निमग्ना एव क्षणं तिष्ठन्ति।  
निर० २५।

निमज्जण- प्रवेशः। उत्त० ७११।

निमन्त्रितं- निमन्त्रणा पुरस्सरं प्रतिदिवसं नियतं दीयते  
तत्। व्यव० १६०अ।

निमित्तं- “तिविहं होइ निमित्तं तोयप्पडुप्पन्नणागयं  
चेव। तेण न विणाउनेयं नज्जइ तेणं निमित्तं तु।”

अतीतं प्रत्युत्पन्न-मनागतं च

कालत्रयवर्त्तिताभालाभादिपरिज्ञानहेतुः। बृह० २१५अ।

निमित्तः-अष्टाङ्गस्य निमित्तस्य। आचा० ४१९।

अनागतार्थपरिज्ञानहेतुः। ओघ० १४। कार्यवाचकः कारणं  
वा। आव० २८०। निमित्तं लक्षणं निमित्तलक्षणम्।

आव० २८२। दण्डकशाशस्त्रादीनि समाहारद्वन्द्वस्तत्र

सति आयु-भिद्यत इति सम्बन्धः। स्था० ४००। हेतुः।

स्था० ४२७। अङ्गुष्ठप्रश्नादि। आचा० ३५१।

चूडामण्याद्युपदेशेनातीता-दिभावसंवादनम्। प्रश्न०

१०९। पटस्य तन्तव इव कारणम्। आव० २७८। मिश्रितं-

नियमितम्। आव० ८५६। निमित्तं-अतीतादि। दशवै०

२३६। निमित्तं-अतीताद्यर्थपरिज्ञानहेतुः

शुभाशुभचेष्टादि। पिण्ड० १२१।

निमित्तउल्लोगो- निमित्तावलोकः। आव० २१४।  
 निमित्तकारणं- कुलालादि। स्था० ४९४।  
 निमित्ताजीवयाते- निमित्ताजीवनतया-  
 त्रैकालिकलाभादि-  
 विषयनिमित्तोपात्ताहाराद्युपजीवनेनेति। स्था० २७५।  
 निमिसंतरं- निमेषान्तरम्। आव० २०८।  
 निमुग्गं- निमग्नं अनुन्नतम्। प्रश्न० ८०।  
 निम्नं- अङ्गुलिपर्वरेखा। ओघ० १७१।  
 निम्बतिल- निम्बकुसुमम्। व्यव० १५९ अ।  
 निम्मं- निर्मापितम्। व्यव० ४०१ अ।  
 निम्ममे- जम्बुद्वीपभरते आगामिन्यामवसर्पोण्यां  
 पञ्चदशतीर्थ-कृद्। सम० १५४।  
 निम्मयया- निर्मायता विकाररहितत्वम्। दशवै० १२१।  
 निम्मलं- निर्मलं आगन्तुकमलाभावात्। प्रज्ञा०  
 ८७ निर्मलं-आगन्तुकम-लासम्भवात्। जीवा० १६१।  
 निर्मलं-छायादि-दोषरहितम्। जम्बू० ५२८।  
 स्वाभाविकमलरहितम्। भग० ६७२। निर्मलानि-  
 कखड(कर्कश) मलाभावात्। सम० १४०। निर्मलः-  
 विगतमलकल्पसूक्ष्मतरवालाग्रः। भग० २७७। ब्रह्मलोके  
 चतुर्थो विमानप्रस्तरः। स्था० २६७। निर्मलः-  
 कठिनमलरहितः। औप० १०। निर्मलः-स्वभावो-  
 त्थमलरहितः। जीवा० २७२।  
 निम्मलतरा- निर्मलं जीवं करोति या सा तथा अतिशयेन  
 वा निम्मल निर्मलतरा, अहिंसायाः षष्ठितमं नाम।  
 प्रश्न० ९६।  
 निम्मल्ल- निर्माल्यं-तीर्थादिगत स प्रभाव प्रतिमा शेषा।  
 पिण्ड० ९६।  
 निम्मवियं- निर्मितं समापितम्। आव० ७०६।  
 निम्मवेइ- निर्मिमीते। आव० ४१०।  
 निम्मा- निर्मा मूलपादानां। बृह० १८४ अ। जीवा० १४४।  
 निम्मिअ- निर्मितः-निवेशितः। जम्बू० २११।  
 निम्मितवादी- निर्मितं-ईश्वरब्रह्मपुरुषादिना कृतं लोकं  
 वद-तीति निर्मितवादी। स्था० ४२५।  
 निम्मिय- निर्मितं निवेशितम्। उपा० ४४। निर्मितः  
 निवेशितः। भग० ४५९।  
 निम्मगगा- निर्मगना नदीः। आव० १५०।  
 निम्मेरं- निर्मर्यादम्। गच्छा०।

निम्मैरा- निर्मर्यादाः प्रतिपन्नापरिपालनादिना। स्था०  
 १२६। अविद्यमानकुलादिमर्यादः। भग० ३०९।  
 निम्मोअणी- निर्मोचनी निर्मोकः। उत्त० ४०७।  
 नियंटितं- नितरां यन्त्रितं नियन्त्रितम्। भग० २९६।  
 नितरां यन्त्रितं-प्रतिज्ञातदिनादौ  
 ग्लानत्वादयन्तरायभावेऽपि नियमान् कर्तव्यम्। स्था०  
 ४९८।  
 नियंटियं- नितरां यन्त्रितं नियन्त्रितं-प्रतिज्ञातदिनादौ  
 ग्लाना-द्यन्तरायभावेऽपि नियमात् कर्तव्यमिति  
 हृदयम्। आव० ८४०।  
 नियंठ- निर्ग्रन्थः श्रमणः। भग० ११२।  
 नियंठणामिओ- निर्ग्रन्थनामितः। आव० ४१२।  
 नियंठा- निर्गताः स बाह्याभ्यन्तरग्रन्थादिति निर्ग्रन्थाः-  
 साधवाः। भग० ८९१।  
 नियंठि- उत्तराध्ययनेषु षष्ठमध्ययनम्। उत्त० ९।  
 नियंठिज्जं- निग्रन्थीयं उत्तराध्ययनेषु  
 विंशतितममध्ययनम्। उत्त० ९।  
 नियंठिपुत्ते- पुद्गलप्रदेशनिरूपणे महावीरशिष्यः। भग०  
 २४०।  
 नियंठु- निर्ग्रन्थोद्देशः। भग० ३२३।  
 नियंठुद्देसए- निर्ग्रन्थोद्देशकः। भग० ३२४। द्वितीयशते  
 पञ्चमोद्देशकः। भग० ४२०।  
 नियंत- गच्छन्। आव० ६४९।  
 नियंसणं- परिधानम्। जीवा० १७३।  
 नियंसति- परिधापयति। आव० १२३।  
 नियंसिकं- परिहितम्। मरण०।  
 नियंसेहामि- परिधास्ये। आव० ३०७।  
 नियइ- नियत्या नैयत्येन। जम्बू० ४४।  
 नियइइया- नियतिर्व्यवस्था तत्र नियुक्तास्तथा वा  
 चरन्तीति नैयतिकाः। व्यव० १७१ अ।  
 नियइपव्वय- नियत्या-नैयत्येन पर्वतो नियतिपर्वतः।  
 जीवा० २००। जम्बू० ४४।  
 नियइया- नैयतिकी नियता। प्रज्ञा० ३३५।  
 नियई- यत् राद्धावपि नियतरसत्त्वं न शाल्यादिरसता सा  
 नियतिः। प्रश्न० ३५।  
 नियए- नित्यः अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावः। त्त०  
 ४३०।

**नियओ-** नियतः-परिच्छिन्नः। *आव० ५९१।*  
**नियग-** निजकः गोत्रजः। *भग० १६३।* निजकः-  
 भ्रातृपुत्रादिः। *औप० १०३।* निजकः-भर्ता। *पिण्ड० १२२।*  
*आव० ६३८।*  
**नियगा-** णियगा-आत्मीयाः। *आचा० १०५।* निजाः-  
 आत्मीया बान्धवाः सुहृदो वा। *आचा० १०८।*  
**नियच्छंतो-** अन्वेषयन्। *बृह० २१३।*  
**नियच्छइ-** नियच्छति बध्नाति। *उत्त० ४१६।*  
**नियच्छइ-** नियच्छतः निश्चयेन गच्छतिः प्राप्नुतः।  
*सूत्र० ३५।*  
**नियच्छन्ति-** अवधारयन्ति। *आचा० १६७।*  
**नियट्टी-** निवृत्तिः द्विसमयस्थितिकस्यापि वेद्यकर्मणो  
 बन्ध-व्यावृत्तिः मुक्तिः। *उत्त० ५८९।*  
**नियट्टमाणे-** निवर्द्धयन्-प्रकाशहान्या हानिं नयन्। *सम०*  
*४७।*  
**नियड-** निगडं-दृढबन्धनम्। *आचा० ६।*  
**नियडि-** निकृतिः-आन्तरो विकारः। *आव० ५६६।*  
 बकवृत्त्या कुर्कुटादिकरणं, अधिकोपचारकरणेन  
 परच्छलनम्। *ज्ञाता० २३८।* निकृतिः-वञ्चनक्रिया।  
*प्रश्न० ५८।* वञ्चनप्रच्छादनार्थं कर्म। *ज्ञाता० ८०।*  
 मायाप्रच्छादनार्थं-मायान्तरकरणम्। *ज्ञाता० २३८।*  
 निकृतिः-अत्यन्तादरकरणेन परवञ्चनम्। *प्रश्न० ९७।*  
 निकृतिः-अत्युपचारकरणेन वञ्चनं, माया कर्मा-  
 च्छादनार्थं वा। *मायान्तरम्। प्रश्न० ९२।* निकृतिः-  
 आकार-वचनाच्छादनम्। *व्यव० १९३।*  
**नियडिकम्मं-** निकृतिकर्म-मायाकर्म,  
 तृतीयाधर्मद्वारस्यैको-नत्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न० ४३।*  
**नियडिकवडवंचणाकुसला-**  
 निकृतिकपटवञ्चनाकुशलानि-कृतिः-आन्तरो विकारः  
 कपटं-वेषपरावर्त्तादिर्बाह्यः, आभ्यां या वञ्चना तस्यां  
 कुशला-निपुणा। *आव० ५६६।*  
**नियडिनिबंधणं-** निकृतिनिबन्धनम्। *आव० ३९५।*  
**नियडिल्ल-** निकृतिमान् मनसा। *उत्त० ६५६।*  
**नियडिल्लयाए-** निकृतिः-वंचनार्थं चेष्टा  
 मायाप्रच्छादनार्थं मायान्तरमित्येके अत्यादरकरणेन  
 परवञ्चनमित्यन्ये तद्वत्ता। *भग० ४१२।*  
**नियडि-** निकृतिः। *आव० २६४, ३९४।* माया०। *आव० ७९८।*

अण्णहाकरणलक्खणा माया। *आव० ६६२।* निकृतिः-  
 कैतवार्थप्रयुक्तवचनाकाराच्छादनम्। *बृह० ४६।*  
**नियडी-** माया। *बृह० १८६।*  
**नियणा-** निदानं निर्दणणं। *बृह० ४।*  
**नियतंति-** निबद्धं। *निशी० ३५।*  
**नियत-** नियतार्थविषयेनैककालमनेकविषयम्। *बृह० ९*  
*आ।* एकरूपत्वात् नियतः। *स्था० ३३३।* नित्यम्। *स्था०*  
*४२६।*  
**नियतवादिन-** पाखंडीविशेषः। *सम० ११०।*  
**नियतिः-** व्यवस्था। *व्यव० १७१।*  
**नियतिवादिनः-** नियतिः-पदार्थानामवश्यन्तया  
 यद्यथाभवने प्रयोजककर्त्रीति। *स्था० २६८।*  
**नियत्त-** निवर्त्तनम्। *ओघ० १७४।* निवृत्तः। *आव० ६९३।*  
**नियत्तण-** निवर्त्तनं-क्षेत्रमानविशेषः निजतनुप्रमाणं वा।  
*भग० १६७।*  
**नियत्तणसइए-** निवर्त्तनं भूमिपरिमाणविशेषो  
 देशविशेषप्रसिद्धः ततो निवर्त्तनशतं कर्षणीयत्वेन  
 यस्यास्ति तन्निवर्त्तनशति-कम्। *उपा० ४।*  
**नियत्तणियं-** निवर्त्तनिकं निवर्त्तनं-क्षेत्रमानविशेषः  
 तत्परिमाणं निवर्त्तनिकं निजतनुप्रमाणं वा। *भग०*  
*१६७।*  
**नियत्ती-** निवर्त्तनं निवृत्तिः, प्रतिक्रमणपञ्चमः पर्यायः।  
*आव० ५५२।* नियतिः-स्वभावविशेषः। *प्रश्न० ३५।*  
**नियत्थं-** नियसितं परिहितम्। *आव० १८४।*  
**नियम-** निरोधः। *ओघ० ११४।* निश्चयः। *पिण्ड० १६९।*  
 इन्द्रियनोइन्द्रियभेदभिन्नः। *आव० ६७।*  
 द्रव्याद्यभिग्रहात्मकः। *उत्त० ४५१।* अभिग्रहः। *भग०*  
*६२।* उत्तरगुणसमूहात्मकः। *अनुयो० २५६।*  
**नियमणिसिद्धो-** नियमनिषिद्धः। *आव० २६७।*  
**नियमाः-** उत्तरगुणाः। *सम० १०७।*  
 इन्द्रियनोइन्द्रियदमरूपाः। *नन्दी० ४६।*  
 अभिग्रहविशेषाः। *भग० ७५९।* *सम० १२७।*  
 शौचसंतोषतमः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि। *ज्ञाता०*  
*११०।* विचित्रा अभिग्रहविशेषाः। *राज० ११९।* *ज्ञाता० ७।*  
**नियमिता-** जिताः। *बृह० २११।*  
**नियमे-** नियमयेत् कारयेद्वाचा। *आचा० ४१६।*  
**नियय-** निहतं-सर्वदा। *पिण्ड० १६७।* नियतं-प्रतिदिवसं

निरन्तरम्। पिण्ड० ७७। नियतः-सदा  
भोग्यत्वेनावस्थितः। जीवा० २००। जम्बू० ४४। नियतः  
नित्यः। आव० ७६८। सततम्। ओघ० १८०।

**निययपव्वय-** नियतः सदा भोग्यत्वेनावस्थितः पर्वतो  
नियत-पर्वतः। जीवा० २००।

**निययपव्वया-** नियताः सदा भोग्यत्वेनावस्थिताः पर्वताः  
यत्र व्यन्तरा देवदेव्यो भवधारणीयेन वैक्रियशरीरेण  
प्रायः सदा रमन्ते। जम्बू० ४४।

**नियमा-** नियता-सर्वकालमवस्थिता शाश्वतत्वात्,  
जम्बूवाः सुदर्शनाया एकादशं नाम। जीवा० २९९।

**निययी-** निकृतिः-मायायाः प्रच्छादनार्थं वचनम्।  
अधर्मद्वारे मृषावादस्य त्रयोविंशतितमं नाम। प्रश्न०  
२७।

**नियल-** निगडं लोहमयम्। औप० ८७। निगडः। आव०  
२२४, ६८३। उत्त० ५५५। निगडं पादविषयलोहमयब-  
न्धनम्। पिण्ड० १५७। नियलियओ विव चलणे  
वित्थारिय अहव मेलविउ, कायोत्सर्गेऽष्टमो दोषः।  
श्राव० ७९८।

**नियलबद्धो-** निगडबद्धः। आव० २२२।

**नियलमाई-** निगडादिभ्यः

आदिशब्दात्कारागृहादिपरिग्रहः। उत्त० ५५५।

**नियल्ले-** अष्टाशीतितममहाग्रहे  
त्रिपञ्चाशत्तममहाग्रहः। स्था० ७९।

**नियल्लग-** निजकः। आव० ३०७।

**निया-** नीता। स्था० २२२।

**नियाए-** निदानं निदा-प्राणिहिंसा नरकादिदुःखहेतुरिति  
जानताऽपि यद्वा साधूनामाधाकर्म न कल्पते इति  
परिज्ञानवताऽपि यज्जीवानां प्राणव्यपरोपणं सा  
निदा। पिण्ड० ४२। कारणेन संकल्पेन। आचा० ३४।  
निदान-व्यापाद्यस्य सत्त्वस्य हा। धिक् सम्प्रत्येष मां  
मारयिष्यतीति परिज्ञानतो यत् प्राणव्यपरोपणं सा।  
पिण्ड० ४२। निदानं स्वार्थं परार्थं चेति विभागेनोद्दिश्य  
यत् प्राणव्यपरोपणं सा निदा। पिण्ड० ४२।

**नियागं-** निययं। दशवै० ५०। नित्यागं-नित्यपिण्डम्।  
उत्त० ४७९। संयमो मोक्षो वा। यजनं यागः नियतो  
निश्चितो वा यागो। आचा० ३६९। नियागः-मोक्षमार्गः,  
संगतम्, सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकः मोक्षमार्गः।

आचा० ४२। नियागं-आमन्त्रितस्य पिण्डस्य ग्रहणं  
नित्यं न त्वनामन्त्रितस्य। दशवै० ११६। नितरां यजनं  
यागः-पूजा यस्मिन् सः नियागः-मोक्षः। उत्त० ४६।

**नियाण-** निदानं उपादानं कर्मम्। आचा० २३४। विषया-  
भिष्वङ्गात्मकम्। उत्त० ४१४। आशयः। आव० ६१०।  
नितरां दीयन्ते-लूयन्ते दीयन्ते वा खण्ड्यन्ते तथाविध-  
सानुबन्धफलाभावतस्तपः प्रभृतीन्यनेनेति निदानं-  
साभिष्वङ्गप्रार्थनारूपम्। उत्त० ३८४।  
साभिष्वङ्गप्रार्थनारूपः। उत्त० ७०७। निदानं  
आकाङ्क्षा। सूत्र० २६४। कर्ममल-शोधनम्। उत्त० ४४९।  
निदानं-आरम्भरूपं आश्रवः हेतुर्वा। सूत्र० १८८।  
निदानशल्यम्। ओघ० २२७। निदानं अभि-  
लाषानुष्ठानम्। आव० ५७९।

**नियाणचिंतण-** निदानचिन्तनं-निदानाध्यवसायः। आव०  
५८५।

**नियाणछिन्ने-** निदानं प्राणातिपातादि कर्मबन्धकारणं  
छिन्नं अपनीतं येन स तथा छिन्ननिदानः,  
अप्रमत्तसंयत इति। उत्त० ४१४।

**नियाय-** नियागः मोक्षः सद्धर्मो वा। सूत्र० ३६। ज्ञात्वा।  
आचा० २१०।

**नियुक्तः-** राजपुरुषः। नन्दी० १५१।

**नियुक्तकः-** राजपुरुषः। प्रज्ञा० ८९। यः कार्यार्थं  
नियोजितः कर्मकर इति। उत्त० २७२।

**नियोग-** नियुज्यते साधुः आचार्यप्रायोग्यानयनार्थम्।  
ओघ० ८५। नियतो निश्चितो वा योगो नियोगः,  
अनुयोगस्य पर्यायः। आव० ८६।

**नियोगतः-** अवश्यम्। आव० २६५।

**नियोगामच्चो-** नियोगामात्यः नियोगनिमित्तेन  
कलङ्कदाता। आव० ६९३।

**निरंतरगो-** निरंतरकः लघुच्छिद्रैरपि रहितः। जीवा० ३६९।

**निरंतरिए-** धनकवाडे निर्गता अन्तरिका-लघ्वन्तररूपाय-  
योस्तौ निरन्तरिकौ अत एव धनकपाटौ यस्य तत्तथा।  
जम्बू० ४४।

**निरंभा-** वैरोचनेन्द्रस्य चतुर्थी अग्रमहिषी। भग० ५०३।

**निरए-** नरकः-प्रकीर्णकरूपो नरकावासः। प्रज्ञा० ७१।

**निरणुकंप-** विगतप्राणिरक्षः, निर्गता वा जनानामनुकम्पा  
यत्र स। ज्ञाता० ८०। निरनुकम्पः-जो उ परं कंपतं ददुण

न कंपए कठिणभावो। एसो उ निरणुकंपो अणुपच्छा  
भावजोएणं। यस्तु परं कृपास्पदं कुतश्चित् भयात्  
कम्पमानमपि दृष्ट्वा कठिणभावः सन्नकम्पते एष  
निरणुकम्पः। बृह० २१६।

**निरणुककोस-** निरणुक्रोशः निर्दयः। ज्ञाता० ८०।

**निरणुतावो-** निरणुतापः-निर्गतानुतापः,

पश्चात्तापरहितः। आव० ५९०। ज्ञाता० ८०।

**निरती-** देवानन्दाऽपरनाम्। जम्बू० ४९२। सूर्य० १४७।

**निरत्थय-** निरर्थकं-यत्र वर्णानां क्रमनिदर्शनमात्रं विषते  
न पुनरभिधेयतया कश्चिदर्थः प्रतीयते तत्।

द्वात्रिंशत्तम सूत्र-दोषे तृतीयदोषः। आव० ३७४।

निष्फलम्। दशवै० १२७। निरर्थकं-यत्र वर्णानां  
क्रमनिर्देशनमात्रमुपलभ्यते न त्वर्थः। अनुयो० २६१।

**निरत्थयमवत्थयं-** निरर्थकापार्थक्यं निरर्थकं-  
सत्यार्थान्निष्क्रान्तं अपार्थ-अपगतसत्यार्थम्, प्रथम  
अधर्मद्वारस्य सप्तमं नाम। प्रश्न० २६।

**निरन्तराः-** हृदयशून्याः। आचा० १८६, २२८।

**निरयं-** नरकावासः। अनुयो० १७१। निर्गतशुभफलम्।  
प्रश्न० ९२। नीरजाः-रजोरहितः। औप० १०। निरयः  
निर्गतमयं-इष्टफलं कर्म यस्मात् स नरकः। भग० १९।

**निरयगइया-** निरयगतिः-गमनं येषां ते निरयगतिकाः,  
इह सम्यग्दृष्टयो मिथ्यादृष्टयो वा ज्ञानिनोऽज्ञानिनो  
वा ये पञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्येभ्यो नरके उत्पत्तुकामा  
अन्तरगतौ वर्तन्ते ते निरयगतिकाः विवसिताः। भग०  
३४६।

**निरयछिद्-** नरकच्छिद्राणि। प्रज्ञा० ७७।

**निरयनिक्खुड-** नरकनिष्फुटाः-गवाक्षादिकल्पा  
नरकवास-प्रदेशाः। प्रज्ञा० ७७।

**निरयपत्थड-** नरकप्रस्तटः नरकभूमिरूपः। प्रज्ञा० ७१।

**निरयपत्थडा-** नरकप्रस्तटाः। अनुयो० १७१।

**निरयवत्तणि-** निरयवर्तिनि नरकमार्गः। प्रश्न० ६१।

**निरयवाला-** शक्रेन्द्रस्य आज्ञावर्ती देवः। भग० १९७।

**निरयविभत्ती-** निरयविभक्तिः

सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे पञ्चम-मध्ययनम्। सम०  
३१। आव० ६५१।

**निरया-** इष्टफलं कर्म निर्गतमयं येभ्यस्ते निरयाः-  
नरका-वासाः। जीवा० ३३। प्रज्ञा० ४३। निर्गतं-

अविद्यमानमयं इष्टफलं कर्म येभ्यस्ते निरयाः। स्था०  
२८। नरकहेतुः, विशिष्टवेगो वा। प्रश्न० ९२।

**निरयावलिया-** नरकावलिकाः आवलिका व्यवस्थिता  
नरका-वासा। प्रज्ञा० ७१।

**निरयावलियाओ-** यत्रावलिकाप्रविष्टा इतरे च  
नरकावासाः प्रसङ्गतस्तद्गामिनश्च नरास्तिर्यञ्चो वा  
वर्ण्यन्ते ता निरया-वलिकाः। नन्दी० १०७। निर० ३।

**निरयावली-** नरकावासपङ्क्तिः। अनुयो० १७१।

**निरवकंखा-** निष्क्रान्तमाकाङ्क्षातो निराकाङ्क्षम्। उत्त०  
६००।

**निरवज्जं-** निरवद्यं निर्गतपापम्,  
इहलोकाद्याशंसारहितम्। आव० ५९६।

**निरवयकख-** निरवकाङ्क्षः-  
पश्चाद्वागमनवेक्षमाणस्तन्निस्पृहः अनभिलाषवान्।  
ज्ञाता० १६९। निर्गताऽपेक्षापरप्राणविषया  
परलोकादिविषया वा यस्मिन्नसौ निरपेक्षः  
निरवकाङ्क्षो वा अवकाङ्क्षारहितो वा। प्रश्न० ५।

**निरवयवः-** समस्तः। बृह० ३६ आ।

**निरवलावे-** निरपलापः-नान्यस्मै कथयेदिति, द्वात्रिंशद्  
योगे सङ्ग्रहे द्वितीयो योगः। आव० ६६३।

**निरवशेषः-** प्रसक्तानुप्रसक्तमप्युच्यते यस्मिन् स एवं  
लक्षणः। आव० २७।

**निरवसेस-** निरवशेषता अपरिशेषव्यक्तिसमाश्रयः। स्था०  
२२३। निरवशेषो-निरवशेषस्य  
प्रसक्तानुप्रसक्तस्यार्थस्य कथनात्। भग० ८६९।

**निरवशेषं-** सामस्त्येन। प्रज्ञा० ५८२। निरवशेषं-  
समग्राशनादिविषयः। आव० ८४०। निर्गतमवशेषमपि  
अल्पाल्पमशनाद्याहारजातं यस्मात्तत् निरवशेषं  
सर्वमशनादि तद्विषयत्वान्निरवशेषम्। स्था० ४९८।  
निरवशेषं-समग्राशनादिविषयम्। भग० २९६।  
निरवशेषप्रदेशान्तरतोऽपि स्वस्वभावेनान्यूनाः। भग०  
१४९।

**निरवसेससव्वते-** अपरिशेषव्यक्तिसमाश्रयेण सर्वं  
निरवशेष-सर्वम्। स्था० २२३।

**निरवेकखो-** निरपेक्षः-निरभिलाषः, निरभिष्वङ्गः। उत्त०  
२६९। निरपेक्षः इहान्यभिकापायभयरहितः। आव०  
५९०।

**निरस्साविणी-** निष्क्रान्ता आश्राविभ्यः प्राग्वत् सन्धिभो  
निराश्राविणी। उत्त० ५०१।  
**निराग-** निरन्तरायः। उत्त० ८९।  
**निरागारं-** अपवादशून्यम्। आतु० ।  
**निरामया-** रोगरहितः। आव० ४१९।  
**निरामयामय-** निरामयामयः नीरोगस्याऽऽमयभावः  
रोगोत्पत्तिः। दशवै० १३१।  
**निरामिस-** निरामिषा, परित्यक्ताभिष्वङ्गहेतुः। उत्त०  
४१०।  
**निरायं-** नितराम्। आव० २२२, ७००।  
**निरारम्भे-** निर्गतः आरम्भात्-  
असत्क्रियाप्रवर्तनलक्षणादिति निरारम्भः। उत्त० ९९।  
**निरालंबण-** निष्कारणं प्रत्यपायसम्भवो वा  
त्राणायाऽऽलम्ब-नीयवस्तुवर्जितः। ज्ञाता० १५८।  
निरालम्बनः-एहिकामुष्मिकाशंसारहितः। आचा० ४३१।  
**निरालोगा-** निरालोकाः-निरस्तप्रकाशा निरस्तदृष्टिप्रसरा  
वा। भग० ३०६।  
**निरावरण-** क्षायिकम्। ज्ञाता० १५३।  
**निरासो-** निराशसः-इह परलोकाशंसाविप्रमुक्तः। आव०  
५९२।  
**निराससे-** निराशंसः-एहिकामुष्मिकाशंसारहितः। आचा०  
४३१।  
**निरिक्खिअ-** निरीक्षिताः  
मनोरथपरम्परासम्पत्तिसम्भवावि-  
निश्चयसमुत्थसम्मदविकाशिलोचनैरालोकिताः।  
नन्दी० १९२।  
**निरुंभइ-** निरुणद्धि। आव० ७८३।  
**निरुंभति-** निरुन्धति। आव० २७७।  
**निरुक्तिः-** क्रियाकारकभेदपर्यायैः शब्दार्थकथनम्।  
आव० ३६३।  
**निरुक्तिद्वारम्-** एकार्थशब्दविधानरूपत्वात्तस्य। प्रश्न०  
४।  
**निरुच्छवासः-** निश्चलः। व्यव० १९८ आ।  
**निरुत्त-** निरुक्तं निश्चित्तमुक्तं अक्षरार्थमित्यर्थः। बृह०  
३ अ। निरुक्तं, निश्चित्तमुक्तमन्वर्थरूपम्। दशवै०  
२६१। निरुक्तं शब्दव्युत्पत्तिकारकशास्त्रम्। भग०  
११४। निरुक्तः शब्दनि-रुक्तिप्रतिपादकः। औप० ९३।

शब्दनिरुक्तप्रतिपादकः। ज्ञाता० ११०।  
**निरुत्ती-** निश्चिता उक्तिः निरुक्तिः। अनुयो० २६०।  
व्युत्पत्तिः। अनुयो० २६४।  
**निरुत्थाई-** न निमित्तं विनोत्थानशीलो निरुत्थायी।  
उत्त० ५८।  
**निरुद्ध-** परिगलितम्। आचा० १९१। आवृत्तम्। सूत्र० ७४।  
विनाशितः। व्यव० २४१। निरुद्धः। उत्त० ५८२।  
अध्यवसानादिभिरुपक्रमणकरणैरवष्टब्धः। उत्त० २८३।  
अल्पः। स्था० १८१। निरुद्धः-अर्थस्तोकः, स्तोक-  
कालीनम्। सूत्र० २५०। विनाशितः। व्यव० २४१ अ।  
**निरुद्धगतयः-** सिद्धाः। उत्त० ७८४।  
**निरुद्धभवे-** निरुद्धभवः-निरुद्धाद्येतनजन्मा  
चरमभवप्राप्तः। भग० १११।  
**निरुद्धभवपवंचे-** अप्राप्तव्यभवविस्तारः। भग० १११।  
**निरुक्किड्ड-** निरुपक्लिष्टः-व्याधिना प्राक् साम्प्रतं  
चानभि-भूतः। भग० २७६। निरुपक्लिष्टः व्याधिनी प्राक्  
साम्प्रतं चानभिभूतः। अनुयो० १७९।  
**निरुवद्वाणा-** निर्गतमुपस्थानं-उद्यमो येषां ते  
निरुपस्थानाः-सर्वजप्रणीतसदाचारानुष्ठानविकलाः।  
आचा० २२७।  
**निरुवलेव-** निरुपलेपं मूत्रविष्ठाषूपलेपरहितम्। जीवा०  
२७७। निरुपलेपः तथाविधबन्धहेत्वभावेन  
तथाविधकर्मानुपादानात्। ज्ञाता० १०४।  
**निरुवसगो-** निरुपसर्गः मोक्षः। आव० ७८७।  
**निरुवसगवत्तिया-** निरुपसर्गप्रत्ययं मोक्षनिमित्तम्।  
आव० ७८६।  
**निरुवहए-** निरुपहतः वातादिभिरनुपहतः। ज्ञाता० ९१।  
**निरुवहयं-** निरुपहतं निरोगम्। प्रश्न० ७६। निरुपहतं  
खंज-नादिदोषरहितम्। बृह० २२६ आ। निरुपहतो  
निरोगः। बृह० २५४ अ।  
**निरुवहया-** निरुपहतः निरुपहतेन्द्रियता। आव० ३४१।  
**निरुवगारी-** निरुपकर्तुं शीलमस्येति निरुपकारी। आव०  
१००।  
**निरुव्विगग-** निरुद्विग्नः सदैव अनुकूलविषयप्राप्तेः।  
ज्ञाता० ६७।  
**निरुहः-** निरुहः-अनुवासः। विपा० ४१।  
**निरुहा-** अनुवासना। ज्ञाता० १८३।

निरेई- निरेजी-निष्प्रकम्पः। आव० ७७५।  
 निरेयकाओ- निरेजकायः-निष्प्रकम्पदेहः। आव० ७८०।  
 निरेयणा- निरेजनाः कम्पक्रियानिमित्तविरहात्। प्रज्ञा० ६१०।  
 निरोदरं- निरुदरं-विकृतोदररहितम्। जीवा० २७५। निरु-  
 दरं-विकृतोदररहितं, अल्पत्वेनाभावविवक्षणात्। जम्बू० ११४।  
 निरोयए- रोगवर्जितः। ज्ञाता० ५।  
 निरोह- निरोधः-अभावः। उत्त० २८४। नियन्त्रणा। उत्त० ५८६। निरोधः। ओघ० १३८। आव० ३७८। निरोधः-  
 गृहणम्। उत्त० १३५। निरोधः-स्थापनम्। आव० ६३३।  
 निरोधनं निरोधः प्रलयकरणम्। आव० ५८३।  
 निर्- आधिक्ये। अनुयो० २६५।  
 निर्गमः- निहारः-प्रमाणम्। स्था० ४३५।  
 निर्गमभूमिः- स्थण्डिलभूमिः। आव० ५२४।  
 निर्घण्टः- नामकोशः। निर० २३।  
 निर्घाटितः- पङ्क्तेर्बहिष्कृतः। बृह० १६९अ।  
 निर्जरितवन्तः- प्रदेशपरिशाटनतः। स्था० १७९।  
 निर्देशः- आज्ञा। नन्दी० १६०। लिङ्गार्थमात्रप्रतिपादनम्।  
 अनुयो० १३५।  
 निर्देशदोषः- यत्र निर्दिष्टपदानामेकवाक्यता न क्रियते।  
 अनुयो० २६२।  
 निर्दोषं- सर्वदोषविप्रमुक्तम्। अनुयो० २६२।  
 निर्बन्धं- हठः। नन्दी० १५३। आचा० २४८।  
 निर्भजना- निश्चिता भजना निर्भजना-निश्चितो भागः।  
 आचा० ८६।  
 निर्महेलं- नाटकविशेषः। पिण्ड० १३८।  
 निर्माण- निमिण जातिलिंगाकृतिव्यवस्थानियामकम्।  
 तन्दु० ८१२।  
 निर्ममलाः- कठिनमलाभावात् धौतवस्त्रवत्। स्था० २३२।  
 निर्याणं- अवसानम्। उत्त० ४८३।  
 निर्यास- कर्पूरादिः गन्धद्रव्यविशेषः। जीवा० १३६।  
 निर्युक्त्यनुगमः- अनुगमे द्वितीयो भेदः। स्थान० ६।  
 निर्य्यानं- बहिर्निर्गमो। निशी० २७३अ।  
 निर्लेपं- आयामसौवीरादि। आव० ५७२। पृथुकादिगृहृतः।  
 स्था० ३८६।  
 निर्लोठनीय- निरुत्तरीकरणम्। नन्दी० १५२।

निर्वर्तनाधिकरणक्रिया- अधिकरणक्रियायाः प्रथमो  
 भेदः, खड्गादीनां तन्मुष्ट्यादीनां च निर्वर्तनलक्षणा।  
 प्रश्न० ३७।  
 निर्वर्तित- कृतं, अभ्यस्तम्। आव० ५९३।  
 निर्वर्तितवन्तः- अनुभूतवन्तः। स्था० ४४६।  
 निर्वलति- निवर्तते। नन्दी० १५८।  
 निर्विग(कृ)तिकादि- पृथ्व्यादिसङ्घटनादौ तपः। आव० ७६४।  
 निर्विशमानकं- आसेवकः, परिहारविशुद्धचारित्रे प्रथमः।  
 स्था० ३२४।  
 निर्विशमाना- ये परिहारविशुद्धितपोऽनुचरन्ति  
 परिहारिका इत्यर्थः। स्था० १६८।  
 निर्विष्टं- अलब्धं-अनुपातं स्यादित्यर्थः। दत्तार्थत्वात्।  
 स्था० ३१४।  
 निर्विष्टकायिकं- यस्तु  
 निर्विष्टकायिकानामासेवितविवक्षितचा-रित्रकायानां  
 तत्। स्था० ३२४।  
 निर्वृत्तिः- द्रव्येन्द्रियभेदः। प्रज्ञा० २४। भग० ८७।  
 निष्पत्तिः। स्था० २८५। प्रतिविशिष्टः संस्थान विशेषः।  
 जीवा० १६। नन्दी० ७५।  
 निर्वेदः- सम्यक्त्वस्य तृतीयं लक्षणम्। आव० ५९१।  
 निर्व्याघात- यत्सूत्रार्थनिष्ठितः उत्सर्गतो द्वादश समाः  
 कृतप-रिकर्मा सन् काल एव करोति। स्था० ९५।  
 पादपोपगमनस्य द्वितीयो भेदः।  
 सिंहाद्युपद्रवव्याघाताभावः। दशवै० २६।  
 निर्व्यूहना- अपाकरणम्। व्यव० १८५अ।  
 निर्वहरणं- निस्सारणम्। स्था० ९४।  
 निर्वारलाला- कृमिसूत्रम्। स्था० २१९।  
 निलओ- निलयः। आव० ६८०।  
 निलयः- आधायाः परावर्तितद्वारे श्रेष्ठी, वसन्तपुरे  
 श्रेष्ठी। पिण्ड० १००। उपाश्रयः। प्रश्न० १२८।  
 निलिच्छमाणा- निरीक्षमाणाः। व्यव० १३०अ।  
 निलीयन्ति- निलीयन्ते-विनश्यन्ति। भग० २४९।  
 निलेक्क- (देशी०) विरतः। आव० १८६। आचा० ४२४।  
 निलुक्किउं- निलातुम्। आव० ३१९।  
 निल्लंछणं- निर्लाञ्छनं वर्द्धितकरणम्। प्रश्न० ३८।  
 निल्लंछणकम्म- निर्लाञ्छनकर्म-पञ्चदशकर्मदाने

द्वादशम। आव० ८२९। निर्लाञ्छनकर्म-वर्धितकरणम्।  
उपा० ९।  
निल्लालिय- निर्लालिता निष्काशिता। उपा० २२।  
विवृतमु-खान्निःसारितम्। ज्ञाता० १३७।  
निल्लालियग- निर्लालिताया प्रसारिताया। ज्ञाता० १६।  
निल्लेव- निर्लेपः अत्यन्तसंश्लेषात्तन्मयतां गतः। भग०  
२७७। अत्यन्तसंश्लेषात्  
तन्मयतागतवालाग्रलेपापहारान्निर्लेपः। अनुयो० १८०।  
निर्लेपः-भूमिभित्त्यादिसंश्लिष्टसिकतालेपा-भावात्।  
भग० ६७६। निर्लेपः-निष्ठामुपगतः। जीवा० १४१।  
निल्लेवण- निर्लेपनः-रजकः। व्यव० १०४अ।  
निवज्जइ- निषद्यते-शेते। ज्ञाता० २०५।  
निवज्जणा- स्वमन्ति। ओघ० १०७।  
निवज्जाविओ- निमज्जितः। आव० २२७।  
निवज्झत्ति- निर्वाप्यन्ते नितरामभ्युयतमरणं  
प्रपद्यन्ते। व्यव० ४२४आ।  
निवट्ठगं- निर्वर्तितम्। आव० ७९२।  
निवडइ- निपतति। ज्ञाता० १६९। निपतति-शिथिलवृन्त-  
बन्धनत्वात् भ्रश्यति। उत्त० ३३३।  
निवण्ण- शयितः। बृह० १९८आ। निर्विण्णः-सन्निविष्टो  
दण्डायतादिना। आव० ५९४।  
निव्वणा- सुप्ता। निशी० २०४आ।  
निवणुस्सिओ- निवण्णोत्सृतः। आव० ७७२।  
नियतिते- उपरि पतितं सत् पीडयति तन्निपतितं-  
त्वग्विषम् दृष्टिविषं च। स्था० ३७५।  
निवन्ना- निष्पन्नः, त्वग्वर्तितः। बृह० १३आ।  
निषण्णः। आव० ६७५। शयानः। व्यव० ३११आ।  
निष्पन्नः-उपसम्पन्न आश्रितः। भग० १६४। निवण्णः।  
आव० ७७२।  
निवन्ननिवन्नगो- निवण्णनिवण्णः। आव० ७७२।  
निवन्ना- निर्वर्णा। स्था० २९९।  
निवयपउप्पयं- निपातोत्पातं-दिव्यनाट्यविधिः। जम्बू०  
४१२, ४१८।  
निवया- निवाताः। आचा० ३२९।  
निवर्तनं- गन्तव्यं भिक्षाया इत्यर्थः। ओघ० १७४।  
निवर्तन्ते- न गृह्णन्ति। ओघ० २०१।  
निवर्तितं- सर्वथा परिसमाप्य। स्था० ३८४।

निवर्त्य- असारान् पृथक्कृत्येति। स्था० ३८४।  
निवसणं- निवसनं परिधानम्। प्रज्ञा० ९६। ज्ञाता० २००।  
निवसनं- विशिष्टरचनारचितपरिधानलक्षणम्। अनुयो०  
१४३।  
निवसमानः- वसन्। आव० ६४४।  
निवइ- सङ्घातः। आव० ६२।  
निवाई- निपतितुं शीलमस्येति विगूह्यणिनिः निपतनं  
वा निपातः सोऽस्यास्तीति निपाती। आचा० २०९।  
निवाए- निपातः चन्द्रसूर्यः सह सम्पातः। सूर्य० १००।  
निवाओ- निपातः स्पर्शनम्। बृह० १३आ।  
निवाडेइ- निपातयति लगयति। जीवा० २५५।  
निवात- निपातः आवकाशः। व्यव० २७४आ। निपात-  
नमवकाशः। व्यव० २८५आ।  
निवाता- या तु शीतकाले पूर्वाहणे उपलेपनकरणेन रात्रौ  
व्यपगता त्रेहा जायते सा। बृह० २६३आ।  
निवय- तत्तदर्थद्योतनाय तेषु तेषु स्थानेषु निपतन्तीति  
निपातः। प्रश्न० ११७।  
निवायगंभीरा- निर्वातगम्भीरा-निवातविशाला। भग०  
३१३।  
निवायणं- निपातनं गतार्तादौ क्षेपणम्। प्रश्न० २२।  
निवाया- निर्वाता वायु प्रवेशरहिता। भग० ३१३।  
निवासो- भूताराणुप्पयाणं। दशवै० १४१।  
निविज्जंतो- निर्विद्यते। आव० २८९।  
निविड- निर्विष्टं-परिभूक्तम्। प्रश्न० ७१। निकाचितः।  
जम्बू० २७८।  
निविडसंचिअ- निविष्टसंचितः निकाचिततया संचितः।  
जम्बू० २७८।  
निविडाइ- स्थापितानि। भग० ५६९।  
निविण्ण- निर्विण्णाः उद्विग्नाः संसारभयात्। उत्त०  
३९७।  
निवित्ति- निवृत्तिः-अन्यदर्शनाभिहिता। आचा० १७७।  
निवुडदवित्ताए- निवृष्टो देवः। आचा० ३८९।  
निवुड्ढी- निवृद्धिः शरीरस्यैव हानिः। स्था० ३५९।  
निवुड्ढेत्ता- निवर्ध्य हापयित्वा। सम० ८६।  
निवुड्ढमाणो- निर्वेष्टयन् हापयन्। सूर्य० २६, ४३।  
निवृत्तिः- आकारः द्रव्येन्द्रियविशेषः। स्था० ३३४।  
निवृत्तिबादरः- दर्शनसप्तके उपशान्ते प्राप्तव्यं

गुणस्थानकम्। आव० ८२।

**निवेयणपिंड-** उवाइयं अणोवाइयं वा जं पुण्णभद्द  
माणिभद्द सव्वाण जक्खमहुंडिमादियाणनिवेदिज्जति  
सो निवेयणा-पिंडो। निशी० २३ अ।

**निवेश-** स्थापनः। नन्दी० १६१।

**निवेशन-** गुरोर्निवेशनं स्थानं यस्यासौ तन्निवेशनः।  
आचा० २१६।

**निवेशना-** स्थापना। उत्त० ६३२।

**निवेस-** निवेशः निवेशो नाम यत्र सार्थ आवासितः। बृह०  
१८१ आ। निवेशः-स्थापनं अभिवनग्रामादीनाम्। स्था०  
४४९। आयः। ओघ० १७९।

**निवेसन-** निवेशनानि गृहाणि। उत्त० ३८७। निवेशनं  
गृहम्। व्यव० ३३७ अ। उपाश्रयप्रतिबद्धपाटकम्। बृह०  
१४९ आ। निवेशनं-महागृहपरिवारभूतगृहसमुदायरूपम्।  
बृह० १४६ अ। त्रिप्रभृतीनां गृहाणामाभोगः। बृह० २३  
आ। वाटकः। बृह० १८१ आ। निवेशनम्। आव० ६३६।  
निवेशनं एकनिष्क्रमणप्रवेशानि द्वयादिगृहाणि। पिण्ड०  
१०३।

**निव्वए-** अणुव्रतरहितः। ज्ञाता० २३८।

**निव्वओ-** अवेदनः। मरण०।

**निव्वट्ठण-** निवर्तनानि मार्गनिर्घटनस्थानानि। ज्ञाता०  
८१।

**निव्वट्ठयित्ताणं-** निवर्तय जीवप्रदेशेभ्यः शरीरकं  
पृथक्कृत्येत्यर्थः। स्था० ९०।

**निव्वडिम-** निवर्तितं-बद्धास्थि। दशवै० २१९।

**निव्वण-** निरणः नखक्षतादिरहितः। ओघ० २११। निर्व्रणं-  
निरतिचारम्। प्रश्न० १५९। निर्व्रणं-व्रणरहितम्। ओघ०  
३०। व्रणकै रहितम्। ज्ञाता० ९१। निरणं  
विस्फोटकादिक्षतरहितम्। जीवा० २७३। निर्व्रणः-  
अक्षतः अखण्डः। प्रश्न० ११०।

**निवण्ण-** निर्विण्णः पापकर्मभ्यः पापकर्मसु वा  
कर्तव्येषु निवृत्तः। आचा० १६४।

**निव्वण्णंतो-** निर्वर्णयन्। आव० २१९।

**निव्वत्त-** निवृत्तः कृतः। ज्ञाता० ४१।

**निव्वतए-** निवृत्ते। आव० १२४।

**निव्वतण-** निवर्तनं-असिशक्तितोमरादीनां  
निष्पादनम्। भग० १८२। निवर्तनं-

असिशक्तिकुन्तितोमरादीनां मूलतो निष्पा-दनम्।  
प्रज्ञा० ४३६।

**निव्वत्तणया-** शरीरनिवृत्तिः। सम० १४६।

**निव्वत्तणा-** निवर्तना इन्द्रियाणाम्। आव० ३४१।

निवर्तना प्रथमतो घटना। बृह० २३४ अ।

निवर्तनाबाह्याभ्यन्तर-रूपा या निवृत्तिः-

आकारमात्रस्य निष्पादनम्। प्रज्ञा० ३०९।

**निव्वत्तणाधिगरणिया-** निवर्तनं-

असिशक्तिकुन्तितोमरादीनां मूलतो निष्पादनं  
तदेवाधिकरणिकी निवर्तनाधिकरणिकी, पञ्चविधस्य  
वा शरीरस्य निष्पादनं निवर्तनाधिकरणिकी। प्रज्ञा०  
४३६।

**निव्वत्ति-** निवृत्तिः बन्धनम्। भग० ५३३।

**निव्वत्तिज्जमाणे-** निवृत्त्यमानं नितरां वर्तुलीक्रियमाणं  
प्रत्यञ्चाकर्षणेन। भग० ९३।

**निव्वत्तिए-** निवृत्तितं वृत्तीकृतं-मण्डलाकारं कृतम्।  
भग० ९३।

**निव्वत्तिय-** निवर्तितं-रौद्रध्यानादिना कृतम्। आव०  
२५८।

**निव्वयंते-** उत्पततः। आव० २०३।

**निव्वाघाइम-** निर्व्याघातिमं व्याघातिमान्निर्गतं  
स्वाभाविक-मिति। जीवा० ३८४।

**निव्वाघाए-** निर्व्याघातः-कारणाभावः। जम्बू० १५०।

**निव्वाघाओ-** निर्व्याघातः-क्षणिकः। ओघ० २००।

**निव्वाघात-** निर्व्याघातं-न कश्चिद् घड्घशालायां  
धर्मकथादिर्वा कालव्याघातः वैदेशिकादिव्याघातो वा।  
ओघ० २०१।

**निव्वाघायं-** व्याघातस्याभावो निर्व्याघातम्। जीवा० ३९।  
अप्रतिहतम्। ज्ञाता० १५३।

**निव्वाण-** मोक्षस्तद्धेतुत्वात् निर्वाणम्। अहिंसायाः प्रथमं  
नाम। प्रश्न० ९९। सकलकर्मविरहजं सुखम्। ज्ञाता० ५१।  
सर्व-द्वन्द्वोपरतिस्वभावम्। सूत्र० ३८। निवृत्तिः-  
सकलकर्म-क्षयजमात्यन्तिकं सुखम्। आव० ७६१।  
निर्वाणं निवृत्तिः अशेषकर्मरोगापगमेन जीवस्य  
स्वरूपेऽवस्थानं मुक्तिपदमिति। आव० ६९।  
कर्मकृतविकाररहितत्वम्। स्था० १५७। अशेष  
कर्मक्षयस्तदवाप्तौ वा विशिष्टाकाशप्रदेशः। आचा०

१५१। निर्वाणं मोक्षः। आव० ५४३। निर्वाणं-निर्वृतिः  
सामान्येन सुखम्। मोक्षः। आव० ५८४। निर्वान्ति-  
कर्मानलविध्याप-नाच्छोती भवन्त्यस्मिन् जन्तव इति  
निर्वाणम्। उत्त० ५११। शान्तिं। महाप०।

**निष्वाणमग्न-** निर्वाणमार्गः-असाधारणरत्नत्रयरूपः।

जम्बू० १५१। सकलकर्मविरहजसुखोपायः। भग० ४७१।

**निष्वाय-** निर्वातः निर्व्याघातः। ज्ञाता० ४१।

**निष्वाव-** निर्वापयेत् अभावमापादयेत्। दशवै० २२८।

**निष्वावण-** निर्वापणं-विध्यापनम्। दशवै० १५४।

**निष्वाविय-** निर्वापितं शीतलीकृतम्। ज्ञाता० २६।

**निष्वाहणाय-** निर्वाहणाय-वस्त्राभ्यङ्गतैलादिना  
यापनार्थम्। उत्त० ५२४।

**निष्वाहि-** निर्वाहि-पृथक् फलिहकम्। बृह० ६० अ।

**निर्विन्द-** निर्विन्दस्व जुगुप्स्व। आचा० १४३।

**निर्विन्दए-** निर्विन्दते सम्यग् विचारयति। दशवै० १५९।

**निर्विन्देज्ज-** निर्विन्देत-जुगुप्सयेत्, परिहरेत्। सूत्र० ७४।

**निर्विगइ-** निर्विकृतिकः निर्गतविकृतिपरिभोगः। दशवै०  
२८१।

**निर्विगप्पो-** निर्विकल्पः निःसंदिग्धः। दशवै० १२६।

**निर्विगार-** निर्विकारं विभूषाभूषोपादिविकाररहितम्।

अनुयो० १४०।

**निर्विज्जे-** सम्यक्शास्त्रावगमरूपायाः निर्विद्यः। उत्त०  
३४४।

**निर्विड्ड-** निर्विष्टं-लब्धम्। जम्बू० २१०।

**निर्विड्डकाइय-** निर्विष्टकायिकं

परिहारविशुद्धिचारित्रभेदवि-शेषः। प्रज्ञा० ६४।

निर्विष्टकायिकाः, आसेवितविवक्षितचारित्रकायाः।

प्रज्ञा० ६४। निर्विष्टकायिका नाम यैः परिहारवि-शुद्धिकं  
तपो व्यूढं, निर्विष्टः-आसेवितो विवक्षितचारित्रलक्षणः

कायो यैस्ते निर्विष्टकायिकाः। बृह० २५१ अ।

**निर्विड्डंतो-** निर्विष्टयन्। आव० ३३९।

**निर्विण्णचारी-** चारः-अनुष्ठानं निर्विण्णस्य चारो

निर्विण्ण-चारी। आचा० २१२।

**निर्वितिगिच्छ-** निर्विचिकित्सं, विचिकित्सा फलं प्रति  
सन्देहो, यथा-यतः क्लेशस्य फलं स्यादुत नेति तदभावो  
निर्विजुगुप्सं-जुगुप्सा वा यथा-किममी यतयो  
मलदिग्ध-देहाः? प्रासुकजलस्थाने हि क इव दोषः

स्यादित्यादिका निंदा तदभावो। उत्त० ५६७।

निर्विजुगुप्सः-साधुजुगुप्सा-रहितः। दशवै० १०२।

निर्विचिकित्सः साध्वेव जिनदर्शनं किन्तु प्रवृत्तस्यापि  
सतो ममास्मात् फलं भविष्यति न भवतीति

विकल्परहितः, सञ्जातनिश्चयः। दशवै० १०२। फलं

प्रतिनिःशङ्कः। ज्ञात० १०९। निर्गता विचिकित्सा-

मतिविभ्रमो यस्य सः निर्विचिकित्सः। दशवै० १०२।

विचिकित्सा-मतिविभ्रमः-फलं प्रति संशय इति यावत्,

निर्गता विचिकित्सा यस्मादसौ निर्विचिकित्सः। प्रज्ञा०  
५६।

**निर्वित्ती-** निर्वृत्तिः सकलावरणक्षयादुत्पत्तिः,

प्रत्ययः। उत्त० ४१।

**निर्विदुगुच्छा-** निर्विद्वज्जुगुप्सः साधुजुगुप्सारहितः।

प्रज्ञा० ६१।

**निर्वियत-** निर्विकृतिकः-निर्गतो घृतादिविकृतिभ्यो यः  
स। स्था० २९८।

**निर्विसओ-** निर्विषयः। आव० २२१।

**निर्विसति-** निर्विशति उपभुङ्कते। व्यव० २९४ आ।

**निर्विसमाण-** निर्विशमानका विवक्षितचारित्रसेवकाः।

प्रज्ञा० ६४। निर्विशमानकं,

परिहारविशुद्धिचारित्रभेदविशेषः। प्रज्ञा० ६४।

निर्विशमानकं, परिहारविशुद्धिकल्पं वहमानाः। बृह०

२५१ अ। परिहारविशुद्धिकल्पं वहमाना निर्विशमानका

यैरसौ व्यूढस्ते। स्था० ३७४।

**निर्विसमाणग-** निर्विशमानकः-परिहारकल्पस्थितः।

व्यव० १३८ आ।

**निर्विसय-** निर्विषयः। आव० १९२। निर्विषयः-देशान्नि-

ष्कासितः। प्रश्न० ६०। निर्विषयः-शब्दादिविषयरहितः,

यद्वा विषयो-देशस्तद्विरहितः। उत्त० ४११।

निर्विशकः-उप-भोक्ता। पिण्ड० ४७।

**निर्विसया-** निर्विषयता-देशाद्बहिः। आव० ४०१।

**निर्वुड-** निर्वृतिः मनःस्वास्थ्यम्। प्रश्न० ४२।

**निर्वुडकर-** निर्वृतिकरः स्वास्थ्यनिबन्धनाकरणशीलः

प्रश-स्तभावकरविशेषः। आव० ४९९।

**निर्वुडकरा-** अष्टादशजिनस्य शिबिकानाम्। सम० १५१।

**निर्वुड-** निर्वृतिः-स्वास्थ्यम्, अहिंसाया द्वातीयं नाम।

प्रश्न० ९१। निर्वृतिः-स्वास्थ्यम्। प्रश्न० ६४। निर्वृतिः-

प्रति-विशिष्टः संस्थानविशेषः। प्रजा० २९३। निर्वृत्तिः-  
तिति-क्षोदाहरणे मथुराधिपतिजितशत्रुकन्या। आव०  
७०२। निर्वृत्तिः-जितशत्रुराजकन्या। उत्त० १४८।

निव्वुड- जीवविप्पजडं। दशवै० ५१। निर्वृतं-अत्रिदण्डो-  
द्वृत्तम्। दशवै० ११७। निर्वृतः-कषायोपशमाच्छोती  
भूतः। सूत्र० २०७। निर्वृतं निष्ठागतम्। निरावरणम्।  
भग० २१७।

निव्वुडा- तीर्थकरोपदेशवासितान्तःकरणा  
विषयकषायाग्न्यु-पशमान्निर्वृताः। शीतीभूताः। आचा०  
१९२।

निव्वुडडओ- निब्रुडितः। आव० ६४१।

निव्वुड्डी- निवृद्धिः-दिनस्य हानिः। भग० १४७। निवृद्धिः-  
यथोक्तस्वरूपवृद्ध्यभावः। सूर्य० २४३। निवृद्धिः-वृद्धेर-  
भावः, हानिप्रतिभासः। जीवा० ३४५। निवृद्धिः-शरीरस्य  
हानिर्वातपित्तादिभिः, निशब्दस्याभावार्थत्वात्। स्था०  
६६।

निव्वुता- सत्थिंदिया सुही निव्वुता। निशी० २१२आ।

निव्वुती- निवृत्तिः-चित्तस्वास्थ्यम्। प्रश्न० १३३।

निव्वुयहियए- निर्वृत्तं-स्वस्थीभूतं हृदयं-  
अन्तःकरणमस्येति निर्वृत्तहृदयः। उत्त० ५८१।

निव्वेअ- निर्वेदः-उद्वेगः। अनुयो० १३८।

निव्वेए- निर्वेदः-संसारविरक्तता। भग० ७२७।

निव्वेगणी- निर्विद्यते-संसारादेर्निर्विण्णः क्रियते  
अनयेति निर्वेदनी। स्था० २१०।

निव्वेय- निर्वेदः-संसारोद्विग्नता। उत्त० ४४१। निर्वेदः-  
निःकुमानुषत्वमित्यादेर्विरक्तता। बृह० ३८अ। नरक-  
स्तिर्यग्योनिः कुमानुषत्वं च एतत्प्ररूपणं  
निर्वेदहेतुत्वान्निर्वेदः। दशवै० ११३।

निव्वेयणी- निर्वेद्यते संसारनिर्विण्णो विधीयते श्रोता  
यकथा सा निर्वेदनी। औप० ४६।

निव्वोदय- नीव्रोदकम्। आव० ४२६।

निश्चयकथा- सा चापवादकथा, पर्यायास्तिकनयकथा  
वा। सम० २४।

निश्चलमना- श्रमणः तपस्युद्युक्तः समना वाऽऽसीत्  
निश्च-लमना इत्यर्थः। आचा० ३०७।

निश्चितं- निकाचितं प्रमाणम्। स्था० ४३५।

निश्चितिः- गाथा, प्रतिष्ठा च। आव० ८०४।

निश्चिजिह्व- महाकुष्ठविशेषः। आचा० २३५।

निषद्यागतः- आसनस्थः। आव० ५४१।

निषधः-वर्षधरपर्वत-विशेषः। प्रश्न० ९६। स्था० ३२६।  
निषधः। प्रश्न० ७३।

निषीधिका- आसनम्। उत्त० ७२।

निषेकः- चित्तस्याबाधाकलं मुक्त्वा ज्ञानावरणीयादितया  
निषेकः। स्था० १०१। कर्मपुद्गलानां  
प्रतिसमयानुभवन-रचनेति। स्था० ३७६।

निष्काङ्क्ष- वस्त्राद्यभिलाषरहितः। उत्त० ५८८।

निष्काल्यते- प्रमुच्यते। प्रश्न० ६०।

निष्कुटनं- उपयोगनिरीक्षणम्। ओघ० १६७।

निष्ठा- पारम्। आव० २६९।

निष्ठितार्थः- अणिमाद्यैश्वर्याप्त्या

तथाविधमनुष्यकृत्यापेक्षया सिद्धार्थः। जीवा० ४७।

निष्ठीवनं- खेलः। भग० ८७। निष्ठयुतम्। आव० २५।

निष्ठुरं- कठोरम्। आव० ८३४।

निष्ठयुतं- निष्ठीवनम्। आव० २५। नन्दी० १६७।

निष्पक्वः- क्वथितः। जम्बू० १०५।

निष्पङ्का- निष्कलङ्कविकलत्वात्-

कर्द्धमविशेषरहितत्वात् वा। सम० १४०।

निष्पन्नः- परिनिष्ठितः। आव० ४०८। आचा० २९२।  
आव० ६५७।

निसंत- निशान्तः श्रुतोऽवगतः। आचा० ३६६। निशान्तः  
निःसंचारवेला। बृह० द० २१२अ। निशान्तः-गृहम्। बृह०  
१५आ। निशान्तः-परिचितः। आचा० २६६। निशान्तः-  
रात्र्यवसानं, दिवसः। दशवै० २४६। गृहम्। ज्ञाता० १४९।  
निशमितः, श्रुतः। भग० ४६७।

निसंस- नृशंसं शूकावर्जितम्। प्रश्न० ११०। नृन्-नरान्  
शंसति-हिनस्तीति नृशंसः, निःशंसो- विगतश्लाघः।  
ज्ञाता० ८०।

निसंतपडिसंते- निशान्तप्रतिनिशान्त-

अत्यन्तभ्रमणादुपरतः। बृह० १५आ।

निसंसतिए- निःसंशयिकः-शौर्यातिशयादेव

तत्साधयिष्या-म्येत्येवं प्रवृत्तिकः। ज्ञाता० ८०।

निसर्ग- निसर्गः-स्वभावः। निशी० ९अ। निसर्गः

उत्सर्गः। व्यव० १०अ। निसर्गः स्वभावः। आव० ५२८,  
६०४, ८३८। प्रजा० ५८।

**निसगगरुड-** स्वभावत एव तत्त्वश्रद्धानम्। भग० ९२६।

**निसगगरुड-** निसर्गः स्वभावः तेन रुचिः जिनप्रणीत  
तत्त्वाभि-लाषरूपा यस्य स निसर्गरुचिः। प्रजा० ५६।  
निसर्गः- स्वभावस्तेन रुचिः-तत्त्वाभिलाषरूपाऽस्येति,  
निसर्गतो वा रुचिरिति निसर्गरुचिः, यो हि  
जातिस्मरणप्रतिभादिरूपया स्वमत्याऽवगतान् सद्भुतान्  
जीवादीन् पदार्थान् श्रद्धधाति स निसर्गरुचिः। स्था०  
५०३।

**निसज्जा-** निषद्या-पुताभ्यां भूम्यामुपवेशनम्। औप०  
४०।

**निसज्जा-** रजोहरणनिषद्या। ओघ० १३२।

**निसङ्ग-** निसृष्टः निसृष्टाङ्गा मुक्ताङ्गा। सम० ११७।  
अत्यन्तम्। आव० २०६। निसृष्टं-निश्चेष्टम्। दशवै०  
३६। निसृष्टं-अत्य-र्थम्। प्रश्न० ५९। निसृष्टं-प्रचुरम्।  
ओघ० ४८।

**निसढ-** निषधः-द्रहनाम्। जम्बू० ३०८। निषढः बलदेव  
पुत्रः। आव० ९४। पञ्चमवर्गे प्रथममध्ययनम्। निर०  
३९।

**निसढा-** निष्पन्ना। मरण० ।

**निसण्ण-** निषण्णः। आव० ७७४। निषण्णः-उपविष्टो  
वीरा-सनादिना। आव० ५९४।

**निसनुस्सिओ-** निषण्णोत्सृतः। आव० ७७२।

**निसन्न-** निषण्णः। स्था० २९९। निषण्णः। आव० ७७२।

**निसम्म-** निशम्य-मनसा अवधार्य। भग० ८९। निशम्य  
मन-साऽवधार्य। स्था० ११९। निशम्य-निश्चित्य।  
आचा० ३३१। निशम्य-ज्ञात्वा। आचा० ३५०।

**निसम्मभासी-** निशम्यभाषी। आचा० ३९२।

**निसरङ्ग-** निसृजति निष्काशयति। जीवा० २४४।

**निसह-** निषधः निषधवर्षधरपर्वते द्वितीयं कूटम्। स्था०  
७२। हृदयविशेषः। स्था० ३२६। निषधः-  
वर्षधरपर्वतविशेषः। स्था० ६८। निषधः-बलीवर्द्धः। सूर्य०  
७१।

**निसहदहे-** हृदयविशेषः। स्था० ३२६।

**निसाकप्पे-** कायिकामात्रके मोकं गृहीत्वा तेनाचमनं  
कर्तव्यम्, अभिगतस्य गीतार्थस्याचीर्णमेतत्, एष च  
निशाकल्प उच्यते। बृह० २०३अ।

**निसापाहाणे-** मुद्गादिदलनशिला। उपा० २१।

**निसामिति-** अवधारयन्ति। आचा० ४२४।

**निसामेह-** निशामयत शृणुत। आव० २२९।

**निसाय-** निषादः-पारासरः, शूद्राब्राह्मणाभ्यां जातः।  
आचा० ८।

**निसाविहंगा-** उलूकाः। बृह० १९७आ।

**निसालोढे-** शिलापुत्रकः। उपा० २१।

**निसिज्ज-** स्वाध्यायादिभूमिः। दशवै० २८१।

**निसिज्जहरो-** निषद्याधरः। आव० ७४५।

**निसिज्जा-** स्त्रिया सहासनम्। सम० ३६। निषद्या-  
स्वाध्या-यभूम्यादिका यत्र निष्पद्यते। उत्त० ४३४।  
निषद्या-रजोह-रणवेष्टनकं सौत्रिकमौर्णिकं वा। बृह०  
२५३अ। निषद्या। आव० ३२३।

**निसिज्जाओ-** निषदनानि निषद्याः-

उपवेशनप्रकारास्तत्रास-नालग्नप्लुतः  
पादाभ्यामवस्थितः। स्था० ३०२।

**निसिङ्ग-** निसृष्टः-अनुज्ञातः आक्रान्तिकस्तेनो वा। बृह०  
१६७अ। निसृष्टः अनुज्ञातः। व्यव० २३४अ।

**निसिङ्गाङ्ग-** जीवेन निःसृष्टानि स्वप्रदेशेभ्यस्त्याजितानि।  
भग० ५६९।

**निसिद्धप्पा-** निषिद्धो मूलगुणोत्तरगुणातिचारेभ्य आत्मा  
येनेति निषिद्धात्मा। आव० २६७।

**निसियरा-** निशाचराः-पिशाचादयः। ओघ० १२५।

**निसिया-** निशिताः तीक्ष्णाः। उत्त० ३४९।

**निसिर-** निसृजेद् ब्रूयात्। दशवै० २३६।

**निसिरणे-** निसर्गः भाषाद्रव्याणां वागयोगेनोत्सर्गक्रिया।  
दशवै० २०८।

**निसिरे-** व्युत्सृजति। आव० ६१८।

**निसिरेज्जा-** व्युत्सृजेत्। ओघ० १९७।

**निसियंत-** निषीदनं उपवेशनम्। दशवै० १५५।

**निसीयण-** निषीदनं-उपवेशनम्। ओघ० २१४। निषीदनम्।  
आव० ६५४।

**निसीलो-** निःशीलः गृहस्थः। सूत्र० ९।

**निसीह-** निशीथवन्निशीथम्। नन्दी० २०६। निशीथं-यद्  
रहसि पठ्यते व्याख्यायते वा। उत्त० २०४। प्रच्छन्नं-  
निषीथं बद्धश्रुतं, गुप्तार्थं वा, रहस्य पाठात्  
रहस्योपदेशाच्च निषीथम्। आव० ४६४।

**निसीहज्झयणं-** आचाराङ्गे पञ्चविंशतितममध्ययनम्।

सम० ४४।

**निसीहसभिहडे-** निशीथाभ्याहतं-अविदितदायकभावं यत्।  
पिण्ड० १०३।

**निसीहिता-** निषेधेन निर्वृत्ता नैषधिकी-  
व्यापारान्तरनिषेध-रूपा। स्था० ४९९।

**निसीहिय-** नैषेधिकं-कायोत्सर्गं स्वाध्यायभूमिर्वा। सम०  
३९। स्वाध्ययस्थानम्। स्था० ३१४। निषेध्यन्ते-  
निराक्रियन्ते अस्यां कर्माणीत नैषेधिकी-निर्वाणभूमिः।  
उत्त० ३२१। सकलकर्मनिराकरणलक्षणे भवा,  
मुक्तिगतिः, प्रतिमा। उत्त० ३२१। निषीधिका-  
स्वाध्यायभूमिः। आचा० ३६१।

**निसीहिया-** निषेधः-स्वाध्यायव्यतिरेकेण  
सकलव्यापारप्र-तिषेधः तेन निवृत्ता नैषेधिकी। व्यव०  
१२७ अ। निषेधेन-  
स्वाध्यायव्यतिरिक्तशेषव्यापारप्रतिषेधेन निवृत्ता  
नैषेधिकी। व्यव० १२७ आ। जत्थ सज्झायं करेति,  
सेज्जाए वा निसीहिएति। दशवै० ८५। नैषेधिकी-  
वसतिप्रवेशे निषि-द्धोऽहं गमनक्रियाया इति भणनम्।  
बृह० २२२ अ। नैषेधिकी। आव० ६७२।  
निषीदन्त्यस्यामिति निषद्या स्थानम्। आव० ६५७।  
बावीसपरीषहे दशमपरीषहः। आव० ६५७। नैषेधिकी-  
प्राणातिपातादिनिवृत्ता। आव० ५४७। नैषेधिकी-  
निषीदनस्थानं, द्वारकुड्यसमीपे नितम्बः। जीवा०  
३६०। स्वाध्यायभूमिः। ज्ञाता० २०६। निषेधे भवा  
नैषेधिकी-उपाश्रयाद्वहिः कर्तव्यव्यापारेष्ववसितेषु  
पुनस्त-त्रैव प्रविशतः साधोः  
शेषसाधूनामुत्त्रासादिदोषपरिजिहीर्षया  
बहिर्योपारनिषेधेनोपाश्रयप्रवेशसूचनादिति। अनुयो०  
१०३। स्वाध्यायभूमिः शून्यागारादिरूपा। भग० ३९०।  
ग्रामादिषु प्रतिपन्नमासकल्पादेः स्वाध्यायादिनिमित्तं  
शय्यातो विविक्त-तरोपाश्रये गत्वा निषीदनम्। भग०  
३९१। निषेधेन निर्वृत्ता नैषेधिकी दशधा सामाचार्या  
पञ्चमी। आव० २५९। निषी-धिका। ओघ० १७४।  
नैषेधिकी स्वाध्याय-भूमिः। दशवै० १८२। नैषेधिकी  
निषेधनं निषेधः पापकर्मणां गमनादिक्रिया-याश्च स  
प्रयोजनमस्याः नैषेधिकीस्मशानादिका स्वाध्या-  
यादिभूमिः निषद्या वा। उत्त० ८३। दशधासामाचार्या

पञ्चमी। भग० ९२०।

**निसीहियाए-** नैषेधिकी-निषीदनस्थानम्। राज० ६४।  
निशीथिका-द्वितीयमध्ययनम्। आचा० ४०७।

**निसीहियापरीसहे-** सोपद्रवेतरा च स्वाध्यायभूमिः,  
द्वाविंश-तिपरीषहे दशमः। सम० ४०।

**निसीहियारए-** निषीधिकारताः स्वाध्यायध्यायिनः।  
आचा० ३६९।

**निसुभंति-** भूमौ पातयन्ति। आव० ६५०। कृकाटिकायां  
गृहीत्वा भूमौ पातयन्ति। सूत्र० १२५।

**निसुभ-** निशुम्भः-पुरुषसिंहासुदेवशत्रुः। आव० १५९।

**निसुभा-** वैरोचनेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। भग० ५०३।  
ज्ञाता० २५१।

**निसेए-** निषेकः-स्वस्याबाधाकालस्योपरि  
ज्ञानावरणीयादि कर्मपुद्गलानां वेदनार्थमुपचयः। प्रज्ञा०  
२९२।

**निसेक-** निषेकः-कर्मपुद्गलानां प्रतिसमयमनुभवनार्थं  
रचना। भग० २८०।

**निसेज्जा-** रयहरणस्योपरितनाः। ओघ० १११। जंमि  
निसण्णो अच्छइ। दशवै० ५१।

**निसेह-** निषेधः। आव० २६६।

**निस्तृशः-** नृशंसः। उत्त० ६५६।

**निस्संकिय-** निःशंकितः देशसर्वशङ्कारहितः। दशवै०  
१०१। निर्गतं शङ्कित यस्मादसौ निःशङ्कितः  
देशसर्वशङ्कारहितः। प्रज्ञा० ५६।

**निस्संगो-** निःसङ्गः-विषयजस्नेहसङ्गरहितः। आव०  
५९२।

**निस्संचरो-** निस्सञ्चारः मनुष्यसञ्चारवर्जितः। आव०  
६४१।

**निस्संतिया-** तं अद्वहियणयं दत्वं अण्णत्थ निस्संदिरुण  
तेण ताय णेऊ देह। दशवै० ८०।

**निस्संधिणा-** निस्संधिः। मरण० ।

**निस्संधी-** निःसन्धिः निर्विवरः। प्रश्न० १६।

**निस्संस-** नृशंसं शूकावर्जितम्। प्रश्न० २७। निःशंसं वा  
श्लाघारहितम्।

**निस्स-** दरिद्रो। निशी० १४१ अ।

**निस्सकयं-** निश्राकृतं गच्छप्रतिबद्धम्। बृह० २७६ आ।

**निस्सगगरुई-** निसर्गः स्वभावस्तेन रुचिः

तत्त्वाभिलाषरूपा-ऽस्येति निसर्गरुचिः। उत्त० ५६३।  
**निस्सन्नगनिसन्नओ-** निषण्णनिषण्णः। आव० ७७२।  
**निस्सयरा-** स्वं-कर्मानादिसम्बन्धात्तदपनयनसमर्थानि  
 निःस्वकराणि। आचा० ४३०।  
**निस्सल्लो-** निःशल्यः शल्यरहितः। आव० ७९३।  
**निस्सहः-** स्थैर्यः। नन्दी० १६१।  
**निस्सा-** निश्चा रागः। व्यव० ७ अ। पक्षपातः। व्यव०  
 २५४। निश्चा आलम्बनम्। आव० ५३६। निश्चा-आलम्बनं,  
 उग्रहेतुः। स्था० ३३९।  
**निस्साए-** निश्चाय-निश्चां कृत्वा। भग० ३०९, ६६३।  
**निस्साणपदं-** निश्चायते-मंदश्रद्धाकैरासेव्यत इति निश्चाणं  
 तच्च पदं च निश्चाणपदं-अपवादपदम्। बृह० १२८ अ।  
**निस्साधारण-** एकाचार्यप्रतिबद्धं षेत्रम्। बृह० २८० अ।  
**निस्सारा-** निःसारा-प्रधानगर्भरहिता। ओघ० २१८।  
**निस्सावयण-** निश्चाया वचनं निश्चावचनम्, कमपि  
 सुशिष्यमा-लम्ब्य यदन्यप्रबोधार्थं वचनं तन्निश्चावचनं,  
 तद्यत्र विधेयत-योच्यते तदाहरणं निश्चावचनम्। स्था०  
 २४३। एकं कञ्च-ननिश्चाभूतं कृत्वा या विचित्रोक्तिरसौ  
 निश्चावचनम्। दशवै० ४६।  
**निस्सास-** निश्वासः-निर्गमः। भग० ४७०। निःश्वासः-  
 मुखादिना वायुनिर्गमः। भग० ४७०। निःश्वासः-सङ्ख्ये-  
 याऽऽवलिका। जीवा० २४४।  
**निस्सासविसो-** निःश्वासविषः-उरःपरिसर्पविशेषः। जीवा०  
 ३९।  
**निस्सिचमाणे-** निःसिञ्चिन्-दत्तोद्वरितं प्रक्षिपन्।  
 आचा० ३४।  
**निस्सिचिया-** निषिच्य तद्भाजनाद्रहितं द्रव्यमन्यत्र  
 भाजने तेन दद्यात्, उद्वर्तनभयेन आद्ररहितमुदकेन  
 निषिच्य। दशवै० १७५।  
**निस्सिए-** निश्चितं-सारङ्गादिधर्मविशिष्टमवगृह्णाति।  
 स्था० ३६४।  
**निस्सित-** निश्चितं-रागः आहारादिलिप्सा। स्था० ४४१।  
**निस्सिय-** निःसृतः-निर्गतः। अनुयो० १२९।  
**निस्सील-** निःशीलः-सामान्येन  
 शुभस्वभाववर्जितपौरुष्यादि। स्था० १३२।  
 अपगतशुभस्वभावः। ज्ञाता० २३८।  
**निस्सीला-** निःशीलाः महाव्रताणुव्रतविकलाः। भग०

३०९। समाधानरहिताः। भग० ५८२।  
 निःशीलानिर्गतशुभस्वभावाः, दुःशीला इत्यर्थः। स्था०  
 १२६।  
**निस्सेअस-** मोक्षः। नन्दी० १६५।  
**निस्सेणि-** निश्चेणिः। आचा० ३४४। निःश्रेणिः-अवतरणी।  
 प्रश्न० ८।  
**निस्सेयस-** निःश्रेयसः-मोक्षः। भग० ११५। उत्त० २९१।  
 निःश्रेयसः-मोक्षः। भग० १६९। निःश्रेयसः-  
 निश्चितकल्याणम्। जा० २४२।  
**निस्सेस-** निःशेषः-सर्वः। भग० १६९।  
**निह-** स पुनः कषायैः कर्मभिः परीषहोपसर्गैर्वा निहन्यत  
 इति निहः। आचा० १२५। न्यगधस्तात्। सूत्र० १२८।  
 निहन्यन्ते प्राणिनः कर्मवशाया यस्मिन् तन्निहं-  
 आघातस्था-नम्। सूत्र० १३८।  
**निहए-** निहतः-कृतसमृद्ध्यपहारः। औप० १२।  
**निहडु-** निहत्य-स्थापयित्वा। ज्ञाता० २१०।  
**निहणंति-** निघ्नन्ति। आव० १२३।  
**निहणिसु-** निहतवन्तः-क्षिप्तवन्तः। आचा० ३१२।  
**निहत्त-** निधत्तं-  
 उद्वर्तनापवर्तनकरणवर्जशेषकरणायोग्यत्वेन  
 व्यवस्थापितम्। भग० ९०। निधत्तं-निषिक्तम्। स्था०  
 ३७६। प्रज्ञा० २१७। भग० २८०। निधत्तं-अपीह निषेक  
 उच्यते। सम० १४७।  
**निहय-** निक्षिप्तम्। आव० ७४३। निहतं निधत्तं निश्चितं  
 प्रमा-णम्। स्था० ४३५। निकाचितं भूय उत्थानाभावेन  
 मन्दीकृतम्। जम्बू० ३८९। निहतं-  
 क्षणमात्रमुत्थानाभावः। जीवा० २४५। निहता मारणात्।  
 स्था० ४६३।  
**निहरणकारिणः-** स्कन्ददायिनः। बृह० १७१ अ।  
**निहस-** निकषः-  
 हेमरजतकल्पजीवादिपदार्थस्वरूपपरिज्ञा-नहेतुत्वात्  
 कषपट्टकः। अनुयो० १०५। निकषः-वर्णतः सदृशः। रेखा।  
 भग० १२। प्रश्न० ७०। निकषः-कषपट्टके रेखालक्षणः।  
 भग० १२। निघर्षः-कषपट्टकेरेखा। प्रश्न० ९५।  
**निहाण-** निधानं-परिग्रहस्य पञ्चमं नाम। प्रश्न० ९२।  
 निधानं-भूमिगतसहस्रादिसङ्ख्यद्रव्यस्य सञ्चयः।  
 भग० २००।

निहाय- निधाय-त्यक्त्वा। आचा० ३११। क्षिप्त्वा-त्यक्त्वा  
आचा० २७४। निधाय-परित्यज्य। सूत्र० ४००।  
निहार- निर्गतः-प्रमाणम्। स्था० ४३५।  
निहारिम- दूरदेशगामिनी। जम्बू० ३०। अन्यत्र नयनं तेन  
निहारिमः। बृह० ३० आ।  
निहिय- निहितं न्यस्तम्। उत्त० ३४८। निहितं-  
स्थापितम्। आव० ६४७।  
निहिसरिनाम- निधिभिः सदृक्-सदृक्षं नाम येषाम्। स्था०  
४५०।  
निही- निधि-लक्षादिप्रमाणद्रव्यस्थापनम्। भग० २००।  
निहु- वनस्पतिजीवविशेषः। आचा० ५७।  
निहुअ- निभृतं  
अन्तःकरणाशुभव्यापारचिन्तनपरित्यागात्। आव०  
१५४। निभृतः-स्थिरः। उत्त० ४७७, ४९५।  
निहुआ- निभृताः-निर्व्यापाराः। बृह० ५७ आ।  
निहुय- निभृतं-स्तिमितम्। प्रश्न० १३६।  
निहुया- स्निहुः स्निहूपुष्पं थोहरपुष्पं अनन्तकायिकम्।  
प्रज्ञा० ३७। निभृता-निर्व्यापारा। बृह० ६१ आ।  
निहुवण्डिया- निधुवनस्थिता। आव० ४२१।  
निहूय- (देशी) अकिञ्चनकरार्थे। आव० ३२५।  
निहे- गोपयेत्। आचा० १८०।  
निहेल्लयं- निहितं न्यस्तं च। उत्त० १३०।  
निहोडणं- निहेठितम्। व्यव० २२३ आ।  
निहोडणा- निवारणम्। व्यव० २५३ आ।  
निहोडिहिति- शिक्षयिष्यन्ति। बृह० ११९ आ।  
निहोडेइ- निहेठयति-वारयति। बृह० ६१ आ।  
नीअ- नीचं सम्यगवनतोत्तमाङ्गः। लघुतरम्। दशवै०  
२५०। नीचं-नम्रकायः। दशवै० २५०।  
नीआं- नीचां गतिम्। दशवै० २५०।  
नीइ- नीतिः-हक्कारादिलक्षणा सामादयुपायलक्षण वा।  
आव० १२९। नीतिः-नयनं परिच्छेद इत्यर्थः। दशवै० १६।  
नीइकोवि- नीतिकोविदः-न्यायाभिज्ञः। उत्त० ४८३।  
नीई- नीतिः-अपक्रमादिलक्षणा। उत्त० १४४।  
नीगालो- क्षरणम्। निशी० वि० ३१ आ।  
नीणिंत- निष्काशयन्ति। आव० २१७।  
नीणियं- आनीतम्। आव० २७२, ७०१। चतुरिन्द्रिजन्तुवि-  
शेषः। जीवा० ३२।

नीणिया-चतुरिन्द्रियजीवविशेषः। जीवा० ३२।  
निणेइ- निष्काशयति। औप० ६४।  
नीतिः- बलं प्रमाणं च। आव० ४६३।  
नीतिपथ- नीतिमार्गः। नन्दी० १६४।  
नीतिशास्त्र- धर्माधिकरणिकम्। व्यव० २०१ आ।  
नीती- नीतिः सामादिका। प्रश्न० ७९।  
नीमं- नीलफलम्। दशवै० १८५।  
नीय- नीचं अनुद्धतम्। उत्त० ३४६। नीचं-अनत्यर्थम्।  
भग० १६४। अपूज्यम्। भग० १६४।  
नीयजुद्धं-नीचयुद्धम्। आव० ९८।  
नीयपिंड- नियतपिण्डः-मयैवद्वातव्यं भवता तु नित्यमेव  
ग्राह्यमित्येवं नियततया यो गृह्यते स। स्था० ५१५।  
नीयल्लगा- निजका-आत्मायाः स्वजनाः। बृह० २४३ आ।  
नीयागोए- यदुदयवशात् पुनर्जानादिसम्पन्नोऽपि निन्दां  
लभते हीनजात्यादिसम्भवं च तत् नीचैर्गोत्रम्। प्रज्ञा०  
४७५।  
नीयावासविहारो- नित्यवासेन विहारः नित्यावासकल्पः।  
आव० ५३५।  
नीयावित्ती- नीचं-अनुद्धतं यथा भवत्येवं नीचेषु वा  
शय्यादिषु वर्तते इत्येवं शीलो नीचवर्त्ती, गुरुषु  
न्यग्वृत्तिमान्। उत्त० ३४६। नीचैर्वृत्तिः  
कायमनोवाग्भिरनुत्सिकः। उत्त० ६५६।  
नीरए- नीरजं निर्गतं रजः कल्पसूक्ष्मतरवालागः। भग०  
२७७। निर्गतं रजः-कल्पसूक्ष्मवालागोऽपकृष्टधान्यरजः  
कोष्ठागारवत्। अनुयो० १८०। स च  
तद्भूमिगतं रजसामप्यभावे नीरजाः। भग० ६७६।  
निरजाः-बध्यमानकर्माभावात्। प्रज्ञा० ६१०।  
नीरओ- नीरजाः-सकलकर्मरजोविनिर्मुक्तः। दशवै० १५९।  
नीरय- नीरुजा-निर्मलः। व्यव० २१० आ। नीरजः स्वा-  
भाविकरजोरहितत्वात्। प्रज्ञा० ८७। नीरजाः-बध्यमान  
कर्मरहितः नीरयो निर्गतौत्सुक्यः। औप० ११४।  
नोरजांसि आगन्तुकरजोविरहात्। सम० १४०।  
नीरजस्कः-अष्टविध-कर्म विप्रमुक्तः। दशवै० ११९।  
नीरया- नीरजसः रजोरहितत्वात्। स्था० २३२।  
नीरसं- विगतं रजसम्। प्रश्न० १६३।  
नीराजितो- निविटितः लब्धजय पारप्राप्तो वा। बृह० ८४  
आ। निर्घटितः। व्यव० २०३ आ।

नीरुह- साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। प्रज्ञा० ३४।  
 नीरोगा- शक्ताः। ओघ० ७१।  
 नीरोहो- प्रतीक्षा प्रतीक्षाप्यते। बृह० १४७ आ।  
 नीर्विशेत्- परिहारतपः प्रतिपद्येत। व्यव० १८१ आ।  
 नील- मरकतमणिः। जीवा० २७४। औप० ४१। हरितत्व-  
 मतिक्रान्त कृष्णत्वमसंप्राप्तं पत्रं नीलम्। जीवा० १८६।  
 वर्षधरपर्वतविशेषः। स्था० ६८। अष्टाशीतौ महाग्रहे  
 पञ्चविंशतितमः। जम्बू० ५३५। नीलवर्षधरपर्वते  
 द्वितीयः कूटः। स्था० ७२।  
 नीलकंठ- महिषानिकाधिपतिदेवविशेषः। स्था० ३०२।  
 नीलकणवीरय- नीलकणवीरः वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३६२।  
 नीलकेसी- नीलकेशी-तरुणी। व्यव० १३३।  
 नीलगुडिया- नीलगुटिका-नील्या गुटिका। जीवा० १६४।  
 प्रज्ञा० ९१।  
 नीलगुहा- मुनिसुव्रतस्वामिनो दीक्षास्थानम्। आव० १३७।  
 नीलपत्ता- चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२।  
 नीलबंधुजीव- नीलबंधुजीवः वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३६०।  
 नीलवंत- नीलवान् पर्वतविशेषः। आव० ३८५।  
 नीलवंतदह- ह्रदविशेषः। स्था० ३२६।  
 नीलवन्तः- वर्षधरपर्वतविशेषः। स्था० ७०।  
 नीलवान्- वर्षधरपर्वतविशेषः। प्रश्न० ९६।  
 नीला- हरितं सस्यम्। ओघ० १५९। नदीविशेषः। स्था०  
 ४७७। आचा० ३९१।  
 नीलाभास- नीलावभासः-अष्टाशीतौ  
 षड्विंशतितमोमहाग्रहः। जम्बू० ५३५।  
 नीलासोए- सौगन्धिकायां नगर्या उद्यानम्। विपा० ९५।  
 ज्ञाता० १०४। नीलाशोकः वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३६०।  
 नीली- नीलवर्णपरिणतः। प्रज्ञा० १०। नन्दी० १७०।  
 गुलिका। ज्ञाता० २२२।  
 नीलीगुलिया- नीलीगुलिका नीलीगुटिका। जम्बू० ३३।  
 नीलीया- आद्राः वनस्पतयः। आचा० ३९१।  
 नीलुप्पलं- नीलोत्पलं कुवलयम्। प्रज्ञा० ३६०।  
 नील्या- नीलमया। प्रज्ञा० ९१।  
 नीवारं- व्रीहि-विशेषकणदानम्। सूत्र० ८७। आचा० २८५।  
 नीवं- उपरि। ओघ० १६२।  
 नीव्वोदगं- नीव्वोदकं गृहपटलान्तोत्तीर्णजलम्, वर्षासु  
 गृहाच्छादनप्रान्तगलितं जलं नीव्वोदकम्। पिण्ड० १५।

नन्दी० १६३। निव्वोदकम्। ओघ० १३२।  
 नीसंदु- निस्खन्दः। ओघ० १००।  
 नीसंदा- पुनाहाः। चतु०।  
 नीसङ्घ- अत्यर्थं। बृह० १९६ अ। विनष्टं विश्वस्तं। आव०  
 ७०९।  
 नीसरणं- निस्सरणं नाम फेलहसणं। व्यव० ९ आ।  
 नीससंति- निःश्वसन्ति-बाह्यक्रियां कुर्वन्ति। प्रज्ञा०  
 २१९।  
 नीससिऊससियसमं-  
 निःश्वसितोच्छ्वसितमानमनतिक्रामतो यद्गेयं  
 तन्निःश्वसितोच्छ्वसितसमम्। स्था० ३९४।  
 नीससियं- निःश्वसितं-अधःश्वसितम्। आव० ७७९।  
 नीसा- पेषणी। दशवै० १७२।  
 नीसापट्टए- शिलापेशणी। बृह० ९० अ।  
 नीसास- सङ्ख्येया आवलिका निश्वासो-बहिर्मुखपवनः।  
 जम्बू० ९०।  
 नीसासविसा- निःश्वासे विषं येषां ते निश्वासविषाः।  
 प्रज्ञा० ४६।  
 नीसेस- निःश्रेयसः कल्याणकरत्वात्। सम० १२७।  
 नीसेसा- निःशेषं समग्रम्। भग० १५१।  
 नीहडिया- निहतिता-नीयमानं सागारिकद्रव्यं यद् यत्र  
 नीयते सा। बृह० १९८ अ।  
 नीहम्मिए- निर्गते। बृह० २२१ आ।  
 नीहरइ- निहरति। ओघ० २१७।  
 नीहरित्तए- निहर्तुं निष्काशयितुम्। भग० २१८। विपा०  
 ८१।  
 नीहरिय- निष्क्राम्य। निशी० २७१ आ।  
 नीहार- पुरीषोत्सर्गः। आव० ५४१।  
 नीहारि- गिरिकन्दरादिगमनेन ग्रामाद्वहिर्गमनं तद्  
 विद्यते यत्र तन्निर्हारिः। उत्त० ६०३। निर्हारि-घोषवान्  
 शब्दो घण्टादि-शब्दवत्। पिण्डेन निर्वृतः। स्था० ४७१।  
 नीहारिम- निर्हारेण निर्वृत्तं यत्तन् निर्हारिमं निर्धारितं-  
 निश्चि-तम्। भग० १२०। निर्हारिमा दूरं विनिर्गच्छन्ती।  
 राज० ७। निर्हारिमः दूरं निर्यायी। प्रश्न० १६२।  
 नीहारिमा- निर्हारिमा दूरे विनिर्गच्छन्ती। जीवा० १८८।  
 नीहारी- निर्हारिमं ग्रामादिनामन्तः। व्यव० ४३० अ।  
 निर्हरणं निर्हारः गिरिकन्दरादिगमनेन

ग्रामादेर्बहिर्गमनम्। उत्त० ६०३।  
 नुः- वितर्कः। उत्त० २८२। आव० ५०८। उत्त० १९४। क्षेपे।  
 दशवै० ८५।  
 नुपूरं- भूषणविशेषः। स्था० ६३।  
 नूम- कर्म माया वा। आचा० २९५। प्रच्छादनम्  
 अधर्मद्वारस्य द्वाविंशतितमं नाम। प्रश्न० २६। नुमं-  
 अवतमसम्। भग० ९२।  
 नूमगिह- नूमगृहं-भूमीगृहम्। आचा० ३८२।  
 नूमानि- निम्नानि-गर्त्तादीनि। आचा० ३८२।  
 नृत्य- विविधाङ्गहारदिस्वरूपः। उत्त० ३८६।  
 नृपतिहठप्रवर्तितकृत्य- राजवेष्टिः। उत्त० ५५३।  
 नैउणिय- नैपुणिकम्। आव० ३१६।  
 नेउर- नूपूरं-पादाभरणम्। प्रश्न० १५९। आव० २२५। नुपूरं-  
 मञ्जीरम्। पिण्ड० ६८।  
 नेउरहारिगा- नूपूरं-मञ्जीरं तस्य हारो हरणं श्वशुरकृतं  
 तेन या प्रसिद्धा सा नूपूरहारिका आगमे  
 चान्यत्रनूपूरपण्डितेति प्रसिद्धा। नूपूरहारिका-  
 उत्थितचतुश्चरणहस्तिवत् अनाचार-प्रवृत्तौ  
 साधुत्वानवस्थानम्। पिण्ड० ६८।  
 नेउरा- चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२। प्रजा० ४२।  
 द्विन्द्रियजीवविशेषः। जीवा० ३१।  
 नेगम- प्रभूततरवणिग्वर्गावासः। आचा० २८५। नैके गमा  
 वस्तुपरिच्छेदा यस्य अपि तु बहवः स निरुक्तवशात्  
 कका-रलोपतो नैगमः। अनुयो० २२३।  
 नैकैर्मानैर्महासत्तासामान्यवि-शेषविशेषप्रज्ञानैर्मिमीते  
 मिनोति वा नैकमः निगमेषु वा-अर्थ-बोधेषु कुशलो भवो  
 वा नैगमः, अथवा नैके गमाः पन्थानो यस्य स  
 नैकगमः। स्था० ३९०। निगमः। आव० ८११। निगमः-  
 पदार्थपरिच्छेदः। आव० २८३। न एकं नैकं प्रभृ-  
 तानीत्यर्थः,  
 नैकैर्मानैर्महासत्तासामान्यविशेषादिज्ञानैर्मिमीते  
 मिनोति वा वस्तूनि परिच्छिनत्तीति नैगमः। अनुयो०  
 २६४। नेलको-रूपकः। निशी० १३९। आ। बहुवस्तुपरि-  
 च्छेदः  
 सामान्यविशेषादिप्रकारैर्बहुरूपवस्त्वभ्युपगमपरः।  
 अनुयो० १७। निगमा-वणिजस्तेषां स्थानं नैगमम्।  
 आचा० ३२९।

नेचइया- निचयेन-संचयेनार्थात् धान्यानां ये व्यवहरन्ति  
 ते नैचयिकाः। व्यव० १२अ।  
 नेच्चइल्लो- नैत्यिकः। आव० ४२८।  
 नेच्छियं- इच्छाया विषयी कृतं नेच्छितम्। जीवा० २७९।  
 नेड्डवालगो- गृहपालकः। आव० ४०२।  
 नेति- नयति गमयति। सूर्य० ३३। २८।  
 नेत्त- नेत्र-मथिदण्डाकर्षणरज्जुः तद्वद्दीर्घतया तन्नेत्रं  
 शेफ उच्यते। उपा० २२।  
 नेत्तपड- नेत्रपटः। प्रजा० ३०६।  
 नेपथ्यं- आभरणम्। जम्बू० ६४।  
 नेपथ्यकथा- नेपथ्यानां प्रशंसनं द्रवेषणं वा  
 स्त्रीकथायाश्चतुर्थो भेदः। आव० ५८१।  
 नेपालवत्तिणी- नेपालदेशः। आव० ६९७।  
 नेपालविसय- नेपालविषयः। आव० ६९६।  
 नेम- नेमः भूमिभागादूर्ध्वं निष्क्रामन्, प्रदेशः। जीवा०  
 ३५९। नेमः-भूभेर्दूर्ध्वं निष्क्रामन्, प्रदेशः। जीवा० १९८।  
 नि नेमे तं नेमं-प्रदर्शनम्। निशी० ६३। आ। चिह्नम्।  
 आव० ७६७। मूलम्। प्रश्न० ६१।  
 नेमा- स्तम्भानां मूलपादाः। भग० १४५।  
 नेमि- नेमिः-तद्योगाचक्रमपि चक्रधारा। भग० ६४५।  
 नेमिः-चक्रमण्डलमाला। भग० ३२२। चक्रमण्डनधारा।  
 भग० ४८१। गण्डमाला। ज्ञाता० ५८।  
 नेमित्त- नैमित्तिकः। आव० ३९३। नैमित्तिकम्। आव०  
 २७८।  
 नेमी- नेमिः-द्वाविंशतितमो जिनः। आव० ५०६। नेमि-  
 भूमिका। राज० २८।  
 नेम्माणि- मूलपादाः। बृह० ५३अ।  
 नेय- णाङ्गा पहेण नयति तम्हा नेयो। दशवै० १४५अ।  
 नेयइया- नैतिकका नीतिकारिणः। व्यव० १६९अ।  
 नेयव्वो- नेतव्यः-अध्येतव्यः। भग० २८३।  
 नेयाउए- नायकं मोक्षगमकमित्यर्थः। भग० ४७१।  
 नेयाउयं- नयनशीलो, नेता-सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मको  
 मोक्षमार्गः श्रुतचारित्ररूपो वा धर्मः। सूत्र० १७१। नयन-  
 शीलं नैयायिकं-मोक्षगमकम्। ज्ञाता० ५१। आव० ७६०।  
 नेयारं- पहु-सामि। आव० ६६१।  
 नेरइए- नैरयिकः-भगवत्याः प्रथमशतके सप्तम उद्देशकः।  
 भग० ६।

**नेरइय-** निर्गतं अयं-इष्टफलं कर्म यस्मात् स निरयः,  
तत्रभवः नैरयिकः-नारकः। भग० १९। निरया-  
नरकावासास्तेषु भवा नैरयिकाः। प्रजा० ४३।

**नेरइयउद्देश-** जीवाभिगमस्य द्वितीय उद्देशकः। भग०  
६०६, ६३८।

**नेरइयउद्देशओ-** जीवाभिगमस्य द्वितीय उद्देशकः। भग०  
६१६।

**नेरइया-** निर्गतं-अविद्यमानमयं-इष्टफलं कर्म येभ्यस्ते  
निर-यास्तेषु भवा नैरयिकाः-किलष्टसत्त्वविशेषाः।  
स्था० २८।

**नेरई-** नैऋतिः-दक्षिणपश्चिममध्यवर्तिदिक्। आव०  
२१५। स्था० १३३।

**नेल-** नैलं-नीलीविकारः। भग० १०।

**नेल्लकः-** सुराविशेषः। जीवा० २६५।

**नेवत्थं-** नेपथ्यम्। आव० १४५। आचा० ४२३। नेपथ्यं-  
स्त्रीपुरुषाणां वेषः स्वाभाविको विभूषाप्रत्ययश्च। स्था०  
२११। वेषः। जीवा० २०७।

**नेवत्थकहा-** नेपथ्यकथा-नेपथ्यसंबंधेन स्त्रीणां कथा।  
प्रश्न० १३९।

**नेवाइयं-** निपतत्यर्हदादिपदादिपर्यन्तेष्विति निपातः,  
निपा-तादागतं तेन वा निर्वृत्तं स एव वा  
स्वार्थिकप्रत्ययविधानात् नैपातिकम् पदस्य द्वितीयो  
भेदः। आव० ३८९।

**नेसज्जिए-** निषद्या-पुताभ्यां भूमावुपवेशनम्। भग०  
१२४। फलकादि। आव० ८८।

**नेसत्थिया-** निसर्जनं निसृष्टं, क्षेपणमित्यर्थः तत्र भवा  
तदेव वा नैसृष्टिकी निसृजतो यः कर्मबन्धः। स्था०  
४२। यन्त्रादिना जीवाजीवान् निसंजतः। स्था० ३१७।  
नैशस्त्रिकीविंशति-क्रियामध्ये दशम्। आव० ६१२।

**निसाए-** निषादः निषीदन्ति स्वरा यस्मिन् सः  
स्वरविशेषः। अनुयो० १२७।

**नेह-** स्नेहः तैलादिरूपः। जीवा० २६६।

**नेहलं-** स्नेहलं स्निग्धम्। जीवा० २६९।

**नेहुर-** नेहुरः-चिलातदेशवासी म्लेच्छविशेषः। प्रश्न० १४।

**नैगमः-** निगमाभिहिताः शब्दा अर्थास्तत्परिज्ञानं च  
देशसम-ग्रग्राही। तन्दु० १३५। प्रजा० ५९।

**नैगमेपी-** इन्द्रस्यैतदभिधानो देवः। जम्बू० ३९७।

**नैपातिकं-** निपातेषु पठितत्वात्। खल्विति। अनुयो० ११३।

**नैरयिकानुपूर्वी-** अनुपूर्व्याः प्रथमो भेदः प्रजा० ४७३।

**नैरुक्तं-** निश्चितार्थवचनभवम्। अनुयो० १५१।

**नैरुक्तिः-** शब्दव्युत्पत्तिः। पिण्ड० १२१।

**नैषेधिकी-** निसीहिया-शबपरिष्ठापनभूमिः। बृह० १४१  
आ।

**नैषेधिकीसप्तैककः-** आचारङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे  
द्वितीय-यचूडायां द्वितीयमध्ययनम्। स्था० ३८७।

**नैष्ठिकमुनिः-** परमसाधुः। प्रश्न० ११४।

**नैसर्गिकं-** दर्शनभेदः। आव० ५२७।

**नैसर्पादयः-** चक्रवर्त्तिसम्बन्धिनो नवनिधयः। सम०  
११२।

**नो-** प्रतिषेधे। उत्त० ४०२। साहचर्ये। प्रजा० ४६९। नो  
शब्दस्य मिश्रवचनत्वात्। स्था० १०३। इति मन्यमानाः  
नोशब्दो देशप्रतिषेधे। आचा० २५०।

**नोइंदिओवउत्ते-** यदा तमेवार्थमिन्द्रियेण दृष्ट्वा  
विचारयत्यो-घसञ्जयाति तदा स नोइन्द्रियोपयुक्तः।  
प्रजा० १५६।

**नोइंदिय-** नोइंदियं-मनः। स्था० ३४५। प्रजा० ३११। उत्त०  
४०२।

**नोइंदियअत्थावग्गहो-** नोइन्द्रियेण  
भावमनसाऽर्थावग्रहोद्वये-  
न्द्रियव्यापारनिरपेक्षघटाद्यर्थस्वरूपपरिभावनाभिमुखः  
प्रथम-मेकसामायिको  
रूपाद्यूर्वाकारादिविशेषचिन्ताविकलोऽनिर्दे-  
श्यसामान्यमात्रचिन्तात्मको बोधो नोइन्द्रियार्थावग्रहः।  
प्रजा० ३११।

**नोइंदियग्गिज्जु-** नोइन्द्रियग्राह्यः नो-न इन्द्रियैः-  
श्रोत्रादिभिर्ग्राह्यः-संवेद्यः। नोइन्द्रियेण-मनसा ग्राह्यो  
वा। उत्त० ४०२। इन्द्रियग्राह्यः। नो इति प्रतिषेधे,  
इन्द्रियैः-श्रोत्रादिभिर्ग्राह्यः-संवेद्यः। इन्द्रियाग्राह्यः।  
उत्त० ४०१।

**नोइंदियत्थ-**

औदारिकादित्वार्थपरिच्छेदकत्वलक्षणधर्मद्वयो-  
पेतमिन्द्रियं तस्यौदारिकादित्वधर्मलक्षणदेशनिषेधात्,  
मनः, सादृश्यार्थत्वाद्वा नौशब्दस्यार्थ  
परिच्छेदकत्वेनेन्द्रियाणां सदृशमिति तत्सहचरमिति वा

नोइन्द्रियं-मनस्तस्यार्थोवि-षयो-जीवादिः नोइन्द्रियार्थ  
इति। स्था० ३४६।

नोइन्द्रियदुष्प्रणिहितकायिकी- नोइन्द्रियेण-मनसा  
दुष्प्रणि-हितस्याशुभसङ्कल्पद्वारेण दुर्व्यवस्थितस्य  
क्रिया, दुष्प्रणि-हितकायिकीक्रियाया द्वितीयो भेदः।  
आव० ६११।

नोउवसंतं- नोपशान्तं-अनिष्टादिव्याख्यातमेवैकार्थं वा।  
भग० ९०।

नो एवं भवइ- नैतद्भवति-नैतत्कल्पते। आचा० २४४।

नो कम्मं- वेदितरसं कर्म नो कर्म। भग० ३०२।

नो कर्म द्रव्यकर्म- लेप्यकर्मादिकम्। उत्त० ६४०।

नोकर्मद्रव्यकषायः- बिभीतकादयः। आचा० ९१।

नोकर्मद्रव्यलोभः- आकारमुक्तिः, चिककणिका। आव०  
३९७।

नोकर्मभावक्षणः- आलस्यमोहवर्णवादः। आचा० ११०।

नोकषायता- कषायसहचारिता। प्रजा० ४६९।

नोकसाय- कषायाः क्रोधादिभिः सहचरा नोकषायाः। स्था०  
५६९।

नोछक्कसमज्जिया- नोषङ्कं-षट्काभावः ते चैकादयः  
पञ्चा-न्तास्तेन नोषट्केन एकादयुत्पादेन ये  
समर्जितास्ते भग० ७९७।

नोजीवा- गृहकोकिलच्छिन्नपुच्छादयः। आव० ३१९।

नोजगं- नोयुगं-नोशब्दो देशनिषेधवचनः किञ्चिदूनं  
युगम्। सूर्य० २०६।

नोड्डं- गिहं। निशी० ८।

नोतह- अन्यस्तु नो तथैवान्यथापीत्यर्थोः नोतथः। स्था०  
२१४।

नोदंसणायार- नोदर्शनाचारः- चारित्रादिः। स्था० ६५।

नोपरोत्त- नोअपरीत्तः-सिद्धः। जीवा० ४४६।

नोभव- भवव्यतिरिक्तः

कर्मसम्पर्कसम्पाद्यनैरयिकत्वादिपर्या-यरहितः। प्रजा०  
३२८।

नोभवसिद्धिकानोअभवसिद्धिक- सिद्धः। जीवा० ४४।

नोमालियापुड- गन्धद्रव्यविशेषः। ज्ञाता० २३२।

नोल्लेउणं- नोदयितुं-उल्लंघयितुम्। बृह० २०६, २७६।

नोशब्दो- देशवचनः। व्यव० ४आ। सर्वनिषेध एव। स्था०  
१०३। साहचर्यार्थः। स्था० ४६९।

नोसञ्जोपरुक्तः- आहारद्युपभोगेऽपि तत्रानभिषकः।

भग० ९०५।

नोसन्ना- नोसंज्ञा। भग० ९०५।

नोसन्नोवउत्ता- नोसञ्जोपयुक्ता आहारदिषु  
गृद्धिवर्जिताः। भग० ९३०। पुलाक निर्गन्धस्नातका  
नोसञ्जोपयुक्ताः। भग० ९०५।

नोसुयंगं- नोश्रुताङ्गं-अश्रुताङ्गम्। उत्त० १४४।

नोहव्वाए नोपाराए- यो हि मध्ये महानदीपूरं निमग्नो  
भवत्यसौ नारातीय तीराय नापि पारे महानदी पूरम्।  
आचा० ११३।

न्यक्कारः- तिरस्कारः। उत्त० ३७६।

न्यक्कृत- धिक्कृतः। आचा० १८२।

न्यक्षं-विस्तारः प्रत्यक्षं च। उत्त० ६६। आव० ८४२।  
निष्कृष्टम्। आव० २५९।

न्यग्रोधः- वटवृक्षः। भग० ६५०।

न्यग्रोधपरिमण्डलं- न्यग्रोधवत् परिमण्डलं यस्य तत्,  
यथा न्यग्रोध उपरि सम्पूर्णप्रमाणोऽधस्तु हीनः तथा  
यत्संस्थानं नाभेरुपरि सम्पूर्णप्रमाणं अधस्तु न तथा  
तन्न्यग्रोधपरिमण्डलम्। प्रजा० ४१२।

न्यग्रोधसंस्थानं- नाभित उपरि सर्वावयवाश्चतुरस्रा-  
लक्षणा-ऽविसंवादिनोऽधस्तु तदनु रूपं यन्न भवति तत्।  
सम० १५०।

न्यायोदग्रहण- शब्दान्तरापेक्षया विशेषः। स्था० ४९४।

न्यासः- विक्षेपः, स्थापना। स्था० ४।

- x - x - x - x -

प

पंक- महान् कर्दमः पङ्कः। प्रश्न० ६५। पङ्कः। औप०

८६। पङ्कः-स्वेदार्द्रमलरूपः। व्यव० व० १२२। पङ्कः-  
कलरूपः। पिण्ड० १०२। पङ्कः-कर्दमः। स्था० ३२८।

पङ्कः-पापम्। पङ्कं-पङ्कयतीति पापम्। सूत्र० ३३१।

पङ्कः मलः एव स्वेदेनार्द्राभूतमलः। भग० ३७। पङ्कः-  
कर्दमः। भग० ३०७। जम्बू० १६९। प्रस्वेद उल्लि। निशी०  
११०अ।

पङ्कगति- पङ्के-उदके वाऽतिदुस्तरं यदात्मीयं केनापि  
सहो-दबध्य तद्बलेन गच्छति सा पङ्कगति,  
विहायोगतेः षोडशमो-भेदः। प्रजा० ३२७।

पङ्कजल- पङ्कजलं-पङ्कप्रधानं जलं यत् कमलमुच्यते।  
उत्त० ३९१।

**पंकप्पभा-** पङ्कप्रभा-चतुर्थनारकपृथ्वी। प्रज्ञा० ४३।  
 पङ्कस्य प्रभा यस्यां सा। पङ्काभद्रव्योपलक्षिता वा।  
 अनुयो० ८९।  
**पंकबहुल-** पङ्कबहुल-कर्दबहुलो विशेषो भूभागः।  
 रत्नप्रभायाः द्वितीयकाण्डः। जीवा० ८९।  
**पंकाययणाभि-** पङ्कायतनां-यत्र पङ्कीलदेशे लोका  
 धर्मार्थं लोटनादिक्रियां कुर्वन्ति। आचा० ४११।  
**पंकावई-** पङ्कावतीनाम महाविदेहे कुण्डः। जम्बू० ३४६।  
 पङ्कोऽतिशयेनास्त्यस्यामिति पङ्कावती। महाविदेहे  
 नदी। जम्बू० ३४६।  
**पंकिता-** जल्लमल्लेन ग्रस्ता। निशी० १०८ आ।  
**पंकिय-** आर्द्रमलोपेतम्। भग० २५४।  
**पंखाल-** पक्षवतीः। बृह० १८ आ।  
**पंगु-** गन्तुमसमर्थः, पदे जङ्घाहीनः पङ्गुः। निशी० ४३।  
**पङ्गुल-** पङ्गुलः-गमनासमर्थजङ्घः। प्रश्न० २५। पङ्गुलः-  
 चङ्क्रमणासमर्थः। प्रश्न० १६१।  
**पंचगुलि-** पञ्चाङ्गुली। जीवा० २२७। वल्लीविशेषः। प्रज्ञा०  
 ३२।  
**पंच-** पण्णगं। निशी० ४४ आ।  
**पंचजण्ण-** पाञ्चजन्याभिधानं सङ्खम्। ज्ञाता० २१८।  
**पंचङ्गी-** पञ्चाष्टा-पञ्चमुष्टिः। अन्त० ४९२।  
**पंचतव-** पञ्चतवः-पञ्चाग्नितपः, यत्र चतुश्रुष्वपि दिक्षु  
 चत्वारोऽग्नयः पञ्चमश्च तपनस्तल्लोके प्रसिद्धम्।  
 उत्त० ५९८।  
**पंचनियम-** पञ्चनियमास्तु-शौचसंतोषतपः  
 स्वाध्यायेश्वरप्रणि-धानानि। ज्ञाता० १०५।  
**पंचपुल-** पञ्चपुलः विपा० ८१।  
**पंचमंगल-** पञ्चमंगलं-नमस्कारम्। आव० ५४५।  
**पंचमंगलयं-** पञ्चमङ्गलकं-नमस्कारम्। ओघ० २०३।  
**पंचम-** पञ्चानां षड्जादिपञ्चस्वराणां निर्देशक्रममाश्रित्य  
 पूरणः पञ्चमः स्वरविशेषः। पञ्चसु-नाभ्यादिस्थानेषु  
 मातीति वा पञ्चमः स्वरः। अनुयो० १२७।  
**पंचमासिआ-** पञ्चमी भक्षुप्रतिमा। सम० २१।  
**पंचमी-** पञ्चमभिक्षुप्रतिमा। ज्ञाता० ७२।  
**पंचरुविता-** पञ्चानां रूपाणां  
 गर्जितविद्युज्जलवाताभ्रलक्षणानां समाहारः पञ्चरूपं  
 तदस्ति येषां ते पञ्चरूपिका उदकगर्भाः। स्था० २८७।

**पंचलइअं-** पञ्चलतिकाः कल्लिकारूपा अवयवाः। जम्बू०  
 २२३।  
**पंचवण्णा-** चतुर्दशतीर्थकृतशिबिका। सम० १५१।  
**पंचसेल-** द्विपविशेषः। निशी० ३४५ आ। निशी० ४२ आ।  
 कुमारनंदीगमनस्थानम्। बृह० १०८ आ। पञ्चशैलकः  
 द्वीपविशेषः। आव० २९६।  
**पंचसोगंधिय-**  
 पञ्चभिः एलालवङ्गकर्पूरकक्कोलजातिफललक्षैः  
 सुगन्धिभिर्द्रव्यैरभिसंस्कृतं पञ्चसौगन्धिः। उपा० ५।  
**पंचहत्थुत्तर-** श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य  
 जन्मादिकल्याणक सूचक नक्षत्रम्। आचा० ४२०।  
**पंचाल-** दुर्मेखवास्तव्यो देशः पञ्चालः, द्रव्यव्युत्सर्ग  
 देशः। आव० ७१६। पञ्चालः-देशविशेषः। आव० २१९।  
 पञ्च-मण्डलः-पञ्चालदेशः। उत्त० ३९०।  
 कम्पिलपुरनगरस्य जनपदः। ज्ञाता० २०७।  
 जितशत्रुजनपदः। ज्ञाता० १४४।  
 पञ्चालजनपदनिवासिनः। नन्दी० १०४। आर्यदेशेषु  
 नवमः पाञ्चालः जनपदविशेषः। प्रज्ञा० ५५। पञ्चालः।  
 आव० २१९।  
**पंचालराया-** पञ्चालराजः। आव० ७१९।  
**पंचासवपरिणया-** 'पञ्चाश्रवा'-हिंसादयः परिज्ञाता-  
 द्विवि-धया परिज्ञया-ज्ञपरिज्ञया प्रत्याख्यानपरिज्ञया  
 च परिसम-न्तात् ज्ञाता यैस्ते पञ्चाश्रवपरिज्ञाताः,  
 आहिताग्न्यादेरा-कृतिगणत्वात् निष्ठायाः पूर्वनिपात  
 इति समासो युक्त एव, परिज्ञात पञ्चाश्रवा इति वा।  
 दशवै० ११८।  
**पंजर-** पञ्जरं-वंशादिमयाच्छादनम्। राज० ६९। पञ्जरं-  
 वंशा-दिमयप्रच्छादनविशेषः। प्रश्न० ९९। पञ्जरः-  
 पञ्जराकारः। जम्बू० २४२। पञ्जरः-  
 वंशादिमयप्रच्छादनविशेषः। सम० १३९। पञ्जरः-  
 बन्धनविशेषः। उत्त० ४९०। पञ्जरः-वंशा-  
 दिमयप्रच्छादनविशेषः। सूर्य० २६४।  
 आचार्यादिपारतन्त्र्यं परस्परं प्रति नोदना च। बृह० ८  
 अ। आयरिओ उव-ज्झातो पवत्ति थेरो गणावच्छेतितो  
 एतेहिं पंचहिं परिग्गहितो गच्छो पंजरो भण्णति। निशी०  
 ९५ आ।  
**पंजरदीव-** अभ्रपटलादिपञ्चरयुक्तात्। भग० ५४८।

**पंजरभग्न-** सुदुजन्मेण पडिचोदेति सुहं अच्छामि सो।  
नि० चूव ९४अ।

**पंजलिउडे-** प्रकृष्टः-प्रधानो ललाटतटघटितत्वेन  
अञ्जलिः- हस्तन्यासविशेषः कृतो येन सा  
प्राञ्जलिकृतः। राज० ४४। प्रकृष्टं  
भावान्विततयाऽञ्जलिपुटमस्येति प्राञ्जलिपुटः। उत्त०  
५६। प्रकर्षेण-अन्तः प्रीत्यात्मकेन कृतो  
विहितोऽञ्जलिः-उभयकरमीलनात्मकोऽनेनेति  
प्रकृताञ्जलिः। प्रकृष्टं वा-  
भावान्विततयाऽञ्जलिपुटमस्येति प्राञ्जलिपुटः। उत्त०  
६३। आव० २६९।

**पंजलीगड-** प्रकर्षेण-अन्तः प्रीत्यात्मकेन कृतो-  
विहितोऽञ्जलिः-उभयकरमीलनात्मकोऽनेनेति  
प्रकृताञ्जलिः। उत्त० ५६।

**पंजलियड-** प्रकृष्टः- प्रधानो ललाटतटघटितत्वेन  
अञ्जलिः- हस्तन्यासविशेषः कृतो विहितो येन सः  
प्राञ्जलिकृतः। सूर्य० ६।

**पंजली-** प्रकृताञ्जलिः-प्रकृष्टतोषवती। ज्ञाता० १६६।

**पंड-** जनपदविशेषः। भग० ६८८।

**पंडए-** पण्डकं-नपुंसकम्। स्था० १६४।

**पंडग-** पण्डकः-नपुंसकम्। स्था० ४४५। पण्डते-गच्छति  
जिनजन्माभिषेकस्थानत्वेन सर्ववनेष्वतिशायितामिति  
पण्ड-कम्। जम्बू० ३६३। पण्डकः-नपुंसकः। दशवै० २१५।

**पंडगवण-** पाण्डकवनम्। आव० १२४। वनविशेषः। स्था०  
८०। पण्डकवनं, पण्डते-गच्छति जिनजन्माभिषेक  
स्था-नत्वेन सर्ववनेष्वतिशायितामिति णक् प्रत्यये-  
पण्डकं वनम् मेरोर्वनम्। जम्बू० ३५९।

**पंडरंग-** पाण्डुरङ्गः मतविशेषः। आव० ८५६। निशी० १४८  
अ।

**पंडरकड्ड-** पाण्डुरकड्यं-धवलगृहम्। आव० ६७१।

**पंडरकुड्डगा-** पाण्डुरकुडयः प्रसिद्धा गोपालाः। आव० ४१८।

**पंडरज्जा-** पाण्ड्वा मायोदाहरणे दृष्टान्तः। आव० ३९३।  
निशी० २५१अ।

**पंडरद्विअगाम-** पाण्डुरास्थिकग्रामः। आव० १९०।

**पंडरा-** पाण्डुरा। आव० ४१७।

**पंडरुल्लोयं-** पाण्डुरोल्लोचं श्वेतवस्त्रविभूषितम्। उत्त०  
६६५।

**पंडा-** बुद्धिः। बृह० ३४अ।

**पंडिय-** पण्डितः-साधु। अनुयो० १२०। पण्डितः-कटुविपा-  
ककामगुणदर्शिता। आचा० ४३०। पापाड्डीनः। सूत्र०  
३३७। पंडा-बुद्धिः संजाताऽस्येति पण्डितः। बृह० ३४अ।  
पण्डितं-सातिशयबुद्धिमत्तः। जम्बू० २०७। पण्डातत्त्वा-  
नुगा बुद्धिः, सा संजाताऽस्येति पण्डितः। उत्त० ४७।  
पण्डितः विनीतविनेयः। उत्त० ६१। पण्डितः-  
पापाड्डीनः। सूत्र० १५७। पण्डितः-पण्डिताभिमानो  
शुष्कतर्क-दर्पा-धमाता। सूत्र० ३९३। पण्डितः-बुद्धेः  
तत्त्वः, संयतः। स्था० १७५। पण्डितः-सर्वविरतः। सम०  
३४। पण्डितः-सुनिश्चित-शास्त्रार्थः। उत्त० ३२०।  
पण्डितः-चारित्रवान्। उत्त० २४२। पण्डितः-व्यवहारेण  
शास्त्रज्ञो जीवाः। भग० १०२। पण्डितः-पण्डा-बुद्धिः  
संजाता यस्य स इति पण्डितः। बृह० ३४अ। पण्डितः-  
सम्यग्ज्ञानवान्। दशवै० ९९।

**पंडियपंडियमरणं-** साराधनं सर्वविरतमरणम्। आतु० ।

**पंडियमरण-** सर्वविरतिमरणम्। भग० ६२४।  
पण्डितमरणम्, मरणस्य नवमो भेदः। उत्त० २३०।

**पंडिया-** पण्डिताः-पापोपादानपरिहारितया  
सम्यक्पदार्थधर्मचरणाय समुत्थिता भवन्तीति।  
आचा० २४८। वत्ता भोगाणं पंडियाइयणे जे दोसा  
परिजाणंति। दशवै० ४१।

**पंडु-** पाण्डु-देशविशेषे धूलिरूपा सती प्रसिद्धा मृत्तिका।  
जीवा० २३। पाण्डुः-आपाण्डुः, आ-ईषत् शुभ्रत्वभागिति-  
यावत्। उत्त० ६८९। पाण्डुः। जीवा० १८८।

**पंडुअ-** पाण्डुकः निधिः, नवनिधौ द्वितीया। जम्बू० २५८।

**पंडुइयमुही-** पाण्डुकितमुखी-दीनास्या। ज्ञाता० ३३।

**पंडुकबलसिला-** पाण्डुकम्बलशिला। जम्बू० ३७२।  
पाण्डुकम्बलशिला, द्वितीयाऽभिषेकशिलानाम्। जम्बू०  
३७२। स्था० ८०।

**पंडुगंग-** कुसीलो। दशवै० १५२।

**पंडुमत्तिया-** पाण्डुमृत्तिका-देशविशेषे या धूलिरूपा सती  
“पाण्डु” इति प्रसिद्धा। जीवा० २३।

**पंडुमहुरं-** पाण्डवकृतं दक्षिणवाचालके नगरम्। ज्ञाता०  
२२५।

**पंडुमहुरा-** पाण्डुमथुरा। अन्त० १६। पाण्डुमथुरा-धृतिमति-  
विषये पाण्डुपुरी। आव० ७०८। पाण्डुमथुरा। उत्त० १७९।

**पंडुर-पाण्डुकः**, नवनिधौ द्वितीया। *स्था० ४४८।* पाण्डु-  
रकं-कालपरिणामतस्तथाविधरोगादेर्वा  
प्राप्तवलक्षभावम्। *उत्त० ३३३।*  
**पंडुरंग-** पाण्डुराङ्गः-नैयायिकादिपाषण्डमाश्रितम्।  
*अनुयो० १४६।* पाण्डुराङ्गः-भस्मोद्धलितगात्रः। *अनुयो० २५।*  
**पंडुर-** पाण्डुरः-शुक्लः। *ज्ञाता० ६३।* पाण्डुरं-सुधाधवलम्।  
*औप० ४।* पाण्डुरं-अकलङ्कम्। *जीवा० २७२।* पाण्डुरः-  
सुधाधवलः। *ज्ञाता० ३।*  
**पंडुरओ-** श्वेतः। *आव० ४१९।*  
**पंडुरग-** पाण्डुराङ्गः-शैवः। *ज्ञाता० १९।* पाण्डुरकः। *भग० १९७।*  
**पंडुरतल-** पाण्डुरतलं-सुधामयतलम्। *जम्बू० १०६।*  
**पंडुरपडपाउरण-** पाण्डुरो-धौतः पटः-प्रावरणं येषां ते।  
*अनुयो०*  
**पंडुरवत्तं-** पाण्डुरपत्रं-जीर्णपत्रम्। *उत्त० ३३४।*  
**पंडुरा-** पाण्डुरा-श्वेता। *उत्त० ६८५।*  
**पंडुराय-** हस्तिनागपुरे राजा। *ज्ञाता० २०८।*  
**पंडुरोग-** पाण्डुरोगः। *जम्बू० १२५।*  
**पंडुलइयमुही-** पाण्डुकितमुखी-पाण्डुरीभूतवदना। *निर० ९।*  
**पंडुलंगितमुही-** पाण्डुराङ्गितमुखी। *आव० १५१।*  
**पंडुलइयमुहा-** पाण्डुकितमुखी-पाण्डुरीभूतवदना। *विपा० ४९।*  
**पंडुसिला-** पाण्डुशिला। *जम्बू० ३७१।*  
**पंडुसेण-** पाण्डुपुत्रः। *ज्ञाता० २२५।* पाण्डुषेणः-  
संवेगोदाहरणे पाण्डुवंशेऽन्त्यो राजा। *आव० ७०९।*  
**पंडे-** पण्डवात्-नपुंसकहस्तात्। *ओघ० १६२।*  
**पंडोलं-** पटोलं वनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा० ३७।*  
**पंत-** प्रान्तः-दरिद्रप्रायः। *ओघ० १६२।* प्रान्तः-भूतविशेषः।  
*ज्ञाता० १११।* प्रान्तं-स्वाभाविकरसरहितं, स्वल्पं वा  
द्वेषरहितम् विगतधूमम्। *आचा० १४४।* प्रान्तं-अवमम्।  
*उत्त० ४१५।* प्रान्तं-तदेव व्यापन्नं-विनष्टम्। *बृह० २२०।* प्रान्तं-नीरसम्। *उत्त० २९४।* प्रान्तं-पर्युषितं वल्ल-  
चनकाद्यल्पं वा। *आचा० २१३।* प्रान्तं-प्रकृष्टमान्तं  
प्रान्तं वल्लादिपर्युषितम्। *स्था० २९८।* प्रान्तं-  
नीरसप्रायम्। *ओघ० ४४।* प्रान्तम्। *ओघ० १४८।* प्रान्तं-  
अमनोजम्। *भग० १७४।* प्रान्तं-असारम्। *दशवै० १८७।*

पन्ते-प्रान्त-विषये। *ओघ० १४८।* आहारे दृष्टान्तम्।  
*भग० ४८४।* प्रान्तः-प्रकृष्टतरः। *प्रश्न० १३८।*  
**पंतकुल-** प्रान्तकुलं चण्डालादि। *स्था० ४२०।*  
**पंतकुलाणि-** प्रान्तकुलानि-तुच्छाशयगृहाणि-दरिद्रकुलानि  
वा। *उत्त० ४१९।*  
**पंतदेवया-** प्रान्ता देवता। *दशवै० १०३।*  
**पंता-** प्रान्ता-प्रत्यनीका। *आव० ६३३।* प्रान्ता-धर्मानभि-  
मुखी। *पिण्ड० १२२।*  
**पंताव-** अताडयत्। *पिण्ड० १००।*  
**पंतावणं-** ताडनम्। *ओघ० १४९।*  
**पंतावेत्ता-** ताडयित्वा। *निशी० ३००।* आ।  
**पंताहारं-** प्रान्ताहारः प्रकर्षणाऽन्त्यं वल्लाद्येव  
भुक्तावशेषं पर्युषितं वा। *औप० ४०।*  
**पंति-** एकस्यां दिशि या श्रेणिः पङ्क्तिः। *जीवा० १८१।*  
**पंती-** पङ्क्ति-भुक्तुमुपविष्टपुरुषादिसम्बन्धीनि। *उत्त० ५९।*  
**पंतीसो-** एकस्यां दिशि या श्रेणिः सा पङ्क्तिः। *जम्बू० २४।*  
**पंथ-** पन्था-देशाद्विवक्षित देशान्तरप्राप्तिलक्षणः  
सम्यक्त्वा-वाप्तिरूपः। *सूत्र० १९७।*  
**पंथए-** पन्थकः-धन्यसार्थवाहस्य दासचेरः। *ज्ञाता० ७९।*  
**पंथकोइ-** सार्थघातः। *विपा० ३९।*  
**पंथग-** शेलगराजमन्त्री, पंथकः। *ज्ञाता० १०४।* पंथकः-  
आर्जवोदाहरणे वत्सपालिकापुत्रः। *आव० ७०४।* पन्थकः-  
ब्रह्मदत्तपत्नीनागयशायाः पिता। *उत्त० ३७९।*  
**पंथघाइया-** पथि-मार्गे-अर्धपथे घातिका-गन्तृणां हननं  
पथिघातिका। *प्रश्न० ३८।*  
**पंथनिज्झाई-** पन्थानं निर्दध्यातुं-प्रलोकितं शीलमस्येति  
पथनिर्दध्यायी। *आचा० २१५।*  
**पंथन्भासे-** पन्थाभ्यासः-समीपम्। *ओघ० २५।*  
**पंथा-** यस्मिन् ग्रामनगरपल्लीप्रतीकानां  
किञ्चिदेकतरमपि नास्ति स। *बृह० १२२।* आ।  
**पंथिया-** पन्थानं नित्यं गच्छन्तीति पान्थास्त एव  
पान्थिका। *ज्ञाता० १५०।* बहुवत्थदेशजे पेच्छिया ते वा  
मगित्वा। *निशी० ३५८।* आ।  
**पंदुइया-** भंसिया। *निशी० २०५।* आ।  
**पंसु-** रयो अचित्तो पंसु। *निशी० ७०।* आ। प्रायः। *निशी०*

२३ अ।

**पंसुखार-** पांशुक्षारः-उषरलवणम्। दशवै० ११८।

**पंसुरिया-** पांशुरिका-रज उद्धातः। आव० ७३५।

**पंसुवट्टी-** पांशुवृष्टिः। भग० १९५। पांशुवृष्टिः

धूलिवर्षणम्। जीवा० २८३।

**पंसू-** धुमाकार आपाण्डुश्च रजः अचित्तश्च पांशुः। आव० ७३५।

**पइ-** पाति-रक्षति तां-भार्य्यामिति पतिः। उत्त० ३८।

**पइगा-** प्रतिका-प्रद्युम्नसेनसुता ब्रह्मदत्तराज्ञी। उत्त० ३७९।

**पइह-** प्रविष्टः। दशवै० ५९। प्रतिष्ठः-सुपाश्वपिता। आव० १६१। प्रतिष्ठितः-शास्त्रीयद्वितीयमासनम्। जम्बू० ४९०।

**पइडा-** प्रतिष्ठा-अपायावधारितस्यैवार्थस्य हृदि प्रभेदेन प्रति-ष्ठापन्। नन्दी० १७७।

**पइडाइ-** प्रतिष्ठति। आव० ५७८।

**पइडाण-** शालवाहननगरी। बृह० २७ आ। प्रतिष्ठानं अव-स्थानम्। अनुयो० १२९। प्रतिष्ठानं-त्रिसोपानमूलपादः। जम्बू० ४२। प्रतिष्ठानः-त्रिसोपानमूलपादः। जीवा० १९८। प्रतिष्ठानं-त्राणकारणम्। प्रश्न० ६३। प्रतिष्ठानं-मूलपादः। जीवा० ३६९। प्रतिष्ठानं-शालिवाहननगरम्। आव० ८९। प्रतिष्ठानं-मूलपादः। जम्बू० २३।

**पइडिअ-** प्रतिष्ठितः-प्रकर्षण स्थितवान्। दशवै० ७०।

**पइडिय-** प्रतिष्ठितं-नारकादिभावेनावस्थितम्। भग० ८२। प्रतिष्ठितः-अपुनरागत्य व्यवस्थितः। प्रज्ञा० १०८।

**पइडिया-** प्रतिष्ठिताः साद्यपर्यवसितं कालं स्थिताः। उत्त० ६८४।

**पइठाणं-** प्रतिष्ठानं-वैधर्म्योदाहरणे नगरम्। आव० ६९८।

**पइणी-** पचनी नरकपालघ्ननस्थानम्। आव० ६५१।

**पइण्ण-** प्रकीर्ण-इतस्ततो विक्षिप्तम्, असम्बद्धम्। उत्त० ३४६। प्रकीर्णः। बृह० १२६ आ।

**पइण्णकहा-** णेगमसंगहववहारेहिं जं कहिज्जति सा उस्सग्गो पइण्णकहा। निशी० २४० अ।

**पइण्णपण्णो-** अधणीयसुओ अगीतो अपरिणामगो य, एतेसिं उद्देसुद्देसं कहित्तो पइण्णपण्णो। निशी० ८१ अ। प्रकीर्णप्रश्न-प्रश्नः-छेदसूतान्तः पाती रहस्यार्थः स प्रकीर्णो येन स प्रकीर्णप्रश्नः। बृह० १३० अ।

**पइण्णवाई-** प्रतिज्ञावादी-प्रतिज्ञया वा इदमित्थमेव

इत्येका-न्ताभ्युपगमरूपया वदनशीलः। उत्त० ३४६।

प्रकीर्णवादी-प्रकीर्ण-इतस्ततो विक्षिप्तम्,

असम्बद्धमित्यर्थः, वदति-जल्पतीत्येवंशीलः,

वस्तुतत्त्वविचारेऽपि यत्किञ्चनवादी। यः

पात्रमिदमपात्रमिदमिति वाऽपरीक्षयैव कथञ्चिदधिगतं श्रुतर-हस्यं वदतीत्येवंशीलः। उत्त० ३४६।

**पइण्णविज्झो-** प्रकीर्णविज्जः-छेदसूतान्तर्गता

रहस्यवचन-पद्धति सेव्यते सा। बृह० १३० अ।

**पइण्णा-** प्रतिज्ञा-निश्चयरूपोऽभ्युपगमः। राज० १३३।

प्रकीर्ण-अप्रतिनियता। बृह० २६४ अ।

**पइन्नं-** प्रदत्तम्। प्रश्न० ११। प्रतिज्ञा-पक्षः। दशवै० २६३।

**पइन्नगा-** प्रकीर्णकानि। प्रज्ञा० ५६।

**पइन्नगतव-** प्रकीर्णतपः श्रेण्यादिनियतरचनाविरहितं स्वश-क्त्यपेक्षं यथाकथञ्चित्क्रियमाणं तपः। उत्त० ६०१।

**पइन्ना-** प्रतिज्ञा-निदानबन्धनरूपा आशंसा। सूत्र० २६०। प्रतीर्णा-निस्तीर्णा आजन्मपालिता। प्रश्न० १०५।

**पइभा-** प्रतिभा-प्रद्युम्नसेनसुता ब्रह्मदत्तराज्ञी। उत्त० ३७९।

**पइभाए-** प्रतिभयः-भयजनः। ज्ञाता० ७९।

**पइमणुरत्ता-** भर्तारं प्रति रागवती। ज्ञाता० २०२।

**पइया-** पतिता जात्यादेर्बहिष्कृता। अन्त० १२।

**पइरिक्क-** स्त्र्यादिविरहितेन विविक्त व्याबाधं वा। उत्त० ११०। प्रतिरिक्तं विजनम्। भग० ५४३। प्रतिरिक्तः-आव० ६६। विजनं प्रचुरं वा एकान्तम्। बृह० ११९ आ। एकान्तः-स्त्र्याद्यसङ्कुलः। उत्त० ६६५।

**पइरिक्कमज्जितघयविही-**

प्रतिरिक्तमभ्यङ्गनविधिना। आव० ६५।

**पइरिक्कय-** प्रचुरः। ओघ० १०३।

**पइल्लं-** पदं-श्लीपदं पादानौ काठिन्यम्। प्रश्न० १६१।

**पइवं-** तैलदशाभाजनम्। भग० ३१३।

**पइविज्जो-** जो पुण आदिरंतेण सव्वं कहेंति सो। निशी० ८१ आ०।

**पइविसेस-** प्रतिविशेषः-प्रतिनियतविशेषः। नन्दी० ८५।

**पउंछति-** अंजणेणं अजेति। निशी० १९० अ०।

**पउअंगे-** प्रयुताङ्गं-चतुरशीत्यो लक्षैर्नयुतैः। अनुयो० १००।

**पउए-** प्रयुतम् चतुरशीत्या लक्षैः। अनुयो० १००। भग० २९०। कालमानविशेषः। भग० २७५।  
**पउइ-** परिवर्तः परिवर्तवाद् इत्यर्थः। भग० ६६८।  
**पउइपरिहार-** परिवृत्यपरिहारः। भग० ६६७। शरीरान्तरप्रवेशः। भग० ६७३। परावर्त्य परिहारः। आव० २१४।  
**पउइ-** प्रकोष्ठः-कूर्पराग्रेतनभागः। भग० ५४०।  
**पउइ-** प्रद्विष्टा। आव० ८००।  
**पउण-** प्रगुणभूतः। आव० ४००। प्रगुणः। आव० २२७।  
**पउणइ-** प्रगुणीभवति। आव० ६७९।  
**पउतंग-** प्रयुताङ्गं चतुरशीतिरयुतशतसहस्राणि प्रयुताङ्गम्। जीवा० ३४५। स्था० ८६।  
**पउत-** चतुरशीतिः प्रयुताङ्गशतसहस्राणि प्रयुतम्। जीवा० ३४५। स्था० ८६। प्रयुक्तः योत्रितः। जीवा० १९३। प्रयुक्तं प्रयोगः। भग० १८२। प्रजा० ४३६।  
**पउत्तद्वयसम्म-** यत्प्रयुक्तं द्रव्यं लाभहेतुत्वादात्मनः समाधा-नाय प्रभवति तत्प्रयुक्तद्रव्यसम्यक्। आचा० १७६।  
**पउत्ति-** प्रवृत्तिः-व्यक्ततरवार्ता। ज्ञाता० ८४।  
**पउत्ती-** प्रवृत्तिः। आव० ४१६।  
**पउत्थ-** प्रोषितम्। आव० ३४२। प्रोषितम्। उत्त० १४७।  
**पउत्थवइया-** प्रोषितपतिका। आव० ६४०। प्रोषितभर्तुका। ओघ० १५०। प्रोषितभर्तुका। आव० ३९८।  
**पउप्पए-** प्रपौत्रकः-प्रशिष्यः। भग० ५४९। शिष्यसन्तानः। भग० ६९१।  
**पउमंगं-** पद्माङ्गं-चतुरशीतिरुपलाङ्गशतहस्राणि। जीवा० २४५। कालमानविशेषः। स्था० ८६। कालमान-विशेषः। भग० ८८८। कालमानविशेषः। सूर्य० ९१। चतुरशीत्यालक्षैरुपलैः पद्माङ्गम्। अनुयो० १००।  
**पउम-** पद्मः-हिमवति हृदः। स्था० ७३। पञ्चमजिनिभिक्षा-दाता। सम० १५१। आगामिन्यां अवसर्पिण्यां अष्टमचक्री। सम० १५४। कालमानविशेषः। भग० २१०। भग० २७५। आगामिन्यां अवसर्पिण्यां अष्टमबलदेवः। सम० १५४। कालमानविशेषः। भग० ८८८। जलरुहो वनस्पतिविशेषः। प्रजा० ३३। कालमानविशेषः। सूर्य० ९१। पद्मः-सुम-तिजिनप्रथमभिक्षादाता। आव० १४७। पद्मः-अष्टमबलदेवः। आव० १५९। पद्मं-चतुरशीति लक्षैः पद्माङ्गैः। अनुयो० १००। ज्ञाता० २५३। पद्मं-कमलं-

पद्मकाभिधानं गन्धद्रव्यं वा। जीवा० २७७। पद्मं-पुष्करम्। जीवा० ३३३। चतुर-शीतिः पद्माङ्गशतसहस्राणि पद्मम्। जीवा० ३४५। पद्मम्। प्रजा० ३७। पद्मं-बिन्दुजालरूपम्। जम्बू० ५२८। सह-स्रपत्रः-देवपरिकल्पितः पद्मः। आव० २३२। पद्मं-अरवि-न्दम्। दशवै० १८५। सौधर्मकल्पे पद्मावतंसकविमाने सिंहासनम्। ज्ञाता० २५३। पद्मं-कमलं गन्धद्रव्यविशेषो वा। सम० ६१। कल्पावतंसिकस्य प्रथममध्ययनम्। निर० १९। पद्मः। ज्ञाता० ९६। पद्मकम्। आचा० ३६३। पद्मं-सूर्यविकाशिपङ्कजम्। राज० ८। पक्षार्थः-भगवत्यामेकादश-शते षष्ठोद्देशकः। ५११। पद्मं-पद्मकाभिधानं गन्धद्रव्यम्। जम्बू० ११७। आणतकल्पे विमानम्। सम० ३५। सह-सारकल्पे विमानम्। सम० ३३। पद्मं-कामलं, एतदभिधा-नगन्धद्रव्यम्। औप० १६। पद्मं-सूर्यविकासि। जीवा० १७७। पद्मः-हृदविशेषः। ज्ञाता० १२८।  
**पउमगंधा-** पद्मगन्धा। जम्बू० ३१३।  
**पउमग-** पद्मकं कुङ्कुमकेसरम्। दशवै० २०६।  
**पउमगुम्भ-** कल्पावतंसिकस्य सप्तममध्ययनम्। निर० १९। पद्मगुल्मः-नलिनगुल्मविमानः। उत्त० ३७६। सहस्रारे विमानविशेषः। सम० ३५। पद्मगुल्मं-विमानविशेषः। उत्त० ३९५।  
**पउमजालं-** पद्मजालं सर्वरत्नमयपद्मात्मकं। जीवा० १८१।  
**पउमणाभे-** धातकीखण्डापरकङ्कायां नरपतिः। ज्ञाता० २१३।  
**पउमणिकंदो-** पद्मिनीकन्दः-उत्पलिनीकन्दः। प्रजा० ३७।  
**पउमद्रह-** पद्मद्रहो नाम द्रहः पद्मद्रहो नाम हृदो वा। जम्बू० २८४।  
**पउमद्रहपभाइं-** पद्मद्रहप्रभाणि-पद्मद्रहाकाराणि आयतचतुरस्राकाराणि। जम्बू० २८८।  
**पउमपम्हं-** पद्मपक्ष्म-पद्मपत्रम्। जीवा० ३८६।  
**पउमपम्हा-** पद्मगर्भाः। प्रश्न० ७०।  
**पउमप्पभा-** पद्मप्रभा दक्षिणपुष्करिणीनाम्। जम्बू० ३३५।  
**पउमप्पय-** परम्परा। बृह० ११३।  
**पउमप्पह-** इह निष्पङ्कतामङ्गीकृत्य पद्मस्येव प्रभा यस्याऽसौ पद्मप्रभः, षष्ठजिनः। आव० ५०३।  
**पउमभद्-** कल्पावतंसिकस्य पञ्चममध्ययनम्। निर०

१९।

**पउमरह-** पद्मरथः-सर्वकामविरक्तताविषये देवलासुतराज-  
कुमारः। आव० ७१४।

**पउमराग-** पद्मरागः-रत्नविशेषः। जम्बू० ४८।

**पउमरुक्ख-** पद्ममतिविशालतया वृक्ष इव पद्मवृक्षः। जीवा०  
३३३।

**पउमलय-** पद्मलता-मृणालिका। भग० ४७८।

**पउमलया-** पद्मलताः पद्मिन्यः जम्बू० २९२। पद्मलता-  
स्थलकमलिनि पद्मकाभिधानवृक्षलता वा। औप० ९।  
पद्मलता पद्मिनी। जीवा० १८२। लताविशेषः। प्रजा० ३२।

**पउमलेसा-** पद्मगर्भवर्णा लेश्या पद्मलेश्या। स्था० १७५।

**पउमवडेंसए-** सौधर्मकल्पे विमानः। ज्ञाता० २५३।

**पउमवरवेइया-** पद्मवरवेदिका-पद्मप्रधानावेदिका। जीवा०  
१८३।

**पउमवूह-** पद्माकरोव्यूहः-पद्मव्यूहः-परेषामनभिभवनीयः,  
सैन्यविनाशविशेषः। प्रश्न० ४७।

**पउमसर-** पद्मसरः। आव० १७०। पद्मसरः। आव० १८५।  
पद्मानि यत्रोत्पद्यन्ते सरसि तत् पद्मसरः। स्था० ५०२।  
चतुर्दशस्वप्ने दशमम्। ज्ञाता० २०।

**पउमसिरी-** नवमचक्रिणः स्त्रीरत्नम्। सम० १५२। पद्मश्री-  
मेघनादविद्याधरकन्या। आव० ३९३। धणमित्तस-  
त्थवाहस्स बीया भज्जा। निशी० १२८ अ। पद्मश्री-  
योगसंग्रहे निरपलापदृष्टान्ते दन्तपुरनगरे  
धनमित्रवणिजस्य-लघ्वी भार्या। आव० ६६६।

**पउमसेण-** कल्पावतंसिकस्य षष्ठममध्ययनम्। निर०  
१९।

**पउमा-** धर्मकथायाः नवमवर्गस्य प्रथममध्ययनम्।  
ज्ञाता० २५३। भीमराक्षसेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। स्था०  
२०४। मुनिसुव्रतस्वामिनो जननी। सम० १५१।  
भीमराक्षसेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। भग० ५०४।  
शक्रदेवेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रम-हीषी। भग० ५०५।  
वनस्पतिविशेषः। भग० ८०४। पद्मा-शक्रदेवेन्द्रस्य  
प्रथमाऽग्रमहिषी। जीवा० ३६५। साधारण-  
बादरवनस्पतिकायविशेषः। प्रजा० ३४। धर्मकथायाः  
पञ्च-मवर्गस्य त्रयोदशममध्ययनम्। ज्ञाता० २५२।  
धर्मकथायाः नवमवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। ज्ञाता०  
२५३। पद्मा-पूर्वस्यां पुष्करणीनाम। जम्बू० ३३५।

कालमानविशेषः। स्था० ८६।

**पउमाइं-** पद्मानि सूर्यविकासीनि ईषत् श्वेतानि वा। जम्बू०  
२६।

**पउमाकारं-** पद्माकारम्। आव० ४२७।

**पउमाते-** शक्रेन्द्रस्याग्रमहिष्या राजधानी। स्था० २३१।

**पउमाभ-** यस्मिन् गर्भगते देव्याः पद्मशयने दोहदो जातः,  
तच्च तस्यै देवतया सज्जितं, पद्मवर्णश्च भगवान् तेन  
पद्मप्रभ इति। आव० ५०३।

**पउमावई-** पद्मावती-चम्पायां कूणिकराज्ञो भार्या। भग०  
३१६। पद्मावती-पाश्चात्यरुचकवास्तव्या चतुर्थी दिक्कु-  
मारीमहत्तरिका। जम्बू० ३९१। पद्मावती-  
मुनिसुव्रतमाता। आव० १६०। पद्मावती-तेनतलीपुरनगरे  
कनकरथराज-पत्नी। आव० ३७३। पद्मावती-  
द्रव्यव्युत्सर्गे चेटकदुहिता। चम्पा-  
नगरे शदधिवाहनपत्नी करकण्डुमाता। आव० ७१६।  
कृष्णस्य देवी। निर० ४। धर्मकथाया नवमवर्गस्य  
प्रथम-मध्ययने देवी। ज्ञाता० २५३। रोहीतकनगरे  
महाबलराज्ञो भार्या। निर० ४०। कोणिकस्य राज्ञी। निर०  
१९। कालककुमारपत्नी। निर० १९। पद्मावती-  
शिक्षायोगदृष्टान्ते हैह-यकूलसंभूतवैशालिकचेटकस्य  
द्वितीया पुत्री। आव० ६७६।

**पउमावती-** करकण्डुमाता। नि० १९४ अ। निशी० ४६ अ।  
नरवाहनराज्ञी। व्यव० २२७ अ। कनक-रथस्य राज्ञी।  
ज्ञाता० १८४। भीमराक्षसेन्द्रस्य द्वितीयाऽ-ग्रमहिषी।  
भग० ५०४। शेलकपूरे शेलकराजपत्नी। ज्ञाता० १०४।  
साकेतनगरे पटबुद्धिराज्ञा। ज्ञाता० १३०। पद्मावती-  
शतानीकराज्ञो पुत्रोदायनस्य पत्नी। विपा० ६८।  
पद्मावती-अन्तकृद्दशानां पञ्चमवर्गस्य प्रथमाध्ययनम्।  
अन्त० १५। पद्मावती-पञ्चिमरुचकवास्तव्या चतुर्थी  
दिक्कुमारी। आव० १२२। पद्मावती-चेटकदुहिता  
दधिवाहनराज्ञी। उत्त० ३००। पद्मावती-महापद्मराज्ञी।  
उत्त० ३२६। मरुत्पत्थे देवी। व्यव० २८० अ।

**पउमावतीदेवी-** शैलककेशग्राहीका देवी। ज्ञाता० १०८।

**पउमासण-** पद्मासनं-पद्माकारमासनम्। जीवा० २००।

**पउमुत्तर-** पद्मोत्तरः-शुक्ललेश्याया आस्वादे दृष्टान्तः।  
प्रजा० ३६४। दशमचक्रीपिता। सम० १५२। पद्मोत्तरः-  
दिग्हस्ति-कूटनाम। सम० १५२। पद्मोत्तरः

नवमचक्रीमहापद्मपिता। आव० १६२।

पउमुत्तरा- पद्मोत्तरा शर्कराभेदः। जम्बू० ११८।

पउमुप्पल- पद्मोत्पलं-अधस्थासाकाकारं पात्रम्। आ० २११। जस्स अहो णाभी पउमागिती उप्पलागिती वा तं पउमुप्पलं। निशी० १२५। पद्मोत्पलाकारपुष्पकयु-क्तम्। बृह० २४५अ।

पउमोत्तरा- पद्मोत्तरा। जीवा० २७८।

पउयंगे- कालमानविशेषः। भग० ८८८।

पउर- प्रचुरः। ओघ० १२०।

पउरजंघ- प्रचुरजङ्घः-पुष्टजङ्घः। जम्बू० १३१।

पउरजणवय- पौरजनपदम्। आव० १७४।

पउरत्थ- प्रचुरार्थः-प्रभूतार्थः। आव० ४१३।

पउरा- पौराः-पुरवासिनः। बृह० १५५अ।

पउराए- प्रचूराणि प्रचुरकाणि-प्रभूतानि। प्रचुरः आयो-लाभो यस्मिन्। उत्त० २८९।

पउल- साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। प्रजा० ३४।

पउलण- पचनविशेषः। प्रश्न० १४।

पउलियं- पक्कं अग्गिणा पउलियं। निशी० १५७आ।

पउल्लग- भाजनं स्थात्यादि। दशवै० ९७।

पउसा- म्लेच्छविशेषः। प्रजा० ५५।

पए- प्राग्प्रत्युषसि। ओघ० ८१। प्रगे। आव० ८९, ३३५, ६४०। प्राग्-पूर्वम्। ओघ० ४७। पूर्व, प्रगे। बृह० १६१।

पएणियार- प्रकृष्ट एणीचारः प्रैणीचारः। प्रश्न० १४।

पएस- प्रदेशः-लघुतरम्। भग० ३८१। प्रकृष्टो-निरंशो धर्माधर्माकाशजीवानां देशः-अवयवविशेषः। प्रदेशः। स्था० २४। प्रदेश-देशैकदेशः। जम्बू० ३३९। प्रदेशः-कर्मपरमाणुः। प्रजा० २१८। प्रदेशः-त्रसरेणवादिरूपः। जीवा० ३२२। प्रदेशः-परमाणुः। आचा० १३। प्रदेशः-जीवप्रदेशः कर्मपुद्गलसम्बन्धः। आव० ५१८। संयम-स्थानाविभाग-परिच्छेदः। बृह० १५। प्रकृष्टो-निरंशो देशः प्रदेशः। अनुयो० ६७। प्रकृष्टो-निरंशभागः प्रकृष्ट-सर्वसूक्ष्मः पुद्गलास्तिकायस्य देशो-निरंशो भागः प्रदेशः अनुयो० ६८। प्रकर्षणान्त्यत्वात्प्रदेशान्तराभावतः क्वचिदप्यनुगतारूपा-भावलक्षणेन दिश्यते-प्राग्वदुपदिश्यत इति प्रदेशः-निरंशो भागः। उत्त० ६७२। प्रदेशः-सूचकत्वादस्य अन्त्यप्रदेश-जीववादिनः अन्त्य एव प्रदेशो जीव इत्यभ्युपगतः। उत्त० ५२।

लघुतरभागः। जम्बू० १४४।

पएसकम्म- प्रदेशाः-कर्मपुद्गलाः जीवप्रदेशेष्वोत्प्रोतानां तद्रूपं कम्म प्रदेशकम्मः। भग० ६५।

पएसग्ग- प्रदेशाग्रः-प्रदेशपरिणामः। स्था० २५३।

पएसघण- प्रदेशघनः-संस्थानविशेषः। आव० ४४४।

पएसणामणिहत्ताउए- प्रदेशाः-कर्मपरमाणवः ते च संक्रमतोऽप्यनुभूयमानाः परिगृह्यन्ते तत्प्रधानं नाम, तेन सह निधत्त-मायुः प्रदेशनामनिधत्तायुः। प्रजा० २१८।

पएसनिवृत्तसंठाण- प्रदेशैः-आत्मप्रदेशैर्निवृत्तं-निष्पन्नं संस्थानं यस्य सः प्रदेशनिवृत्तसंस्थानः। प्रजा० १०८।

पएससंकम- यत्कर्मद्रव्यमन्यप्रकृतिस्वभावेन परिणाम्यते सः प्रदेशसंक्रमः। स्था० २२२।

पएसा- प्रदेशाः-जीवप्रदेशेष्वोत्प्रोताः कर्मपुद्गलाः। भग० ६५। प्रदेशाः-जीवप्रदेशा एषां ते जीवप्रदेशाः, चरमप्रदेश-जीवप्ररूपी निहनवः। आव० ३११।

पएसी- प्रदेशी। आव० १९७।

पओअणं- प्रयोजनं-प्रवर्तनम्। उत्त० ५०३।

पओए- प्रतोदः-आरादण्डलक्षणः। दशवै० २५०।

पओग- कायादिप्रयोगः। ओघ० २२१। प्रयोगः-

हरणक्रियायां प्रेरणमभ्यनुज्ञा च। आव० २३। प्रयोगः-

उपायः। राज० १४६। प्रयोगः-मनःप्रभृतीनां

व्याप्रियमाणानां जीवेन हेतु-कृतभूतेन यद् व्यापारणं

प्रयोजनं सः प्रयोगः। स्था० १०७। सम्यक्त्वादिपूर्वो

मनःप्रभृतिव्यापारः अथवा सम्यगादि-प्रयोगः-

उचितानुचितोभयात्मक औषधिव्यापारः, स्था० १५१।

प्रयोगः-प्रज्ञापनायाः षोडशमं पदम्। प्रजा० ६। प्रयोगः-

प्रकर्षणं युज्यते व्यापार्यते-क्रियासु सम्बन्ध्यते वा

साम्परायिकेयापथकर्मणा सहात्मा अनेनेति। प्रयोगः-

परि-स्पन्दक्रिया आत्मव्यापार इति। प्रजा० ३१७।

प्रयोगः-प्रयुज्यते इति व्यापारो धर्मकथाप्रबन्धो वा। सू० २३६। प्रयोगः-वीर्यान्तरायक्षयोपशमजीववीर्यजनितो

व्यापारः। उत्त० २०१। प्रयोगः व्यापारः। ज्ञाता० १७७।

प्रयोगः-व्यापारणं करणं आशंसा व्यापारः। स्था० ५१५।

प्रयोजनं, सपरिस्पन्द आत्मनः क्रियापरिणामो व्यापारः

इत्यर्थः। सम० ३१। व्यावृत्तिः। सम० १२७। व्यापारणं-

करणम्। उत्त० ५८८। प्रयोगः-जीवव्यापारः। भग० ५५।

प्रयोगः-कला-न्तरम्। जम्बू० २३२। प्रयोगः-  
स्वकलसाधनव्यापारः। दशवै० १२३। कायादिप्रयोगः।  
व्यव० ३९७ अ।

**पओगकरण-** प्रयोगकरणम्। उत्त० १९७।

**पओगकिरिया-** प्रयोगक्रिया मनोवाक्कायलक्षणा। सूत्र०  
३०४। प्रयोगक्रिया, विंशतिक्रियामध्ये षोडशमी। आव०  
६१२। प्रयोगो-मनोवाक्कायलक्षणस्तस्य क्रिया-करणं  
व्यापृतिरिति प्रयोगक्रिया, अथवा प्रयोगैः-  
मनःप्रभृतिभिः क्रियते-बध्यत इति प्रयोगक्रिया  
कर्मन्त्यर्थः। स्था० १५३।

**पओगगती-** प्रयोगः-प्रागुक्तः पञ्चदशविधः स एव गतिः  
प्र-योगगतिः। प्रज्ञा० ३२५।

**पओगपरिणया-** जीवव्यापारेण शरीरादितया परिणताः।  
भग० ३२८।

**पओगबंधे-** जीवप्रयोगकृतः। भग० ३९४।

**पओङ्ग-** प्रद्विष्टः। बृह० २३१ अ।

**पओय-** वनस्पतिविशेषः। भग० ८०४।

**पओयणं-** पहयोजनं-अवश्यकरणीयं प्रयोजनम्। प्रश्न०  
२४। प्रयोजनम्। प्रज्ञा० ४४७। येन प्रयुक्तः प्रवर्तते तत्  
प्रयोजनम्। आव० ३७७।

**पओयलङ्घो-** प्रतोत्रयष्टिः- प्राजनकदण्डम्। औप० ६४।

**पओलगिओ-** प्रावलग्नः। आव० १८७।

**पओलिता-** पक्त्वा। उत्त० १७९।

**पओस-** प्रद्वेषम्। औघ० १४९। म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५।  
प्रदोषं-द्वेषम्। उत्त० ६३३। रात्रेराघप्रहरः। स्था० २१४।  
प्रदोषः। आव० ६४०।

**पओसकाल-** प्रदोषकाले-रजनीमुखसमयः। उत्त० ५३९।

**पओसा-** प्रद्वेषः क्रोधादिः, नवमी प्रतिसेवा। भग० ९१९।

**पओसिया-** जनपदविशेषः। भग० ४६०।

**पकंठगा-** पीठविशेषः, आदर्शवृत्तौ पर्यन्तावनप्रदेशौ पीठौ  
प्रकण्ठौ। जम्बू० ५३।

**पकङ्कय-** प्रकर्षयति-आकर्षयतीत्यर्थः। व्यव० ८६ आ।

**पकप्प-** प्रकल्पः-अष्टाविंशतिविधः आचारप्रकल्पः,  
निशी-थान्तमाचारङ्गमिति। प्रश्न० १५४। प्रकर्षेण  
कल्पः प्रकल्पः-प्ररूपणा, प्रकर्षकल्पो वा प्रकल्पः-  
प्रकल्पप्रधानेत्यर्थः, कल्पनं पकल्पो छेदनेत्यर्थः।  
प्रकर्षाद्वा कल्पनं। प्रकल्पः। निशी० २१ आ।

थेरकप्पिया संथारुत्तरपट्टेसु सुवंति एस पकप्पो। निशी०  
१६१ आ। णिसीहज्झयणं। निशी० ८१ आ। प्रकल्पः-  
आचारः, आसेवा। स्था० १४३। अध्ययनविशेषः,  
निशीथः, व्यवस्थापनम्। सम० ४८। प्रकल्प्यं  
प्रकल्पनीयं पिण्डादि। स्था० ३००। प्रकल्पः-  
अष्टाशीतिग्रहेषुद्वापञ्चाशतम्। जम्बू० ५३५। प्रकल्पः-  
निशीथाध्ययनम्। व्यव० ४० आ। णिसीहं। निशी० १००  
आ।

**पकम्मति-** प्रक्रमते प्रक्रमते प्रकर्षेण प्रभवतीत्यर्थः। स्था०  
४३३।

**पकरण-** प्रकरण प्रक्रिया। प्रश्न० १४१।

**पकरणेयसुत्तं-** प्रकरणसूत्रम्। बृह० ५० आ।

**पकरेड-** बध्नाति। भग० ५१। स्थितिबन्धापेक्षया  
बद्धावस्था-पेक्षया वा पकरेड। भग० १०२। बन्धाति।  
प्रज्ञा० ४०७। प्रकरोति-प्रकर्षेण बध्नाति। पिण्ड० ४१।

**पकरेति-** प्रकरोति वेदयते बध्नाति च। भग० ९८

**पकाम-** प्रकामं-अत्यर्थम्। ज्ञाता० ३१। प्रकाम-अत्यर्थम्।  
भग० २९३। अनेकशः। बृह० १४ अ।

**पकारफकारबकारभकारमकारप्रविभक्ति-**

एकोनविंशतितमो नाट्यविधिः। जीवा० २४७।

**पकामरसभोई-** अत्यर्थमन्नभोक्ता। औप० ३८।

**पकित्तिया-** प्रकीर्तिताः- प्रकर्षेण सन्देहापनेतृत्वलक्षणेन  
संशब्दिताः। उत्त० ६७६।

**पकिन्ना-** प्रकीर्णानि दत्तानि। उत्त० ३६१।

**पकीण्णं-** प्रकीर्णं विक्षिप्तम्। प्रश्न० १५४।

**पकुव्व-** खण्डशः कृत्वा। सूत्र० १९३।

**पकुव्वए-** आलोचितेष्वपराधेषु प्रायश्चित्तदानतो विशुद्धिं  
कारयितुं समर्थः। भग० ९२०।

**पकुव्वी-** आलोइए जो पच्छितं कारवेति सो पकुव्वीः।  
निशी० १२८ आ। आलोचिते शुद्धिकरणसमर्थः। स्था०  
४८६।

**पकोड्डए-** प्रकोष्ठकः-कलाचिका। जम्बू० ५२७।

**पकोड्डी-** प्रकोष्ठीः-कलाचिका। प्रश्न० ८१।

**पक्क-** पक्वं-पाकप्राप्तम्। दशवै० २१८। पक्वः-

पाकप्राप्तः। आचा० ३९१। पक्वः-काठिन्यमुपगतः।

ज्ञाता० ११६। आसङ्खडिकः-कलहनशिलः। बृह० २९३

अ। जं० अग्निणा पउलियं पक्कं। निशी० १५७ आ।

पक्वम्। व्यव० २५६।  
 पक्कण- चाण्डालः। आव० २१७।  
 पक्कणकुल- मातङ्गगृहम्। बृह० १८ आ। गृहितकुलम्।  
 आव० ५२०।  
 पक्कणदेशज- पक्कणि। जम्बू० १९१।  
 पक्कणिय- पक्कणिकः  
 चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः। प्रश्न० १४।  
 पक्कणिया- म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५।  
 पक्कणी- धात्रीविशेषः। ज्ञाता० ४७।  
 पक्कतलमेहवन्ना- पक्वपत्रो यस्तलः-तालवृक्षः स च  
 मेघश्चेति विग्रहस्तस्येव वर्णो येषां ते तथा। ज्ञाता०  
 २३१।  
 पक्कभोम- कवालियादि पक्कभोमं। निशी० ६४ आ।  
 पक्कमहुर- फले द्वितीयो प्रकारः। स्था० १९६।  
 पक्कमेत्ति- मन्दपक्का। निशी० ७५ अ।  
 पक्का- पक्वा-पक्वः-पाकप्राप्तः। आचा० ३९१।  
 पक्काम- अर्धपक्वम्। ओघ० १००।  
 पक्किट्टगसंठाण- पक्वेष्टकासंस्थानं-  
 मानुष्यक्षेत्रबाह्यसूर्यचन्द्रातपक्षेत्रम्। जीवा० ३४७।  
 पक्किलियाणं- प्रकोडिताः-क्रीडितुमारब्धवत्तः। जम्बू०  
 ३९।  
 पक्कीलिय- प्रकीडितः-क्रीडितुमारब्धः। ज्ञाता० ४०।  
 पक्खंद- प्रस्कन्द-आक्रामथ। उत्त० ३६६। प्रस्कन्दन्ति-  
 अध्यवस्यन्ति। दशवै० ९५। प्रस्कन्दः-गमनम्। प्रश्न०  
 ९८।  
 पक्खः- पक्षः-परिग्रहोऽङ्गीकारः। भग० १७। पक्षः-वस्तु-  
 धर्मः-परिग्रहो वा। भग० १८। पक्षः-अङ्गैकदेशः। जीवा०  
 १८०। पक्षः-अङ्कमयः। जीवा० ३६०। पक्षः-पार्श्वः-  
 पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपः। प्रज्ञा० ३२९। मध्यरात्रः। ज्ञाता०  
 कालविशेषः। भग० ८८८। पक्षः-ग्रहः। जम्बू० १४१।  
 आचार्यपक्षकः-पक्षप्रदेशः। ओघ० १०७। पक्षः-पार्श्व  
 सन्निधिः। दशवै० २३५। पक्षः। जीवा० १८०। पक्षः-  
 पार्श्वोऽर्द्धरात्रिः। ज्ञाता० १२४।  
 पक्खच्छाया- पक्षमच्छाया। सूर्य० ९५।  
 पक्खणपरपक्खण- व्याप्तसुव्याप्तम्। मरण०।  
 पक्खपिंडा- पक्षपिण्डः-बाहुद्वयकायपिण्डात्मकः। उत्त०  
 ५४।

पक्खबाहा- पक्षबाहा-वेदिकैकदेशः। जीवा० १८२। पक्ष-  
 बाहुः-पक्षैकदेशभूतः। जीवा० ३६०। पक्षबाहुः-पक्षैकदेशः।  
 जीवा० १८०।  
 पक्खर- पक्खरः-तनुत्राणविशेषः। विपा० ४७।  
 पक्खलणं- प्रस्खलनम्। स्था० ३२८। आवडणं। निशी० ४९  
 अ।  
 पक्खा- पक्षाः- पक्षाः-पञ्चदशाहोरात्रप्रमाणाः। स्था० ८६।  
 पक्खाविकखी- पक्षेपणी। गच्छा ०।  
 पक्खामणं- पक्ष्यासनं-यस्याधोभागे नानास्वरूपाः  
 पक्षिणः। जीवा० २००। पक्ष्यासनानि येषामधो भागे,  
 नानास्वरूपाः। पक्षिणः। जम्बू० ४५।  
 पक्खिकायणा- कौशिकगोत्रप्रकारः। स्था० ३९०।  
 पक्खणि- पक्षिणि-शकुनिकासारिकादि। उत्त० ४०९।  
 पक्खित- प्रक्षिप्तं-आस्यगतं-मुखे प्रक्षिप्तम्। ओघ० ८८।  
 पक्खियं- पाक्षिकं-पक्षातिचारनिर्वृत्तम्। आव० ५६३।  
 पाक्षिकः- अर्धमासः। व्यव० ३९६ अ।  
 पक्खिविरालि- पक्षिविशेषः। भग० ६२७।  
 पक्खिविरालिया- चर्मपक्षिविशेषः। प्रज्ञा० ४९।  
 पक्खिविराली- चर्मपक्षिविशेषः। जीवा० ४१।  
 पक्खुलणं- अधस्तात् उपरि वाऽऽस्फालनं प्रस्खलनम्।  
 बृह० २०५ आ। भूमावसं प्राप्तं कतिपयैरङ्गैः प्राप्तं वा  
 प्रस्ख-लनम्। बृह० २२९ आ।  
 पक्खुलमाणि- प्रकर्षणं स्खलद्गत्या गच्छन्ति। बृह०  
 २२८ आ।  
 पक्खेव- अर्धपथे त्रुटितशम्बलस्य शम्बलपूर्णं द्रव्यं प्रक्षे-  
 पकः। ज्ञाता० १९३। प्रक्षेपः-प्रक्षेपणीयः। सूर्य० १६७।  
 निशी० ४९ अ।  
 पक्खेवाहार- कावलिकः। भग० २७।  
 पक्खोडिज्ज- प्रस्फोटनं-निरन्तरं बहु वा स्फोटनम्।  
 दशवै० १५३।  
 पक्खोलण- प्रस्खलद्। निर० ३४।  
 पक्षिगृहकोकिला- अण्डजपक्षिविशेषः। आचा० ७०।  
 पक्षी- सम्पातिमजीवविशेषः। आचा० ५५।  
 पक्व- आसङ्खडिकः। बृह० २९३ अ। पुनः स्थिरो अव-  
 तिष्ठति, उल्लापभयात् कार्यमपि न शेषका उदिरन्ति।  
 व्यव० ३१६।  
 पगंठग- प्रकण्ठकः-पीठविशेषः। जीवा० २०९। पीठक-

विशेषः। जीवा० २१३, २१९।  
**पग-** प्रभातः। निशी० १०१ अ।  
**पगइ-** प्रकृतिः-कुम्भकारादिश्रेणिः। औप० ७२। प्रकृतिः-  
 स्वभावः। जीवा० २७७। प्रकृतिः- कर्मप्रकृतिविषयको  
 भगवत्याः प्रथमशतके चतुर्थोद्देशकः। भग० ६।  
**पगइभद्वया-** प्रकृतिभद्रकता-स्वभावत एवापरोपतापिता।  
 उपा० २९।  
**पगओ-** प्रगतः-परिचितः। आव० ७१०। प्रकृतोऽधिकृतः।  
 निशी० ९८ अ।  
**पगड-** प्रकृतं बद्धं वा। आचा० १६१। प्रकृतं निर्वर्तितम्।  
 दशवै० २७३। प्रगर्तः-महागर्तः। आचा० ४११। प्रकटः-  
 प्रख्यातम्। उत्त० ३८४।  
**पगणिया-** गणनया यत्र दीयते सा प्रगणिता।  
 प्रकर्षणवक्ष्यमा-णलक्षणजातिनामविशेषनिर्द्धारणेन  
 पाषंडिना गणना यस्या सा प्रगणिता। बृह० १४० अ०।  
 प्रकर्षण गण्या प्रगण्या पासंडीणं। निशी० १८६ अ।  
**पगत-** प्रकृतः-संमत। बृह० २२ अ। प्रकृतः प्रकरणः। बृह०  
 १६७ अ। प्रकृतम्। आव० ३०६। प्रकृतम्। आव० ८२२।  
**पगता-** प्रख्याता। निशी० ३०१ अ। वृष्णिदशायां  
 पञ्चममध्ययनम्। निर० ३९।  
**पगति-** प्रकृतिः-अंशः, भेदः। स्था० २२०। प्रकृतिः-  
 अविशेषितः। स्था० २२०।  
**पगतीउदीरणा-** यन्मूलप्रकृतीनामुत्तरप्रकृतीनां वा दलिकं  
 वीर्यविशेषेणाकृष्योदये दीयते सा प्रकृत्युदीरणा। स्था०  
 २२१।  
**पगप्प-** प्रकल्पः-आचारः। आचा० २८१।  
**पगप्पएत्ता-** प्रकल्पयित्वा-विकल्पर्य वा। सूत्र० २९९।  
**पगल्भ-** प्रगल्भं-अतीवपरिपुष्टम्। जम्बू० १०४। प्रगल्भः-  
 संपूर्णः। बृह० ११९ अ। प्रगल्भं-अतीव परिपुष्टम्। जीवा०  
 २६७। प्रगल्भं-समर्थम्। भग० ४७०।  
**पगल्भइ-** प्रगल्भते-धाष्ट्यमवलम्बते। उत्त० ४४।  
**पगल्भा-** प्रगल्भा-पार्श्वान्तेवासिनी प्रव्राजिका। आव०  
 २०८।  
**पगयं-** प्राकृतं-भोजनम्। ओघ० ७२। प्रकृतं-उपयोगः।  
 आव० २७७। प्रकरणम्। आव० ५६०। प्रकृतं-गौरवा-  
 र्हस्वजनभोजनादिकम्। पिण्ड० १०३। प्रकृतं-प्रस्तावः।  
 आचा० ४०७। प्रकृतं-प्रकरणं-प्राघूर्णभोजनादिकम्।

पिण्ड० १४८। प्रकृतः-अधिकृतो महामनुष्यः। व्यव० २४४  
 अ।  
**पगरणं-** प्रकरणम्। आव० ८२२। ओघ० ९७। प्रकरणं-  
 अनेकार्थाधिकारवत्कायप्रकरणादि। दशवै० १४१।  
**पगरिए-** प्रगलितः-गलतकुष्ठः। पिण्ड० १५७।  
**पगरिस-** प्रकर्षः-विशिष्टार्थावगमरूपः। जीवा० २५४।  
**पगलिय-** प्रगलितः-सातत्यव्यूढः। नन्दी० ४७। प्रगलितः-  
 क्षरितः। ज्ञाता० २६।  
**पगहः-** प्रकर्षण प्रधानतया चागृह्यते इति प्रगहः-  
 प्रभूतजन-मान्यः प्रधानपुरुषः। व्यव० ४६ अ।  
**पगहिओ-** प्रगृह्यः। आव० २९७।  
**पगहीय-** प्रगृहीतः-गुरुसकाशादङ्गीकृतः। ज्ञाता० २१३।  
**पगाढं-** प्रगाढं-प्रकर्षवत्। भग० २३१। प्रगाढ-प्रकर्षवत्।  
 प्रश्न० १५६। प्रकर्षवृत्तिः। भग० ४८६।  
**पगाम-** प्रकामं-चातुर्यामं उत्कटं वा। आव० ५७४।  
 द्वात्रिंशा-दिकवलाधिकं आहारं प्रकामम्। पिण्ड० १७४।  
 प्रकाम-अत्यर्थम्। उत्त० ६२५। ज्ञाता० ४४। प्रकामं-  
 द्वात्रिंशत्क-वलकाः प्रकामम्। व्यव० २२ अ।  
**पगामस-** प्रकामशः-बहुशः। उत्त० ४३३।  
**पगामाए-** प्रकामं-अत्यर्थम्। उत्त० ५३२।  
**पगार-** प्रचारः-प्रवृत्तिः। ज्ञाता० ४२।  
**पगासंति-** प्रकाशयन्ति। सूर्य० ६३। परपक्खे उब्भावेति।  
 निशी० १६ अ।  
**पगास-** प्रकाशः-प्रसिद्धिः। सूत्र० १४७। प्रकाशः-प्रतिमता।  
 जीवा० २०५। प्रकाशः-प्रतिमता। जम्बू० ४९। प्रकाशः-  
 प्रतिभा। जीवा० १६४। प्रकाशः-प्रतिभा, आकारो वा।  
 जीवा० २६७। प्रकाशः-व्यक्तभावः। जम्बू० ५२८।  
 प्रकाशः-प्रकटः। नेत्रवक्त्रादिविकाशः। अनुयो० १३९।  
 प्रकाशो-अर्थः। बृह० ३३। प्रकाशः-प्रभा। ज्ञाता० २१।  
 प्रकाशीभवतीति प्रकाशः-क्रोधः। सूत्र० ६९। प्रकाशः।  
 आव० ६२५। प्रकाशः-अर्थः। बृह० २०२ अ। प्रका-  
 शोऽर्थस्य प्रकाशकः। व्यव० २१ अ।  
**पगासई-** प्रभासते-दीप्तये। प्रकाशयति प्रभासते वा। आव०  
 ४९७।  
**पगासन-** प्रकाशनं-प्रदीपादिनोद्योतकरणम्। आचा० ५०।  
 प्रकाशनं-आलोचनम्। व्यव० १२३ अ।  
**पगासण्या-** प्रकाशना-विहारविकटना अपराधविकटना

चेत्यर्थः। व्य० ९१ आ।

**पगासणा-** प्रकाशना-प्रभासना, निर्मलीकरणम्। उत्त० ६२२।

**पगासभोई-** प्रकाशभोजी-दिवसभोजी। आव० ६४७।

**पगासमुह-** प्रकाशमुखः-विपुलमुखः। ओघ० १८२।

**पगासवादी-** प्रकाशवादी-सर्वसमक्षं गुरुदोषभाषी। बृह० २१४ अ।

**पगिज्झय-** प्रगृह्य। औप० ९९। प्रगृह्य-उत्क्षिप्य। आचा० ३८२।

**पगिज्झयपगिज्झय-** प्रगृह्य प्रगृह्य- पौनःपुन्येन प्रसार्य। आचा० ३४१।

**पगग्रह-** प्रग्रहः-रश्मी। भग० ४५९। पग्रहः-उपादेयवाक्यः। उत्त० ६१९। प्रग्रहः-प्रकर्षणगृह्यते वचो प्रग्रहः-ग्राह्य-वाक्योनायकः। आचा० ८९। प्रगृह्यते-उपादीयते आदेय-वचनत्वाद्यः स प्रग्रहः ग्राह्यवाक्यो-नायकः। स्था० ३। प्रकर्षणं गृह्णाती प्रग्रहः। ओघ० २०७। प्रग्रहः। उपा० ४४।

**पगग्रहठाण-** प्रग्रहस्थानं-यद्यस्यायुधस्य ग्रहणस्थानम्। उत्त० ४२२।

**पगग्रहित-** प्रगृहीतं आदरप्रतिपन्नत्वात्। स्था० २४७।

**पगग्रहिय-** प्रगृहीतं-भोजनार्थमुत्पादितम्, प्रकर्षणं गृहीत्वादौ-धिकम्। औप० ३७। प्रगृहीतः-बहुमानप्रकर्षादाश्रितः। भग० १२५। प्रगृहीतः-बहुमानप्रकर्षाद् गृहीतः। ज्ञाता० ७६।

**पगग्रहियतर-** प्रगृहीततरम्। आचा० ३७४।

**पगग्रहियतरंग-** प्रगृहीततरकं-प्रकर्षणं गृहीततरं प्रगृहीततरं तदेव प्रगृहीततरकम्। आच० २९२।

**पगग्रहिया-** प्रगृहीता नाम भजनवेलायां दातुमभ्युद्यते करादिना प्रगृहीतं यद्भोजनजातं भोक्तुं वा स्वहस्तादिना तद् गृह्यते। षष्ठी पिण्डेषणा। स्था० ३८७। जं असणादिगं भोक्तुकामेण कंसादिभायणे गहियं भुंजामित्ति असंसङ्गिणं चेव साधु आगतो तं चेव देति एस पगग्रहिया। निशी० १२ अ। प्रगृहीता-प्रकर्षणाभ्युपगता। अनुत्त० ३।

**पगग्रहीय-** प्रगृहीतं-भोजनार्थमुत्पादितमिति। स्था० ४६५।

**पघंसणं-** पुणो पुणो पघंसणं। निशी० ११९ अ।

**पङ्ककाण्ड-** रत्नप्रभायां द्वितीयकाण्डम्। सम० ८८।

**पचंकम्मणगं-** प्रचङ्क्रमणं-भ्रमणम्। ज्ञाता० ४१।

**पचचंग-** प्रत्यङ्गं-कुचकक्षादि। उत्त० ४२८।

**पचचंगिर-** परपोषस्यात्मनो लगनम्। बृह० २२३ अ।

**पचचंगिरदोसो-** अपरितोषः। निशी० १६८ अ।

**पचचंगिरा-** प्रत्यङ्गिरः-अपकारः। बृह० १६८ आ।

**पचचंत-** प्रत्यन्तं-सीमग्रामः। उत्त० १७९। प्रत्यन्तं-

प्रत्यर्थिन्। आव० ५०६। प्रत्यन्तः। उत्त० २२५, ३९५।

प्रत्यन्तं-सीमा। आव० ६७३। प्रत्यन्तः। आव० ६९३।

प्रत्ययन्तकः-नीचकः। आव० ५५७। प्रत्यन्तः। आव०

८१५। प्रत्यन्तः-सीमासन्धिवर्ती। व्य० १७० आ।

**पचचंतगाम-** प्रत्यन्तग्रामः। आव० ३५१।

**पचचंतणगर-** प्रत्यन्तनगरं, शिक्षायोगदृष्टान्ते

जितशत्रुराज-धानी। आव० ६७८।

**पचचंतणयरं-** प्रत्यन्तनगरं-नीचनगरम्। आव० ७१९।

**पचचंतराया-** प्रत्यन्तराजः। आव० १७३।

**पचचंता-** प्रत्यन्तः, म्लेच्छाद्युपद्रवोपेतः। बृह० २३१ अ।

प्रत्यन्ताः-सीमावर्तिनः। व्य०।

**पचचंति-** प्रत्यन्तदेशः-म्लेच्छाद्युपद्रवोपेतः। ओघ० ६३।

पच्यन्ते। दशवै० ८७। निशी० ९ अ।

**पचचंतिय-** प्रत्यन्तः। आव० ३५८।

**पंचचंतियविसए-** देसविसेसो। निशी० २०८ आ।

**पचचंतियसुणओ-** प्रत्यन्तिकश्वा। आव० ७११।

**पचचङ्ग-** प्रत्ययितः। आव० ६९४।

**पचचङ्गय-** प्रत्ययः-कारणम्। आव० २७। प्रत्ययः-कारणं शपथः ज्ञानं हेतुः विश्वासः निश्चयश्च। नन्दी० ७६।

**पचचए-** प्रत्ययः-प्रतीतिरविसंवादिवचनम्। ज्ञाता० २२।

**पचचओ-** प्रत्ययः-कारणम्। प्रजा० ५३९। प्रत्ययः। उत्त० १०३।

**पचचक्खं-** इन्द्रियार्थसंनिकर्षोत्पन्नं

ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं

यत्रात्मार्थग्रहणं प्रति साक्षाद् व्याप्रियते तदेव प्रत्यक्षम्।

सूत्र० २२५। प्रत्यक्षं-साक्षात्। आचा० ३०। अश्नाति-

अश्नते-व्याप्नोति अर्थानिति अक्षः-आत्मा तं प्रति

यद्वर्तते ज्ञानं तत् प्रत्यक्षं

निश्चयतोऽवधिमनःपर्यायकेवलानि, अक्षाणि

वेन्द्रियाणि प्रति यत्तत्प्रत्यक्षव्यवहारतः चक्षुरादिप्र-

भवम्। स्था० २६३। अश्नुते-ज्ञानात्मना अर्थान्-व्याप्नो-

तीति अक्षो- जीवाः, 'अशु भोजने' इत्यस्य वा अश्र्नाति-  
भुङ्ते पालयति वा सर्वार्थानित्यक्षो-जीव एव प्रतिगतं-  
आश्रितमक्षं प्रत्यक्षम्। *अन्यो० २११।* अक्षं-जीवं अक्षाणि  
वेन्द्रियाणि अतिगतं प्रत्यक्षम्। *भग० २२२।* तं  
प्रत्यव्यव-धानेन यद्वर्तते ज्ञानं तत्भवति प्रत्यक्षम्।  
*बृह० ८ अ।* प्रत्यक्षः-अवधिमनःपर्यायकेवलाख्यः, स्वयं  
दर्शनलक्षणः। *स्था० १५१।* प्रत्यक्षं-  
अव्यवहितत्वेनार्थसाक्षात्करणादक्ष-मिति। *स्था० ५०।*  
प्रत्यक्षं-इन्द्रियमनोनिरपेक्षमात्मनः  
साक्षात्प्रवृत्तिमदवध्यादिकम्। *नन्दी० ७१।*

**पच्यकखाओ-** प्रत्याख्यातीति प्रत्याख्याता-गुरुविनेयः।  
*आव० ८०३।*

**पच्यकखाण-** प्रत्याख्यानं नमस्कारसहितादि। *स्था० १२६।* प्रत्याख्यानं-निवृत्तिद्वारेण प्रतिज्ञाकरणम्।  
*स्था० १५६।* प्रत्याख्यानं-निवृत्तिः। *स्था० ४९८।*  
प्रत्याख्यानं-निरोध-प्रतिज्ञानम्।  
जिनकल्पादिप्रतिपत्त्या परिहारः। *भग० ७२७।*  
प्रमादप्रातिकूल्येन मर्यादया ख्यान-कथनं प्रत्याख्यानं-  
नमस्कारसहितादि। *स्था० २३६। सम० १२०।* प्रत्या-  
ख्यानः-निरोधलक्षणः। *उत्त० ५८९।* प्रत्याख्यानं नवमं  
पूर्वम्। *स्था० १९९।* प्रत्याख्यानं-पौरुष्यादिनियमः।  
*भग० १००।* प्रत्याख्यानं-पौरुष्यादिविषयम्। *भग० ३२३।*  
नवमं पूर्वम्। *सम० २६।* प्रत्याख्यानं-नमस्कारसहिता।  
*ज्ञाता० १३४।* प्रत्याख्यानं-निवृत्तिः। *भग० २९६।*  
प्रत्याख्या-नम्। *उत्त० १७६।* प्रत्याख्यानं  
सूत्रकृताङ्गस्य विंशति-तममध्ययनम्। *उत्त० ६१६।*  
प्रत्याख्यानं निषेधलक्षणम्। *आव० ४७८।* प्रत्याख्यानं-  
अनागतस्य स्थूलप्राणातिपाता-देरेव। *प्रज्ञा० ३९९।*  
प्रत्याख्यानं-पौरुष्यादिः। *भग० १३६।*

**पच्यकखाणकिरिया-** प्रत्याख्यानक्रिया, सूत्रकृताङ्गे चतुर्थ-  
मध्ययनम्। *आव० ६५८।*

**पच्यकखाणप्पवाय-** प्रत्याख्यानप्रवादं-प्रत्याख्यानं  
सप्रभेदं यदति तत् प्रत्याख्यानप्रवादं नवमं पूर्वतम्।  
*नन्दी० २४१।*

**पच्यकखाणफल-** विनिवृत्तिफलम्। *भग० १४१।*

**पच्यकखाणस्स अड्ड-** प्रत्याख्यानार्थः-आश्रवद्वारनिरोधः।  
*भग० १००।*

**पच्यकखाणा-** प्रत्याख्याना-मूलगुणोत्तरगुणविषयम्,  
योग-संग्रहे त्रयोविंशतितमचतुर्विंशतितमौ योगौ। *आव० ६६४।*

**पच्यकखाणावरण-** प्रत्याख्यानं-आ मर्यादया  
सर्वविरतिरूप-मेवेत्यर्थो वृणोतीति प्रत्याख्यानावरणः।  
*स्था० १९४।* चतुर्षु कषायेषु तृतीयः। *सम० ३१।*  
प्रत्याख्यानं-सर्व विरतिरूप-मावीयते यैस्ते  
प्रत्याख्यानावरणः। *प्रज्ञा० ४६८।*

**पच्यकखाणी-** याचमानस्य प्रतिषेधवचनं प्रत्याख्यानी।  
*प्रज्ञा० २५९।* प्रत्याख्यानो-असत्यामृषाभाषाभेदः। *दशवै० २१०।*

**पच्यकखातं-** प्रत्याख्यानं-परिहारः। *आव० ८५६।*

**पच्यकखामि-** प्रतीपभिमुख ख्यापनं सावद्ययोगस्य  
करोमि प्रत्याख्यमि। *आव० ४५५।* प्रतिशब्दः प्रतिषेधे  
आडाभि-मुख्ये ख्या-प्रकथने, पतीपमभिमुखं ख्यापनं  
प्रत्याख्याति। *दशवै० १४४।* प्रत्याचक्षे-संवृतात्मा  
सांप्रतमनागतप्रतिषेधस्य आदरेणाभिधानं करोति।  
*दशवै० १४४।*

**पच्यकखायं-** प्रत्याख्यात-सर्वविरतिप्रतिपत्तितः  
प्रतिषेधि-तम्। *औप० ८५।* प्रत्याख्यातं-  
भूयोऽकरणतयानिषिद्धम्। *प्रज्ञा० २६८।* प्रत्याख्यातं-  
अतीतं निन्दया एष्यमकरण-तयेति। *आव० ७६२।*  
प्रत्याख्यातं-वर्जितमनागतकाल-विषयम्। *भग० ३६।*  
प्रत्याख्याता-अनशनस्थः। *आव० १३२।*  
हेत्वभावतः-प्रत्याख्यातम्। *दशवै० १५१।*

**पच्यकखावितओ-** प्रत्याख्यापयन्तीति प्रत्याख्यापयिता-  
शिष्यः। *आव० ८६०।*

**पच्यगिरा-** अविश्वस्तः। *निशी० १६ अ।*

**पच्यगिरादोस-** प्रत्यङ्गिरादोषः-परकीयोऽप्यात्मनि  
लगती-त्यर्थः। *बृह० ३०८ अ।*

**पच्यडं-** पुघडं-पूर्णम्। *नन्दी० १।*

**पच्यड्डिया-** प्रत्यङ्गिका-द्वात्रिंशत्  
लौकिकमबद्धकरणम्। *आव० ४६५।*

**पच्यणीग-** मोक्षप्रत्यनीकत्वात् प्रत्यनीकः,  
सेज्जायरधूअप-च्यणीगोवलकखणाओ वा पच्यणीगो  
लोभो भण्णति। *निशी० ७७ अ।*

**पच्यणीय-** प्रत्यनीकः-छीद्रान्वेषी। *जीवा० २८०।*

प्रत्यनीकं-दुरभ्यता, अभ्यता। सूर्य० २९६।  
**पच्चणुभभवमाण-** प्रत्येकमनुभवन्। जीवा० २०१।  
**पच्चणुभभवमाणा-** प्रत्येकमनुभवनम्। जम्बू० ४७।  
**पच्चणुभभवमाणी-** प्रत्यनुभवन्ती-वेदयन्ती। ज्ञाता० २०४।  
**पच्चति-** पच्यते। आव० २०६।  
**पच्चतिते-** प्रत्ययात्-  
 इन्द्रियानिन्द्रियलक्षणान्निमित्ताज्जातः प्रात्ययिकः  
 आप्तवचनप्रभवः। स्था० १५१।  
**पच्चत्थिग-** प्रत्यर्थिवः-प्रत्यनीकः। पिण्ड० १३१।  
 पडिणीओ। निशी० ९३अ।  
**पच्चत्थिम-** पश्चिमदिक्। स्था० ६८।  
**पच्चत्थिया-** प्रत्यनीका। निशी० ९८आ।  
**पञ्चत्थी-** प्रत्यर्थी-परस्माद् मयेदं लभ्यमिति याचते।  
 व्यक्० ४अ।  
**पच्चत्थुय-** प्रत्यवस्तृतं-आच्छादितम्। जीवा० २१०।  
 प्रत्यवस्तृतः-पुनः पुनराच्छादितः। ज्ञाता० १२५।  
 प्रत्यवस्तृतः-आच्छादितम्। जम्बू० ५५।  
**पच्चप्पिणमाणे-** प्रत्यर्पयितुम्। स्था० ३१२।  
**पच्चप्पिणह-** प्रत्यर्पयत-कृतां सती निवेदयत। ज्ञाता० २१।  
 प्रत्यर्पयत-निवेदयत। भग० ३१७।  
**पच्चप्पिणयव्वो-** प्रत्यर्पणीयः। आव० ४१६।  
**पच्चभिजाणेज्जा-** प्रत्यभिजानीयात्-अनुमिन्यात्।  
 अनुयो० २१३। प्रत्यभिजानीयात्। आव० ८२३।  
**पच्चमित्त-** प्रत्यमित्रः-प्रातिवेशिमकनृपः। औप० १२।  
 प्रत्यमित्रः-यः पूर्वमित्रं भूत्वापश्चादमित्रो जातः। जीवा० २८०।  
**पच्चय-** प्रत्ययः-अवबोधः। स्था० १३। प्रत्ययः-सर्वाति-  
 शयनिधानमतीन्द्रियार्थपददर्शनाव्यभचारि। सम० १२५।  
 प्रत्ययं-बन्धनकारणम्। आचा० ९१।  
**पच्चयकरणं-** प्रत्ययकरणं-दूषणापोहेन प्रतीत्युत्पादनम्।  
 ज्ञाता० १९१।  
**पच्चयकसाए-** प्रत्ययकषायाः कषायाणां ये प्रत्ययः-यानि  
 बन्धकरणानि ते चेह मनोज्ञेतरभेदाः शब्दादयः। आचा० ९१।  
 प्रत्ययकषायः-खल्वान्तरकरणविशेषः। तत्पुद्ग-  
 ललक्षणः। आव० ३९०।  
**पच्चयय-** प्रत्ययः-ज्ञानकरणं, प्रतीयतेऽनेनार्थ इति।

सकलावरणक्षयाय उत्पत्तिरेव वा। जम्बू० ४१।  
**पच्चला-** प्रत्यलौ। उत्त० १०५।  
**पच्चलिया-** प्रत्यादिता-जागरिता। आव० ६९०।  
**पच्चवत्थाणं-** प्रत्यवस्थानं-शब्दार्थन्यायतः  
 परोपन्यस्तदोष-परिहाररूपम्। उत्त० २०।  
**पच्चवयार-** प्रत्यवतारः-अवतरणं, आविर्भाव इति। जम्बू० १८।  
**पच्चवाय-** प्रत्यपायः। आव० ६३२। प्रत्यपायं-व्याघादिप्र-  
 त्यपायम्। आव० ३८४। प्रत्यपायः- दोषः। ओघ० १९।  
 एकस्मिन् पथि गच्छतां दिवा प्रत्यपायः। ओघ० ६६।  
 प्रत्यपायः-उपघातहेतुरध्यवसान्निमित्तादिः। उत्त० ३३५।  
 ऐहलौकिकः अपायः। बृह० ।  
**पच्चाउट्टणा-** आवर्तनं प्रति ये गता  
 अर्थविशेषेषूत्तरोत्तरेषु-विवक्षिता  
 अपायप्रत्यासन्नतरता बोधविशेषास्ते प्रत्यावर्तना।  
 नन्दी० १७६।  
**पच्चाणि-** सन्मुखम्। व्यक्० १८३।  
**पच्चापिच्चियए-** बल्वजः-तृणविशेषः तस्य पिच्चियंति  
 कुट्टितत्वक् तन्मयम्। स्था० ३३८।  
**पच्चामित्त-** प्रत्यमित्रः-प्रातिवेशिमकः। ज्ञाता० ५६। प्रत्य-  
 मित्रः- वस्तु २ प्रति अमित्रः। ज्ञाता० ८७। प्रत्यमित्रं-  
 अकारणवत्सलः। राज० १०।  
**पच्चामित्तता-** अमित्रसहायता। भग० ५८१।  
**पच्चायाइ-** प्रत्यायातिः-प्रत्यागमनं, प्रत्याजातिः  
 प्रतिजन्म। स्था० २०२। प्रत्याजायते उत्पद्यते। भग० १११।  
 प्रत्या-याति-प्रख्यातिं याति। सूत्र० ३१०।  
 प्रत्यायाति-आग-च्छति। जीवा० २६२।  
**पच्चायति-** प्रत्याजायते-उत्पद्यते। उपा० २८।  
**पच्चायाता-** प्रत्याजातं-जन्म। जम्बू० १६९।  
**पच्चायाती-** प्रत्यायाति-जन्म। स्था० ३५५।  
**पच्चायाय-** प्रत्याजातं-जन्म। भग० ३०८।  
**पच्चायहिइ-** प्रत्याजनिष्यते। स्था० ४६१।  
**पच्चालीढं-** आलीढविवरीयं। निशी० ९०अ। प्रत्यालीढं-  
 आलीढविपरीतं, लोकप्रवाहे द्वितीयं स्थानम्। आव० ४६५।  
**पच्चावड-** प्रत्यावर्तः-आवर्तस्य प्रत्यभिमुख आवर्तः।  
 जीवा० १८९।

पच्चावत्त- एकस्यावर्तस्य-प्रत्यभिमुखः आवर्तः

प्रत्यावर्तः। जम्बू० ३१।

पच्चासूरण- प्रत्यासूरणं-संमुखीभूय युद्धकरणम्। व्यव० १४२ आ।

पच्चाहरय-प्रत्याहरतः-व्याकुर्वतः। सम० ६२।

पच्चूढयतो- परिवृढं। निशी० १६८ आ।

पच्चुण्ण- प्रत्युत्तम्। दशवै० ४४।

पच्चुत्थए- प्रत्यवस्तृतं-आच्छादितम्। ज्ञाता० १५।

पच्चुत्पन्नविनाशि- प्रत्युत्पन्नविनाशि-प्रत्युत्पन्न-  
वर्तमानलब्धं बस्तिवत्यर्थो विनाशितं-उपहतं येन  
तत्तथा, प्रत्युत्पन्नं विनाशयतीत्यं शीलं  
प्रत्युत्पन्नविनाशि वा। स्था० ९८।

पच्चुप्पण- प्रत्युत्पन्नः- गुणितः। प्रज्ञा० २८०।

पच्चुप्पण्ण- प्रत्युत्पन्नं-साम्प्रतमुत्पन्नं-  
वर्तमानमित्यर्थः-प्रति प्रतिवोत्पन्नं-  
भिन्नव्यक्तिस्वामिकं वा। आव० २८४।

पच्चुप्पणपरायण- प्रत्युत्पन्नपरायणः-प्रत्युत्पन्नं-  
वर्तमानं तस्मिन्परायणः तन्निष्ठः। उत्त० २७५।

पच्चुप्पण्णा- सहजायगादि मित्ता। निशी० २९ आ।

पच्चुप्पन्न- साम्प्रतमुत्पन्नं प्रत्युत्पन्नं  
वर्तमानकालभावि। अनुयो० २६५। प्रत्युत्पन्नः-  
अप्राप्तपूर्वो वर्तमान इत्यर्थः। भग० ३९९।

पच्चुरस- प्रत्युरसं-सम्मुखम्। पिण्ड० ७६। प्रत्युरसं-गुरो-  
रभिमुखम्। ओघ० १८२।

पच्चुवगार- प्रत्युपकारः। उत्त० २२०।

पच्चुवसमति- प्रत्युपशमयति। आव० १२२।

पच्चुवेक्ख- प्रत्युपेक्ष्य-पर्यालोच्य। सूत्र० ४२६।

पच्चुवेक्खइ- प्रत्युपेक्षते-निरीक्षते। औप० ६४।

पच्चुवेक्खमाणे- समुत्पेक्षमाणो-व्यापारयन्। राज० ११५।

पच्चूसं- प्रत्यूषः-कालविशेषः। ओघ० २२। प्रत्यूषः। आव०  
३७०, ५७७। रात्रेः चरमप्रहरः। स्था० २१४।  
प्रत्यूषकाललक्षणः। ज्ञाता० २१।

पच्चोअड- प्रत्यवतट-आच्छादनः। जम्बू० ५८। प्रत्यव-  
तटानि तटसमीपवर्त्यभ्युन्नतप्रदेशाः। जम्बू० २९१।

पच्चोगलिय- प्रत्यवगलितः। आव० ५५८।

पच्चोणियत्तं- प्रत्यवनिवृत्तं-अधःपतितम्। प्रश्न० ५०।

पच्चोणी- सन्मुखागमनम्। पिण्ड० १२८।

पच्चोणीए- संमुखं। निशी० ९७ आ।

पच्चोयड- प्रत्यवतटं-तटसमीपवर्ती अत्युन्नतप्रदेशः।

जीवा० १९७। अवच्छादितः। राज० ७१। प्रत्यवतटः-  
आच्छा-दनः। जीवा० २१४।

पच्चोयडाओ- प्रत्यवतटानि-

तटसमीपवर्त्यभ्युन्नतप्रदेशा यासां ताः। जम्बू० ४१।

पच्चोरुहइ- प्रत्यवरोहति। ज्ञाता० १६। प्रत्यवरोहति-मध्ये  
प्रविशति। जीवा० २५४।

पच्चोवयमाण- प्रत्यवपतत्। भग० ७२१।

पच्चोवयंत- प्रत्यवपतन्-प्रतिनिवर्तमानः। प्रश्न० ७६।

पच्चोसक्कइ- प्रत्यवसर्पति व्यावर्तते। भग० ५७६।

पच्चोसक्कति- प्रत्यवष्वक्कते-पश्चादवसर्पति। सूर्य०  
२८९।

पच्छंत- पुरोहडं वा वच्चं। निशी० १९३ आ।

पच्छंभाग- पश्चाद्भागः। स्था० ४६९। पश्चाद्भागः। सूर्य०  
१०४।

पच्छ- प्रच्छन्नकम्। विपा० ७१।

पच्छकम्म- पश्चात्कर्म-

यत्पुनर्भक्तादेदानात्पश्चात्क्रियते तत् पश्चात्कर्मः।  
पिण्ड० १४९।

पच्छणं- ह्रस्वैः क्षुरादिभिस्त्वचो विदारणम्। विपा० ४१।

पच्छणणं- प्रक्षणनं-जीरणम्। प्रश्न० १६४।

पच्छणा- प्रक्षणाति-ह्रस्वानि त्वचो विदारणानि। ज्ञाता०  
१८१।

पच्छदं- प्रच्छदो-वस्त्रविशेषः। ज्ञाता० २२१।

पच्छन्न- प्रच्छन्नं-अगीतार्थासमक्षम्। स्था० २०३।

पच्छन्नपाव- प्रच्छन्नपापः-कूटप्रयोगकारी। आव० ५८९।

पच्छन्नभासी- प्रच्छन्नभाषी-

सिद्धान्तार्थमविरुद्धमवदातंसार्व-जनीनं तत्  
प्रच्छन्नभाषणेन गोपकः, प्रच्छन्न वाऽर्थमपरिण-ताय  
भाषकः। सूत्र० २५१, १८।

पच्छय- प्रच्छदः-वस्त्रविशेषः। भग० ३१८।

पच्छवत्थुग- पश्चाद्वास्तुकं-पश्चाद्गृहकम्। प्रश्न०  
१३८।

पच्छा- पश्चाच्छदः-पश्चादनुपूर्व्यभिधायी। व्यव० ११९  
आ।

पच्छाईताण- पश्चादतियतामागच्छताम्। व्यव० ३६६

आ।

**पच्छाकड-** जेण चारित्तं पच्छाकडं उन्निकखंतो भिक्खं  
हिंडइ वा न वा। निशी० ८४आ। निशी० १२०अ।

पश्चात्कृतकः। आव० १९१। व्यव० २७५आ। पश्चा-  
त्कृतं पराजितः। बृह० १५१आ।

**पच्छाकम्म-** पश्चात्-दानानन्तरं कम्म-भाजनधावनादि  
यत्रा शनादौ तत् पश्चात्कर्म। प्रश्न० १५४।  
पश्चाद्भोक्ष्याम इति पश्चात्कर्म। दशवै० २०३।

**पच्छाकायिय-** पश्चात्कायिकम्। आव० २१७।

**पच्छाग-** प्रच्छादकः-कल्पः। ओघ० २०८।

**पच्छाणुतावय-** पश्चादनुतापकः-पश्चात्तापकृत्। उत्त०  
३४०।

**पच्छाणुपुव्वी-** पाश्चात्यः-चरमसीमादारभ्य व्यत्ययेन  
वानु-पूर्वी-परिपाटिः विरच्यते यस्यां सा निरुक्तविधिना  
पश्चानु-पूर्वी। अनुयो० ७३।

**पच्छाणुसए-** पश्चादनुशयः-पश्चात्तापः। प्रश्न० १८।

**पच्छातुरस्स-** पश्चाद् अस्मिन् राजादौ प्रव्रजिते सति  
आतु-रस्य। ज्ञाता० १०२।

**पच्छापुरा-** विवक्षितकालस्य पश्चात् पूर्व च  
सर्वदैवेत्यर्थः। भग० १२२।

**पच्छावाया-** पथ्या वाता-वनस्पतीनां सामान्येन हिता  
वायवः पश्चाद्वाताः। ज्ञाता० १७१।

**पच्छासंखडि-** पश्चात्सङ्खडिः-मृतकसङ्खडिः। आचा०  
३३०।

**पच्छासंखडी-** अपरसूर्ये-पच्छासंखडी, अपरस्यां दिशि  
पच्छासंखडी। बृह० १३५अ। मज्झणह पच्छतो पच्छा-  
संखडी। निशी० प्र ३१०अ। अपराणहे तु क्रियमाणा  
पश्चात्सङ्खडी। बृह० १७९आ।

**पच्छासंथुय-** पश्चात्संस्तुतः-श्वसुरकुलसंबद्धः। आचा०  
३३६। पश्चात्संस्तुतः-यदन्तिकेऽधीतं श्रुतं वा  
तत्संबन्धिनो वाऽन्यत्रावासितः। आचा० ३५३।  
पश्चात्संस्तुतः-श्वसु-रादिः। आचा० ३५१।

**पच्छासंथव-** पश्चात्संस्तवः-श्वश्रवादिकल्पनया  
परिचयक-रणम्। पिण्ड० १२१।

**पच्छित्तं-** प्रायसो वा चित्तं-जीवं शोधयति-कर्ममलिनं  
विमलीकरोति तेन, प्रायो वा-बाहुल्येन चित्तं स्वेन  
स्वरूपे अस्मिन् सतीति प्रायश्चित्तम्। आव० ७८२।

**पच्छित्तणुवातो-** जहा सव्वे मासगुरुसुत्ता पढमुद्देसे  
अणुव-त्तिया, बितियादिसु मासलहु, छद्दादिसु चउगुरु,  
बारस-मादिसु चउलहु। अहवा पच्छित्तणुवातो  
पणगादिजोगो जाव चरिमं। निशी० १४८आ।

**पच्छिपिंडय-** पच्छिकापटिकम्। राज० १४१।

**पच्छिपिडए-** पच्छिकालक्षणपिटकः। भग० ३१३।

**पच्छिमकाल-** पश्चिमः कालः-पाश्चात्यवयः। पिण्ड०  
१७७। पश्चिमकालः-संलेखनाकालः। ओघ० १८९।

**पच्छिमग-** पश्चिमकः-चरमः। स्था० २९६।

**पच्छिमवय-** पश्चिमवयः। आव० १३७।

**पच्छियपिडगं-** । अन्त० १९।

**पच्छुद्धिड-** पडिच्छगायरिण उदिट्ठं तं पच्छुद्धिडं। निशी०  
२९अ।

**पच्छोलंति-** पृष्ठतो मुखां चपेटां ददाति। जम्बू० ४१९।

**पच्छोलेइ-** पृष्ठतो मुखां चपेटां ददाति। भग० १७५।

**पछिमसंजमो-** अहकषायचारित्तं। निशी० ७अ।

**पछिमा तवा-** सुहुमकिरियानियट्ठी

वोछिन्नकिरियमप्पडिवाइं च एते पच्छिमा तवा।

निशी० ७अ।

**पजगो-** काङ्कुरोऽनङ्कुरो वाऽनन्तवनस्पतिः। पञ्चवर्णः।  
बृह० १६६।

**पजणणं-** प्रजन्यतेऽपत्यं येन तत् प्रजननं शिश्नं-  
लिङ्गम्। सूत्र० १०३। प्रजननः-मेहनः। स्था० १३८।

**पजीवण-** प्रजीवनकं-जीवनहेतुकं द्रव्यम्। पिण्ड० १३८।

**पज्जंत-** पर्यन्तः-विभागः। प्रश्न० ९८। पर्याप्तः-शक्तः।  
भग० ६८४।

**पज्ज-** पादहितं पादयं-पादप्रक्षालनस्नेहनोदवर्तनादि।  
ज्ञाता० २०९। पदयं-छन्दोनिबद्धम्। स्था० २८८। वृत्तादि  
यत् गीयते तत् पद्यम्। जम्बू० ३९। पाद्यम्। आव०  
३००। पदयं-“पज्जं तु होइ तिविहं सममद्धसमं च नाम  
विसमं च। पाएहिअक्खरेहिं य एव विहिण्णू कई बैति  
दशवै० ८७।

**पज्जणं-** सज्जणं कलमोदणं उप्पोसणं

धावनादिकिरियाओ य। निशी० १६६अ। पायनम्।

आव० ५१५।

**पज्जणघडिया-** पायनघटिका। आव० ५१४।

**पज्जणया-** पायनताः। बृह० १०१अ।

**पज्जत्त-** पादकप्पितो। निशी० ११६ आ। पन्नत्तिं। बृह० ३० अ।

**पज्जत्ता-** पर्याप्ता-या एकपक्षे-निक्षिप्यते सत्या वा मृषा वेति तद्व्यवहारसाधनी सा पर्याप्ता, प्रथमे द्वे भाषे सत्यामृषे पर्याप्ते तथास्वविषयव्यवहारसाधनात्, भाषाभेदः। दशवै० २१०।

**पज्जत्तापज्जत्तिय-** पर्याप्तापर्याप्तिका-शरीरेन्द्रियपर्याप्तिनिर्वर्तनोच्छवास-पर्याप्त्यनिर्वर्तनसमर्था। प्रज्ञा० ४९०।

**पज्जत्ति-** पर्याप्तिनाम-आहारादिपुद्गलग्रहणपरिणमनहेतुरात्मनःशक्तिविशेषः। प्रज्ञा० ४७४। पर्याप्तिः-शक्तिः। बृह० १८४ आ। पर्याप्तिः-स्वविषयग्रहणसामर्थ्यलक्षणा। आव० ३४१।

**पज्जत्तियं-** पर्याप्तम्। उत्त० १९३।

**पज्जत्तिया-** या प्रतिनियतरूपतया अवधारयितुं शक्यते सा पर्याप्ता, भाषायाः प्रथमो भेदः प्रज्ञा० २५५।

**पज्जती-** पर्याप्तिः-आहारादिपुद्गलग्रहणपरिणमनहेतुरात्मनःशक्तिविशेषः। जीवा० १०। पर्याप्तिः-नामशक्तिः-सामर्थ्य-विशेषः। स्था० ५४। पर्याप्तिः-आत्मशक्तिः। नन्दी० १०४। पर्याप्तिः-आहारादिपुद्गलग्रहणपरिणमनहेतुरात्मनःशक्तिविशेषः। नन्दी० १०४। पर्याप्तिः समस्त पर्याप्तिता। उत्त० १४५।

**पज्जपावणं-** प्रजल्पकारणम्। भग० ५४४।

**पज्जय-** पर्यायः-परिपाटी प्रस्तावः उत्त० ६६८। प्रार्थकः-पितामहः। उत्त० ९८। पितामहः। आव० ३०५। प्रार्थकः-पितामहः। आव० ३५७। पर्यायः-पर्यायः परिपाटिः भग० ४७०। प्रार्थकः-पितुःपितामहः। जाता० ४९। प्रार्थक-पितुःपितामहः। पर्यायः-पर्यायः। भग० ४७०।

**पज्जरत-** रत्नप्रभायां महानरके षष्ठः। स्था० ३६५।

**पज्जलण-** प्रज्वलयति-दीपयति वर्णवादकरणेन मागधवदिति प्रज्वलन इति। स्था० १९३।

**पज्जलियरोस-** प्रज्वलितरोषः आव० ५६६।

**पज्जव-** पर्यवः-शब्दपर्यवार्थः पर्यवरूपः। उत्त० ७१३।

पर्यायः-नवपुराणादिः क्रमवर्तिधर्मः। प्रश्न० ११७।

पर्यायः-भङ्गकादिप्रकारः। बृह० १९७ अ। पर्यायः-गुणो

विशेषो धर्मश्च। प्रज्ञा० १७९। पर्यवः। भग० ८८९।

पर्यवम्। उत्त० ६०६। पर्यायः-अगुरुलघ्वादिः। आचा० ७। पर्यवः-विशेषः। आचा० १५६। पर्यवाः-कालकृता अवस्था, यथा नारकत्वादयो बालत्वादयो वा। सम० ११२। पर्यवः-परिरक्षा-परिज्ञानम्। स्था० २२। पर्यवः-परिच्छेदः-विशेषः, अवस्था। स्था० ४७। परिः-सर्वतो भावे अवनं अवः पर्यवः। स्था० ३४८। परिः-सर्वतो भावे अवनं अवः, अवनं-गमनं, पर्यवः पर्यवनं वा पर्यव इति। आव० ८। परिः-समन्तादपगच्छति न पुनर्द्रव्यवत्। सर्वदैव तिष्ठतीति पर्यायः। परिः-सामस्त्येन एति-अभिगच्छति व्याप्नोति वस्तुतामिति वा पर्यायः-एकगुण-कालत्वादिरेव। अनुयो० १११। पर्यवः-परिः समन्तादवति अपगच्छति न तु द्रव्यव-त्सर्वदैवावतिष्ठत इति पर्यवाः। अथवा परिः-समन्ताद् अवनाति - गमनानि द्रव्यस्यावस्थान्तरप्राप्तिरूपाणीति पर्यवाः-

एकगुणकालत्वादिः। अनुयो० १११। पर्यायः-भेदः।

दशवै० २६०। पर्यवः-अपगमः। दशवै० २७७। पर्यायः-नारकत्वादिरेककृष्णत्वादिश्च। अनुयो० १०५।

**पज्जवकाय-** पर्यायान्-वस्तुधर्मान् आश्रीत्य कायः पर्याय-कायः। आव० ७६७।

**पज्जवजाए-** पर्यवजातं तैरेव वज्जिस्पृष्ट भाषाद्रव्यैर्यानि विश्रेणिस्थानि-भाषावर्गणान्तर्गतानि निसृष्टद्रव्यपराघातेन भाषापर्यायत्वेनोत्पद्यन्ते तानि द्रव्याणि पर्यवजातमित्युच्यन्ते। आचा० ३८५। पर्यवः-ज्ञानादिविशेषा जाता यस्य स पर्यवजातः। स्था० १९।

**पज्जवजात-** पर्यवजातं-सूत्रार्थप्रकारम्। स्था० ३०१। पर्यवयातः-पर्यवान् पर्यवेषु यातः-प्राप्तः पर्यवयातः। स्था० २२। पर्यवः-अवस्थान्तरं जातो यत्र तत् पर्यवजातम्। प्रश्न० १५४।

**पज्जवजाय-** पर्यवाः-ज्ञानादिविशेषा जाता यस्य स पर्यवजातः, विशुध्यति। स्था० २१।

**पज्जवज्जायसत्थ-** पर्यवजातशस्त्रं-शब्दादीनां विषयाणां पर्यवः-विशेषास्तेषु तन्निमित्तं जातं शस्त्रं पर्यवजातशस्त्रं शब्दादिविशेषोपादानाय यत्प्राण्युपघातकार्यनुष्ठानं तत्। आचा० १५६।

**पज्जवड्डिय-** पर्यवस्थितः। प्रज्ञा० ३२७।

**पज्जवनाम-** पर्यायनाम-तत्तद्धर्माश्रिताभिधानम्। प्रश्न०

१०४।

**पज्जवपेयालणा-** पर्यवपेयालना-पर्यायप्रमाणकरणं-  
पर्याय-संहति विवक्षा वा। *पिण्ड० २६।*

**पज्जवभंगसुहुमता-** परमाण्वादीसु वण्णगंधरसफासेसु  
एग-गुणकालगादि पज्जवभंगसुहुमता। *निशी० ६७ आ।*

**पज्जवयात-** पर्यवजातं-जातविशेषं स्फुटतया  
भविष्यतीति। *स्था० ३५०।*

**पज्जवलाभ-** पर्यवलाभः-पर्यवप्राप्तिः। *आव० ४२।*

**पज्जवलीढ-** अतिजीर्णतया कुत्सिते वर्णान्तरयुक्ते  
स्फुटिते वा। *बृह० ९२ अ।*

**पज्जवसंखा-** पर्यवसङ्ख्या। *अनुयो० १३३।*

**पज्जवसान-** पर्यवसानं-संस्मरणपर्यन्तः। *स्था० ३४६।*  
पर्यवसानं-निष्ठाफलम्। *प्रश्न० १३६।* पर्यवसानम्।  
*सूर्य० १२।*

**पज्जवसिया-** पर्यवसिता-निष्ठां गता। *प्रज्ञा० २५६।*

**पज्जवा-** पर्यवः-बुद्धिकृता निर्विभागा भागाः,  
एकगुणश्वेत-त्वादयः। *जम्बू० १२८।* पर्यवाः-  
द्रव्यगुणाश्रिताः। *उत्त० ५५७।* पर्यवाः-  
पञ्चधनुःशतसप्तहस्तमानादिका विशेषाः। *जम्बू० ७०।*  
पर्यवाः-प्रज्ञाकृताः अविभागाः पलिच्छेदाः। *भग० १४९।*  
पर्यायाः-स्वपरभेदभिन्ना अक्षरार्थ पर्यायाः। *सम० १०९।*  
पर्यवाः-शब्दपर्यवार्थपर्यवरूपाः। *उत्त० ७१३।*

**पज्जवाग्रं-** पर्यायाग्रं-सर्वाग्रम्। *आचा० ३१९।*

**पज्जाअ-** पर्यायः-अभिप्रायः। *सूत्र० २५३।* पर्यायः-निरुक्तं  
तात्पर्यार्थः। *सूत्र० २६२।* पर्यायः-अवस्थाविशेषः। *सूत्र० २७८।*  
पर्यायः-परिपाटी। *सूत्र० ४१३।*

**पज्जाण-** पायनं-लोहकारेणातापितम्। *जाता० ११६।*

**पज्जाय-** पवज्जा-। *निशी० १८३ अ।*

**पज्जाया-** उदुबद्धिया दव्वखेत्तकालभाव, एत्थ परिसमंता  
आसविज्जंति-परित्यजन्तीत्यर्थः। *निशी० ३३६ आ।*

**पज्जिए-** प्रार्जिका। *दशवै० २१६।*

**पज्जित-** पायितः। *उत्त० ४६१।*

**पज्जित्ता-** अज्जियाए माया। *दशवै० १०९।*

**पज्जिया-** पायिता। *आव० ४०२।*

**पज्जुण्ण-** द्वारावत्त्यां कुमारः। *जाता० २०७।* प्रद्युम्नः।  
*आव० ९४।*

**पज्जुत्तं-** पौद्गलिकं भोजनम्। *बृह० ५८ अ।*

**पज्जुन्न-** प्रद्युम्नः-अध्युष्टकुमारमुख्यः। *अन्त० २।*  
चतुर्विधमेघेषु द्वितीयः। *स्था० २७०।* प्रद्युम्नः-  
अन्तकृद्दशानां चतुर्थवर्गस्य षष्ठममध्ययनम्। *अन्त० १४।*  
प्रद्युम्नः-यदोर-पत्यः। *प्रश्न० ७३।* *जाता० २१३।*  
द्वारामत्यां कुमारविशेषः। *जाता० १००।*

**पज्जुन्नसेण-** प्रद्युम्नसेनः। *उत्त० ३७९।*

**पज्जुवासण-** पर्युपासनं-सेवा। *भग० ११५।*

**पज्जुवासणया-** पर्युपासनं-सेवा एतद्भावस्तत्ता तया।  
*जाता० ४४, ४५।*

**पज्जुवासणा-** पर्युपासना-सेवा। *स्था० १५६।*

**पज्जुवासमाण-** पर्युपासीनः-सेवमानः। *भग० १४।*

**पज्जुवासेमाण-** पर्युपासीनः-सेवनामः। *सूर्य० ६।*

**पज्जुसणा-** उदुबद्धिया वाससमीवातो जम्हा पगरिसेण  
ओसंति सव्वदिसासु परिमाणपरिच्छिन्नं तम्हा  
पज्जुस्सणा। *निशी० ३३६ आ।* वासावासो  
पढमसमोसरणं। *निशी० ३३६ आ।*

**पज्जुसियं-** परियासिय णाम रातो पज्जुसियं। *निशी० ५०*  
*आ।*

**पज्जेति-** पाययति। *विपा० ७२।*

**पज्जोय-** प्रद्योतः- संवेगोदाहरणे उज्जयिनीनरेशः।  
*आव० ७०९।* प्रद्योतः। *आव० ६४।* पारिणामिकी बुद्धौ  
प्रद्योतः। *आव० ४२८।* उज्जेणीए राया। *निशी० ३४८*  
*आ।* प्रद्योतः-क्षूरावमानी (शूर इव)। *सूत्र० १०३।*  
प्रद्योतः-अभयकुमाराहतो राजा। *दशवै० ५३।* प्रद्योतः  
*उत्त० ९६।*

**पज्जोयगत-** प्रद्योतनं प्रद्योतः प्रद्योतकत्वं-  
विशिष्टज्ञान-शक्तिस्तत्करणशीला। *जीवा० २५५।*

**पज्जोसवणा-** परियागवत्थणा। *निशी० ३३६ आ।*

अण्णेय दव्वादिया वरिसकालपायोग्गा घेत्तुं  
आयरिज्जंति तम्हा पज्जोसवणा। पागयत्ति  
सव्वलोगपसिद्धेण पागत-भिधाणेण पज्जोसवणा।  
*निशी० ३३६ आ।* पर्याया-ऋतुबद्धिकाः-  
द्रव्यक्षेत्रकालभावसम्बन्धिन उत्सृज्यन्ते-उज्जयन्ते  
यस्यां सा निरुक्तविधिना पर्यासवना, अथवा परीति  
सर्वतः। क्रोधादिभावेभ्यः उपशाम्यते यस्यां सा पर्यु-  
पशमना। अवा परि-सर्वथा एकक्षेत्रे जघन्यः  
सप्ततिदिनानि उत्कृष्टतः षण्मासान् वसनं निरुक्तदेव

पर्युषणा। स्था० ५११।  
**पञ्जोसवियाण-** परीतिसामस्त्येनोषितानां  
 पर्युषणाकल्पेन नियमवद्वस्तुमारब्धानामित्यर्थः।  
 स्था० ० ३१०।  
**पञ्जझमाण-** शब्दायमानम्। जीवा० १८१। जम्बू० २४।  
**पञ्ज-** पार्यः-प्रतिपितामरः। व्यव० १७१ अ।  
**पञ्जझाय-** प्रध्यातं-प्रियजनविषयमतिचिन्तितम्। अनुयो०  
 १३९।  
**पञ्जझोय-** प्रद्योतः-अवन्तीपतिः। व्यव० १४९ आ।  
**पञ्चत्वं-** मरणम्। नन्दी० १५९।  
**पञ्चमुष्टिः-** पञ्चाष्टा। उत्त० ४९२।  
**पञ्चाग्नितपः-** कायकष्टतपः। आचा० १७७।  
**पञ्चाल-** देशविशेषः। उत्त० ३७७।  
**पञ्जरभग्नः-** सुखमिह वसितुमिति स इत्थंभूतः  
 पञ्जरभग्नः ज्ञातव्यो न प्रतीच्छनीयः। व्यव० ५४ अ।  
**पञ्जरुम्मिलिया-** पञ्जरोन्मीलिता-पञ्जरबहिष्कृता।  
 सम० १३९।  
**पञ्जिका-** अर्थे प्रकारः। सम० १११।  
**पटक-** पिशाचभेदविशेषः। प्रजा० ७०।  
**पटल-** पात्रावरणम्। ओघ० २१३। तक्रखरण्टितचीवरादि।  
 दशवै० ४०।  
**पटलकम्-** वस्त्रम्। उत्त० ५४।  
**पटलग-** कच्चोलकः। निशी० ९१ अ।  
**पटुकार-** प्रत्यवतारः। बृह० २६५ अ।  
**पटोली-** वल्लीविशेषः। आचा० ५७।  
**पट्ट-** वस्त्रपट्टः। उत्त० ६०६। पट्टसूत्रमयम्। प्रश्न० ७१।  
 ललाटाभरणम्। विपा० ७०। जीवा० ३६९। पट्टः। स्था०  
 ३३८। शिलापट्टकादि। जीवा० २७४। चोलपट्टं। निशी०  
 १९१ अ। पट्टः-एकः शाटकः। ज्ञाता० १५। पट्टक-  
 चोलपट्टकम्। ओघ० १७५। वस्त्रम्। उत्त० ६०६। योगप-  
 ट्टकः-चिलिमिली। ओघ० २१८। पट्टं-पट्टसूत्रनिष्पन्नम्।  
 जम्बू० १०७। पट्टसूत्रजं, जांगमिकवस्त्रभेदः। बृह० २०१  
 अ। छुरिकापट्टिकावत् पट्टो। निशी० १७९ आ। चउरंगुलो  
 सुवण्णमओ पट्टो। निशी० २५४ आ। गंधपट्टः। बृह० ६८  
 अ। तिरीडरूखस्स तया। निशी० १२६ अ।  
 वल्कलक्षणः। बृह० २०१ अ। पट्टसूत्रनिष्पन्नम्। आचा०  
 ३९४।

**पट्टइल्ला-** श्रेणिविशेषः। जम्बू० १९३।  
**पट्टकार-** वस्त्रकारः। अनुयो० १४९।  
**पट्टजुयलं-**। आचा० ४२३।  
**पट्टण-** पत्तनम्। सूत्र० ३०९। पत्तनं-  
 जलपथयुक्तंस्थलपथ-युक्तं, रत्नभूमिर्वा। प्रश्न० ५२।  
 जलपथस्थलपथयोरेकतर-युक्तम्। प्रश्न० ६९।  
 जलस्थलपथयोरन्यतरयुक्तम्। प्रश्न० ९२। पत्तनम्।  
 औप० ७४। पट्टनं-पत्तनं वा। जीवा० ४०। पट्टनं-  
 यन्नौभिरेव गम्यम्। जीवा० २७९। पत्तनं जलपथ-  
 स्थलपथयोरेकतरयुक्तम्। ज्ञाता० १४०।  
 यच्छकटैर्घोटकैर्नौ-भिश्चगम्यं पट्टनं यन्नौभिरेव गम्यं  
 तत् पट्टनं पत्तनम्। प्रजा० ४८। पतन्ति तस्मिन्  
 समस्तदिग्भ्यो जना इति पत्तनम्। उत्त० ६०५।  
 पत्तनं-नानादेशागतपण्यस्थानम्। अनुयो० १४२। पट्टनं-  
 नौभिरेव गम्यं पट्टनम्। जीवा० ४०। पत्तनं-  
 पर्याहारप्रवेशस्तत्पत्तनम्। स्था० २९४। पट्टनं-  
 जलस्थल-निर्गमप्रवेशः। राज० ११४। पत्तनं-  
 रत्नयोनिः। जम्बू० २५८। स्था० ८६। यन्नौभिरेव  
 गम्यम्। जीवा० ४०।  
**पट्टणमारी-** मारीविशेषः। भग० १९७।  
**पट्टदुगं-** पट्टद्विकं-संस्तारकोत्तरपट्टरूपं पर्याप्तिका  
 संनाहपट्ट-रूपं वा। बृह० २५३ आ०। संथरोत्तरपट्टो य।  
 निशी० १८१ अ।  
**पट्टनं-** यन्नौभिरेव गम्यं तत्पट्टनम्। प्रजा० ४८।  
**पट्टबद्धय-** बद्धपट्टः। आव० ३००।  
**पट्टशालारूपो-** मण्डपविशेषः। स्था० २३२।  
**पट्टसाडय-** वस्त्रं तस्य युगलरूपो यः पट्टशाटुकः। सूर्य०  
 २९३। पट्टसाटिका। अनुयो० १७५।  
**पट्टसूत्र-** पट्टङ्गकीटलालासमुत्पन्नम्। अनुयो० ३५। यत्  
 हंसाद्यण्डकेभ्यो जायते तदण्डजं क्वचित् पट्टसूत्रम्।  
 उत्त० ५७१। कीटज-यत्तथाविधकीटैभ्यो लालात्मकं  
 प्रभवति यथा पट्टसूत्रम्। उत्त० ५७१।  
**पट्टागा-** पट्टकाराः पट्टकूलकुविन्दाः शीलगर्वभेदः। प्रजा०  
 ५६।  
**पट्टिका-**। नन्दी० १८८।  
**पट्टिया-** पट्टिका-वंशानामुपरि कम्बास्थानीया। जीवा० ८०।  
 पट्टिका-वंशानामुपरि कम्बास्थानीया। जम्बू० २३।

पट्टिका। जीवा० २५१।  
 पट्टिशः- प्रहरणविशेषः। उत्त० ४६०।  
 पट्टिस- पट्टसः- प्रहरणविशेषः। प्रश्न० २१। पट्टिशः-अस्त्र-  
 विशेषः। ४८।  
 पट्टंती- प्रतिष्ठन्ती। आव० ८२२।  
 पट्ट- स्पष्टं-विदारितम्। भग० १२०। प्रष्ठः वागमी। जम्बू०  
 ३८८। स्पष्टं-व्यक्तम्। उपा० ३९। पृष्ठं पर्याणस्थानम्।  
 जम्बू० २३५। स्पष्टं-असंदिग्धम्। उत्त० २४१। स्पष्टम्।  
 भग० ६८४।  
 पट्टव- प्रस्थापकः-विविधकार्येषु प्रवर्तकः। ज्ञाता० ६३।  
 पट्टवओ- प्रस्थापकः-अवधिज्ञानप्रारम्भकः। आव० ३३।  
 पट्टवणओ- प्रस्थापकः-प्रारम्भकः। आव० ८४२।  
 पट्टवणा- दाणं। निशी० १२२ आ। प्रस्थापना कल्पना।  
 जीवा० १९।  
 पट्टविति- प्रस्थापयति-प्रतिलेखयति। आव० ७५६।  
 पट्टविओ- प्रस्थापितः। ओघ० १०६।  
 पट्टवितिका- जं वहति पच्छित्त सा पट्टवितिका। निशी०  
 १३९ आ।  
 पट्टवितिया- आरोपितं प्रायश्चित्तं वहति सा  
 प्रस्थापितिका। व्यव० १२४ आ।  
 पट्टवियं- प्रस्थापितं-  
 मनुष्यगतिपञ्चेन्द्रियजातित्रसबादरपर्या-  
 प्तसुभगादेययशःकीर्तिनामसहोदयत्वेन  
 व्यवस्थापितम्। प्रज्ञा० ४०३। प्रस्थापितः-प्रवर्तितः।  
 निशी० १३९।  
 पट्टवेज्जा- प्रस्थापयेत्-प्रवर्तयेत्। भग० ३८५।  
 पट्टवेति- प्रस्थापयति-कर्तुं आरभत इति। स्था० ३००।  
 प्रस्थापयतिवोदुमारभते। स्था० ३२५।  
 पट्टसंठिआ- पृष्ठसंस्थिता-प्रधानसंस्थाना। जम्बू० ११४।  
 पट्टि- पृष्टिः। आव० १९२। पृष्टम्। उत्त० ५३७।  
 पट्टिअओ- प्रस्थितः-संप्रस्थितद्वितीयाः। आव० १००।  
 पट्टिआवाहो- पीठमर्दवाहकः। आव० २०४।  
 पट्टिओ- प्रस्थितः। दशवै० ११।  
 पट्टित- प्रस्थितः। प्रज्ञा० ३२७।  
 पट्टिमंसं- पृष्ठिमांसं-परोक्षस्य दूषणाविष्करणम्। प्रश्न०  
 ४१।  
 पट्टिवंस- बलहरणं पृष्टवंशो। बृह० ५४ अ।

पड- पदः-स्थानः पक्षः। स्था० ३९। पटं-प्रतीतम्। अनुयो०  
 १५४। पट्टशाटकः। प्रश्न० ७१। पट्टः। जम्बू० १६१।  
 पडकारक- पटकारकः-तन्तुवायः। प्रश्न० ३०।  
 पडणं- पतनं-तिष्ठत एव गच्छतो वा यल्लुठनम्। प्रज्ञा०  
 २९। निपतितं हिंसाबुद्ध्या रिपुमोचनम्। जं० पह०  
 १२५। पतनं-कालधर्मनयनम्। जम्बू० १२५। पतनं-मरणं  
 राजामात्यसेनापतिग्रामभोगिकादीनाम्। स्था० ४७७।  
 पतनम्। भग० ४६९।  
 पडणी- प्रत्यनीका। गच्छा०।  
 पडणीय- प्रत्यनीकः शासनादेः। ओघ० ९३।  
 पडमंडव- पटमण्डपः। आव० ४३४। पटमंडपं दिव्यपटकृ-  
 तमण्डपं पटमण्डपलक्षितं प्रासादम्। निशी० २२३ अ।  
 पडलं- उदयविकारेण य दव्वचक्खिंदियस्संतरणं पडलं।  
 निशी० ३०२ आ। पटलः-समूहः। ज्ञाता० १७३। पटलं-  
 भिक्षावसरे पात्रप्रच्छादकं वस्त्रखण्डम्। प्रश्न० १५६।  
 पटलं-वृन्दम्। आव० ७८८। पटलम्। आव० ८३७।  
 पडलाइं- पटलकानि भिक्षायां पात्रोपरिस्थाप्यानि। बृह०  
 २३७ अ।  
 पडविज्जा- विज्जाविसेसो। निशी० १६ अ। पटविद्या।  
 आव० २९५।  
 पडसाडग- पटशाटुकः-उत्तरीयं उपरिकायवस्त्रम्। प्रश्न०  
 ७१। पटशाटुकं-उत्तरीयं परिधानम्। जम्बू० २४७।  
 पडसाडियं- पटशाटुका। अनुयो० १७५।  
 पडह- पटहः। जीवा० १०५, २४५, २६६। पटहः। जम्बू०  
 १०१। पटहः-पटहकः। प्रश्न० ४८। पटहः-आतोदयः।  
 नन्दी० ८८। पटहः। भग० २१७। पटहः-आतोदयविशेषः।  
 प्रज्ञा० ५४२।  
 पडहओ- पटहकः-। आव० ४२०।  
 पडहग- पटहकः-विमध्यमावधिसंस्थानदृष्टान्तः। आव०  
 ४१।  
 पडहसंठिय- पटहसंस्थितः आवलिकाबाह्यस्य  
 रत्नप्रभानरके संस्थानम्। जीवा० १०४।  
 पडागसंठिय- पताकासंस्थितः, अश्लेषानक्षत्रसंस्थानम्।  
 सूर्य० १३०।  
 पडागसमाण- यस्य नवस्थितो बोधी विचित्रदेशनावायुना  
 सर्वतोऽपह्नियमाणत्वादुपताकेव स पताकासमानः।  
 स्था० २४३।

**पडागा-** पताका-ध्वजादन्या। भग० ३१९। पताकामत्स्य-विशेषः। जीवा० ३६। पताका-चक्रादिलच्छनोपेतादितरा। भग० ४७६। पताका-ध्वजेतररूपा। जम्बू० १८८। पताका-सूर्य० २६३। मत्स्यविशेषः। प्रजा० ४४। पताका-गरुडादिवर्जिता ध्वजा। विपा० ४६।

**पडागाइपडागा-** पताकाभ्यो-लोकप्रसिद्धाभ्योऽतिशायिनी-दीर्घत्वेन विस्तारेण च पताका पताकातिपताका। जीवा० १९१। मत्स्यविशेषः। जीवा० ३६।

पताकाभ्योऽतिशायिन्यो दीर्घत्वेन विस्तरेण च पताकाः पताकातिपाका जम्बू० ४४।

**पडागासंठाणसंठिता-** पताकासंस्थानसंस्थिता-वायुकाय-संस्थानम्। प्रजा० ४११।

**पडालि-** लघुतरा। आव० २६२।

**पडालिया-** पडालिका-यत्र मध्याह्ने सार्थिकाः तिष्ठन्ति यत्र वा वसन्ति तत्र वा वसन्ति तत्र वस्त्रादिभ्यं कुवलयनं कुर्वन्ति ता वा अस्य दिने दिन उपलभ्यन्ते तदा स एवैकः सागारिकः शय्यातरो भवति। राढागतेषु तु अवजया यत्र तत्र गतेषु तु साधुषु यत्र रात्रौ वसन्ति तद्विवसं स शय्यातरः। इयमत्र भावना-यस्य न नियमेन सडो वा पडालिका वा। व्यव० २७८ आ।

**पडाली-** पडालिका-एकस्मिन् पार्श्वे वृक्षयुगलं समश्रेण्या व्यवस्थितं चतुर्ष्वपि कोणेषु ईषद्दीर्घा वृक्षा व्यवस्थितः। बृह० १८३ आ। पडाली-गृहाच्छादनम्। व्यव० २७६ आ।

**पडिसुआ-** प्रतिश्रुतः प्रतिशब्दः। जम्बू० १४४।

**पडि-** प्रति-प्रतीपं प्रतिकूलं वा। आव० ५५१। प्रति-प्रति-बिम्बं प्रधानं वा। उत्त० ५९। प्रतिः-सादृश्ये। उत्त० ५८९।

**पडिअरइ-** प्रतिजागर्ति। ओघ० ८४।

**पडिअरण-** प्रतिपालन-निरूपणं-आलोचनम्। ओघ० ४४।

**पडिअरिअ-** आराध्य। दशवै० २५५।

**पडिआइखे-** प्रत्याचक्षीतः-प्रतिषेधयेत्। दशवै० १६९।

**पडिआयइ-** प्रत्यापिबति-सेवते। दशवै० २६५।

**पडिएक्क-** पृथक्। ज्ञाता० २०६।

**पडिओ-** सव्वगत्तेण भूमीए। निशी० ४९ आ।

**पडिओसरइ-** प्रत्यवसर्पति। आ० ५४।

**पडिकप्पावेति-** सज्जयति। ज्ञाता० १३८।

**पडिकप्पेह-** सन्नद्धं कुरुतः। भग० ३१७।

**पडिकुड-** प्रतिकुष्ठं-प्रतिसिद्धम्। आव० ४७१। प्रतिकुष्ठंवि-

रुद्धम्। ओघ० २१५। प्रतिकुष्ठं-निराकृतम्। पिण्ड० ८४। निराकृतम्। पिण्ड० ११०। प्रतिकुष्ठः-निषिद्धः। प्रश्न० १२७। प्रतिकुष्ठः-प्रतिषिद्धः। ओघ० १४५। प्रतिकुष्ठः-प्रतिषिद्धः। ओघ० २१०। प्रतिकुष्ठं-छिम्पकादिगृहं सूतको-पगृहं वा। ओघ० १५७।

**पडिकुविय-** प्रतिकूजितं-प्रतिभाषितम्। निर० ३३।

**पडिकूल-** प्रतिकूलः-नानुकूलोऽनभिमतः। आचा० ३६४। प्रतिकूलः-विपरीतवृत्तिः। स्था० २४४।

**पडिककंत-** प्रतिक्रान्तम्। दशवै० ४९। प्रतिक्रमणं-प्रतिक्रान्तं, प्रजापकात् प्रतीपं क्रमणम्। दशवै० १४१।

**पडिककओ-** प्रतिक्रिया-आधारः। आव० ३०४।

**पडिककमए-** प्रतिक्रामति-निवर्तते। पिण्ड० ७६।

**पडिककमण-** प्रतिक्रमणं-प्रतीपं-पश्चाद् अभिमुखं क्रमणं-प्रतिक्रमणं आगमनमित्यर्थः। आचा० २९२। प्रतिक्रमणं-प्रतीपं क्रमणं शुभयोगेभ्योऽशुभयोगानुपक्रान्तस्य शुभेष्वेव गमनम्, निवर्तनं पुनरकरणमित्यर्थः। स्था० ३५०। प्रति-क्रमणं-मिथ्यादुष्कृतदानम्। स्था० १३७। प्रतीपं क्रमणं प्रतिक्रमणम्, अपराधस्थानेभ्यो गुणस्थानेषु वर्तनम्। आव० ५४१। मिच्छादुक्कडं। निशी० ९१ आ। आलोच-नादिषु द्वितीयः। स्था० २००। प्रतिक्रमणं-मिथ्यादुष्कृतम्। भग० ९२०। प्रतिक्रमणं-मिथ्यादुष्कृतम्। स्था० १६०। प्रतिक्रमणस्य प्रथमं नाम। आव० ५५२। प्रतिक्रमणं-दोषात् प्रतिनिवर्तनमपुनःकरणतया। मिथ्यादुष्कृतप्रदानम्, तदर्थं प्रायश्चित्तम्। व्यव० १४ आ।

**पडिककमणारिह-** प्रतिक्रमणार्हं-मिथ्यादुष्कृतम्। औप० ४१। मिथ्यादुष्कृतं, दशविधप्रायश्चित्ते द्वितीयः। भग० ९२०।

**पडिककमति-** मनोवचनकायलक्षणेन करणेन प्रतिक्रामति निन्दनेन विरमति। भग० ३७०।

**पडिककममान-** प्रतिक्रामन्-निवर्तमानः। आचा० २१७।

**पडिककमामि-** प्रतिक्रामामि-अपुनःकरणतया निवर्तयामि। आव० ५४८।

**पडिककमाहि-** प्रतिक्रमणं-मिथ्यादुष्कृतदानलक्षणं अकृत्यान्निवर्तनं वा। ज्ञाता० २०६।

**पडिककमे-** प्रतिक्रामेत्-कायोत्सर्गं कुर्यात्। दशवै० २७९।

**पडिककमेज्जा-** नियत्तेज्जा। दशवै० ८५।

**पडिक्कामण-** प्रतिक्रामणं यद्यसौ ग्लानः परिक्रामति  
तस्मा-त्स्थानान्निवर्तनम्। ओघ० ४५।  
**पडिक्खंत-** प्रतिक्रामणः। आव० ६४०।  
**पडिक्खलण-** धर्मास्तिकायाद्यभावात्तदानन्तर्यवृत्तिरेव  
प्रति-स्खलनम्। प्रज्ञा० १०८। प्रतिस्खलनम्। औप०  
११६।  
**पडिक्खित-** परिक्षिप्तो-विस्तारितः। अन्त० ७।  
**पडिगओ-** प्रतिगतः। आव० १९९।  
**पडिगच्छह-** प्रतिगच्छामो-निवर्तामहे। उत्त० २५५।  
**पडिगमणं-** उणिक्रमणं। निशी० १०९ अ।  
**पडिगह-** पतद्गृहः-पात्रम्। आचा० २४०। पतद्ग्रहः  
काष्ठ-च्छब्दकादि। आचा० ३५५। पतद्ग्रहः। आचा०  
३४६। प्रतिग्रहम्। आव० ७९३। प्रतिग्रहम्। अनुयो० २५३।  
प्रतिग्रहम्। भग० १३६। प्रतिग्रहः-पतद्ग्रहो वा पात्रम्।  
औप० १००। पतद्ग्रहः पात्रम्। प्रश्न० १५६।  
**पडिगहति-** गृहणाति। निशी० ७४ आ।  
**पडिगहधरो-** पतद्ग्रहधरः। आव० ३२४।  
**पडिगगामो-** पडिवसभगामो अंतरपल्लिगा वा अण्णो वा  
पडि-गगामो भण्णति। निशी० १२१।  
**पडिगगाहित्तत-** प्रतिगृहीतुं आश्रयितुम्। स्था० १३१।  
**पडिगघाओ-** प्रतिघातः-विनाशः। उत्त० ३१८।  
**पडिघात-** प्रतिघातः-गतिस्खलनम्। स्था० १७१।  
**पडिचंद-** द्वितीयचन्द्रः। भग० १९६। प्रतिचन्द्रः-उत्पाता-  
दिसूचको द्वितीयचन्द्रः। जीवा० २८३। प्रतिचन्द्रः-  
उत्पा-दादिसूचको द्वितीयचन्द्रः। अनुयो० १२१।  
**पडिचरण-** क्षेत्रप्रत्युपेक्षकान्। बृह० २३० आ।  
**पडिचरगा-** गामणगरसेणादियाण भंडिया पडिचरगा।  
निशी० ११ अ। प्रतिचरका नाम हेरिकाः  
परराष्ट्रगवेषकाः। बृह० ८२ आ।  
**पडिचरति-** मेहुणमासेवति। निशी० ३३ आ।  
**पडिचरिओ-** प्रतिचरितः। आव० ३९२।  
**पडिचारं-** प्रतिचारः-प्रतिकूलश्रुचरो-ग्रहाणां  
वक्रगमनादिस्त-त्परिज्ञानं, अथवा प्रतिचरण प्रतिचारो  
रोगिणः प्रतिकार-करणं तदज्ञानम्। जम्बू० १३९।  
**पडिचोइओ-** प्रतिचोदितः। आव० ७९३। प्रतिचोदितः।  
आव० २६२।  
**पडिचोयणा-** तन्मप्रतिकूला चोदना कर्तव्यप्रोत्साहना

प्रतिचोदना। भग० ६७५।  
**पडिचोयना-** पुनः पुनः खलितस्य निष्ठरं शिक्षापणं  
प्रतिचोदना। व्यव० ७२ आ।  
**पडिच्छंद-** प्रतिच्छन्दम्। आव० ४१६।  
**पडिच्छइ-** प्रतीच्छति-गृहणाति। ओघ० ११२।  
**पडिच्छग-** सूत्रार्थग्रहणार्थं ये आयाताः साधवस्ते  
प्रतीच्छकः। ओघ० ६३।  
**पडिच्छति-** प्रतीच्छति। आव० २१७। प्रतीक्ष्यते। आव०  
८५३।  
**पडिच्छभाए-** प्रतीक्ष्यभागः। आव० १५०।  
**पडिच्छा-** प्रतीच्छा प्रतिग्रहणम्। व्यव० ३४५ आ।  
**पडिच्छामि-** अङ्गीकरोमि। आतु० ।  
**पडिच्छामो-** प्रतीक्षामहे। आव० ३४८।  
**पडिच्छायणं-** प्रतिच्छादनं-आच्छादनम्। सूर्य० २९३।  
प्रतिच्छादनं-रजस्त्राणस्योपरि द्वितीयमाच्छादनम्।  
जीवा० २१०। प्रतिच्छादनं-आच्छादनम्। जीवा० २३२।  
**पडिच्छिअं-** प्रतीप्सितं-गृहीतम्। दशवै० १७७।  
**पडिच्छिए-** पुनः पुनरिष्टः भावतो वा प्रतिपन्नः। भग०  
४६७।  
**पडिच्छिगा-** प्रातीच्छिकाः-अनुयोगाचार्यानुमान्याः  
अध्यय-नार्थं गच्छान्तरादागताः  
स्वाचार्यानुज्ञापुरस्सरमनुयोगाचार्य-प्रतीच्छया चरन्ति।  
नन्दी० ५४।  
**पडिच्छण्णे-** प्रतिच्छादनं-आच्छादनम्। ज्ञाता० १५। प्रती-  
च्छनं-वेलां प्रतिपालयति। ओघ० ४९।  
**पडिच्छिय-** प्रतीप्सितं प्राप्तुमिष्टम्। भग० १२१।  
प्रतीच्छितम्। आव० ७९३। प्रत्यैषीत्-प्रतिपन्नवान्।  
उत्त० ४६४। प्रतीष्टं-प्रतीप्सितं वा अभ्युपगतम्।  
ज्ञाता० १८।  
**पडिच्छज्ज-** परीक्षाकार्या। ओघ० १३२।  
**पडिजग्गिउं-** प्रतिजागर्यः। आव० ४८४।  
**पडिजागरण-** करणम्। व्यव० १९ अ।  
**पडिजागरिज्जा-** प्रतिजागृयात् उपचरेत्। दशवै० २५२।  
**पडिजाणामि-** व्युत्सृजामि। महाप्र० ।  
**पडिजिओ-** प्रतिजितः। आव० ४१७।  
**पडिडिय-** प्रतिष्ठितं-सिद्धं सत्यं अविचार्यम्। दशवै० ३३।  
**पडिणं-** प्रतीची-पश्चिमादिक्। दशवै० २०१।

पडिणत्ति- प्रतिज्ञप्तः। बृह० २५आ।

पडिणिज्जाएमि- प्रतिनिर्यातयामि-समर्पयामि। ज्ञाता० ११८।

पडिणिभोवण्णास- प्रतिनिभोपन्यासः। उपन्यासस्य तृतीय-भेदः। दशवै० ५५।

पडिणियं- प्रत्यनीकं-यद् आहारादिकाले वन्दते तत्, कृतिकर्मणि सप्तदशो भेदः। आव० ५४४।

पडिणीए- प्रत्यनीकः-प्रतिकूलवर्ती दोषानीकं प्रति वर्तत इति। उत्त० ४४ प्रत्यनीकः। ओघ० ४९।

पडिणीणेइ- प्रतिमुञ्चति। दशवै० ९८।

पडिणीय- प्रत्यनीकः। आव० २०३। प्रत्यनीकः-प्रतिकूलः। स्था० १६९। प्रत्यनीकम्। आव० ८४४। प्रत्यनीकः-प्रतिकूलवृत्तिः। ज्ञाता० ८७।

पडिणीयत्ता- प्रत्यनीकता-कार्योपघातकता। भग० ६८१।

पडिणीयय- प्रत्यनीकः कार्योपघातकः। जम्बू० १२३।

पडिणीयया- प्रत्यनीकता। आव० ६२०। प्रत्यनीकता-सामान्येन प्रतिकूलता। भग० ४११।

पडिण्णा- प्रतिज्ञा-

स्याद्वाद्वाप्रधानत्वान्मौनीन्द्रागमस्यैकपक्षा-वधारणम्। आचा० १३३।

पडितप्पह- वैयावृत्त्यं कुरुत। ओघ० १८०।

पडिथद्ध- प्रतिस्तब्धः प्रतिबद्धः। उत्त० ३६८।

पडिदार- पतिद्वारं-द्वारमेव। प्रश्न० ५९। प्रतिद्वारं-मूलद्वा-रानान्तरालवर्तिलघुद्वारम्। जीवा० १६०।

पडिदासी- प्रतिदासी। दशवै० १०८।

पडिदिस- प्रतिदिक् विदिक्। प्रज्ञा० १०५। प्रतिदिक्। सूर्य० २६। प्रतिदिक्। विदिक्। जीवा० ३९। प्रज्ञा० ३२९।

पडिदिसि- प्रतदिशः-विदिशः। स्था० २५१।

पडिदुवार- प्रतिद्वारं-अवान्तरद्वारम्। सम० १३८। प्रतिद्वारं-स्थूलद्वारावान्तरालवर्तिलघुद्वारम्। प्रज्ञा० ८६। प्रतिद्वारं-मूलद्वारावान्तरालवर्तिलघुद्वारम्। जम्बू० ७६। प्रतिद्वारं बाह्यद्वारम्। जम्बू० ३६६।

पडिनिकास- सदृशः। ज० ५७।

पडिनिभे- यत्रोपन्यासोपनये वादिनोपन्यस्तवस्तुनः सदृशं वस्तुत्तरादानायोपनीयते सा प्रतिनिभः। स्था० २५४, २६०।

पडिनियत्ता- प्रतिनिवृत्ता। आव० ५५७।

पडिनियत्तो- प्रतिनिवृत्तः उत्त० ३०४।

पडिनिवेश- प्रतिनिवेशः-एष पूज्यते अहं तु नेत्येवं परपूजाया असहनलक्षणः। स्था० २८५। प्रतिनिवेशः। आव० २१८। द्वेषः। आउ ०।

पडिनिस्तंसि- विश्रान्ता यस्मिन् मनुष्या इतीह दृष्टव्यं अथवा सन्ध्याकालसमये सति प्रतिनिश्रान्तः। ज्ञाता० १४७।

पडिनिस्सीए- प्रतिनिश्चितं उपरिवर्ति। दशवै० १५५।

पडिन्ना- प्रतिज्ञा-आकाङ्क्षा। सूत्र० १८८।

पडिपक्ख- प्रतिपक्षः-विसदृशः पक्षः। असदृश इति। ओघ० २३।

पडिपहो- दोषं गामाणं अवरे मज्झे खेत्ते खलए वा पडिपहो भण्णति, उब्भामाङ्गतस्स वा अभिमुहो पहे मिलिज्जा एस पडिपहो। निशी० १२२अ। पन्थानं प्रति प्रतिपथः। आचा० ३३८।

पडिपाय- मूलपादानां-प्रतिविशिष्टोपष्टम्भकरणाय पादः प्रति-पादः। जम्बू० २८५।

पडिपुंजिया- प्रतिपुंजिता-चन्दनादिचर्चिता। ज्ञाता० १२।

पडिपुच्छइ- पुनःपृच्छति प्रतिपृच्छति तच्च तमशङ्कितं करो-तीति। आव० २६।

पडिपुच्छई- प्रतिपृच्छति-प्रश्नयति। उत्त० ४७३।

पडिपुच्छण- प्रतिपृच्छा-आदिष्टस्य कार्यस्य करणकाले पुनः प्रच्छनम्। बृह० २२२अ। प्रतिपृच्छनं-शरीरादिवार्ता-प्रश्नः। ज्ञाता० ४४।

पडिपुच्छणा- प्रतिप्रच्छनं शरीरादिवार्ताप्रश्नः। भग० ११५। प्रतिप्रच्छना। ओघ० १५१। शङ्किते सूत्रादौ शङ्कापनोदाय गुरोः प्रच्छनं प्रतिप्रच्छना। स्था० १९०।

पडिपुच्छन्न- प्रथणं कथितस्य सूत्रादेः पुनः प्रच्छन्नं प्रतिप्र-च्छन्नम्, सम्यक्त्वपरक्रमे विंशतितमं द्वारम्। उत्त० ५८४।

पडिपुच्छा- ग्रामादौ प्रेषितस्य गमनकाले पुनः प्रच्छन्नं प्रतिप्रच्छना। अनुयो० १०३। गुरोः पुनः प्रच्छनं प्रतिप्रच्छना अनुयो० १०३। प्रतिपृच्छा त्वालापकः। भग० ३५२। दशधा सामाचार्या सप्तमी। स्था० ४९९। प्रतिपृच्छा-प्राङ्नि-यु-क्तेनापि कारणकाले कार्या निषिद्धेन वा प्रायोजनतः कर्तुं-कामेनेति। आव० २५९। स्था० ५०१।

**पडिपुण्ण-** प्रतिपूर्णः रूपं न पात्यते। अनुयो० २४०।  
 प्रतिपूर्णः। आव० ११०। सूत्रतो  
 बिन्दुमात्रादिभिरनुमर्थत-स्त्वध्याहाराकाङ्क्षादिरहितं  
 प्रतिपूर्णम्। अनुयो० १५। प्रतिपूर्ण-अर्थ प्रतीतिजनकम्।  
 सम० १६७। प्रतिपूर्ण-अपवर्गप्रापकै-र्गुणोर्भूतम्। आव०  
 ७६०। प्रतिपूर्ण आत्मस्वरूपेणाविकलः। भग० १४९।  
**पडिपुण्णगल्लकपोल-** परिपूर्णगल्लकपोलः। आव० २८८।  
**पडिपुण्णघोष-** प्रतिपूर्णघोष-उदात्तादिघोषैरविकलम्।  
 अनुयो० १६।  
**पडिपुन्नं-** परिपूर्ण अहोरात्रम्। स्था० २३७। प्रतिपूर्ण  
 बाह्येन निषद्याद्वयेन युक्तम्। ओघ० २१४। प्रतिपूर्ण  
 अपवर्गप्राप-कैर्गुणैर्भूतम् ज्ञाता० ४९, ५१।  
**पडिपेल्लिया-** विनाशय। भक्त०।  
**पडिपेहिता-** प्रतिविधाय-पिठित्वा-स्थगित्वा। सूत्र० ३२४।  
**पडिपोग्गले-** स्थास्नोर्गतौ। निशी० २३७ अ।  
**पडिप्पहर-** प्रतिप्रहारम्। आव० ५५७।  
**पडिबन्ध-** प्रतिबन्धः-अवरोधः। भग० १९। व्याघातः। भग०  
 १०१। उपरोधः। भग० ११७, १२३, १३९, ७३८।  
 प्रतिबन्धः-स्नेहः। स्था० ४६५। प्रतिबन्धः-अयं ममा-  
 स्याहमित्याशयबन्धरूपः। जम्बू० १४९। प्रतिबन्धः-  
 अभिष्वङ्गः, परिग्रहस्य द्वादशं नाम। प्रज्ञा० ९३।  
 प्रतिबन्धः। आव० ४०१। प्रतिबन्धः-आसङ्गः। आव०  
 ५३५। प्रतिबन्धः- रागः। पिण्ड० १४०।  
**पडिबद्ध-** प्रतिबद्धं-व्याप्तम्। दशवै० ८६। प्रतिबद्धं-अनुबद्धं,  
 सदानुगतम्। जीवा० १३०। प्रतिबद्धं-सूत्रार्थग्रहणसक्तम्।  
 बृह० २४८ आ। प्रतिबद्धः। आव० ३५९। प्रतिबद्धः। उत्त०  
 ३५८। प्रतिबद्धः। ओघ० ९८।  
**पडिबद्धया-** प्रतिबद्धता-गाढसम्बन्धः। भग० ८८।  
**पडिबद्धशरीर-** प्रतिबद्धशरीरः- दृढावयवकायः-युवा। सूत्र०  
 ३२५।  
**पडिबद्धा-** प्रतिबद्धा-युक्ता संश्लिष्टा। निशी० १०६।  
**पडिबाहिर-** प्रतिबाह्यं अनाधिकारणः। सम० ५३।  
 प्रतिबाह्य-अनाधिकारिणं दारेभ्योऽर्थागमद्वारेभ्यो वा,  
 दारान् राज्यं वा स्वयमधिष्ठायेत्यर्थः। सम० ५३।  
**पडिबुद्धजीवी-** प्रतिबुद्धं-प्रतिबोधः द्रव्यतो  
 जाग्रत्तोभावतस्तु यथावस्थितवस्तुतत्त्वावगमस्तेन  
 जीवितुं-प्राणान्धर्तुशीलम-स्येति, प्रतिबुद्धो वा

द्विधाऽपि प्रतिबोधवान् जीवतीत्येवं-शीलः-  
 प्रतिबुद्धजीवो। उत्त० २१३।  
**पडिबुद्धि-** पटवत्  
 विशिष्टवक्तृवनस्पतिविसृष्टविविधप्रभृत-  
 सूत्रार्थपुष्पफलग्रहणसमर्थतया बुद्धिर्येषां ते। औप० २८।  
**पडिबुद्धी-** प्रतिबुद्धिः-इक्ष्वाकुराजः साकेतनिवासी। स्था०  
 ४०१।  
**पडिबोह-** प्रतिबोधितानि-यौवनेन व्यक्तचेतनावन्ति  
 कृतानि। ज्ञाता० ४२। प्रतिबोधितं-यौवनेन व्यक्त  
 चेतनवन्तं कृतम्। ज्ञाता० ४२।  
**पडिबोहग-** प्रतिबोधकः सुप्तस्योत्थापकः। नन्दी० १७९।  
**पडिबोहियल्लओ-** प्रतिबोधितः। आव० ४०८।  
**पडिभग-** प्रतिभग्नः। उन्निष्क्रान्तः। ओघ० १८०।  
 प्रतिभग्नः। आव० २९८। प्रतिभग्नः। आव० ५२०।  
 प्रतिभग्नः। उत्त० ९०।  
**पडिभज्जंतो-** प्रतिभग्नः। आव० ४०८।  
**पडिभाग-** प्रतिभागः-प्रतिबिम्बः। जम्बू० १४८। प्रति-  
 भागः- प्रतिबिम्बमादर्शादाविव विशिष्टः-  
 प्रतिबिम्बवस्तुगत आकारः-प्रतिभागः। ३७२।  
 प्रतिभागः-खण्डः। प्रज्ञा० २८३।  
**पडिभिण्णो-** प्रतिभिन्नः। आव० ३८८, १६।  
**पडिमंठाइ-** प्रतिमास्थायी-प्रतिमया कायोत्सर्गेण  
 भिक्षुप्रति-मया वा मासिकयादिकया तिष्ठति यः सः।  
 प्रश्न० १०७।  
**पडिमंजूसा-** प्रतिमञ्जूषा। आव० ४०१।  
**पडिम-** प्रतिमा। अन्त० २१।  
**पडिमठाती-** प्रतिमास्थायी-भिक्षुप्रतिमाकारी। स्था० ३९७।  
 प्रतिमया-एकरात्रिक्यादिकया कायोत्सर्गविशेषेणैव  
 तिष्ठति। स्था० २९९।  
**पडिमा-** प्रतिमा-अभिग्रहविशेषरूपारेकादशा दर्शनादिः।  
 उत्त० ६१३। प्रतिमा-दर्शनादिगुणयुक्ताः। आव० ६४६।  
 कालविशेषमानयुतदर्शनाद्यभिग्रहधरणं कृष्णपाक्षिका  
 क्रिया-वादिभिन्ना एकादशोपासकावस्था वा। उपा०  
 दशा०। प्रतिमा नग्नता। बृह० २५३ आ। प्रतिमा-  
 बिम्बलक्षणम्। आव० ५२४। प्रतिमा-कायोत्सर्गः। प्रश्न०  
 १४३। प्रतिमा-प्रतिज्ञा। आव० ६४६। प्रतिमा-श्रावस्य  
 पञ्चमी प्रतिज्ञा। आव० ६४६। गेहचेतियं। निशी० ६९

आ। प्रतिमा-अभि-ग्रहः भिक्षुप्रतिमा। स्था० ४१६।  
 प्रतिमा-श्रावकस्य पञ्चमी प्रतिज्ञा-अभिग्रहरूपा। सम०  
 १९। प्रतिमा-पिण्डै-षणा-द्यभिग्रहविशेषः। आचा० ३५८।  
 प्रतिमा-अभिग्रहचारी। व्यव० १३६ आ। प्रतिमा-  
 भिक्षुप्रतिमा। व्यव० १४६ अ। प्रतिमा-अभिग्रहः। स्था०  
 ५११। प्रतिमा-प्रतिज्ञा। स्था० २१। प्रतिमा-प्रतिपत्तिः  
 प्रतिज्ञा। स्था० ६५। प्रतिमा-तथाविधाभिग्रहविशेषरूपा।  
 अनुयो० ५३१।

**पडिमाणुसं-** प्रतिमानुषम्। आव० ३४५।

**पडिमाणे-** प्रतिमानम्। अनुयो० १५१।

**पडिमापडिवण्णओ-** प्रतिपन्नप्रतिमः। आव० ९५।

**पडिमुडिओ-** णिसद्धो। निशी० ३२० आ।

**पडिमेल्लियपहिणीयया-** पेरितशत्रवः। चतु० ।

**पडियंति-** प्रतियान्ति। दशवै० ४२।

**पडियंसि-** पतिते-प्रासादादेर्मञ्चके वा ग्लानभावात्।  
 जाता० ११५।

**पडिय-** वाहनात्पतितः। जाता० १९३। पतितं-प्रासादशिख-  
 रादेः कलशादिरिवाधो निपतितम्। प्रश्न० १३४। पतितं-  
 भ्रष्टम्। प्रश्न० १२४।

**पडियगविठ-** प्रत्यगन्तव्यम्। व्यव० ३६९ अ।

**पडियपुयत्थणी-** पतितपुतस्तनी-

अवनतिगतनितम्बदेशव-क्षोजा। जाता० २४८।

**पडियरंति-** प्रतिजागरणं-निरूपणं कुर्वन्ति। ओघ० १०२।

**पडियरइ-** प्रतिचरति-प्रतिजागरणं करोति। ओघ० २०७।  
 पडिक्खति। निशी० १२३ अ।

**पडियरग-** प्रतिचारकः-परिपालकः। पिण्ड० ७०।

**पडियरगा-** अवराहा। निशी० ९८ आ। परिण्णीअणस-  
 णोवदिद्धो, तस्स जे वेयाच्चकारिणो ते पडियरगा।  
 निशी० ८६ अ।

**पडियरणा-** प्रतिचरणा-आगमनम्। ओघ० ३३। प्रतिप्रति-  
 तेष्वर्थेषु चरणं गमनं तेन तेन आसेवनाप्रकारेणेति-  
 प्रति-चरणा, प्रतिक्रमणद्वितीयपर्यायः। आव० ५५२।  
 प्रतिचरणा-आगमनम्। ओघ० ३३।

**पडियरावितो-** प्रतिचारितः। आव० २२७।

**पडियरिए-** निरुविण। ओघ० १६१।

**पडियरिओ-** प्रतिचरितः। आव० २९८।

**पडिया-** थिग्गलयं। निशी० १२५ आ। प्रतिज्ञा। निशी० ५०

आ। वाचना। आव० ३९७।

**पडियाए-** प्रतिज्ञाय-उद्दिश्य। आचा० ३६१।

**पडियाण-** पटतानकं-पर्याणस्याधो यदीयते। जाता० २३०।

**पडियार-** शरीरसंस्कारः। निशी० २६४ अ।

**पडियारणा-** आसेवना। आचा० ३६४।

**पडियारी-** प्रतिचारिणः-कायिकीमात्रकादिसमर्पका विश्रा-  
 मकाः। व्यव० १३१ अ।

**पडिरूव-** प्रतिरूपं द्रष्टारं द्रष्टारं प्रति रमणीयम्। सम०

१३८। अस्यामवसर्पिण्यां चतुर्थकुलकरभार्या। सम०

१५०। प्रतिरूपः-उत्तरनिकाये द्वितीयो व्यन्तरेन्द्रः।

भग० १५८। सदृशम्। भग० ३१९। प्रतिरूपा-

चतुर्थकुलकरपत्नी। आव० ११२। प्रतिरूपः-उचितः।

दशवै० २४१। द्वितीयो भूतेन्द्र। स्था० ८५। प्रतिरूपः-

रूपवान्। प्रश्न० ११६। प्रतिरूपः-साधुचित्तस्वरूपः।

विपा० ३३। प्रतिरूपः-रूपवान्। औप० ११। प्रतिरूपः

भूतेन्द्रः। जीवा० १७४। प्रतिरूपं-प्रतिवि-शिष्ट

असाधारणं रूपं आकारो यस्य सः। जम्बू० ७५। प्रतिरूपं

उचितम्। उत्त० ५००। प्रतिरूपं-प्रतिबिम्बम्। सूत्र० ४०७।

प्रतिरूपं-प्रतिविशिष्टं। रूपं यस्य तत्। प्रज्ञा० ८७। जा

वत्थुं वत्थुं पडुच्च अणुरूवो पडंजइ सो। दशवै० १३०।

प्रतिक्षणं नवं नवं रूपं यस्य तद् प्रतिरूपम्। प्रज्ञा० ८७।

प्रतिरूपः-उचितः। व्यव० १९ अ।

**पडिरूवकायकिरिया-** प्रतिरूपकायक्रिया-यथा परिपाट्या  
 शरीरविश्रामणम्। व्यव० २२ अ।

**पडिरूवग-** प्रतिरूपकं-प्रतिबिम्बम्। राज० ९। प्रतिरूपकं-  
 सदृशम्। उपा० ८। प्रतिरूपकम्। आव० २९९। प्रतिरूपकं-  
 सदृशम्। आव० ८२३।

**पडिरूवजोगजुंजण-** प्रतिरूपयोगयोजनं-

उपचारविनयभेदः। दशवै० २४१।

**पडिरूवन्नु-** प्रतिरूपविनयो-यथोचितप्रतिपत्तिरूपस्तं  
 जाना-तीति प्रतिरूपजः। उत्त० ५००।

**पडिरूवया-** प्रतिः-सादृश्ये ततः प्रतीति

स्थविरकल्पिकादि-सदृशं रूपं-वेशो यस्य स तथा

तद्वावस्तत्ता-अधिकोपक-रण-परिहाररूपा। उत्त० ५८१।

**पडिरूवा-** प्रतिविशिष्ट-असाधारणं रूपं यस्याः सा

प्रतिरूपा, प्रतिक्षणं नवं नवमिव रूपं यस्याः सा। जम्बू०

२१। चतुर्थकुलकरभार्या। स्था० ३९८। प्रतिरूपा-द्रष्टारं

द्रष्टारं प्रति रूपं यस्याः सा। ज्ञाता० ३। प्रतिरूपाः-द्रष्टारं प्रति रमणीया इति। स्था० २३२।

**पडिलगगो-** प्रतिलग्नः-ग्लानो जातः। आव० ६७८।

**पडिलगगो-** प्रतिलग्नः। आव० ३९२।

**पडिलभे-** प्रतिलभेत-प्राप्नुयात्। उत्त० ४६।

**पडिलाभिता-** प्रतिलम्भयिता-लाभवन्तं करोतीत्येवंशीलो यः च भवति। स्था० १०९।

**पडिलाहेहि-** प्रतिलम्भय। आव० ८१५।

**पडिलेहंति-** प्रत्युपेक्षन्ते-पौनःपुन्येन लगन्ति। आचा० ११३।

**पडिलेह-** प्रतिलेखः। आव० ३९९।

**पडिलेहओ-** प्रतिलेखकः-प्रतिलिखतीति, प्रवचनानुसारेण स्थानादिनिरीक्षकः साधुः। ओघ० १३।

**पडिलेहणं-** प्रत्युपेक्षणा-चक्षुषा निरीक्षणम्। प्रश्न० १५६।

**पडिलेहणा-** प्रत्युपेक्षणा-चक्षुर्व्यापारः। प्रश्न० ११२।  
प्रत्युपेक्षणा-आगमविधिना यथावन्निरूपणा ग्रहणप्रति-  
जागरणरूपा। उत्त० ५८३। प्रतिलेखनं-प्रतिलेखना-  
आगमानुसारेण या निरूपणा क्षेत्रादेः सा। ओघ० १२।

**पडिलेहणिग्या-** प्रत्युपेक्षणा। ओघ० ११७।

**पडिलेहय-** प्रतिलेखयतीति प्रतिलेखकः-प्रवचनानुसारेण स्थानादिनिरीक्षकः साधुरिति। ओघ० १३।

**पडिलेहा-** प्रत्युपेक्षणा-गुणदोषपर्यालोचना। आचा० ११४।

**पडिलेहाए-** प्रत्युपेक्ष्य-पर्यालोच्य। आचा० २७२। आचा० २१४।

**पडिलेहिअव्व-** प्रेक्षितव्यं-आलोचनीयम्। दशवै० २७२।

**पडिलेहिऊण-** प्रत्युपेक्ष्य-चक्षुषा निरीक्ष्य। ओघ० ११४।

**पडिलेहित्त-** प्रत्युपेक्ष्य-प्रतिजागर्य। उत्त० ५३९।

**पडिलेहित्तए-** प्रत्युपेक्षितुं-अवस्थानार्थं निरीक्षितुम्।  
स्था० १५७।

**पडिलेहित्ता-** प्रत्युपेक्ष्य-ज्ञात्वा। दशवै० २५०। प्रत्युपेक्ष्य-  
दृष्ट्वा। आचा० ७१।

**पडिलेहिय-** प्रत्युपेक्षणं-गोचरापन्नस्य शय्यादेशचक्षुषा  
निरीक्षणम्। आव० ८३६। प्रेक्षितं-पर्यालोचितम्। आचा० १८६।

**पडिलेहिया-** प्रति उप-सामीप्येन ईक्षिता-ज्ञाता  
प्रत्युपेक्षिता। आचा० २३३।

**पडिलेहे-** प्रत्युपेक्षेत-निरूपयेत्। ओघ० १७८।

**पडिलेहेइ-** प्रतिलेखयति-प्रत्युपेक्षते। उत्त० ४३४। प्रतिलि-  
खति। आव० २१९।

**पडिलेहेति-** प्रतिलेखयति प्रस्थापयति। आव० ७५६।

**पडिलोम-** प्रतिलोमः तद्गन्धाद्विपरीतगन्धः। आचा० ३६४। प्रतिलोमः-इन्द्रियमनसोरनाह्लादः। स्था० २४४।  
प्रति-लोमः-अपवादः। ओघ० ६५। प्रतिलोमं-  
पश्चानुपूर्वी। जम्बू० ९७। प्रतिलोमं-प्रतिकूलम्। दशवै० ५२।  
प्रतिकूलं- यत्र प्रातिकूल्यमुपदिश्यते यथा शठं प्रति  
शठत्वं कुर्यात्। स्था० २५३।

**पडिवइर-** प्रतिवैरम्। आव० ६३६।

**पडिवक्ख-** प्रतिपक्षः-तुल्यपक्षः। ओघ० ९७। प्रतिपक्षः-  
असदृशः। ओघ० २३। प्रतिकूलः पक्षः प्रतिपक्षः-  
अप्रमत्ततया-शुभयोगपूर्वकंप्राणाव्यपरोपणम्। दशवै० २४।  
प्रतिपक्षः-सदृशपक्षः। बृह० २४७ अ। प्रतिपक्षः।  
आव० १०१।

**पडिवज्जइ-** प्रतिपद्यते। आव० ३१३। उत्त० १८५।

**पडिवज्जिण-** प्रतिपादिनोऽवश्यं प्रतिपद्यमानस्य। उत्त० २८५।

**पडिवज्जित्तए-** प्रतिपत्तुं-अभ्युपगन्तुम्। स्था० ५७।

**पडिवज्जेजा-** प्रतिपद्यत। आव० २२४।

**पडिवत्ति-** प्रतिपत्तिः-द्रव्यादिपदार्थाभ्युपगमः  
प्रतिमाद्यभिग्रह विशेषो वा। नन्दी० २१०। प्रतिपत्तिः-  
प्रति-पत्तिः उपमा। व्यव० २२२ अ। प्रतिपत्तिः-  
प्रतिपादनं, परिच्छित्तिः, अवधिप्रकृतिर्वा। आव० २९।  
प्रतिपत्तिं-अभ्यागतकर्तव्यरूपम्। उत्त० ५००।  
प्रतिपत्तिः-प्रकारः भेदः। ओघ० ११७।

**पडिवत्तिकुसला-** प्रतिपत्तिकुशलाः

परप्रतिवचनदानसामर्थ्याः। व्यव० ५९ अ।

**पडिवत्ती-** प्रतिपत्तिः-मतान्तररूपा। सूर्य० ८।

प्रतिपत्तिः-द्रव्यार्थं पदार्थाभ्युपगमा मतान्तराणि,  
प्रतिपाद्यनिमाद्यभि-ग्रहविशेषा वा। सम्० १०८।

प्रतिपत्तिः-प्रत्यवताररूपं प्रतिपादनं, सवित्तिः

अनुयोगद्वारं अर्थो वा। जीवा० ८। प्रतिपत्तिः-

यथास्वरुचिवस्तुभ्युपगमः। सूर्य० २४। प्रति-पत्तिः-

प्रतिवचनप्रदानम्। बृह० ४९ अ। प्रतिपत्तिः-

उत्तरदानम्। बृह० १४७ अ। प्रतिपत्तिः-परमतरूपा।

सूर्य० ८। प्रतिवचनम्। निशी० ४२ अ। वन्दनम्। चतु०

**पडिवसभ-** प्रतिवृषभग्रामः-यत्र ग्रामं भिक्षाचर्यायै गमनम्। बृह० ७९ अ।  
**पडिवसभा-** भिक्षायरियगामादि। निशी० ३३५ आ।  
**पडिवाडी-** परिपाटी। आव० ९९।  
**पडिवाती-** प्रतिपतनशीलं प्रतिपाति-उत्कर्षेण लोकविषयं भूत्वा प्रतिपतति। स्था० ३७०।  
**पडिवाय-** प्रतिपद्यते पक्षस्याद्यतयेति प्रतिपत्, प्रथमो दिवस इति। जम्बू० ४९१।  
**पडिविद्धंसन्ति-** प्रतिध्वंसन्ते-योनिदोषादुपहतशक्तयो भवन्ति, मेहनविश्रोतसा वा योनेर्बहिः पतन्तो विध्वंसन्ते इति। स्था० ३१४।  
**पडिविलइत्ता-** प्रतिविलगिता। आव० ३५०।  
**पडिविशिष्टं-** प्रतिविशिष्टम्। सूर्य० २६८।  
**पडिवुज्जणा-** वासासु वा सिसिरेसु वा णिवातद्वा तेषां च पडिवुज्जणा। निशी० २३२ आ।  
**पडिवूहं-** प्रतिव्यूहं-तत्प्रति द्वन्द्वगानां तद्गङ्गोपायप्रवृत्तानां व्यूहम्। जम्बू० १३९।  
**पडिवेसिय-** प्रतिवेसिकः-सीमान्तवर्ती-प्रत्यर्थी। व्यव० १७० अ।  
**पडिसंखिविय-** प्रतिसङ्खेपणं-शिलायाः पततः संरक्षणम्। भग० ७६७।  
**पडिसंध-** पडिसंधत्ते। कर्मोदयात् त्रुटितमपि संघट्टयति। उत्त० ५५०।  
**पडिसंधाय-** प्रतिसन्धाय-सह गन्तृभावेनानुकूल्यं प्रतिपद्य वा। सूत्र० ३२१।  
**पडिसंलीण-** प्रतिसंलीनः-वस्तु प्रति सम्यग्लीनो निरोधवान्-प्रतिसंलीनः, क्रोधं प्रति उदयनिरोधेनोदयप्राप्तविफलीकरणेन च च प्रतिसंलीनः। स्था० २०७।  
**पडिसंलीणपडिमा-** प्रतिसंलीनप्रतिमास-संलीनताऽभिग्रहः। औप० ३२।  
**पडिसंलीणया-** षष्ठं बाह्य तपः। भग० ९२१।  
**पडिसंलीणा-** आश्रयस्थिता। दशवै० ५२।  
**पडिसंविक्खे-** प्रतिसमीक्षतेऽदीनमनाः अलाभमाश्रित्यालो-चयति। उत्त० ११८।  
**पडिसंवेदेइ-** प्रतिसंवेदयति-अनुभवति। आचा० २४।  
**पडिसंसाहणय-** अनुव्रजनम्। भग० ६३७।

**पडिसंसाहेहि-** विनयप्रस्तावात् व्रजन्तं प्रतिसंसाधय-अनुव्रज, अथवा संश्लाघय-प्रशंसां कुर्वित्यर्थः। जाता० १८९।  
**पडिसंहरइ-** प्रतिसंहरति। आव० १२४।  
**पडिसवत्त-** प्रतिसपत्नः-परस्परविरोधी। दशवै० १९४।  
**पडिसामियं-** प्रतिस्वामितं-स्वामिना प्रतिगृहीतम्। बृह० २४ अ।  
**पडिसाहरति-** प्रतिसंहरति-निरुणद्धि। स्था० ११२। जाता० ३३।  
**पडिसाहरिए-** प्रतिसंहरणं-शिलायाः शिलापुत्रकाश्चसं हत्य पडिकरणम्। भग० ७६७।  
**पडिसीसगं-** प्रतिशीर्षकं-दत्तस्वशीर्षं प्रतिरूपम्। प्रश्न० ३९।  
**पडिसुंडिओ-** प्रतिसुंडितो-निषिद्धः। बृह० २८९ आ।  
**पडिसुई-** आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां जम्बू-ऐरवते नवम कुलै-गरः। सम्म० १५३।  
**पडिसुणइ-** प्रतिशृणोति-अभ्युपगच्छति। जीवा० ३४३।  
**पडिसुणणा-** प्रतिश्रवणा। आव० २६५।  
**पडिसुणमाण-** प्रतिशृण्वति। आव० ५७६।  
**पडिसुणेति-** प्रतिशृण्वति-अभ्युपगच्छति, परस्परं साक्षीकृत्य प्रतिज्ञातं कार्यं कर्तव्यमवश्यामिति दृढी भवन्ति। जम्बू० २४०।  
**पडिसुते-** आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां सप्तमकुलकरः। स्था० ५१८।  
**पडिसुय-** प्रतिश्रुतं-प्रतिशब्दः। प्रश्न० २०। प्रतिश्रुतं-प्रतिज्ञानम्। स्था० ४७४। प्रतिश्रुतं-प्रतिशब्दः। राज० २५। प्रतिश्रुतः-प्रतिशब्दः। भग० ४८३।  
**पडिसुया-** प्रतिश्रुता प्रतिशब्दका। जाता० १०१।  
**पडिसूयग-** प्रतिसूचकः-नगरद्वारसमीपेऽल्पव्यापारोऽवतिष्ठति। व्यव० १७० अ।  
**पडिसूर-** प्रतिसूर्यः-द्वितीयसूर्यः। भग० १९५। प्रतिसूर्यः-उत्पातादिसूचको द्वितीयः सूर्यः। जीवा० २८३। प्रतिसूर्यः-उत्पातादिसूचको द्वितीयः सूर्यः। अनुयो० १२१।  
**पडिसेगा-** प्रतिसेकाः नखाः। जम्बू० ८१।  
**पडिसेवणा-** प्रतिसेवना। ओघ० २२५।

सम्माराहणविवरिया पडिगया वा सेवणा। उत्त० २५६।  
प्रतिषेवणा-प्राणातिपा-ताद्या सेवनम्। स्था० ४८५।  
प्रतिषेवणा-अकल्प्यसमाच-रणमितिभावः। व्यव० ११  
अ।

**पडिसेवणाकसिण-** प्रतिसेवनकृत्स्नं-ततः परस्यान्यस्य  
प्रतिसेवना स्थानस्यासम्भवात्, स च यत्कृत्स्नम्।  
व्यव० ११८ आ।

**पडिसेवणाकुशीलो-** प्रतिसेवनाकुशीलः-  
सम्यगाराधनविपरीता प्रतिगता वा सेवना तथा  
कुशीलः। उत्त० २५६।

**पडिसेवणाणुलोमा-** प्रतिसेवनानुलोम्येन-यथैव  
प्रतिसेविता-स्तेनैवानुक्रमेण कदाचिच्चिन्तयति। ओघ०  
१७५।

**पडिसेवना-** प्रतिसेवनाप्युपचारात् प्रायश्चित्तम्। व्यव०  
१४ अ।

**पडिसेववियउणा-** प्रतिसेवविकटना। ओघ० १७६।

**पडिसेविग-** प्रतिसेवको नाम यो भिक्षुर्निष्कारणे  
कारणाभावे-ऽपि पञ्चकादीनि प्रायश्चित्तस्थानानि  
प्रतिसेवते। व्यव० २५२ आ।

**पडिसेविय-** प्रतिसेवितः। आव० ५२। संयमप्रतिकूलार्थस्य  
सञ्जवलनकषायोदयात्सेवकः प्रतिसेवकः  
संयमविराधकः। भग० ८९४।

**पडिसेह-** प्रतिषेधः-निराकरणम्। अचिकित्स्थोऽयमित्य-  
भिधानरूपः। उत्त० ३०४।

**पडिसेहति-** विनिवर्तयति-निराकुर्वती। ज्ञाता० १४९।

**पडिसोतचारी-** प्रतिश्रोतश्चारी-दूरादारभ्य  
प्रतिश्रयाभिमुख-चारीत्यर्थः। स्था० ३४२।

**पडिसोय-** स्रोतं स्रोतं पतीति-प्रतिश्रोतं-प्रतिप्रवाहम्। भग०  
२३३।

**पडिसोयगमण-** प्रतिश्रोतोगमनं-प्रवाहसन्मुखगमनम्।  
उत्त० ३२७।

**पडिस्सय-** प्रतिश्रयः। आव० ९२। प्रतिश्रयः-उपाश्रयः।  
ओघ० १३८।

**पडिस्सयवाल-** प्रतिश्रयपालः। आव० २९१।

**पडिस्सुई-** प्रतिश्रुतिः द्वितीयकुलकरः। जम्बू० १३२।

**पडिस्सुय-** प्रतिश्रुतं-गुरौ वाचनादिकं  
यच्छत्येवमेतदित्यभ्यु-पगमः। उत्त० ५३५।

**पडिह-** प्रतिघातः-प्रतिहननम्। स्था० ३०३।

**पडिहए-** प्रतिहतं-निराकृतम्। भग० ३६।

**पडिहणिओ-** प्रतिहतः। आव० ५२।

**पडिहता-** प्रतिहता। सूर्य० ९५।

**पडिहत्थं-** उद्धमायं-अधिकं-आपूर्णश्च। नन्दी० ४६। अति-  
प्रभूतः-देशीशब्दोऽयम्। जम्बू० २९२। परिपूर्णः। जम्बू०  
५७। प्रतिहस्तः-अतिरेकतः अतिप्रभूतः। जीवा० १९८।  
प्रतिहस्तः-प्रतिपूर्णः। जीवा० ३५०।

**पडिहयं-** प्रतिहतं-क्षपितम्। भग० ३६। प्रतिहतं-सम्यक्त्व-  
प्राप्त्या ह्रस्वीकृतम्। औप० ८५। प्रतिहतं-मिथ्यादुष्कृत-  
दानप्रायश्चित्तप्रतिपत्त्यादिना नाशितम्। प्रज्ञा० २६८।  
प्रतिहतं इदानीमकरणतया। आव० ७६२। प्रतिहतं-  
अतीतकालसम्बन्धिनिन्दातः। भग० २९५। प्रतिहतः-  
स्खलितः। प्रज्ञा० १०८।

**पडिहाति-** प्रतिभाति। आव० ९७।

**पडिहायइ-** प्रतिभासते। आव० ५१२।

**पडिहार-** प्रतिहारः प्रत्यार्पणम्। औ० १००।

**पडिहारयग-** प्रातिहार्यकं-भूषणविधिविशेषः। जीवा० २६९।

**पडिहारितं-** कथितं। निशी० २१० आ।

**पडिहारिय-** प्रतिहारितः-ज्ञापितः। बृह० २१४ आ।

**पडीणवाय-** अपाचीनवातः योऽपाचीनदिशः समागच्छति  
वातः सः। जीवा० २९।

**पडीतंतो-** प्रतितन्त्रसिद्धान्तः-यः खल्वथ  
स्वतन्त्रसिद्धान्तो न परतन्त्रेषु स प्रतितन्त्रसिद्धान्तः।  
बृह० ३१ आ।

**पडु-** पटुः दक्षपुरुषः। सूर्य० २६७। पटुः-स्पष्टध्वनिः।  
प्रश्न० ४८। पटु-स्वविषयग्रहणदक्षम्। भग० ४६९।

**पडुक्खेव-** प्रत्युत्क्षेप-  
मुरजकांसिकादिगीतोपकारकातोद्यानां-ध्वनिः  
नर्तकीपदप्रक्षेपलक्षणो वा। अनुयो० १३२।

**पडुच्च-** प्रतीत्य-आश्रित्य। जीवा० ५६।

**पडुच्चमक्खिय-** निर्वृतिप्रत्याख्याने आगारः। आव० ८५४।

**पडुच्चसच्च-** प्रतीत्य-आश्रित्य वस्त्वन्तरं सत्यं प्रतीत्य-  
सत्यम्। स्था० ४९०। प्रतीत्यसत्यं-यथा अनामिकाया  
दीर्घत्वं ह्रस्वत्वं चेति। दशवै० २०८। दशधा सत्यौ षष्ठः।  
स्था० ४८९।

**पडुच्चसच्चा-** प्रतीत्यसत्या। पर्याप्तिकसत्यभाषायाः

षष्ठो भेदः। प्रज्ञा० २५६।

**पडुप्पण-** प्रत्युत्पन्नो-वार्तमानिकः अभूतपूर्व इत्यर्थः,  
दोष गुणोत्तरः। स्था० ४९२। प्रत्युत्पन्नः-वार्तमानिकः।  
प्रज्ञा० ५०९। प्रत्युत्पन्नः-गुणितः। सूर्य० ३८।  
प्रत्युत्पन्नः-गुणितः। अनुयो० २०७। प्रत्युत्पन्ने-सर्वथा  
वस्त्वभ्युपगते विशेषो यो  
दोषोऽकृताभ्यागमकृतविप्रणाशादिः स दोष-  
सामान्यापेक्षया विशेषः, दशषु विशेषेषु षष्ठः। स्था०  
४९४।

**पडुप्पण्णा-** प्रत्युत्पन्ना। आव० ६६।

**पडुप्पन्न-** लब्धः। ओघ० १७३। प्रत्युत्पन्नः-तत्कालमुत्प-  
द्यमानः। जीवा० १४१। प्रत्युत्पन्नं-लब्धम्। दशवै० १२।  
स रूवं जणपयादीहिं उववेय। दशवै० १२५।

**पडुप्पन्ननन्दी-** प्रत्युत्पन्नेन-लब्धेन वस्त्रशिष्यादिना  
प्रत्युत्पन्नो वा-जातः शिष्याचार्यादिरूपेण नन्दति यः स  
प्रत्युत्पन्ननन्दी, नन्दनं नन्दिः, प्रत्युत्पन्नेन  
नन्दिर्यस्य स। स्था० २१८।

**पडुप्पन्नविणास-** प्रत्युत्पन्नविनाशं-उदाहरणस्य चतुर्थो  
भेदः दशवै० ३५।

**पडुप्पन्नविणासि-** प्रत्युत्पन्नस्य तत्कालोत्पन्नवस्तुनो  
विनाशोऽभिधेयतया यत्रास्ति तत् प्रत्युत्पन्नविनाशि।  
स्था० २५७।

**पडुप्पन्ना-** प्रत्युत्पन्नाः-वर्तमानकालभाविनः। आचा०  
१७८।

**पडुप्पाएमाण-** प्रत्युत्पद्यमान-गुण्यमानः। जीवा० १७६।

**पडेसुअ-** प्रतिद्युतः-प्रतिशब्दः। जम्बू० ३९६।

**पडोआर-** प्रतीकारः। आव० ३४७। निशी० ३५६।

**पडोयार-** परिकरणम्। ओघ० १३२। प्रत्यवतारः-प्रादुर्भावः।  
जम्बू० ६९। प्रति-सर्वतः सामस्त्येन अवतीर्यते व्याप्यते  
येन सः प्रत्यवतारः। प्रज्ञा० ५३२। प्रत्यावतारः- उपक-  
रणम्। पिण्ड० १३।

**पडोलकंद-** गुच्छाविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

**पड्डए-** ह्रस्वमहिषी। उत्त० ३०३।

**पड्डिच्छीर-** पड्डिच्छीरं-पारिहिद्विक्शीरम्। ओघ० ४८।

**पड्डय-** महिषीवत्सः। आव० ७१९।

**पड्डिया-** पड्डिका-ह्रस्वगोस्त्री, ह्रस्वमहिषी वा। विपा०  
४८।

**पढम-** प्रथमः-प्रधानः। जम्बू० २०४। आद्यं-प्रधानं वा।

आचा० ६। प्रथमः-प्रधानः। जम्बू० २५१।

**पढम अचरमसमय-** प्रथमाचरमसमयः। भग० ९६९।

**पढम अपढमसमय-** प्रथमाप्रथमसमयः। भग० ९६९।

**पढमग-** प्रथमकः-मूलभूतः। जीवा० २२८। प्रथमकः-  
मूलभूतः। जीवा० २९४।

**पढमचरमसमय-** प्रथमचरमसमयः। भग० ९६९।

**पढमद्धा-** पढमपौरुष्यां यदद्धम्। ओघ० १४८।

**पढमपढमसमय-** प्रथमप्रथमसमयः। भग० ९६९।

**पढमपत्तं-** प्रथमपत्रं-या बीजस्य समुच्छूनावस्था। प्रज्ञा०  
३८।

**पढमपाउस-** आसाढो, छण्हं उत्तूणं जेण पढमो पाउसो

वणिज्जंति ते। निशी० ३३४ आ। ज्ञाता० ६५।

प्रथमप्रावृट्। आव० २६२। प्रथमवर्षा। ओघ० १६०। इह

आषाढ श्रावणौ प्रावृट्, आषाढस्तु प्रथमप्रावृट्, ऋतुनां वा  
प्रथमेति प्रथमप्रावृट्। स्था० ३०९।

**पढमपुच्छा-** कोसि तुमं को व ते पिण्वेदो जेणं पव्वयसि  
एवं पुच्छिते पढमपुच्छा। निशी० ३० आ।

**पढमबिड्य-** प्रथमपरिषहेण बाध्यमानः-क्षुधित इत्यर्थः।  
द्वितीयपरिषहेण तृषा बाध्यमानः पिपासया  
पीड्यमानः। ओघ० १०३।

**पढमवओ-** प्रथमवयः। आव० १३७।

**पढमसत्तराड्दिया-** भिक्षुप्रतिमाविशेषः। ज्ञाता० ७२।

**पढमसमयणियंठा-** योऽन्तर्मुहूर्तनिर्गन्थकालसमयराशौ  
प्रथम-समयं प्रतिपद्यमानः सः प्रथमसमयनिर्गन्थः।  
उत्त० २५७।

**पढमसमयतिरिक्खजोणिय-** प्रथमसमयतिर्यग्योनिकः-  
नरकादिशेषगतित्रयादागतः प्रथमसमयेन वर्तमानः।  
जीवा० ४६३।

**पढमसमुद्धिस्सग-** प्रथमसमुद्दिष्टः-ग्लानादिः। ओघ०  
१८५।

**पढमसमोसरण-** प्रथमं-आद्यं बहूण समवातो-  
समस्सरणं। निशी० ३३६ आ। प्रथमसमवसरणं-  
प्रथमवर्षा कालसमयः। व्यव० १६१ आ।

**पढमा-** प्रथमा-प्रथमालिका। ओघ० ४१। प्रथमालिका।  
ओघ० १८४। प्रथमिका-मूलभूता। जम्बू० ३२४।

**पढमाओसप्पिणी-** अवसर्पिण्याः-प्रथमो विभागः- प्रथमा-

वसर्पिणी। जम्बू० ४८५।

**पढमालिय-** प्रथमालियं मात्रकम्। ओघ० १०३। निशी० १५५ अ।

**पढमालिया-** प्रथमालिका-नमस्कारसहित  
भोजनकालमानम्। आव० २६३। प्रथमालिका। उत्त० ९०।

**पढमावलिया-** प्रथमा-उत्तरोत्तरावलिकापेक्षया  
आद्याश्चतस्र आवलिका यस्मिन् स प्रथमावलिकः,  
अथवा प्रथमात्-मूलभूताद्विमानेन्द्रकादारभ्य  
याऽसावावलिकाविमानानुपूर्वी। सम्० ७७।

**पढमा सत्तराङ्दिणा-** प्रथमा सप्तरात्रिकी। आव० ६४७।  
सप्तरात्रिन्दियानि यासु ताः सप्तरात्रिन्दिवास्ताश्च  
तिस्र भवन्तीति सप्तानामुपर्यष्टमी  
प्रथमासप्तरात्रिन्दिवा। सम्० २२।

**पढमिल्लुग-** प्रथममेव प्रथमिल्लुकं-  
प्रथममनापतसंलोकलक्षणं स्थंडिलं तत्। बृह० ७२ अ०।  
प्रथमकं-आविचिमरणम्। उत्त० २४०। जहण्णं। निशी० ६ आ।

**पढमिल्लुय-** प्रथमः। संस्ता०।

**पढमिल्लुया-** प्रथमिल्लुका-प्रथमा एव। आव० ७७।

**पढमेव-** प्रथमे वयसि आद्यौवने। उत्त० ४७५।

**पढमोगगहो-** अनुज्ञास्यदाचार्यभोगज्ञापनपूर्वमवग्रहग्रहः।  
बृह० ८६।

**पण-** पणः-द्रुम्भः। आव० ४२१।

**पणइ-** प्रणतिः। आव० ४०७।

**पणइओ-** याचितः। निशी० १५६ अ।

**पणउ-** उल्ली। दशवै० ८०। उल्ली। निशी० १८२।

**पणए-** पनकं-अनन्तकायवनस्पतिभेदः। आचा० ५९।  
पनकः-वनस्पतिविशेषः। पिण्ड० १२। साधारणबादर-  
वनस्पतिकायिकः। प्रजा० ३४। जलरूहविशेषः। प्रजा० ३३।

**पणएमि-** याचे। निशी० १०१ अ। प्रणयामि-प्रार्थ-यामि।  
बृह० २०४ आ।

**पणओ-** उल्ली। निशी० १८२ आ।

**पणग-** पनकः-फुल्लि। आव० ५७३। पनकं-उल्लि। दशवै० १७५। पनकः-उल्लिवनस्पतिः। दशवै० २२९। पनकः-  
उल्लीरः। ओघ० १३७। पनकः-उल्लिजीवः। उत्त० ६९२।

पञ्चवण्णो संकुरो अणंकुरो वा। निशी० ३ अ। आयरिय  
उवज्झाउ पवल्ली थेरो गणावच्छेदितो य एते पञ्च अहवा  
आयरिय उवज्झाउ थेरो खुड्डो सोहा एते पञ्च। निशी० १७३ आ। उल्ली। निशी० १२१ अ। निशी० २५५ आ।  
पनकः काष्ठादावुल्लिविशेषः। पञ्चवर्णः। आचा० ३०।  
पनकः-प्रबलः कर्दमविशेषः। भग० ३०७। पनकः-  
भूम्यादावुल्लिविशेषः। आचा० २८५। पनकः-उल्ली।  
स्था० ४३०।

**पणगजीव-** पनकजीवः-वनस्पतिविशेषः। पनकः-उल्ली।  
स्था० ४३०।

**पणगजीव-** पनकजीवः-वनस्पतिविशेषः। आव० २९।

**पणगदगमट्टीमकडासंताण-** सप्तदशं सबलम्। सम्० ३९।

**पणगमट्टिया-** पनकः-अत्यन्तसूक्ष्मरजोरूपः स एव  
मृत्तिका पनकमृत्तिका। उत्त० ६८९। पवनमृत्तिका-  
मरुषु पर्पटिका। उत्त० ३८९।

**पणगमत्तिया-** नद्यादिपुरप्लाविते देशे  
नद्यादिपूरेऽपणते यो भूमौ श्लक्ष्णमृदुरूपो  
जलमलोऽपरपर्यायपङ्कः स पनकमृत्तिका। जीवा० २३।

**पणइसंधिय-** प्रनष्टसन्धिकं-अनंतजीवम्। आचा० ५९।

**पणत-** प्रणतो-जात्यादिभावैर्हीनो निम्बादिः। स्था० १८२।  
नन्दी० ३।

**पणतित-** पणयितः। उत्त० २१९। प्रणयितः-याचितः।  
व्यव० २९३ अ।

**पणपणग-** पञ्चकपर्दादयः पण्यं यस्या

एकबारप्रतिसेवने सा पञ्चपण्यिका। व्यव० २५० अ।

**पणमिय-** प्रनमितम्। भग० ३७। मुद्धानं सिरं तेण पणाम-  
करणं। निशी० २३७ आ।

**पणय-** प्रणयः-स्नेहः। भग० ३०९। पनकः-प्रतलः कर्दमः।  
जम्बू० १६९। पनकः-प्रतलः सूक्ष्मः कर्दमः। प्रश्न० ६५।  
पनकः-फुल्लि। ओघ० १३१। पनकं-  
साधारणवनस्पतिविशेषः। प्रजा० ४०।

**पणयए-** प्रणयते प्रासादयति। व्यव० १९८ आ।

**पणयमत्तिया-** नद्यादिपूरप्लाविते देशे  
नद्यादिपूरेऽपणते यो भूमौ श्लक्ष्णमृदुरूपो  
जलमलापरपर्यायः पङ्कः स पनकमृत्तिका। तदात्मका  
जीवा अप्यभेदोपचारात्पनकमृत्तिकाः। प्रजा० २६।

**पण्या-** प्रणता-महताफलभारेण दूरं नता। जीवा० १८२।  
**पण्यामि-** प्रणयामि-याचे। पिण्ड० १३६।  
**पण्यालं-** पञ्चचत्वारिंशत्। आव० ६३४।  
**पण्यासनं-** प्रणतासनम्-निम्नासनम्। जीवा० २००।  
**पणव-** भाण्डपटहः। औप० ७३। पणवः-भाण्डपटहः,  
 लघुपटहो वा। भग० २१६। पणवः-भाण्डपटहो लघुपटहो  
 वा। जम्बू० १०१। गुंजा। निशी० ६२आ। पणवो-  
 भाण्डपटहो लघुपटहो वा। राज० ४९। पणवो भाण्डानां  
 वाद्यम्। राज० २५। भाण्डपटहः। भग० ४७६। पणवः-  
 भाण्डानां पटहः। जीवा० १०५। भाण्डानां पणवः। जीवा०  
 २४५। पणवः-भाण्डपटहो लघुपटहो वा। जीवा० ३६६।  
 पणवः-लघुपटहः। प्रश्न० १५९।  
**पणवन्निय-** प्रणपन्निकः-  
 व्यन्तरनिकायानामुपरिवर्तिनो व्यन्तरजातिविशेषः।  
 प्रश्न० ६९। वाणमन्तरविशेषः। प्रज्ञा० ९५।  
**पणवसंठिय-** प्रणवसंस्थितः-रत्नप्रभापृथ्व्यां आवलिका-  
 बाह्यस्य सप्तदशं संस्थानम्। जीवा० १०४।  
**पणाम-** दृष्टिवादे सूत्रे भेदः। सम० १२८।  
**पणामई-** प्रणामयेत्-अर्पयेत्। उत्त० ४६२।  
**पणामय-** प्रणामकः-शब्दादिविशेषः। सूत्र० ६८।  
**पणामिओ-** दत्तः। दशवै० ३८।  
**पणामिज्जासि-** दद्याः। आव० ३०१।  
**पणामेइ-** दातव्यम्। ओघ० १८५। अर्पयति। आव० ६८७।  
**पणामेउं-** अप्पयितुम्। बृह० २०३आ।  
**पणाय-** विक्रयाय। नन्दी० ६२।  
**पणायितुं-** विक्रेतुम्। नन्दी० ६२।  
**पणालछिड्डं-** मंडविगाछादितमाले वा वासोदगं पविट्टं,  
 डायाले वा पणालछिड्डं। निशी० १२०आ।  
**पणालि-** प्रकृष्टा नाली-शरीरप्रमाणा दीर्घतरा यष्टिः।  
 प्रश्न० ५८।  
**पणिअड्ड-** प्रणितेनार्थोऽस्येति पणितार्थः-  
 प्राणघृतप्रयोजनः। दशवै० २१९।  
**पणिग-** पण्यः। आव० ८२९।  
**पणित-** सत्यङ्कारः। नन्दी० १४९।  
**पणितसाला-** भाण्डशाला-यत्र घटकरकादिभाण्डजातं तं  
 सङ्गोपितमास्ते। बृह० १७५आ।  
**पणिधाय-** प्रणिधाय-मर्यादीकृत्यम्। सूर्य० १४।

**पणिधि-** प्रणिधिना-मायया यथा वाणिजकादिवेषं  
 विधाय गलकर्तृकाः। सम० ५२।  
**पणिय-** पणितः-व्यवहारः। ज्ञाता० ९५। विक्रयम्। बृह०  
 २००अ। पणितं-क्रयाणकम्। जम्बू० १२२। व्यवहारः,  
 क्रयाणकम्। भग० ६७१। पणितं-भाण्डम्। ज्ञाता० ३।  
 पण्यः-भाण्डः। ज्ञाता० १५७। पणितं-भाण्डम्। औप० ४।  
 पणितम्। नन्दी० १४९।  
**पणियगं-** पणः। आव० ४१७।  
**पणियगिहं-** जत्थ भंड अच्छति। निशी० ६९आ। पण्यगुहं  
 पण्यपौपणः। आचा० ३६६। पणितगृहं-भाण्डनि-क्षेपार्थं  
 गृहम्। औप० ४१। पण्यगृहं हट्ट इति। औप० ६१।  
**पणियसाला-** जत्थ भायणाणि विक्रमेति वाणिय कुंभकारो  
 वा। निशी० २१आ। कुम्भकाराणां वणिजां वा भाजन-  
 विक्रयस्थानम्। बृह० १७५अ। पणितशाला-हट्टः।  
 ज्ञाता० ७९। पण्यशालाः-घड्घशाला। आचा० ३६६।  
 पण्यशाला-आपणः। आचा० ३०७। पणितशाला-बहुग्राह-  
 कदायकजनोचितो गेहविशेषः। औप० ४१।  
**पणिवयामि-** प्रणौमि-अभ्यर्थयामि, अभ्यर्चयामि वा।  
 आव० ३८६।  
**पणिवयामो-** प्रणमामः-पूजयामः। आव० ५३०।  
**पणिसुणणा-** प्रणिश्रवणं-अभ्युपगमः। पिण्ड० ४६।  
**पणिहा-** प्रणिधानं-प्रणिधा। जीवा० ३२६। प्रणिधा-प्रभावः।  
 जीवा० ३२६।  
**पणिहाए-** प्रणिधाय-अवधीकृत्य। सूर्य० ३१। प्रणिधाय-  
 अपेक्ष्य। प्रज्ञा० ३५६।  
**पणिहाण-** प्रणिधानं-अन्तःकरणवृत्तिः। सूत्र० ३०९।  
 प्रणिधिना-एकाग्रचित्तप्रधानेन यद्वचनं प्रणिधानं-  
 गूढपुरुषाणां यद्वचनम्। प्रश्न० ५८। प्रणिधानं-  
 अकुर्वतोऽपि करणं प्रति दृढाध्यवसानम्। आव० ५८८।  
 प्रणिधानं-दृढाध्यव-सानलक्षणम्। आव० ५८८।  
 प्रणिधानं-चेतः-स्वास्थ्यम्। दशवै० १०६। प्रणिधानं-  
 एकाग्रता। स्था० १२१। प्रणिधिः प्रणिधानं-प्रयोगः। स्था०  
 १९६। प्रणिधानं-चित्तैकाग्र्यम्। भग० ९३। प्रणिधानं-  
 प्रयोगः। उपा० १०। प्रणिधानं-चेतःस्वास्थ्यम्। व्यव०  
 १९अ।  
**पणिहाणजोगजुत्तो-** प्रणिधानं-चेतःस्वास्थ्यं तत्प्रधाना  
 योगा-व्यापारास्तैर्युक्तः-समन्वितः

प्रणिधानयोगयुक्तः। दशवै० १०६।  
**पणिहाणवं-** प्रणिधानवान्-चित्तस्वास्थ्योपेतो न तु  
 रागद्वेषव-शगः। उत्त० ४२९।  
**पणिहाय-** प्रणिधाय-आश्रित्य। जीवा० १०१। प्रतिधाय-  
 संयम्य। दशवै० २३५। प्रणिधाय-आश्रित्य निरुद्धहृषिकः।  
 जीवा० २८४। प्रणिधाय-अपेक्ष्य। जीवा० ३२६। प्रणि-  
 धाय-अपेक्ष्य ज्ञाता० १७०।  
**पणिहि-** प्रणिधिः-माया न कार्या। प्रश्न० १४६।  
**पणिहितेन्द्रिय-** प्रणिहितेन्द्रियः। प्रश्न० १६०।  
**पणिहिय-** प्रणिहितः-संवृतः। प्रश्न० १६०।  
**पणिहियप्पा-** समाधिमादात्मा। मरण०।  
**पणिही-** प्रणिधिः-प्रणिधानं विशिष्टकायत्वम्। प्रश्न०  
 १४७। प्रणिधिः-निधानादिप्रणिहितम्। दशवै० २२५।  
 प्रणिधिः-माया न कार्या। योगसंग्रहेऽष्टादशो योगः।  
 आव० ६६४। प्रणिधिः-व्यवस्थापनम्। उत्त० ४९९।  
 अण्णहाकयं। आव० ६६१।  
**पणी-** पणीतं पण्यमिति वा क्रयविक्रयोपजीवी। जीवा०  
 २७९।  
**पणीअ-** पणितं-पण्यम्। दशवै० २२१। प्रणीतं-स्निग्धम्।  
 दशवै० १८९।  
**पणीतं-** घृतम्। निशी० १५५ अ।  
**पणीतरसं-** नेहविगतीओ। दशवै० ८९।  
**पणीय-** प्रणीतं-गलद्बिन्दुः। उत्त० ४२६। प्रणीतं-अर्थकथ-  
 नद्वारेण प्ररूपितम्। नन्दी० १९३। प्रणीतं-स्निग्धम्।  
 ओघ० ६८। प्रणीतं-स्निग्धमधुरम्। बृह० २३५ अ।  
 प्रणीतं-गूढस्नेहं घृतपूराद्यर्द्रखाद्यं  
 मक्षितमण्डकादिस्नेहावगाढकुसणादि वा। बृह० २०६  
 आ। निष्ठा पसलं वण्णादि उवचेयं। दशवै० १२७। प्रणीतं-  
 पक्वं, आनीतम्। आव० ७४१। प्रणीतं-गलत्स्नेहं  
 भोजनम्। पिण्ड० १७४। प्रणीतं-शुभतया प्रकृष्टम्। भग०  
 २२३। प्रणीतः-गलत्स्नेहबिन्दुः। प्रश्न० १४१।  
**पणीयगहण-** स्नेहवद्द्रव्यग्रहम्। ओघ० ६८।  
**पणीयतर-** प्रणीततरः-युक्तियुक्तिः। सूत्र० ४१३।  
**पणीयनिद्धभोयणविवज्जण-** प्रणीतो-गलत्स्नेहद्बिन्दुः  
 स्निग्धभोजनं तस्य वर्जनं  
 प्रणणीतस्निग्धभोजनवर्जनम्। पञ्चमं भावनावस्तु।  
 प्रश्न० १४१।

**पणीयभूमी-** प्रणीतभूमिः-व्यवहारभूमिः। हृदमध्य इति।  
 उत्त० १३३।  
**पणीयरस-** प्रणीतरसं-गलद्घृतदुग्धादिबिन्दुः। औप० ४०।  
**पणीयरसभोई-** प्रणीतरसभोजी-गलत्स्नेहरसबिन्दुकस्य  
 भोजनस्य भोजकः। सम० १६।  
**पणीयरसविवज्जण-**। भग० ९२१।  
**पणीया-** नीता। आव० ७००।  
**पणल्लयामो-** प्रणुदामः-प्रेरयामः। उत्त० ३७१।  
**पणुल्लिज्जा-** प्रेरयेत्-उद्घाटयेत्। दशवै० १६७।  
**पणुल्लिया-** प्रेरिता। आव० ३४५।  
**पणोल्लिणगती-** प्रणोदनगतिः। स्था० ४३४।  
**पणोल्लि-** प्रणोदी-प्राजनकदण्डः। प्रश्न० ५८।  
 प्रणोदिजन्म-प्रवर्तकम्। प्रश्न० ६१।  
**पणोल्लिया-** प्रणोदिता। उत्त० १५०।  
**पण्डक-** मेरुसम्बन्धी चतुर्थं वनम्। प्रश्न० १३५।  
**पण्डितः-** हेयोपादेयतत्त्वज्ञः। आचा० ११८। संसारविमुख-  
 प्रजतया कोविदः। पिण्ड० ७२।  
**पण्डुरार्या-** मायाशल्ये दृष्टान्तः। आव० ५७९।  
**पण्णगइंद-** पन्नगेन्द्रः- भुजगवरो नाम कुमारः। प्रश्न०  
 १३५।  
**पण्णगारं-** प्राभूतम्। निशी० ३४५ अ।  
**पण्णत्तं-** योग्यीकृता। औप० २। उपादेयतया प्रकाशितम्।  
 औप० ५। प्राज्ञैः-गणधरैस्तीर्थकरादात्तं-गृहीतमिति  
 प्रजातम्। अनुयो० २। प्रगुणितः। निशी० ९९ अ।  
 प्रगुणः। निशी० ३३० अ। प्रज्ञाप्तं-प्रज्ञया-विशिष्टक-  
 र्मविषयबुद्ध्या आप्तं प्राप्तं अतीव  
 सुष्ठुपरिकर्मितमिति। सूर्य० २९३। भग० ५४०।  
**पण्णत्ता-** प्राज्ञैः-छकैराप्ताप्रज्ञाप्ता-छेकपुरुषपरिकर्मिता।  
 राज० २।  
**पण्णत्ती-** प्रज्ञप्तिः-विद्याविशेषः। आव० ९४।  
**पण्णत्ती-** कुशलाः। तन्दु०।  
**पण्णपणिका-** पञ्चपण्यिका कुलटा। व्यव० २५०।  
**पण्णप्पइ-** रुहति। निशी० १८९ अ।  
**पण्णवग-** प्रज्ञापकः-मेयद्रव्याणामियत्तानिर्णायकः।  
 जम्बू० २२७।  
**पण्णवणा-** प्रज्ञापना-सामान्येन भङ्गकथनम्। बृह०  
 २१७। आ। जीवादिपदार्थानां प्रज्ञापनं प्रज्ञापना। नन्दी०

२०४। प्रज्ञापना-प्रकर्षेणनिःशेषकृतीर्थीतीर्थकरासाध्येन-  
यथावस्थितस्वरूपनिरूपणलक्षणेन ज्ञाप्यन्ते-  
शिष्यबुद्ध्या-यामारोप्यन्ते जीवाजीवादयः पदार्थो  
अनयेति प्रज्ञापना। प्रज्ञा० १। स्वरूपनिरूपणम्। उत्त०  
४६७। प्रज्ञापना-प्ररूपणा। ओघ० ७६।

**पण्णवणि-** प्रज्ञापनी-विनेयस्योपदेशदानरूपा। भग० ५००।

**पण्णवणिज्जा-** जे पण्णवेउं सक्केति छउमत्थो वा बुद्धी  
घेत्तु सक्केति। निशी० १४० अ।

**पण्णवणी-** प्रज्ञाप्यतेऽर्थोऽनयेति प्रज्ञापनी-  
अर्थप्रतिपादनी, प्ररूपणीयेति वा। प्रज्ञा० २४९। प्रज्ञापनी-  
विनीतविनयस्य विनेयजनस्योपदेशदानं यथा  
प्राणिवधान्निवृत्ता भवन्ति भवान्तरे प्राणिनो  
दीर्घायुषइत्यादिरूपा भाषा। प्रज्ञा० २५६।

**पण्णविति-** प्रकर्षेण संशीत्यपनोदायान्तेवासिनो  
जीवाजीवा श्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षपदार्थान्  
ज्ञापयन्ति प्रज्ञापयन्ति। आचा० १७९।

**पण्णवेंति-** उपपत्तिभिः प्रज्ञापयन्ति। भग० ९८।

**पण्णवेइ-** व्यक्तपर्यायवचनतः प्रज्ञापयति। जम्बू० ५४०।

**पण्णा-** प्रज्ञा-प्रज्ञानं प्रज्ञा विशिष्टक्षयोपशमजन्या  
प्रभूतवस्तु-गतयथावस्थितधर्मालोचनरूपाः मतिः।  
आव० १८। प्रज्ञा- हेयोपादेयविवेचिका बुद्धिः। उत्त०  
२७८। प्रज्ञा० प्रक्रमान्म-तिश्रुतावधिज्ञानत्रयात्मिका।  
उत्त० ४९१। प्रज्ञा-बुद्धिः। नन्दी० ६५। प्रज्ञा-स्वयं  
विमर्शपूर्वको वस्तुपरिच्छेदो मति-ज्ञानविशेषभूत इति।  
परिषदविशेषः। सम० ४१। प्रज्ञा-  
अशेषविशेषविषयज्ञानम्। भग० ५९। प्रज्ञा-  
मतिज्ञानविशेषः। भग० ३९०। प्रज्ञा-  
हेयोपादेयविवेचनात्मिका मतिः। उत्त० ३२५। प्रज्ञा-  
स्वयं विमर्शपूर्वको वस्तुपरिच्छेदः। उत्त० ८३।

**पण्णाण-** प्रज्ञानं-यथावस्थितविषयग्राहिज्ञानम्। आचा०  
७९। प्रज्ञानं-सदसद्विवेको यस्य स। आचा० १८१।

**पण्णी-** पण्णिमया महंता भारगा वज्झंति। निशी० ४५।

**पण्याजीवा-** वणिक्। जम्बू० १२२।

**पण्हय-** अनार्यविशेषः। भग० १२७।

**पण्यति-** पिबति। निर० ३०।

**पण्हय-** पण्हवः-चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः। प्रश्न०  
१४।

**पण्हवणं-** येन परः प्रस्तुतिं भजते प्रल्हत्तौ भवतीति  
प्रस्नवनम्। विपा० ५४।

**पण्हवी-** गयत्थरणी। निशी० ६१ अ।

**पण्हवेंति-** प्रश्नुवन्ति। व्यव० १९३ अ।

**पण्हा-** प्रश्नाः-अङ्गुष्ठबाहुप्रश्नादिका मन्त्रविद्या। सम०  
१२४। प्रश्नाः-अङ्गुष्ठादिप्रश्नभावं तदभावं च प्रतीत्य  
या विद्या- शुभा-शुभं कथयन्ति ताः प्रश्नाः। सम०  
१२४। प्रश्नः-पृच्छकस्य शुभाशुभकथनम्। नन्दी० २३४।  
पृच्छयत-इति प्रश्नं-प्रष्टव्यार्थरूपम्। उत्त० २४१।  
प्रश्नः-देवतादिपृच्छा-रूपः। बृह० २१५ अ।

**पण्ह-** पार्णिः। आव० ५५।

**पण्हिया-** पार्णिका। आव० ५७४।

**पण्हुता-** प्रस्नवास्तन्या। अन्त० ७।

**पण्हुत्त-** सबाष्पः। निशी० १४५ अ।

**पण्हुया-** प्रस्नुता। उत्त० २७४।

**पतंग-** पतकः-व्यन्तरनिकायोपरिवर्तिनो  
व्यन्तरविशेषः। प्रश्न० ९५।

**पतंगविहिता-** पतङ्गः शलभस्तस्य वीथिका-मार्गः  
तद्वद्या सा, अनियतक्रमा चतुर्था गोचरचर्या। स्था०  
३६५।

**पतंगवीथिका-** यस्यां तु त्रिचतुरादीनि गृहाणि  
विमुच्याग्रतः पर्यटति सा पतङ्गवीथिका-पतङ्गः-  
शलभः स हि गच्छ-न्नुत्प्लुत्यानियतगत्या गच्छति  
तस्येव या वीथिकापर्यटन-मार्गः। सा। बृह० २५७ अ।

**पतए-** प्रथमपतेन्द्रः। स्था० ८५।

**पतङ्गः-** तृणपत्रनिश्चितो जीवविशेषः। आचा० ५५।  
सम्पातिं जीवविशेषः। आचा० ५५। कचवरनिश्चितो  
जीवविशेषः। आचा० ५५। उद्धेदजः। दशवै० १४१।

**पतच्छज्जं-** पत्रच्छद्यं अष्टोत्तरशतपत्राणां मध्ये  
विवक्षितस-ङ्ख्याकपत्रच्छेदने हस्तलाघवम्। जम्बू०  
१३९।

**पतट-** प्रस्तटः प्रस्तारः। जीवा० ३६०।

**पतणतणाइस्सई-** प्रकर्षेण स्तनितं करिष्यति-  
गर्जिष्यति। जम्बू० १७४।

**पतणतणाएति-** प्रकर्षेण तणतणायते गर्जतीत्यर्थः।  
भग० ६६५।

**पतणतणायति-** अत्यन्तं गर्जति। जम्बू० ३८९।

पतणुरागसंयुक्त- प्रतनुरागसंयुक्तः। आव० ६६।  
 पतत- प्रततः-स्वप्नसन्तानः। निशी० ८६ अ।  
 पतनता- भूमिमुच्छादिना। आचा० २५५।  
 पतयवई- द्वितीयपतेन्द्रः। स्था० ८५।  
 पतरगणियभावणा- प्रतरभावना। जीवा० ३२५।  
 पतवति- प्रतपति। जीवा० २४८। दीप्ताङ्गारतां  
 प्रतिपद्यते। जम्बू० ४१९।  
 पतिंवया- पतिं-भर्तारं व्रतयति-तमेवाभिगच्छामीत्येवं  
 नियमं करोतीति पतिव्रता। ज्ञाता० २०२।  
 पतिष्ठा- प्रतिष्ठानं प्रतिष्ठा-संसारभ्रमणविरतिलक्षणा,  
 सम्यग्दर्शनाद्यवाप्तिसाध्या मोक्षप्राप्तिः। सूत्र० २०३।  
 पतिष्ठाण- प्रतिष्ठाननगरम्। उत्त० १००। नयरविसेसो  
 निशी० ३४० अ। नगरनाम। बृह० २३६ अ। गोदावर्याः  
 नदीतटे नगरम्। व्यव० १९३ अ।  
 पतिष्ठावक- प्रतिस्थापकः-राजादिसमक्षं स्वपदनिवेशनः।  
 ज्ञाता० २४०।  
 पतिष्ठिओ- प्रतिबद्धः। बृह० २५२।  
 पतिष्ठिता- प्रतिष्ठिताः-आश्रिताः। स्था० ३५८।  
 पतिभयकर- प्रतिभयकरं-भयजनकम्। सम० १२६।  
 पतिभय- प्रतिभयं-वस्तुवस्तुप्रतिभयम्। प्रश्न० १३।  
 पतिरिक्क- प्रतिरिक्तः-एकान्तः। जीवा० २६९।  
 प्रतिरिक्तः एकान्तः। ओघ० २०३।  
 पतिव- प्रतिवः। प्रश्न० ७३।  
 पतोग- प्रयोगः-वादविषयः। स्था० ४२३।  
 पतोदयं- पतदुदयं-पतितपताकम्। भग० १८७।  
 पतोस- पद्वेषः। व्यव० ३५७ अ।  
 पत्त- पत्रं-तमालपत्रम्। प्रश्न० १६२। पात्रम्। आव० ११५।  
 पत्रं-पलाशपत्रकर्मारिपत्रादिकम्। अनुयो० १५४। प्राप्तं-  
 लब्धिविशेषाद् गृहीतम्। भग० २२४। प्राप्तं-  
 आदानशीलः। ओघ० ९३। पात्रमिव पात्रमतिशयवद्  
 जानादिगुणरत्नानां प्राप्तिर्वा गुणप्रकर्षमिति। स्था०  
 २१। प्राप्तम्। भग० १५९। उत्त० ३२१। सुत्तत्थ-  
 तदुभयस्स गहणधारणाशक्तेत्यर्थः। निशी० ७६ अ।  
 तमालपत्रादि। जम्बू० ६०। पत्रं-पद्मिनी पत्रादि। दशवै०  
 २२८। पत्रं-पर्णम्। स्था० २७३। पत्रंतमालपत्रम्। भग०  
 ७१३। ज्वालाभिः पिठरं बुध्नेऽग्निः स्पृशति स प्राप्तः।  
 अग्ने पञ्चमभेदः। पिण्ड० १५२। प्राप्तः-आसण्णीभूतः।

ओघ० १६८। ज्ञाता० ६५, १८५। पत्रं-पक्षसञ्चयम्। उत्त०  
 २६९।  
 पत्तइय- पत्रकितः-सञ्जातकुत्सिकाऽल्पपत्रः। ज्ञाता०  
 ११६।  
 पत्तउर- गुच्छाविशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
 पत्तकयवर- पत्रकचवरः। जीवा० २८२।  
 पत्तग- पत्रकं-लेखः। बृह० ३३ अ।  
 पत्तच्छज्जं- अष्टषष्टिकलारूपानम्। ज्ञाता० ३८।  
 पत्तज्झोडण- पत्रज्झोडनं-  
 तरुप्रान्तपल्लवफलादिपातनम्। प्रश्न० २५।  
 पत्तड्ड- प्राप्तार्थः-अधिकृते कर्मणि निष्ठां गतः प्रज्ञः।  
 अनुयो० १७७। प्राप्तार्थः-लब्धोपदेशः। औप० ६५।  
 पत्तणाल- पत्रनालम्। आव० ६२४।  
 पत्तणिज्जासो- पत्रनिर्यासः-धातकीपत्ररसः। जीवा० २६५।  
 पत्तन- यत्-शकटैर्घोटकैर्नौभिर्वा गम्यम्। जीवा० ४०। यत्  
 पुनर्शकटैर्घोटकैर्नौभिर्वा गम्यं तत् पत्तनं, यथा  
 भृगुकच्छम्। प्रज्ञा० ४८। शकटैर्घोटकैर्नौभिर्गम्यं  
 पत्तनम्। जीवा० २७९।  
 पत्तपणालं- पत्रप्रणालिका। आव० ६२१।  
 पत्तपुड- पत्राणि-तमालपत्रादीति। ज्ञाता० २३२।  
 पत्तबेंटिया- त्रीन्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४२। त्रीन्द्रियजन्तु-  
 विशेषः। जीवा० ३२।  
 पत्तभूमिया- सार्धक्रोशद्वयादागताः। बृह० १८६ अ।  
 पत्तय- पात्रकम्। औप० १९९। पत्रकं-तलतालयादि-  
 सम्बन्धि। अनुयो० ३४।  
 पत्तरक- प्रतरकम्। प्रश्न० १५९।  
 पत्तल- पक्षमवत्। औप० ४९। पत्रलं-पक्षमवत्। जीवा०  
 २७३। पत्रलः-पत्रवर्ती। औप० ९।  
 पत्तवास- पत्रवर्षः-पर्णवर्षणम्। भग० १९९।  
 पत्तविच्छुया- चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२।  
 चतुरिन्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४२।  
 पत्तवुड्ढि- पत्रवृष्टिः। भग० १९९।  
 पत्तवेंट- पत्रवृन्तम्। जीवा० २२८।  
 पत्तसगडिया- पत्राणां शकटिका-गन्त्री पत्रशकटिका।  
 ज्ञाता० ७४।  
 पत्तहार- त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२।  
 पत्तहारग- पत्रहारकः-त्रीन्द्रियजीवविशेषः। उत्त० ६९५।

**पत्ता-** प्राप्ता-देवभवे उपनीता। *ज्ञाता* ० २४८। प्राप्ता-  
इदानीमुपनता। *स्था* ० २४५। प्राप्ता। *ज्ञाता* ० १३४।  
ऊनोदरतायाश्चतुर्थो भेदः। *दशवै* ० २७। *स्था* ० १४९।  
**पत्ताबंध-** पात्रबन्धः। *आव* ० ७२३। पात्रबन्धः। *ओघ* ०  
१९९। पत्तबंधो-पात्रधारणवस्त्रं चतुरस्रम्। *बृह* ० २३७।  
**पत्तामोड-** तरुशाखामोटितं पत्रम्। *निर* ० २६। तरुशाखा-  
मोटितपत्रम्। *भग* ० ५१६। शाखिशखाशिखामोटितपत्रं  
देव-तार्चनार्थमिति पत्रामोटकम्। *अन्त* ० ११।  
**पत्तालग-** पात्रालकम्। *आव* ० २०१।  
**पत्तासव-** पत्रासवः-पत्रैः घातकीपत्रैर्निष्पाद्य आसवः  
*प्रजा* ० ३६४। पत्रासवः-पत्ररससारः। *जीवा* ० ३५१।  
पत्रनिर्यास-सारः। *जीवा* ० ३६५।  
**पत्ताहार-** पत्राहारकः। *निर* ० २५। त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रजा* ०  
४२।  
**पत्ति-** प्रीतिः-सम्ना। *उत्त* ० ६३।  
**पत्ति-** प्रतीतिः प्रयोजनमस्येति प्रातीतिकं-शपथादि।  
*उत्त* ० ६३। प्रीतिः-प्रीतिविषयीकृतः प्रीतितः प्रत्ययितो  
वा। *भग* ० १०१।  
**पत्तिएज्जह-** प्रतीयाः। *ओघ* ० २१।  
**पत्तिएज्जा-** प्रत्ययेत्-प्रतीतिविषयां कुर्यात्। *प्रजा* ० ३९९।  
**पत्तिएण-** प्रीत्या साम्नैव। *उत्त* ० ६३।  
**पत्तित-** प्रीतिकः-स्वविषये उत्पादितप्रीतिर्वा। *स्था* ० ३५६।  
प्रीतिः-उपपत्तिभिः। *स्था* ० ३५६।  
**पत्तितस्य-** उपपत्तिभिरथवा प्रीतिकस्य-स्वविषये  
उत्पादि-तप्रीतेः। *स्था* ० ३५५।  
**पत्तिय-** प्रीतिरेव प्रीतिकं स्वार्थिककप्रत्ययोपादानेऽपि  
रूढेर्न-पुंसकतेति, तत्करोमि प्रत्ययं वा करोमीति  
परिणतः प्रीति-कमेव, प्रत्ययमेव। *स्था* ० २३५।  
चतुरिन्द्रियविशेषः। *प्रजा* ० ४२। सञ्जातपत्रः। *ज्ञाता* ०  
१२६।  
**पत्तियति-** प्रत्येति-प्रीतिविषयीकरोति। *स्था* ० १७६।  
प्रत्येति-प्रतिपद्यते। *स्था* ० २४७।  
**पत्तियमाण-** प्रीयमाणः-असङ्गशक्तिप्रीत्या वश्यन्तः।  
*जीवा* ० ४।  
**पत्तियाइत्ता-** प्रीत्य-उक्तरूपमेव विशेषत इत्थमेवेति  
निश्चित्य। यद्वा संवेगादिजनितफलानुभवलक्षणेन  
प्रत्ययेन प्रतीति-पथमवतार्य। *उत्त* ० ५७२। प्रीत्य-

विशेषतः निश्चित्य। *उत्त* ० ५७२।  
**पत्तियाणि-** प्रीतिकराणि। *व्यव* ० २४१।  
**पत्तियामि-** प्रीतिं प्रत्ययं वा सत्यमिदमित्येवं रूपं तत्र  
करोमि। *भग* ० १२१। उपपत्तिभिः प्रत्येमि प्रीतिविषयं  
वा करोमि। *भग* ० ४६७। प्रत्ययं करोमि। *ज्ञाता* ० ४७।  
प्रतिपद्ये प्रीति-करणद्वारेण। *आव* ० ७६१।  
**पत्तियाविओ-** प्रत्यायितः। *दशवै* ० १०४।  
**पत्तियावित-** प्रत्यायितः। *आव* ० ९२।  
**पत्ती-** पात्री। *जीवा* ० २३४। पात्री। *जम्बू* ० १०१।  
**पत्तुल्लग-** भाजनम्। *आव* ० ३४९।  
**पत्तेअ-** प्रत्येकं-पृथक् पृथक्। *दशवै* ० १६।  
**पत्तेग-** पत्तेगवणस्सती। *निशी* ० ५६ आ।  
**पत्तेय-** प्रत्येकं-पृथक् पृथक्। *आव* ० ६१९। प्रत्येकं-  
साधारणम्। *सूर्य* ० २४०।  
**पत्तेयणाम-** यदुदयात् जीवं जीवं प्रति भिन्नं तत्  
प्रत्येकनाम। *प्रजा* ० ४७४।  
**पत्तेयबुद्ध-** प्रत्येकबुद्धास्तु बाह्यप्रत्ययमपेक्ष्य प्रत्येकं-  
बाह्यं वृषभादिकं कारणमभिसमीक्ष्य बुद्धः प्रत्येकबुद्धः।  
*प्रजा* ० १९। प्रत्येकबुद्धः-पूर्वभवाभ्यस्तोभयकरणः। *आव* ०  
५३०। प्रत्येकबुद्धः। *आव* ० ५६८। प्रत्येकं-बाह्यं  
वृषभादिकं कार-णमभिसमीक्ष्य बुद्धः प्रत्येकबुद्धः।  
*नन्दी* ० १३१।  
**पत्तेयरसा-** प्रत्येकरसः-एकमेके प्रतिभिन्नो रसो येषां ते,  
अतुल्यरसा। *स्था* ० २८८।  
**पत्तोमोअरिआ-** चतुर्विंशतेः कवलानां द्वात्रिंशद्  
द्वितीयाद्धस्य मध्यभागं प्राप्त्याच्चतुर्विंशत्या कवलैः  
प्राप्तावमोदरिका, अथवा प्राप्तेव प्राप्ता  
द्वात्रिंशतस्त्रयाणां भागानां प्राप्तत्वाच्चतुर्थभागस्य  
चाप्राप्तत्वादिति। *औप* ० ३८।  
**पत्तोव-** पत्रोपेतवृक्षः। *स्था* ० ११३।  
**पत्थंणसत्थयं-** सत्थकोस्स भेओ। *नि* ० १८ आ।  
**पत्थ-** पथ्यं-पथि-मोक्षमार्गे हितं, क्षपकश्रेण्यां  
पूर्वोक्तगुण-त्रयम्। *सूत्र* ० १९८। सामान्येन पथ्यम्।  
*भग* ० ५४३। पथ्यंरोगोपशमहेतुः। *भग* ० ६७२। पथ्यं-  
नीरोगहेतुः। *जीवा* ० ३५५। पथ्यं-दुःखत्राणम्। *भग* ० १६९।  
प्रस्थं-चतुःकुड्य-मानम्। *दशवै* ० १३४। पथ्यं-अमृतं-मृष्टं  
वा। *आव* ० ५९५। कुलवो। *निशी* ० ५५ आ। पथ्यं-

आन्दकारणम्। भग० ६७२। पथ्यं-आरोग्यकरम्। ज्ञाता०  
१७५। प्रस्थः-कुडव-चतुष्टयप्रमाणः। अनुयो० १५१।  
चत्वारः कुडवः प्रस्थः-माणकसमानं माप्यम्। जम्बू०  
२४४। प्रस्थः-मागध-प्रस्थः-चतुसेतिकाप्रमाणः। ओघ०  
२१५। प्रस्थः। आव० ३४२। प्रस्थः। उत्त० १४६।  
पथ्य- प्रार्थयते-सेवते। दशवै० २०५। भग० ३१३।  
पथ्यग- प्रस्थकः-मागधदेशप्रसिद्धो धान्यमानविशेषः।  
अनुयो० २२३।  
पथ्यड- प्रस्तटः-प्रस्तारः। जम्बू० ४९। प्रस्तटः-प्रतरः।  
जम्बू० २९८। प्रस्तटः-प्रस्तरः। प्रज्ञा० ९९। प्रस्तटः-  
वेशमभूमिकाकल्पः। जीवा० ९०। प्रस्तरः-प्रतरः। जीवा०  
१७५। प्रस्तटः-रचनाविशेषवान् समूहः। स्था० १७९।  
प्रस्तटः-रचनाविशेषवान् समूहः। स्था० १७९। प्रस्तटः-  
प्रतरः। सम० १३९।  
पथ्यडोदग- प्रस्तटोदकः-प्रस्तटाकारताया स्थितमुदकं  
यस्य सः। सर्वतः। समोदकः। जीवा० ३२१।  
पथ्यडोदय- प्रसृतोदकः समजलः। भग० २८२।  
पथ्यणय- प्रार्थनं-परं प्रतीष्टार्थयाञ्चा। भग० ५७३।  
पथ्यणिज्जे- प्रार्थनीयः-बाधितुमनभिलषणीयः। उत्त०  
५९०।  
पथ्यति- प्रार्थयति-वाचते। औप० २४।  
पथ्ययण- पथ्यदनं-शम्बलम्। ज्ञाता० १९३। पथ्यदनम्।  
आव० ८१३।  
पथ्यर- प्रस्तारः-प्रायश्चित्तस्य रचनाविशेषः। स्था०  
३७१। प्रस्तरः। प्रश्न० ५८। प्रस्तरः-पाषाणः। बृह० १५३।  
पथ्यरिज्जइ- प्रस्तीर्यत। आव० ६३१।  
पथ्या- प्रस्था-अवस्थितिः। निर० २५। प्रस्था-अव-  
स्थितिः। भग० ५१९।  
पथ्याण- प्रस्थानः-परलोकसाधनमार्गः। निर० २६।  
प्रस्थानं-यात्रा। प्रश्न० ४२। प्रस्थानं-परलोकसाधनमार्गः  
। भग० ५२०।  
पथ्यार- एकापराधे तज्जातीयानां दंडः। बृह० ८४।  
प्रस्तरः-कटः। बृह० १४६। प्रायश्चित्त-रचनाविशेषः,  
ज्योतिष्कच्छन्दोगणितप्रायश्चित्तभेदात्। प्रस्तारो  
नाम विरचना स्थापना इत्यर्थः। बृह० २२२। प्रस्तारो-  
विनाशः। बृह० ४४। प्रस्तारः-विस्तारः। निशी० ७१  
अ। प्रस्तारः-विनाशः। पिण्ड० १४५। नाशः। पिण्ड० १४३।

पथ्यारदोस- प्रस्तारदोषः-कुलगणसंघविनाशलक्षणः। बृह०  
५७।  
पथ्यारपसंगो- प्रसूरणं प्रस्तारणं प्रस्तारः प्रस्तारे प्रसङ्ग  
उत्तरोत्तरदुःखसंभवः। निशी० १९६।  
पथ्यारेज्ज- विस्तरेण विनाशं कुर्यात्। निशी० ३०१।  
पथ्यावाय- पथ्या-वनस्पत्यादिहिता वायवः। भग० २१२।  
पथ्यिए- प्रार्थितः-लब्धुं प्रार्थितः। भग० ४६३। प्रार्थितः-  
अभिलाषात्मकः। भग० ११५। प्रार्थितः। विपा० ३८।  
पथ्यिका- बृहत्पिहिका। ओघ० १६७।  
पथ्यिय- प्रार्थितः-प्रार्थनाविषयः-अभिलाषात्मकः। जम्बू०  
२०३। प्रार्थितः-अभिलाषात्मकः। जीवा० २४२। प्रार्थितः-  
अभिलषितः। ज्ञाता० ४१। प्रस्थितः-प्रवृत्तः। निर० २६।  
पथ्यिया- प्रोषिता। गणि०।  
पथ्यियापिडयं- वंशमयभाजनविशेषः। विपा० ५८।  
पथ्येइ- प्रार्थनं-वाचा मह्यं देहीति याचनम्। उत्त० ५८७।  
पथ्येज्जा- प्रार्थयेत्-अनुमन्येत गृहणीयादिति। सूत्र०  
१८४।  
पथ्योइ- प्रस्तोत्री-प्रस्ताविका प्रवर्तिका। प्रश्न० ४२।  
पत्रकं- कुम्भम्। आव० १३२।  
पथ- पन्थाः। आव० १०८।  
पथि- स्वपरसमयरूपः। स्था० २४१।  
पथियायि- अप्रमत्तः। स्था० २४१।  
पद- पद्यतेऽनेनेति पदं। आव० ३७९। आव० ६८। पदं-  
विभागः। जम्बू० २०७। पदं-यात्रार्थोपलब्धिः तत्पदम्।  
सम० ३६, १०८। पदं-पद्यतेऽनेनेति पदं-सूत्रं पदविभागे-  
नोच्चारणाद्वा ससन्धीनि पदानि अत्रेति पदव्याख्यातो  
भेदः। उत्त० १८। पदं-स्थानान्तरम्। ओघ० १६७।  
प्रकरणम-र्याधिकारश्च। प्रज्ञा० ६।  
पदकारा- कम्मजुंगिता। नि० ४३।  
पदत्त- प्रदत्तः-गुरुणोपदिष्टः। ज्ञाता० ११३।  
पदत्थ- पदार्थदोषः-यत्र वस्तुपर्यायवाचिनः पदस्यार्थान्तर  
परिकल्पनाऽऽश्रीयते, एवंभूतः सूत्रदोषविशेषः। आव०  
३७४।  
पदबद्ध- गेयपदैर्निबद्धम्। स्था० ३९६। गेयपदैर्बद्धं विशिष्ट-  
विरचनया रचितम्। अनुयो० १३२।  
पदभङ्ग- पश्चाच्चतुष्पदप्रचारादिद्वारेण। प्रश्न० ५८।  
पदमग्न- पदानां मार्गः पदमार्गः-सोवाणा। निशी० ११९

आ।

**पदमग्गविहि-** पदमार्गप्रचारम्। *जाता० २४०।*

**पदरंग-** प्रतरकं-भोजनविधिः। *आव० ८५९।*

**पदविभागसामाचारो-** कल्पव्यवहारः। *ओघ० १।*

सामाचार्या तृतीयो भेदः। *व्यव० १९ आ।*

**पदविभागात्मिकः-** सामाचारभेदः। *उत्त० ५४७।*

**पदसमं-** यद्गीतपदं-नामिकादिकं यत्र स्वरे अनुपाति भवति तत् तत्रैव यत्र गीते गीयते तत् पदसमम्।

*अनुयो० १३२।*

**पदा-** पदाः- संयमस्थाः। *प्रश्न० ६०।*

**पदानुसारिबुद्धि-** ये गुरुमुखादेकसूत्रपदमनुसृत्य शेषं श्रुतमपि भूयस्तरपदनिकुरम्बमवगाहन्ते ते पदानुसारिबुद्धयः। *बृह० १९३। आ। एकमपि सूत्रपदमवधार्य शेषमश्रुतमपि तदवस्थ-मेव श्रुतमवगाहते सा पदानुसारिणी। प्रज्ञा० ४२४।*

**पदानुसारिता-** ऋद्धिविशेषः। *स्था० ३३२।*

**पदार्थ-** मुनिर्गुणो वा। *आव० ७६०।* कारकविषयः, समास-विषयस्तद्धितविषयो निरुक्तिविषयश्च। *आव० ४५५।*

**पदार्थदोषः-** यत्र वस्तुनि पर्यायोऽपि सन् पदार्थान्तरत्वेन कल्पते। *अनुयो० २६२।*

**पदिण्णा-** प्रदत्तवती। *आव० ५३८।*

**पदित्त-** प्रदीप्तः। *आचा० १५२।*

**पदुग्गाणि-** प्रदुर्गाणि-कुड्यप्राकारादीनि। *आचा० ४११।*

**पदुङ्ग-** प्रद्विष्टः। *ओघ० ६३।*

**पदेस-** प्रदेशः-लघुतरः। *भग० ४८३।* प्रद्वेषः-मस्तरः। *प्रज्ञा० ४३५।* प्रदेशः। *सूर्य० १६।*

**पदेसकम्म-** प्रदेशकर्म-प्रदेशा एव-पुद्गला एव यस्य वेद्यन्ते न यथा बद्धो रसस्तत्प्रदेशमात्रतया वेद्यं कर्म प्रदेशकर्म। *स्था० ६७।*

**पद्धतिः-**राजिः। *प्रश्न० ८३।*

**पद्म-** जलजम्। *जीवा० १३६।* दशरथसुतो रामापरनाम बलदेवः। *प्रश्न० ८७।* महाहृदविशेषः। *प्रश्न० ९६।*

**पद्मनाभ-** द्रव्यजिनः। *जम्बू० १३।* भावीजिनः। *जीवा० ३।* अमरकङ्काधिपतिः। *प्रश्न० ८७।* श्रुतमधिकृत्य कामकथायां राजा। *दशवै० १०।*

**पद्मनालः-** मृणालम्। *जीवा० १२३।*

**पद्मपक्ष्म-** केशरम्। *भग० १२।*

**पद्मपत्र-** नाट्यविशेषः। *जम्बू० ४१४।*

**पद्मराग-** मणिभेदः। *जीवा० २३।* मणिभेदविशेषः। *प्रज्ञा० २७।*

**पद्मराज-**

धातकीखण्डभरतक्षेत्रापरकङ्काराजधानीनिवासि-राजा। *स्था० ५२४।*

**पद्मलता-** नाट्यविशेषः। *जम्बू० ४१४।*

**पद्मलता-** प्रविभक्त्यशोकलता-प्रविभक्तिचम्पकलता-प्रवि-भक्ति-चूतलताप्रविभक्ति-वनलताप्रविभक्ति-वासन्तीलता-प्रविभक्ति-मुक्तलताप्रविभक्तिश्यामलताप्रविभक्त्यभिनया-त्मको लताप्रविभक्तिनामा-एकविंशतितमो नाट्यविधिः। *जीवा० २४७।*

**पद्मलेश्या-** पद्मगर्भवर्णानि यानि द्रव्याणि पीतानीत्यर्थः तत्साचिव्याज्जाता। *स्था० ३२।*

**पद्यूहदः-** हृदविशेषः। *आचा० २२०।*

**पद्मा-** इन्द्रस्य प्रथमाग्रमहिषी। *जम्बू० १५९।*

**पद्माकार-** खातविशेषः। *नन्दी० १६४।*

**पद्मावती-** अरिष्टनगराधिपते राममातुलस्य हिरण्यनाभदुहिता। *प्रश्न० ८८।*

**पध-** उष्णजलतेलादि। *प्रश्न० ५८।* छन्दो बद्धं। *जम्बू० २५९।*

**पधारेड-** प्रधारयति-दुष्टं सङ्कल्पयति। *जम्बू० २४८।*

**पधारेति-** प्रधारयति-प्रकर्षेण धारयति-करोति। *प्रज्ञा० ४३६।*

**पधाविय-** प्रधावितः-वेगितगतिः। *प्रश्न० ५०।*

**पधाविया-** प्रधाविया। *आव० २२४।*

**पधोवणा-** अप्पणो पादे पुणो पुणो उच्छालना। *निशी० १८८ अ।*

**पनक-** जलरुहविशेषः। *जीवा० २६।* जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा० ३१।* पनकः-गोमयाश्रितो जीवविशेषः। *आचा० ५५।*

**पदकादयः-** अनन्तजीविकाजीवाः। *स्था० १२२।*

**पनगो-** साङ्कुरोऽनङ्कुरो वाऽनन्तकायः पञ्चवर्णः। *बृह० १।*

**पन्थकसाधु-** शैलकाचार्यस्थिरीकारकः। *सम० ११८।*

**पन्न-** प्रज्ञस्येदं प्राज्ञं-गीतार्थनोपात्तम्। *सूत्र० ३०१।*

प्रकृष्टं ज्ञानं प्रज्ञा-सूक्ष्मार्थविवेकत्वम्। *स्था० १८३।*

**पन्नकतिल-** दुर्गधितिलः। *व्यव० १५८ आ।*

**पन्नगभूत-** पन्नगभूतः-सर्वकल्पेन आत्मना  
करण्यभूतः। *ज्ञाता० १९७।*

**पन्नति-** प्रज्ञप्तिः-स्वसमयपरसमयप्ररूपणा। *व्यव० २३५।*

**पन्नत्तं-** प्रज्ञप्तं-उपादेयतया प्रकाशितम्। *ज्ञाता० ३।*  
प्रज्ञप्तं-तीर्थकरनामकर्मोदयवर्तितया प्रायः  
कृतार्थेनाऽपि परोपकाराय प्रकाशितम्। *सम० ५।*  
प्रज्ञप्तं-प्ररूपितम्। *दशवै० २५५।* प्रज्ञप्तः- देशितः।  
*प्रज्ञा० ३९९।* प्रज्ञप्तं-प्ररूपितं तीर्थकर-गणधरैः।  
प्रज्ञाबुद्धिः तया आप्तं-प्राप्तं प्रज्ञातम्। प्राज्ञात्-  
तीर्थकरादाप्तं प्रज्ञाप्तं गणधरैरिति। प्राज्ञैः-गणधरैराप्तं  
प्राज्ञा-प्तम्। *स्था० ६५।*

**पन्नत्ति-** प्रज्ञाप्यन्ते प्ररूप्यन्ते भगवता सुधर्मास्वामिना  
जम्बू-नामानमभियस्याम्। प्रज्ञायाः-तद्धेतुभूतबोधस्य  
व्याख्यासु वा प्रज्ञाया आप्तिः-प्राप्तिः आत्तिर्वा-आदानं  
यस्याः सका-शादसौ प्रज्ञाप्तिः प्रज्ञात्तिर्वा। प्रज्ञाद्वा-  
भगवतः सकाशादा-प्तिरात्तिर्वा गणधरस्य यस्याः सा  
तथा। प्रज्ञाप्यन्ते-प्ररूप्यन्ते प्रबोध्यन्ते वा यस्याम्।  
प्रज्ञप्तिः-अर्थप्रज्ञप्ति-अर्थप्ररूपणा प्रज्ञप्तिः- प्रज्ञाप्तिः।  
*भग० २।* प्रज्ञप्तिः-संशयापन्नस्य श्रोतु-र्मधुरवचनैः  
प्रज्ञापनम्। *स्था० २११।*

**पन्नत्तिअकखेव-** संशयापन्नस्य श्रोतुर्मधुरवचनैः  
प्रज्ञापनम्। *स्था० २११।*

**पन्नत्तिधर-** प्रज्ञप्तिधरः-भगवतीवेत्ता। *आव० ५३२।*

**पन्नत्ती-** प्रज्ञप्तिः-एतदभिधाना काचिद्विद्या। *सूर्य० ३०३।*  
प्रज्ञप्ती-प्रज्ञापना। *बृह० २६० आ।* प्रज्ञप्तिः-  
संशया-पन्नस्य मधुरवचनैः प्रज्ञापना। *दशवै० ११०।*  
स्वसमयप-रसमयप्ररूपणा। *व्यव० २३५।*

**पन्नत्ते एगा-** प्रज्ञप्ते-प्ररूपते-प्ररूपिते सत्यका गर्हा  
भवति, गर्हाया भेदः। *स्था० २१५।*

**पन्नव-** प्रज्ञावान् प्राज्ञो-बुद्धिमान्। *दशवै० २१३।*

**पन्नवग-** प्रज्ञापतीति प्रज्ञापकः-मूलकर्त्ता। *दशवै० ११४।*  
प्रज्ञापकः-गुरु। *नन्दी० १७९।*

**पन्नवगदिसा-** प्रज्ञापकस्य-आचार्यादेर्दिक् प्रज्ञापकदिक्-  
पन्नवगदिसा। *स्था० १३३।*

**पन्नवगपुव्व-** प्रज्ञापकपूर्वकं-प्रज्ञापनं(कं) प्रतीत्य पूर्वा  
दिक् यदभिमुख एवासौ सैव पूर्वा। *दशवै० ८५।*

**पन्नवणा-** प्रज्ञापनाविषयं प्रश्नमधिकृत्य प्रवृत्तत्वात्,  
प्रज्ञा-पनायाः प्रथमं पद प्रज्ञापना। *प्रज्ञा० ६।*

प्रज्ञापनाप्ररूपणा। *प्रज्ञा० ५०९।*

यथावस्थितजीवादिपदार्थज्ञापनात् प्रज्ञापना। *अनुयो० ३८।*  
प्रज्ञापना-भेदाद्यभिधानम्। *स्था० १५९।* प्रज्ञापना-  
विशेषतः कथनम्। *ज्ञाता० ४९।*

**पन्नवणी-** प्रज्ञापनी-असत्यामृषाभाषाभेदः। *दशवै० २१०।*

**पन्नवयं-** प्रज्ञापयतीति प्रज्ञापकः गुरुः। *अनुयो० १७७।*

**पन्नविज्जंति-** प्रज्ञाप्यन्ते-नामादिभेदाभिधानेन  
प्ररूप्यन्ते, नामादिस्वरूपकथनेन प्ररूप्यन्ते। *सम० १०९।*  
प्रज्ञाप्यन्ते नामादिभेदोपन्यासेन। *नन्दी० २१२।*

**पन्नवित्ता-** प्रज्ञाप्य-बोधयित्वा। *स्था० ११९।*

**पन्नवियं-** प्रज्ञापितं-सामान्यतो विनेयेभ्यः कथितम्।  
*प्रश्न० ११३।*

**पन्नवैति-** प्रज्ञापयन्ति-उत्पत्तिभिर्बोधयन्ति। *स्था० १३६।*

**पन्नवेइ-** प्रज्ञापयति- जीवाजीवादीन् पदार्थान् बोधयति।  
*स्था० ५०३।* प्रज्ञापयन्ति-प्रतिबोधयति शिष्यीकरोति।  
*भग० ७११।*

**पन्नवेज्ज-** प्रज्ञापयेत्-भेदभणनतो बोधयेद्। *भग० ४३६।*

**पन्ना-** प्रज्ञा-बुद्धिरीप्सितार्थसम्पादनविषया  
कुटुम्बकाभिबुद्धिविषया वा तद्योगादृशापि प्रज्ञा  
प्रकर्षेण जानातीति प्रज्ञा दशदशाषु पञ्चमी दशा। *स्था० ५२९।*  
प्रज्ञा-सूक्ष्मार्थविषया मतिः। *भग० ७६३।*  
दशदशायां पञ्चमी दशा। *निशी० २८ आ।* प्रज्ञा-जन्तोः  
पञ्चमी-दशा। *दशवै० ८।* प्रज्ञापनं प्रज्ञा-  
विशिष्टक्षयोपशमजन्या प्रभूतवस्तुगतयथावस्थित-  
धर्मालोचनरूपा संवित्। *नन्दी० १८७।*

**पन्नाण-** प्रज्ञानं-श्रुतज्ञानम्। *आचा० २४९।*

एवम्भूतश्चासौ-प्रकर्षेण जायते ज्ञेयं येन तद् प्रज्ञानम्।  
*आचा० १५४।*

**पन्नाणम्-** प्रज्ञानवान्-ज्ञानी। *आचा० २४९।*

**पन्नाणमंता-** प्रकर्षेण जायतेऽनेनेति प्रज्ञानं तद्वत्ता  
सश्रुतिका। *आचा० २३३।*

**पन्नायंति-** प्रज्ञायते-अवबुध्यते। *भग० ९१।*

**पन्नुन्न-** वलकलतनुनिष्पन्नम्। *आचा० ३९४।*

**पप्प-** प्राप्य-विज्ञाय। *ओघ० ३७।* प्राप्य-विज्ञाय। *ओघ०*

३७। प्राप्य-अभ्युपगम्य आश्रित्य। दशवै० ७०। प्राप्य-  
परिहर्तुं शक्यम्। बृह० २६ अ।  
पप्पडग- समसरियाए उभयतडेसु पाणिण जा रेल्लिया  
भूमी सा तंमि पाणिण ओहट्टमाणे तरिया बद्धा होउं  
उण्हेण छित्ता पप्पडी भवति। निशी० ३९ आ।  
पप्पडमोअय- पर्यटमोदकः-खाद्यविशेषः। जम्बू० ११८।  
पप्पडमोदय- पर्यटमोदकः। प्रजा० ३६४।  
पप्पडमोयय- पर्यटमोदकः। जीवा० २७८।  
पप्पडिय- पर्यटिका शालिपर्पटिका। पिण्ड० १५४।  
पप्पु- उप्लुतं-व्याप्तम्। अनुयो० १३९।  
पप्पुय- प्रप्लुतं। ज्ञाता० १३२। प्रप्लुतं-प्रहनुतम्। प्रश्न०  
१९।  
पप्पोत्ति- प्राप्नोति। उत्त० ४०१।  
पप्फुत- प्रप्लुतः। अन्त० ७।  
पप्फुय- प्रप्लुतः-प्रवर्तितानन्दः। भग० ४६०।  
पप्फुल्लं- प्रफुल्लं-विकसितम्। जीवा० १७६।  
पप्फोडणं- प्रस्फोटनं-प्रकर्षण धूननम्। ओघ० ११०।  
प्रस्फोटनं-आस्फोटनम्। प्रश्न० १५६। प्रस्फोटनं-  
आस्फोटनम्। प्रश्न० ११२।  
पप्फोडणा- प्रस्फोटना-प्रकर्षण रेणुगुण्डितस्येव वस्त्रस्य  
झाटना। उत्त० ५४१। प्रस्फोटना-प्रकर्षण धूननम्। स्था०  
३६१। उक्खोडगप्पदाणं पप्फोडणा। निशी० १८१ अ।  
पप्फोडे- प्रस्फोटयेत्-प्रस्फोटनां कुर्यात्। उत्त० ५४०।  
प्रस्फोटयेत्। ओघ० १०८।  
पप्फोडमाणे- प्रस्फोटयित्वा-आभिग्रहिकेनान्येन वा  
साधुना स्वकीयरजोहरणेन उर्णिकपादपोञ्छनेन वा  
प्रस्फोटनं कारयन् स्काटयन्नित्यर्थः। स्था० ३२९।  
पफुसियपविरलं- विरलशीकरं-फुसारम्। आव० १२२।  
पबन्ध- प्रबन्धः-विकथादिषु वाऽविच्छेदेन प्रवर्तनम्।  
उत्त० ३४६। प्रबन्धं-अविच्छेदात्मकम्। उत्त० ३४६।  
पबाह- प्रबाधा-प्रकृष्टा बाधा। ज्ञाता० ९७।  
पबुद्धा- प्रबुद्धा-उत्फुल्ला। जम्बू० ३३६।  
पब्भार- प्राग्भारः-अग्रतो मुखमवनतत्त्वम्। भग० १७४।  
प्राग्भारः-ईषदवनतः। भग० २३८। प्राग्भारः-  
जन्तोरष्टमीदशा। दशवै० ८। प्राग्भारः-  
ईषदवनतपर्वतभागः। ज्ञाता० ६३। प्राग्भारः-ईषत्  
कुब्जः। प्रजा० ७१। प्राग्भारः-पुद्गलनिचयः। स्था०

१२५। प्राग्भारः-उच्छ्रयादिलक्षणः। स्था० २५१। प्राग्भारं-  
यत्पर्वतस्योपरि हस्तिकुम्भाकृति कुब्जं विनिर्गतं  
तत्प्राग्भारम्। नन्दी० २२८। प्राग्भारं-ईषदवनतम्। स्था०  
५२०। ज्ञाता० ६६। प्राग्भारः-ईषदवनतः। ज्ञाता० ९९।  
पब्भारगती- या तु द्रव्यान्तराक्रान्तस्य सा  
प्राग्भारगतिर्यथा नावादेरधोगतिः। स्था० ४३४।  
पब्भारा- प्राग्भाराः-ईषन्नताः पर्वताः। अनुयो० १७१।  
प्राग्भारं-ईषदवनतमुच्यते तदेवंभूतं गात्रं यस्यां भवति  
सा प्राग्भारा-अष्टमीदशा। स्था० ५२०।  
दशदशायाममष्टमीदशा। निशी० २८ आ।  
पभंकर- चतुर्थलोकान्तिकविमानः। स्था० ४३२।  
प्रभङ्करं-चतुर्थलोकान्तिकविमानम्। भग० २७१।  
प्रभङ्करः-एकोन-सप्ततीतममहाग्रहः। जम्बू० ५३५।  
एकोनसप्ततितममहाग्रहः। स्था० ७९। प्रभङ्करः-  
त्रीणिसागरोपमस्थिकः-देवः। सम० ८।  
अष्टसागरोपमस्थिकः देवः। सम० १४।  
पभंकरा- चन्द्रस्य चतुर्थी अग्रमहिषी। स्था० २०४। धर्म-  
कथाया अष्टमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम्। ज्ञाता० २५२।  
धर्म-कथायाः सप्तमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम्। ज्ञाता०  
२५२। सूर्यस्य चतुर्थ्याग्रमहिषी। स्था० २०४। सूर्यस्य  
चतुर्थ्याऽ-ग्रमहिषी। भग० ५०५। प्रभङ्करा-चन्द्रस्य  
ज्योतिषेन्द्रस्य तुरीयाग्रमहिषी। जीवा० ३८४। प्रभङ्करा-  
वच्छवतीविजयस्य राजधानी। जम्बू० ३५२। प्रभङ्करा-  
चन्द्रस्य चतुर्थी अग्र-महिषी। जम्बू० ५३२। स्था० ८०।  
पभंगुर- प्रभङ्गुरः स्वत एव भङ्गशीलः। आचा० २३८।  
पभंजन- प्रभञ्जनः-उत्तरनिकाये नवम इन्द्रः। भग०  
१५७। वातकुमारेन्द्रः। स्था० ८५। चतुर्थी वायुकुमारः।  
स्था० १९८। चतुर्थी महर्द्धिकदेवः। स्था० २२६।  
प्रभञ्जनः-वायुकुमाराणामधिपतिः। प्रजा० ९४।  
प्रभञ्जनः। जीवा० ३०६।  
पभ- हरिकान्तस्य प्रथमो लोकपालः। स्था० १९७।  
पभकंते- हरिकान्तस्य तृतीयो लोकपालः। स्था० १९७।  
पभणियं- प्रभणितं-भणनारम्भः। विपा० ७६।  
पभयाल- प्रभवालः। तरुविशेषः। जम्बू० ९८।  
पभव- प्रभवः-उत्पत्तिस्थानम्। आचा० १३। प्रभवः-  
उत्पादः। प्रजा० २५६। सत्पुरुषः, कल्पविधि-निषेवकः।  
बृह० २३०। निशी० ३९ आ। निशी० ९६ अ। चौरविशेषः।

व्यव० २४०।

**प्रभा-** प्रभा-यानादिदीप्तिः। भग० १३२। प्रभा-यानादिदीप्तिः। औप० ५०। प्रभा-बाहुल्यम्। जीवा० ८९। भावनावासगता प्रभा। जीवा० १६२। प्रभा-आकारः। जम्बू० १००। प्रभास्वभावः। प्रजा० ४३। प्रभा-प्रकाशः। सूर्य० ७८। प्रभा भावनावासगता। प्रजा० ८८। प्रभा-आकारः। प्रजा० ३६५। प्रभा-स्वरूपम्। प्रजा० ५३२। प्रभा-प्रभावः माहात्म्यः। स्था० ४२१। प्रभा-प्रभावः। उपा० २६। प्रभा-उद्गमन-समये यद् द्युतिस्फुरणम्। ज्ञाता० १७०। प्रभा-चन्द्रादि-दीधितः। उत्त० ५६१।

**प्रभाङ्-** प्रभाति। आव० २१८।

**प्रभावई-** मुनिसुव्रतस्वामिमाता। सम० १५१। प्रभावति। मल्लिमाता। आव० १६०। बलनरपतिराज्ञी। भग० ५३५। प्रभावती-उदायनराज्ञी। उत्त० ९६। प्रभावती-शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकुलसंभूतवैशालिकचेटकप्रथमा पुत्री। आव० ६७६।

**प्रभावणा-** प्रभावना-तथा तथा स्वतीर्थोन्नतिहेतुचेष्टासु प्रवर्त-मानात्मिका। उत्त० ५६७। प्रभावना-धर्मकथादिभिस्तीर्थ-ख्यापना। दशवै० १०३। प्रभावना-धर्मकथादिभिस्तीर्थप्र-ख्यापना। प्रजा० ५६।

**प्रभावती-** प्रभावती-उदायनराजपत्नी। आव० २९८। उदायनस्य राज्ञी। निशी० ३४६ आ। उदायननरपते राज्ञी। भग० ६१८। कुम्भकराजपत्निः। ज्ञाता० १२४। प्रभावती। निर० ९।

**प्रभावेङ्-** प्रभावयति-प्रकाशयति। उत्त० ५८५।

**प्रभासंता-** व्याख्यानेन प्रभासमानः। आव० ४४८।

**प्रभासंति-** प्रभासयन्ति-तथाविधवस्तुदाहकत्वेन प्रभावं लभन्ते। भग० ३२७।

**प्रभास-** जम्बूभरते तृतीयं तीर्थम्। स्था० १२२। सम० ९३। द्वाविंशतिसागरोपमस्थितिकः देवः। सम० ४१। प्रभासं-देवोद्योते तीर्थम्। आव० ७०९। प्रभासः-एकादशमगणधरः। आव० २४०।

**प्रभासा-** प्रभासा तन्निबन्धत्वात् अहिंसाया एकोनषष्ठितमं नाम। प्रश्न० ९९।

**प्रभासेङ्-** प्रभासयति-

अतितापयोगाद्विशेषतोऽपनीतशीतं विधत्ते यथा वा सूक्ष्मतरं वस्तु दृश्यते तथा करोति। भग० ७८।

प्रभासयति-अतितापयोगाद् विशेषतोऽपनीतशीतं करोति। जम्बू० ४६।

**प्रभासेमाण-** प्रभासयन्-शोभयन्। औप० ५०। प्रभासयमानः सूक्ष्मवस्तूपदर्शनतः। स्था० ४२१।

**प्रभु-** प्रभु राजा। बृह० ९० आ।

**प्रभू-** धणितो। निशी० ४३ आ। राया। निशी० १७४ आ। प्रभुः-सक्तः। भग० १७६।

**प्रभूय-** प्रभूतं-उद्भूतम्। औप० ४६।

**प्रभूयदंसी-** प्रभूतं-

प्रमादविपाकादिकमतीतानागतवर्तमानं च कर्मविपाकं द्रष्टुं शीलमस्येति प्रभूतदर्शी। आचा० २१८।

**प्रभुंजिओ-** प्रभुक्तः-भोक्तुं प्रवृत्तः। बृह० गा० ६०७१।

**प्रमइलदुब्बला-** प्रमलितदुर्बला स्नानभोजनत्यागात्। ज्ञाता० ३३।

**प्रमज्जणा-** प्रमार्जना-रजोहरणादिक्रिया। प्रश्न० १५६। मुह-पोल्लियरयहरणगोच्छगेहिं प्रमज्जणा। निशी० १८१ आ। बीयकणुगादीणं सकृत् अवणयणे आमज्जणा पुणो पुणो प्रमज्जणा। पुणो पुणो करैतस्स प्रमज्जणा। निशी० १९० आ। प्रमार्जना-रजोहरणादिव्यापाररूपा। प्रश्न० ११२।

**प्रमज्जति-** रयहरणेण प्रमज्जणं, पुणो पुणो प्रमज्जति। निशी० १८७ आ।

**प्रमज्जित-** प्रमृज्यात्-कर्दमादि शोधयेत्। आव० ३३८।

**प्रमज्जिय-** प्रमृज्यात्-शोधयेत्। आव० ३३८।

**प्रमज्जेमान-** प्रमार्जयन्-शनैर्लूषयन्। स्था० ३२९।

**प्रमत्त-** प्रमत्तः-पञ्चमनिद्राप्रमादवान्। स्था० १६४।

प्रमत्तः-अनुपयुक्तः। उत्त० ४३४। प्रमत्तः-सुखी।

आचा० १८३। प्रमत्तः-प्रमत्तसंयतग्रामः।

भूतग्रामस्यषष्ठं गुणस्थानम्। आव० ६५०। प्रमत्तः-

पराभिमुखः। ओघ० १७६। प्रमाद्यन्ति स्म-

मोहनीयादिकर्मोदयप्रभावतः सञ्ज्वलनकषायनि-

द्राद्यन्यतमप्रमादयोगतः संयमयोगेषु सीदन्ति स्म

प्रमत्तः। प्रजा० ४२४। प्रमत्तः-कषायादिना प्रमादेन

रागद्वेषवशं गतः। दशवै० ११५। प्रमत्तः-प्रमादवान्।

ज्ञाता० ७९। प्रमत्तः-असंयतः-परतीर्थिको वा। आचा०

१८१। प्रमत्तः-पञ्चविधप्रमादयोगात्। ज्ञाता० १११।

**पमत्ता-** प्रमत्ता विषयैः। आचा० १८३।

**पमत्तायरिए-** प्रमादो-मद्यादिस्तेनाचरितः

प्रमादाचरितः। आव० ८३०।

**पमदवणं-** प्रमादवनम्। आव० ४२५।

**पमद्-** प्रमर्द-नक्षत्रविमानानि विभिद्य मध्ये गमनरूपम्।

जम्बू० ४९१। प्रमर्दः-चन्द्रेण स्पृश्यमानता। स्था०

४४२। प्रमर्दम्। सूर्य० १३७।

**पमद्गण-** प्रमर्दनं-कठिनस्यापि वस्तुनश्चूर्णनकरणम्।

जीवा० १२२। प्रमर्दनं-कठिनस्यापि वस्तुनश्चूर्णनम्।

जम्बू० ३८८।

**पमयकम्मं-** प्रमादकम्मं-

खंडनपेषणदलनपचनपरिवेषणादि। बृह० ९७ अ।

**पमयवण-** गृहोद्यानम्। ज्ञाता० १४४। तेतलिपुरनगरे

उद्यानम्। ज्ञाता० १८४।

**पमया-** प्रमादा-स्त्री। प्रश्न० ८३।

**पमाणंगुल-** प्रमाणाङ्गुलं-उत्सेधाङ्गुलाद् साहस्रगुणम्।

प्रज्ञा० २९९। सहस्रगुणितादुत्सेधाङ्गुलप्रमाणाज्जातम्।

परमप्र-कर्षरूपं प्रमाणं प्रातमङ्गलं वा। युगादिदेवस्य

भरतस्य वा अङ्गुलं वा प्रमाणाङ्गुलम्। अनुयो० १७१।

प्रमाणाङ्गुलम्। अनुयो० १५६।

**प्रमाण-** प्रमाणं-स्वाङ्गुलेनाष्टोत्तरशतोच्छ्रयता। औप०

१३। प्रमाणं-प्रमाणराशिः। सूर्य० १५८। प्रमाणं-नीतिर्बलं

च। आव० ४६३। प्रमाणं-आदेयम्। आव० ५३४। प्रमाणं-

युक्तिः। सूत्र० ३४०। प्रमाणं-

आत्माङ्गुलेनाष्टोत्तरशताङ्गुलो-च्छ्रयता। प्रश्न० ७४।

प्रमाणं-अन्तरमानम्। जम्बू० ३२९। प्रमाणकालः-

अद्धाकालविशेषो दिवसादिलक्षणः। आव० २५७।

प्रमीयते-परिच्छिद्यते धान्यद्रव्याद्यनेनेति प्रमाणं

असतिप्रसृत्यादि, इदं चेदं च स्वरूपमस्य भवतीत्येवं

प्रति-नियतस्वरूपतया प्रत्येकं प्रमीयते-परिच्छिद्यते

यत्तत्प्रमाणं-यथोक्तमेव, धान्यद्रव्यादेरेव प्रमितिः-

परिच्छेदः स्वरूपाव-गमः प्रमाणम्। अनुयो० १५२।

प्रमाणं-शास्त्रीय उपक्रमः। आव० ३। प्रमाणं-प्रकृष्टं मानं

सूक्ष्ममानमित्यर्थः। भग० २४७। प्रमाणशब्देन

विष्कम्भायामौ। जम्बू० ३२१। प्रमाणं -

आत्माङ्गुलेनाष्टोत्तरशताङ्गुलोच्छ्रयता। स्था० ४६१।

प्रमाणं-भक्तपानाभ्यवहारोपध्यादेर्मानम्। सम० १०७।

प्रमाणं-वस्तुतत्त्वपरिच्छेदनम्। सम० ११५। प्रमाणं-

स्वा-ङ्गुलेनाष्टोत्तरशतोच्छ्रयता। ज्ञाता० ११।

**प्रमाणकसिणं-** दयादिपटं चर्म। बृह० २२२ आ। अधिक-

विस्तारायामं वस्त्रम्। बृह० २२६ अ।

**प्रमाणकसिणा-** दोमादितलीजिए उवहणाए एसा

प्रमाणतो कसिणा प्रमाणकसिया। निशी० १३६ आ।

**प्रमाणकाल-** प्रमाणकालः-अद्धाकालविशेषो

दिवसादिलक्षणः। दशवै० ९। प्रमाणकालः-अद्धाकालः

विशेषभूतो दिवसादि- प्रमीयते-परिच्छिद्यते येन

वर्षशतादि तत् प्रमाणं स चासौ कालश्चेति प्रमाणकालः

प्रमाणं वा परि-च्छेदनं वर्षादेस्तत्प्र-धानस्तदर्थो वा

कालः प्रमाणकालः-अद्धाकालस्य विशेषो

दिवसादिलक्षणः। भग० ५३३।

**प्रमाणस्थो-** प्रमाणस्थः-मान्यः। व्यव० २० आ।

**प्रमाणदोस-**

द्वात्रिंशत्कवलप्रमाणातिरिक्तमाहारमाहारयतः

प्रमाणदोषः। आचा० ३५१।

**प्रमाणपत्ता-** द्वात्रिंशता कवलैः प्राप्तप्रमाणो भवति

साधुर्न न्यूनोदरः। औप० ३८। प्रमाणप्राप्ता। आव० २२७।

**प्रमाणप्पत्त-** प्रमाणं-मानं तत् परिमाणं-मानं येषां ते

तथा प्रमाणप्राप्तः। भग० २९२।

**प्रमाणवं पुरिसो-** बारसंगुलप्रमाणाङ्गं समुहाङ्गं

णवसमुस्सितो प्रमाणवं पुरिसो। निशी० ८५ आ।

**प्रमाणसंवच्छर-** प्रमाणं-परिमाणं दिवसादिनां

तेनोपलक्षितो वक्ष्यमाण एव नक्षत्रसंवत्सरादिः

प्रमाणसंवत्सरः। स्था० ३४४। युगस्य प्रमाणहेतुः

संवत्सरः प्रमाणसंवत्सरः। सूर्य० १५३।

**प्रमाणाङ्कत-** प्रमाणातिक्रान्तः-

बुभुक्षापिपासामात्रानुचितः। ज्ञाता० १११।

प्रमाणातिक्रान्तः-प्रमाणातिक्रान्तः-द्वात्रिंशत्

कवललक्षणमतिक्रान्तः। भग० १९२।

**प्रमाद-** प्रमादः-मद्यविकथादिः। भग० ९१९। अणाभोगो

सहस्सकारो। निशी० ९९ आ।

**प्रमाय-** प्रमादः परिहासविकथादिः कन्दर्पादिः। स्था०

४८४। प्रमादः-तदर्थमेव सर्वारम्भेष्वपि प्रवर्तनम्।

असंप्राप्तकाम-भेदः। दशवै० १९४। प्रमादः-

विषयक्रीडाभिष्वङ्गरूपः श्रेय-स्यनुमात्मकः। आचा०

१२०। प्रमादो-विकथारूपोऽस्थ-

गिततैलभाजनधरणादिरूपो वा। उपा० ५।

प्रमादोऽज्ञानादि। स्था० १३५। प्रमादः-अज्ञानम्। ओघ०

४७। प्रमादः-विषयकषायाभिष्वंगरूपः शरीराधिष्ठानः।

आचा० १२८। प्रमादः-कार्यशैथिल्यम्। आचा० १५०।

प्रमत्तत्वं-आभोग-शून्यता हिताप्रवृत्ती। स्था० ३६०।

प्रमादः-शैथिल्यमाज्ञा-ऽतिक्रमो वा। स्था० ३६१। प्रमादः-

धर्म प्रत्यनुद्यमात्कमः। उत्त० ३३६। प्रमादः-अज्ञानम्

। ओघ० ४७।

**प्रमायइ-** प्रमादयति-प्रमादं करोति। ३४६।

**प्रमायए-** प्रमादयेत्-विषयादिप्रमादवशगो भूयात्। आचा० २०४।

**प्रमायठाण-** प्रमादस्थानं उत्तराध्ययनेषु  
द्वात्रिंशत्तममध्ययनम्। उत्त० ९।

**प्रमायठाणाइं-** उत्तराध्ययनस्य द्वात्रिंशत्तममध्ययनम्  
। सम० ६४।

**प्रमायति-** प्रमादयति-परित्यजति। आव० ५३४।

**प्रमायपर-** प्रमादपरः-प्रमादनिष्ठः। आव० ५८८।

**प्रमायप्पमाय-**

प्रमादाप्रमादस्वरूपभेदफलविपाकप्रतिपादक-मध्ययनं  
प्रमादाप्रमादम्। नन्दी० २०४। यस्मादस्मिन्नध्ययने  
प्रमादोऽप्रमादश्च पञ्चविधो वर्ण्यते तस्मादेतत्  
प्रमादाप्रमादम्। उत्त० १९१।

**प्रमायबहुलो-** प्रमादबहुलः। आव० ३३०।

**प्रमार-** प्रमारं-मरणक्रियाप्रारम्भम्। भग० ६९१। प्रमारोमू-  
र्च्छविशेषो मारणस्थानं वा। स्था० ३०५।

**प्रमुइय-** प्रमुदितः-हृष्टः। ज्ञाता० ४०। प्रमुदितः। ज्ञाता०  
१।

**प्रमुक्ख-** प्रमोक्षः-प्रतिवचनम्। उत्त० ५२४।

**प्रमुच्चते-** प्रमुच्यते। प्रश्न० ६०।

**प्रमुह-** प्रमुखं, द्वारम्। प्रजा० २८। पञ्चाशत्तममहाग्रहः।  
स्था० ७९। प्रमुखः-एकोनपञ्चाशत्तममहाग्रहः। जम्बू०  
५३५। प्रमुखं-गृहद्वारम्। बृह० ६२ अ। प्रमुखं-प्रवेश-  
निर्गममुखम्। बृह० १४८ आ।

**प्रमेइल-** प्रमेदुरः-प्रकर्षण मेदः सम्पन्नः। दशवै० २१७।

**प्रमेदिल-** अतीव मेदो जस्स सो। दशवै० ११०।

**प्रमेह-** रोगो संततकायियं ज्झरंतं अच्छति। निशी० ११७

अ।

**प्रमोअ-** प्रमोदः-उत्सवः। जम्बू० २७६। प्रमोदः-संयोगजो  
हर्षः। आव० ७२१। प्रमोदः प्रमोदोत्पादकत्वात्।

अहिंसाया एकत्रिंशत्तमं नाम। प्रश्न० ९९।

**प्रमोक्ख-** प्रमोक्षं-उत्तरम्। उत्त० १५७। प्रमोक्षं-उत्तरम्।  
भग० ११४। यः प्रकर्षेण मोक्षयति-मोचयतीति प्रमोक्षः-  
आत्मनो दुःखापगमहेतुः। उत्त० ६२१। प्रमोक्षः  
अपगमः। उत्त० ६२१।

**प्रमोद-** प्रमोदः-महोत्सवः। अन्त० १९।

**प्रम्ह-** पक्षमः-कर्प्पासरुतादि। स्था० २०३। पक्षमं-बहुल-  
त्वम्। भग० १२। नवसागरोपमस्थितिको देवः। सम०  
१५। पद्मं-पद्मगर्भः। विपा० ३४। पक्षम-बहुलत्वम्। औप०  
८३। पद्मं-पद्मकेसराणि। सूर्य० ४। पद्मम्। भग० १२। पद्म  
पक्षमकेशरम्। भग० ९२। अवयवे समुदायोपचारात् पद्म-  
शब्देन पद्मकेसराण्युच्यन्त तद्वद् गौर इति। जम्बू०  
१५। पक्षमविजय। जम्बू० ३५७। पक्षम। अनुयो० १७६।

**प्रम्हकंत-** नवसागरोपमस्थितिको देवः। सम० १५।

**प्रम्हकूड-** नवसागरोपमस्थितिकदेवः। सम० १५।

पद्मकूटः-नीलवन्तवक्षस्कारपर्वते कूटः। जम्बू० ३४६।

पक्षमकूटः-विद्युत्प्रभववक्षस्कारे कूटः। जम्बू० ३५५।

**प्रम्हगंध-** पद्मसमगन्धः, भारते वर्षे मनुष्यभेदः। भग०  
२७६। पद्मगन्धाः। जम्बू० १२८।

**प्रम्हगावई-** पक्षमकावती विजयः। जम्बू० ३५७।

**प्रम्हज्झय-** नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम्।  
सम० १५।

**प्रम्हडा-** विस्मृता। बृह० १४ आ।

**प्रम्हप्पभ-** नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम्। सम०  
१५।

**प्रम्हलसुकुमाला-** पक्षमवती सुकुमालाचेत्यर्थः। भग०  
४७७। पक्षमला च सा सुकुमारा च पक्षमलसुकुमारा।  
जीवा० २५३।

**प्रम्हला-** पक्षमला, पक्षमवती। जम्बू० २७५।

**प्रम्हलेस-** नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम्। सम०  
१५।

**प्रम्हवण्णं-** नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम्।  
सम० १५।

**प्रम्हसिग-** नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम्। सम०

१५।

पम्हसिद्ध- नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम्। सम्०

१५।

पम्हावई- पद्मावती रम्यग्विजये नगरी। जम्बू० ३५२।

स्था० ८०।

पम्हावती- सीतानदीदक्षिणे वक्षस्कारः। स्था० ३२६, ८०।

पम्हावत्त- नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम्।

सम्० १५।

पम्हुड- विस्मृतम्। स्था० ४०३। विस्मृतम्। प्रश्न० १२४।

प्रमृष्टः। ओघ० ९७। विस्मृत्या त्यक्तम्। बृह० २४ अ।

विस्मृतम्। ज्ञाता० १४८। विस्सरियं। निशी० २१३ अ।

पडियं, वीसरियं। निशी० २७४ आ। विस्मृतम्। बृह०

२०९ अ। विस्मृतम्। बृह० २४ अ। विस्मृतम्। व्यव० ६३ अ।

पम्हुडदिसाभाए- विस्मृतदिग्भागः। ज्ञाता० २४०।

पम्हुत्तरवडिसंगं- नवसागरोपमस्थितिकदेवानां

विमानम्। सम्० १५।

पम्हुसइ- विस्मरति। आव० ३०७।

पम्हुसाविया- विस्मारिता। उत्त० ८७।

पयंग- पतङ्गः-चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२।

पतङ्गः-व्यन्तरनिकायानामुपरिवर्तिनो

व्यन्तरजातिविशेषः। प्रश्न० ६९। चतुरिन्द्रियविशेषः।

प्रज्ञा० ४२। पतङ्गः-वाणमन्तर-विशेषः। प्रज्ञा० ९५।

पतङ्गः-चतुरिन्द्रियजीवभेदः। उत्त० ६९६।

पयंगवाहिया- भिक्षाविशेषः। निशी० १२ अ।

पयंगविही- भिक्षाचर्यायां भेदः। उत्त० ६०५।

पयंड- प्रकाण्डः-उत्कटः। प्रचण्डो दुःसाध्यसाधकत्वात्।

सम्० १५७। प्रकाण्डः-अत्यर्थम्। सम्० १२७। प्रकाण्डः-

प्रचण्डः। प्रश्न० ७४। प्रचण्डः-प्रकाण्डो वा दुःसाध्यसाध-  
कत्वात्। प्रश्न० ७४।

पयंडा- प्रचण्डा-शीघ्रं शरीरव्यापिका, घोरा

प्रचण्डपरिवर्ति-तत्वात्। प्रश्न० १७।

पयडेमाण- प्रचण्डयन्-आज्ञाप्रधानः सन्नवश्यं

कर्तव्यतया निरूपयन्। जीवा० १६६।

पय- पदं-प्रकरणम्। भग० १०७। पदम्। ओघ० ९८। पदम्।

आव० ७९३। पदं-निमित्तकारणम्। आचा० १९७। पदं-

स्थानम्। आव० ८३९। पदं-पद्यते गम्यते

गुणैर्ज्ञानादिभि-रिति। ज्ञानादिगुणस्थानम्। उत्त० ५८।

पदं-पादविक्षेपरूपम्, स्थानं च। उत्त० २१७। पदं-

निराकाङ्क्षतयाऽर्थगमकत्वेन वाक्यमेव। उत्त० ५७०।

अत्थपच्छियवायगं पयं। निशी० २ अ। पदं-

आवश्यकपदाभिधेयम्। अनुयो० २०। पदं-

धूलिबहुलभूमिसमुत्थचरणप्रतिबिम्बम्। पिण्ड० २९।

पदं-मुष्टिस्थानम्। भग० १९४। सुप्तिङन्तं समयप्रसिद्धं

वा सङ्ख्येयम्। अनुयो० २३४।

पयइस्सभाव- प्रकृतिस्वभावः। आव० ३५१।

पयउ- परः। तन्दु० ।

पयए- पदगः-दाक्षिणात्यपदगतव्यन्तराणामिन्द्रः। प्रज्ञा०  
९८।

पयगवई- पदगपतिः-औदीच्यपदगतव्यन्तराणामिन्द्रः।

प्रज्ञा० ९८।

पयग्ग- पदाग्रं-पदपरिमाणम्। सम्० ३६।

पयच्छामो- भवते एव दग्धः, सामान्यतः प्रयच्छामः

प्रकर्षणेति -विशेषः। भग० ४७६।

पयइ- प्रवृत्तः। आव० ३८५। ओघ० १४२।

पयइओ- प्रकर्षकः-प्रवर्तकः। प्रश्न० ५।

पयइविओ- प्रवर्तितः। आव० ४३६।

पयइए- प्रवृत्तान् प्रवर्तितान् वा। उत्त० २०६।

पयइयं- प्रवर्तितम्। आव० १७३।

पयइया- प्रवर्तिता। आव० ३९८।

पयइत्था- प्रकटार्था-जिनवचनतत्त्ववेदिनामुत्तानार्था।

सूर्य० २९६।

पयडिय- प्रपतितं-प्रकर्षण श्रुतधीभूतम्। ज्ञाता० १३७।

पयडी- णालिएरि। निशी० १२१ अ। प्रकृतिः-भेदः। आव०

२४। प्रकृतिः-स्वभावः। आचा०।

पयण- पचनम्। प्रश्न० १४। पचनं-कडिल्लकाकृतिः।

सूत्र० १२६। पतनं-स्थानम्। उत्त० ४४। पाकस्थानं

चुल्ल्यादि। ज्ञाता० ११०।

पयणगं- पचनकं-प्रचण्डम्। आव० ६५१।

पयणसाला- जहिं पच्चंति भायणाणि। निशी० २१ आ।

पचनशाला-वर्षासु भाजनपाकस्थानम्। बृह० १७५ अ।

पयणु- प्रतनुः-अतिमन्दीभूतः। जीवा० २७७।

पयणुए- प्रतनुकं-अघनम्। भग० १८९।

पयत- प्रयतः-आदियमाणः। जम्बू० १९३। प्रयतः-प्रय-

त्नवान्। पदतवाः-तथाविधानुस्मर्यमाणसूत्रालापकात्।  
उत्त० ५८। प्रकृष्टसंयमयुक्तत्वात् प्रयताम्। स्था०  
२४७। प्रयत्नो-आदरः। बृह० २३अ। प्रयत्नः-  
यथागमादरः। पिण्ड० १४७। प्रदत्ता-गुरुभिरनुज्ञाता।  
अनुत्त० ३। प्रदत्तः-अनुज्ञातो गुरुभिः, प्रयतो वा-  
प्रयत्नवान् प्रमादरहित इत्यर्थः। भग० १२५।

**पयत्तकड-** प्रयत्नकृतम्। आचा० ३९०।

**पयबद्ध-** यदेकाक्षरादि यथा-ते ते इत्यादि। जम्बू० ३९।

**पयय-** प्रयतः-प्रयत्नः। ओघ० १९९। प्रयत्नः-सद्भावः।  
ओघ० १७९।

**पयया-** प्रयता-प्रकृष्टयत्नवतः। अनुत्त० ३।

**पयरंगुले-** सूची सूच्यैव गुणिता प्रतराङ्गुलम्। अनुयो०  
१५८। प्रतराङ्गुलम्। अनुयो० १७३।

**पयर-** प्रतरं-भूषणविधिविशेषः। जीवा० २६९। प्रतरम्।  
अनुयो० १५६। प्रतरम्। अनुयो० १७३। श्रेणिरेव श्रेण्या  
गुणिता प्रतरः। उत्त० ६०१। प्रतरः-प्रस्तरः। जम्बू०  
२९८। नन्दी० ११०। श्रेणिरेव श्रेण्या गुणिता प्रतरः।  
उत्त० ६०१। प्रतरः-आभरणविशेषः। औप० ५३। प्रतरः-  
एकप्रादेशिक-श्रेणिरूपः। प्रजा० २७९।

**पयरङ्ग-** प्रचरति। आव० ८१४।

**पयरग-** प्रतरकं-वृत्तप्रतलः-आभरणविशेषः। औप० ५५।  
प्रतरकं-सुवर्णपत्रकम्। जीवा० १८१। प्रतरकं-आभरणवि-  
शेषः। प्रश्न० ७५। प्रतरकः-पत्रकः। जम्बू० २४। प्रतरकं-  
स्वर्णादिमयं आभरणविशेषः। ज्ञाता० १४। प्रतरकं-  
प्रतरप्र-वृत्तरूपं आभरणम्। ज्ञाता० ३५।

**पयरच्छय-** प्रतरच्छोदः-तरिकाछेदः। औप० १८७।

**पयरण-** प्रतरणं-प्रथमदातव्यभिक्षा। बृह० १८७आ।  
भिक्षां। निशी० १५५आ।

**पयरतव-** श्रेण्या गुणिता श्रेणिः प्रतरः उच्यते,  
तद्रूपलक्षितं षोडशपदात्मकं तपः प्रतरतपः। उत्त० ६०१।

**पयरवट्ट-** वाहल्यतो हीनं प्रतरवृत्तं मण्डकवत्। भग०  
८६१।

**पयराभेद-** प्रतरभेदः। प्रजा० २६७।

**पयलङ्ग-** छिन्तरुहावनस्पतिः। भग० ८०४।

**पयला-** प्रचला-ऊर्ध्वस्थितनिद्राकरणलक्षणा। भग० २१८।  
प्रचला-या ऊर्ध्व स्थितस्यापि वा  
पुनश्चैतन्यमस्फुटोर्कुर्वतो समुपजायते निद्रा सा

प्रचला। जीवा० १२३। उपविष्ट ऊर्ध्वस्थितो वा  
प्रचलत्यस्यां स्वापावस्थायामिति प्रचला। स्था० ४६७।  
प्रचला-निषण्णस्य सुप्तजागरावस्था। बृह० २०७आ।  
उपविष्टः-ऊर्ध्वस्थितो वा प्रचलयति-घूर्णयति यस्यां  
स्वापावस्थायां सा प्रचला। प्रजा० ४६७।

**पयलाइआ-** भुजपरिसर्पविशेषः। प्रजा० ४६।

**पयलाएज्ज-** प्रचलायेत्-प्रचलां-  
ऊर्ध्वस्थितनिद्राकरणलक्षणां-कुर्यात्। भग० २१८।

**पयलापयला-** प्रचलातोऽतिशायिनी प्रचलाप्रचला। प्रजा०  
४६७।

**पयलायङ्ग-** प्रचलयति-निद्रां गच्छति। आव० ७९८।

**पयलाया-** भुजपरिसर्पः तिर्यग्योनिकः। जीवा० ४०।

**पयलिय-** प्रचलितम्, प्रवलिकं-प्रजातवलीकम्। ज्ञाता०  
१३३।

**पयलिज्ज-** प्रचलेत्-कम्पेत्। आचा० ३३७।

**पयल्ले-** चतुषञ्चाशत्तममहाग्रहः। स्था० ७९।

**पयविभाग-** पदविभागः-सामाचारी। आव० २५८।

**पयस-** पायसम्। आव० १८८।

**पयसमं-** पदसमं-यद् गेयपदं नाभिकादिकमन्यतरबन्धेन  
बद्धं यत्र स्वरे अनुपाति भवति तत्तत्रैव यत्र गीते गीयते  
तत् पद-समम्। स्था० ३९६।

**पया-** प्रजाः-जन्तवः। आचा० २०३। प्रजा-स्त्री। आचा०  
१६३। प्रजाः-पृथिव्यादयो जन्तवः स्त्रियो वा। सूत्र०  
१८९। प्रजा-जनसमूहरूपा, प्रजायत इति वा प्राणी।  
उत्त० १८२।

**पयाएज्जसि-** प्रजनिष्यति। विपा० ७७।

**पयाग-** प्रयागं-तीर्थविशेषः। आव० ६८९।

**पयाण-** प्रतननं-प्रतानो विस्तारस्तद्रूपः स्वप्नो यथा  
तथ्यः तदन्यो वा प्रतान इत्युच्यते। पञ्चस्वप्ने  
द्वितीयः। भग० ७०९।

**पयाणीक-** पदात्यनीकः-चतुर्थी सेना। जीवा० २१७।

**पयाणुसारिबुद्धि-** पदानुसारिबुद्धिः। प्रजा० ४२४।

**पयाणुसारी-** पदेन-सूत्रावयवेनैकेनोपलब्धेन तदनुकूलानि  
पदशतान्यनुसरन्ति-अभ्यूहयन्तीत्येवंशीलाः  
पदानुसारिणः। औप० २८।

**पयायामि-** प्रजनयामि। ज्ञाता० ८१।

**पयार-** प्रचारं-अटनम्। ओघ० १६१। प्रचारम्। ओघ० १५०।

**पयारधम्म-** चक्षुरादीन्द्रियवशतारूपादिषु प्रवृत्तिः

प्रचारधर्मः। दशवै० २१।

**पयारेड-** प्रतारयति। दशवै० ५९।

**पयावड-** प्रथमवासुदेवपिता। सम० १५२। प्रजापतिः-पोत-  
नपुरे राजा। आव० १७४। प्रजापतिः-त्रिपृष्ठवासुदेवपिता।

आव० १६३। प्रजापतिः। दशवै० ६६। प्रजापत्यः। सूर्य०  
१४६। प्रजापतिः-लोकप्रभुः। प्रश्न० ३३।

**पयावण-** प्रतापनं शीतापनोदाय। आचा० ५०। प्रतापनं-  
उत्तेजनम्। बृह० १४२आ।

**पयावणा-** प्रतापना-अग्निप्रज्वलना। ओघ० १२४।

**पयाविज्जा-** प्रतापनं-निरन्तरं बहु तापनम्। दशवै० १५३।

**पयासयर-** प्रकाशकरः-प्रभासकरो वा। आव० ५१०।

**पयाहिणजलं-** प्रदक्षिणजलं-सामायिकदानस्य स्थानम्।  
आव० ४७०।

**पयाहिणावत्तमंडल-** प्रकर्षेण सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च  
परिभ्रमतां चन्द्रादीनां दक्षिण एव मेरुर्भवति  
यस्मिन्नावर्त्तन-मण्डल परिभ्रमणरूपे स प्रदक्षिणः  
प्रदक्षिण आवर्त्तो येषां मण्डलानां तानि  
प्रदक्षिणावर्त्तानि मण्डलानि येषां ते तथा। सूर्य० २७६।  
प्रकर्षेण सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च परिभ्रमतां चन्द्रादीनां  
दक्षिण एव मेरुर्भवति यस्मिन्नावर्त्त-  
मण्डलपरिभ्रमणरूपे स प्रदक्षिणः २ आवर्त्तो यस्य  
मण्डलस्य तत् तच्च मण्डलं मेरुं प्रति यस्य स  
प्रदक्षिणावर्त्तमण्डलः। जीवा० ३३७।

**पयोग-** प्रयोगः-परप्रतारणव्यापारः। आचा० १९७।

**पयोगकम्म-** प्रयोगकर्म-

वीर्यान्तरायक्षयोपशमाविर्भूतवीर्येणा-त्मनः प्रकर्षेण  
युज्यते इति प्रयोगः। आचा० ९४।

**पयोगपरिणता-** प्रयोगपरिणता-जीवव्यापारेण  
तथाविधपरि-णतिमुपनीता। स्था० १५२।

**पयोगविससापरिणय-** प्रयोगेण-जीवव्यापारेण विश्रसया  
च स्वभावेन परिणत-अवस्थान्तरमापन्नः। ज्ञाता०  
१७४।

**पयोस-** प्रद्वेषः-मात्सर्यः। स्था० ४८४।

**परंआभियोजितुकामा-** परमभियोक्तुकामः-  
अभिभविक्तुकामः। ज्ञात० १९१।

**परंगण-** नृत्यद्। निर० ३४।

**परंगामण-** भूमौ सर्पणम्। भग० ५४५।

**परंघया-** पर्यन्ता। व्यव० २२७।

**परंति-** सर्वतो भ्रमन्ति। प्रश्न० ५३।

**परंदम-** परान्-अन्यान् दमयति-यत्कृत्याभिमतकृत्येषु  
प्रवर्तयति इति परन्दमः। उत्त० २७५।

**परंपर-** दृष्टिवादे सूत्रस्य भेदः। सम० १२८। परम्परं-  
व्यवहितम्। भग० २१५। परे च परे चेति विप्सायां  
परम्पर-शब्दनिष्पत्तिः। प्रज्ञा० १८। परम्परकं-  
विकारपरम्परा। पिण्ड० ९०।

**परंपरगए-** परम्परया-मिथ्यादृष्ट्यादिगुणस्थानकानां वा  
मनुष्यादिसुगतीनां वा पारम्पर्येण गतो भवाम्भोधिपारं  
प्राप्तः परम्परागतः। भग० १११।

**परंपरगढिया-** परम्परैः-व्यवहितैः सह ग्रथिता  
परम्परग्रथिता। भग० २१५।

**परंपरघाए-** परम्परा-निरन्तरता तत्प्रधानो घातः- ताडनः  
परम्पराघातः उपर्युपरिघातः। भग० २५१।

**परंपरबंध-** येषां तु बन्धानां द्वितीयादिः समयो वर्तते  
तेषां परम्परबन्धः। भग० ७९१।

**परंपरय-** परम्परकम्। आव० ५२०।

**परंपरवल्ली-** मातापित्रोर्मात्रादिषट्करूपा। बृह० ४२आ।

**परंपरसिद्धा-** परे च परे चेति वीप्सायां पृषोदरादय इति  
परम्पराशब्दनिष्पत्तिः, परम्परे च ते सिद्धाश्च  
परम्परसिद्धाः। अनुयो० ११३।

**परंपरा-** परम्परा-ज्ञानदर्शनचारित्ररूपा  
मिथ्यादृष्ट्यादिभेद-भिन्ना। प्रज्ञा० ११२।

**परंपराफासो-** परम्परास्पर्शः। आव० ३२४।

**परंपरोगाढ-** परम्परावगाढः-यदात्मप्रदेशान्तर्वर्त्तीनि  
तदवगाढसम्बन्धात् परम्परावगाढम्। भग० २१।

**परंपरोववण्णगा-** परम्परोपपन्नकः-परम्परया  
उपपन्नकः उत्पत्त्यनन्तरं द्वित्र्यादिसमयवर्त्ती। प्रज्ञा०  
३०४।

**परंभर-** परं बिभर्त्तीति परम्भरः। स्था० २४८।

**परंमुहो-** पराङ्मुखः। आव० २२०। पराङ्मुखः। आव० ४२७।

**पर-** परः-तीर्थकृत्। आचा० २२८। परः-शत्रुः। आव० ६०।  
परः-मोक्षः। आव० ३२९। परः-चोदकः। ओघ० १०८। परं-  
देशविश्रुताद्ययोगिकेवलिपर्यन्तं गुणस्थानकम्। आचा०  
१७३। संयमः। आचा० १७३। सम्यग्दृष्टिगुणस्थानः।

आचा० १७३। परशब्दविषयेनामादिः षड्विधो निक्षेपः।  
आचा० ४१५। आरवाची निशी० १२९ आ। परः-तीर्थकृत,  
सर्वजः। आचा० २०। परं-स्वर्गम्। आचा० १७३। परं-  
दर्शनमोहनीयचारित्रमोहनीयक्षयं, घातिभवोपग्राहिक-  
र्मणां वा क्षयम्। आचा० १७३। परं-परलोकः-प्रव्रज्याप-  
र्यायः। मोक्षो वा। सूत्र० ५६। परं-परलोकाख्यं नारकादिकं  
वा। सूत्र० १५२। परं-प्रकृष्टः। भग० ७४६। परं-अग्रतः।  
उत्त० ६५९। स्वामी। व्यव० १७२ अ।

**परङ्गुली**— परमर्द्धिः-अष्टमवासुदेवनिदानकारणम्। आव०  
१६६।

**परए**— परकं-अतिक्रमः। उत्त० ६५४।

**परक**— भाजनविधिविशेषः। जीवा० २६६।

**परकड**— परेण-गृहिणाऽऽत्मार्थं परार्थं वा कृतं-निर्वर्तितं  
परकृतम्। उत्त० ६०।

**परकडपरनिष्ठिय**— परार्थं कृतं-आरब्धं परार्थं च निष्ठितं  
अन्तं गतं परकृतपरनिष्ठितम्। दशवै० ६७।

**परकिरिआ**— परस्मै-स्त्र्यादिपदार्थाय क्रिया परक्रिया  
विषयो-पभोगद्वारेण परोपकारकरणं, परेण वाऽऽत्मनः  
सम्बाधनादिका क्रिया परक्रिया। सूत्र० १२०।

**परककंत**— पराक्रान्तः-पराक्रमस्तपःप्रभृतिकम्। भग०  
१६३।

**परक्कम**— पराक्रमः-पुरुषकारः। स्था० २३। पराक्रमः।  
स्था० ११६। पराक्रमः-स एव निष्पादितविषयो बलवीर्य-  
योर्व्यापारणम्। स्था० ३०४। पराक्रमः-शरीरसामर्थ्या-  
त्मकः। उत्त० ३४९। पराक्रमः-उत्तरोत्तरगुणप्रतिपत्त्या  
कर्मारिजयसामर्थ्यलक्षणः। उत्त० ५७१। पराक्रमं-  
जीववीर्योत्सासरूपमुत्साहम्। उत्त० ३११। पराक्रम्य-  
आसेव्य। दशवै० २३३। पराक्रमः-उत्साहातिरेकः। स्था०  
४४१। पराक्रमः-मार्गान्तरः। आचा० ३३८। पराक्रमः-  
निष्पादि-तस्वविषयः। जाता० १३५। प्रक्रम्यतेऽनेनेति-  
प्रक्रमः मार्गः। आचा० ३३७। पराक्रमः-स एव  
साधिताभिमतप्रयोजनः। शत्रुवित्रासनम्। जम्बू० १३०।  
पराक्रमः-शत्रुवित्रासन-शक्तिः। जम्बू० १८२। पराक्रमः।  
सूर्य० २८६। पराक्रमः-साधिताभिमतप्रयोजनः  
शत्रुनिराकरणं वा। भग० ५७। पराक्रमः-  
निष्पादितस्वप्रयोजनः। भग० ३२३। पराक्रमः-  
अन्यमार्गः। दशवै० १६४। पराक्रमः-प्रवृत्तिबलम्।

दशवै० २७९। पराक्रमः-सामर्थ्यम्। सूत्र० २७३।  
साधिताभिमतफलः-पुरुषकारः पराक्रमः। प्रश्न० ७३।  
पराक्रमः-विक्रमः। जीवा० २७०। पराक्रमः-चेष्टा। आव०  
१८१। निष्पादितस्वविषयः पराक्रमः। प्रज्ञा० ४६३।  
पराक्रमः-कषायजयः। आव० ३६१।

**परक्कमइ**— पराक्रमते-चेष्टते। दशवै० १०६।

**परक्कमणं**— विवक्षितदेशगमनं पराक्रमणम्। सूत्र० २७३।

**परक्कममाण**— उल्ललयद्। निर० ३४।

**परक्कमितव्वं**— पराक्रमितव्यं-शक्तिक्षयेऽपि तत्पालने  
पराक्रमः-उत्साहातिरेको विधेय इति। स्था० ४४१।

**परक्रियासप्तैककः**— षष्ठं सप्तिकाऽध्ययनम्। स्था०  
३८७।

**परग**— वंशनिष्पन्नं छब्बकादि। आचा० ३५७। परकं-येन  
तृणविशेषेण पुष्पाणि ग्रथ्यन्ते। आचा० ३७२। सूत्र०  
३०७, ३०९।

**परगघ**— परार्ध-उत्तमार्धं, महार्धम्। दशवै० २२१।

**परचक्कराया**— परचक्रराजा-अपरसैन्यनृपतिः।  
जाता० १५१।

**परचक्र**— दुरितविशेषः। भग० ८।

**परजझ**— पारवश्यम्। भग० ३१४। देशीपदत्वात् परवशः  
राग-द्वेषग्रहग्रस्तमानसतया न स्वतन्त्रः। उत्त० २२८।  
परतन्त्रता। स्था० ५०५। परवशीकृतः। बृह० १२३ अ।  
पराधीनः महाप्र०। पराक्रमः। मरण०। परजझा प्रारब्ध।  
मरण०।

**परङ्गणंतरं**— परमाणोर्यत्परस्थाने-  
द्व्यणुकादावन्तर्भूतस्थान-न्तरं-चलनव्यवधानं  
तत्परस्थानान्तरम्। भग० ८८६।

**परङ्गण**— परस्थानं-छब्बकादिकम्। पिण्ड० ८९।

**परङ्गणवड्डी**— विसरिसं जहा मासलहुयाउ दोमासियं,  
दुमासातो तेमासितं एवं सव्वा विसरसा परङ्गणवड्डी।  
निशी० २३४ आ।

**परङ्गणसन्निगासेणं**— विजातीययोगमाश्रीत्येत्यर्थः।  
भग० ९०१।

**परततियवावड**— परतप्तिव्यावृत्तः-

परकृत्यचिन्तनाक्षणिकः। प्रश्न० ३८।

**परत**— परत्र। उत्त० ५४०।

**परतर**— पच्छित्तकरणे समत्थं णत्थि, वेयावच्चकरण

लक्ष्मी से अत्थि। निशी० १२३ अ।

परत्थ- परार्थं मोक्षार्थम्। आव० ३२९। परत्रैव-जन्मान्तरे  
अर्थ आस्था वा यस्य स परार्थः। स्था० २४८।

परत्र- पश्चात्कालम्। नन्दी० १५।

परद्ध- विक्षिप्तम्। आव० १९९। व्याप्तः। भक्त०।

परद्धा- पराभविता। निशी० ११ आ।

परधणंमि गेही- परधने गृद्धिः, अधर्मद्वारस्य सप्तमं  
नाम। प्रश्न० ४३।

परनिन्दात्मोत्कर्षविप्रयुक्त-

त्रयोविंशतितमवचनानि शयः। सम० ६३।

परपंडित- परः-प्रकृष्टः पण्डितः परपण्डितः बहुशास्त्रज्ञः,  
परो वा मित्रादिः पण्डितो यस्य स। स्था० ४५२।

परपङ्क्ति- परप्रतिष्ठितः-परेणाक्रोशादिना प्रतिष्ठितः-  
उदी-रितः परस्मिन् वा प्रतिष्ठितो-जातः परप्रतिष्ठित  
इति। स्था० ९२। परेणाक्रोशादिनोदीरितः परप्रतिष्ठितः  
पर-विषयो वा। स्था० १९३।

परपक्ख- गवादयोऽसंयतः। बृह० १६४ अ। गृहस्थः। बृह०  
११४ अ। परपक्षाः-पाखण्डिनः। बृह० ५ अ। परपक्षः-  
गृहस्थादिः। ओघ० १२०। परपक्षः-गृहस्थः। पिण्ड० ६७।  
असंजतो। निशी० १४ अ।

परपक्खजयणा- जयणाए तर्ह्यो भेओ। निशी० १२।

परपक्ष- अपरभिक्षाचरवर्गः। आचा० ३२६।

परपक्षकषायदुष्टः- राजवधकः। स्था० १६४।

परपञ्जाय- परपर्यायः। भग० ३६३।

परपतिष्ठि- यदा पर उदीरयति आक्रोशादिना कोपं तदा  
किल तद्विषयः क्रोध उपजायत इति स परप्रतिष्ठितः।  
प्रज्ञा० २९०।

परपरिवा- विप्रकीर्णं परेषां गुणदोषवचनम्। भग० ८०।  
पर-परिवादः-प्रभूतजनसमक्षं परदोषविकत्थनम्। प्रज्ञा०  
४३८। परपरिवादः-परेषामपवदनं परितापः। भग० ५७२।  
पञ्चदशमं पापस्थानकम्। ज्ञाता० ७५। परपरिवादः-  
विकत्थनम्। प्रश्न० १२४।

परपरिवात- परपरिवादः-परदोषपरिकीर्तनम्। स्था०  
२७५।

परपरिवाय- परेषां परिवादः परपरिवादः-विकत्थनम्।  
स्था० २६।

परपुड- परपुष्टः-कोकिलः। जम्बू० ३२। परपुष्टः-

कोकिलः। प्रज्ञा० ३६०।

परपासंड- परपाषण्डः-सर्वज्ञप्रणीतपाषण्डव्यतिरिक्तः।  
आव० ८१६।

परपासंडपसंसा- परपाषण्डप्रशंसा-

सर्वज्ञप्रणीतपाषण्डव्यतिरिक्तानां प्रशंसा, प्रशंसनं  
प्रशंसा-स्तुतिः। आव० ८११।

परपासंडसंथव- परपाषण्डसंस्तवः-

सर्वज्ञप्रणीतपाषण्डव्यतिरिक्तस्तवनम्। आव० ८११।

परपासंडी- अण्णाणं मिच्छत्तं कुव्वंतो कुत्तिथि ए  
वाएति, जिणवयणं च णाभिगच्छति सो परपासंडी।  
निशी० ८४ अ।

परपिंडतक्क- परपिण्डतर्कः-परदत्तभोजनगवेषकः।  
प्रश्न० ६३।

परपेस- परप्रेषः। उत्त० २६३।

परप्पवित्त- परस्मै प्रवृत्त-परैः स्वार्थं निष्पादितत्वेन  
परप्रवृत्तम्। उत्त० ३५९।

परब्भंत- उपद्रुतः। निशी० १७३ आ।

परब्भाह- पराभ्याहतो-बाधितः। ज्ञाता० ६३।

परभवसंक्रामकारय- परभवसङ्क्रमकारकः-  
प्राणवियोजित-स्यैव परभवे सङ्क्रान्तिसद्भावात्,  
प्राणवधस्य सप्तदशमः पर्यायः। प्रश्न० ५।

परभविय- वर्तमानानन्तरभाविन्यनुगामितया यद्वर्तते  
तत् पारभाविकम्। भग० ३३।

परभाग- शोभा। उत्त० ४८३।

परभाववंकणया- परभावस्य वङ्कनता-वञ्चनता या  
कूटलेख-करणादिभिः सा परभाववङ्कणता। स्था० ४२।

परभाववंचणा- परभाववञ्चनता-मायाप्रत्ययिकीक्रियाया  
द्वितीयो भेदः। आव० ६१२।

परमंगाणि- परमाणि च तानि प्रत्यासन्नोपकारित्वेन  
अङ्गानि च मुक्तिकारणत्वेन परमाङ्गानि। उत्त०  
१८१।

परमंता- परे-गृहस्थाः तेषां मन्त्राः-तत्कार्यालोचनरूपाः  
परमन्त्राः। उत्त० ४४६।

परम- मोक्षं जानादिकम्। आचा० १५९। सुहं। दशवै० ६२  
आ। परमः-अत्युग्रो रसः। दशवै० २९७।

परमकेवलं- परमं च तत्केवलं च-परिपूर्णं विशुद्धं वा  
मतिश्रु-तावधिमनःपर्यायापेक्षया क्षायिकज्ञानमिति।

प्रश्न० १३५।

**परमगगसूर**— परमाग्रशूरः-दानसंग्रामशूरापेक्षया प्रधानः शूरः। दशवै० २५४।

**परमद्व**— परमार्थः-मोक्षः। उत्त० ४८७।

**परमद्वपण**— परमार्थपदं-सम्यग्दर्शनादि। उत्त० ४८७।

**परमद्वभेदक**— परमार्थभेदकं-मोक्षप्रतिधातकम्। प्रश्न० ३६।

**परमण्णं**— परमान्नं-पायसलक्षणम्। आव० १४४।

परमान्न-पायसम्। जीवा० २६८।

**परमत्थ**— परमार्थः-जीवादिः। उत्त० ५६६। परमार्थ-हेयो-पादेयवचनैदम्पर्यम्। प्रश्न० १२०।

**परमत्थसंथव**— परमाश्च-तात्त्विकाश्च तेष्वर्थाश्च जीवादयस्ते परमार्थाः-तेषु संस्तवः-परिचयः, तात्पर्येण बहुमानपुरस्सरं जीवादिपदार्थावगमायाभ्यासः। प्रज्ञा० ५६।

**परमद्वा**— पडिमद्वंति जे ते परमद्वा शयनकाले परिपिड्वंति। निशी० २७७ आ।

**परमनिउण**— परमनिपुणः, तत्र मोक्षाङ्गत्वात् अव्यंसकत्वाच्च। आव० ६१।

**परमन्न**— परमान्न क्षैरेयि। भग० ६६४।

**परमपय**— परपदम्। ज्ञाता० ५५।

**परमसम्भाव**— परमसद्भावः-अत्यंतसत्यता वस्तूनामैदम्पर्यम्। सम० १११।

**परमसाहू**— परमसाधुः-नैष्ठिकमुनिः। प्रश्न० ११४।

**परमसुक्कज्झाणं**— परमशुक्लध्यानं

शुक्लध्यानचतुर्थभेदरूपम्। प्रश्न० १३५।

**परमसुक्का**— शुक्लध्यानतृतीयभेदावसरे या लेश्या सा पर-शुक्ली, साऽपीतरजीवशुक्ललेश्यापेक्षया स्नातकस्य परम-शुक्ला। भग० ९०२।

**परमसुह**— परमसुखं आत्यन्तिकसुखं-निःश्रेयः। जम्बू० १५३।

**परमसौमणस्सिए**— परमं सौमनस्यं-सुमनस्कता संजातं यस्य स परमसौमनस्यितस्तद्वाऽस्यास्तीति परमसौमनस्यिकः। भग० ११९। शोभनं मनो यस्यासौ सुमनास्तस्य भावः। सौमनस्य परमं च तत् सौमनस्यं च परमसौमनस्यं तत्संजा-तमस्मिन्निति परमसौमनस्यितः। जीवा० ३४३।

**परमहंस**— परमहंसः परिव्राजकः। औप० ९१।

**परमा**— महास्थितयो महाकर्मतरा। भग० ७६१।

**परमाणु**— परमाश्च तेष्वणवश्च परमाणवो निर्विभागद्रव्यरूपाः स्कन्धत्वपरिमाणरहिताः केवलाः परमाणवः। प्रज्ञा० १०।

**परमाणुपुग्गला**— परमाणुपुद्गलाः स्कन्धत्वपरिणामरहिताः केवलाः परमाणवः। जीवा० ७। अनुयो० १६०।

**परमान्न**— पायसम्। जम्बू० १०४।

**परमाराम**— परमारामः-परमश्चासावारामश्च-ज्ञाततत्त्वमपि जनं हासविलासोपाङ्गनिरीक्षणादिभिर्विबोक्तैर्मोहयतीत्यर्थः। आचा० २१८।

**परमावता**— सप्तापतीगङ्गास्वरूपा। भग० ६७४।

**परमाहम्मिअ**— परमाधार्मिकः-असुरविशेषः। सम० २९।

**परमाहम्मिय**— परमाधार्मिकः-नारकाणां दुःखोत्पादकः-असुरकुमारविशेषः। प्रश्न० १४३। परमधर्मः-परमं सुखं तद्धर्मा-सुखधर्मा-सुखाभिलाषी। दशवै० १४२।

**परमाहोहिओ**— परम आधोवधिकादयः स

परमाऽधोपधिकः। स च

समस्तरूपिद्रव्यासङ्ख्यातलोकमात्रालोकखण्डास-ङ्ख्यातावसर्पिणीविषयावधिज्ञानः। भग० ६७।

**परमोहि**— परमावधिः प्रभूतावधिः। व्यव० १०६ आ।

**परलाभ**— परलाभः परस्माद् द्रव्यागमः अधर्मद्वारस्य पञ्चमं नाम। प्रश्न० ४३।

**परलिङ्गं**— कुतीर्थिकलिङ्गम् गृहस्थलिङ्गम्। भग० ८९५।

**परलोइया**— हयगयादी। निशी० ७१ आ।

**परलोकभयं**— परभवात् यत् प्राप्यते। आव० ४७२।

विजाती-यात्तिर्यमनुष्यादिकस्य भयम्। प्रश्न० १४३।

**परलोग**— प्रधानलोकः परलोकः-मोक्षः। आव० ५३१।

परलोकः-देवलोकः। आव० ८४०।

**परलोगभत**— विजातीयात्-तिर्यग्देवादेः

सकाशान्मनुष्यादीनां यद्भयं तत् परलोकभयम्। स्था० ३८९।

**परलोगभय**— परलोकभयं-यद्विजातीयात्। सम० १३।

परलोकमयं विजातीयात्तिर्यग्देवादेः सकाशाद् यद्

भयम्। आव० ६४५।

**परलोगसंवेयणी**— परलोकसंवेदनी, यथा देवा अपि ईर्ष्या-  
विषादमदक्रोधलोभादिभिर्दुःखैरभिभूता किमङ्गं पुनः  
तिर्य-ग्नारकाः। दशवै० ११२। परलोगसंवेदनी-  
देवादिभवस्वभाव-कथनरूपा, देवा  
अपीर्ष्याविषादभयवियोगादिदुःखैरभिभूताः- किं  
पुनस्तिर्यगादय इति। स्था० २१०।

**परलोगासंस्पओग**— परलोकाशंसाप्रयोगः-  
देवलोकामिला-षप्रयोगः। आव० ८३९।

**परलोयावाय**— परलोकावायः-नरकगमनादिः। आव० ५८९।

**परवडिय**— परानीतं यदशनादि। आचा० ४०३।

**परवत्थ**— परवस्त्रं-प्रधानं वस्त्रं परस्य वा वस्त्रं परवस्त्रम्।  
आचा० ३६।

**परववएसे**— परव्यपदेशः-आत्मव्यतिरिक्तव्यपदेशः।  
आचा० १८३।

**परविवाहकरण**— परं-स्वापत्यव्यतिरिक्तमपत्यं तस्य  
कन्या-फललिप्सया स्नेहबन्धनेन वा विवाहकरणं  
परविवाहकरणम्। आव० ८२५।

**परवेयावचकम्मपडिमा**— परेषां आत्मव्यतिरिक्तानां  
वैयावृत्य-कर्मणि-  
भक्तपानादिभिरुपष्टम्भक्रियास्तद्विषयाप्रतिमाः  
अभिग्रहविशेषाः परवैयावृत्यकर्मप्रतिमाः। सम० ९५।

**परशुरामः**— मानहतः। भक्त० ७। जमदग्निमुतः-  
सप्तवारान् निःक्षत्रा पृथिवीकता। सूत्र० १७०, ३०८।  
कृतवीर्यव्यापा-दकः। सूत्र० ३६५। अप्रतिष्ठाननरके  
वेदनावेदकः। जीवा० १२१।

**परसमय**— परसमयः-साङ्ख्यशाक्यादिसिद्धान्तः। दशवै०  
१११।

**परसमयसूत्रं**— यथा पचखंधे वयंतगे। बृह० २०१ आ।

**परसम्पत्**— विभूतिः। आव० ५८७।

**परशरीरसंवेगणी**— परशरीरं चेव असूर्ई, अहवा परस्स  
शरीरं वण्णेमाणो सोयारस्स संवेगमुप्पाएई  
परशरीरसंवेजनी। संवे-जनीकभाषाया द्वितीयो भेदः।  
दशवै० ११२। परशरीरसंवेगनी -परशरीरं-मृतशरीरं  
शरीरमेतदशुचिः। स्था० २१०।

**परसु**— परशुः कुठारः। प्रश्न० २१। परशुः-शस्त्रविशेषः।  
आव० ६५१, ८३१। परशुः-कुठारः। उत्त० ४१३। परशुः -

कुठारः। बृह० २३३ आ। परशुः-कुठारः। अनुयो० २२३।

**परसुविज्जा**— पर्शुविद्या। आव० ३९२।

**परस्पर**— एकैकः। उत्त० ३८२।

**परस्सर**— परस्परः-गण्डः। जीवा० २८२। परस्परः-गण्डः।  
प्रजा० २५४। परासरः-सनखश्चतुष्पदविशेषः। जीवा०  
३८। शरभः। भग० ३०९। सनखपदश्चतुष्पदविशेषः।  
प्रजा० ४५।

**परस्सलोभाविल**— परस्य-अन्यस्य  
सम्बन्धिरूपवद्वस्त्विति गम्यते लोभावलिः-  
लोभकलुषः, यद्वा परेषां स्वं-परस्वं, प्रक्रमाद् यद्रूपवस्तु  
तस्मिन् लोभो-गार्ध्यं तेनाविलः परस्व-लोभाविलः।  
उत्त० ६३२।

**परहडं**— परस्मात्सकाशाद् धृतं परहृतम्, अधर्मद्वारस्य  
द्वितीयं नामा। प्रश्न० ४३।

**परहत्थपाणाइवायकिरिया**— परहस्तेनापि तथैव  
परहस्तप्राणा-तिपातक्रिया। स्था० ४१।

**परहुअ**— परभृतः-कोकिलः। जम्बू० २००।

**परहुय**— परभृतः-कोकिलः। ज्ञाता० २२२। परभृतः-  
कोकिलः। ज्ञाता० २१।

**परा**— असिण-दात्रेण। निशी० ३२४ आ। निशी० १३ आ।  
प्रधानां। आव० ८३७। तृणविशेषः। प्रश्न० १२८।

**पराइए**— पुरुषसिंहवासुदेवनिदानकारणम्। आव० १६३।

**पराकय**— परसम्बन्धिनि। उत्त० ६६५।

**पराककममाण**— पराक्रममाणः-गच्छन्। आचा० ३३७।

**पराककमिज्जा**— पराक्रमते-गच्छेत्। आचा० ३७७।

**पराक्रम**— बलवीर्ययोर्व्यापारणमिति। स्था० ३८४।

**पराक्रान्त**— आक्रान्तं-स्थानमेकाकिनो भवति। स्था०  
३८४।

**पराघातनाम**— यदुदयात् पुनरोजस्वी दर्शनमात्रेण वाक्  
सौष्ठवेन वा महानृपसभामपि गतः सभ्यानामपि  
त्रासमापादयति प्रति-वादिनश्च प्रतिभाविघातं करोति  
तत्पराघातनाम। प्रजा० ४७३।

**पराघाय**— पराघातः-गर्तापातादिसमुत्थः। आव० २७२।

पराघातः-निसृष्टभाषाद्रव्यैस्तदन्येषां  
तथापरिणामापादन-क्रियावत् प्रेरणम्। दशवै० २०८।

**पराघायनाम**— यतोऽङ्गावयव एव विषात्मको  
दंष्ट्रात्वगादि परेणोपघातो भवति तत्पराघातनाम।

सम० ६७।

पराजिङ्ग- पराजितवान्-हारितवान्। भग० ३१७।

पराजिओ- पराजितः-पराभवमन्यमानः। उत्त० ३७६।

पराजिणित्ता- भृशं जित्वा परिभङ्गं वा प्राप्य सुमना  
भवति पराजितवान्-प्रतिवादिनः। स्था० १३१।

पराजिणस्सइ- पराजेष्यते-अभिभविष्यति। निर० ६।

पराजिय- पराजितः-तद्विधराज्योपार्जने  
कृतसम्भावनाभङ्गः। औप० १२।

पराणग- परकीयम्। गच्छा० ।

पराणि- द्रव्येन्द्रियमनांसि पुद्गलमयत्वात्। बृह० ८अ।

पराणुगहपरायणा- परानुग्रहपरायणः-धर्मोपदेशादिना  
परानु-ग्रहोदयुक्तः। आव० ५९७।

पराभए- पराभवः। विपा० ३९।

पराभग- पराभग्नः। आव० ९७।

परामह- यद्विपर्यासी कृतं भङ्क्ते तदेतत् परामृष्टम्।  
ओघ० १९२।

परामुद्धो- परामृष्टः। आव० ३६७।

परामुसंति- परामृशन्ति-उपतापयन्ति  
दण्डकशताडनादिभिर्घातन्तीत्यर्थः। आचा० १९८।

परामुसइ- परामृशति-गृह्णाति। भग० २३०। गृह्णाति।  
विपा० ८७। परामृशति-हस्तेन स्पृशति गृह्णाति जम्बू०  
३। परामृशति-स्पृशति। जम्बू० २००। परामृशति-  
आरभते। आचा० १४१।

परामुसह- परामृशत-नानापीडाकरणैर्बाधयत। आचा०  
२७३।

परामुसिए- परामृश्य तथाविधकरणव्यापारेण संस्पृश्य।  
भग० २१८।

परायग- परकीयम्। आव० ८२९। निशी० २९३।

परायण- परायणः-उदयुक्तः। आव० ५८७, ५९७।

परारि- । आचा० १२२।

परासर- सरभः। भग० १९१, ५४२। पराशरः-माहणपरि-  
त्राजकः। औप० ९१।

परासुः- मृतः। नन्दी० १५५।

परास्कन्दी- लुण्टाकः। नन्दी० ६३।

पराहुत- पराङ्मुखम्। आव० ५४१। पराङ्मुखः। ओघ०  
१८०। पराङ्मुखः-पराभिमुखः। ओघ० १७६।

परि- सर्वतः। प्रज्ञा० ५२७। पुनः पुनः बहिर्वा। आव० ८२८।

परिअ- पर्यायः अन्यथा भवनम्। उत्त० २०२।

परिअइ- परावर्तः-पुद्गलपरावर्तः।

अनन्तोत्सर्पिण्यवसर्पिणीप्रमाणो द्रव्यादिभेदः भिन्नः।  
आव० ४९५।

परिअइणा- परावर्तना-पुनः पुनः सूत्रार्थाभ्यासलक्षणा।  
अनुयो० १६।

परिअइय- पर्यायकः-परिपूर्णः। औप० २१। परिवर्तकः  
वृद्धिकारी अग्रेगामी परिपूर्णो वा। औप० २१।

परिअण- परिजनः-दासादिः। जम्बू० २७०।

परिआए- पर्यायः-प्रव्रज्यारूपः। दशवै० २७६। पर्यायः-  
तीर्थकृतः केवलीत्वकालः। जम्बू० १५५। पर्यायः-  
चारित्रपालनम्। ज० १५४।

परिआयङ्गाण- पर्यायस्थानं-प्रव्रज्यारूपम्। दशवै० २३८।

परिआविअ- परितापितः-समन्ततः पीडितः। आव० ५७४।

परिउवडिय- पर्युपस्थितः-उभयत्रोदयतः। उत्त० ५१२।

परिएसिज्जमाणे- तदीयमानाहारेण भोज्यमानान्।  
आचा० ३२७।

परिकंखए- प्रतिकाङ्क्षति-प्रतिपालयति। उत्त० २७३।

परिकच्छिय- परिकच्छितः परिगृहीतः। जम्बू० ४०३।

परिकट्टलिय- परिकट्टलितं-एकत्र पिण्डीकृतम्। पिण्ड०  
८१।

परिकप्पेह- सन्नाहवतं करेह। ज्ञाता० ३५।

परिकम्म- परिकम्म-सकलिताद्यनेकविधं गणितप्रसिद्धं  
तेन यत्सङ्ख्येयस्य सङ्ख्यानं-परिगणनं तदपि  
परिकम्म। स्था० ४९७। दृष्टिवादप्रथमभेदः। सम० १२८।

परिकर्म। आव० १०८। परिकर्म-वस्त्रपात्रादेः

छदनसीवनादि। स्था० ३२०। परिकर्म-संलेखना। उत्त०  
६०३। परिकर्म-रोगो-त्पत्तौ चिकित्सारूपम्। उत्त० ४६।

प्रतिकर्म। आव० २२६। परिकर्म-

स्थाननिषदनत्वग्वर्तनादिना विश्रामणादि च तपभेदः।  
उत्त० ६०२। पराक्रम्य-समीपमागत्य अभिभूय वा। सूर्य०

१०। परिकर्मः-तद्व्यापारे लग्नः। ओघ० १२८।

परिकम्म-द्रव्यस्य गुणविशेष परिणामकरणम्। व्यव०  
१।

परिकम्मण- सिक्खावणं। निशी० ३आ। निशी० १६६  
आ।

परिकम्मणा- उवहिप्पमाणप्पमाणेण संजयप्पाउग्गं

करेति। निशी० २३५अ।

**परिकम्भिज्जमाण-** क्रियमाणशोधनार्थोपक्रमः। भग० २५४।

**परिकम्मोवघाते-** परिकम्म-वस्त्रपात्रादेः छदनसीवनादि तेन तस्योपघातः अकल्प्यता परिकर्मोपघातः। स्था० ३२०।

**परिकर-** वागुरा। राज० १२२।

**परिकरण-** पात्रबन्धादिकम्। ओघ० १३२।

**परिकर्म-** दृष्टिवादप्रथमभेदः। सम० ४१। अवस्थितस्यैव द्रव्यस्य गुणविशेषापादनम्। जम्बू० ५। द्रव्यस्य गुणविशेषपरिणामकरणम्। आव० ५४। विनाशः-गुणान्तरोत्पादनम्। स्था० ४।

**परिकर्षकः-** अग्रेगामी। औप० २१।

**परिकिण्ण-** परिकीर्णः-परिवृतः। उत्त० ३४९।

**परिकिलेस-** परिकलेशो महामानसायासः। भग० ४७०।  
परिकलेशः-उपतापः। प्रश्न० ३७।

**परिकुंचनाप्रायश्चित्तं-** प्रायश्चित्तप्रकारः। व्यव० ११ अ।

**परिकुविय-** परिकुपितः-शरीरे समन्ताद् दर्शितकोपविकारः। भग० ३२२।

**परिक्रमन्ति-** परान् वा-इन्द्रियकर्मरिपून् आक्रमन्ते-पराक्रमन्ते। आचा० २३३।

**परिक्रम-** परिकर्म-अवस्थितस्यैव वस्तुनो गुणविशेषाधानम्। अनुयो० ४६।

**परिक्रमिज्ज-** पराक्रमेत-विहरेत् तिष्ठेद्वा। आचा० २७।

**परिक्रमे-** परिक्रामेत्-चङ्क्रम्याद्। आचा० २९३।

**परिक्लेश-** परिकलेशयतीति परिकलेशः-पुत्रकलत्रादिसंबन्धः। उत्त० ५२२।

**परिखग-** जेहिं सद्दसत्थाणि णयादीणि सत्थाणि अधीताणि ते। दशवै० १८।

**परिखभासी-** परीक्ष्यभाषी-आलोचितवक्ता। दशवै० २२३।

**परिख्या-** परीक्षा-युक्तायुक्तविचारणम्। आचा० १७५।

**परिखित्त-** परिक्षिप्तः परिषेकः। प्रश्न० २१।  
परिक्षिप्तः-व्याप्तः। जम्बू० ३७। परिक्षिप्तः-विस्तारितः। जम्बू० ३७। अन्त० ७। परिक्षिप्तं-वेष्टितम्। ज्ञाता० २२२।

**परिखित्ता-** परिक्षिप्ता-परिकरिता। भग० ४७८।

परिक्षिप्ता-वेष्टिता। ज्ञाता० २३६।

**परिखित्तिया-** परिक्षिप्तो-विस्तारितः। भग० ४६०।

**परिखिया-** परीक्षिता-पराजिता। आव० ५०४।

**परिखिव-** प्रतिक्षिपेत्-सूत्रतोऽर्थत उभयतो वा न्यसेत्। सूर्य० २९६। परिक्षेपः-परिरयः। जम्बू० २१। परिक्षेपः-भित्त्यादेरेव परिधिः नगरपरिखादिर्वा। अनुयो० १५४। बाहिरिका। निशी० १६८अ। परिक्षेपः-परिधिः। भग० ११९। परिक्षेपः-संक्षेपः। आचा० २६४। परिक्षेपः। अनुयो० १७५।

**परिखेव-** परिक्षेपः-वृत्तिवरंडकादिसमन्विते अबाह्ये। व्यव० ४०आ।

**परिक्षेपणं-** परिवेष्टनम्। उत्त० १७४।

**परिखा-** उपरि विशाला। सम० १३७। परिखा-अध उपरि च समखातरूपा। भग० २३८। उपरि विशालाऽधः सङ्कुचिता। जीवा० १५९।

**परिखेव-** परिक्षेपः-परिधिः। जीवा० ९७।

**परिगय-** परिगतं-वेष्टितम्। प्रश्न० ७३। परिगृहीतं-परिवेष्टितम्। ज्ञाता० ४२। परिगतम्। आव० ४२६।

**परिगर-** परिकरः-मल्लकच्छबन्धेन

युद्धोचितवस्त्रबन्धविशेषः। जम्बू० २०१। परिकरः-प्रगाढगात्रिकाबन्धः। जम्बू० २०५।

**परिगलत्स्रोतः-** जलाशयः। आचा० २२०।

**परिगालण-** परिगालनं-शुक्तिशङ्खमत्स्यादिग्रहणार्थं जलनिःसारणम्। प्रश्न० १४।

**परिगिज्झ-** परिगृह्य-अङ्गीकृत्य। उत्त० ६४। परिगृह्य-आश्रित्य। आचा० १२३।

**परिगीयं-** परि-समन्ताद् गीतं-ध्वनितं यत्र तत्। ज्ञाता० ४०।

**परिगुव्वति-** परिगुप्यति-व्याकुली भवती, सततं भ्रमतीत्यर्थः। स्था० ५०३।

**परिग्रह-** परिग्रहः-धर्मोपकरणवर्जवस्तु स्वीकारो

धर्मोपकरणमूर्च्छा च। भग० ४२। परिग्रहः-परिवारः। प्रश्न० ४७। पञ्चमं पापस्थानकम्। ज्ञाता० ७५।

परिग्रहः-अङ्गीकारः। जम्बू० १२७। परिग्रहः-परिवारः। प्रश्न० ४७। परिगृह्यत इति परिग्रहः-शरीरोपध्यादिः,

परिग्रहणं वा परिग्रहः-स्वीकारः, परिग्रहस्य प्रथमं नाम।

प्रश्न० ९२। परिग्रहः- धर्मोपकरणवर्जवस्तुस्वीकारः  
 धर्मोपकरणमूर्च्छा च। प्रज्ञा० ३३५। परिग्रहः-  
 स्वस्वामिभावेन मूर्च्छा। प्रज्ञा० ४३८। परिग्रहः-स्वीकारः।  
 प्रश्न० ४। प्रतिग्रहम्। आव० २६२। परिसमन्तात् गृह्यत  
 इति परिग्रहो-द्विपदचतुष्पदधनधान्य-  
 हिरण्यसुवर्णादिषु भूमीकारः। सूत्र० १७७। परिसमन्ता  
 गृह्यत इति परिग्रहः-  
 धनधान्यद्विपदचतुष्पदादिसंग्रहः, आत्मात्मी-यग्रहो  
 वा। सूत्र० १९२। परिग्रहः-संयमातिरिक्तमुपकर-णादिः।  
 आचा० १३२। परिग्रह्यते-स्वीक्रियत इति परिग्रहः।  
 स्था० २६। परिग्रहणं परिग्रहः-मूर्च्छा। स्था० २६। परिग्रहः  
 -धर्मसाधनव्यतिरेकेण धनधान्यादयः। स्था० ४६।  
**परिग्रहसण्णा-** परिग्रहसंज्ञा-परिग्रहाभिलाषः-  
 तीव्रलोभोदय-प्रभव आत्मपरिणामः। आव० ५८०।  
**परिग्रहसन्ना-** लोभोदयात्  
 प्रधानभयकारणाभिष्वङ्गपूर्विका  
 सचित्तेतरद्रव्योपादक्रियैव परिग्रहसंज्ञा। भग० ३१४।  
 परिग्रहसंज्ञा-लोभविपाकोदयसमुत्थमूर्च्छापरिणामरूपा।  
 जीवा० १५।  
 लोभोदयात्प्रधानसंसारकारणाभिष्वङ्गपूर्विका  
 सचित्तेतरद्रव्योपादानक्रिया परिग्रहसंज्ञा। प्रश्न०  
 २२२।  
**परिग्रहिया-** परिग्रहो-धर्मोपकरणवर्जवस्तुस्वीकारः  
 धर्मोपकरणमूर्च्छा स च प्रयोजनं यस्याः सा पारिग्रहिणी,  
 सम्यग्दृष्ट द्वितीया क्रिया। प्रज्ञा० ३३४। प्रगृहीता-  
 अभिग्रहयुक्ता। बृह० २२४ अ। परिग्रहे भवा  
 पारिग्रहिणी। स्था० ४१। पारिग्रहिणी-विंशतिक्रियामध्ये  
 द्वितीया। आव० ६१२।  
**परिग्रहिय-** परिग्रहीतः-स्वीकृतः। ओघ० १४०।  
**परिघट्टयंत-** परिघट्टयमानः। उत्त० ३०३।  
**परिघट्टिया-** परिघट्टिता-संपृष्टा। जीवा० १९३।  
**परिघासियं-** परिगुण्डितम्। आचा० ३२१।  
**परिघासेउं-** परिघासयितुं-भोजयितुम्। आचा० २७२।  
**परिघित्तव्वा-** परिग्राह्या भृत्यदासदास्यादि,  
 ममत्वपरिगृह्यतः। आचा० १७९।  
**परिघोलणं-** परिघोलनं-विचारः। आव० ४२६। नन्दी०  
 १६४।

**परिघोलेमाणे-** गमागमं कुर्वन्। औप० ६१।  
**परिचत्तकामभोग-** परित्यक्तकामभोगः-सर्वविरतः।  
 स्था० १२६।  
**परिचत्तलोगवावार-** परित्यक्तलोकव्यापारः,  
 मुनेर्लक्षणम्। आव० ४००।  
**परिचय-** परिचयः-हेवाकः। बृह० २०७ अ।  
**परिचयसंस्तव-** सम्बन्धिसंस्तवः। पिण्ड० १३९।  
**परिचार-** एकोनपञ्चाशततमकला। ज्ञाता० ३८।  
**परिचारग-** परिचारकः-कामुकः, यः परिचारणां-मैथुनाभि-  
 ष्वङ्गं करोति स। प्रश्न० ३०।  
**परिचित-** दिष्टी भट्टो पुव्वज्झुसितो पुव्व एगगामणिवासी  
 वा। निशी० १५५ अ। स्थिरः। आचा० १९५।  
**परिचितसूत्रता-** उत्क्रमक्रमवाचनादिभिः स्थितसूत्रता।  
 उत्त० ३९।  
**परिचोइओ-** परिचोदितः। आव० १९५।  
**परिच्यइत्तए-** परित्यक्तम्। ज्ञाता० १३४।  
**परिच्चाग-** विवेककरणं। निशी० १७ अ।  
**परिच्छा-** तुलणा। निशी० २६४ अ।  
**परिच्छाय-** परिच्छेदः-आच्छादनं-  
 कटकम्बादिभिरावरणम्। जम्बू० २०९।  
**परिच्छि-** नैयत्ये व्यवस्थापितम्। आव० ५९१।  
**परिच्छी-** प्रीतीच्छिकी। गच्छा०।  
**परिच्छद-** गणिः। नन्दी० १९३।  
**परिच्छय-** परिच्छिकः-लघुः। औप० ६३। परिच्छेकोलघुः।  
 ज्ञाता० २२१।  
**परिजण-** परिजनः-दासादिः। भग० ४८३।  
**परिजनकथा-** परिजनसम्बन्धकथा। प्रश्न० १३९।  
**परिजवन-** परिजल्पनं-परिजल्पः। निशी० १८४ अ।  
**परिजविय-** परैः-सार्धं भृशमुल्लापं कुर्वन्। आचा० ३८०।  
**परिजाणामि-** परिजानामि-आसेवनपरिजानेन  
 परिविदधेऽह-मित्यर्थः। आचा० २७१।  
**परिजाणित-** परियानं-देशान्तरगमनं तत्प्रयोजनं येषां  
 तत् परियानिकं गमनप्रयोजनम्। स्था० ५१८।  
**परिजायकुसुमं-** परिजातकुसुमम्। प्रज्ञा० ३६१।  
**परिजितं-** समन्ताज्जितं, परावर्तनम्। अनुयो० १५।  
**परिजिय-** परिचितः। स्था० ३४२।  
**परिजुणा-** परिद्युना दारिद्र्यात्। स्था० ४७४।

परिसमतओ जुण्णा-दुब्बलभावमुवगता। दशवै० १३५।  
**परिजुन्न-** परिजीर्ण-समन्ततोदुर्बलभावमापन्नम्।  
 दशवै० २४८। परिजीर्ण-समन्तात् हानिमुपगतम्। उत्त० ९२।  
**परिजुन्ना-** दशविधप्रव्रज्यायां तृतीया, परिद्युना-दारिद्र्या-त्काष्टहारकस्येव या सा परिद्युना। स्था० ४७४।  
**परिजुसित-** निसेवितः परिङ्गुसियः-परिक्षीणो जरादिना। स्था० १८८।  
**परिजुसिय-** पर्युषितं-रात्रिपरिवसनम्। स्था० २२०। परिजुषितः-सेवितः प्रीतो वा। औप० ४३। सेवितः-पीतः। भग० ९२५।  
**परिजुसियसंपन्न-** पर्युषितसम्पन्नः पर्युषितं-रात्रिपरिवसनं तेन संपन्नः। स्था० २२०।  
**परिजुरङ्-** परिजीर्यति-सर्वप्रकारां वयौ हानिमनुभवति। उत्त० ३३८।  
**परिजुसियकामभोगसंपादकसंपत्ते-**  
 परिजुषितकामभोगसंप्र-योगसंप्रयुक्तः-सेवितः प्रीतो वा यः कामभोगः-शब्दादिभोगो मदनसेवा। औप० ४३।  
**परिज्जए-** कृष्णपुद्गलः। सूर्य० २८७।  
**परिज्झा-** कामभोगपिवासा। दशवै० १४।  
**परिज्झिओ-** अनुगओ। दशवै० १४।  
**परिङ्गुसिय-** सेवितः पीतः। भग० ९२५।  
**परिजा-** प्रार्थना। आचा० ३७९।  
**परिजानं-** परिपालनम्। आचा० १६९।  
**परिङ्गुविज्ज-** प्रतिष्ठापयेयुः-त्यजेयुः। आचा० ३८४।  
**परिङ्गुविज्जमाणं-** परित्यज्यमानं देवायतनाच्चतुर्दिक्षु क्षिप्यमानम्। आचा० ३३७।  
**परिङ्गुविज्जा-** प्रतिष्ठापयेत्-व्युत्सृजेत्। दशवै० १७८।  
**परिङ्गुविय-** परिष्ठापितम्। व्यव० ३०८अ।  
**परिङ्गुविया-** परिस्थापिता-पतिता परित्यक्ता। बृह० ६७।  
**परिङ्गुवे-** परिष्ठापयति। ओघ० १५४।  
**परिङ्गुवेङ्-** परिष्ठापयेत्-परित्यजेत्। आचा० ३५२।  
**परिङ्गुवेज्जा-** परिष्ठापयेद् बहिर्नीत्वा त्यजेत्। उपा० ४२।  
**परिङ्गुवेत्ता-** प्रतिस्थाप्य प्रतिनिवृत्य। ओघ० १७३।  
**परिङ्गावणं-** परिस्थापनं-  
 प्रदानभाजनगतद्रव्यान्तरोज्झनलक्षणम्। आव० ५७६।  
 पारितः-सर्वैः प्रकारैः स्थापनं अपुन-ग्रहणतया न्यासः।

आव० ६१९।

**परिङ्गावणिया-** परिस्थापनं-  
 प्रदानभाजनगतद्रव्यान्तरोज्झन-लक्षणं तेन निवृत्ता या परिस्थापनिका, येन भाजनेन भिक्षां ददाति तस्मिन् पतितौदानादि जात सहसा परिस्थापितम्। आव० ५७६।  
**परिङ्गाविज्ज-** परिस्थापयेद्-व्युत्सृजेत्। दशवै० २३१।  
**परिङ्गाववाइयं-** परिस्थानोपपातिकम्। प्रजा० २०८।  
**परिणए-** परिणतं-पर्यायान्तरमापन्नम्। भग० २४९।  
**परिणत-** परिनिष्ठिततां गतम्। अनुयो० १७७।  
**परिणता-** सुत्तेन वयेण य वत्ता-त्यक्ता। निशी० २६  
 आ। धर्मश्रद्धालवः स्थिरचेतसश्च। बृह० १६६ आ।  
**परिणद्ध-** परिणहनम्। ज्ञाता० १३३। परिगतम्। ज्ञाता० १६६।  
**परिणमति-** परिणमति अतिक्रामति। स्था० ३४५।  
 परिणमति -भवति। भग० ५५। परिणमति-प्रपद्यते। जीवा० ३०७। परिणमति-परिसमाप्तिमुपयाति। सूर्य० १७२। विपरिणामं भजते। व्यव० १६०अ।  
**परिणममाणंसि-** परिणमति, पूर्यमाणे, परिपूर्णप्राये। जम्बू० १९८।  
**परिणममाण-** पूर्यमाणे-परिपूर्णप्रायः। ज्ञाता० ३४।  
**परिणमिज्जा-** परिणमेत्-निवर्तेत। आचा० १२९।  
**परिणमिय-** परिणामितः-  
 पूर्वस्वभावत्याजनेनात्मभावनीतः। भग० ६८३।  
**परिणय-** परिणतः-गीतार्थः। ओघ० ७९। परिणतं-उदक-  
 दायकावस्थाप्राप्तम्। स्था० १४२। परिणतः  
 परिनिष्ठिततां गतः। जम्बू० ३८७। परिणतः-परिगतः। औप० ७। परिणतः-प्रस्तावादात्मरूपनामापन्नम्। उत्त० ६६२। परि-निष्ठिततां गतः। भग० ६३१। परिणतः-  
 अवस्थान्तरमापन्नः। ज्ञाता० १७४। परिणतः-  
 स्वकायपरकायशस्त्रादिना परिणा-मान्तरमापादितः, अचित्तीभूतः। स्था० ५४।  
**परिणयवए-** सम्पन्नावस्थाविशेषः, तरुणः परिणतवयः। प्रश्न० ३८।  
**परिणयवय-** परिणयवयः-विगतयौवनः। ज्ञाता० १५७।  
**परिणयापरिणय-** दृष्टिवादे सूत्रभेदे द्वितीयो भेदः। सम० १२८।  
**परिणाम-** परिणामः-भावः। भग० ८९०। समन्तान्नमनं

परिणामः-सुदीर्घकालपूर्वापरार्थावलोकनादिजन्य  
आत्म-धर्मः। आव० ४१५। समन्तान्नमनम्। जम्बू०  
सर्व-थाऽपरित्यक्तपूर्वावस्थस्य यदुपान्तरेण भवनं  
परिणामः। अनुयो० १२०। संघर्षम्। आचा० ३६३।  
परिणामः-परि-समापकः। जम्बू० ५०५। परिणामः-  
प्रज्ञापनायां त्रयोद-शमं पदम्। प्रज्ञा० ६। परिणामः-  
इहलोकाद्याशंसाक्षणः। आव० ८४८। परिणामः-  
विश्वसारूपः। भग० १८८। परिणामः-परिणतिः। औप०  
९९। परिणामः-अध्यवसाय-विशेषः। आव० ३३९।  
परिणामं-पर्यायान्तराप्तिलक्षणम्। दशवै० २३७।  
परिणामः-आहारपरिपाकः। जम्बू० १२७। परिणामः-  
परिपाकः। जम्बू० १६८। भवांतरगमणं। दशवै० १२७।  
परिः-समन्तान्नमनं परिणामः-सुदीर्घकालपूर्वा-  
परार्थावलोकनादिजन्य आत्मधर्मः। भग० ५७३।  
परिणामः जीवपरिणतिः। जम्बू० २७९। परिणामः-  
आहारपाकः। जीवा० २७७। परिणामः-  
द्रव्यक्षेत्रादिसामग्रीवशतस्तत्तद्रु-पास्कन्दनम्। जीवा०  
३७४। परिणामः-आहारपरिणतिः। प्रश्न० ८३।  
परिणामः-अवस्थातोऽवस्थान्तरगमनम्। स्था० २०१।  
परिणामः-आकारबोधक्रियाभेदात् त्रिधा। स्था० १८३।  
परिणामः-सुदीर्घकालपूर्वापरार्थावलोकनादिजन्य  
आत्मधर्मः। स्था० २८३। परिणामः पर्यायः स्वभावः  
धर्मः। स्था० ३७५। परिणामः-विपाकः। स्था० ३७५।  
परिणामः-अपरित्यक्तपूर्वावस्थस्यैव  
तद्भावगमनमित्यर्थः। स्था० ३७८। परिणामः-धर्मः।  
सम० ४२। परिणामं परिसमापकम्। सूर्य० १११।  
नन्दी० १४४।

**परिणामक-** तत्तथा श्रद्धधाति तमेवं श्रद्धानं रोचयंतं  
जानीहि परिणामकं साधुम्। बृह० १३२अ।

**परिणामगा-** अववादसद्वहणा। निशी० ३२४अ।

**परिणामणय-** परिणतिरिन्द्रियादिविभागः। भग० ६०४।  
शब्दादिविषयोपभोगः। सम० १४६।

**परिणामपयं-** प्रज्ञापनानां त्रयोदशं पदम्। भग० ६४१।

**परिणामिकारणं-** मृत्पिण्डः। स्था० ४९४।

**परिणामिणी-** कायिकी। बृह० १४८अ।

**परिणामिया-** परिणामान्तरमापादितम्। भग० ५७९।

**परिणामेड-** कथयति। आव० ४२३।

**परिणामेज्जमाणे-** परिणम्यमानः। स्था० ४७२।

**परिणाह-** परिणाहः-ज्याधनुःपृष्ठयोर्यत्प्रमाणम्। स्था०  
६८। परिणाहः-परिधिः। स्था० ६९। परिणाहः-  
मध्यपरिधिः। जम्बू० २३४। परिणाहः-परिधिः। जम्बू०  
३१२। परिणाहः-परिधिः। स्था० ६८। वित्थारो। निशी०  
२६६आ। नातिस्थौल्यं नातिदुर्बलता  
बाहवोर्विष्कम्भोर्वा। बृह० ३०९आ।

**परिणिद्धिय-** परिनिष्ठितं-सुनिष्पन्नम्। जम्बू० २११।

**परिणिद्धिय-** परिनिष्ठितं-सिद्धम्। उत्त० ११७।

परिनिष्ठितः-ज्ञाननिष्ठां प्राप्तः। आव० २६४।

परार्थमचित्तीकृतम्। बृह० १०६अ। परि-समन्तात्  
निष्ठितः परिनिष्ठितो, ज्ञान-निष्ठां प्राप्त इत्यर्थः।  
आव० २६४।

**परिणिव्वाइ-** परिनिर्वाति सामस्त्येन शीतीभवति। प्रज्ञा०  
६०६।

**परिणिव्वाण-** परिनिर्वाणं-मरणम्। भग० १२९।

मृतशरीरप-रिष्ठापनम्। भग० १२९।

**परिणिव्वाणवत्तियं-** परिनिर्वाणं-मरणं तत्र यच्छरीरस्य  
परि-ष्ठापनं तदपि परिनिर्वाणमेव तदेव प्रत्ययो-  
हेतुर्यस्य सः परिनिर्वाणप्रत्ययम्। भग० १२९।

**परिणिव्वाति-** परिनिर्वाति-

सकलकर्मकृतविकारव्यतिकर-निराकरणेन  
शीतीभवति। स्था० १८१।

**परिणिव्वुय-** परिनिवृतः कषायान्युपशमनः-समन्तात्  
शीतीभूतः। उत्त० ३४१।

**परिणता-** अभिगगहिया। निशी० १११अ।

**परिण्णा-** परिज्ञा-अनशनम्। बृह० २१५अ। परिज्ञादि-  
वसचरिमप्रत्याख्यानम्। बृह० ११७आ। परिज्ञानवान्-  
अनशनी। बृह० ५आ। प्रत्याख्यानं तपो वा। बृह० १५०  
अ। परिज्ञा। आव० ६३७। प्रत्याख्यानम्। व्यव० ११५अ।  
निशी० १३४अ। अणासगं। निशी० ३५२आ।

पच्चकखाणं। निशी० ३०७आ। पच्च-कखाणं। निशी०  
१३३अ। परिज्ञा-अन्तक्रियालक्षणा सम्यग्विधेया।

स्था० ४४५। परि-समन्ताज्ज्ञानं पापपरि-त्यागेन परिज्ञा  
सामायिकमिति। आव० ३६४।

**परिण्णाय-** परिज्ञाय-परिज्ञयाज्ञात्वा। भग० १००।

परिज्ञातं-प्रत्याख्यातम्। आचा० ६६। परिज्ञातः-

तत्त्वस्वरूपादिपरि-ज्ञानात्प्रत्याख्यातः। सम् २०।  
**परिणी-** अणसणोवविद्धो। निशी ८६ अ।  
**परितंत-** परितान्तः-सर्वतः खिन्नः। ज्ञाता १३९। परि-  
 श्रान्तः। दशवै १०५। परिश्रान्तः। आव १९२।  
 परितान्तः-सर्वथा श्रान्तः। आव ५३५। परिश्रान्तः-  
 गुरुवैयावृत्य-करणादिना। आव ७८४। परितान्तः-  
 खिन्नः। उत्त १२९। रोगार्तः। ओघ २००। परितान्तः-  
 सर्वथा खिन्नः। ज्ञाता २२७। उद्विग्नाः। बृह ५९ अ।  
**परितण-** परिजनः-शिष्यवर्गः। स्था ४४१।  
**परितलिय-** परितलितं-सुकुमालिकादि। ओघ ४९।  
**परितात-** पर्यायः जन्मकालः प्रव्रज्याकालो वा। स्था ३५८। परिवारः-परिकरः। स्था २७२।  
**परिताभाए-** परिवेसयति। निशी ३५ अ।  
**परितायति-** परिसमन्तात् पीडयती-तापयति। आचा ७१।  
**परितायथेरा-** पर्यायस्थविराः-  
 विंशतिवर्षप्रमाणप्रव्रज्यापर्याय-वन्तः। स्था ५१६।  
**परितारण-** वेदोदयप्रतीकारः, तत्र स्त्रीपुंसयोः कायेन  
 परिचा-रणा-मैथुनप्रवृत्तिः। स्था ३०३।  
**परिताव-** निदुरवायणतज्जियस्स जो महणं संतावो सो।  
 दशवै १३६। परितापः-रविकिरणादिजनितस्तापः।  
 उत्त ८९। परितापः-पीडाकरणम्। भग १८१।  
**परितावणेअण्हओ-** परितापनपूर्वक आश्रवः  
 परितापनाश्रवः प्राणवधस्य षड्विंशतितमः पर्यायः।  
 प्रश्न ६।  
**परितावणा-** परितापना दुःखासिका। ओघ ६५।  
**परिताविय-** परितापितः क्वथितम्। बृह २३४ अ।  
 परितलितम्। ओघ ६७।  
**परितावेइ-** परितापयति-समन्ततः पीडयति। भग २३०।  
**परितावेति-** परितापयति-पीडयती। प्रज्ञा ५९२।  
**परितावेह-** परितापयथ-समन्ताज्जातसन्तापां कुरुथ।  
 भग ३८१।  
**परितासं-** परित्रासम्। ज्ञाता ३६।  
**परितिर्यक्कटनं-** कटादिभिः समन्ततः  
 पार्श्वार्णामाच्छादनम्। बृह ९२ अ।  
**परित्त-** परित्तः-परिमितः। राज ४७। परितः-  
 समस्तदेवा-दिभवाल्पतापादनेन समन्तात्खण्डितः,

परिमित इति। उत्त ७०८। परित्तः-प्रत्येकशरीरी  
 शुक्लपाक्षिकश्च। प्रज्ञा १३। परित्तं-नियतपरिमाणम्।  
 भग २४८। प्रत्येकम्। पिण्ड १४९। परित्तः-  
 प्रत्येकशरीरी। जीवा ४८। परीतः-भवकायभेदभिन्नः।  
 प्रज्ञा १३९। परीतं-प्रदेशतः परिमितम्। भग २४८।  
 परीतः-परिः-समन्तादितो गतः प्रभृष्ट इति। सूत्र ३९३।  
 परीतः-प्रत्येकशरीरी-आभिनिबोधिक-ज्ञानविचारे  
 पञ्चदशमद्वारम्। आचा २१। परीतः-पृथग्  
 शरीराणामेकद्वित्रिअसंख्येयानां जीवानामाश्रयः। ओघ ३४।  
 परिमितोपधिः। बृह १९ अ। निशी ९५ अ।  
 एकप्रदेशिकत्वेन विष्कम्भाभावेन परिमितः। भग ५५९।  
**परित्तजीव-** प्रत्येकशरीरजीवात्मकम्। प्रज्ञा ३६।  
**परित्तमिस्सय-** परीतविषयं मिश्रकं परीतमिश्रकं यथा  
 अनन्तकायलेशवति परित्तो  
 परित्तोऽयमित्यभिदधतः। स्था ४९१।  
**परित्तमिस्सिया-**  
 प्रत्येकवनस्पतिसङ्घातमनन्तकायिकेन सह  
 राशीकृतमवलोक्य प्रत्येकवनस्पतिरयं सर्वोऽपीति  
 वदता प्रत्येकमिश्रिता। प्रज्ञा २५६।  
**परित्तमीसग-** परीतमिश्रा-सत्यामृषाभाषाभेदः। दशवै २०९।  
**परित्तमीसय-** सत्यामृषाभाषायां अष्टमीभाषा। स्था ४९०।  
**परित्तसंखेज्जय-** परीत्तासङ्ख्येकं, संख्याविशेषः।  
 अनुयो २३९।  
**परित्तसंसारिता-** परीतसंसारिकाः-संक्षिप्तभवाः। स्था ६०।  
**परित्तसंसारी-** परीतसंसारी-  
 कतिपयभवाभ्यन्तरमुक्तिभाग्। उत्त ७०८।  
**परित्ता-** परीत्ताः-प्रत्येकशरीराः। स्था १३२। संख्येया  
 आद्यन्तोपलब्धेर्नानन्ता। सम् १०८। परिमिता।  
 नन्दी २१०।  
**परित्ताणंतय-** परीत्तानन्तकं सङ्ख्याविशेषः। अनुयो २४२।  
**परित्तास-** परित्रासः-आकस्मिकं भयम्। जम्बू १५०।  
**परित्तीकरेति-** स्तोत्रं कुर्वति। भग ९५।

**परित्तीकुर्वति**— संसारसागरं ह्रस्वतां नयति। *सम० १२७।*

**परिदाह**— परिदाहः-बहिःस्वेदमलौ बहिर्वा अन्तश्च  
तृष्णाया जनितदाहस्वरूपः। *उत्त० ८९।*

**परिदेवइज्जा**— परिदेवयेत्-स्वेदं यायात्। *दशवै० २५३।*

**परिदेवण**— परिदेवनं-पुनः पुनः-क्लिष्टभाषणम्। *आव० ५८७।*

**परिदेवणता**— परिदेवनता-पुनः पुनः क्लिष्टभाषणम्।  
*स्था० १८९।*

**परिदेवणया**— परिदेवनता-पुनः पुनः क्लिष्टभाषणता।  
*भग० ९२६।*

**परिदेविय**— परिदेवितः-विलपितः। *प्रश्न० २०।*

**परिद्युनः**— परिपेलवः-निःसारः। *आचा० ३५।*

**परिधानीय**— शृङ्खलकम्। *जम्बू० २७५।*

**परिनिष्ठित**— परिन्नाय-परिज्ञातः परिनिष्ठितः-  
अप्रतिष्ठितो वा। *व्यव० ३९० आ।* यथायोगं  
विधिर्यतनया वा सम्यक् परिज्ञातः-प्रतिष्ठितः। *व्यव० ३९० आ।*

**परिनिष्ठिय**— परिनिष्ठितः कृतः। *ओघ० १९९।*

**परिनिर्वाप्यवाचना**— परीति सर्वप्रकारं निर्वापयतो निरो  
निर्दग्धादिषु भृशार्थस्यापि दर्शनात् भृशं गमयतः-  
पूर्वदत्तालाप-कादि सर्वात्मना स्वात्मनि  
परिणमयतः शिष्यस्य सूत्रगताशेषविशेषग्रहणकालं  
प्रतीक्ष्य शक्यनुरूपप्रदानेन प्रयोजकत्व-मनुभूय  
परिनिर्वाप्य वाचना-सूत्रप्रदानम्। *उत्त० ३९।*

**परिनिव्वाइ**— स एव तेषां कर्मपुद्गलानामनुसमयं  
यथायथा क्षयमाप्नोति तथा शीतीभवन् परिनिर्वातीति।  
*भग० ३४।*

**परिनिव्वाइस्सति**— परिनिर्वास्यति-  
कर्मकृतविकारविरहाच्छीती भविष्यति। *सम० ७।*

**परिनिव्वाण**— परि-समन्तान्निर्वाणं-  
सकलकर्मकृतविकारनि-राकरणतः- स्वस्थीभवनं  
परिनिर्वाणम्। *स्था० २५।* परि-निवृत्तिः-परिनिर्वाणं  
आनन्दसुखावाप्तिः। *सूत्र० ३४१।* परि-निर्वाणं-सुखम्।  
*आचा० ७१।*

**परिनिव्वाणवत्तिय**— परिनिर्वाणमुपरतिर्मरणं,  
तत्प्रत्ययोनिमित्तं यस्य स परिनिर्वाणपत्ययः  
मृतकपरिष्ठापना कायोत्सर्गः। *ज्ञाता० ७७, १९८।*

**परिनिव्वाति**— परिनिर्वाति सर्वथा सिद्धिं प्राप्नुवति।

*दशवै० ११९।*

**परिनिव्वायति**— परिनिर्वाति कर्मदावानलोपशमेन। *उत्त० १७२।* परि-समन्तात् निर्वाति, सर्वदुःखामन्तं करोति।  
*आव० ७६१।*

**परिनिव्वुओ**— परिनिर्वृतः-क्रोधादिज्वालानिर्वाणात्।  
*आचा० १५०।*

**परिनिव्वुड**— परिनिर्वृतः-रागद्वेषविरहाच्छीतीभूतः। *सूत्र० ९४।* परिनिर्वृतः-कर्मकृतविकारविरहात् स्वस्थीभूतः।  
*स्था० ३६। भग० १११।* स्वास्थ्यातिरेकात्। *ज्ञाता० १०३।*

**परिनिव्वुडा**— जाइ जरामरणरोगादीहिं सव्वप्पगारं णति  
विप्प-मुक्का। *दशवै० १२ आ।*

**परिन्न**— परिज्ञा-भक्तप्रत्याख्यानम्। *बृह० ५ अ।*

**परिन्नचारि**— परिज्ञानं परिज्ञा-सदसद्विवेकस्तया चरितुं  
शील-मस्येति-परिज्ञाचारी ज्ञानपूर्व क्रियाकारी। *आचा० ४३१।*

**परिन्ना**— परिज्ञा वस्तुस्वरूपस्य ज्ञानं-तत्पूर्वकं च  
प्रत्याख्या-नम्। *स्था० ३१७।* परिज्ञा-ज्ञानपूर्वकं  
प्रत्याख्यानम्। *स्था० ४४४।* परिण्णा-परिज्ञा-  
प्रत्याख्यानम्। *ओघ० १९९।*

**परिन्नाविवेग**— परिज्ञाविवेकः परिज्ञानविशिष्टता,  
कस्यचित् कोऽप्यध्यवसायः संसारवैचित्र्यहेतुः। *आचा० २११।*

**परिपग**— विपाकः। *व्यव० २० आ।*

**परिपच्छति**— पर्यवश्यति। *उ० मा० गा० १३।*

**परिपट्टगा**— वस्त्रपरावर्तं गृह्णन्ति जे ते परियट्टगा,  
आभरण-मंडयं। *निशी० २२७ अ।*

**परिपडइ**— परिपतति-तिर्यग् निपतति। *जीवा० २४८।*

**परिपडति**— परिपतति तिर्यग् निपतति। *जम्बू० ४१९।*

**परिपिंडित**— अव्यवच्छिन्नं करचरणं वचनकरणं वा  
यस्य। *बृह० ११ आ।*

**परिपिंडिय**— परिपिण्डितं-प्रभूतानेकवन्दनेन वन्दते  
आवर्तान् व्यञ्जनाभिलाषान् वा व्यवच्छिन्नान् कुर्वन्,  
कृतिकर्मणि चतुर्थः दोषः। *आव० ५४३।*

**परिपिरिय**— कोकिलपुटकावनद्धमुखो वाद्यविशेषः। *भग० २१६।*

**परिपुण्ण**— परिपूर्ण-संभिन्नम्। *प्रज्ञा० ५४१।*

**परिपूणग-** परिपूणकः-घृतपूर्णक्षीरकगालनकं चिटिकावासो वा। *आव० १०२।* परिपूर्णकः-येन घृतपूर्णयोग्यं पानं गल्यते। *बृह० ५५अ।*

**परिपूय-** परिपूतं-वस्त्रेण गालितम्। *औप० ९४।*

**परिपूर्णन्द्रियता-** अनुपहतचक्षुरादिकरणता। *उत्त० ३९।*

**परिपेरंत-** पर्यन्तेषु परितः। *आव० २१७।* परितः पर्यन्ते। *आव० २१९। ओघ० १८०।*

**परिपेलवरसः-** मन्दानुभावः। *भग० ३५।*

**परिफलु-** निस्सारम्। *अनुयो० २६१।*

**परिफलुवचसः-** परित्राजकादयः। *आचा० ४७।*

**परिभ्रष्ट-** परिभ्रष्टः। *आव० ४२२।*

**परिभ्रमति-** परिभ्राम्यति। *आव० २९३।*

**परिभ्रुसित-** बुभुक्षितः। *निशी० १५१आ।*

**परिभ्रजमान-** परिभ्रज्यमानः। *आव० ८१४।*

**परिभ्रुया-** परिभ्रुष्टा। *आव० ४२९।*

**परिभव-** खिंसना। *ओघ० २१५।* परिभवः-विधेरकरणम्। *आव० ७५९।*

**परिभवणिज्जे-** परिभवनीयोऽनभ्युत्थानादिभिः। *जाता० ९४।*

**परिभवह-** परिभवः समस्तपूर्वोक्तपदाकरणेन। *भग० २१९।*

**परिभाइज्जमाणं-** परिभ्रज्यमानं-विभ्रज्यमानं-स्तोकं स्तोक-मन्येभ्यो दीयमानम्। *आचा० ३३७।*

**परिभाइत्ता-** परिभाज्य-विभागीकृत्य। *आचा० ४०१।*

**परिभाइयपुव्व-** पूर्वमेवास्माभिरियं भातृव्यादेः परिकल्पितेत्ये-वंभूता भवेत्। *आचा० ३६९।*

**परिभाएउं-** परिभाजयितुं दायादादीनां परिभाजने तत्परिणामं दन्तवन्तौ। *जाता० ३९।*

**परिभाएज्जमाण-** पार्श्ववर्तिभ्यो मनाक् मनाक् दीयमानं परि-भाज्यमानम्। *जम्बू० ३६।* परिभ्रज्यमानं-पार्श्ववर्तिभ्यो मनाक् मनाक् दीयमानम्। *जीवा० १९२।*

**परिभाएत्ता-** दातव्यं विभ्रज्य, दातव्यद्रव्यात्किञ्चिदंशं गृहीत्वे-त्यर्थः। *आचा० ३५५।*

**परिभाएह-** परिभ्रजध्वं विभ्रज्य। *आचा० ३३९।*

**परिभाजयितुं-** दायादादीनां परिभाजने तत्परिमाणं दन्तवन्तौ। *जाता० ४४।*

**परिभामिया-** परिभ्रामिताः कृतप्रभाभंशाः। *जाता० २७।*

**परिभायंतियं-** परिभाजयन्तिकां-पर्वदिने स्वजनगृहेषु खण्ड-खाधाद्यैः परिभाजनकारिकां महानसे नियुक्ता। *जाता० ११७।*

**परिभावणाओ-** आभाव्यार्थपरिहारेणन्यविक्रयाः। *औप० १०३।*

**परिभावितं-** विचारितम्। *नन्दी० १५२।*

**परिभावेमाण-** परिभावयन् ददत्। *भग० १६४।*

**परिभाव्य-** विचार्य। *नन्दी० १६७।*

**परिभाषा-** लोकन्यायः। *आव० ४८४, २५७।*

**परिभास-** परिभाषणं परिभाषा अपराधिनं प्रति कोपाविष्कारेण मा यासीति अभिधानम्। *स्था० ३९९।*

**परिभासणा-** परिभाषणा-भरतकाले दण्डनीतिः। *जम्बू० १३४।* परिभाषणा-परिभाषणं परिभाषा-कोपाविष्करणेन मा यास्यसीत्यपराधिनोऽभिधानम्। *आव० ११४।*

**परिभासी-** परिभाषी पराभवकारी। *आव० ६५४।*

**परिभासेइ-** परिभाषते-निन्दति। *सूत्र० ४२५।*

**परिभुंजय-** परिभोजनता-अवस्थानम्। *सम० ४५।*

**परिभुंजमाण-** परिभुज्यमानं-परिभोगायोपयुज्यमानम्। *जम्बू० ३६।*

**परिभुंजेमाण-** भोज्यं भुञ्जानः-परिभुञ्जानः। *भग० १६४।*

**परिभुङ्क्ते-** आसेवते। *स्था० ३००।*

**परिभुज्जइ-** परिभुज्यते बध्यते छोड्यते च। *पिण्ड० १०७।*

**परिभुज्जति-** कम्मं ण कारविज्जति। *निशी० १०६अ।*

**परिभुज्जमाणं-** परिभुज्यमानं परिभोगायोपयुज्यमानम्। *जीव० १९२।*

**परिभुत्तं-** परिभुक्तम्। *आचा० ३२५।*

**परिभोग-** परिभोगः- उपयोगः। *पिण्ड० २०।* परिभोगः-पुनः पुनर्भोगः बहिर्भोगो वा। *आव० ८२८।* तेन कार्यकारणमि-त्यर्थः। *निशी० १३०आ।* परिभोगः-पुनःपुनर्भोगः। *भग० २९७।*

**परिभोगपरिहरण-** यत् सौत्रिककल्पादिपरिभुङ्क्ते प्रावृणोति। *व्यव० ४५अ।*

**परिभोगेसणा-** परिभोगः-आसेवनं तद्विषयैषणा परिभोगैषणा। *उत्त० ५१६।*

**परिभ्रष्टः-** व्यपगतः। *जीवा० १०३।*

**परिमंडल-** परिमंडलं-वृत्तभावः। *औप० ६७।* पारिमाण्डल्यं

वृत्तत्वम्। जम्बू० ३९७। वृत्तम्। प्रश्न० ७५। परिमण्डलः  
संस्थानविशेषः। प्रज्ञा० २४२। षट्संस्थाने प्रथमः। भग०  
८५८।

**परिमंडिया-** परिमण्डिका-धात्रीविशेषः। ज्ञाता० ४१।

**परिमण्डलसण्ठाणपरिणया-** परिमण्डलसंस्थानपरिणता  
वल-यवत्। प्रज्ञा० ११।

**परिमद्वणं-** परिमर्दनं-सर्वतः शरीरमलनम्। प्रश्न० १३७।  
परिमर्दनं-पिष्टादिमलनमात्रम्। स्था० २४७।

**परिमद्वा-** पुणो पुणो सा संवाहणा। निशी० ११६ आ।  
अणेगसो संबाधेति सा। निशी० १८८ आ।

**परिमाण-** परिमाणं-नियमनम्। स्था० २९१।

**परिमाणकड-** दशधाप्रत्याख्याने सप्तमम्।  
परिमाणसंख्यानं दत्तिकवलगृहभिक्षादीनां कृतं  
यस्मिंस्तत्परिमाणकृतम्। स्था० ४९८। परिमाणकृतं-  
दत्त्यादिकृतपरिमाणम्। आव० ८४०।

**परिमाणकय-** दत्त्यादिकृतपरिमाणम्। भग० २९६।

**परिमासा-** परिमर्शो जलधिजलस्पर्शः। ज्ञाता० १५७।

**परिमितपिंडवाय-** परिमितपिंडपातः-अर्द्धपोषादिलाभः।  
औप० ३९।

**परिमितपिंडवाविते-** परिमितो-द्रव्यादिपरिमाणतः-  
पिंडपातो-भक्तादिलाभो यस्यास्ति स  
परिमितपिंडपातिकः। स्था० २९८।

**परिमियपिंडवाइय-** परिमितपिंडपातिकः  
परिमितगृहप्रवेशा-दिना वृत्तिसङ्क्षेपवान्। प्रश्न० १०६।

**परिमोस-** परिमोषः। उत्त० २१४।

**परिवंचिऊणं-** परीत्य। आव० १९६।

**परियंतजगं-** पर्यन्तयुगं कलियुगम्। प्रश्न० ५१।

**परियंति-** पर्यटन्ति। उत्त० ५५३।

**परियंदा-** रमयति क्रीडयति उल्लापयति वा। आव० ८२४।

**परियंदिज्जमाण-** स्तूयमानः। राज० १४८।

**परिय-** पर्यायः द्वारम्। सूत्र० ५।

**परियच्छिज्जइ-** परीक्ष्यते परिजायते। आव० ६२८।

**परियट्टं-** परिवर्तनम्। विपा० ३७।

**परियट्टइ-** पर्यटति पौनःपुन्येन भ्रमति। भग० ९५।

**परियट्टण-** पूर्वाधीतस्यैव  
सूत्रादेरविस्मरणनिजरार्थमभ्यासः परिवर्तनम्। स्था०  
१९०।

**परियट्टणा-** परिवर्तना सूत्रस्य गुणनम्। प्रश्न० १२९।

परि-वर्तना-प्रच्छन्नाविशोधितस्य सूत्रस्य मा  
भूद्विस्मरणं इति सूत्रस्य गुणनम्। स्था० ३४९।  
परावर्तना-गणनम्। उत्त० ५८४।

**परियट्टिउं-** परिकर्षयितुं, परिवर्द्धयितुं वा  
परिपालयितुमिति। प्रश्न० १५३।

**परियट्टिए-** परिवर्तितं साधुनिमित्तं कृतपरावर्तं, दशम  
उदग-मदोषः। पिण्ड० ३४।

**परियट्टिय-** अप्पणिज्जं देति परसंतियं गेण्हावेति त्ति  
परिय-ट्टियं। निशी० २०५ आ।

**परियट्टियलावण्णं-** परिवर्तितं कालपरिणत्याऽन्यथाकृतं  
लाव-ण्य-अभिरामगुणात्मकमस्येति  
परिवर्तितलावण्यम्। उत्त० ३३४।

**परियट्टेइ-** परिवर्तयति-गुणयति। ओघ० १९९।

**परियडति-** सातत्येन पर्यटति। उत्त० २९६।

**परियण-** परिजनः दासादिः। भग० १६३। परिजनः-  
परिवर्गः। उत्त० ३०७।

**परियणादिकं-** जेण दोसा समिज्जंति तं च परियणादिकं।  
निशी० ९९ आ।

**परियत्तंति-** परियट्टंति य परिवर्तमाना अतिक्रामन्ति।  
उत्त० ४७६।

**परियत्त-** संभावना। बृह० १२ आ।

**परियत्तणं-** इयरदिसीकरणं। निशी० २११ आ।

**परियत्ते-** परावृत्तमधोमुखं स्थितम्। ओघ० १६१।  
परिवर्तिते अधोमुखीकृते। ओघ० १६८।

**परियत्तेति-** अधोदेशस्य तथैव पुनःस्थापनेन  
परिवर्तयति। ज्ञाता० ९४।

**परियर-** परिकरः-कवचः। प्रश्न० ४७। परिकरः। उत्त०  
२१६।

**परियरबंध-** परिकरबन्धः-विशिष्टनेपथ्यरचना। अनुयो०  
१४३।

**परियल्ल-** पर्यटनः। निशी० १८५ आ। परावर्तकः।  
वेष्टनम्। ओघ० २१४।

**परियस्सअ-** परिपार्श्वतः। भग० ६३०।

**परियाइणया-** पर्यादानता पर्यादानं-  
यथायोगमङ्गप्रत्यङ्गैर्लोमा-हारादिना समन्ततः  
पुद्गलादानं तद्भावः। प्रज्ञा० ५४४।

**परियाइत्त-** पर्यादाय-परिगृह्य। भग० १८८।  
**परियाइय-** पर्यायमतीताः पर्यायातीताः पर्यात्ता वा  
 सामस्त्य-गृहीताः कर्मपुद्गलवत्। स्था० ६४। पर्यापनं-  
 अङ्गप्रत्यङ्गैः समन्तादापानम्। भग० ६०४। पर्याप्तम्।  
 राज० ११३।  
**परियाइयाइ-** पर्याप्तानि जीवेन सर्वावयवैरात्तानि  
 तद्रसादान-द्वारेण। भग० ५६९।  
**परियाइयकंडकलावा-** विचित्रकाण्डकलापयोगात्  
 पर्यात्तका-ण्डकलापः। जीवा० २५९।  
**परियाइयणय-** पर्यादानमङ्गप्रत्यङ्गैः  
 समन्तात्पा(दादा)नमि-त्यर्थः। सम० १६४।  
**परियाए-** पर्यायः अवस्था। भग० ६७३।  
**परियाएति-** पर्यादत्ते। भग० १५५।  
**परियागं-** पर्यायान् विचित्रपरिणामान्। स्था० ४६६।  
**परियागते-** पर्यायः प्रसवकालक्रमेणागतः पर्यायागतः।  
 जाता० ९१।  
**परियागयं-** पर्यागतं। प्रजा० ३२८। पर्यायागतः-पर्यायगतः  
 वा सर्वनिष्पन्नतां गतः। जाता० ११६।  
**परियागवत्थणा-** पञ्जोसवणा। जम्हा  
 पञ्जोसवणादिवसे पव्वाज्जापरियागो व्यपदिश्यते-  
 व्यवस्थाप्यते संखा एत्तियो वरिसा मम  
 उवढ्वाविस्सत्ति तम्हा परियागवत्थवण्णा। निशी० ३३६  
 आ।  
**परियाणति-** परिजानति-अनुमन्यते। राज० ४८।  
**परियाणाति-** परिजानाति-प्रत्यभिजानाति। जाता० ३४।  
**परियाणामि-** जपरिजया परिजाय प्रत्याख्यानपरिजया  
 प्रत्या-ख्यामि प्रतिजानामि। आव० ७६१।  
**परियाणिया-** परियायते-गम्यते यैस्तानि परियानानि  
 तान्येव परियानिकानि परियानं वा-गमनं प्रयोजनं येषां  
 तानि परि-यानिकानि  
 यानकारकाभियोगिकपालकादिदेवकृतानि। स्था० ४४०।  
**परियादिया-** विवक्षितं पर्यायमतीताः पर्यायातीताः  
 पर्यात्ता वा सामस्त्यगृहीता कर्मपुद्गलवत्। स्था० ६३।  
**परियानं-** तिर्यग्लोकादिवतरणादि। स्था० १४६।  
 देशान्तर-गमनम्। स्था० ५२८।  
 विविधव्यतिकरपरिगमनम्। भग० ६६१।  
**परियायंतकरभूमी-** पर्यायः तीर्थकरस्य

केवलित्वकालस्तमा-श्रीत्यान्तकरभूमिर्या सा। जाता०  
 १५४।  
**परियाय-** पर्यायः अवस्था प्रव्रज्यादिलक्षणा। स्था० २०७।  
 पर्यायः-श्रामण्यः। आचा० २४३। पर्यायः-प्रव्रज्याप्रति-  
 पत्तिलक्षण। आव० २६९। पर्यायः-प्रव्रज्या सम्यक्  
 समितया वा पर्यायः। आचा० २०२।  
**परियायइ-** पर्याददाति सामस्त्येनोपादत्ते  
 निधत्तादिकरोति। भग० २९१।  
**परियार-** परिचारः-प्रवीचारः। प्रजा० ५४९। परिवारः-स्व-  
 कपरिवारः। भग० ५०६। परिचारः-वृत्तिः खड्गादिकोशो  
 वा। प्रश्न० १३।  
**परियारग-** परिचरति सेवते स्त्रियमिति परिचारकः।  
 स्था० १००।  
**परियारण-** सागारियसेवणं। निशी० ११३अ।  
**परियारणय-** शब्दादिविषयोपभोगः। भग० ६०४।  
**परियारणा-** यथायोगं शब्दादिविषयोपभोगः। प्रजा० ५४४।  
 परिचारणा-देवमैथुनसेवा। स्था० १०६। परिचारणा-  
 कामासेवा। स्था० १७३। आसेवना। आचा० ३३१।  
**परियारणासद्वं-** पुरिसेणित्थी परिभुज्जमाणा जं सद्वं  
 करेति। निशी० ११२आ।  
**परियारसद्दो-** पुरुषेण स्त्रीभुज्यमानायं शब्दं करोति स  
 परि-यारशब्दः। बृह० ५७अ।  
**परियारिया-** पडिभुज्जमाणि। निशी० १०९आ।  
**परियारेई-** मैथुनं सेवते। स्था० ६२। परिचारयति-परि-  
 भुङ्क्ते। भग० १३२।  
**परियारेमाणे-** परिचारयन्-कामक्रीडां कुर्वन्। भग० ५७६।  
**परियाल-** परिवारः। भग० १६३।  
**परियावज्जण-** पर्यापद्यते-कोथमायाति। पिण्ड० ९०।  
 पर्या-पदनं पर्यापत्तिरासेवेतियावत्। स्था० १७४।  
**परियावज्जिज्जा-** पर्यापद्येरन्-भवेयुः। आचा० ४०१।  
**परियावज्जेज्ज-** पर्यापद्येत जलरूपतया परिणमेत्।  
 अनुयो० १६२। पर्यापद्येत-विनश्येत्। भग० २३३।  
**परियावण-** परितापः-पीडाकरणम्। प्रजा० ४३५।  
**परियावणियं-** परियापनिका च कालान्तरं यावत्  
 स्थितिरित्यु-त्थानपरियापनिकं च तत्परिकथयतीति।  
 जाता० १८९।  
**परियावणिया-** परितापनं परितापः-पीडाकरणमित्यर्थः,

तस्मिन् भवा तेन वा निर्वृत्ता परितापनमेव वा  
 परितापनिकी। चतुर्थी क्रिया। प्रज्ञा० ४३५।  
**परियावण्णं**— पर्यापन्नम्। आव० ७४२। पर्यापन्नम्। आव०  
 ७४३। पर्यापन्न-विवर्णी भूतम्। व्यव० २४६ आ। जहा  
 रुहिरं चेव पूयपरिणामेन ठियं। निशी० ७२ आ। परि-  
 ष्ठापनम्। बृह० ९४ आ।  
**परियावन्नं**— उववासिगमादी आवलिया तेसिं भोतिगादि  
 आव-लिया एय पुच्छिरुण परिद्वावणाए गतो एतदेव  
 परियावन्नं। निशी० १४ आ। विस्मृतं-पर्यावन्नं। बृह०  
 ४७ अ। पर्यापन्नं-लब्धम्। आचा० ३५२। पर्यायापन्नः-  
 सूक्ष्मपर्याय-मापन्नः-भावसूक्ष्मः। दशवै० १२२।  
**परियावन्नग**— पर्यापन्नः-व्यापिनः। प्रज्ञा० ७४।  
**परियावसह**— पव्वज्जापरियाए द्विता तेसिं आवसहो  
 परिया-वसहो। निशी० १८३ आ।  
**परियावह**— पर्यावसथः-मठः। आचा० ३६५। पर्यावसथः-  
 भिक्षुकादिमठः। आचा० ३४८।  
**परियावाए**— परिवादाय दस्युरयं पिशुनो वेत्येवं  
 मर्मोदघट्टनाय। आचा० १६३।  
**परियाविज्ज**— परितापयेत्-पीडामुत्पादयेत्। आचा० ४२८।  
**परियाविज्जति**— परिताप्यते। आव० ३७१। पर्यापद्यते।  
 आव० ४००।  
**परियाविया**— परिताविया-पीडिता। ७६६।  
**परियास**— पर्यासः-परिक्षेपः, परिभ्रमणं वा। सूत्र० २२१।  
**परिरओ**— परिरयः-परिधिः। उत्त० ६८५।  
**परिरब्भमाण**— रूध्यमानः। आव० ८१५।  
**परिरय**— परिभ्रमणम्। बृह० १५९ आ। त्रीन्वारान् भ्रमणम्  
 । बृह० १८७ आ। परिरयः-परिधिः। सम० ११४।  
 मार्गान्तरेण गमनम्। बृह० ६४ अ। परिरयः-परिक्षेपः।  
 जम्बू० २१। परिरयः-भ्रमणम्। ओघ० २०। परिरयः-  
 भ्रामड्यः। ओघ० ५९। परिरयः-गिरिसरित्परिरयः। परि-  
 हरणायाः चतुर्थी भेदः। आव० ५५२। गिर्यादेः। ओघ० २०।  
**परिरयवुद्धी**— परिरयवृद्धिः। सूर्य० ३८।  
**परिलिंतणिद्धो**— परिलीयमानगृद्धः। प्रश्न० ५०।  
**परिलित**— परिलीयमाना अन्तत आगत्य लयं यान्तः।  
 ज्ञाता० ५। परिलितः परिलीयमानः-संश्लिष्यतः।  
 ज्ञाता० २७।  
**परिली**— गुच्छाविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

**परिल्लं**— चरमम्। आव० ६०९।  
**परिवंदण**— परिवन्दनं-संस्तवः-प्रशंसा। आचा० २६। परिव-  
 न्दनं-परिसंस्तवः। आचा० १६९।  
**परिवच्छिय**— परिक्षिप्तः-परिगृहीतः। ज्ञाता० २२१।  
 परिप-क्षितः-परिगृहीतः। ३१७।  
**परिवज्जियाण**— परिवर्ज्यापमानं अवगणय्य। आचा०  
 ३०६।  
**परिवट्टणं**— परिवर्तनं-पुनर्वामपार्श्वेनैव वर्तनम्। आव०  
 ५७४। परिवर्तनं-द्विगुणत्रिगुणादिभेदभिन्नम्। आचा०  
 १००। परिवर्तनं-पुनःपुनर्भवनम्। प्रश्न० २२।  
**परिवट्टणा**— परिवर्तना-परिवर्तनं, अभ्यसनं,  
 गुणनमिति वा। दशवै० ३२।  
**परिवट्टा**— परमाणूनां मीलनानि। भग० ५६८।  
**परिवट्टेति**— पुणो पुणो परिवट्टेति। निशी० ११६ आ।  
**परिवत्थ**— निर्णयः। बृह० ३ आ।  
**परिवत्थिय**— परिपक्षितं-परिगृहीतं-परिवृत्तम्। औप० ६२।  
**परिवत्थुणिद्दसो**— भट्टं तं चेव भणति तुमं जातिहीनो।  
 निशी० २७७ आ।  
**परिवयंत**— परिवदन्-निन्दन्। प्रश्न० ६४।  
**परिवयति**— परिवदति-परि-समन्ताद्वदति-यथाऽयं न  
 भ्रियते नापि मञ्चकं ददाति, यदि वा परिवदति-  
 परिभवतीत्युक्तं भवति। आचा० १०५। निन्दति,  
 अवगायति परिभवति। आचा० १०५।  
**परिवसंति**— । स्था० २३०।  
**परिवसइ**— परिवासयति-आक्रोशति। आव० ४२८।  
**परिवसणा**— जम्हा एगखेत्ते चत्तारिमासा परिवसंति  
 तम्हा परिवसणा। निशी० ३३६ आ।  
**परिवहइ**— सर्वतो व्यथते-कदर्थयति। भग० १६६।  
**परिवाइणि**— परिवादिनी-सप्ततन्त्री वीणा। जम्बू० १०१।  
**परिवाइणी**— परिवादिनी-सप्ततन्त्री वीणा। जीवा० २६६।  
**परिवाओ**— परिवादः-काक्वा परदोषापादनम्। सूत्र० २६३।  
**परिवाग**— परिपाकः-परिपूर्णः पाकः। प्रज्ञा० ३६५।  
**परिवाडी**— परिपाटी-गृहपंक्तिः। उत्त० ५६। परिपाटिः-  
 पद्धतिः। सम० ४१। परिपाटिः-पद्धतिः। बृह० ६ अ।  
**परिवाद**— अयसो-अगुणकित्तणं। निशी० २७९ अ।  
**परिवादिनी**— सप्ततन्त्री-वीणा। राज० ५०।  
**परिवाय**— परिवादः-निन्दा। औप० १०६।

**परिवायग-** परिव्राजकः-पापवर्जकः। दशवै० २६२। निशी० १८६ अ।  
**परिवार-** परिवारः-दासीकर्मकरादिकः परिकरो वा, गृहादेवृ-त्त्यादिकः। सूत्र० ३०६। कोशः। सूत्र० २७९।  
**परिवारण-** निराकरणम्। प्रश्न० २२।  
**परिवारणा-** परिवारकरणम्, परिवारस्थापनम्। जम्बू० ३२८।  
**परिवारिण-** परिवारः-परिकरः सञ्जातोऽस्येति परिवारितः। उत्त० ३५१।  
**परिवारियं-** परिवारितं-समन्ततो वेष्टितम्। जीवा० १६०।  
**परिवाविय-** द्विस्त्रिर्वा उत्पाट्य स्थानान्तरारोपणतः परिवपन-वती शालिकृषिवत्। स्था० २७६।  
**परिवुसिए-** पर्युषितः-संयमे उद्युक्त विहारी। अन्तप्रान्तभोजी। आचा० २४२। पर्युषितः। आचा० ३७६। पर्युषितः-संयमे व्यवस्थितः। आचा० २८०। पर्युषितः-व्यवस्थित इति। आचा० २४४।  
**परिवुसे-** पर्युषिते, वसे। निशी० २७४ अ।  
**परिवूह-** सप्तचत्वारिंशततमकला। ज्ञाता० ३८।  
**परिवेढिओ-** सव्वदिसि ठितेसु दिसि विदिसासु विच्छिण्णठि-तेसु परिवेष्टितः, दुग्गादिसु पंतीसु समंता परिद्वियासु परिवेष्टितः। निशी० ४६ आ।  
**परिवेढिय-** पुरतो पिड्वतो पासीता ठिच्चा। निशी० १८४ आ।  
**परिवेसंतिया-** परिवेषयन्तिका-भोजनपरिवेषणकारिका। ज्ञाता० ११७।  
**परिवेसति-** परिवेशयति-भोजयति। ज्ञाता० ८६।  
**परिव्राजका-** चरगा। निशी० ३१ अ।  
**परिव्वाओ-** सव्वसो पावं परिवज्जंतो। दशवै० ३३ अ।  
**परिव्वायए-** परिव्राजकः। ज्ञाता० १०५। परिव्राजकः-कपिलमुनिसूनुः। प्रज्ञा० ४०५।  
**परिव्वायगा-** गेरुआ। निशी० ९८ अ।  
**परिशाटकरणं-** करणस्य द्वितीयभेदः। आव० ४५८।  
**परिशिल्पमाना-** अभ्यस्यमाना। नन्दी० १०७।  
**परिषा-** परिषत्-सदेवमनुजासुरा सभा। उत्त० ५१२।  
**परिसंकमाण-** परिशङ्कमानः-अपायं विगणयन्। उत्त० २१७।  
**परिसंखाय-** परिसङ्ख्याय-सर्वैः प्रकारैः ज्ञात्वा। दशवै०

२९२।  
**परिसंठिय-** परिस्थित-स्वच्छोभूतम्। ओघ० १८४।  
**परिसंता-** पाहुणगादि। निशी० ७३ आ।  
**परिसक्किर-** परिष्वष्टितुं शीलं येषां ते तथा। ज्ञाता० २६।  
**परिसडइ-** परिशटति-उपयुज्यते। आचा० ३५२।  
**परिसडिय-** परिसटितः-पतितः। ज्ञाता० ११४। परिसटित-कुष्ठाद्युपहताङ्गमिव विध्वस्तम्। प्रश्न० १३४।  
**परिसप्प-** उरसा भुजाभ्यां वा परिसप्पंतीति परिसर्पः। प्रज्ञा० ४५। उरसा भुजाभ्यां वा परिसर्पंतीति परिसर्पः, अहिनकु-लादयः। जीवा० ३८।  
**परिसर-** परिसरः। आव० ३९८। सरभम्। आचा० ३३८।  
**परिसर्प-** षष्ठं क्षुद्रकुष्ठम्। प्रश्न० १६१।  
**परिसर्प-** क्षुद्रकुष्ठे पञ्चमम्। आचा० २३५।  
**परिसा-** परिषद्। सूर्य० २। परिषद्-परिवारविशेषः-यथा मातापितृपुत्रादिका अभ्यन्तरपरिषद् दासीदासमित्रादिका बाह्यपरिषदिति। सम० १२०। परिषत्-परिवारः। स्था० ११७, १२८। पर्षत्-परिवारः। भय० ४६०।  
**परिसाड-** परिशाटः-उज्झनम्। आव० ५७६।  
**परिसाडइत्ता-** परिशाटयित्वा-विनाशयित्वा। प्रज्ञा० ५०३।  
**परिसाडणा-** परिः-समन्ताच्छटतां पृथग् भवतामौदारिकादि-पुद्गलानां यदात्मनस्तान्प्रति तत्तच्छरीरविमोक्षात्मकं प्रयो-जकभवनं सा परिशाटना। उत्त० १९८।  
**परिसाडी-** गच्छतो यत्र धूल्यादि निपतति। ओघ० ३१। कुसातितणसंधारण परिभुज्जमाणे जस्स किंचि परिसडति सो परिसाडी। निशी० १६८। परिशाटी। ओघ० १८२।  
**परिसामंत-** पार्श्वतः। भग० ६०७।  
**परिसामियं-** परिश्यामितः-कृष्णकृतः। ज्ञाता० २७।  
**परिसाविय-** परिस्राव्य-निर्गाल्य। आचा० ३४७।  
**परिसिंचेज्जा-** परिषिञ्चेत्-आद्रीकुर्यात्। उत्त० ९०।  
**परिसिडं-** परिशिष्टं-प्रभूतत्वाद् भूक्तोद्धरितम्। आचा० १२३।  
**परिसित्तग-** उण्होदगेन दहिमद्विया तिव्वगलिज्जंति तं परिस-त्तियं। निशी० २०३ आ।

**परिसित्ति**—परिषिक्तपानकम्। बृह० २५३ आ।

**परिसिल्ल**—सव्वस्स संविग्गासंविग्गस्स परिसनिमित्तं संगर करेति। निशी० २६ आ।

**परिसुक्कमुह**—परिशुष्कं-

विगतनिष्ठीवनतयाऽनार्द्रतामुपगतं मुखमस्येति  
परिशुष्कमुखः। उत्त० ८६।

**परिसेय**—परिषेकः। स्था० ३३९। परिषेकः-दुष्टव्रणाद्युपरि  
जलसिञ्चनम्। पिण्ड० ११।

**परिसेवणापारंची**—प्रतिसेवनापाराञ्चिकः। स्था० १६३।

**परिसोसिय**—परिशोषितः-नीरसीकृतः। ज्ञाता० ६५। परि-  
समन्ताच्छोषितं-अपचितीकृतमांसशोणितं  
कृशीकृतमिति परिशोषितम्। उत्त० ३५८।

**परिस्संत**—परिश्रान्तः। उत्त० २७७। परिश्रान्तः-प्राघूर्ण-  
कादिः। आव० ७४६, आव० ५१३।

**परिस्समं**—परिश्रमम्। आव० २३७।

**परिस्सवति**—कहेति। निशी० १२८ आ।

**परिस्सवा**—परिस्रवाः-कर्मनिर्जरास्पदानि। आचा० १८१।  
परिस्रवाः-निर्जर्कराः। आचा० १८२।

**परिहण**—परिहितं-निवसितम्। ज्ञाता० २१३।

**परिहत्थ**—(देश्यः) परिपूर्णम्। राज० ४९। परिहस्तः-  
दक्षः। प्रश्न० ६२। परिहस्तः-दक्षः। औप० ४७। पूर्णः।  
मरण०।

**परिहरंत**—परिहरन्-प्रतिसेवमानः। ओघ० २१९। इयं साम-  
यिकीपरिभाषा प्रतिसेवनार्थं वर्तते। ओघ० २१९।  
प्रतिसेव-यन्। ओघ० २१९।

**परिहरइ**—करोति। निशी० ८९ आ।

**परिहरणं**—परिरयः। ओघ० २०।

**परिहरणदोस**—परिहरणं-आसेवा स्वदर्शनस्थित्या  
लोकरूढ्या वा अनासेव्यस्य तदेव दोषः परिहरणदोषः,  
अथवा परिहरणं-अनासेवनं समारूढ्या सेव्यस्य  
वस्तुनस्तदेव तस्माद्वा दोषः परिहरणदोषः, अथवा  
वादीनोपन्यस्तस्य दूषणस्य असम्यक्परिहारो  
जात्युत्तरं परिहरणदोषः। स्था० ४९२।

**परिहरणया**—वस्त्रादेः शास्त्रीययाऽऽसेवनया। स्था० ४८९।

**परिहरणा**—आसेवा तयोपध्यादेरकल्पता। स्था० ३२०।  
परिभोगः। आव० ३२५। सर्वप्रकारैर्वर्जना। प्रतिक्रमण  
तृतीय-अष्टभेदभिन्नं प्रतिक्रमणमेव। परिभोगः।

आव० ३२५। परिभोगो। निशी० २३५ आ।

**परिहरणोवघाते**—परिहरणा-आसेवा

तयोपध्यादेरकल्प्यता, तत्रोपधेर्यथा एकाकिना  
हिंडकसाधुना यदासेवितमुपकरणं तदुपहतं भवतीति  
समयव्यवस्था। स्था० ३२०।

**परिहरति**—परिहरति-परिभुञ्जते। दशवै० १९९।

परिभोगपरि-हारेण धारणापरिहारेण परिहरति। दशवै०  
२०२। परिहरति-कुर्वतीत्यर्थः। भग० ६६८। आचरति।  
निशी० १४०।

**परिहरित्तए**—परिहर्तु-आचरितुम्। बृह० ८६ आ। परिहर्तु-  
कर्तुम्। बृह० ३१ आ। परिहर्तु-परिभोक्तुम्। बृह० २०१  
आ।

**परिहरित्तते**—परिभोगः। स्था० १३८। परिहर्तु-परिभोक्तुम्  
। स्था० १३८। परिहर्तु-आसेवेतुम्। स्था० ३३८।

**परिहरिय**—परिवृत्य-निक्षिप्य। उत्त० ३५९।

**परिहरियवं**—परिहर्तव्यं-परिभोक्तव्यम्। प्रश्न० १५६।

**परिहरियव्वं**—परिभोक्तव्यम्। प्रश्न० ११२।

**परिहरे**—परिभुञ्जे। निशी० २३३।

**परिहवंत**—परिभवन्तः पार्श्वस्थादयः। व्यव० ५४ आ।

**परिहविंता**—पासत्थादी। निशी० ९४।

**परिहा**—परिखा उपरि विशाला अधः सङ्कुचिता। जम्बू०  
७६। परिखा-अधःसङ्कीर्णोपरि विस्तीर्णा खातरूपा।  
अनुयो० १५९। खातिया। निशी० ६९ आ।

**परिहाइ**—परिहायइ-परिहीयते। आव० ४४३।

**परिहाई**—परिहीयते। ज्ञाता० १७१।

**परिहाणी**—परिहानीः-सूत्रार्थविस्मरणम्। ओघ० ४८।

**परिहायति**—परिहायते। आव० ११०।

**परिहारंतर**—परिहारान्तरम्। आव० ९७।

**परिहार**—परिहारः-तपोविशेषः। स्था० ३२४। परिहारः-  
तपोविशेषः। आव० ७०। परिहारः-तपोविशेषः, अनेषणी-  
यादेः परित्यागो वा। अनुयो० २२१। परिहारः-पुरीषम्।  
ओघ० २१३। तपोविशेषः। भग० ३५१। परिहारः-  
परिभोगः। भग० ६६८। परिहरणं परिहारः-तपोविशेषः।  
प्रजा० ६४। परिहारः-वर्जनम्। व्यव० ४५ आ। परिहारः-  
लौकिकलोको-त्तरभेदभिन्नः, परिहरणायाः पञ्चमो  
भेदः। आव० ५५२। परिहारः-विशिष्टतपोरूपः। उत्त०  
५६८। परिहारः-स्था-पना। बृह० ७० आ।

धारणापरिभोगरूपम्। बृह० ३१ आ। परिहारः-परीषः।  
 ओघ० १३५ परिहारः-परीषम्। पिण्ड० २०। जो गिरिं नदीं  
 वा परिहरंतो जाति परिहारो। निशी० ८९ आ। परिभोगो।  
 निशी० ११८ आ। परीषम्। बृह० १८१ आ।  
 मासलघुकादि। बृह० १७० अ। वज्जणं-वहणं। निशी०  
 ८५ अ।

**परिहारविशुद्धिकल्पिकः**— साधुभेदविशेषः। भग० ४।

**परिहारविसुद्धि**— परिहारः-तपोविशेषस्तेन विशुद्धं,  
 अथवा परिहारः-अनेषणीयादेः परित्यागो विशेषेण शुद्धो  
 यत्र तत्प-रिहारविशुद्धं तदेव परिहारविशुद्धिकम्।  
 अनुयो० २२१।

**परिहारिकूल**— गुरुगिलाणबालवुद्धआदेसमादियाण  
 जत्थ पाउग्गं लभति ते। निशी० २९४ आ।

**परिहित**— परिहितः-निवसितः। सूर्य० २९२। ज्ञाता० २७।

**परिहिय**— परिहितः-परिहितवान्। प्रज्ञा० ९१।

**परिहिस्सामि**— परिधास्यामि। आचा० २४४।

**पडिहेरगं**— रुद्धयवसेयम्। औप० ५५।

**परित्त**— परिमितः। बृह० ११६। प्रत्येकवनस्पतिकायः।  
 बृह० ७१। परित्तः-प्रत्येकशरीराः। अल्पसंसारी वा  
 आयुष्यः। भग० २५७।

**परीसह**— परीषहाः-क्षुत्पिपासादयः। आव० १३४। परीषहः-  
 परि-समन्तात् स्वहेतुभिरुदीरिता मार्गाच्चयवननिर्जरार्थं  
 साध्वादिभिः सहयत इति। उत्त० ७२। उत्तराध्ययनेषु  
 द्वितीयमध्ययनम्। सम० ६४। परीषहः-उत्तराध्ययनेषु  
 द्वितीयमध्ययनम्। उत्त० ९। परीषहः-क्षुत्पिपासादिः।  
 दशवै० ११९। परिपद्यमाणं-निश्चलचित्ततया  
 धार्यमाणम्। उत्त० ८३। परीषहः-अरतिपरीषहः। भग०  
 ८६। परीषहाः-परीष-हचमूर्माग्यावननिर्जरार्थं  
 परिषोढव्याः परीषहाः। बृह० २१९ अ।

**परीसहप्रभंगुरा**— परीषहप्रभाञ्जिनः, परीषहैः  
 सद्भिर्भङ्गुराः। आचा० २७५।

**परीसहा**— चमत्कारा, पहाविता। निशी० ४३ आ।  
 परीतिसमन्तात् स्वहेतुभिरुदीरितामार्गाच्चयवननिर्जरार्थं  
 साध्वादिभिः सहयन्त इति परीषहाः। भग० ३८९।  
 परीषहा क्षुदादयः। भग० २०१। परीषहा-सम्यग्  
 दर्शनादिमार्गाच्चयव-नार्थं ज्ञानावरणादिकर्मनिर्जरार्थं च  
 परि-समन्तादापतन्तः क्षुत्पिपासादयो

द्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षाः सोढव्या-सहितव्या इत्यर्थः।  
 आव० ६५६।

**परीसहोवसग्ग**— परीषहाः-क्षुधादयस्त एवोपसर्गा-  
 उपसर्जनात्-धर्मभ्रंशनात् परीषहोपसर्गाः, अथवा  
 द्वाविंशतिपरीषहाः तथा उपसर्गाः-दिव्यादयः। भग०  
 १०१।

**परुढपणयं**— परुढप्रणयम्। उत्त० २०७।

**परुण्ण**— परुण्णः। आव० २२५। परुहिता। आव० ३५३।  
 परुदिता। उत्त० ३०२।

**परुवंति**— प्रभेदादिकथनतः-प्ररूपयन्ति। स्था० १३६। एवं  
 “सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणिमोक्षमार्गः”  
 ‘मिथ्यात्वाविरतिप्र-मादकषाययोगाबन्धहेतवः’  
 “स्वरूपभावेन सदसती तत्त्वं-  
 सामान्यविशेषात्क”मित्यादिनाप्रकारेणप्ररूपयन्ति।  
 आचा० १७९।

**परुवइत्ता**— प्ररूप्य प्रभेदतः। स्था० ११९।

**परुवग**— परुपकः मूलकृतस्याख्याता। दशवै० ११४।

**परुवण**— प्ररूपणं-स्वरूपकथनम्। आव० ६१९। प्ररूपणं-  
 प्ररूपणाकारकमध्ययनम्। नन्दी० ५४। स्वरूपकथनम्।  
 निशी० २४ अ।

**परुवणा**— भासा विभासा अर्थ-व्याख्या इत्यर्थः। निशी०  
 २१ आ। प्ररूपणा-एकैकभङ्गनिरूपणम्। बृह० २१७ आ।  
 पन्नवणा। निशी० १७ आ। प्ररूपणा-विस्तारवती  
 व्याख्या। अनुयो० १७६। प्ररूपणा-प्रदर्शना। उत्त० २३०।  
 प्ररूपणा यथास्वं विनियोगः। आचा० ७।

**परुविज्जंति**— नामादीनामेव भेदानां  
 सप्रपञ्चस्वरूपकथनेन पृथग्विभक्ताः ख्याप्यन्ते।  
 स्था० २१२।

**परुवियं**— प्ररूपितं भेदानुभेदकथनेन। प्रश्न० ११३।

**परुविया**— प्ररूपिता-प्रसाधिता। आचा० ५८।

**परुवेति**— प्ररूपयन्ति भेदकथनतः। भग० ९८।

**परुवेइ**— प्रतिसूत्रमर्थकथनेन। भग० ७११। प्ररूपयति उप-  
 पत्तितः। जम्बू० ५४०।

**परुवेज्ज**— उपपत्तिकथनतः। भग० ४३६।

**परुवेति**— प्ररूपयति प्रतिसूत्रमर्थकथनेन। स्था० ५०२।

**परेण परं अत्थि**— परेणापि परमस्ति-तीक्ष्णादपि  
 तीक्ष्णतर-मस्ति। आचा० १७४।

परेव्वं- परतरे। पिण्ड० ८२।

परोक्खं- अक्षस्य-आत्मनो द्रव्येन्द्रियाणि द्रव्यमनश्च  
पुद्गल-मयत्वात् पराणि वर्तन्ते-पृथग्वर्तन्ते इत्यर्थः,  
तेभ्यो यदक्षस्य ज्ञानमुदयते तत्परोक्षम्, परैः-  
इन्द्रियादिभिः-सह उक्षः-सम्बन्धो  
विषयविषयिभावलक्षणो यस्मिन् ज्ञाने न तु साक्षा-  
दात्मनो, धूमादग्निज्ञानमिव तत्परोक्षम्। नन्दी० ७२।  
परोक्षः- न जानाति। बृह० ८१ अ। परोक्षं-  
इन्द्रियमनोव्यवधाने-नात्मनोर्थ प्रत्यात्मसाक्षात्कारी,  
परैरुक्षा-सम्बन्धनं-जन्य-जनकभावलक्षणमस्येति  
परोक्षम्। स्था० ५०।

परोवदेस- परोपदेशः। आव० ८२२।

परोहड- गृहस्य पश्चादङ्गणः। ओघ० १५२।

पर्जन्य- मेघविशेषः। जम्बू० १७३।

पर्यङ्कः- शयनः। दशवै० ९१, २०४, २२८। स्था० २९९।

पर्यङ्का- जिनप्रतिमानामिव या पद्मासनमिति रूढा।

स्था० ३०२।

पश्वन्त- पार्श्वतः। बृह० ३१० अ।

पर्यवगुणे- निर्भजना। आचा० ८६।

पर्यवचरक- अवमचरकः। उत्त० ६०६।

पर्याणं- मिलानम्। औप० ७०। पर्याणम्। जम्बू० ९।

पर्यापत्तिः- समूर्च्छनम्। आचा० ५५।

पर्याय- स्वभावः। स्था० ३७५। पर्यायः। स्था० ३४८।

पर्यायः। स्था० ३४८।

पर्यायगुण- द्रव्यस्यावस्थाविशेषः पर्यायः स एव गुणः

पर्याय-गुणः। आचा० ८६।

पर्यायास्तिकः- नयविशेषः। सम० ४२।

पर्यालोचनं- अनुचिन्तनम्। आव० ५८९।

पर्यालोचयति- ईहते। आव० २६।

पर्याहार- निर्गमः। स्था० २९४।

पर्युपासीनः- उपासनाकारकः। नन्दी० १६७।

पर्युपास्ति- सेवना। प्रज्ञा० ६०।

पर्युषणाकल्पः- नियमवद्वस्तुमारब्धः-न्युनोदरताकरणं  
१ विकृतिनवकपरित्यागः २,  
पीठफलकादिसंस्तारकादान ३ मुच्चारदिमात्रकसग्रहणं  
४, लोचकरणं ५, शैक्षाप्रवाजनं ६, प्राग्गृहीतानां  
भस्मगडगलकादीनां परित्यजनमितरेषां ग्रहणं ७

द्विगुणवर्षोपग्रहोपकरणधरण ८ मभिनवोपकरणाग्रहणं  
९ स क्रोशयोजनात् परतो गमनवर्जन १० मित्यादिकः।

स्था० ३१०।

पर्युषितं- सन्निधिः। दशवै० १९८।

पर्व- ग्रन्थिः। प्रज्ञा० ३६।

पर्वणिः- पौर्णमास्याममावास्यायां वा  
चन्द्रादित्ययोरुपरागं करोति। सम० ३०। पर्वणी-  
कौमुदीप्रभृतिः अधिकरागभूतम्। ज्ञाता० ८१।

पर्वत- चन्द्रगुप्तसहायकः। जम्बू० २६३।

पर्वतविद्रुमर्ग्य- अनेकपर्वतसंघातः। व्यव०।

पर्वमध्य- अन्तरुच्छयम्। आचा० ४०५।

पर्वाणि- अष्टम्यादितिथयः। आव० ८३५।

परशुरामः- जमदग्निपुत्रः। जीवा० १२१।

पलंजी- पलञ्जी-असारधान्यम्। उत्त० २५६।

पलंडु- कन्दविशेषः। उत्त० ६९१। पलाण्डु-कन्दविशेषः।

आव० १०१।

पलंडू- पलण्डूकन्दः, वनस्पतिविशेषः। प्रज्ञा० ३७।

पलंब- विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम० ३८।

प्रलम्बं-तालफलादि। दशवै० १७६। प्रलम्बः-

इषल्लम्बमानः। जम्बू० ११५। प्रलम्बमानाञ्चलं गृहीतं।

ओघ० ११०। प्रलम्बः-आलम्बः। भग० १७५।

त्रिषष्ठीतममहाग्रहः। स्था० ७९। प्रलम्बः-

ईषल्लम्बमानः। प्रश्न० ८४। प्रलम्बः-

एकषष्ठीतममहाग्रहः। जम्बू० ५३५। विषमग्रहणं व

कोणं वा। ओघ० ११०। प्रलम्बः-फलम्। स्था० १८५। प्रल-

म्बयद्विषमग्रहणेन प्रत्युपेक्ष्यमाणवस्त्रकोणानां

लम्बनम्। उत्त० ५४१। प्रलम्बा-आप्रदीपना। सम० १५८।

पलंबजाय- पलंबजातं-फलसामान्यम्। आचा० ३४८।

पलंबमाण- प्रलम्बमानं-झुम्बमानम्। भग० ३१९।

पलंबवणमाला- प्रलम्बो-झुम्बनकं वनमाला-

आभरणविशेषः। प्रलम्बवनमाला। औप० ५०।

पलंवा- फला। निशी० ५२ अ।

पल- कर्षचतुष्टयम्। अनुयो० १५३।

पलप्पमाण- पलप्रमाणः। आव० ४२७।

पलयं- प्रचारम्। दशवै० ४८।

पलल- पललं-तिलक्षोदः। पिण्ड० ७२।

पललिय- प्रललितः-प्रक्रीडितः। ज्ञाता० ६३। प्रललितं-

ललितमेव “हस्तपादाङ्ग” इति श्र्लोकोक्तलक्षणः।

प्रश्न० १४०।

पलवितं- प्रलपितं-अनर्थभाषणम्। प्रश्न० २०।

पलाइय- पलायितं-पलायनं-कुतश्चिन्नाशनम्। दशवै० १४१।

पलाई- राज्यान्तरे गतो भटः। बृह० ८२अ।

पलाण- नष्ठः। ओघ० १७२।

पलादिण- जे भडादिया रण्णो अणापुच्छते  
सपुत्तदारघणादिया अन्नरज्जं गंतुकामो ते पलादिणो।  
निशी० ११अ।

पलायंत- पलायमान। आव० २९७।

पलाय- पलायितः। आव० १९६।

पलायण- पलायनं-कुतश्चिन्नाशनम्। दशवै० १४१।

पलायति- नश्यति। निशी० १०२अ। देशान्तरं गच्छति।  
निशी० ३७अ।

पलालं- प्रकृष्टा लाला यत्र तत्पलालम्। अनुयो० १४१।  
कङ्गवादीनाम्। प्रश्न० १२८।

पलालपुञ्ज- पलालपुञ्जः-मञ्चोपरिव्यवस्थितः। आचा० ३०६, ३०७।

पलालुण्हा- पलालोष्मा। आव० ४१६।

पलाव- प्रलापः-जल्पः। प्रश्न० ७४। प्रलापः-निरर्थकं वचनम्।  
स्था० ४०८। प्रलापः-आलापः। सम० १५७।

पलाविज्जिहिति- प्रप्लाविष्यते। ओघ० २१।

पलावियं- प्लावितम्। आव० ६३०। प्लावितम्। बृह० २०९  
अ।

पलासं- कोमलं। निशी० ११८आ। अष्टमभवनवासी-  
देवस्य चैत्यवृक्षः। स्था० ४८७। वृक्षविशेषः। भग० ८०३।  
पलाशः-वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। भग० १९९, ५११।  
पलाशः-किंशुकः। प्रज्ञा० ३१। पलाशः-मंदरपर्वते दिग्ग-  
स्तिकूटनाम। जम्बू० ३६०। पलाशः-किंशुकः, भगव-  
त्यामैकादशशतके तृतीयोद्देशकः। भग० ५११। पलाशः-  
दलः। ज्ञाता० ९६।

पलिअंक- पर्यङ्कः। जम्बू० ८५। पर्यङ्कः-पद्मासनम्।  
जम्बू० १५८।

पलिअ- पलितं-पाण्डुरः। जम्बू० १६६। कर्म जुगुप्सित-  
मनुष्ठानम्। आचा० २४२।

पलिआमं- जं परियाए कतं परिचायं वा पत्तं तहावि आमं

तं पलिआमं। निशी० १२५आ।

पलिउंगच- प्रतिकुञ्चकः स्वदोषप्रच्छादकतया। उत्त० ६५६।

पलिउंचंति- तत् प्रयोजनानिष्पादन पृष्टाः

सन्तोऽपहनुवते क्व वयमुक्ताः। गता वा तत्र वयं  
नत्वसौ दृष्टेति। उत्त० ५५३।

पलिउंचण- पलिकुञ्चनं-परि-समन्तात् कुञ्चयन्ते-  
वक्रतामा-पायन्ते क्रिया येन मायानुष्ठानेन तत्। माया।  
सूर्य० १७१।

पलिउंचणा- परिकुञ्चनं-अपराधस्य द्रव्यक्षेत्रकालभावानां  
गोपायनमन्यथा सतामन्यथा भणनं परिकुञ्चना  
परिवञ्चना वा। स्था० २००।

पलिउंचणापायच्छित्त- परिकुञ्चनं-अपराधस्य  
द्रव्यक्षेत्रकाल-भावानां गोपायनमन्यथा  
सतामन्यथाभणनं परिकुञ्चना परि-वञ्चना वा  
प्रायश्चित्तम्। स्था० १९९।

पलिउंचयंति- निहनुवते, सदपि

प्रमादस्खलितमाचार्यादिनाऽऽ-लोचनादिकेऽवसरे पृष्टाः  
सन्तो मातृस्थानेनावर्णवादभयान्नि-हनुवते। सूत्र०  
२३३।

पलिउंचिअ- मनोजं गोपित्वा। आचा० ३५५।

पलिउंचुणया- प्रतिकुञ्चनं सरलतया प्रवृत्तस्य वचनस्य  
खण्डनम्। भग० ५७३।

पलिउंचे- मोहनीयस्य एकोनविंशतितमस्थानम्। आव०  
६६१।

पलिउंच्जिय- परि-समन्ताद् योगिकाः परिज्ञानिनः।  
भग० १५०।

पलिओवम- पल्योपमः। अनुयो० १८०। पल्येनोपमा येषु  
तानि पल्योपमानि असङ्ख्यातवर्षकोटाकोटीप्रमाणानि।  
स्था० ८६। पल्यवत्पल्यस्तेनोपमा  
यस्मिंस्तत्पल्योपमम्। स्था० ९०। पल्योपमं-  
कालमानविशेषः। भग० २१०। पल्योपमम्। भग० २७५।  
८८८। पल्येन वक्ष्यमाणस्वरूपे-णोपमा यस्य  
तत्पल्योपमम्। जम्बू० ९२। पल्योपमं-उद्धाराद्धाक्षेत्रभेदै-  
स्त्रिधा, प्रत्येकं बादरसूक्ष्मतया द्वेधा,  
अङ्गुलमानवालसप्ताष्ट-खण्डतदसङ्ख्यखण्डोद्धारात्-  
प्रतिसमयवर्षशतस्पृष्टोत्तर-प्रदेशापहारैः। अनुयो०

१००।

**पलिच्छन्न-** परिच्छन्नः-यथास्वविषयग्रहणं प्रतिनिरुद्धः। आचा० १९३। परिच्छन्नः-परिवारवस्त्रादिलक्षणैः सूत्रार्थो-भयैश्च युक्तः। व्यव० १ अ। प्रतिच्छन्नः-आच्छादितः। ज्ञाता० ९६।

**पलितंमि-** प्रदीप्ते-अत्याकुलीकृते। उत्त० ४५५।

**पलित्त-** पराभग्नः। बृह० ७२ अ। प्रकर्षेण दीप्तः प्रदीप्तः। ज्ञाता० ६१। प्रकर्षेण ज्वलितम्। भग० १२१। प्रदीप्तः। दशवै० ९२। पर्याप्तः-प्रतिपूर्णः। जीवा० २६६। प्रदीप्तम्। आव० ९१।

**पलित्तक-** प्रदीप्तकं-प्रदीपकनम्। प्रश्न० ६०।

**पलित्तजाला-** प्रदीप्तज्वाला। प्रश्न० १४।

**पलित्तनेह-** पर्याप्तः-प्रतिपूर्ण स्नेहः तैलादिरूपो यस्य तत् पर्याप्तस्नेहम्। जीवा० २६६।

**पलित्तपायं-** प्रलिप्तपादम्। आव० १३७।

**पलित्तयं-** प्रदीप्तम्। उत्त० १०२।

**पलिपासग-** बंधणा। निशी० ५९ आ।

**पलिबाहिर-** परि-समन्तात् गुरोरवग्रहात् पुरतः पृष्ठतो वाऽ-स्थानात् सदा कार्यमृते बाह्यः स्याद्। आचा० २१५।

**पलिभंजणं-** पायम्मि पलिभंजणं। निशी० २४५ अ।

**पलिभज्जह-** प्रतिभज्यते। आव० ३०८।

**पलिभाग-** प्रतिभागं-प्रतिबिम्बम्। प्रज्ञा० ३०५। प्रतिभागः-सादृश्यम्। भग० ८९७। प्रतिभागः-सादृश्यम्। प्रज्ञा० ४९१। प्रतिरूपो भागः प्रतिभागः-प्रतिबिम्बम्। आव० ३३८।

**पलिभेओ-** खंडाखंडिकरणं। निशी० २४४ आ।

**पलिमंथ-** पलिमन्थः-कालचणगः। स्था० ३४४। औषधि-विशेषः। प्रज्ञा० २३। पलिमन्थः-दोषविशेषः। ओघ० १७७। पलिमन्थः-विघ्नः। सूत्र० ६४। संजमो मंथिज्जति जेण सो। निशी० १९६ आ। पलिमन्थः-विलोडनं विघातश्च। सूत्र० ४२५। विघ्नः। स्था० ८। परिमन्थः-स्वाध्यायादिकृतिः। उत्त० ५८८। पलिमन्थः-दोषविशेषः। ओघ० ४९। पलिमन्थः-दोषविशेषः। ओघ० १०५।

**पलिमंथए-** बध्नीयात्। उत्त० ३११।

**पलिमंथग-** वृत्तचनकः कालचनकः। भग० २७४। धान्य-

विशेषः। भग० ८०२।

**पलिमंथू-** परिमन्थूः-घातकः। स्था० ३७३।

**पलिमत्ता-** गोभक्खः। व्यव० १२१ अ।

**पलियंक-** गिहिनिसेज्जा। निशी० ६५ अ। अङ्कः। निशी० २५६ अ। पल्यङ्कः-शय्याविशेषः। व्यव० ३७० आ। पर्यङ्कः-मञ्चकादि। सम० ३६। पर्यङ्कः आसन-विशेषः। भग० १९१। पर्यङ्कः-विशिष्टशय्या। भग० २४९। पर्यङ्कः। दशवै० ११७। आसनविशेषः। स्था० २९९।

**पलियंकणिसण्ण-** पल्यङ्कनिषण्णः-पर्यङ्कासननिषण्णः। जीवा० २२८।

**पलियंतं-** पल्योपमान्तं-पल्योपमस्थान्तः मध्ये वर्तते तत् परि-समन्तात् अन्तोऽस्येति पर्यन्तं-सान्तमिति। सूत्र० ५७।

**पलियंतकर-** पर्यन्तं कर्मणा संसारस्य वा करोति तच्छील-श्चेति पर्यन्तकरः। आचा० १७१।

**पलिय-** अनुष्ठानम्। आचा० २५२। पल्योपमम्। आव० ३६। पलितं-कर्मम्। आचा० १८९। पलितं-कर्म। आचा० २०३। कर्मम्। आचा० ३०७।

**पलियत्तणं-** परावृत्तिम्। निशी० २७ अ।

**पलियस्सओ-** परिपार्श्वतः। भग० २६९।

**पलिसप्पइ-** परिसर्पति परि-समन्ताद्गच्छति। भग० ७६३।

**पलिहा-** परिघा-अध उपरि समखातरूपा। औप० ३।

**पलिहोच्छूढ-** पर्यवक्षिप्तः-प्रसारितः। औप० १८।

**पलीणा-** प्रकर्षेण लीनाः लयं-विनाशं गताः प्रलीनाः। व्यव० ४४० आ।

**पलीवणग-** प्रदीपनकः। आव० ७४२। प्रदीपनकं-अग्निः। आव० ८२०।

**पलीवेइ-** प्रदीपयति। आव० ५२।

**पलेइ-** प्रकर्षेण लीयते प्रलीयते-अनेकप्रकारे संसारं बम्भ-मीति। सूत्र० २३५।

**पलेमाण-** प्रलीयमानः। आचा० १८०। प्रलीयमानः-मनोज्ञेन्द्रियार्थेषु पौनःपुण्येनैकेन्द्रियद्वीन्द्रियादिकां जातिं प्रकल्प-यति संसाराविच्छित्तिं विदधतीत्यर्थः। आचा० १८१।

**पलोएंत्-** प्रलोकमानः। आव० १९६।

पलोएति- गृहणति। निशी० १९ आ।  
 पलोक्कड़- प्रलोक्यते-प्रकर्षेण निश्चीयते। भग० २४९।  
 पलीइइ- प्रलोटति-परिवर्तते। भग० १०२। प्रलोट्यते।  
 आव० ६२१।  
 पलोठेति- विप्रतारयति। बृह० ८९ आ।  
 पलोयए- प्रलोक्यते-पर्यालोचयते। आचा० ४२९।  
 पलोयणा- रसवतीए पलिं विसित्ताओ अणाति पलोइउं  
 भणाति इतो इतो य पयत्थाहित्ति एस पलोयणा।  
 निशी० १८५ आ।  
 पल्लंक- पल्यङ्कः। आव० ५७८।  
 पल्लंघणं- प्रकृष्टं लङ्घनं-प्रलिङ्घनम्। भग० ९२५।  
 पौनः-पुन्येनातिक्रमणं प्रलङ्घनम्। औप० ४२।  
 प्रलङ्घनम्। प्रजा० ६०६। प्रलङ्घनं अर्गलादेः। स्था०  
 ४०९। प्रलङ्घनं-सामा-न्येन गमनम्। उत्त० ५११।  
 पल्ल- पल्यं-वंशकटकादिकृतो धान्याधारविशेषः। स्था०  
 १२४। पल्यः-वंशादिमयो धान्याधारविशेषः। भग० २७४।  
 पल्यो-धान्याश्रयविशेषः। जम्बू० ९५। पल्यम्। अनुयो०  
 १८०। पोहं। निशी० १४७ आ। पल्यं-वंशकटका-दिकृतो  
 धान्याधारः। बृह० १६८ आ।  
 पल्लक- पल्लकः-लाटदेशे धान्याधारविशेषः। नन्दी०  
 ८८।  
 पल्लग- पल्यङ्कः-लाटदेशप्रसिद्धो वंशदलेन निर्मापितो  
 धान्याधारकोष्टकः। जम्बू० ३००। पल्लकः-लाटदेशे  
 धान्यालयः। आव० ४१।  
 पल्लच्छिज्जति- प्रस्तीर्यते-प्रच्छादयति। आव० ६२३।  
 पल्लट- पर्वतशिखराद् गण्डशैल इव स्वाश्रयाच्चलितम्।  
 प्रश्न० १३४।  
 पल्लत्थ- पर्यस्तं-निवेशितम्। विपा० ४९।  
 पल्लत्थिया- पर्यास्तिका प्रसिद्धा। उत्त० ८।  
 पल्लय- पल्लकः-लाटदेशे धान्यधामः। आव० ७५।  
 पल्ललं- पल्लवं-नड्वलम्। प्रश्न० १४। पल्लवं-प्रह्लादन-  
 शीलः। भग० २३८।  
 पल्ललए- पल्लवं-आखातं सरांसि। प्रजा० ७२।  
 पल्लव- कोमलं पत्रम्। प्रश्न० ९२। किशलयम्। ज्ञाता०  
 ३६। पल्लवः-प्रह्लादनशीलः। ज्ञाता० ६३। पल्लवः-  
 जातपूर्ण-प्रथमपत्रभावरूपः। जम्बू० ३२४। पल्लवः-  
 अङ्कुशः। सम० ६१। शाखाभङ्गः। आचा० ३४५। पल्लवः-

सञ्जातपरिपूर्ण-प्रथमपत्रभावरूपः। जीवा० २२९।  
 पल्लवग- पर्ययपरिमाणं-अभिधेयादि तद्धर्मसङ्ख्यानं  
 यथा 'परित्ता तसा', पर्ययशब्दस्य 'पल्लव'त्ति निर्देशः,  
 प्राकृत-त्वात् पर्यङ्कः- पल्यङ्कः इत्यादिवदिति, अथवा  
 पल्लवा इव पल्लवाः - अवयवास्तत्परिमाणम्। सम०  
 ११३।  
 पल्लवग्राहिणी- पल्लवमात्रग्राहि। बृह० ५८ आ।  
 पल्लवप्रविभक्तिकं- विंशतितमनाट्यभेदः। जम्बू० ४१७।  
 पल्लावाङ्कुर- प्रवालः। प्रजा० ३१।  
 पल्लि- ग्रामः। बृह० ७२ अ। गामो। निशी० ११५।  
 पल्ली- सन्निवेशः। आव० ५७८। पल्यन्तेऽनया  
 दुष्कृतिवि-धायिनो जना इति, वृक्षगहनाद्याश्रितः  
 प्रान्तजननिवासः। उत्त० ६०५।  
 पल्लीण- प्रलीनः-पश्चात् प्रकर्षेण लीनः। भग० ९२४।  
 पल्लोह- प्रवृत्त-उत्पन्नः। ज्ञाता० २६।  
 पल्लोवम- पल्योपमं-शीर्षपहेलीकैव गणितस्य  
 विषयोऽतः पर-मौपमिकं कालपरिमाणम्। जीवा० ३४५।  
 पल्लहत्थ- पर्यस्तं-अधोमुखतया न्यस्तम्। भग० १८०।  
 स्थापितः। आव० ७०३।  
 पल्लहत्थमुह- पर्यस्तं-अधोमुखतया न्यस्तं मुखम्। भग०  
 १८०।  
 पल्लहत्थिय- पर्यस्तितं-पर्यस्तीकृतं सर्वतः निक्षिप्तम्।  
 ज्ञाता० २१९। भग० १९०। पर्यस्तम्। दशवै० ४४।  
 पल्लहत्थिया- पर्यस्तिका। योगपटः। बृह० २५३ आ।  
 पर्यस्तिका जानुजङ्घोपरिवस्त्रवेष्टनाऽऽत्मिका। उत्त०  
 ५४।  
 पल्लहव- म्लेच्छविशेषः। प्रजा० ५५।  
 पल्लहवदेशज- पल्लहविकः। ज० १९१।  
 पल्लहवि- प्रलहतिः। स्था० २३४। प्रलहतिः-  
 दुष्प्रतिलेखित-दुष्यपञ्चके प्रथमो भेदः। आव० ६५२।  
 पल्लहविण- पल्लहविकः-देशविशेषः। ज्ञाता० ४१।  
 पल्लाओ- क्रोधादिपरितापोपशमात् प्रह्लादितः-  
 आपन्नसुखः। आचा० १५०।  
 पल्लायाणभाव- प्रह्लादनभावः-  
 चित्तप्रसत्तिरूपोऽभिप्रायः। उत्त० ५८४।  
 पल्लोह- पल्लुठं-एकान्तेन विस्मृतम्। व्यव० ७७ आ।  
 पल्लवच- प्रपञ्चः-

पर्याप्तकापर्याप्तकसुभगादिद्वन्द्वविकल्पः। आचा०  
 १७०। प्रपञ्चः-संसारः। सूत्र० १६५। प्रपञ्चः- विस्तारः।  
 प्रश्न० २२। प्रपञ्चः-उपहासवचनम्। बृह० ६० आ।  
 प्रपञ्चः-प्रत्युपेक्षणमनुकरणम्। बृह० १८० अ।  
**पवंचए-** उदघट्टकान्-कुर्वन्ति। ओघ० ८९।  
**पवंचणं-** प्रवञ्चनं-विप्रतारणम्। प्रश्न० १७।  
**पवंचा-** प्रपञ्चतेः-व्यक्तीकरोति प्रपञ्चयति वा,  
 विस्तारयति लेखकासादि या सा प्रपञ्चा, प्रपञ्चयति  
 वा-संसयति आरो-ग्यादिति प्रपञ्चा। स्था० ५१९। इषत्  
 प्रपञ्चा, जन्तोः सप्तमी दशा। दशवै० ८।  
**पवंचेति-** प्रवञ्चयते-मुखमर्कटिकां करोति। उत्त० ५१।  
**पवए-** प्लवकः-उत्प्लवनकारी। भग० ९२८।  
**पवग-** प्लवकः-यो झम्पादिभिर्गर्तादिकमुत्प्लवत्ते  
 गर्तादिलङ्घनकारी, तरति नद्यादिकं यो इति। जम्बू०  
 १२३। प्लवकः-य उत्प्लवते नद्यादिकं वा तरतीति।  
 औप० ३। प्लवकः-य उत्प्लुत्य गर्तादिकं  
 ज्झम्पाभिर्लङ्घयति नद्यादिकं-वा तरति सः। अनुयो०  
 ४६। प्लवकः-य उत्प्लवते नद्यादिकं वा तरति। प्रश्न०  
 १४१। प्रवकः-सुपर्णकुमारः। प्रश्न० १३५।  
**पवगा-** समुद्वादिसु जे तरंति ते पवगा। निशी० २७७।  
**पवइइ-** प्रवर्तते। आव० ५५९।  
**पवडण-** प्रपतनम्। स्था० ३२८। थाणत्थो उड्ढं उप्पइत्ता  
 जो पडइ। निशी० ५२ अ। प्रपतनं-भूमिप्राप्तं सर्वगात्रैर्वा  
 पतनम्। बृह० २२९ आ। पतनं-तिष्ठत एव गच्छतो वा  
 यल्लुडुनम्। प्रजा० ३२९।  
**पवडणता-** प्रपतनता-प्रपतनया वा। स्था० २८०।  
**पवडणया-** प्रपतनता-न च प्रयत्नेन चङ्क्रम्यते तत्र  
 दुःख्यते। आव० ४०५। प्रपतना-वङ्कगतेश्चतुर्थो भेदः।  
 प्रजा० ३२८।  
**पवड्डक-** कटकम्। ओघ० ५२।  
**पवण-** प्लवनं-मनाक् पृथुतरविक्रमगतिगमनम्। जीवा०  
 १२२। प्लवनं-मनाग् विक्रमवद् गमनम्। जम्बू० ३८८।  
 प्लवनं-धावनम्। उत्त० १३५। प्लवने-मनाक् पृथुतर-  
 विक्रमगति गमने। राज० २२।  
**पवण्ण-** प्रपन्नः। उत्त० २२०।  
**पवतणनिहग-** प्रवचनं-आगमं निहनुवते-अलपत्यन्यथा  
 प्ररूपयतीति प्रवचननिहनवः। स्था० ४१०।

**पवति-** प्रयुक्तिं-वार्ताम्। ज्ञाता० २१५।  
**पवत्त-** प्रवृत्तं-उत्क्षेपावस्थीतो विक्रान्तं मनाग्भारेण  
 प्रवर्त-मानम्। जीवा० २४७।  
**पवत्तए-** प्रवृत्तिः निर्गमो यस्य स तथा। जम्बू० २९०।  
**पवत्तण-** प्रवर्तनः-प्रथमप्रारम्भः। बृह० १९९ आ।  
**पवत्तय-** प्रवृत्तकं  
 प्रथमसमारम्भादूर्ध्वमाक्षेपपूर्वकप्रवर्तमानम्। जीवा०  
 १९४।  
**पवति-** प्रवृत्तिः-तपःसंयमयोगेषु यो यत्र योग्यस्तं तत्र  
 प्रव-र्तति। असहं च निवर्तयति गणचिन्तकः  
 प्रवृत्तिः। प्रश्न० १२६। प्रवर्त्ती प्रवर्त्तकः। प्रजा० ३२७।  
**पवतिणी-** पंचविहसंयतीए पढमा। निशी० १३२ आ।  
 प्रवर्त्तिनि-समस्तसाध्वीनां नायका, आचार्यस्थानीया।  
 व्यव० १४१।  
**पवत्तिय-** पवित्रकं-ताम्रमयमङ्गुलीयकम्। ज्ञाता० १०।  
 यथो-चितप्रशस्तयोगेषु साधून् प्रवर्त्तयन्तीत्येवंशीलः।  
 व्यव० १७१ आ। प्रवर्त्तितः-प्रेरितः। सम० ८५।  
 प्रवर्त्तितम्-प्ररूपितम्। उत्त० ४७५।  
**पवत्ती-** प्रवर्त्तयति-साधूनाचार्योपदिष्टेषु  
 वैयावृत्त्यादिष्विति प्रवर्त्ती। स्था० १४३, २४४। प्रवृत्तिः-  
 वार्ता। ओघ० ५९।  
**पवत्तीए-** प्रवृत्तिकः। ज्ञाता० ३९।  
**पवनबाण-** पवनबाणः-तथाविधपवनस्वरूपतया  
 परिणतः। जम्बू० १२५।  
**पवय-** प्लवकः। आव० ४२७। प्लवकः। नन्दी० १६५।  
**पवयण-** प्रवचनं-द्वादशाङ्गं जिनशासनम्। प्रश्न० २।  
 प्रवचनम्-श्रुतम्। आव० ३२६। प्रवचनम्-द्वादशाङ्गं  
 सूत्रार्थतदुभय-रूपम्। आव० ५१०। प्रवचनं-तीर्थम्।  
 आव० ३२५। प्रकर्षणोच्यतेऽभिधेयमनेनेति प्रवचनं-  
 आगमः। भग० ७९३। प्रवचनं-आगमः। भग० ६१।  
 प्रवचनं-तीर्थम्। बृह० १६६ आ। प्रकृष्टं-प्रशस्तं प्रगतं वा  
 वचनं-आगमः-प्रवचनं द्वादशाङ्गः तदाधारो वा सङ्घः।  
 स्था० ५१५। प्रवचनं-श्रुतज्ञानम्। ज्ञाता० १२२। प्रवचनम्  
 । भग० ६६। प्रवचनं-सामान्यश्रुतज्ञानम्। आव० ८६।  
 प्रवचनं-श्रुतज्ञानं सङ्घो वा, विंशतिस्थानके तृतीयः।  
 आव० ११९। प्रवचनः-द्वादशाङ्गः-तदाधारे वा सङ्घः।  
 सम० १४। प्रवचनं-आगमः। आव० ६१। प्रवचनं-

द्वादशाङ्गं गणिपिटकं सङ्घो वा। आव० ६८। प्रवचनं-  
प्रशस्तवचनं-प्रधानवचनं-प्रथमवचनं वा। अनुयो० ३८।  
प्रवचनं-चतुर्वर्णसङ्घः। बृह० १९८ आ। दुवालसंगं संघो।  
निशी० १०३ आ।

**पवयणउद्भावणता**— प्रवचनस्य-द्वादशाङ्गस्योद्भावनं-  
प्रभावनं

प्रावचनिकत्वधर्मकथावादादिलब्धिभिर्वर्णवादजननं  
प्रवच-नोद्भावनं तदेव प्रवचनोद्भावनता। स्था० ५१५।

**पवयणकुसल**—

सूत्रार्थहेत्वादिप्रवचनावर्णवादिनिग्रहान्तगुणः। व्यव०  
२३६।

**पवयणगीयत्थ**— प्रवचनगीतार्थः-सर्वसारेण प्रवचनस्य  
गृही-तोऽर्थः। व्यव० ४१२ आ।

**पवयणपभावणया**— प्रवचनप्रभावनता-यथाशक्त्या  
मार्गदेशना, विंशतितमस्थानकम्। आव० ११९।

**पवयणभावणा**— यथाशक्तिमार्गदेशनादिकया च  
प्रवचनप्रभावना। ज्ञाता० १२२।

**पवयणमाऊ**— प्रवचनमाता। आव० ७७८।

**पवयणमाय**— प्रवचनमातृ प्रवचनमातं वा,  
उत्तराध्ययनस्य चतुर्विंशतितममध्ययनम्। उत्त०  
५१३।

**पवयणरहस्स**— अपवादपदं, छेदसुत्तं। निशी० ८१ आ।  
प्रवचनरहस्यं-अपवादपदम्। बृह० १३१ आ।

**पवयणवच्छल्लया**— प्रवचनं-द्वादशाङ्गं तदाधारो वा  
सङ्घस्तस्य वत्सलता-हितकारिता  
प्रत्यनीकत्वादिनिरासेनेति प्रवचन-वत्सलता। स्था०  
५१५।

**पवयणसार**— प्रवचनसारः-चारित्रः। ज्ञाता० १६६।

**पवर**— प्रवरः-सुभगः। जीवा० २७६।

**पवरकुन्दुरुक्क**— प्रवरकुन्दुरुक्कं-चीडाभिधानं गन्धद्रव्यम्।  
सम० ६१। प्रवरकुन्दुरुक्कः-चीडाभिधानो गन्धद्रव्यवि-  
शेषः। ज० ५१।

**पवरगवल**— प्रवरगवलं-वरमहिषशृङ्गम्। ज्ञाता० २२२।

**पवरवर**— पवरवरः-अतिप्रधानः। ज्ञाता० १२।

**पवह**— प्रवहे यतः स्थानात् नदी वोढुं प्रवर्तते स प्रवहः।  
जम्बू० २९३। प्रवहः-मूलः। जम्बू० २९५। प्रवहः-हृदनि-  
र्गमः। जम्बू० ३०९।

**पवहणं किच्च**— प्लवनकृत्यं-तरकाण्डम्। ज्ञाता० १९१।

**पवहण**— प्रवहणं-वेगसरादि। औप० ५९। प्रवहणं-यानम्।  
आव० ४२०।

**पवा**— प्रपा-उदकदानस्थानम्। आचा० ३६६। प्रपाउदकदा-  
नस्थानम्। आचा० ३०७। प्रपा-आगमनगृहम्। स्था०  
१५७। भग० २३७। प्रपा-जलदानस्थानम्। प्रश्न० ८।  
प्रपाजलदानस्थानम्। औप० ४१। प्रपा-जलदानस्थानम्।  
प्रश्न० १२६। प्रपा-जलदानस्थानम्। जम्बू० १४४। प्रपा-  
जलस्थानम्। ज्ञाता० ७९। गिम्हादिसु उदगदाणं ठाणं।  
निशी० ६९ आ।

**पवाए**— प्रपातः-प्रपतज्जलौघः। जम्बू० २९। प्रपातः-गर्तः।  
ज्ञाता० १९१। प्रवाढः-व्याजः। सूत्र० ११३। प्रपातो-यत्र  
पर्वतात् पानीयं पतति। बृह० १०६ आ।

**पवाओ**— गर्ता। बृह० ५७ आ।

**पवात**— प्रपातः। बृह० ३१ आ।

**पवातखड्डा**— प्रपातगर्ता। आव० ३७४।

**पवाय**— प्रपाणं-उत्तरोष्ठतलम्। जम्बू० २३७। प्रपातः-  
पर्वतात्प्रपतज्जलसमूहः। सम० ८५। प्रपातः-प्रपतज्जल-  
सन्तानः। सम० ४५। प्रपातः-गर्तः। विपा० ५५। प्रपातः  
भृगुः यत्र मुमूर्षुः जनः झम्पां ददति, अथवा प्रपातः  
रात्रि-धाटीः। जम्बू० ६६। प्रपातः-भृगुर्यत्र जनः काश्चित्  
कामनां कृत्वा प्रपतति। जम्बू० १२४। प्रपातः-  
गच्छज्जनस्खल-नहेतुः पाषाणः भृगूः वा। जम्बू० २२३।  
प्रवादः-प्रकर्षेण प्रतिवादनमस्मिन्निति। उत्त० ७३।  
प्रपातः-भृगुः। ज्ञाता० ९९। पवादं-सर्वज्ञोपदेशम्। आचा०  
२२७। छन्नटङ्कानदी प्रपातः। भृगुपातादिकं वा। व्यव०  
६१ आ। प्रवादः-प्रकृष्टो वादः प्रवादः-  
आचार्यपारम्पर्योपदेशः-प्रवादः। आचा० २२७।

**पवायए**— प्रकर्षेण प्रधान आदौ वा वाचकः प्रवाचकः।  
आव० ६१।

**पवायतड**— प्रपाततटः-भृगुतटः। ज्ञाता० २६।

**पवाया**— प्रवाताः। आचा० ३२९। प्रवाता-या ग्रीष्मकालेऽप-  
रान्हे उपलेपनादिकरणेन धर्म नाशयति। बृह० २६३।

**पवालंकुर**— प्रवालः-शिलीदलं तस्याङ्कुरः प्रवालाङ्कुरः।  
प्रज्ञा० ३६१।

**पवाल**— प्रवालं-विद्रुमम्। भग० १६३। प्रवालः-  
पल्लवाङ्कुरः। भग० ३०६। प्रवालः-पल्लवाङ्कुरः।

जम्बू० २९, ३०। प्रवालः-पल्लवाङ्कुरः। प्रज्ञा० ३१।  
 प्रवालम्। जम्बू० १२२। प्रवालः-पल्लवः। जम्बू० १६८।  
 प्रवालं-पल्लवाङ्कुरः। स्था० ३४५। प्रवालं-पृथिवीभेदः।  
 आचा० २९। प्रवालः-शिलादलम्। प्रज्ञा० ३६२। प्रवालं-  
 विद्रुमः। प्रज्ञा० २७। प्रवालः-पल्लवाङ्कुरः। औप० ७।  
 प्रवालं पल्लवम्। दशवै० १८५। प्रवालकं-विद्रुमः। उत्त०  
 ६८९। प्रवालं-विद्रुमः। जीवा० २३। प्रवालं-विद्रुमम्।  
 प्रश्न० ३८। प्रवालं-पल्लवाङ्कुरम्। जीवा० १८८। प्रवालः-  
 पल्लवाङ्कुरः। जीवा० १८७। प्रवालः-रत्न-विशेषः,  
 प्रवालाङ्कुरः। जीवा० १९१। प्रवालः-  
 ईषदुन्मीलितपत्रभावः। जीवा० २२०। प्रवालः-  
 ईषदुन्मीलितपत्रभावः-पल्लवः। जीवा० २९४।  
 पवालता- प्रवालता-नवाङ्कुरता। स्था० २६७।  
 पवालवण्ण- प्रवालवर्णः-विद्रुमवर्णः। ज्ञाता० २३०।  
 पवालिणो परिणमन्ति- प्रवालिनः परिणमन्ति-प्रवालः-  
 पल्ल-वाङ्कुरस्तद्युक्ततया परिणमन्ति। सूर्य० १७२।  
 पवाह- प्रवाहः-अनादिकालसन्ततिपतितः। जीवा० २१७।  
 प्रवाहः-अनादिकालसन्ततिपतितः। जम्बू० ६२।  
 पविङ्गण- प्रविकीर्णः-गमनागमनाभ्यां व्याप्तः। औप०  
 ४।  
 पविङ्गन्- प्रविकीर्णः-गमनागमनाभ्यां व्याप्तः। ज्ञाता०  
 ३।  
 पविकत्थङ्- प्रविकत्थते-आत्मानं श्लाघते। सम० ५४।  
 पविज्जआयति- प्रकर्षेण विद्युतं कुर्वति। जम्बू० ३८९।  
 पविज्जल- रुधिरपूयादिना पिच्छिलः। सूत्र० १३६।  
 पविट्ठ- प्रविष्टः-एककालं तद्भावेन परिणतः। जीवा० ९८।  
 प्रविष्टः व्यवस्थितः। जीवा० १०५।  
 पविट्ठपुव्व- प्रविष्टपूर्वः-परिणतपूर्वः। जीवा० ९८।  
 पविणेति- प्रविनयति-क्षपयति। भग० १००।  
 पवितर- प्रवितरं-स्फुटितम्। जीवा० १२२।  
 पवित्तय- पवित्रकं-ताम्रमयमङ्गुलीयकम्। औप० ९५।  
 पवित्रकं-अङ्गुलीयकम्। भग० ११३। पवित्रकं-  
 अङ्गुलीयकम्। औप० ९३।  
 पवित्ता- पवित्रा-अहिंसाया पञ्चपञ्चाशत्तमं नाम।  
 प्रश्न० ९९।  
 पवित्ति- प्रवृत्तिः। आव० ५१३।  
 पवित्तिवाउय- प्रवृत्तिव्यापृतः-वार्ताव्यापारवान्

वार्तानिवेदक इति। औप० १३।  
 पविर्त्ती- प्रवृत्तिः यथायोगं वैयावृत्त्यादौ साधूनां  
 प्रवर्त्तकः। आचा० ३५३।  
 पविर्त्थर- प्रविस्तारः-धनधान्यादिविस्तारः परिग्रहस्य  
 विंश-तितमं नाम। प्रश्न० ९२। प्रविस्तारः-  
 धनधान्यादिपदचतुष्प-दादिविभूतिविस्तरः। उपा० २।  
 पविद्ध- प्रवृद्धं-उपचाररहितम्। बृह० ११ अ।  
 पविद्धत्थं- प्रविध्वस्तं-सर्वथा भस्मसाद्भूतम्। जीवा०  
 १२२।  
 पविभक्त- प्रविभक्तं-प्रतिनियतम्। प्रज्ञा० ३२९।  
 पविभक्ती- प्रविभक्तिः-प्रकर्षेण  
 स्वरूपसम्मोहाभावलक्षणेन विभागः पृथक्त्या। उत्त०  
 ८३।  
 पवियक्खणा- प्रविचक्षणा, अभ्यासातिशयतः क्रियां  
 प्रतिप्रा-विण्यवन्तः। उत्त० ३२०।  
 पवियारणा- प्रविचारणा, प्रज्ञापनायाश्चतुस्त्रिंशत्तमं  
 पदम्। प्रज्ञा० ६।  
 पवियारियन्त- प्रविचारयन्। उत्त० ३८६।  
 पविरल- प्रविरलं-लम्बमानम्। जीवा० २६८।  
 पविरलपप्फुसियं- प्रविरलाः प्रस्पृशिका-विप्रुषो यत्र  
 तत्तथा। भग० ६६५।  
 पविरलफुसिय- प्रविरलस्पृष्टं प्रविरलानि घनभावे  
 कर्दमसम्भ-वात्मकर्षेण यावता रेणवः स्थगिता भवन्ति  
 तावन्मात्रेणोत्कर्षेण स्पृष्टानि-स्पर्शनानि यत्र वर्षे तत्  
 प्रविरलस्पृष्टम्। जीवा० २४५।  
 पविरलसाहुसहिओ- प्रविरलसाधुसहितः। आव० २९३।  
 पविलीणं- प्रविलीनं-नवनीतमिव सर्वथा गलितम्। जीवा०  
 १२२।  
 पविरल्लियं- विस्तारवत्। प्रश्न० ९२।  
 पविसङ्- प्रविशति-पविसङ्। आचा० ३६५।  
 पविसमाणे- प्रविशन्। सुय० १२।  
 पविसारिय- प्रविसारितम्। दशवै० ९६।  
 पविसिणि- णिगच्छति णिन्ति। निशी० ५१ अ।  
 पविसियओ- प्रोषितः। आव० ४२३।  
 पवीलए- तत उर्द्ध्वमधीतागमः परिणतार्थसद्भावः सन्  
 प्रकर्षेण विकृष्टतपसा पीडयेत् प्रपीडयेत्। आचा० १९२।  
 पवीला- प्रपीडनं-बहुपीडनम्। दशवै० १५३।

**पवुडदेव**— प्रवृष्टो देवः। आचा० ३८९।  
**पवेअए**— प्रवेदयति-कथयति। दशवै० २६९।  
**पवेइआ**— प्रकर्षेण प्रशस्ताऽऽदौ वा वेदिता प्रवेदिता।  
 आचा० २५।  
**पवेइय**— प्रवेदितः-प्रकर्षेण-स्वयं साक्षात्कारित्वलक्षणेन  
 ज्ञातः। उत्त० ८१।  
**पवेइया**— प्रवेदिता-केवलालोकेन प्रकर्षेण वेदिता प्रवेदिता  
 विज्ञाता। दशवै० १३७।  
**पवेईयं**— प्रवेदितं-प्रतिपादितम्। आचा० १३४।  
**पवेतणं**— प्रवेदनं-प्ररूपणं फलकथनम्। बृह० २५अ।  
**पवेदणं**— प्रवेदनं-पूतकृतम्। बृह० ९३आ।  
**पवेपति**— प्रवेपते दन्तवीणादिसमन्वितः कम्पते। आचा०  
 ३०९।  
**पवेस**— प्रवेशः-कुड्यस्थूलत्वमष्टयोजनान्युच्चमिति।  
 स्था० २२७, २९४। प्रवेशः-निमज्जनं जलप्रवेशः। उत्त०  
 ७११। प्रवेशः-उपपातः। आचा० ६९।  
**पवेसण**— नवमशतकसत्कृतृतीयोद्देशके  
 गाङ्गेयाभिधानानगरकृ-तनरकादिगतप्रवेशनविचारः।  
 भग० ३३९।  
**पवेसणए**— गत्यन्तरादुद्वृत्तस्य विजातीयगतौ जीवस्य  
 प्रवेशनं, उत्पाद इत्यर्थः। भग० ४४२।  
**पवेसियल्लओ**— प्रवेशितः। आव० ४०५।  
**पवेसेत्ता**— प्रवेशयित्वा-नीत्वा। आव० ६६२।  
**पव्व**— पर्व-मेघलादि दष्ट्रा पर्वतो वा। सूत्र० १४७। पर्व-  
 जानुकुर्परादि। उत्त० ८४। पर्वः-पक्षः। सूर्य० १५५।  
 प्रसवः- पुत्रजन्मः। ज्ञाता० ५३। अमावासी पौर्णमासी वा  
 तदुपलक्षितः पक्षोऽपि पर्वः। स्था० ३७०। पर्व-कौमुदी-  
 प्रभृतिः। ज्ञाता० ७९।  
**पव्वइए**— प्रव्रजितः-पापान्निष्क्रान्तः। दशवै० २६२।  
 प्रव्रजेयं गृहान्निष्क्रामेयम्। उत्त० ४०६।  
**पव्वइओ**— प्रव्रजितः-प्रकर्षेण-  
 विषयाभिष्वङ्गादिपरिहाररूपेण व्रजितो-निष्क्रान्तः।  
 उत्त० ४४२। प्रव्रजितः। आव० ४३४।  
**पव्वइतो**— पर्वतः-इन्द्रदत्तराजस्य दासचेष्टः। उत्त० १४८।  
**पव्वइय**— प्रव्रजितः-शाक्यादिः। अनुयो० २४४। प्रव्रजितः-  
 प्रगतः-प्राप्तः, प्रव्रजितः-प्रव्रज्यां प्रतिपन्नः। जम्बू०  
 १४२। प्रव्रजितः-द्विपृष्ठवासुदेवपूर्वभवः। आव० १६३।

**पव्वए**— वंसो। निशी० ६०आ।  
**पव्वओ**— उभओ पेरुरहितं। निशी० २३अ।  
**पव्वगो**— दब्भसारित्थो। निशी० ६९आ। पर्वगः-  
 स्थावरविशेषः। सूत्र० ३०७। पर्वकः-वादयविशेषः। प्रश्न०  
 १५९। पर्वगः-इक्षुप्रभृतिः। भग० ३०६। पर्वगः-इक्ष्वादि।  
 जम्बू० १७४। पर्वगः। प्रज्ञा० ३७। पर्वगः-इक्ष्वादि। जीवा०  
 २६। वनस्पतिविशेषः। सूत्र० ३०७।  
**पव्वज्जा**— प्रवजनं-गमनं पापचरणव्यापारेष्विति  
 प्रव्रज्या। स्था० १२९। प्रव्रज्या। स्था० ४७३।  
**पव्वट्टणं**— पुणो पुणो पव्वट्टणं। निशी० १९०आ।  
**पव्वणी**— पर्वणी-कार्तिक्यादि। भग० ४७३।  
**पव्वतओ**— पर्वतः-दासचेष्टः। आव० ३४३।  
**पव्वतिद**— पर्वतेन्द्रः। सूर्य० ७८।  
**पव्वतियग**— पर्वत्रिकम्। आव० २१०।  
**पव्वदेसकाल**— पर्वदेशकालः। आव० १४६।  
**पव्वपेच्छतिणो**— काश्यपगोत्रभेदः। स्था० ३९०।  
**पव्वबीय**— पर्वबीजः-इक्ष्वादिः। सूत्र० ३५०।  
**पव्वय**— पर्वगः-तापसभेदः। आव० ६७३। पर्वतः। जम्बू०  
 ४२९। तृणविशेषः। प्रज्ञा० ३३। पर्वतः। भग० १७०।  
 पर्वताः पर्वतनात्-उत्सवविस्तारणात्पर्वताः-क्रीडापर्वताः,  
 उज्जयन्तवैभारादिः। भग० ३०६। पर्वतः-क्रीडापर्वतः।  
 जम्बू० १६८। पर्वतः-क्षुद्रगिरिः। जम्बू० ६६। पर्वगः-  
 इक्ष्वादिः। उत्त० ६९२। पर्वतः-तितिक्षोदाहरणे द्वितीयो  
 दासचेष्टः। आव० ७०२। पर्वतः-मथुरायां राजा। आव०  
 ३४४।  
**पव्वयकडगं**— पर्वतकटकं भगुः। प्रश्न० ५९।  
**पव्वयगिह**— पर्वतगृहं-पर्वतगुहः। आचा० ३८२।  
**पव्वयमह**— पर्वतमहः। जीवा० २८१। पर्वतमहोत्सवः।  
 ज्ञाता० ३९।  
**पव्वयय**— द्वितीयवासुदेवपूर्वभवः। सम० १५३।  
**पव्वयराया**— पर्वतराजः-पर्वतेन्द्रः। जीवा० ३४७।  
**पव्वयविदुगं**— पर्वतदुर्गः-पर्वतसमुदायः। भग० ९२। सूत्र०  
 ३०७।  
**पव्वया**— पर्वजाः-पर्वाणि सन्धयस्तेभ्यो जातः। उत्त०  
 ६९२।  
**पव्वराहु**— पर्वणि-पौर्णमास्यां अमावास्यायां वा यथाक्रमं  
 चन्द्रस्य सूर्यस्य वा उपरागं करोति स पर्वराहुः। सूर्य०

२९०। पर्वराहुः-यः कदाचिदकस्मात्समागत्य  
निजविमानेन चन्द्रविमानं सूर्यविमानं वाऽन्तरितं  
करोति। जीवा० ३३९। पर्वराहुः। भग० ५७६।  
पव्वहइ- प्रव्यथते-प्रकृष्टव्यथामिवोत्पादयति। भग०  
१६६।  
पव्वहणा- प्रव्यथना-भयोत्पादनम्। औप० १०३।  
पव्वहेज्ज- प्रव्यथते-बाधते अन्तर्भूतकारितार्थत्वाद्वा  
प्रवाह-येत्। स्था० ३०९। प्रव्यथेत-  
ग्रामाच्चालयेन्निष्काशयेत् कश्चित् उदर्को वा  
आगच्छति ततो नश्येदिति। स्था० ३१०।  
पव्वा- लोकपालस्य तृतीया पर्षद्। स्था० १२७।  
पव्वाओ- पर्वाणि-जानुकूर्परादीनि। उत्त० २५१।  
पव्वाण- प्रम्लानं-मनाक् शुष्कम्। ओघ० १७०।  
पव्वाय- प्रम्लानः-अर्धशुष्कः। पिण्ड० १९। प्रम्लानं-म्ला-  
नवृन्तम्। बृह० १७९ आ।  
पव्वायाचिक्खल- प्रवातकर्दमः। ओघ० ७३।  
पव्वायण- प्रवाजनं-रजोहरणादिवेषदानेन  
संयमस्वीकरणम्। भग० १२२।  
पव्वायणा- प्रवाजना। दशवै० ३१।  
पव्वायणायरिओ- प्रवाजनाचार्यः-आचार्यविशेषः। दशवै०  
३१।  
पव्वायणायरित- प्रवाजनाचार्यः। स्था० २३९।  
पव्वावण्णा- पव्वावणिज्जपरिक्खा पव्वावण्णा। निशी०  
४६ आ।  
पव्वावित्तए- प्रवाजयितुं रजोहरणादिदानेन। स्था० ५६।  
पव्वाहा- प्रवाहाः-अपकृष्यनिप्रकर्षवन्ति उदकवहनानि।  
भग० १९९।  
पव्विद्धं- प्रविद्धं-वन्दनं दददेव नश्यति, कृति कर्मणि  
तृतीयो दोषः। आव० ५४३।  
पव्विहति- पगरिसेण विहि खिवति। निशी० २५६ आ।  
पव्वीसग- पव्वीसकं वाद्यविशेषः। प्रश्न० ७०।  
पव्वोणीए- अमोग्गतिता, सन्मुखगमनम्। निशी० २८५  
आ।  
पशवः- पश्यन्ति प्रसूयन्ते वा। सम० ६२।  
पश्चात्कर्त्तुं- पराजेतुम्। नन्दी० १५०।  
पश्चात्तापकृत्- पश्चादनुतापकः। उत्त० ३४०।  
पश्चानुपूर्वी- गणनानुपूर्व्यां द्वितीयो भेदः। स्था० ४।

पश्चिम- अधिकक्षेपः। नन्दी० २१।  
पश्चिमरुचक- दिक्कुमारिवास्तव्यपर्वतः। ज्ञाता० १२७।  
प्रसंग- प्रसङ्गः-अनुष्ठानम्। आचा० ६९। प्रसङ्गः-  
आसेवनः। ओघ० १९२। प्रसङ्गो-अवशस्यानिष्टप्राप्तिः।  
निशी० २५ आ। प्रसङ्गः-परम्परा। बृह० १२३ आ।  
प्रसङ्गः-भूयः कारापणम्। बृह० १९३ आ। प्रसङ्गः-  
अभ्यासः। आव० ४२६। प्रसङ्गः-आसेवनारूपः। सम०  
४९। प्रसङ्गः-तथाविधासक्तिरूपः। उत्त० ६१७।  
प्रसङ्गः-अभ्यासः। नन्दी० १६४। प्रसङ्गः-कामेषु  
प्रसजनमभिषङ्गः, अब्रह्मण एकोनत्रिंशत्तमं नाम।  
प्रश्न० ६६।  
प्रसंत- प्रशान्तं-सर्वथाऽसदिव। जम्बू० ३८९। प्रशान्तः  
बहिर्वृत्त्या। भग० ४९०, ९२४। प्रशान्तः-प्रशाम्यति  
क्रोधादिजनितौत्सुक्यरहितो भवत्यनेनेति,  
परमगुरुवचः-श्रवणादिहेतुसमुल्लसित  
उपशमप्रकर्षात्मरसः। अनुयो० १३५। प्रशान्तः-  
क्रोधादिदोषपरिहारात्। अनुयो० १४०। प्रस्वान्तः-  
प्रकृष्टचित्तः। जम्बू० १४६। प्रशान्तः। औप० ३५।  
प्रसंतजीवी- प्रशान्तजीवी बहिर्वृत्त्यपेक्षया। प्रश्न० १०६।  
प्रसंते- पसन्ते-कषायोदयस्य विफलीकरणात्। ज्ञाता०  
१०३।  
प्रसंधण- पसन्धनं-सातत्येन प्रवर्त्तनम्। पिण्ड० १३३।  
प्रसंस- प्रशस्यः-प्रशस्यते सर्वैरप्यविगानेनाद्रियत इति  
लोभः। सूत्र० ६९।  
प्रसंसइ- प्रशंसति-स्तौति-बहुमन्यते। आव० ५८७।  
प्रसंसा- प्रशंसा-वन्दनं-संस्तवः। आचा० २६। प्रशसनं-  
प्रसंसा स्तुतिः। आव० ८१६।  
प्रसंसिए- प्रशंसितः-स्तुतः। आचा० १२८।  
प्रसइओ- प्रसृतिः-नावाकारतया व्यवस्थापिता  
प्राञ्जलकर-तलरूपा। ज० २४४।  
प्रसई- द्वे असृती प्रसृतिः। ज्ञाता० ११९। प्रसृतिः-  
नावाका-रता व्यवस्थापितप्राञ्जलकरतलरूपा। अनुयो०  
१५२।  
प्रसज्जणा- प्रसजना-प्रायश्चित्तवृद्धिः। बृह० ६ आ।  
प्रसज्झ- प्रसहय-प्रकटमेव। सूत्र० ६६। प्रसहय-  
धर्मनिरपेक्ष-तया प्रकटम्। दशवै० २७७।  
प्रसढं- प्रसहय-अनेकदिवसस्थापनेन प्रकटम्। दशवै०

१७६। प्रकर्षेण शठः प्रशठः। सूत्रं ३६४।

**पसण्ण-** प्रसन्नः-द्राक्षादिद्रव्यजन्या

मनःप्रसक्तिहेतुरिति। विपा० ४९। प्रसन्नः-सूराभेदः।

जाता० २०९।

**पसत्ता-** प्रशास्ता-बुद्ध्युपजीवीमन्त्रिप्रभृतिः। सूत्रं २७८।

**पसत्थ-** प्रशस्तं-उचितसेवनया हितम्। जीवा० ४।

प्रशस्तं-शोभनम्। जीवा० २०७। प्रशस्तं-सामायिकस्य

तृतीयप-र्यायः। आव० ४७४। प्रशस्तः -

प्रशंसास्पदीभूतः। जीवा० २२६।

**पसत्थदमसासन-** प्रशस्तदमशासनः-प्रशस्तः-

प्रशंसास्पदो दमश्च-उपशमः शासनं च सर्वज्ञागमात्मकं  
यस्य सः। उत्त० ४६५।

**पसत्थनिज्जराए-** प्रशस्तनिर्जराकः-

कल्याणानुबन्धनिर्जरः। भग० २५१।

**पसत्थर-** प्रकर्षेण शास्ता प्रशास्ता तं

धर्मपाठकादिलक्षणम्। आव० ५१६।

**पसत्थाइं-** प्रशस्तानि-श्लाघितानि। स्था० २९७।

**पसत्थार-** प्रशस्तारः-धर्मशास्त्रपाठकः। औप० २७। प्रशा-

स्ता-अनुशासको मर्यादाकारी सभानायकः सभ्यो वा।

स्था० ४९२। प्रशास्ता-लेखाचार्यादिः धर्मशास्त्रपाठकः।

स्था० १२६। प्रशास्ता-धर्मोपदेशकः। स्था० ५१६।

लेखाचार्यः, भर्ता वा। आव० ६६३।

**पसत्थारथेरा-** प्रशासति-शिक्षयन्ति ये ते प्रशास्तारः-

धर्मो-पदेशकास्ते च ते स्थिरीकरणात् स्थविराश्चेति

प्रशास्तृस्थ-विराः। स्था० ५१९।

**पसत्थारदोस-** प्रशास्ता-अनुशासको-मर्यादाकारी सभया-

नकः सभ्यो वा तस्माद् द्विष्टादुपेक्षकाद्वा दोषः

प्रतिवादिनो जयदानलक्षणो विस्मृतप्रमेयप्रतिवादिनः

प्रमेयस्मारणादि-लक्षणो वा प्रशास्तृदोषः। स्था० ४९२।

**प्रसन्न-** प्रसन्ना-सुराविशेषम्। उपा० ४९। प्रसन्ना-

सुरावि-शेषः। जम्बू० १००। प्रसन्नं-परिणतम्। दशवै०

२०७। प्रसन्ना-सुराविशेषः। जीवा० २६५। प्रसन्नं-

विकाररहितम्। उत्त० ४४२।

**प्रसन्नचंद-** प्रसन्नचन्द्रः-उत्कृष्टबाह्यकरणवतः

सप्तमनरकप्रा-योग्यकर्मबन्धकः। आव० ५२९।

प्रसन्नचन्द्रः-द्रव्यव्युत्स-गोदाहरणे

क्षितिप्रतिष्ठितनगरे राजा। आव० ४८७।

**पसम-** प्रशमः। आव० ५९१। प्रकर्षेण श्रमः प्रश्रमः-खेदः

स्वपरसमयतत्त्वाधिगमरूपः। आव० ५९१।

**पसमथेज्जाइगुणगणोवेओ-**

प्रश(श्र)मस्थैर्यादिगुणगणोपेतः प्रश्रमः-

स्वपरसमयतत्त्वाधिगमरूपः खेदः स्थैर्यं जिनशासने

निष्प्रकम्पता प्रभावनादिकं च त एव गुणास्तेषां गणः-

समूह-स्तेनोपेतो-युक्तोः यः सः। अथवा

प्रशमादिगुणगणः-प्रशम-

संवेगनिर्वेदानुकम्पास्तिक्याभिव्यक्तिलक्षणः। आव०

५९१।

**पसय-** पसयः-आटविको द्विखुरश्चतुष्पदविशेषः।

अन्यो० ३९। प्रशयः-द्विखुर आटव्यपशुविशेषः। प्रश्न०

७। पसयः-आट-व्यो द्विखुरश्चतुष्पदविशेषः। भग०

३४५। प्रशयः-द्विखुरः आटव्यपशुविशेषः। जम्बू० १२४।

पसय-आटव्यचतुष्पदविशेषः। जाता० ६३।

**पसर-** प्रसरम्। ओघ० १४८। प्रसरः-विस्तारः। प्रश्न० ७६।

**पसव-** प्रसवः-पुत्रादिजन्मः। जाता० ७९।

**पसवई-** प्रसूते-निर्वर्त्यति। दशवै० १८७।

**पसायड्डी-** प्रसादार्थी-गुरुपरितोषाभिलाषी। उत्त० ५५।

**पसायपेक्ख-** प्रसादप्रेक्षी-प्रसादं प्रेक्षितुं-अलोचितुं

शीलम-स्येति। उत्त० ५५।

**पसारंति-** मन्त्रयति। व्यव० २७६।

**पसार-** पर्यालोचः। उ० मा० गा० ४७५।

**पसारण-** प्रसारणं-अङ्गानां विक्षेपः। आव० ५७४।

**पसारिय-** प्रसारितः-विरलीकृतः। उत्त० ३६७। प्रसारितं-

गात्रविततकरणम्। दशवै० १४१।

**पसारेज्ज-** प्रसारयेत्। आव० ८५३।

**पसासेमाणे-** प्रसाध्यन्-पालयन्। जाता० ६।

**पसाह-** प्रशाखः-शाखाविनिर्गतशाखः। जम्बू० ३२४।

**पसाहण-** प्रसाधनम्। आव० ५५५। प्रसाधनं-मण्डनम्।

जाता० ३६, ९३।

**पसाहणघरगं-** प्रसाधनगृहकं-यत्रागत्य स्वं परं च

मण्डयति। जीवा० २००। प्रसाधनगृहकं-यत्रागत्य स्वं परं

च मण्डयति। ज० ४५।

**पसाहन-** प्रसाधनं-मण्डनम्। जाता० ४३।

**पसाहि-** प्रसाधि-प्रतिपालय। उत्त० ३८६।

**पसाहिउं-** प्रसाध्य-प्रगुणय्य। आव० ७०३।

**पसाहिए**— प्रसाधितः-संस्कृतः। उत्त० ४९३।  
**पसाहिता**— प्रसाध्य-वशीकृत्य। उत्त० ४४८।  
**पसिअ**— प्रसितः-प्रकर्षणं बद्धः। ज० २११।  
**पसिढिलं**— प्रशिथिलं दृढम्। ओघ० ११०। प्रशिथिलं दोषो  
यददृढमनिरायन्तं वा वस्त्रं गृह्यते। उत्त० ५४१।  
प्रशिथिलं अदृढम्। ओघ० ११०।  
**पसिणं**— प्रश्नं-आदर्शप्रश्नादि। सूत्र० १८१। प्रश्नः। आव०  
७९३। प्रश्नः। भग० ११६। प्रश्नः-शिष्यपृष्टस्यार्थस्य  
प्रति-पादनरूपः। जम्बू० ५४१। प्रश्नः-  
अङ्गुष्ठस्वप्नप्रश्नादि। बृह० ३३अ। प्रश्नं  
पृच्छयमानत्वात्। जाता० ११०। प्रश्नः-  
अङ्गुष्ठकुड्यप्रश्नादिः। स्था० ३०१।  
**पसिणवागरण**— प्रश्नव्याकरणम्। उपा० ३९।  
प्रश्नव्याकरणं प्रश्नोत्तरम्। जाता० ११०।  
**परिणसयं**— प्रश्नशतं-या विद्या मन्त्रो वा विधिना  
जप्यमानः पृष्टा एव सन्तः शुभाशुभ कथयन्ति ते  
प्रश्नाः तेषामष्टोत्तरं शतम्। नन्दी० २३४।  
**पसिणाइ**— प्रश्नविद्या। स्था० ५१२।  
**पसिणापसिण**— प्रश्नाप्रश्नं स्वप्नविद्यादि। भग० ५१।  
प्रश्नाप्रश्नः स्वप्नविद्यादि। प्रजा० ४०६। प्रश्नाप्रश्नः-  
पृच्छतोऽपृच्छतो वा शुभाशुभकथनम्। नन्दी० २३४।  
प्रश्नप्रश्न-“पसिणापसिणं सुमिणे विज्जासिद्धं कहेइ  
अन्नस्स। अहवा आइंखिणिया घंटियसिद्धं परिकहेइ।”  
बृह० २१५अ। सुविणयवि-ज्जाकहियं कथितस्स  
पसिणापसिण भवति। निशी० ८५अ।  
**पसिद्धं**— प्रसिद्धं-प्रख्यातम्। प्रश्न० ११३। प्रसिद्धिः-आश-  
ङ्कापरिहाररूपा। आव० ३७७।  
**पसिमा**— अंबफलाइ। निशी० ६०अ।  
**पसु**— पशुः-ग्राम्यः। सम० ६२। पशुः-छगलकः। अनुयो०  
३९। मण्डल। निशी० ८९अ।  
**पसुधम्म**— पशुधर्मः-मात्रादिगमनलक्षणः। दशवै० २२।  
**पसुपाली**— पशुपाली। आव० ५३८।  
**पसुया**— द्विखुरविशेषः। प्रजा० ४५।  
**पसुवह**— पशुवधः। आव० ६५१।  
**पसू**— पशुः-अश्ववादिकः। उत्त० १८८।  
**पसूअ**— प्रसूतः-निर्गतशीर्षकः। दशवै० २१९।  
**पसूई**— प्रसूतिः-शालिरत्नम्। आव० ४३५।

**प्रसूति**— प्रसूतिः-नखादिविदारणेऽपि चेतनया  
असंवित्तिस्त-द्रूपः। ओघ० १६३।  
**पसूया**— प्रसूता-कणिशानां पत्रगर्भेभ्यो विनिर्गमात्।  
जाता० ११६।  
**पसेढि**— श्रेणेर्या विनिर्गताऽन्याश्रेणिः सा प्रश्रेणिः। जम्बू०  
३१।  
**पसेढी**— प्रश्रेणिः-श्रेणेर्या विनिर्गताऽन्या श्रेणिः प्रश्रेणिः।  
जीवा० १८९।  
**पसेणइ**— अस्यामवसर्पिण्यां पञ्चमकुलकरः। स्था० ३८९।  
**पसेणइए**— प्रसेनजित्-पञ्चमकुलकरः। आव० १११।  
**पसेणई**— प्रसेनजित्-योगसंग्रहे शिक्षादृष्टान्ते कुशाग्रपुरे  
राजा। आव० ६७१। प्रसेनजित्-द्वादशमकुलकरनाम।  
जम्बू० १३२। प्रसेनजित्-  
औत्पत्तिकीबुद्धिदृष्टान्तेमुद्रारत्ने राजा। आव० ४१७।  
प्रसेनजित्-श्रावस्तिनृपतिः। उत्त० २८६।  
पञ्चमकुलकरः। सम० १५०।  
**पसेणती**— प्रसेनजित्-अन्तकृद्शानां प्रथमवर्गस्य  
नवमम-ध्ययनम्। अन्त० १।  
**पसेणीय**— प्रश्रेणयः-स श्रेण्यवान्तरभेदः। जम्बू० २६४।  
**पसेवय**— प्रसेवकः-क्षुरादिभाजनम्। उपा० २२।  
**पस्स**— पश्यन्-अवलोकयन्। उत्त० २६८।  
**पस्सवण**— प्रश्रवणं-मूत्रम्। दशवै० ९७।  
**पहंस**— प्रधर्ष्य-पराभूय। उत्त० ३५३।  
**पह**— वस्त्रैषणायां द्वितीया ऐषणा। आचा० २७७। पन्था-  
रथ्या। भग० १३७, २००। प्रभाकरः-सम्यग्दृष्टौ महा-  
बलस्य राजश्चित्रकरः-प्रभासः। आव० ७०६। पन्थः-  
साधारणमार्गः। अनुयो० १५९। पन्था-रथ्यामात्रम्।  
औप० ५७। पन्था-सामान्यमार्गः। प्रश्न० ५८। पन्था-  
उपदेशतो सम्यग्दर्शनप्राप्तौ दृष्टान्तः। आव० ७५।  
पन्था-मार्गः। आव० १३६। पथः-पथमात्रम्। जाता० २८।  
प्रभा-एकैकदुर्नया-भ्युपगमपरिस्फूर्तिः। नन्दी० ४५।  
पथः-रथ्यामात्रम्। स्था० २९४।  
**पहओ**— प्रहतः-आसेवितः। आव० ३८६।  
**पहकर**— पहकरः-सङ्घातः। जीवा० १८८। समूहः। भग०  
४६४। समूहः। मरण०। पहकरः-समुदायः। प्रश्न० ४७।  
पहकरः-सङ्घातः। जम्बू० ३०। पहकरः-सङ्घातः। राज०  
३। देशीशब्दोऽयं समूहवाची। जम्बू० १४५। विस्तारवृन्दं

देशीशब्दः। जम्बू० १९६। समूहः। जम्बू० २००।  
**पहड-** प्रहृष्टः-प्रहसितवदनः-समुद्रूतरोमहर्षः। बृह० २४७  
 आ। प्रहृष्टः-प्रहर्षवान्। उत्त० २८७। प्रहृष्टः-  
 समर्थस्तरुणः। ओघ० १२६।  
**पहण-** प्राहन्-प्रहतवान्। उत्त० ४४८।  
**पहयर-** प्रहकरः-समूहः। विपा० ३६।  
**पहरणं-** प्रहरणं-अक्षेप्यं शस्त्रम्। प्रश्न० ४७। प्रहरणं  
 करवा-लादि। प्रश्न० १३। प्रहरणं क्षेप्यम्। विपा० ४६।  
 प्रहरणं-असिकृतादि। जीवा० २५९। प्रहरणं-खड्गादि।  
 उत्त० १४३। प्रहरणं खड्गादि। आव० ३४६। प्रहरणं-  
 अक्षेप्या-स्त्रम्। भग० १९४। प्रहरणं। भग० ३१८। प्रहरणं-  
 क्षेप्य-शस्त्रं नाराचादि। भग० १३८। प्रहरणं-  
 लकुटमुसुण्ड्यादि। आचा० ६०। प्रहरणः खड्गः। स्था०  
 ४५०। प्रहरणं-अस्यादि। जम्बू० २५९। प्रहरणं-कुन्तादि।  
 जाता० २२१।  
**पहरणकोस-** प्रहरणकोशः-प्रहरणस्थानम्। जीवा० २३२।  
**पहराड्या-** लिपिविशेषः। प्रज्ञा० ५६।  
**पहराय-** पञ्चमवासुदेवस्य प्रतिशत्रुः। सम० १५४।  
 दत्तवासु-देवशत्रुः, सप्तमवासुदेवशत्रुः। आव० १५९।  
**पहलिय-** म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५।  
**पहवति-** प्रभवति। आव० ३८४।  
**पहसित-** प्रहसितः। भग० ५४५।  
**पहसिय-** प्रहसितं-हसितुमारब्धम्। जाता० १३३।  
 प्रभातया सित इव बद्ध इव प्रहसित इव प्रकर्षण हसितः  
 इव। जम्बू० २९७। प्रहसितं-हसितुमारब्धम्। विपा० ८२।  
 प्रभासितः-प्रभा तया सित इव बद्ध इव। प्रहसितः-  
 प्रकर्षण हसितः। जीवा० २०९।  
**पहसति-** प्रहसति। उत्त० ५१।  
**पहसिए-** प्रहसितः-प्रहसित इव प्रभापटलपरिगततया  
 प्रह-सितः-प्रभया वा सितः शुक्लः संबद्धो वा प्रभासित  
 इति। भग० १४५।  
**पहा-** प्रभा-ज्योत्स्ना। आव० ५१०।  
**पहाइओ-** प्रधावितः-आगतः। आव० ६९५।  
**पहाडेति-** स्वेच्छयेतश्चेतश्चानाथं भ्रमयति। सूत्र० १२५।  
**पहाण-** प्रधानः-क्कथितः। जीवा० २६८। पाषाणम्। आव०  
 ६१३।  
**पहाणदव्वसुद्धी-** प्राधान्यद्रव्यशुद्धिः द्रव्यशुद्धिर्भेदः। उत्त०

२११।  
**पहाणपर-** प्रधानत्वेन परः प्रधानपरं-द्विपदानां तीर्थकरः  
 चतुष्पदानां सिंहादिः अपदानामर्जुनसुवर्णपनसादिः।  
 आचा० ४१५।  
**पहाणाय-** प्रकृष्टं हीनम्-अपगमः प्रहाणं तस्यायो-लाभः  
 प्रहाणायः-प्रहाणः प्रहानि वा। उत्त० १८३।  
**पहायदेसकाल-** प्रभातदेशकालः। आव० ३९८।  
**पहार-** प्रहारः-कशादिभिस्ताडनम्। दशवै० २६७।  
**पहारेत्ता-** प्रधारयिता-स्थापयिता। भग० २३१।  
**पहारेत्थ-** प्रधारितवान्-सङ्कल्पितवान्। भग० ११६।  
 प्रधा-रितवान्-विकल्पितवान्। जाता० १३१।  
 संप्रधारितवान्। अन्त० १२। प्रधावितवान्। जीवा० २५४।  
 प्रधारितवान्। जम्बू० २६६। प्रधारितवान्-चिन्तितवान्,  
 प्रवृत्तवान्। जाता० ३४।  
**पहावण-** प्रधावनं-क्षेत्रमार्गणा क्षेत्रप्रत्युपेक्षणा  
 उपधिमार्गणा च। व्यव० ३५४ अ।  
**पहाविओ-** प्रधावितः। आव० ५६८।  
**पहावेति-** प्रधावयति-भ्रमयति। आव० ६५०।  
**पहास-** प्रहासः-अतीवहासरूपः। दशवै० २३५।  
**पहासा-** पंचसेले अच्छरा। निशी० ४२ अ। प्रहासाप-  
 च्चशैले-विद्युन्मालेरग्रमहिषी। निशी० ३४५ अ।  
**पहिअकित्ती-** प्रथितकीर्तिः। उत्त० ३२१।  
**पहिज्जमाणे-** प्रहीयमाणं-प्रभ्रश्यन्, परिपतत्। भग० १८।  
**पहिड्डमुहवण्ण-** प्रहृष्टमुखवर्णः। उत्त० २८६। प्रहृष्टः-  
 प्रहर्ष-वान् मुखवर्णो-मुखछाया यस्य स तथा, यद्वा  
 प्रहृष्टः मुख-स्येव मुखवर्णो यस्य। उत्त० २८७।  
**पहिया-** पथि गच्छन्तीति पथिकाः, प्रहिताः केनापि  
 क्वचित् प्रेषिता। जाता० १५२।  
 पाणाविधगामणगरदेशहिंडगा, पह-पडिवण्णगा पहिया।  
 निशी० ११ अ।  
**पहीण-** प्रहाणं-जीवप्रदेशैः सह संश्लिष्टस्य  
 कर्मणस्तेभ्यः पतनम्। भग० १६। प्रक्षीणं-प्रहीणं वा।  
 भग० ८६। प्रहीणः-किञ्चित्सत्तावन्तः। स्था० २९४।  
 प्रहीनं-प्रकर्षणं हानिं गतम्। प्रक्षीणम्। उत्त० ५६९।  
**पहीणगोत्तागार-** प्रहीणगोत्रागारं-प्रहीणं विरलीभूतमानुषं  
 गोत्रागारं तत् स्वामिगोत्रगृहम्। भग० २००।  
**पहीणजरमरण-** प्रक्षीणजरामरणः कारणाभावात्। आव०

५०७।

पहीणमग्ग- प्रहीणमार्गम्। भग० २००।

पहीणसंसार- प्रहीणसंसारः प्रहीणचतुर्गतिगमनः। भग० १११।

पहीणसंसारवेयणिज्जे- प्रक्षीणसंसारवेदनीयः।

प्रक्षीणसंसार-वेद्यकर्मा। भग० १११।

पहीणसामिय- प्रहीणस्वामिकं-स्वलपीभूतस्वामिकम्।  
भग० २००।

पहीणसेउयं- प्रहीणसेचकः-प्रहीणः-अल्पभूतः

सेक्तासेचकः-धनप्रक्षेप्ता। भग० २००।

पहु- नेता स्वामी। आव० ६६१।

पहुच्चमाण- पर्याप्यते। ओघ० १७३।

पहुडो- प्रकर्षेण हृष्टः प्रहृष्टः प्रहसितमनः। निशी० २००।

पहुप्पंति- तत्तदनुष्ठीयते। ओघ० १०२।

पहुप्पति- प्रभवति-समर्था भवति। दशवै० १०७।

पहुप्पते- पर्याप्यते। ओघ० ५४।

पहुव्वति- पर्याप्यते। ओघ० ११२।

पहू- प्रभुः-समर्थः योग्यो वा। आचा० ७५। प्रभुः-वीर्यान्त-  
रायक्षयतो विशिष्टसामर्थ्यवान्। उत्त० ६६८।  
स्वगृहमात्रना-यकः। पिण्ड० ११२। प्रभवति-  
सम्बन्धिवस्तु तत्र तत्र स्व-कृत्ये नियोक्तुं समर्था  
भवतीति प्रभुः। उत्त० ४२।

पहेण- वध्वा नीयमानाया यत्पितृगृहभोजनमिति।

आचा० ३३४।

पहेणग- प्रहेणकं-लाहनकम्। पिण्ड० १०३।

पहेणय- प्रहेणकं-लाहनकम्। व्यव० ३५४ अ। ओघ० ८७।

पहेणाए- प्रहेणकार्थम्। आचा० १३०।

पहेरक- प्रहेरकः-आभरणविशेषः। प्रश्न० १५९।

पहेलिअ- प्रहेलिकां-गूढाशयपद्यम्। जम्बू० १३८।

पहेलिय- द्वाविंशतितमकला। ज्ञाता० ३८।

पहोइज्ज- प्रकर्षेण वा हस्तादेर्द्धावनं कुर्यात्। आचा० ३४२।

पांडुराया- मायाहता। भक्त० ।

पांशुक्षारः- उषः। दशवै० १७०।

पांसुलि- पांशुलिका-पार्श्वस्थि। अनुत्त० ५।

पाइ- पात्री-अयोमयं भाजनम्। सूत्र० ३४०।

पाइक्क- पदातिः। प्रश्न० ४८।

पाइक्कबलं- चउब्बले पढमं। निशी० २७२ अ।

पाइण- प्राची पूर्वः। दशवै० २०१।

पाइणण- तुत्तगो। आव० ७९७।

पाइणवाय- यः प्राच्या दिशः समागच्छति वातः स  
प्राचीन-वातः। प्रज्ञा० ३०।

पाइल्लगं- नूपुरविशेषः। उत्त० १९५।

पाई- पात्री। जीवा० २१३। प्राची-पूर्वादिक्। दशवै० २०१।

पात्री। जम्बू० ४१०। पात्री। जम्बू० ८२।

पाईओ- पात्र्यौ। राज० ७०।

पाईण- प्राचीन-पूर्वा। जम्बू० ६६।

पाईणदाहिणं- प्राचीनदक्षिणं-पूर्वदक्षिणदिगन्तरम्। भग०  
२०७।

पाईणवडीणा- पूर्वपश्चिमम्। ज्ञाता० ९९।

पाईणवाय- यः प्राच्या दिशः समागच्छति वातः सः  
प्राचीन-वातः। जीवा० २९।पाउं- पातुं-अभ्यवहर्तुम्। आचा० ४७। पातुं-पीत्वा। आचा०  
३३०।

पाउंछण- प्रादप्रोछनम्। स्था० ३३०।

पाउ- प्रादुः-प्राकाश्यम्। भग० १२७। प्रादुः-प्राकाश्ये।  
अनुयो० २३।

पाउआउ- पादुके। आव० ३६०।

पाउआओ- पादुके, पादत्राणे। जम्बू० १८७।

पाउआजाय- पादुकायोगः-पादुकायुगम्। औप० ६९।

पाउआणालिया- पादुकानालिका। आव० ३६०।

पाउओ- प्रावृतः। आव० ११७।

पाउकरणं- प्रादुःक्रियते-अन्धकारापवरकादेः साध्वर्थं  
बहिः करणेन दीपमाल्यादिधरणेन वा प्रकाश्यते यत्तत्  
प्रादुष्करणं अशनादि। प्रश्न० १५४।पाउकरे- प्रादुष्कृत्य-कांश्चिदर्थतः कांश्चन सूत्रतोऽपि  
प्रकाश्य प्रज्ञाप्य। उत्त० ७१२। प्रादुष्करोमि-  
प्रकटीकरोमि प्रतिपादयामीति। उत्त० ४४६।पाउक्करिस्सामि- प्रादुष्करिष्यामि उत्पादयिष्यामि।  
उत्त० २०।

पाउग्गं- प्रायोग्यं-आहारपानीयादिकम्। आव० ७००।

प्रायोग्यं नाम समाधिकारकम्। निशी० १०१ अ। ओसहं  
भत्तं पाणं वा। निशी० ३३४ अ। उग्गमउप्पा-  
दणएसणाहिं सुद्धो। निशी० १६७ अ। प्रायोग्यो-  
अप्रतिहार्यः। व्यव० (१)। गुरुमादीपुरिसविभागेण जोगो

सो। निशी० १६७अ।

पाउड- प्रावृत्तः-छादितः। आचा० १२७। प्रावृत्तः  
गुण्ठितः। आचा० ११३।

पाउण- प्रावृत्त्य। ओघ० ३४।

पाउणइ- प्राप्नोति। औप० ११३। प्राप्नोति-अयोगताप्रा-  
प्त्यभिमुखो भवति। प्रज्ञा० ६०९।

पाउणति- प्रापयति-पूरयति। औप० ९२। प्राप्नुवति।  
प्रश्न० ८६।

पाउणिज्जति- प्राव्रियते-प्रावार्यते। आव० ६३१।  
परिभुंजति। निशी० ८९आ।

पाउणित्ता- प्राप्य। सम० ७२। पालयित्वा। उपभुज्य।  
जम्बू० १५८।

पाउणिस्सामि- प्रावरिष्यामि। आचा० २४४।

पाउणीओ- प्रावृत्तः। आव० ६३१।

पाउणेज्ज- प्राप्नुयात्। भग० २७३। प्राप्नुयात्। स्था०  
११०।

पाउता- प्रावृत्ता-  
प्रमाणातिरिक्तमहामूल्यवस्त्राच्छादितवपुषा। बृह०  
२५३आ।

पाउत्त- प्रयुक्तं-माणिक्ययुक्तकङ्कणम्। औप० ५५।

पाउब्भविज्ज- आगताः। भग० ६५९।

पाउब्भाव- प्रादुर्भावः-आगमनम्। सम० १२३।

पाउय- प्रावृत्तम्। ओघ० ५५।

पाउर- प्रादुः-प्रकटं प्रत्युपेक्षणयोग्यमशुषिरम्। आचा०  
२९३।

पाउरण- प्रावरणं-वर्षाकल्पादि। उत्त० ४३२। प्रावरणीयं-  
अजिननिष्पन्नं वस्त्रम्। आचा० ३९४।

पाउल्लाइ- मौञ्जे काष्ठपादुके वा। सूत्र० ११८।

पाउवदाउं- पादोदकदायिका पादशौचदायिका। ज्ञाता०  
११७।

पाउस- प्रावृड्-आषाढश्रावणौ। ज्ञाता० ६३, १६०। प्रावृड्।  
सूर्य० २०९। प्रावृड्-आसाढो सावणो सावणो भद्ववओ वा।  
बृह० ७७आ। प्रावृट्-श्रावणादिः। भग० ४६२।

पाउसिआ- प्रद्वेषो-मत्सरस्तेन निर्वृत्ता प्राद्वेषिकी।  
सम० १०।

पाउसिए- प्रदोषिकं-प्रकृष्टदोषम्। आचा० ४२५, ४२८।  
प्रकृष्टदोषं प्रदोषिकम्। आचा० ४२५।

पाउसिया- प्रद्वेषः-मत्सरतत्र भवा तेन वा निर्वृत्ता स।

एव वा प्राद्वेषिकी। भग० १८१। प्रद्वेषो-मत्सरस्तेन

निर्वृत्ता प्राद्वे-षिकी। स्था० ४१। प्राद्वेषिकी-

पञ्चविधक्रियायां तृतीया। प्रज्ञा० ४३५। प्रद्वेषः

मत्सरस्तेन निर्वृत्ता क्रिया प्राद्वेषिकी। आव० ६११।

प्रद्वेषः-मृगेषु दुष्टभावस्तेन निर्वृत्ता प्राद्वेषिकी। भग०  
९३।

पाऊय- प्रावृत्तम्। उत्त० १०५।

पाए- प्रगे-प्रभृति। बृह० २४१आ।

पाएस- आचारप्रकल्पस्य पञ्चदशो भेदः। आव० ६६०।

पाएसरीया- पात्रकेसरिका-मुखवस्त्रिका। ओघ० ११८।

पात्रकेसरिका पात्रकमुखवस्त्रिका। ओघ० ११७।

पाएस- आचाराङ्गे पञ्चदशममध्ययनम्। सम० ४४।

आचारा-ङ्गस्य पञ्चदशममध्ययनम्। उत्त० ६४७।

पाओअर- प्रादुःप्रकटत्वेन देयस्य वस्तुनः

करणप्रादुष्करणम्, उपचारात् भक्ताद्यपि, सप्तम

उद्गमदोषः। पिण्ड० ३४। साधुनिमित्तं

मण्यादिस्थापनेन भित्ताद्यपनयनेन वा प्रादुः-

प्रकटत्वेन देयस्य वस्तुनः करण प्रादुष्करणं

तद्योगाद्भक्ताद्यपि प्रादुष्करणं यद्वा प्रादुः-प्रकटं

करणं यस्य तत् प्रादुष्करणम्। पिण्ड० ३५।

पाओअखितो- पाद उत्क्षिप्तः-प्रतिज्ञा कृता। आव० ४३३।

पाओगिअं- प्रयोगेन निर्वृत्तं प्रायोगिकम्। आव० ४५७।

पाओगं- प्रायोग्यम्। आव० ३४७।

पाओवगत- पादपवत् उपगतो-निश्चेष्टतया स्थितः

पादपो-पगतः। अनशनविशेषं प्रतिपन्नः। स्था० २३७।

पाओवगमण- पादपवन्निस्पन्दतयाऽवस्थानम्। भग०

९२१। नियमादप्रतिकर्म-शरीरप्रतिक्रियावर्जं

पादपोपगमनम्। स्था० ९४। पादपस्योपगमनं-

अस्पन्दतयाऽवस्थानम् पादपोपगमनम्। औप० ३८।

पादपोपगमनं मरणस्य सप्तदशो भेदः। उत्त० २३०।

पाओवगमणमरण- पादवस्येवोपगमनं-अवस्थानं

यस्मिन् तत् पादोपगमनं तदेव मरणम्। सम० ३५।

पाओवगय- पादोपगतः-पादो-वृक्षस्तस्य भूगतो

मूलभाग-स्तस्येवाप्रकम्पतयोपगतं- अवस्थानं यस्य

सः। जम्बू० २८०। ज्ञाता० ७४।

पाओसिया- प्रादोषिका प्रदोषकाले भवा पौरुषी सूत्रपौरुषी।

ओघ० २२।

पाग- पाकः-एतन्नामा इन्द्रस्य बलवान् रिपुः। भग०  
१७४। पाको नाम बलवान्। उपा० २६। पाकः-बलवान्  
रिपुः। प्रजा० १०१।

पागइय- प्राकृतिकः-प्रकृतीनां मध्ये यः। ओघ० १२०।

पागड्डी- प्राकर्षी-प्रकर्षको अग्रगामी। ज्ञाता० ६३।

पागड- प्राकृतः-अनतिशायी। सूर्य० २७४। प्रगटः-जगत्  
प्रतीतः। जम्बू० १८४। प्रकटः। मरण०।

पागडभाव- प्रकटभावः-निर्मायता। प्रश्न० १५८।

पागडा- चरणमालिका-संस्थानविशेषकृतं पादाभरणम्।  
जम्बू० १०६।

पागत- प्राकृतः। आव० १९२।

पागतितो- छिराते हरंतो, राउलवग्गस्स अवकंतितो  
पागयज-णस्स हरंति उ पागतितो। निशी० ३८ आ।

पागय- प्राकृतः-अनतिशायी। जीवा० ३३६। प्राकृतं-भोज-  
नम्। ओघ० ७२। प्रकृतिषु भवः-प्राकृतः। आव० २३९।

पागसासण- पाको नाम बलवान् रिपुः स शिष्यते-  
निराक्रियते येन सः पाकशासनः इन्द्रः। प्रजा० १०१।  
पाको नाम बल-वान् रिपुस्तं यः शास्ति निराकरोत्यसौ  
स पाकशासनः-इन्द्रः। भग० १७४। पाकः-बलवान् रिपुः  
स शिष्यते-निराक्रियते येन सः पाकशासनः इन्द्रः।  
जीवा० ३८८।

पागसासणि- पाकशासनी-इन्द्रजालसंज्ञिका विद्या। सूत्र०  
३१९।

पागार- प्राकारः-वप्प्रः। भग० २३७। प्राकारः, शालः। प्रजा०  
८६। प्राकारः। जीवा० २५८, २६९। प्राकारः-वप्प्रः। ज०  
१०६। प्राकारः-शालः। प्रश्न० ८। प्रकर्षेण मर्यादया च  
कुर्वन्ति तमिति प्राकारः धूलीष्टकादिविरचितः। उत्त०  
३११। ज्ञाता० ९९।

पागारछाया- प्राकारछाया। सूर्य० ९५।

पागारजढं- प्राकारजढं प्राकाररहितम्। आव० २३४।

पागारसंठिय- प्राकारसंस्थितः। सूर्य० १३०।

पागारा- प्राकारा। आचा० ३३७।

पाजावच्चे- प्राजापत्यः-स्थावरकायविशेषः। स्था० २९२।

पाज्जिए- प्रार्जिका-प्रार्थिका मातृमातुः पितृमातुर्वा माता।  
दशवै० २१६।

पाञ्चजन्य- वासुदेवस्य शङ्खः। उत्त० ३५०।

विष्णुशङ्खः। प्रश्न० ८८। शङ्खविशेषः। प्रश्न० ७७।  
शङ्खविशेषः। सम० १५७।

पाटल- वृक्षविशेषः। जीवा० १९१।

पाटला- पुष्पजातिविशेषः। ज्ञाता० २३१।

पाटलिपुत्र- नगरम्। भग० ३२। वसतिदृष्टान्ते नगरम्।  
अनुयो० २२५।

पाटलिपुर- मरुण्डराजराजधानी। नन्दी० १६२।

पाटलीपुत्र- नगरम्। उत्त० ७९।

पाटीगणितं- गणितविशेषः। स्था० ४९७।

पाठ- संमूर्च्छितमतरुजीवः। आचा० ५७।

पाठक- सूत्रधरः पृच्छति प्रश्नयति सूत्रादिव्याकरोति ब्रूते  
तदेवेति। स्था० १९७।

पाठान्तर- वाचनाभेदः। जम्बू० ८७।

पाठीण- पाठीनः-मत्स्यविशेषः। प्रश्न० ७।

पाडंतिय- प्रतिश्रुतिकं-द्वितीयोऽभिनयविधिः। जीवा०  
२४७।

पाडग- घरपंती। वाडग। निशी० १८७ अ।

पाडणा- यैरुपायैरखण्ड एव गर्भः पतति सा पातना।  
विपा० ४२।

पाडल- चतुर्दशतीर्थकरचैत्यवृक्षः। सम० १५२।  
पुष्पविशेषः। दशवै० १७४।

पाडलय- पाटलः-कथाकथकस्तालाचारः। उत्त० १३४।

पाडलसंड- पाटलखण्डः, सिद्धार्थराजधानी। विपा० ७४।

पाडला- गुच्छाविशेषः। प्रजा० ३२। पाटला गौविशेषः।  
आव० ८८।

पाडलावासि- वनस्पतिविशेषः। भग० ८०३।

पाडलिपुत्त- पाटलिपुत्रं, क्षितिप्रतिष्ठितस्य षष्ठं नाम।  
उत्त० १०५। पाटलिपुत्रं दक्षिणापथे नगरम्। दशवै० ४४।  
पाटलिवृ-क्षोत्पत्तिस्थानम्। भग० ६५३।

चन्द्रगुप्तनृपतेर्नगरी। निशी० १०२ अ। पाटलिपुत्रं-  
योगसंग्रहेऽनिश्चितोपधानदृष्टान्ते नगरम्। आव०  
६६८। पाटलिपुत्रं-वैनयिकीबुद्धिदृष्टान्ते ग्रन्थविषये  
मुरुण्डराजधानी। आव० ४२४। पाटलिपुत्रं-आचारोदाहरणे  
नगरम्। आव० ७०७। पाटलिपुत्रं-प्रशंसा-विषये नगरम्।  
आव० ८१७। पाटलिपुत्रं-गुणोदाहरणे नगरम्। आव०  
८१९। अशोकचन्द्रराजधानी। बृह० ४७ अ।

अशोकनृपस्य नगरम्। निशी० ४४ आ। निशी० २४३ अ।

पाटलिपुत्रं-धनश्रेष्ठिनगरम्। आव० २९३। पाटलीपुत्रं-  
नगरविशेषः। यत्र जितशत्रु राजा, लोभे च लुब्ध-नन्दो  
वणिक्। आव० ३९७। पाटलिपुत्रं-शिल्पसिद्धदृष्टान्ते  
जितशत्रुराजधानी। आव० ४०९। पाटलिपुत्रं-परिणामिकी-  
बुद्धिदृष्टान्ते नगरम्। आव० ४३३।  
**पाडलिसंड-** पाटलिसण्डं-सुपाश्वर्चनाथस्य  
प्रथमपारणकस्था-नम्। आव० १४६।  
**पाडिऊण-** पातयित्वा। आव० ३५४।  
**पाडिएककं-** एकमात्मानं प्रति प्रत्येकं पितुः  
फलकाङ्गिन्नमि-त्यर्थः। भग० ६६१।  
**पाडिक्कएणं-** एकं जीवं प्रति गतं-यच्छरीरं  
प्रत्येकशरीरनाम-कर्मादयात् तत्प्रत्येकं तदेव  
प्रत्येककम्। स्था० १९।  
**पाडिच्छगा-** सूत्रार्थग्रहणार्थं ये  
आचार्यसमीपमागच्छन्ति। ओघ० १३९।  
**पाडियक्क-** पृथक्-विभिन्नम्। निर० ३३। प्रत्येकम्।  
व्यव० २०६ आ।  
**पाडियाओ-** उत्तरीयवस्त्राणि। भग० ६६३।  
**पाडिवहिया-** प्रातिपथिकाः-समुखाः पथिकाः। आचा०  
३८२।  
**पाडिवेसिअ-** प्रातिवेशिकः। ओघ० १९४।  
**पाडिस्सुइअं-** प्रातिश्रुतिकं-अभिनयविशेषः। जम्बू० १२।  
**पाडिहर-** प्रातिहार्यम्। दशवै० ४८।  
**पाडिहारिक-** प्रत्यर्पणीयः। निशी० १६७ आ।  
**पाडिहारितं-** गिहिसंतिय उवकरणं पडिहरणीयं  
पाडिहारितं। निशी० ७३ आ। प्रतिह्रियते-प्रतिनीयते  
यत्तत्प्रतिहा-रप्रयोजनत्वात् प्रातिहारिकम्। स्था० ३१२।  
**पाडिहारिय-** प्रत्यर्पणं तदर्हं प्रातिहारिकम्। बृह० २९ आ।  
अधुवं। निशी० ११७ आ। प्रातिहारिकः-पुनः सम-  
र्पणीयः। राज० १२८। प्रातिहारिकं पुनः समर्पणीयम्।  
जाता० १०७।  
**पाडिहारेय-** प्रतिहारिकः-सागारिकभुक्तशेषः। व्यव० ३३६  
आ।  
**पाडिहेर-** प्रतिहारो-दौवारिकस्तद्वत्सदा  
सन्निहितवृत्तिर्देवता-विशेषोऽपि प्रतिहारस्तस्य कर्म  
प्रातिहार्यम्। उत्त० ३५४। प्रातिहार्यम्। आव० २९५।  
**पाडिहेराइं-** प्रातिहार्यानि-

यथाभिलषितार्थोपढौकनलक्षणानि। बृह० २६७ आ।  
**पाडिहेरिए-** प्रातिहारिकं भूयोऽप्यस्माकं प्रत्यर्पणीयम्।  
बृह० २०० आ।  
**पाडुच्चिया-** बाह्यवस्तु प्रतीत्य-आश्रित्य भवा  
प्रातीत्यकी। स्था० ४२। जीवादीन् प्रतीत्य या। स्था०  
३१७। प्राती-त्यकी-विंशतिक्रियामध्येऽष्टमी। आव०  
६१२।  
**पाडेइ-** पातयति निर्यातयति। बृह० १४९ आ।  
**पाडेक्क-** प्रत्येक-एकैकशः। औप० ६१।  
**पाढ-** पाठः-पठनं पठ्यते वा तदिति पाठः, पठ्यते  
वाऽनेना-स्मादस्मिन्निति वाऽभिधेयमिति पाठः  
व्यक्तीक्रियते इति। आव० ८६।  
**पाढडिओ-** पाठार्थी। ओघ० ६५।  
**पाढव-** पार्थवमिव पार्थिव शीतोष्णादिपरिहसहिष्णुतया  
समदुःखसुखतया च पृथिव्यामिव भवं पार्थिवम्। उत्त०  
१८६। पृथिव्या विकारः पार्थिवः, स चेह शैलः, ततश्च  
शैले-शीराप्त्यपेक्षयाऽतिनिश्चलतया  
शैलोपमत्वात्परप्रसिद्ध्या वा पार्थिवम्। उत्त० १८६।  
**पाढा-** साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। प्रज्ञा० ३४।  
पाठा -वनस्पतिविशेषः। प्रज्ञा० ३६४।  
**पाढाणं-** देशविशेषः। भग० ६८०।  
**पाढामिए-** वनस्पतिविशेषः। भग० ८०४।  
**पाढी-** पाठी यः सकलं वाहडादि पठति स। पाठी-सकलं  
वाहडादि पठति स। ओघ० ४२।  
**पाढेह-** वनस्पतिविशेषः। भग० ८०४।  
**पाणंधि-** (देशीपदं) वर्त्तिली। व्यव० १७७ आ।  
**पाण-** पानं-सुरादि। सूर्य० २९३। पानम्। आव० ११५। पानं  
-मद्यम्। प्रश्न० १६३। पानं-पेयमुदकादि। आव० ८१९।  
अनुयो० २१७। चाण्डालः। आव० ४०१। चाण्डालः। व्यव०  
५२ आ। पाणः-चाण्डालः। आव० ७१७। पाणः-मातङ्गः।  
आव० ७४३। पाणः-भाजनविशेषः। अनुयो० ५। पानः-  
पायामादि। उत्त० २६९। पानं-द्राक्षपानादि। आव० ८११।  
गुल्मविशेषः। प्रज्ञा० ३२। मातङ्गः। स्था० २६४।  
चाण्डालः। भग० १६४। उडुम्बरः। व्यव० २४७ आ। पानं-  
सुरादि। भग० ३२६। पीयते तत् पानं मृद्वीकापानादि।  
दशवै० १४९। उच्छवासनिःश्वासो य इति गम्यते एषः  
प्राणः। जम्बू० ९०। गुच्छाविशेषः। प्रज्ञा० ३२। पानं-

धान्यरस-संस्कृतं जलम्। उपा० २२। पानं-सुरादि। स्था० ११९। पानं-आचाम्लादि। उत्त० ५२४। पीयत इति पानं खर्जूर-रसादिः। उत्त० ६०७। प्राणिः-द्वीन्द्रियादिः। दशवै० १५६।

**पाणक्कमणं**— द्वीन्द्रियादित्रसप्राणिनां आक्रमणं-पादेन पीडनं प्राण्याक्रमणम्। आव० ५७३।

**पाणक्खय**— प्राणक्षयः-बलक्षयः। १९७।

**पाणग**— पानकं-द्राक्षापानकादि। सूर्य० २९३। पानकं-द्राक्षा-पानकादि। प्रश्न० १६३। पानकं-काञ्जिकम्। पिण्ड० १७। पानक-द्राक्षापानकादि। भग० ३२६। जलविशेषः। भग० ६८४। पानकं-आचाम्लम्। ओघ० १३३। पानकं-द्राक्षापानकादि। स्था० ११९।

**पाणगजाय**— पानकजातं-पानीयसामान्यम्। आचा० ३४६। पानकाक्षणिकम्। ओघ० १०४।

**पाणगारं**— जत्थ पाणियकम्मं तो सुरामधुसीधुखंडं मच्छंडि-यमुदियापभित्तीणि पाणगाणि। निशी० २७२ आ।

**पाणगोरि**— कल्लालावणे। निशी० ६६ आ।

**पाणजाइया**— प्राणिजातयः-भ्रमरादिकाः। आचा० ३०२।

**पाणत**— एकोनविंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम० ३७।

**पाणपीय**— प्राणप्रीतः-उश्र्वाच्छवासादिप्राणप्रियः प्राणपीतः भक्षितप्राणः। प्रश्न० ५९।

**पाणभोयणविप्परियासिया**— पानभोजनवैपर्यासिकी-रात्रौ पानभोजनपरिभोग एव तद्विपर्यासः। आव० ५७५।

**पाणभोयणा**— प्राणिनो-रसजादयः भोजने दध्यौदनादौ सङ्घ-वृयन्ते-विराध्यन्ते व्यापाद्यन्ते वा यस्यां प्राभृतिकायां सा प्राणिभोजना। आव० ५७५।

**पाणमंति**— प्राणन्ति। भग० १९। “णमु प्रहवत्त्वे” इत्येतस्याऽ-नेकार्थत्वेन श्वसनार्थत्वात् प्राणमन्ति। भग० १९। प्राणन्ति अन्तःस्फुरन्ती निःच्छवासक्रियां कुर्वन्ति। प्रज्ञा० २१९।

**पाणयं**— प्राणमन्ति-द्विपृष्ठवासुदेवागमनम्। आव० १६३।

**पाणया**— प्रानताः-कल्पोपपन्नवैमानिकभेदः दशमवैमानिकः। प्रज्ञा० ६९।

**पाणयावडिंसए**— प्राणतावतंसकः-प्राणतदेवलोकस्य

मध्येऽव-तंसकः। जीवा० ३९२।

**पाणवत्तियाए**— प्राणसंचारणार्थम्। ओघ० १८९।

**पाणवह**— प्राणवधः-प्राणिघातः। प्रश्न० ५।

**पाणवाडग**— चाण्डालपाटकः। उत्त० २६३।

**पाणविहि**— पानविधिं दकमृत्तिकालया प्रसादितस्य सहजनि-र्मलस्य तत्तत्संस्कारकरणं, अथवा जलपानविधिं जलपान-विषये गुणदोषविज्ञानम्। जम्बू० १३७।

**पाणसाला**— जत्थ उदगादिपाणं सा। निशी० २७२ आ।

**पाणसुहुम**— प्राणिसूक्ष्मं-अनुद्धरिः कुन्थुः। दशवै० २३०। प्राणसूक्ष्मं-अनुद्धरिः कुन्थुः। स्था० ४३०। अणुधरी कुन्थु जा चलमाणावि नाविज्जइ ठिरा दुच्चिभवो एयं तं। दशवै० १२१।

**पाणा**— प्राणाः-सत्त्वाः। आचा० ३६। प्राणाः-द्वित्रिचतुरिन्द्रियाः। जम्बू० ५३९। ये ग्रामस्य नगरस्य च बहिराकाशे वसन्ति तेषां गृहाणामभावात् प्राणा। व्यव० २८५। प्राणाः-द्वीन्द्रियादित्रसाः। प्रश्न० १५७। प्राणाः-द्वित्रिचतुरिन्द्रियाः। प्रज्ञा० १०७। प्राणाः-द्वीन्द्रियादयः। प्रज्ञा० ४३५। ये ग्रामस्य नगरस्य च बहिराकाशे वसन्ति तेषां गृहाणामभावात्। व्यव० २३१। प्रकर्षणानन्तीति-श्वसनन्तीति प्राणाः-द्वीन्द्रियादयः। उत्त० ३७०। हृष्टस्य अनवकल्पस्य निरुप-विलष्टस्य च जन्तोरेक-उच्छवासयुक्ता निःश्वासाः प्राणाः। अनुयो० १७९। द्वीन्द्रियादयः। स्था० १३६। प्राणाः-पृथ-व्यप्तेजोवायुवनस्पतयः द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियाश्चेन्द्रियबलोच्छव-वासनिश्वासायुष्कलक्षणप्राणधारणात् प्राणाः। आचा० १७९। प्राणाः-प्राणिनः। आचा० ३४०। प्राणाः-उच्छवासादयो बलं वा। स्था० ३६०। जातिजुंगितविसेसो। निशी० ४३ आ। मातङ्गा। बृह० १५२ अ। मातङ्गा। निशी० ७२ आ। प्राणा-‘द्वित्रिचतुः प्रोक्ताः’। ज्ञाता० ६०। प्राणिनः-द्वित्रिचतुरिन्द्रियः। आचा० ७१। प्राणा-प्राणीद्वीन्द्रियादि-त्रसः। आव० ५७३। प्राणिनः-पृथिव्यादयः। ओघ०। प्राणिन्-दशविधाः प्राणाः विद्यन्ते येषां ते प्राणिनः ते। सामान्यतः संज्ञिपंचेन्द्रियाः। आचा० २५६।

**पाणाइवाए**— प्रथमं पापस्थानकम्। ज्ञाता० ७५।

**पाणाइवाओ-** पाणाणमइवाओ तेहिं पाणेहिं सह विसंजोकरणं। दशवै० ६५अ।

**पाणाइवाय-** प्राणाः-इन्द्रियादयः तेषामिति पातः प्राणातिपातः जीवस्य महादुःखोत्पादनम्। दशवै० १४४।

**पाणाइवायकिरिया-** प्राणातिपातक्रिया- प्राणातिपातविषया-क्रिया। आव० ६१२। प्राणातिपातिकी-प्राणातिपातः प्रसिद्धस्तद्विषया क्रिया प्राणातिपात एव वा क्रिया प्राणातिपात-क्रिया। भग० १८१।

**पाणाई-** पानकादि। ओघ० ११४।

**पाणाउ-** द्वादशमं पूर्वम्। स्था० १९१। अत्र प्राणिनामायुर्वि-धानं-सभेदमभिधीयते तत् प्राणायुर्द्वादशं पूर्वम्। सम० २६।

**पाणाउपूर्वं-** प्राणा-जीवा आयुश्चानेकधा वर्ण्यन्ते तत्प्राणायुः-द्वादश पूर्वम्। सम० २६।

**पाणाऊ-** प्राणायु-प्राणाः पञ्चेन्द्रियाणि त्रीणि मानसादीनि बलानि उच्छ्वासनिश्वासौ चायुश्च ततो यत्र प्राणा आयुश्च सप्र-भेदमुपवर्ण्यन्ते तदुपचारतः प्राणायुः। द्वादशमं पूर्वम्। नन्दी० २४१।

**पाणागार-** पानागार-मद्यगेहम्। ज्ञाता० ७९। विपा० ५२।

**पाणाच्चए-** प्राणात्यये-अत्यर्थम्। ओघ० १९५।

**पाणाणुकंपा-** प्राणानुकम्पा-दयाप्रकर्षः। ज्ञाता० ६६।

**पाणामा-** प्राणामिकी। आव० २१३। भग० १६१।

**पाणावली-** भाजनविशेषावली। अनुत्त० ५।

**पाणिक्खय-** प्राणिक्षयः-गवादिक्षयः। जम्बू० १२५।

**पाणिपत्तं-** प्राणिमात्रम्। आव० १९१।

**पाणिपरियावन्ना-** पाणिपर्यापन्नां-हस्तस्थिताम्। आचा० ३५७।

**पाणिपिज्जा-** प्राणिपेयः-तटस्थप्राणिपेया नदी। दशवै० २२०।

**पाणियमंचिता-** पानीयमञ्चिका। आव० ८४५।

**पाणियमंडुक्को-** पानीयमण्डूकः। आव० ६४१।

**पाणी-** वल्लीविशेषः। प्रज्ञा० ३२। चाण्डाली। उत्त० ३०१।

**पाणीय-** पानीयं-जलम्। स्था० ११९। पानीयं-जलम्। सूर्य० २९३। पानीयं-जलम्। प्रश्न० १६३। पानीयं-जलम्। भग० ३२६।

**पाणीपाय-** पाणिपात्रः। आव० ३२३।

**पाणु-** प्राणः-मनुष्यादेरेक उच्छ्वासेन सह निःश्वास उच्छ्वास-निःश्वासः य इति गम्यते एषः प्राण इत्युच्यते। भग० २७६।

**पाणू-** नासो। दशवै० ५४अ।

**पाण्डुः-** राजाविशेषः मायारहितः। सूत्र० १७३।

**पाण्डुकम्बला-** शिलाविशेषः। सूर्य० ७८।

**पाण्डुकवनं-** अचलेन्द्रमूढनिस्थितं वनम्। आव० ४७।

**पाण्डुराजः-** हस्तिनागपुरपतिः युधिष्ठिरादिपिता। प्रश्न० ८७।

**पाण्डू-** पाण्डुमृत्तिकानाम देशविशेषे या धूलिरूपा पाण्डू इति प्रसिद्धा। प्रज्ञा० २६।

**पात-** पातः। सूर्य० १०८। पात्रं-भाजनम्। उत्त० २६५।

**पातकहत-** पातकेन-ब्रह्महत्यालक्षणेन मातापित्रादिपातकल-क्षणेन वा हतः पातकहतः। व्यव० ७आ।

**पातन-** गालनम्। निर० ११।

**पातनिका-** अवतरणम्। नन्दी० ७५।

**पाताल-** पातालकलशः। अनुयो० १२१, १७१।

**पाताललङ्कापुरं-** खरदूषणसम्बन्धिपुरम्। प्रश्न० ९।

**पाति-** नृपः। निशी० २४३आ।

**पातीणगामिणी-** प्राचीनगामिनी। आव० २२७।

**पात्रः-** अभिनेतव्यप्रकारः। जम्बू० २६३।

**पात्रकल्पिकः-** कल्पिके भेदः। बृह० १०८अ।

**पात्रपरिकरः-** पात्रनिर्योगः। ओघ० २०८।

**पात्री-** भाजनविधिविशेषः। जीवा० २६६।

**पाद-** पादः-षडङ्गुलप्रमाणः। भग० २७५। प्रातः-प्रभात-समः। सूर्य० ४५। पादो-वृत्तपादः। स्था० ३९७।

**पादकाञ्चनिका-** पादधावनयोग्या काञ्चनमयी पात्री। जीवा० २६६।

**पादकेसरिया-** पात्रकेसरिका-पात्रप्रमार्जनपोतिका। प्रश्न० १५६।

**पादठवणं-** पात्रस्थानं यत्र कम्बलखण्डे पात्रं निधीयते। प्रश्न० १५६।

**पाददरय-** पाददर्दरकं पादेन भूम्यास्फोटनरूपम्। जम्बू० ४१९।

**पादपीठं-** आसनविशेषः। उत्त० ४२३।

**पादपुंछण-** पट्टयदुनिसिज्जवज्जियं रओहरणं। निशी०

१२९ आ। पादपुञ्छनं-पादकम्बलम्। उत्त० ४३४।  
**पादपोषगमन-** अनशनविशेषः। स्था० ५८। अनशनभेदः।  
 स्था० ३६४। तत्र हि सव्याघाताव्याघातभेदतो  
 द्विभेदेऽपि पादपवन्निश्चेष्टतयैव स्थीयते अविचारं  
 अनशनभेदः। उत्त० ६०२।  
**पादबंधन-** पात्रबन्धनं पात्रबन्धः। प्रश्न० १५६।  
**पादबन्धकतन्तुः-** जलचरजन्तुविशेषः। पिण्ड० १०२।  
**पादमूलिया-** पिङ्गिरा। निशी० १४४ अ।  
**पादलिप्तसूरिः-** मुरुण्डेनोपलक्षितसूरिः। पिण्ड० १४१।  
**पादलिप्ताचार्याः-** पाटलिपुरे आचार्यविशेषः। नन्दी०  
 १६२।  
**पादसमा-** पादसमया उच्छवासा-यावद्भिः समयः पादो  
 वृत्तस्य नीयते तावत्समया उच्छवासा गीते  
 भवतीत्यर्थः। स्था० ३९४, ३९६।  
**पादा-** मूलं। दशवै० ५ आ।  
**पादाद्याक्रमणम्-** आगमनम्। उत्त० १५९।  
**पादीणवाह-** प्राचीनवाहः सरस्वत्याः पूर्वादिग्वाहः। बृह०  
 १३६ अ।  
**पादुगालेव-** पादुगालेपः। आव० ४१२।  
**पादुम्भूए-** प्रादुर्भूतः। सूर्य० ३  
**पादाज्जल-** पादोज्ज्वलं-भूषणविधिविशेषः। जीवा० २६९।  
**पादोनपौरुषी-** पूर्वदिक् संबद्धे चतुर्भागेः। उत्त० ५३६।  
**पादोसिय-** प्रादोषिकम्। आव० ८९। प्रादोषिकम्। दशवै०  
 १०३।  
**पाधोवण-** पुणो पुणो पाधोवणं। निशी० ११६ आ।  
**पानोयसामान्यं-** पानकजातम्। आचा० ३४६।  
**पाप-** ऐश्वर्यात् जीविताद्वा भ्रमनं पापम्। निशी० ३०३  
 अ। घुन्नम्। दशवै० २०४।  
**पामा-** कुट्टभेदो। निशी० ६२ अ। निशी० १८८ आ। दशमं  
 क्षुद्रकृष्टम्। आचा० २३५। कच्छूः। भग० ३०८। दशम  
 क्षुद्रकृष्टम्। प्रश्न० १६१।  
**पामिच्च-** उच्छिन्नम्। आचा० ३२५। अपमित्यकं-  
 साध्वर्थ-मुद्धारगृहीतम्। स्था० ४६७। साध्वर्थमन्यत  
 उद्यतकं यद्-गृह्यते तत्। सूत्र० १८०। अपमित्यकं-  
 उद्यतकं-उच्छिन्नम्। प्रश्न० १५४। प्रामित्यं-  
 साध्वर्थमुच्छिद्य दानलक्षणम्। दशवै० १७४।  
 अपमित्यकं-साध्वर्थमुद्धारगृहीतम्। स्था० ४६०।

अपमित्यं-भूयोऽपि तव दास्यामीत्येवमभिधाय  
 साधुनिमित्त-मुच्छिन्नं यद् गृह्यते भक्तादि। नवम  
 उद्गमदोषः। पिण्ड० ३४।  
**पामिच्चित्तं-** उच्छिष्णं। निशी० ६३ अ।  
**पामिच्चेति-** उच्छिष्णं। निशी० १०४ अ।  
**पामूलं-** पादमूलम्। आव० ३९१। पादमूलम्। भक्त०  
**पामोक्ख-** उत्तरं-आक्षेपस्य परिहारः। ज्ञाता० १४९।  
**पायंक-** पादाङ्क-मुद्राविशेषः। आव० ४३२।  
**पायंचणिउ-** पादकाञ्चनिका पादधावनयोग्या  
 काञ्चनमयी पात्री। जम्बू० १०१।  
**पाय-** पादः-आसन्नलघुपर्वतः। ज्ञाता० ३५। षडङ्गुलानि  
 पादः, पादस्य मध्यतलप्रदेशः, अथवा पादो-  
 हस्तचतुर्थांशः। जम्बू० ९४। प्रातः-प्रभातः। उत्त० ३७०।  
 पादः-श्लोक-पादः। आव० ७९७। पादः-षडङ्गुलानि।  
 अनुयो० १५७। पादः। स्था० २९९। पादः-चतुर्थांशः। सूर्य०  
 १३४। पाक्यं-पाकप्रायोग्यम्। दशवै० २४७। पात्र  
 भाजनम्। आचा० ३३२। पादः-मूलपादः। जम्बू० २८५।  
 पादं-गाथादिच-तुर्थांश रूपम्। अनुयो० २३३। पाप-  
 अधोभागः। ज्ञाता० २८।  
**पायओ-** घोषणा। आव० ४१९।  
**पायकंबल-** पादकम्बलं-पादपुञ्छनम्। उत्त० ४३४।  
**पायकेसरिया-** पात्रकेसरिका-पात्रप्रत्युपेक्षणिका। बृह०  
 २३७ अ। पात्रकेसरिका-पात्रकमुखवस्त्रिका। ओघ० २०८।  
**पायकुक्कडसामवन्ना-** पादकुक्कुटः-कुक्कुटविशेषः  
 तद्वत् श्यामवर्णः। ज्ञाता० २३०।  
**पायखज्ज-** पाकखाद्यं-बद्धास्थी। दशवै० २१८।  
 पाकखाद्यं-बद्धास्थी। आचा० ३९१।  
**पायगो-** पादपः-लघुवृक्षः। आव० ६८९।  
**पायच्छित्तं-** पापं छिनत्तीति पापच्छित्, यथावस्थितं  
 प्रायश्चित्त-तत्तुद्धमस्मिन्निति प्रायश्चित्तम्। दशवै०  
 ३०। पादच्छित्तं-चक्षु-दोषपरिहारार्थं पादेन पादे वा  
 छुप्तम्। भग० १३७। पापच्छेदक प्रायश्चित्तविशोधकं  
 वा। स्था० १३७। पापच्छेदकत्वात्  
 प्रायश्चित्तविशोधकत्वाद्वा प्राकृते प्रायश्चित्तमिति।  
 शुद्धिः उच्यते तद्विषयः शोधनीयातिचारोऽपि  
 प्रायश्चित्तम्। स्था० १६०। प्रायश्चित्तं-अभ्यन्तरतपे  
 प्रथमम्। भग० ९२२। प्रायश्चित्तं-अतिचारविशुद्धिः।

औप० ४१। प्रायश्चित्तम्। आव० ५२। पापं छिनत्ति प्रायश्चित्तं वा विरोधयतीति नैरु-क्तविधिना प्रायश्चित्तम्। उत्त० ५८३। पापं-कर्मोच्यते तत् पापं छिनत्ति यस्मात् कारणात् प्राकृतशैल्या पायच्छित्तम्। संस्कृते तु पापं छिनत्तीति पापच्छिद्युच्यते, प्रायसो वा चित्तं जीवं शोधयति कर्ममलिनं विमलीकरोति तेन कारणेन प्राय-श्चित्तम्। प्रायो वा-बाहुल्येन चित्तं स्वेन स्वरूपेण अस्मिन् सतीति प्रायश्चित्तम्। आव० ७८२। प्रायश्चित्तं-अपराध-शुद्धिः। भग० ९२४।

**पायच्छित्तकरणं**— प्रायश्चित्तकरणम्। आव० ७७९। प्रायश्चित्तकरणं-योगसंग्रहे एकत्रिंशत्तमो योगः। आव० ६६४।

**पायच्छिरा**— पादशिरा। आव० ३७१।

**पायठवणं**— पात्रस्थापनकं-कम्बलमयं पात्रस्थापनम्। बृह० २३७ अ।

**पायड**— प्रकटम्। आव० ५२०। प्रकटः

तथाविधविशिष्टवचन-रचनाविशेषतः सुखप्रतिपादयो योऽक्षरेष्वव्याख्यातेष्वपि पायः स्वयमेव परिस्फुरन्निव लक्ष्यते स प्रकटः। पिण्ड० २८।

**पायत्त**— पदातीनां पत्तीनां समूहः पादातम्। स्था० ३०३। पादातं-पत्तिसमूहः। भग० ४७९। पादातीनां-समूहः पादातम्। उत्त० ४३८। पादात्तं तेयविशेषः। जम्बू० ४२३।

**पायत्ताणीयं**— पाङ्ककबलदरिसणा पायत्ताणीयं। निशी० ७१ अ।

**पायदद्वर**— पाददर्दरः-पापप्रहारः। औप० ६०।

**पायदद्वरग**— पाददर्दरक-भूमेः पादेनास्फोटनम्। भग० १७५।

**पायदद्वरय**— पाददर्दरकम्। जीवा० २४७।

**पायनिज्जोग**— पात्रनियोगः-पात्रपरिकरः। ओघ० २०८।

**पायनियोग**— पात्रनिर्योगः। बृह० ८६ अ।

**पायपडिलेहणीआ**— पात्रकप्रत्युपेक्षणिका-पात्रकमुखवस्त्रिका। ओघ० २१२।

**पायपरियावन्न**— पात्रपर्यापन्ना-पात्रस्थिता। आचा० ३५७।

**पायपीढ**— पादपीठः-पदासनम्। ज० १८७।

**पायपुञ्छन**— पादपुञ्छनकं-रजोहरणम्। ओघ० १७५। पाद-प्रोञ्छनं-रजोहरणम्। स्था० ३०५। पादपुञ्छनम्।

अनुयो० २५३। पादपुञ्छनकं-रजोहरणम्। आचा० २४०। पापप्रो-ञ्छनं-रजोहरणम्। ज्ञाता० २०९। पादप्रोञ्छनकं-रजोहरणम्। राज० १२३। पादप्रोञ्छनं-रजोहरणम्। प्रश्न० १२०। पादपुञ्छनं-आसनविशेषः। उत्त० ५५। पादप्रोञ्छनं-रजो-हरणम्। भग० १३६। पादपुञ्छनं-रजोहरणम्। दशवै० १९९। पादप्रोञ्छनम्। आव० ७९३। पादपुञ्छनम्। आचा० ४०९। पादप्रोक्षणम्। औप० १००।

**पायपोपगमण**— अनशननिनः पादपस्येवोपगमनं-सामीप्येन वर्तनं पादपोपगमनम्। दशवै० २६।

**पायपोसं**— अपानदारं। निशी० १५० अ।

**पायबद्धं**— पदवृत्तादिचतुर्भागमात्रे पादे बद्धं-उत्क्षिप्तकं, प्रथमतः समारभ्यमाणम्। जम्बू० ३९।

**पायभूमीए**— । निशी० ११० अ।

**पायमूल**— पादमूल-मूलभूमी। ज० २७७।

**पायय**— पात्रकं-समाधिस्थानम्। आचा० ४११। प्राकृतः। ज्ञाता० ५०। प्राकृतः। मरण०।

**पायरास**— प्रातराशं-प्राभातिकं भोजनकालम्। ज्ञाता० १५०। प्रातराशः-प्रातरशनम्। आव० १३६। प्रातरशनं-प्रातराशः। आचा० १३०।

**पायलित्तायरियं**— आयरियविसेसो। निशी० ३०२ अ।

**पायलेहणिया**— पादलेखनिका-वटौदुबरप्लक्षाम्लिकाकाष्टमयी वर्षासु पादकर्दमापनयनी। बृह० २५३ अ।

**पायल्लग**— हथियारविशेषः। निशी० १०५ अ।

**पायवगमण**— पादपस्येवोप-सामीप्येन गमनं-वर्तनं पादपोप-गमनम्। आचा० २६२।

**पायविक्रंभ**— पादविष्कम्भं-पानीयम्। आव० ३८८।

**पायवीढग**— पादशीर्षकं-पादानामुपरितनोऽवयविशेषः। जीवा० २१०।

**पायसंखा**— पादसङ्ख्या-गाथादिचतुर्थांशरूपसङ्ख्या। अनुयो० २३३।

**पायसंहरण**— पादं प्राणिनि निपतन्तं धारयतीत्यर्थः। ओघ० १२७।

**पायस**— परमान्नम्। जीवा० २६८।

**पायसमास**— पादसमासो-गाथापादसंक्षेपः। आचा० १८७।

**पायसीसग**— पादशीर्षकं-पादस्योपरितनाऽवयविशेषः। जम्बू० ५५।

पायहंसा- लोमपक्षीविशेषः। प्रज्ञा० ४९।

पायहर- विद्धपादः। मरण० ।

पायाल- पाताल-समुद्रजलतलम्। प्रश्न० ६२। पातालः-  
पातालकलशः वलयामुखप्रभृतिः। प्रज्ञा० ७१।  
महापाताल-कलशः वलयामुखादिः। भग० ४३६।  
पातालः-समुद्रः। सूत्र० ८६। पातालः-पातालकलशः।  
प्रश्न० ६२।

पायावच्च- प्राजापत्यः। जम्बू० ४९३। निशी० ११८आ।  
निशी० ७८आ।

पायावरणा- पात्रावरणं-स्थगनपटलम्। ओघ० २१३।

पारंचि- प्रायश्चित्ते दशमो भेदः। स्था० २००।  
सर्वोपरितमं प्रायश्चित्तम्। पारं-  
प्रायश्चित्तान्तमञ्चति-गच्छतीति पारिञ्चि-कम्।  
पुरुषविशेषस्य स्वलिङ्गराजपत्न्याद्यासेवनायां यद्  
भवति। आव० ७६४।

पारंचिय- पाराञ्चिको-बहिर्भूतः क्रियते तत्। स्था० ४८७।  
दशमप्रायश्चित्तभेदवन्तमपहृतलिङ्गादिकमित्यर्थः।  
स्था० ३००। पारं-तीरं तपसा अपराधस्याञ्चति गच्छति  
ततो दीक्ष्यते यः स पाराञ्चो स एव पाराञ्चिकः तस्य  
यदनुष्ठानं तच्च पाराञ्चिकं, दशमं प्रायश्चित्तं,  
लिङ्गक्षेत्रकालतपोभिर्बहिः करणमिति भावः। स्था०  
१६३।

पारंचियारिह- दशविधप्रायश्चित्ते दशमम्। भग० ९२०।

पारञ्चिकार्ह- तपोविशेषेणैवातिचारपारगमनम्। औप०  
४२।

पारंपरप्पसिद्धी- पारम्पर्यप्रसिद्धि-स्वरूपसत्ता। आव०  
५३३।

पार- पारः-मोक्षः संसाराटवितटवृत्तित्वात्कारणानि  
ज्ञानदर्श-नचारित्राण्यपि पारः। आचा० ११३। तटः।  
आचा० १२४। ज्ञानदर्शनचारित्रम्। आचा० ११४। क्षयः-  
आयुष्कपुट्गलानां क्षयः-मरणम्। आचा० २९५। निष्ठा।  
आव० २६९। निर्वाणम्। बृह० २०१आ। मोक्षम्। बृह० ५१  
आ।

पार- पारगः-पारगामी। ज्ञाता० ११०। पारगः-पारगामी।  
भग० ११२।

पारग- पारगः-सर्वेषां संशयानां छेदकः। प्रश्न० १५७।  
पारगः-सम्यग्वेत्ता, आचा० २९०।

पारग- संसारसागरस्य पारंगतः। भग० १११।

पारगय- पारगतं-इन्द्रियविषयात्परतोऽवस्थितम्। भग०  
२१७। पारं-पर्यन्तं संसारस्य प्रयोजनव्रातस्य वा गत  
इति पारगतः। प्रज्ञा० ११२।

पारणय- यत्पार्यते-पर्यन्तः क्रियते  
गृहीतनियमस्यानेनेतिपा-रणं तदेव पारणकं-भोजनम्।  
उत्त० ३६९।

पारणा- तपसः श्रुतस्कन्धादिश्रुतस्य वा पारगमनम्।  
प्रश्न० १२९।

पारत्त- परत्र। तन्दु० ।

पारत्तगुण- परत्रगुणः-ग्लानादिप्रतिजागरणादिकः।  
ओघ० ३९।

पारत्तियं- पारत्रिकम्। आव० ४०५।

पारद- सासगम्। प्रज्ञा० २७।

पारदारिय- पारदारिकः-परेषां दारेषु रतः। दशवै० ४२।  
ज्ञाता० २३६।

पारदोच्चा- चौरभयम्। बृह० २२८आ।

पारद्ध- उपसर्गयितुं प्रारब्धः। आव० ४११। प्रारब्धः अभि-  
भूतः अपराद्धो वा। प्रश्न० ६०। प्रारब्धः। आव० ४११।  
प्रारब्धः-हन्तुमारब्धः। आव० ६७१। प्रारब्धं-आरब्धम्।  
ज्ञाता० २२।

पारपाणग- पाणगविशेषः। ज्ञाता० २२९।

पारमाणि- परमक्रोधसमुद्घातं व्रजतीति भावः। स्था०  
१६६।

पारयित्वा- भोजयित्वा। ओघ० ६६।

पारलोडय- पारलौकिकं दानादि। दशवै० १२६।

पारस- पारसः-चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः। प्रश्न०  
१४। म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५। पारसदेशजः-पारसीकः।  
जम्बू० ११९।

पारसकुलं- साहिरण्णस्स रायहाणी। निशी० ३०४आ।

पारसविसओ- पारसविषयः-वैनयिकीबुद्धौ लक्षणे  
देशविशेषः। आव० ४२४।

पारसी- धात्रीविशेषः। ज्ञाता० ४१। देशविशेषः। भग०  
४६०।

पारसीक- अश्वस्वामी। नन्दी० १६१।

पाराइ- लोटकुसीविशेषः। प्रश्न० ५७।

पाराए- पारे महानदीपूरम्। आचा० ११३।

परलोकसुखभाजः। सू० २१०।  
 पारापत- पानार्थिनः, पक्षिविशेषः। आचा० ३१४।  
 पारायणं- नाम सूत्रार्थतदुभयानां पारगमनम्। व्यव० १  
 अ। सूचकाद्याः परिपाट्यः। व्यव० २५७।  
 पारासर- पाराशरः-महर्षिर्यः  
 शीतोदकबीजहरितादिपरिभोगा-त्सिद्धः। सूत्र० ९५।  
 पारासरः-शरभः। ज्ञाता० ६५। महा-कायः  
 आटव्यपशुविशेषः यो हस्तिनमपि पृष्ठे समारोपयति।  
 प्रश्न० ७। वाशिष्ठगोत्रे सप्तमभेदः। स्था० ३९०।  
 पारासरढढण- अलाभसहः। मरण० ।  
 पारि- दुग्धभरणमानविशेषः। पिण्ड० १११।  
 पारिआसिए- परिवासित-ह्यस्तनमित्यर्थः। भग० ६९१।  
 पारिओसियं- पर्युषितम्। आव० ९५।  
 पारिच्छं- जं परिच्छज्जति तं च रयणमादि। निशी० ८९  
 आ।  
 पारिजाणिए- परियानप्रयोजनाः पारियामिकाः। भग०  
 ५४७।  
 पारिजातकुसुमं- कुसुमविशेषः। जीवा० १९१।  
 पारिङ्गावणिया- परितः-सर्वैः प्रकारैः परिस्थापनं-अपुनर्ग्रह-  
 णतया न्यास इत्यर्थः। तेन निर्वृत्ता पारिस्थापनिकी।  
 आव० ६१९।  
 पारिङ्गावणियागारो- पारिष्ठापनिकाकारः। आव० ८५३,  
 ८५४।  
 पारिणामिय- परिणमनं-परिणामः स एव पारिणामिकः।  
 भग० ६४९। परिणमनं-तेन तेन रूपेण वस्तूनां भवनं  
 परिणामः, स एव तेन वा निर्वृत्तः पारिणामिकः।  
 अनुयो० ११४।  
 पारिणामिया- परिः-समन्तान्नमनं परिणामः-  
 सुदीर्घकालपूर्वापरार्थावलोकनादिजन्म आत्मधर्म  
 इत्यर्थः, स कारणम-स्यास्तत्प्रधाना वा पारिणामिकी  
 बुद्धिः, बुद्धेः चतुर्थो भेदः। आव० ४१४। पारिणामिकी-  
 प्रायो वयोविपाकजन्या। राज० ११६।  
 पारितापणिया- परितापनं-ताडनादिदुःखविशेषलक्षणं तेन  
 निवृत्ता परितापनिकी। सम० १०। परितापनं-ताडनादि-  
 दुःखविशेषलक्षणं तेन निर्वृत्ता पारितापनिकी क्रिया।  
 आव० ६१२।  
 पारिप्पव- पारिप्लवः-पक्षिविशेषः। प्रश्न० ८।

पारिप्पवा- लोमपक्षिविशेषः। प्रज्ञा० ४९।  
 पारिप्लवः- उद्भिज्जपक्षिविशेषः। दशवै० १४१।  
 पारिभाषिकसंज्ञा- रूढसंज्ञा कल्पितसंज्ञा वा। भग० २२५।  
 पारियल्लं- बाह्यपृष्ठस्य बाह्यभूमिः। नन्दी० ४३।  
 पारियाणिए- पारियानिकं उद्यानादिगमनार्थो रथः। बृह०  
 २३३ आ।  
 पारियावणिया- परितापनं-परितापः पीडाकरणं तत्र भवा  
 तेन वा निर्वृत्ता तदेव वा पारितापनिकी, क्रियाविशेषः।  
 भग० १८१। परितापनं-ताडनादिदुःखविशेषलक्षणं तेन  
 निर्वृत्ता पारितापनिकी। स्था० ४१।  
 पारियासियं- णाम रातो पज्जुसियं। निशी० ५० आ।  
 पारिवय- पारापतः। व्यव० २०४ अ।  
 पारिसाडणिया- परिशाटः-उज्झनलक्षणः प्रतीप एव  
 तस्मिन् भवा परिशाटनिका। आव० ५७६।  
 पारिसाडि- परिशाटिः। आव० ७११।  
 पारिहट्ट- पड्डिच्छं। ओघ० ४१।  
 पारिहत्थिय- प्रकृत्यैव दक्षः  
 सर्वप्रयोजनानामकालहीनतया कर्तृत्ति। स्था० ४५२।  
 पारिहारिकाणि- स्थापनाकुलानि कुत्सितानि कुलानि  
 जुगुप्सितानि। बृह० ७१ अ।  
 पारिहारिय- पारिहारिकः-परिहरणं परिहारस्तेन चरति  
 पारिहारिकः-पिण्डदोषपरिहरणाद्युक्तविहारो साधु  
 इत्यर्थः। आचा० ३२४।  
 पारिहिड्डीक्षीरं- पड्डिच्छिक्षीरम्। ओघ० ४८।  
 पारिहेरग- पारिहार्य-वलयविशेषः। जम्बू० १०६।  
 पारी- पारी-स्नेहभाण्डम्। जम्बू० १०१। भाजनविधि-  
 विशेषः। जीवा० २६६।  
 पारुक्खं- यदिन्द्रियद्वारेण मनोद्वारेण वाऽऽत्मनो  
 ज्ञानमुपजायते तत्परोक्षम्।  
 पृष्ठोदरादित्वात्परशब्दात्परः सकारागमः, परैर्द्र-  
 व्येन्द्रियमनोरुक्षा-सम्बन्धो यस्मिन् तत्परोक्षम्। बृह०  
 पृ० ८ अ। परोक्षं-पुनरक्षस्य वर्तमानं ज्ञानं भवति। बृह०  
 ८ अ।  
 पारुद्धरुद्ध- परुद्धरुद्धः- अतिरुद्धः। सम० ११७।  
 पारेवत- विश्रसागतौ फलविशेषः। प्रज्ञा० ३२८।  
 पारेवय- पारापतः पक्षिविशेषः। उत्त० ६५३। लोमपक्षिवि-  
 शेषः। जीवा० ४१। पारापतः-फलविशेषः। प्रज्ञा० ३६५।

**पारेवयग-** पारापतकः-पक्षिविशेषः। प्रश्न० ८।  
**पारेवयगोवा-** पारापतग्रीवा, नीललेश्यावर्णः। प्रज्ञा० ३६०।  
**पारेवया-** लोमपक्षिविशेषः। प्रज्ञा० ४९।  
**पारोकसी-** परोक्षेषु विषयेषु भवं पारोक्ष-परोक्षविषयं ज्ञानं तदस्यास्तीति पारोक्षी। व्यव०।  
**पार्यते-** पर्यन्तः क्रियते। उत्त० ३६९।  
**पार्ष्णि-** गृह्णति पार्श्वतो ग्रामेषु यथास्वेच्छ विहरति। बृह० ५१८ आ।  
**पार्ष्णिः-** गुल्फयोरधोरभागः। नन्दी० १६१।  
**पार्ष्णित्र-** चर्मकोशः। आचा० ३७०।  
**पालक-** शाकविशेषः (महाराष्ट्रीयः) बृह० ३१४।  
**पालम्ब-** प्रालम्बं-तपनीयमयो विचित्रमणिरत्नभक्तिचित्र आत्मप्रमाण आभरणविशेषः। जम्बू० २७५। प्रालम्बं भूषणविधिविशेषः। जीवा० २। प्रालम्बं-दीर्घम्। भग० ३१९। प्रालम्बः-आप्रदीपन आभरणविशेषः। आचा० ३६३। प्रालम्बः-तपनीयमयो विचित्रमणिरत्नभक्तिचित्र आत्मनः प्रमाणेन स्वप्रमाण आभरणविशेषः। जीवा० २५३। प्रालम्बते इति प्रालम्बः-पदकः। राज० १६। प्रालम्बं-झुक्तुम्बनकम्। ज० १०६।  
**पालम्बसुत्त-** भूषणविशेषः। आचा० ४२३।  
**पाल-** हस्तिपालः। बृह० २३१ आ।  
**पालइत्ता-** पालयित्वा अतिचाररक्षणेन, परावर्तनादिना अभिरक्ष्य। उत्त० ५७२।  
**पालए-** खंदगगच्छमारगो। निशी० ३०३ अ।  
**पालओ-** पालकः। आचा० १२४।  
**पालक-** पालकः-विमानविशेषः। औप० ४२। स्कन्दका-चार्यस्य विरूपं कर्ता। सूत्र० २३९। द्रव्यसङ्कोचो न भावसङ्कोच इत्येकः, यथा पालकस्य। आव० ३७९। जन्माभिषेकागमनविमानकारकः देवविशेषः। ज्ञाता० १२७। द्रव्यसङ्कोचो न भावसङ्कोचे दृष्टान्तः जम्बू० १०। यानविमानम्। प्रश्न० ९५।  
**पालकी-** हरितभेदः। आचा० ५७।  
**पालक्का-** हरितविशेषः। प्रज्ञा० ३३।  
**पालग-** पालकः-स्कंधकादिपञ्चशतमुनिघातको मन्त्री। उत्त० ११४। वासुदेवपुत्तो भक्तिबहुमाणचउभंगे पढमभंगे दिङ्गेतो। निशी० ८ अ। पालकविमानकारकः। भग० ७००। पालको। निशी० ८ अ।

पालकविमानकारकः। भग० ७००। पालको नाम मरुकः पुरोहितः। व्यव० ५३२ अ। पालक-ग्रामविशेषः। आव० २२५। पालकः-अजातोदाहरणे प्रद्योतजेषुपुत्रः। आव० ६९९। पालकः-कालिकपुत्रः। आव० ६८१।  
**पालत-** पालकं-पालकदेवनिर्मितं सौधर्मन्द्रसम्बन्धियानम्। स्था० २५०।  
**पालय-** पालकं-यानविमानं-सौधर्मन्द्रसम्बन्ध्याभियोगिक-पालकाभिधानदेवकृतं वैक्रियम्। सम० २। पालकः-अभि-योगिको देवः। जम्बू० ३९६। पालकः-कृतिकर्मदृष्टान्ते मुखो वासुदेवपुत्रो द्रव्यवन्दकः। आव० ५१५। पालकः-कृतिकर्मणि पञ्चमो दृष्टान्तः, द्वारिकायां वासुदेवपुत्रो द्रव्यवन्दकः। आव० ५१५।  
**पालयित्थ-** पालितवन्तः। स्था० ७६।  
**पालयित्वा-** तद्विहितानुष्ठानस्यातिचाररक्षणेन। उत्त० ५७२।  
**पालविहि-** सप्तदशमकला। ज्ञाता० ३८।  
**पालाआ-** पालका-महत्तरिका। व्यव० ३५ आ।  
**पालासय-** संनिवेसविशेषः। भग० ५०२।  
**पालि-** पालिः-सेतुः। राज० ११३।  
**पालित-** पादलिप्तः-विद्यामन्त्रद्वारविवरणे सूरिः। पिण्ड० १४२।  
**पालित्तय-** पादलिप्ताचार्यः। बृह० ६९ अ।  
**पालित्तयकए-** पादलिप्तसूरिकृतः। निशी० ११८ आ।  
**पालित्ता-** पादलिप्ताः वैनयिक्यां ग्रन्थविषये आचार्यः। आव० ४२४।  
**पालिय-** पालियः-पुनःपुनरुपयोगप्रतिजागरणेन रक्षितः। आव० ८५१। पुनःपुनरुपयोगप्रतिजागरणेन रक्षितः। स्था० ३८८। पालितं-सततं सम्यगुपयोगेन प्रतिचरितम्। प्रश्न० ११३। पालितः-चम्पायां श्रावकः। उत्त० ४८२।  
**पालि-** संयममहातडागस्यानतिक्रमणलक्षणः सेतुः। वसति। बृह० २०५ अ। पालिः-सेतुः। जीवा० २६०। प्रज्ञा० ८५।  
**पालुंगामहुरय-** 'माहुरय'ति अनम्लरसानि शालनकानि 'पालङ्ग'ति वल्लिफलविशेषश्च। उपा० ४।  
**पालु-** अपानं। निशी० १८९ आ।  
**पालेइ-** असकृदुपयोगेन पालयति प्रतिजागरणात्। भग०

१२४। सततोपयोगप्रतिजागरणेन रक्षति। उपा० १५।  
**पालेति-** पालयति-असकृदुपयोगेन प्रतिजागरणात्।  
 जात० ७२।  
**पाव-** पातं-पांशयतीति पापं, पिबति वा हितम्, कर्म वा।  
 आव० ४०७। पापं-कर्म। आव० ७८२। पापं-पांशूलकरा-  
 कीर्णत्वादिभिरशोभनम्। उत्त० ११०। वल्लीविशेषः।  
 प्रजा० ३२। पापं-पापानुष्ठानम्। आचा० २६८। पातयति,  
 पासय-तीति पापम्। आचा० ११५। पापम्। आव० ७८२।  
 पापं-क्लिष्टं-ज्ञानावरणादि। दशवै० १५६। पापं-  
 घातिकर्मम्। स्था० ५२६। पातयति नरकादाविति पापम्।  
 आव० ८३०। पापः-कर्मः। उत्त० ५९२। पापः-अपुण्यरूपः।  
 जाता० २०५।  
**पावए-** पापकः-अमनोज्ञः। जाता० २३३।  
**पावकम्म-** पापकर्म-ज्ञानावरणादि। औप० ८५। पापकर्म  
 प्राणातिपातादि। भग० ३६। पापकर्म-ज्ञानावरणाद्यशुभं  
 कर्म। भग० ३६। पापकर्म-घातिकर्म सर्वमेव वा  
 ज्ञानावरणादि। स्था० १०१। पापकर्म-ज्ञानावरणादि।  
 जाता० २२१। पापकर्म-ज्ञानावरणीयादि। दशवै० १५२।  
**पावकम्मकरण-** पापकर्मकरणम्, अधर्मद्वारस्य द्वादशं  
 नाम। प्रश्न० ४३।  
**पावकम्मनेम्म-** पापकर्मणां-ज्ञानावरणादीनां मूलम्।  
 प्रश्न० ९६।  
**पापकम्मोवएस-** पापकर्मोपदेशः- पापप्रधानकर्मण  
 उपदेशः। आव० ८३०।  
**पावकारी-** पापकारी-पातकनिमित्तानुष्ठानसेवी। उत्त०  
 २०७।  
**पावकोव-** पापं-अपुण्यप्रकृतिरूपं कोपयति-प्रपञ्चयति-  
 पुष्पात्ति यः सः पापकोपः, पापं चासौ कोपकार्यत्वात्  
 कोपश्चेति वा, प्राणवधस्यैकोनविंशतितमः पर्यायः।  
 प्रश्न० ५।  
**पावग-** पावकं-शुभमनुष्ठानम्। उत्त० ४८। पावकं-  
 अत्यन्त-महितम्। दशवै० १५७। पावकः-अग्निः। उत्त०  
 १३५। पावकं-पापमेव पापकम्। उत्त० ४८। पापकं-  
 अशुभम्। जाता० २०५।  
**पावजीवी-** कौटलाजीवी। व्यव० २५१।  
**पावण-** प्लावनं-रल्लणम्। पिण्ड० ११।  
**पावनुवण-** प्राप्नुवन्-गृह्णन्। जम्बू० ४४६।

**पावपरिक्खेवी-** पापैः-कथञ्चित्समित्यादिषु  
 स्खलितलक्षणैः परिक्षिपति-तिरस्कुरुत इत्येवंशीलः  
 पापपरिक्षेपी। उत्त० ३४५।  
**पावमण-** पापमनाः-अवस्थितमना अनवस्थितमना वा।  
 आव० ३६६।  
**पावय-** पुनातीति पापकः समयप्रसिद्ध्या तु पापहेतुत्वा-  
 त्पापकः। पावकः-लोकप्रसिद्ध्या अग्निः उत्त० १८६।  
 प्राप्नुहि। जाता० ५५।  
**पावयणं-** प्रवचनं-शासनम्। स्था० २४६। प्रावचनं प्रकर्ष-  
 णाभिविधिनोच्यन्ते जीवादयो यस्मिन् तत्प्रावचनम्।  
 प्रागतं। आव० ७६०। प्रशस्तं प्रगतं प्रथमं वा वचनं  
 प्रवचनम्, आगमः। स्था० १७६। प्रवचनं-जैनं शासनम्।  
 जाता० ४७।  
**पावयणि-** प्रावचनी-आचार्यादिर्युगप्रधानः। आचा० ४३८।  
**पावयणी-** प्रावचनिका-प्रवचनार्थकथननियुक्ताः। नन्दी०  
 ५४।  
**पावल्लोभो-** पापलोभः-पापं-अपुण्यं लुभ्यति-प्राणिनि  
 स्निग्धयति संश्लिष्यतीति यावत् यतः सः पापलोभः।  
 पापं चासौ लोभश्चेति वा तत्कार्यत्वात्पापलोभः  
 प्राणवधस्य विंशतितमः पर्यायः। प्रश्न० ५।  
**पावरण-** प्रावारः-प्रावरणविशेषः। जाता० २२९। वस्त्रम्।  
 आचा० ३९३।  
**पावसमण-** पापेन उक्तरूपेणोपलक्षितः श्रवणः पापश्रवणः  
 उत्त० ४३२।  
**पावसमणिज्जं-** पापश्रमणीयं, उत्तराध्ययनेषु  
 सप्तदशममध्य-यनम्। सम० ६४। पापश्रमणीयं-  
 उत्तराध्ययनेषु सप्तदशम-मध्ययनम्। उत्त० ९।  
**पावसुतं-** वागरणादि। निशी० १३ अ।  
**पावसुय-** एकोनत्रिंशत् पापश्रुतप्रसङ्गः। प्रश्न० १४५।  
**पावसुयपसंगा-** पापोपादानानि श्रुतानि पापश्रुतानि तेषु  
 प्रसञ्जनानि प्रसङ्गाः-तथाविधासक्तिरूपाः  
 पापश्रुतप्रसङ्गाः उत्त० ६१७।  
**पावा-** पापा-नगरीविशेषः। आव० २४०। पासयति पातयति  
 वा भवावर्त इति पाप। उत्त० ८८। भङ्गजनपदे  
 आर्यक्षेत्रम्। प्रजा० ५५।  
**पावाइया-** प्रावादिकाः-प्रकर्षण मर्यादया वदितुं शीलं येषां  
 ते प्रवादिनः त एव प्रावादिकाः यथावस्थितार्थस्य

प्रतिपादनाय वावदूकाः। आचा० १८९।

**पावाजीवी-** पापेन-विद्यादिना परद्रोहकरणरूपेण

जीवनशीलाः पापाऽऽजीवीनः। पिण्ड० १४२।

**पावाभिगम-** पापाभिगमः-पापमेवोपादेयमित्यभिगमः।

प्रश्न० १५।

**पावार-** प्रावारः। स्था० २३४। प्रावारः-दुष्प्रतिलेखित-

दूष्यपञ्चके तृतीय भेदः। ६५२।

**पावारग-** प्रावारकम्। आव० ८३३। प्रावारकः-उल्वणरोमा

बृहत्कम्बलः। बृह० २२० अ।

**पाविओ-** प्राप्तः। ज्ञाता० १६९।

**पाविज्जङ-** प्रोज्यते। आव० २७४।

**पाविया-** प्रापयति नरकमिति प्रापिका, पापा एव पापिका,

कुत्सिता, पापहेतुर्वा। उत्त० २९२। पापैव पापिका-

कुत्सिता, उत्त० ३८७।

**पाषाणधातुः-**धातुविशेषः। उत्त० ६५३।

**पासंड-** पाषण्ड-व्रतम्। अनुयो० २५। पाषण्डं-व्रतम्। उत्त०

५०१। पाषण्डः। आव० २२३। लिङ्गिनः। ज्ञाता० १५०।

पाषण्डः-शेषव्रतीः। उत्त० ५०१। पाखण्डं-पाखण्डिजनो-

त्थापितमिथ्यावादः। जम्बू० ६६। पाखण्डः-शाक्यादिः।

जम्बू० १६७।

**पासंडस्थ-** पासण्डस्थः। आव० ३६७।

**पासंडधर्मे-** पाखण्डधर्मः-पाखण्डिनामाचारः। स्था०

५१५।

**पासंडिमिसं-** पाषण्डिमिश्र, मिश्रस्य द्वितीयो भेदः। बृह०

८३ अ।

**पासंडी-** पाषण्डी-पाशाड्डीनः। दशवै० २६२।

**पास-** पश्यति समस्तभावान् केवलालोकेनावलोकत इति

पश्वः। उत्त० २७०। पाशः-द्यूतोपकरणम्, उत्त्रस्ताश्व-

दिबन्धनं वा। औप० ६९। पश्यति सर्व भावानिति

पार्श्वः, त्रयोविंशतितमो जिनः, यस्मिन्, गर्भगते माता

सप्तशिरसं नागं शयनीते निर्विजते दृष्टवती तेन

पार्श्वः। आव० ५०६। पाशः-स्त्र्यादिः। उत्त० २०६।

छिंडिका। बृह० ६० अ। पार्श्वः- आसन्नः। ओघ० १६२।

पार्श्वः-पार्श्वनाथस्तीर्थकरः। भग० २४८। पाशः-

बन्धनम्। भग० ९३। त्रयोविंशतितमतीर्थ-करः। ज्ञाता०

२५३। पाशः-कूटजालः एव बन्धनविशेषः। उत्त० ४६०।

पाशः-बन्धनम्। आचा० ४७। पार्श्वः। स्था० २९९। पाशः-

शकुनिबन्धनविशेषः। प्रश्न० १५। पास-द्यूतोपकरणानि

उत्त्रस्ताश्वदिबन्धनानि वा। जम्बू० २६४।

म्लेच्छविशेषः। प्रजा० ५५।

**पासङ-** पश्यति-अवग्रहेहापेक्षयाऽवबुध्यते। भग० ३५८।

पश्यति-दृशिरूपलब्धिक्रिय इत्यत उपलभते-

अवगच्छति। आचा० १९९।

**पासग-** पश्यतीति पश्यकः-सर्वज्ञः। आचा० १२४। पश्यकः-

सर्वनिराकरणात्पश्यति-उपलभत इति पश्यः स एव

पश्यकः तीर्थकृत्। आचा० १७१। पश्यकः-परमार्थदृशः।

आचा० १४८। ज्ञाता० १९०।

**पासगबद्ध-** पासिकबद्धः-कसाबद्धः। बृह० २५२ अ।

**पासजाइपहे-** पाशाः-अत्यन्तपारवश्यहेतवः कलत्रा-

दिसंबन्ध्यास्त एव तीव्रमोहोदयादिहेतुतया जातीनां

एकेन्द्रि-यदिजातीनां पन्थानः-तत्प्रापकत्वान्मार्गाः

पाशजातिपथाः। उत्त० २६४।

**पासङ्गीनं-** अड्विहा कम्मपासा उडीणो। दशवै० पू० ३३ अ।

**पासणया-** पश्यतो-भावःपश्यत्ता-बोधपरिणामविशेषः।

भग० ७१४। पश्यत्ता-संदर्शनम्। ओघ० ३९। दर्शनता-

प्रज्ञाप-नायास्त्रिंशत्तमं पदम्। प्रजा० ६। पश्यतो भावः-

पश्यत्ता। प्रजा० ५२९। पश्यत्ता-संदर्शनम्। ओघ० ३९।

**पासणिओ-** जणवयववहारेसु णडणट्टादिसु वा जो पेक्खणं

करेति सो पासणिओ। निशी० ९२ अ।

**पासणिय-** प्राश्निकः-संभ्यः। व्यव० १६० अ।

**पासत्थ-** पार्श्वे-बहिर्ज्ञानादीनां देशतः सर्वतो वा

तिष्ठतीति पार्श्वस्थः। स्था० ५१४। पार्श्वस्थः-

ज्ञानाचारादिबहिर्वर्ती साध्वाभासः। प्रश्न० १३७।

पाशस्थः- पाशेषु तिष्ठतीति पाशस्थः। व्यव० १६० अ।

दर्शनादीनां पार्श्वे तिष्ठतीति पार्श्वस्थः

मिथ्यात्वादिपाशेषु वा तिष्ठतीति पाशस्थः। आव०

५१७। प्रकर्षेण आसमंतात् ज्ञानादिषु निरुद्यमतया

स्वस्थः। व्यव० १६० अ। ज्ञानादीनां पार्श्वे तिष्ठतं ति

पार्श्वस्थः-पाशस्थः। व्यव० १५७ अ। पार्श्वे ज्ञानादीनां

बहि-स्तिष्ठतीति पार्श्वस्थः-गाढग्लानत्वादिकारणं

विना शय्यातराभ्याहृतादिपिण्ड

भोजकत्वाद्यागमोक्तविशेषणः। ज्ञाता० ११३।

णाणदंसणरित्ताण पासे द्वितो पासत्थो। निशी० २१७

अ।

**पासत्थविहारी-** पार्श्वस्थानां यो विहारो-बहूनि दिनानि यावत्तथा वर्तन् स पार्श्वस्थविहारः सोऽस्यास्तीति पार्श्वस्थ-विहारी। *जाता० १११।*

**पासत्थि-** ज्ञानादिबहिर्वर्ती। *भग० ५०२।*

**पासपयद्विय-** पाशा इव पाशाः स्त्र्यादयस्तेषु प्रवृत्तः तेन प्रवर्तितः पाशप्रवृत्तः-पाशप्रवर्तितः। *उत्त० २०६।*

**पासपरिवर्त्ती-** पार्श्वपरिवर्त्ती। *आव० ४२१।*

**पासपुङ्ग-** पार्श्वस्पृष्टः-छुप्तमात्रः। *स्था० ४७१।*

**पासमिओ-** पार्श्वमितः साकेतनगरस्योत्तरकुरुद्व्याने यक्षः। *विपा० ९५।*

**पासय-** द्वादशमकला। *जाता० ३८।*

**पासल्ली-** पार्श्वतः। *आव० ६४८।*

**पासवणं-** प्रश्रवणं-मूत्रम्। *आव० ६१६।* कायिकी। *आव० ७९८।* प्रश्रवणं-कायिकी। *आव० ६३४।* प्रश्रवणः-मूत्रः। *सम० ११।* प्रकर्षेण श्रवतीति-प्रश्रवणएकिका। *आचा० ४०९।* *जाता० ६१।* प्रश्रवणं-मूत्रम्। *उत्त० ५१७।* *जाता० १०३।* प्रश्रवणं-मूत्रम्। *जम्बू० १४८।* मनुष्यानां अशुचि-भूतस्थानम्। *प्रजा० ५०।*

**पासवणभूमि-** प्रश्रवणभूमिः द्वादशभेदभिन्ना भूमिः। *आव० ७८४।*

**पाससूल-** पार्श्वशूलम्। *भग० १९७।*

**पासहत्थ-** पाशः-शकुनिबन्धनविशेषः स हस्ते यस्य सः पार्श्वहस्तः। *प्रश्न० १३।*

**पासा-** पाशाः-अत्यन्त पारवश्यहेतवः कलत्रादिसम्बन्धाः। *उत्त० २६४।*

**पासाइय-** प्रसादीयं-कृष्णावभासत्वादिना गुणेन मनः-प्रसादहेतुः। *राज० ३।*

**पासाइया-** प्रासादेषु भवाप्रसादीया-प्रासादबहुला। *राजा० ३।*

**पासईय-** प्रासादीयाः मनःप्रसादकरः दर्शनीयस्तं चक्षुषा पश्यन्नपि न श्रम गच्छति। *स्था० २३२।*

**पासाईया-** चित्तप्रसादजनिका। *जाता० १३।* प्रासादीयं प्रसादाय मनःप्रसत्तये हितानि-मनःप्रसत्तिकारीणि। *जीवा० १६१।*

**पासाण-** पाषाणः-विजातीयरत्नम्। *दशवै० १९३।*

**पासाणजलं-** जलविसेसो। *निशी० ७९ अ।*

**पासाणधातू-** जत्थ पासाणे जुत्तिणा जुत्ते वा धम्ममाणे

सुवण्णादि पडित सो। *निशी० ८६ आ।*

**पासादिय-** प्रासादाः संजाता यस्मिंस्तत् प्रासादितम्। *सूत्र० ४०७।* प्रसादीयां-मनःप्रसत्तिकारि। *प्रजा० ८७।* मनःप्रसा-दहेतुः। *सूर्य० २६४।*

**पासादीयाः-** प्रासादीया-प्रासादबहुला। *सूर्य० २।* प्रसादाय-मनःप्रसत्तये हिता तत्कारित्वात् प्रासादीया मनःप्रह्लाद-कारिणोति भावः। *जम्बू० २१।*

**पासाय-** प्रासादः-प्रासादा, आयामा द्विगुणोच्छ्रितवास्तुवि-शेषः। *जम्बू० २९७।* प्रासादः। *जम्बू० ३९६।* प्रासादः-एकस्तम्भं हर्म्यम्। *दशवै० २१८।* प्रासादः-नरेन्द्राश्रयः। *प्रश्न० ८।* प्रासादः। *जीवा० २६९।* प्रासादः-राजां देवतानां च भवनम्, उत्सेधबहुलो वा। *जीवा० २७९।* प्रासादः-नरेन्द्राश्रयः। *जम्बू० १०६।* प्रासादः-देवतानां राजां वा गृहं उच्छ्रयबहुलो वा। *जम्बू० १२१।* प्रासादः-देवस्य राजो वा भवनम् अथवा उत्सेधबहुलः प्रासादः-प्रासादः। *भग० २३८।* प्रासादः-सप्तभूमादि। *उत्त० ३०८।* प्रासादः-प्रासादः-द्वितीयभूमिका। *आचा० ३६२।* प्रासादः-आयामद्विगुणोच्छ्रायः। *ज० ८८।* प्रासादः-सप्तभूमिकादि। *भग० ४८३।*

**पासायवडिंसग-** प्रासादावतंसको नाम प्रासादविशेषः। *जम्बू० ५३।*

**पासायवडिंसय-** प्रासादावतंसकः-प्रासादविशेषः। *जीवा० २०९, २१६।* प्रासादः अवतंस इव-शेखरक इव प्रधानत्वात् प्रासादावतंसकः। *भग० १४५।* प्रासादावतंसकः-स्वस्वकूटवर्तिक्रीडावासः। *जम्बू० ३८४।*

**पासायवडेंसग-** प्रासादावतंसकः-प्रासादविशेषः। *राज० ६९।*

**पासायसंठिय-** प्रासादसंस्थितः। *जीवा० २७९।*

**पासायसंठिया-** प्रासादस्येव संस्थानं यस्याः सा प्रासादसंस्थिता। *सूर्य० ६९।*

**पासाया-** राजानां देवतानां च भवनानि प्रासादाः। उत्सेधब-हुला वा प्रासादाः। *अनुयो० १५९।*

**पासायालोअण-** प्रासादे प्रासादस्य वाऽऽलोकनं तस्मिन्-सर्वोपरिवर्त्तिचतुरिकारूपो गवाक्षः, प्रासादलोकनम्। *उत्त० ४५१।*

**पासावच्चिज्ज-** पार्श्वपत्यस्य-

पार्श्वस्वामिशिष्यस्यापत्यं-शिष्यः पार्श्वपत्नीयः। सूत्रं  
४०१। पार्श्वपत्नीयं-पार्श्वजिन-शिष्यस्येयं  
पार्श्वपत्नीयः। भग० १००। १३६, २४७। पार्श्वपत्यः।  
आव० १९१, २०३।  
**पासिय-** वनस्पतिविशेषः। भग० ८०३।  
**पासिल्लउव्व-** पृष्ठतो अर्द्धावनतादिस्थानतः पार्श्वस्थितो  
वा तिर्यक् स्थितो वा। आव० ४४३।  
**पासिल्लए-** पार्श्वगतः। तन्दु० ।  
**पासु-** पार्श्वे। ओघ० ११७।  
**पासुत्त-** प्रसुप्तः। उत्त० १३६।  
**पासुतेल्लय-** प्रसुप्तः। आव० ६३२।  
**पासेल्लिय-** पार्श्वगतः। आव० ४२७।  
**पाहणगं-** बहुधरातो वरगिहं। जमन्नं गिहं निज्जति तं।  
निशी० २२अ।  
**पाहणाउ-** उपानहौ। स्था० ३०४।  
**पाहाणगुण-** प्राधान्यगुणं-वैमल्यगुणम्। आव० ५२१।  
**पाहाण-** पाषाणः। दशवै० १९। पाणाणः। आव० १६७।  
**पाहाणजलं-** पाषाणजलं-यत्पाणानामुपरि वहति। ओघ०  
३२।  
**पाहाणवट्ठओ-** पाषाणवर्तुलः। आव० १२३।  
**पाहाणोदग-** पाषाणजलं-यत्पाणानामुपरि वहति। ओघ०  
३२।  
**पाहुड-** प्राभृतं लोकप्रसिद्धं यदभीष्टाय देशकालोचितं  
दुर्लभं वस्तु परिणामसुन्दरमुपनीयते, प्रकर्षणासमन्ताद्  
भ्रियते-पोष्यते चित्तमभीष्टस्य पुरुषस्यानिनेति  
प्राभृतम्। सूर्य० ७। प्राभृतं-अधिकारविशेषः। सम० ८२।  
प्राभृतं-प्राभृतिका। प्रश्न० १५४। प्रदत्तम्। आचा० ३६७।  
प्राभृतं-नरकपाल-कौशलिकं परम-क्रोधः। स्था० १६६।  
प्राभृत-अधिकरणकारी कोपः। स्था० २४७। प्राभृतं-  
योनिप्राभृतम्। व्यव० ४आ। प्राभृतं-अधिकरणम्। बृह०  
१४८अ। प्राभृतमिव प्राभृतः तीव्रक्रोधः। बृह० १०४आ।  
कलहः। निशी० २४४अ। निशी० २९४अ। निशी० २८  
अ। प्राभृतं कलहम्। व्यव० २२३अ।  
**पाहुडछेदा-** अर्थछेदा। निशी० २११७आ।  
**पाहुडपाहुड-** प्राभृतप्राभृतं-प्राभृतेषु अन्तरगतम्। सूर्य० ७।  
प्राभृतादि-प्राभृतम्। दशवै० ८५।  
**पाहुडपाहुडिआसंखा-** प्राभृतप्राभृतिकासंख्या, दृष्टिवादे

सङ्ख्या। अनुयो० २३४।  
**पाहुडसंखा-** प्राभृतसंख्या पूर्वान्तर्गत श्रुताधिकारसंख्या।  
अनुयो० २३४।  
**पाहुडसीलया-** प्राभृतशीलता कलहनसम्बन्धता। स्था०  
२७५।  
**पाहुडा-** 'प्र' इति-प्रकर्षण'आ' इति-साधुदानलक्षणमर्या-दया  
भृता-निर्वर्तिता यका भिक्षा सा भ्राता। पिण्ड० ३५।  
**पाहुडि-** प्राभृतनामश्रुतस्कन्धः। व्यव० ७८आ।  
प्राभृतिका-बालादिनिमित्तं संस्थाप्य या, ददाति भिक्षा  
सा प्राभृतिका। पिण्ड० १६२।  
**पाहुडिआसंखा-** प्राभृतिकासंख्या-दृष्टिवादे  
सङ्ख्याविशेषः। अनुयो० २३४।  
**पाहुडिय-** प्राभृतिका। आव० ७२८। प्राभृतिका। आव० ४०५,  
६४०। प्राभृतिका, भिक्षा अर्चनिका। व्यव० १४अ।  
प्राभृतिका-भिक्षापि अध्वनिकापि। बृह० ८८अ।  
भिक्षावलि कूरपरिसाडणं वा। निशी० १७२आ।  
प्राभृतिका-सार्वजनिका। बृह० ८७आ। प्राभृतिका-  
वसतेश्छादनलेपनादिरूपा। बृह० २६१आ। प्राभृतिका-  
सुरेन्द्रादिकृतासमवसरणरचना। बृह० १६६अ। प्राभृ-  
तिका-हरितछेदनाद्यादिकरणरूपा। बृह० २४०अ।  
प्राभृतिका बलिः। बृह० २२३अ। कस्मैचिदिष्टाय पूजाय  
वा बहुमानपुरस्सरी कारणेन यदभिष्टवस्तु दीयते  
तत्प्राभृतमुच्यते, ततः प्राभृतमिव प्राभृतं साधुभ्यो  
भिक्षादिकं देयं वस्तु, प्राभृतमेव प्राभृतिका, पूर्वं  
नपुंशकत्वेऽपि कप्रत्यये समानीते सति स्त्रीत्वं, यद्वा।  
'प्र' इति प्रकर्षण'आ' इति साधुदानल-क्षणमर्यादया  
'भृता' निर्वर्तिता यका भिक्षा सा प्राभृता, ततः  
स्वार्थिककप्रत्ययविधानात् प्राभृतिका। पिण्ड० ३५।  
अधिकरणदोषः। निशी० ३२४अ। प्राभृतिकासुरवि-  
रचितसमवसरणमहाप्रातिहार्यादिपूजा लक्षणा। बृह०  
७६।  
**पाहुण-** प्राघूर्णकः-आगन्तुकः भिक्षुकः। स्था० ४६७।  
कुलगणसङ्घानां स्थविरः। बृह० वि० २०८आ।  
प्राघूर्णकः। ओघ० ५१।  
**पाहुणग-** प्राघूर्णकः। आव० ८५८।  
**पाहुणगभत्त-** प्राघूर्णकः-कोऽपि क्वचिद्वतो  
यत्प्रतिसिद्धये संस्कृत्य ददाति प्राघूर्णका वा साधवादय

इति पद्मापयति तत्प्राधूर्णकभक्तम्। औप० १०१। भग० ४६७।

**पाहुणभक्त-** प्राधूर्णकाः-आगन्तुकाः भिक्षुकाः एव तदर्थं यद्भक्तं तत्तथा प्राधूर्णको वा गृही स यद्वापयति तदर्थं संस्कृत्य तत्तथा। स्था० ४६०, ४६७।

**पाहुणिय-** षष्ठोः महाग्रहः। स्था० ७८। प्राधुनिकाः षष्ठो महाग्रहः। जम्बू० ५३४। सूर्य० २९४।

**पाहुण्यं-** पाधुण्यम्। आव० ३५५।

**पाहेज्जं-** पाथेयं-कंटकमर्दनवेतनम्। बृह० २९७ आ।

**पाहेणग-** प्रहेणकं मोदकादि। पिण्ड० ९२।

**पिकारे-** अपिकारे। स्था० ४९३।

**पिङ्गल-** कपिलम्। स्था० ३९७। पिङ्गलं-कपिलम्। ज्ञाता० १३३। पिङ्गलः-कपिलः। ज्ञाता० १६।

चत्वारिंशत्तममहा-ग्रहः। स्था० ७९।

**पिङ्गलकखग-** पिङ्गलाक्षः-पक्षिविशेषः। प्रश्न० ८।

**पिङ्गलगणिहि-** सर्व आभरणविधि, यः पुरुषाणां यश्च महि-लानां तथाऽश्वानां हस्तिनां च स यथौचित्येन पिङ्गलकनिधिः। जम्बू० २५८।

**पिङ्गलय-** पिङ्गलकः-स्कन्दकचरित्रे श्रावस्तीनगर्या वैशालिकश्रावको भगवद्वचनामृतपाननिरतः श्रमणः। भग० ११२। कृष्णपुद्गलः। सूर्य० २८७। पिङ्गलकः-चत्वारिंशत्तममहा-ग्रहः। जम्बू० ५३५। सूर्य० २९४।

**पिङ्गला-** पिङ्गला-कपिला। अनुयो० १३३।

पिङ्गलापोतस्य लघुसुता ब्रह्मदत्तराज्ञी। उत्त० ३७९।

**पिङ्गलायणा-** कुत्सगोत्रे भेदः स्था० ३९०।

**पिङ्गा-** पिङ्गा कपिञ्जला। सूत्र० ९८।

**पिङ्गायण-** पिङ्गायनं मघागोत्रम्। जम्बू० ५००।

**पिङ्गायणसगोत्त-** मघानक्षत्रगोत्रम्। सूर्य० १५०।

**पिङ्गुल-** पिङ्गुलः पक्षिविशेषः। प्रश्न० ८।

**पिङ्गितं-** पिङ्गनिकया तडितं रुतम् धा। बृह० ११६ आ।

**पिङ्ग-** अद्रवः स्त्याद्यानः विकृत्यादिकम्। बृह० २०६ आ।

ओदनादिकः। बृह० ८६ आ। भत्तद्वो। निशी० १४२ आ।

पिण्डः-पिण्डनीयं पिण्डनं वा परिग्रहस्यनवमं नाम।

पश्न० ९२। पिण्डः-ओदनादिरन्नः। उत्त० २६९। पिण्डः-

आहारः। उत्त० ६०। पिण्डं पिण्डः-सङ्घातरूपः। ओघ०

१२। पिण्डः-गुडपिण्डादिरूपः। पिण्ड० २। पिण्डं-

शाल्योदनादिकम्। आचा० ३३६। पिण्ड्ययते-

सङ्घात्यते, कोऽर्थः? गृहिभ्य उपलभ्य सम्मील्यत इति पिण्डतमायाम-कादि। उत्त० ४१९। पिण्डः- पोषः।

आचा० ३२६। पिण्डः- आहारोपधिरूपः। स्था० ३११।

पिण्डनं पिण्डः-संघातरूपः। भिक्षा-शोधिः। ओघ० १२।

यदशनादिकं सम्पन्नं विशिष्टाहारगुणयुक्तं षट् रसोपेतम्। बृह० १७८ आ। पिण्डयो-लुम्ब्यः। जम्बू० २५।

**पिङ्कपितः-** प्रत्युक्तं त्रिकं त्रिकमवसातव्यमेष्टः

पिङ्कल्पिकः। बृह० ८३ आ।

**पिङ्गुड-** पिण्डगुड-पिण्डीभूतो गुडविशेषः। आव० ८५४।

**पिङ्गुल-** पिण्डगुडः- पिण्डीभूतो गुडः। आ० ८५७।

**पिङ्गगह-** पिण्डग्राह्यं-पिण्डरूपतया हस्ते ग्रहीतुं शक्यते पिण्डविकृतिर्वा। बृह० १७८ आ।

**पिङ्गिगर-** दाइयभत्तं, पितिपिङ्गपदानं। निशी० २६८।

**पिङ्गनियर-** पिण्डनिकर-पितृपिण्ड। आचा० ३२८।

**पिङ्गय-** उण्डकः पादयोर्यः पिण्डरूपतया लगति स पिण्डकः। ओघ० २९।

**पिङ्गरस-** पिण्डरसः खर्जुरादिर्मिश्रम्। बृह० २६७ आ।

**पिङ्गलग-** पटलकं पुष्पभाजनम्। स्था० ३८९।

**पिङ्गवाय-** पिण्डपातः भिक्षालाभः। आचा० ३२१। पिण्डपातं आहारम्। आचा० ३३१। पिण्डपातं-भैक्षम्। आचा० ३३६। पिण्डपातं-भिक्षाम्। आचा० ३५१। पिण्ड्यते इति पिण्डो-भिक्षा तस्य पातः-पतनं प्रक्रमात्पात्रेऽस्मिन्निति पिण्डपातं-भिक्षाऽटनम्। उत्त० ६६७। पिण्डपातः-विशुद्धसमुदानम्। दशवै० १७९।

**पिङ्गवायपडियाए-** पात्रे पिण्डस्य प्रवेशः तत्प्रतिज्ञा। बृह० ८६ आ।

**पिङ्गवायपडियाय-** पिण्डपातो-भिक्षालाभस्तत्प्रतिज्ञा-

अहमत्रभिक्षां लप्स्य इति। आचा० ३२१। पिण्डस्य पातो भोजनस्य पात्रे गृहस्थान्निपतनं तत्र प्रतिज्ञा-ज्ञानं-बुद्धिः पिण्डपातप्रतिज्ञा। भग० ३७४।

**पिङ्गहलिद्वा-** अनन्तकायभेदः। भग० ३००।

**पिङ्गार-** पिण्डारः-भिक्षुकजातिविशेषः। आव० ५६१। निशी० ४१ आ।

**पिङ्गि-** पिण्डी-लुम्बी। भग० ३७।

**पिङ्गिम-** पुद्गलसमूहरूपः। जम्बू० ३०। पिण्डिमः-

पुद्गलसमूहरूपः। औप० ८। पिण्डिमः-बहलः। प्रश्न० १६२। घोषवर्जितः शक्कादिशब्दवत्। स्था० ४७१।

**पिंडिमणीहारिमा-** पिण्डिमं निहारिमा पुद्गलसमूहरूपः

दूरदेशगामिनी च। औप० ८।

**पिंडिमा-**पिण्डिता। राज० ७।

**पिंडिय-** पिण्डितः-मिलितः। ओघ० १०३। पिण्डितं-

स्वकर्मणा संयोजितम्। जीवा० २७३। पिण्डितः-एक-

जातिमापन्नः। आव० २८३।

**पिंडिया-** पिण्डिका-पाषाणपिण्डिका। औप० १६।

**पिंडिसिया-** पिण्डैशिका, पिण्डो-भोजनम्। भग० ४८२।

**पिंडो-** पिण्याकपिण्डिका वायसपिण्डिका। बृह० १३३ अ।

पिण्डः-भिन्नकम्। सूत्र० ३९६।

**पिंडीभूत-** पिण्डीभूतः। आव० २७४।

**पिंडेसण-** आचारङ्गे दशममध्ययनम्। सम० ४४। पिण्डै-

षणा- आचाराङ्गस्य दशममध्ययनम्। उत्त० ६१६।

**पिंडेसणा-** पिण्डैषणा-आचारप्रकल्पे

द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य प्रथममध्ययनम्। प्रश्न० १४५।

पिण्डैषणा-सप्तपिण्डैषणा। आव० ७७८। पिण्डैषणा-

आचारप्रकल्पस्य दशमो भेदः। आव० ६६०।

**पिंडोलग-** पिंडोलकः-परपिण्डप्रार्थकः। सूत्र० ८१।

**पिंडोलय-** पिंडावलगाः-यः स्वयमाहाराभावतः परदत्तोप-

जीवी। उत्त० २५०। पिण्डयते-तत्तद्गृहेभ्य आदाय

सङ्घात्यत इति पिण्डः तमलगति-सेवते पिण्डावलगः।

उत्त० २५०।

**पिअ-** प्रियः-भूयोऽभिलषणीयः। प्रज्ञा० ४६३।

**पिअण-** पानम्। आचा० ४१।

**पिअवयस्स-** प्रियवयस्यः महाबलमित्रः। आव० ११६।

**पिइयंग-** पितृकाङ्गं, शुक्रविकारबहुलम्। भग० ८८।

**पिइय-** गुल्मविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

**पिउं-** पिबामि। आव० ९०।

**पिउ-** पितुः। आव० ६६६।

**पिउगा-** वीहीपक्का भजिता तद्वै फुड्डिया तुसावणिया

पिउगा भण्णति। निशी० १६७ आ।

**पिउग्गाम-** पुरुषमैथुनम्। निशी० २५३ आ।

**पिउच्छा-**पितृष्वसा। आव० १७३।

**पिउदत्त-** पितृदत्तः गाथापतिः। आव० २०५।

**पिउपज्जयागए-** पितृप्रायकः-पितुःप्रपितामहः। ज्ञाता०

४९।

**पिउसिया-** पितृष्वसा-पितृभगिनी। विपा० ५७।

**पिउसेणकण्हा-** पितृषेणकृष्णा-

अन्तकृद्दशानामष्टमवर्गस्य नवममध्ययनम्। अन्त०

२५। निरयावल्याः प्रथमवर्गस्य नवममध्ययनम्। निर०

३।

**पिएण-** प्रीत्या। आव० ३४७।

**पिक्कमंसि-** पक्वा-संस्कृता मांसीति-गन्धद्रव्यविशेषः।

पक्वमांसी। प्रश्न० १६२।

**पिक्खुर-** पिक्खुरान्, म्लेच्छविशेषान्। जम्बू० २२०।

**पिचुगाला-** निर्गलितम्। आव० ८५५।

**पिचुमंद-** अरिष्ठो वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३१।

**पिच्च-** जनपदसत्यत्वे उदाहरणं, पयः, उदकम्। दशवै०

२०८।

**पिच्चिय-** कुट्टितत्वकम्। स्था० ३३९।

**पिच्छ-** पत्रम्। प्रश्न० ८।

**पिच्छज्झया-** पिच्छध्वजा-पिच्छचिह्नोपेता ध्वजा।

जीवा० २१५।

**पिच्छिका-** वरुडा। प्रज्ञा० ५८।

**पिच्छिंदिति-**पिच्छिं। बृह० ४७ आ।

**पिजियं-** रुयपडलं पिंजियं। निशी० २२८ आ।

**पिज्ज-** प्रेम-प्रियेषु प्रीतिहेतुः। उत्त० २६१। पेयाः यवागूः।

पिण्ड० १६८। प्रेमिणि निश्चितम्, दशविधमृषाभाषायां

पञ्चमी। स्था० ४८९।

**पेज्जे-** पाययं स्तन्यम्। पिण्ड० १२२।

**पिज्जनकः-** रथावयवौ। ज० २००।

**पिज्जनिक-** घनस्वरभेदः। स्था० ६३।

**पिटक-** भाजनविशेषः। पिण्ड० ७८।

**पिट्टण-** पिट्टनं-मुद्गरादिना हननम्। औप० १०७।

ताडनम्। ओघ० १२३। पिट्टनं-कुट्टनम्। पिण्ड० १६।

**पिट्टणा-** पिट्टना नापि पिट्टयति काष्ठपिट्टनेन स्त्रीवत्।

ओघ० १३३।

**पिट्टति-** पिट्टयति। आव० ३४३।

**पिट्टापिट्टी-** केशाकेशी। आव० १०३।

**पिट्टावणाता-** पिट्टणप्रापणा। भग० १८४।

**पिट्टिणिका-** दर्दूरोपरि विभागविशेषः, दर्दूरोपरि

मालप्रवेश-मार्गछादनम्, यन्त्ररूपकपाटम्। पिण्ड० १०६।

**पिट्टेति-** पिट्टयति। आव० ७०३।

**पिट्टेतुं-** पिट्टयितुम्। आव० ८१९।

**पिङ्ग-** अपानद्वारम्। निशी० २५२ आ।  
**पिङ्ग-** पिष्टं-अच्छटिततन्दुलचूर्णः। आचा० ३४२। पिष्टः-  
 शालिलोटः। ज्ञाता० ९१। पृष्ठं-फलकम्। प्रश्न० ८३।  
 पृष्ठं-पाश्चात्यभागः। जम्बू० ६७। पिष्टः-  
 आमतण्डुलक्षोदः। दशवै० १७०। पृष्ठः-मार्गः। दशवै०  
 २३५। चूर्णम्। निशी० ९ अ। पिष्टं-मुद्गादि चूर्णम्। बृह०  
 २६७ आ। पिष्टं-सूक्ष्मतंदुलादिचूर्णनिष्पन्नम्। बृह०  
 १४२ अ।  
**पिङ्गओकिच्चा-** पृष्ठतःकृत्वा-  
 धर्मबन्धनहेतुरियमितमित्या तिरस्कृत्य। उत्त० ९९।  
 पृष्ठतः-पश्चाद्भागः। ज्ञाता० ६२।  
**पिङ्गकरंडग-** पृष्ठकरण्डकं, पृष्ठवंशवर्त्युन्नताः  
 अस्थिखण्डाः पंशुलिका। जम्बू० ११७।  
**पिङ्गकरंडय-** पृष्ठकरंडकः-पृष्ठवंशः। जीवा० १५४।  
 पृष्ठकरण्डकः। तन्दु० ०।  
**पिङ्ग-** पिष्टम्। आव० ६२२।  
**पिङ्गपयणगं-** पिष्टपचनकं-यत् सुरासन्धानाय पिष्टं  
 पच्यते तत्। जीवा० १०५।  
**पिङ्गपयणगसंठितो-** पिष्टपचनकसंस्थितः-  
 आवलिकाबाहयस्य दवितीयं संस्थानम्। जीवा० १०४।  
**पिङ्गपोवलिया-** पृष्ठपोलिका। आव० ८५५।  
**पिङ्गा-** पिष्टा। भग० ७६६।  
**पिङ्गि-** पेषणम्। निशी० ९ अ। पृष्ठः-स्कंधः। स्था० ११९।  
**पिङ्गिमंसं-** पृष्ठिमांसं-परोक्षदोषकीर्तनरूपम्। दशवै०  
 २३५।  
**पिङ्गिमंसभक्खयं-** जं परमुहस्स अववोलिज्जं तं तस्स।  
 दशवै० १२५ आ।  
**पिङ्गिमंसिय-** पृष्ठिमांसाशिकः-पराङ्गमुखस्य  
 परस्यावर्णवाद-कारी, दशममसमाधिस्थानम्। सम०  
 ३७। पृष्ठमांसादः-यः पराङ्मुखस्यावर्ण भणति,  
 दशममसमाधिस्थानम्। आव० ६५३।  
**पिङ्गिमाइया-** अनुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयवर्गस्य  
 सप्तमम-ध्ययनम्। अनुत्त० २।  
**पिङ्गी-** पृष्ठम्। उत्त० १४३।  
**पिङ्गीचंप-** पृष्ठिचम्पानगरी-भगवन्महावीरविहारक्षेत्रम्।  
 आव० २०४।  
**पिङ्गीचंपा-** पृष्ठिचम्पा-शालराजधानी। उत्त० ३२१, ३२३,

३२४।  
**पिङ्गुडि-** पिष्टं-विसारितम्। बृह० ९० आ। पिष्टस्य-  
 शालिलोटस्य डण्डी-पिण्डी पिषोण्डी। ज्ञाता० ९१।  
**पिठर-** पिठरं-स्थाल्यादि। पिण्ड० १५५। पिठरः-  
 पृष्ठिचम्पायां यशोमतीभर्ता। आव० २८६।  
**पिठरक-** भाजनम्। आचा० ३४४। पात्रकम्। भग० ६९१।  
 भाजनम्। आचा० ३२७।  
**पिठरी-** स्थाली। सूर्य० २९३।  
**पिडग-** पिटकमिव पिटकं-आश्रयः। भग० ७११। पिटकं  
 वणिज इव सर्वस्वस्थानम्। स्था० ५०२। पिटकं-सर्वस्व-  
 भाजनं गणिपिटकम्। सम० १०७। पिटकं-  
 सर्वस्वाऽऽधारः। उत्त० ५१३। पिटकं-सर्वस्वं समूहश्च।  
 नन्दी० १९३। पिटकं-सर्वस्वमाधारो वा। सूत्र० २५३।  
 पिटकं-चन्द्रद्विक-सूर्यद्विकरूपम्। जीवा० ३३६।  
 पिटकं-द्वौचन्दौ द्वौ सूर्यौ च। सूर्य० २७५। पिटकं-  
 सर्वस्याऽऽधारः। उत्त० ५१३।  
**पिडगर-** पिडगृहं-चिक्खिल्लपिडेर्निष्पादितम्। व्यव०  
 १०६।  
**पिडिगा-** पिटिका। दशवै० ४४।  
**पिठर-** पिठरं-स्थाली। पिण्ड० ८९। पिठरः-यशोमतीभर्ता।  
 उत्त० ३२३।  
**पिणद्ध-** पिणद्धं-आविद्धम्। जीवा० २०७। पिणद्धं-बद्धम्।  
 जम्बू० १८९।  
**पिण्डं-** बाहल्यम्। जम्बू० ५३।  
**पिण्डहरिद्रा-** वनस्पतिकायिकभेदः। जीवा० २७।  
**पिण्डोलकः-** कृपणः। दशवै० १८४।  
**पिण्ड्यते-** प्रचुरीक्रियते। ओघ० १४७।  
**पिण्णात-** घयगुलमिस्सो, सत्तुओ। निशी० ३९ आ।  
**पिण्णियं-** पिन्निका-ध्यामकाख्यं गन्धद्रव्यम्। उत्त०  
 १४२।  
**पितदरिसण-** नवग्रैवेयके पञ्चमः प्रस्तरः। स्था० ४५३।  
**पितधम्म-** आलोचनाहं दृष्टान्तः। स्था० ४८४।  
**पितियंगा-** पित्रङ्गानि-प्रायः शुक्रपरिणतिरूपाणीत्यर्थः।  
 स्था० १७०।  
**पितुसेणकण्हा-** पितुसेणकृष्णा-मुक्तावलीतपकारिका।  
 अन्त० ३१।  
**पितृग्रामः-** त्रिविधा पुरुषाः। बृह० १८४ आ।

पितृपिण्ड- पिण्डनिकरः। आचा० ३२८।  
 पितृवन- श्मशानम्। दशवै० २६७।  
 पितृवनकाष्ठ- श्मशानकाष्ठः। आचा० २५३।  
 पित्तं- दोषविशेषः। प्रश्न० ८। पित्तं-दोषविशेषः। ज्ञाता० १४७। मनुष्याणामशुचिस्थानम्। प्रज्ञा० ५०।  
 पित्तज्जर- पित्तज्वरः। ज्ञाता० १११।  
 पित्तमुच्छा- पित्तमूर्च्छा-पित्तप्राबल्यात् मनाग् मूर्च्छा। आव० ७७९।  
 पित्तित- चतुर्षु वार्षिषु द्वितीयः, पीतोद्भवः। स्था० २६५।  
 पैत्तिकः। आव० ४०५।  
 पिन्नाम- पिण्याकः-खलः। सूत्र० २९६।  
 पिपासा- विषयेच्छा। आव० ५९।  
 पिपीलिका- पृथिव्याश्रितो जीवभेदः। आचा० ५५। काष्ठ-  
 निश्रिता पिपीलिका। आचा० ५५। समूर्च्छन विशेषः।  
 दशवै० १४१। त्रीन्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४२।  
 पिपीलिया- पिपीलिकाः-कीटिकाः। उत्त० ६९५।  
 पिप्परी- पिप्पली-वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
 इच्छयाभिहाणी। निशी० १९२आ।  
 पिप्पल- पिप्पलः-ह्रस्वक्षुरः। विपा० ७१। पिप्पलः खाद्ये  
 वृक्षविशेषः। आव० ८२८। पिलंकखूः। निशी० १२४आ।  
 स्था० ३३९। पिप्पलकः-किञ्चिद्वक्रः क्षुरविशेषः।  
 पिण्ड० १७। पिप्पलकः- क्षुरकः। ओघ० १३३।  
 पिप्पलग- पिप्पलकः क्षुरप्रः। बृह० २५३आ। निशी० १८  
 आ।  
 पिप्पलपोतग- पिप्पलपोतकः। आव० ५५५।  
 पिप्पलि- वृक्षविशेषः। भग० ८०३।  
 पिप्पलिया- गुच्छाविशेषः। प्रज्ञा० ३२।  
 पिप्पली- वृक्षविशेषः। आचा० ३४८। प्रज्ञा० ३६४।  
 पिप्पलीचुण्ण- पिप्पलीचूर्णम्। प्रज्ञा० ३५४।  
 पिप्पलीमूलं- पिप्पलीमूलम्। प्रज्ञा० ३६४। आचा० ८८।  
 पियंकर- प्रियङ्करः-प्रियं-अनुकूलं करोतीति। उत्त० ३४७।  
 पियंगाला- चतुरिन्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४२।  
 पियंगु- सुमतिनाथस्य चैत्यवृक्षः। सम० १५२। प्रियङ्गुः-  
 धनदेवसार्थवाहभार्या। विपा० ८८। प्रियङ्गुः-  
 संवेगोदाहरणे ऽमात्यधर्मघोषभार्या। आव० ७०९।  
 पिय- प्रियं-अनुकूलम्। उत्त० ३४७। प्रियः-प्रियार्थः। जम्बू०  
 १४३। प्रियः-प्रेमकर्त्ताः। णाता० १६५। प्रियं-प्रेम-कारी।

सूर्य० २९२। ज्ञाता० ३७।  
 पियए- अभिनन्दनजिनचैत्यवृक्षः। सम० १५२।  
 पियकारिण- प्रियकारिणः-समाधिविधित्सवः। बृह० ११०।  
 पियकारिणी- त्रिशलायाः तृतीयं नाम। आचा० ४२२।  
 पियगंधव्व- गीतप्रियः। ज्ञाता० २१३।  
 पियचंदो- प्रियचन्द्रः-कनकपुरनगरनृपतिः। विपा० ९५।  
 पियण- अपकायस्य परिभोगे दृष्टान्तः। स्था० ३३९।  
 पियदंसण- प्रियदर्शनः धातकीखण्डद्वीपे महर्द्धिको देवः।  
 जीवा० ३२८। देवविशेषः। स्था० ७९। भगवन् महावीर-  
 पुत्री। आचा० ४२२।  
 पियदंसणा- प्रियदर्शना, चन्द्रावतंसकराजपत्नी। आव०  
 ३३६। प्रियदर्शना, अपरनामाऽनवद्याङ्गी। उत्त० १५३।  
 पियधम्म- प्रियो धम्मो यस्य तत्र प्रीतिभावेन सुखेन च  
 प्रतिपत्तेः स प्रियधर्म्मा। स्था० २४२। प्रियधर्मा-धर्म्म-  
 प्रियः। प्रश्न० ११६। प्रियः इष्टो धर्मोऽस्येति प्रियधर्मा।  
 ओघ० २०२।  
 पियधम्मा- प्रियधर्मा दृढधर्मा। भग० १२७।  
 पियपुच्छय- प्रियपुच्छकः। आव० २२१, २२६।  
 पियमित्त- षष्ठ वासुदेवस्य पूर्वभवनाम। सम० १५३।  
 प्रियमित्रः-पुरुषपुण्डरीकवासुदेवपूर्वभवः। आव० १६३।  
 प्रियमित्रः-चक्रवर्त्ती। आव० १७७। प्रियमित्रः चक्रवर्त्ति  
 विशेषः। आव० १६७। पितृमित्रम्। आव० २१९।  
 पियसेण- प्रियसेनः-नपुंसको गणिकापुत्रः। विपा० ५४।  
 पिया- पिता “जनेता चोपनेता, यस्तु विद्यां प्रयच्छति।  
 अन्नदाता भयत्राता, पञ्चैते पितर स्मृताः।” ज्ञाता०  
 २४०। सुदंसणगाथापतेः पत्नी। निर० ३७। ज्ञाता० ८८।  
 पाति-रक्षत्यपत्यमिति पिता। उत्त० ३८।  
 पियादए- आत्मवत् सुखप्रियत्वेन प्रियादया-रक्षणं येषां  
 तान् प्रियदयान्, प्रिय आत्मा येषां तान् प्रियात्मकान्।  
 उत्त० २६५।  
 पियापुत्ताणि- पितापुत्र्यौ। उत्त० १२९।  
 पियापया- आयतः-आत्माऽनोद्यनन्तत्वात् स प्रियो येषां  
 ते तथा। आचा० १२२।  
 पियाल- वृक्षविशेषः। भग० ८०३। प्रियालं-प्रियालफलम्।  
 दशवै० १८६। प्रियालः-वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३१।  
 पिरली- तृणरूपवादयविशेषः। जीवा० २६६। जम्बू० १०१।  
 पिरिपिरिता- तस्य मुहत्थाणे खरमुहाकारं कद्वमयं मुहं

कज्जति। निशी० ६२अ।  
 पिरिपिरिया- कोलियकपुटावनद्धा वंशादिनलिका। आचा० ४१२।  
 पिलंखु- पिप्परी। आचा० ३४८।  
 पिलंखुरुक्खे- शीतलजिनवैत्यवृक्षः। सम० १५२।  
 पिलंखुमंथु- पिप्परीमंथुः। आचा० ३४८।  
 पिलंखुरुक्ख- वृक्षविशेषः। भग० ८०३।  
 पिलंखू- पिप्पलभेदो। निशी० १९२आ।  
 पिलुंखु- खाद्यवृक्षविशेषः। आव० ८२८।  
 पिलुक्ख- प्लक्षः-वृक्षविशेषः। प्रजा० ३२।  
 पिल्लओ- प्रेरकः। बृह० ३१०आ।  
 पिल्लक- निर्णकः। व्यव० १८०अ।  
 पल्लग- अपत्यम्। उत्त० १३५।  
 पिल्लण- प्रेरण, आरूढस्य पुंसोऽभिमुखदर्शनधावनादिना संज्ञाकरणपूर्वकं प्रवर्तनम्। ज० २३७।  
 पिल्लति- प्रेरयति निष्काशयति। उत्त० १३६।  
 पिल्लियय- प्रेरितः। आव० २२४।  
 पिल्लुक्किय- पीतः, पूतकृतः। आव० ६९३।  
 पिवास- पिपासा। आव० २३७।  
 पिवासा- पिपासा-प्राप्तेऽप्यर्थेऽतृप्तिः। भग० ८९।  
 पिपासा। आव० ७११। पिपासा-वध्यं प्रतिस्नेहरूपा।  
 प्रश्न० ५। पिपासा-अप्राप्तार्थनामाकाङ्क्षा। औप० ४७।  
 पिपासा-द्वितीयः परीषहः। आव० ६५६।  
 पिवीलिया- पिपीलिका-कीटिका,  
 सामायिकलाभेदष्टान्तः। आव० ७५।  
 पिक्वरिया- विपर्ययकरणम्। निशी० ८अ।  
 पिसल्लग- पिसल्लकः-पिशाचकः। प्रश्न० १६२।  
 पिसल्लयः-पिशाचः। प्रश्न० २५।  
 पिसाचा- व्यन्तरभेदविशेषः। प्रजा० ६९।  
 पिसाची- पिशाची-ग्रथिला। बृह० २३३अ।  
 पिसाय- पिशाचः ग्रथिलः। बृह० ५९। अ। पिशाचः। आव० ४११।  
 पिसिय- पिसितं-मांसम्। आव० ८५४।  
 पिसुअ- पिशुकः-चञ्चटः। जम्बू० १२४।  
 पिसृग- पिशुकः-चञ्चटादिः। जीवा० २८२।  
 पिसुण- पिशुनं-परदोषाविष्करणरूपम्। प्रश्न० ३६।  
 पिशुनं-परीक्ष्यस्य परस्य दूषणाविष्करणरूपम्। प्रश्न०

११९। पिशुनः- पृष्टिमांसखादकः। दशवै० २५१। पिशुनः-  
 छेदभेदकर्ता। दशवै० २५४। पिशुनः-खलः। प्रश्न० ४१।  
 पिशुनः-परदोषोद्घाटकः। उत्त० २४५। शुनः-सूचकः।  
 उत्त० ५४१। पीतिं सुण्णं करेतीति। दशवै० १३८। पीतिं  
 सुण्णं करेति, प्रीतिं विच्छेदं करोति। निशी० ८०आ।  
 पिसुणग- पिशुनकम्। आव० ३८५।  
 पिसुया- त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२।  
 त्रीन्द्रियविशेषः। प्रजा० ४२।  
 पिहज्जण- पृथग्जनः-सामान्यजनः। स्था० १२२।  
 पिहड- यत्र प्रभूतजनयोग्यं धान्यं पच्यते। जीवा० १०५।  
 पिहडय- पिठरकं-स्थालीः। उपा० ४०।  
 पिहण- पिधानं-स्थगनम्। आव० ८३८।  
 पिहाइ- स्पृहयति अभिलषति पिधत्ते वा, अथवा अक्षिणी  
 पिधत्ते-निमीलयति। भग० १७५।  
 पिहिआसव- पिहिताश्रवः-स्थगितप्राणातिपाताद्याश्रवः।  
 दशवै० १५७।  
 पिहिउब्भिन्नं- आदौ पिहितं पश्चादुद्भिन्नं  
 पिहितोद्भिन्नम्। पिण्ड० १०५।  
 पिहित- घटितम्। ओघ० १६९।  
 पिहितकपाट- अर्गलितकपाटम्। ओघ० १६६।  
 पिहितेन्द्रिय- निरुद्धहृषीकः। प्रश्न० १६०।  
 पिहिपिहीभूत- पृथक्पृथग्भूतः। आव० २०८।  
 पिहिमोदणं-। निशी० ३२८आ।  
 पिहिय- पिहितः स्थगितः कम्बलाद्यावृतशरीरः। आचा०  
 ३०९। पिहितः-स्थगितः। आचा० ३०३। पिहितं-सचित्तेन  
 स्थगितम्, चतुर्थं एषणादोषः। पिण्ड० १४७। पिहितं-  
 स्थगितम्। भग० २७४। स्थगितः। स्था० १२४।  
 पिहियच्च- पिहितार्च्यः-पिहिता-स्थगिताऽर्च्या-  
 क्रोधज्वाला येन स तथा, यदि वा पिहितार्चो गुप्ततनुः।  
 आचा० ३०४।  
 पिहिस्सामि- पिधास्यामि-स्थगयिष्यामि। आचा० ३०१।  
 पिहुंड- पिहुण्डं-नगरविशेषः। उत्त० ४८२।  
 पिहुखज्ज- पृथुकभक्ष्यं पृथुकभक्षणयोग्यम्। दशवै० २१९।  
 पिहुग- पृथुकीकृतः। आव० ८५५।  
 पिहुगा- पृथुका-ये व्रीहयः परिपङ्का सन्तो भ्राष्ट्रादौ  
 भृज्यन्ते ततः स्फुटिता अपनीतत्वचः पृथुका। बृह०  
 १७९आ। जवगोहमादीणं। दशवै० ११२अ।

**पिहुज्जण-** पृथग्जनः-सामान्यलोकः। दशवै० २७६।  
**पिहुण-** बर्हः। आचा० ३४५। पेहुणं-मयूरादिपिच्छम्। दशवै० १५४।  
**पिहुणहत्थ-** पेहुणहस्तः-मयूरादिपिच्छसमूहः। दशवै० १५४। बर्हकलापः। आचा० ३४५।  
**पिहुभिन्न-** पिहितोद्भिन्नम्। निशी० ५९ आ।  
**पिहुय-** पृथुकं शाल्यादिलाजान्। आचा० ३४२। पृथुकं भुग्न-शाल्याद्यपगततुषम्। आचा० ३५७। पुथुकम्। आचा० ३२३।  
**पिहुल-** पृथुलं-विस्तीर्णम्। स्था० २५।  
**पिहुला-** पृथुला दक्षिणोत्तरतः। जीवा० २७५।  
**पिहेति-** पिधन्तः-स्थगयन्तः। ज्ञाता० १६६।  
**पिहेइ-** पिदधाति-स्थगयति अपनयतीति। उत्त० ५८०।  
**पीइ-** प्रीतिः-प्रीणनं-आप्यायनम्। भग० ३१७।  
 चित्तोल्लासः। जम्बू० ५२८। जीवितम्। आव० ६९०।  
 प्रीतिः-प्रियत्वं न कार्यवशादित्यर्थः। ज्ञाता० ३५।  
**पीइगम-** प्रीतिगमः षष्ठदेवलोके विमानम्। औप० ५२।  
**पीइदान-** प्रीतिदानं-संतोषदानं प्राभूतरूपम्। जम्बू० २०४।  
**पीइमणे-** प्रीतिमनाः-प्रीतिःप्रीणनमाप्यायनं मनसि यस्य सः। भग० ११९। प्रीतिर्मनसि यस्यासौ प्रीतिमनाः। जीवा० २४३।  
**पीइवद्धण-** प्रीतिवर्द्धनः-द्वादशममासनाम्। जम्बू० ४९०।  
**पीई-** प्रीतिः-साम्मत्यलक्षणा। प्रज्ञा० ५९९।  
**पीईसुण-** पिशुनी-प्रीतिं शून्यां करोतीति पिशुनी, नैरुक्तीश-वदनिष्पतिः। बृह० १२८ आ।  
**पीइं-** पिष्टम्। आव० ८५५।  
**पीठ-** पाषाणभेदः। प्रज्ञा० २७। आचा० ३७६।  
**पीठमद्-** पीठमर्दः-आस्थाने आसनासन्नसेवकः, वयस्यः। औप० १४।  
**पीठमद्वा-** पीठमर्दाः आस्थाने आसन्नप्रत्यासन्नसेवका वयस्याः। राज० १२१।  
**पीठरकं-** भाण्डम्। प्रश्न० १२७।  
**पीठिका-** ग्रन्थभूमिका। आव० ३८२।  
**पीठिकागीत-** पीठिकामात्रम्। बृह० ५९ आ।  
**पीठी-** ऊर्ध्वम्। ओघ० १७८।  
**पीडय-** पीडकः। ओघ० २०९।  
**पीडा-** विमासो। दशवै० ७५।

**पीठं-** पीठम्। प्रज्ञा० ६०६। पीठं-आसनविशेषः। आव० ६५४। पीठं-गोमयादिमयासनम्। पिण्ड० १०९। आचा० ३७८। पीठं-आसनम्। भग० १३६। पीठं-आसनविशेषः। जम्बू० २६४। पीठः-वज्रसेनधारिण्योः पुत्रः। आव० ११७। पीठं-पट्टादिकम्। स्था० ३१२। पीठ-आसनम्। उत्त० ४३४। आसनम्। ज्ञाता० १०७। पीठकम्। आचा० ३४४।  
**पीठग-** वृषिका वा काष्ठमयं वा पीठकम्। बृह० २११ अ। निशी० २०८ अ। पलालपीठगादि। दशवै० ९९। पीठकं-काष्ठमयं छगणमयं वासनम्। बृह० २५३ अ।  
**पीठगा-** पीठिका-चयिका। पिण्ड० १०७।  
**पीठमद्-** पीठमर्दः-आस्थाने आसनासीनसेवकः वयस्य इत्यर्थः। भग० ३१८।  
**पीठमद्दण-** पीठमर्दः-आस्थाने आसनासन्नसेवकः-वयस्यः वेश्याचार्यः। जम्बू० १९०।  
**पीठय-** पीठकं काष्ठपीठादि। दशवै० १७२। प्हाणपीठयं नाणपीठाइ। दशवै० ८० आ।  
**पीठसप्पि-** जन्तुर्गर्भदोषात् पीठसर्पित्वम्। आचा० २३३।  
**पीठाणित-** पीठानीकं-अश्वसैन्यम्। स्था० ३०३, ४०७।  
**पीढि-** पोढः। ओघ० १०९।  
**पीढियावाहग-** पीठिकावाहकः। आव० २११।  
**पीण-** पीनः-स्थूलः। प्रश्न० १५२।  
**पिणाणिज्ज-** प्रीणनीयं-रसादिधातुसमताकारि। स्था० ३७५। रसरूधिरादिधातुसमताकारी। औप० ६५।  
**पीणति-** पीनयति-पीनमात्मानं करोति-स्थूलो भवति। जीवा० २४७।  
**पीणाइय-** पीनाया-मड्डा तथा निर्वृत्तं पैनायिकम्। ज्ञाता० ६३।  
**पीणिए-** प्रीणितः-तर्पितः। उत्त० २७३।  
**पीणित-** प्रीणितः-उपचर्य नीतो यो योगः। सूर्य० २३३।  
**पीणिय-** प्रीणितः। दशवै० २१७।  
**पीणियसरीर-** पीनशरीरः। उत्त० २७२।  
**पीतकणवीर-** पीतकणवीरः। प्रज्ञा० ३६१।  
**पीतबन्धुजीव-** पीतबन्धुजीवाः। प्रज्ञा० ३६१।  
**पीतासोग-** पीताशोकः। प्रज्ञा० ३६१।  
**पीतिदानं-** स्वप्नपाठके दानम्। ज्ञाता० २१।  
**पीतिवद्धणे-** प्रीतिवर्द्धनः-लोकोत्तरे चतुर्थमासनाम्। सूर्य० १५३।

**पीयवाई-** केनचिदप्रियमुक्तोऽपि प्रियमेव वदतीत्येवंशीलः  
 प्रीयवादी आचार्याभिप्रायानुवर्तितयैव वक्ता। उत्त०  
 १४७।

**पीरिपीरिया-** पीरिपीरिका-

कोलिकपटावनद्धमुखवादयविशेष-रूपम्। राज० ४९।

**पीलग-** पिलको रूढिगम्यः। ज० १७२।

**पीलण-** पीडनं-इक्ष्वादेरिव। आव० २७३।

**पीलिम-** पीडावत्-संवेष्टितवस्त्रभङ्गावलीरूपम्। दशवै०  
 ८६। पीडावत्-संवेष्टितवस्त्रभङ्गावलीरूपम्। दशवै०  
 ८७।

**पीलिय-** पीडितः जलार्द्रवस्त्रे निष्पीड्यमाने। स्था० ३२६।  
 पीलितः-अचित्तस्य तृतीयो भेदः-पोत्तचम्माइ। ओघ०  
 १२३।

**पीलियग-** पीडितको यन्त्रैरिक्षुवद्। औप० ८७।

**पीलु-** वृक्षविशेषः। भग० ८०३। पीलुः-वृक्षविशेषः। प्रजा०  
 ३१।

**पील्लू-** पीलु। आव० ६२२।

**पीवर-** पीवरः-महान्। प्रश्न० १५२। स्थूलः। ज्ञाता० १६।  
 पीवरः-स्थूरः। ज्ञाता० १६०।

**पीवरगम्भा-** पीवरगर्मा-आसन्नप्रसवकाला। ओघ० ७४।

**पीवरपड्ड-** पीवरप्रकोष्ठः-अकृशकलाचिकः। जीवा० २७१।

**पीसंतिय-** पेषयन्तिका-गोधूमादीनां घरट्टादिना  
 पेषणकारि-काम्। ज्ञाता० ११७।

**पीसे-** पेषयन्ती। ओघ० १६५।

**पीहग-** पीहकः-हारः। बृह० ३७ अ।

**पीहति-** स्पृहयति-अनावाप्तमवाप्तुमिच्छति। औप० २४।

**पीहय-** स्पृहयं-पृथुकम्। आव० ९३। बृह० २९ अ।

**पीहे-** स्थगयेत्। सूत्र० ६५।

**पीहेज्ज-** स्पृहयेद्-अभिलषेद्। स्था० १४५।

**पुंख-** पुङ्खः-पृष्ठभागः। जम्बू० २०१। द्वादशसागरोपम-  
 स्थितिकदेवविमानम्। सम० २२।

**पुंछ-** प्रोञ्छ-उन्मीलय। बृह० १६७ अ।

**पुंछडा-** पुञ्छम् बृह० १४९ अ।

**पुंछणं-** रजोहरणम्। बृह० ८६ अ। प्रोञ्छनं-घर्षणम्। बृह०  
 २७० अ।

**पुंछणी-** पुञ्छती-

निपीडतरच्छादनहेतुश्लक्ष्णतरतृणविशेष-स्थानीया।

जम्बू० २३। जीवा० १८०।

**पुंछन-** आसनम्। उत्त० ४२३।

**पुंछे-** वस्त्रतृणादिभिः पुञ्छयेत्। दशवै० २२८।

**पुंज-** पुञ्जः-राशि। ओघ० १९३। पुञ्जः। निकरः। ज्ञाता०  
 २२९। पुञ्जः। आव० ४२२।

**पुंड-** पुण्ड्रः-जनपदविशेषः। अन्त० १६। पुण्ड्रः-पुण्ड्रेशः,  
 यत्र विशिष्टानि हरितानि शाड्वलानि भवन्ति। जीवा०  
 ३५५। द्वादशसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम०  
 २२। पोण्डं-पुष्पम्। उत्त० १४३। वैतादयगिरिप्रदेशे  
 जनपदः। स्था० ४५८। पुण्ड्रः-वरुणस्य पुत्रस्थानीयो  
 देवः। भग० १९९।

**पुंडपड्या-** पुण्डानि-धवलानि पखानि पादा येषां ते तथा, ते  
 एव पुण्डपदिकाः। ज्ञाता० २३०।

**पुंडरंगिणी-** पुण्डरीकिणी-पुष्कलावतीविजये नगरम्।  
 आव० ११७।

**पुंडरिगिणि-** पुण्डरीकिणी-उत्तररुचकवास्तव्या  
 दिक्कुमारी। आव० १२२। पुण्डरीकरायनगरीविशेषः।  
 आव० २८८। पुण्डरीकिणी-पुष्कलावतीविजयते नगरी।  
 उत्त० ३२६। जम्बूपूर्वविदेहे पुष्कलावतिविजये नगरी।  
 ज्ञाता० २४२।

**पुंडरीअ-** अष्टादशसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम०  
 ३५।

**पुंडरीअनायं-** पुण्डरीकज्ञातम्। उत्त० ३२१।

**पुंडरीआ-** पुण्डरीका-उत्तररुचकवास्तव्या तृतीया दिक्कु-  
 मारी महत्तरिका। जम्बू० ३९१।

**पुंडरीए-** पुण्डरीकं षष्ठाङ्गे एकोनविंशतितमं ज्ञातम्।  
 उत्त० ६१४।

**पुंडरीएपव्वए-** आदिदेवगणधरनिर्वाणत उपलक्षितः  
 पर्वतः, स तत्र प्रथमनिर्वृतत्वात्पुण्डरीकपर्वतः-  
 शत्रुञ्जयः। ज्ञाता० १०८।

**पुंडरीओ-** स्तोककालेनोर्ध्वगामी। मरण० ।

**पुंडरीक-** ऋषभस्वामिनो ज्येष्ठगणधरः। व्यव० १०६ अ।

**पुंडरीकिणी-** महाविदेहे नगरी। विपा० ९४।

**पुंडरीगिणी-** पुण्डरीकिणी-

पश्चिमदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्योत्तर-स्यां पुष्करिणी।  
 जीवा० ३६४। पुण्डरीकिणी-राजधानी नाम। जम्बू० ३४७।

**पुंडरीय-** पुण्डरीकं सितपद्मम्। जीवा० २७३। पुण्डरीक-

सूत्रकृताङ्गे सप्तदशममध्ययनम्। ३२६। पौण्डरीकः-  
पुण्डरीक इव प्रधानः-तिर्यक्षु मनुष्येषु देवेषु च प्रधाना  
नामु-पमा। सूत्रं २६७। पुण्डरीकः-क्षीरवरदीपे पूर्वाद्धाधि-  
पतिर्देवः। जीवां ३५३। पुण्डरीकं-सूत्रकृताङ्गे  
द्वितीयश्रुत-स्कन्धे प्रथमाध्ययनम्। आवं ६५८।  
पुण्डरीकं-सूत्रकृता-ङ्गस्य सप्तदशममध्ययनम्। उत्तं  
६१६। पुण्डरीकं-सिता-म्बुजम्। प्रज्ञां ३६३। पुण्डरीकं-  
प्रधानम्। उत्तं ४८४। महापद्मपद्मावत्त्योः पुत्रः। ज्ञातां  
२४३। पुण्डरीकः- महा-राजपुत्रः,  
सदनुष्ठानपरायणतयाऽस्य शोभनत्वे उपमा। सूत्रं  
२६८। पुण्डरीकः-अलोभोदाहरणे सात्केतनगराधिपतिः।  
आवं ७०२। पुण्डरीकः-महापद्मराजस्य ज्येष्ठसुतः।  
उत्तं ३२६। पुण्डरीकः-पुण्डरिकिण्यां राजा। आवं २८८।  
पुण्डरीकं-सितपद्मम्। ज्ञातां ९६। पुण्डरीकः-ज्ञातायामे-  
कोनविंशतितममध्ययनम्। आवं ६५३। पुण्डरीकं-  
सितम्। भगं ५२०। पौण्डरीकः-शिखरीणः पर्वते हृदः।  
स्थां ७३। सूत्रकृताङ्गस्य सप्तदशममध्ययनम्। समं  
४२। पुण्डरीकं-सहस्रपत्रम्। भगं ७।

**पुण्डरीयगुम्भं-** अष्टादशसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्।  
समं ३५।

**पुण्डरीयणाय-** पुण्डरीकज्ञातम्, ज्ञातायां प्रथम श्रुतस्कन्धे  
एकोनविंशतितममध्ययनम्। ज्ञातां ९।

**पुंसयति-** रूक्षयति। बृहं ७१ आ।

**पुस्कलीपुष्प-** कूष्माण्डिकाकुसुमम्। जम्बू ३४।

**पु-** पूः शरीरम्। आवं २७७।

**पुस्कंत-** पूत्कुर्वन्-पुत्कारं कुर्वाणः। प्रश्नं ४९।

**पुस्कखर-** पुष्करं-चर्मपुटम्। राजं ३१। पुष्करं-चर्मपुटकम्।  
जम्बू ३१। पुष्करं-चर्मपुटकम्। जीवां १८९।

**पुस्कखरकणिया-** पुष्करकर्णिका-पद्ममध्यभागः। स्थां  
१४५। पुष्करकर्णिका-पद्मबीजकोशः। जीवां १७८।  
पुष्करकर्णिका-पद्मबीजकोशः-कमलमध्यभागः। जम्बू  
१९।

**पुस्कखरणी-** पुष्करिणी-तडागरूपा। सूत्रं २८६। चतुरस्रा  
वापी पुष्करणी। स्थां ८६। पुष्करिणी-वृत्ता पुष्करवती  
वा। औपं ८। पुष्करिणी-वृत्तकारा वापी, पुष्कराणी  
विद्यन्ते यस्यां सा वा। जीवां १९७। चाउरस्सा  
पुस्कखरणी। निशीं ७० आ।

**पुस्कखरवर-** पुष्करवरः-पुष्करवरोपलक्षितो द्वीपः। जीवां  
३३३। पुष्कराणि-पद्मानि तैर्वरः-प्रधानः पुष्करवरः  
द्वितीयो द्वीपः। आवं ७८८। पुष्करवरः-कालोदधि-  
समुद्रानन्तरो द्वीपः। प्रज्ञां ३०७।

**पुस्कखरवरदीव-** पुष्करवरद्वीपः- पद्मवरोपलक्षितो द्वीपः।  
अनुयो ९०।

**पुस्कखरवरसमुद्र-** पुष्करवरसमुद्रः-पुष्करवरद्वीपानन्तरं  
समुद्रः। प्रज्ञां ३०७।

**पुस्कखरसंवद्ग-** पुष्कलसंवर्तकः-उदकरसो प्रथमो  
महामेघः। पुष्कलं-प्रचुरमपि सर्वमशुभानुभावं  
भूमिरूक्षतादाहादिकं प्रशस्तोदकेन संवर्तयति-  
नाशयति। अनुयो १६०।

**पुस्कखरसारिया-** लिपिविशेषः। प्रज्ञां ५६।

**पुस्कखरिणी-** पुष्करिणी-वृत्ता वाप्येव जलाशया पुष्करवती  
वा। अनुयो १५९। पुष्करिणी-पुष्करवती वर्तुला। प्रश्नं  
१६०। पुष्करिणी वर्तुलः। औपं ९३। पुष्करिणी-  
पुष्कराण्यस्यां विद्यन्ते इति। जीवां १२३। पुष्करिणी-  
वृत्ता वापी, पुष्क-राणि विद्यन्ते यस्यां सा वा। जीवां  
१८८। वापीवृत्ता। जम्बू ३०। पुष्करिणी-वृत्ताकारा।  
प्रज्ञां २६७। वृत्ताकारा। जम्बू ४१। वृत्ताकारा वापी  
पुष्करिणी यदि वा पुष्क-राणि-पद्मानि विद्यन्ते यासु ता  
पुष्करिण्यः। प्रज्ञां ७२। पुष्करिणी वृत्तः पुष्करवान् वा  
जलाशयविशेषः। भगं २३८।

**पुस्कखरोद-** पुष्करोदः- समुद्रविशेषः। ज्ञातां १२८। पुष्क-  
रोदः- पुष्करवरद्वीपपरितोऽपि शुद्धोदकरसास्वादः  
समुद्र-विशेषः। अनुयो ९०।

**पुस्कखल-** पद्मकेसरम्। आचां ३४८। पुष्कलं-प्राचुर्यम्।  
सूत्रं २८६। पुष्कलं-सम्पूर्णम्। आवं ७८८। पुष्कलं सर्वं  
अशुभानुभावरूपं भरतभूरौक्ष्यदाहादिकम्। जम्बू १७३।  
**पुस्कखलविजय-** पुष्कलावर्तः-सप्तमो विजयः। जम्बू ३४६।

**पुस्कखलविभंग-** पद्मकन्दम्। आचां ३४८।

**पुस्कखलसंवद्गओ-** पुष्करसंवर्तकः-जम्बूद्वीपप्रमाणो  
महामेघः। आवं १०।

**पुस्कखलसंवद्ग-** पुष्कलसंवर्तकः-महामेघः। भगं २३२।

**पुस्कखलसंवद्गत-** एकया वृष्टा वर्षसहस्रं वासयितुं समर्थो  
मेघः। स्थां २७०।

**पुस्कखलसंवद्गय-** पुष्कलं-सर्वं अशुभानुभावरूपं भरतभूरौ-

क्षयदाहादिकं प्रशस्तस्वोदकेन संवर्तयति-नाशयतीति  
पुष्कलसंवर्तकः। ज० १७३।

**पुक्खला-** महाविदेहे विजयः। स्था० ८०।

**पुक्खलावइविजओ-** पुष्कलावतीविजयः। आव० ११६,  
११७।

**पुक्खलावई-** जम्बूपूर्वविदेहे विजयः। जाता० २४२।  
महाविदेहे विजयः। स्था० ८०।

**पुक्खलावईकूड-** पुष्करावतीकूटं  
एकशैलवक्षस्कारकूटनाम। जम्बू० ३४७।

**पुक्खलावतीविजओ-** पुष्कलावतीविजयः-जम्बूमहाविदेहे  
विजयः। उत्त० ३२६।

**पुक्खलावत्तकूड-** पुष्करावर्तकूटं-  
एकशैलवक्षस्कारकूटनाम। जम्बू० ३४७।

**पुग्गल-** पुद्गलं लेष्टवादिकम्। जीवा० ३७५। पुद्गलं-  
उष्णौ-दनादि। दशवै० १५४। पुद्गलः-आत्मा। प्रधानः।  
सूत्र० २३७। पुद्गलं-मांसम्। दशवै० १७६।

**पुग्गलपरियट्टा-** पुद्गलैः-पुद्गलद्रव्यैः सह परिवर्तताः-  
परमा-णूनां मिलनानि पुद्गलपरिवर्तताः। भग० ५६७।

**पुच्छ-** वालधौ। उत्त० ५५१। मेहनम्। औप० ८७।

**पुच्छण-** प्रोच्छन्नं-दारुदण्डकम्। बृह० १०८आ।

**पुच्छणा-** पृच्छना-इङ्खिणिकादिलक्षणा। आव० १२९।

पृच्छना-विस्मृतसूत्रार्थप्रश्नः। प्रश्न० १२९।  
गृहीतवाचनेनापि संशयाद्युत्पत्तौ पुनःप्रष्टव्यमिति,  
पूर्वाधीतस्य सूत्रादेः शङ्कि-तादौ प्रश्नः, प्रच्छना-सूत्रस्य  
अर्थस्य वा प्रच्छना। दशवै० ३२।

**पुच्छणी-** पृच्छनी-अविज्ञातस्य संदिग्धस्य वाऽर्थस्य  
ज्ञानार्थं तदभियुक्तप्रेरणरूपा। भग० ५००। पृच्छनी-  
अविज्ञातस्य सन्दिग्धस्य कस्यचिदर्थस्य परिज्ञानाय  
तद्विदः पार्श्वे चोदना, असत्यामृषाभाषाभेदः। प्रजा०  
२५९। प्रच्छनी, असत्यामृषाभाषाभेदः। दशवै० २१०।

**पुच्छा-** अपुणरुत्तं जाव बिओ कडिढउं पुच्छति सा पुच्छा  
तिहिं सिलोगेहिं एगा पुच्छा, जत्थ पगतं समप्पति थोवं  
बहुं वा सा एगा पुच्छा जत्तियं आयरिएण तरइ,  
उच्चारितं घेतुं सा एगा पुच्छा। निशी० ६७आ।  
पुव्वदिद्वे पुच्छा, नामेण वा गोत्तेण वा दिसाए वा  
पुच्छा। निशी० १९९आ। आहारणतद्देशे तृतीयभेदः।  
स्था० २५३। पुच्छा। आव० ३८२। पुच्छा-जिज्ञासोःप्रश्नः।

व्याख्याने एकाद-शमद्वारम्। उत्त० ७३। पृच्छा-प्रश्नः।  
दशवै० ४६।

**पुच्छिदड्ड-** सांशयिकार्थप्रश्नकरणात्। भग० १३५। संशये  
सति परस्परतः। भग० ५४२। संशये सति पुच्छियद्वे।  
जाता० १०९।

**पुच्छीअ-** पृष्टवान्। आव० १५८।

**पुच्छेज्ज-** पृच्छेत्-अर्थयेत्। ओघ० १३५।

**पुज्ज-** पूज्यः-पूजार्हः-कल्याणभाग्। दशवै० २५२।

**पुज्जसत्थ-** पूज्यं-सकलजनश्रुताधादिना पूजार्हं शास्त्रम-  
स्येति-पूज्यशास्त्रः। उत्त० ६६। पूज्याः शास्ता  
गुरुरस्येति पूज्यशास्त्रकः। उत्त० ६६। पूज्यश्रचासौ  
शस्तश्चेति-पूज्यश-स्तः। उत्त० ६६।

**पुञ्छणा-** पुञ्छनि-

निबिडतवाच्छादनहेतुश्रुलक्षणतरतृणविशेषस्थानीया।  
राज० ६२।

**पुट-** काष्ठादिगन्धद्रव्यम्। जीवा० १९२।

**पुटग-** पुटकः खल्लकम्। बृह० १०१आ।

**पुट्ट-** उदरम्। बृह० २३५आ।

**पुट्टिल-** चतुर्थो वासुदेवः। स्था० ४५७।

**पुट्टु-** स्पृष्टं-बद्धस्पृष्टनिकाचितम्। सूत्र० ७१। पृष्टं-  
उपरित-लम्। सूत्र० १२६। आत्मप्रदेशस्पर्शवति। भग०  
२१। गाढ-तरबन्धेन पोषितम्। भग० ९०। स्पृष्टं-  
अग्निसम्पर्कानन्तरं सकृत् घनकुट्टितः सूचीकलापवत्।  
प्रजा० ४०२। अतीव स्पर्शनं स्पृष्टम्। प्रजा० ४५९।  
स्पृष्टं-आत्मप्रदेशस्पर्शविषयम्। जीवा० २०।  
कथितत्त्वादिना अकिञ्चित्करः। व्यव० ३०९आ।  
स्पृष्टं-स्पर्शमात्रोपेतम्। जीवा० १३। स्पृष्टः-  
इन्द्रियसम्बद्धः। स्था० २५३। स्पृष्टम्। भग० १३१।  
पृष्ठं-चक्रपरिधिरूपम्, यल्लोके पृंठी इति प्रसिद्धम्।  
जम्बू० २११। स्पृष्टः-अभिद्रुतः। उत्त० ८६। स्पृष्टः  
व्याप्तः पृष्ट इव उष्टः। उत्त० ११९। स्पृष्टः बीधितः।  
उत्त० १४०। स्पृष्टं-प्राप्तम्। जम्बू० ६७। स्पृष्टः-  
विदारितः। औप० ८८। स्पृष्टः-स्पृष्टवान्। जीवा० २६१।  
स्पृष्टः-व्याप्तः। प्रजा० ६०१। स्पृष्टः-यथाडबद्धः। आव०  
३२१। स्पृष्टं-तनौ-रेणुवत्। भग० ५६९। पुष्टः-उपचितः।  
जाता० ९१। पृष्ठः-पुष्टः। उत्त० १२०। प्रोज्झितं-  
सुधृष्टम्। बृह० २७१आ। फुडं-जीवप्रदेशैः स्पर्शनात्

स्पृष्टम्। भग० १८४। आत्मप्रदेशविषयम्। प्रजा० ५०२।  
**पुडतो-** पृष्ठतः। जाता० १९०।  
**पुडपविड-** श्रोत्रादीनि चक्षुरहितानि स्पृष्टमर्थं प्रविष्टम्।  
 भग० १३१।  
**पुडलाभित-** पृष्ठस्यैव साधो। दीयते ते? इत्येवं यो  
 लाभस्तेन चरतीति प्राग्वत् पृष्ठलाभिकः। स्था० २९८।  
**पुडलाभिय-** पृष्ठलाभिकः-यः कल्पते इदं इदं च भवते  
 साधो। इत्येवं प्रश्नपूर्वकमेव लब्धं गृह्णाति यः सः।  
 प्रश्न० १०६।  
**पुडवंसा-** पृष्ठवंशा मध्यवल्काः। ज० २३।  
**पुडवई-** प्रौष्ठपदी। सूर्य० १२७।  
**पुडसेणियापरिकम्मे-** दृष्टिवादे परिकर्मे तृतीयो भेदः।  
 सम० १२८।  
**पुडा-** स्पृष्टा-छुप्तवती। जम्बू० ६८। स्फुटाः-स्फुटीकृता  
 शोधिता। जाता० ११९।  
**पुडापुड-** दृष्टिवादे सूत्रे चतुर्दशमो भेदः। सम० १२८।  
**पुडेया-** पुष्टिः-पृच्छा ततो जाता पृष्टिजा-प्रश्नजनितो  
 व्यापारः, अथवा पृष्टं-प्रश्नः वस्तु व तदस्ति  
 कारणत्वेन यस्यां सा पृष्टिका, अथवा स्पृष्टिः-स्पर्शनं  
 ततो जाता सृष्टिजा, तथैव स्पृष्टिकाऽपीति। स्था० ४२।  
 जीवादीन् रागादिना पृच्छतः स्पर्शतो वा। स्था० ३१७।  
 स्पृष्टिजा-स्पर्शनक्रिया, विंशतिक्रियामध्ये सप्तमी।  
 आव० ६१२। स्पर्शिकी-स्पर्शन-क्रिया। आव० ६१३।  
**पुडिल-** अनुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयवर्गस्य नवमम-  
 ध्ययनम्। अनुत्त० २।  
**पुडो-** पृष्टिः-अतिशायी पोषः। जीवा० २६८। पुष्टिः-पुण्यो-  
 पचयः, अहिंसायास्त्रयोविंशतितमं नाम। प्रश्न० ९९।  
 पृष्टिः। आव० ३५०।  
**पुड-** पुटं-नासापुटम्। उपा० २१। पुष्करम्। उपा० २१।  
**पुडभेयण-** कुङ्कुमादीनां पुटा यत्र विक्रयार्थं भिद्यन्ते  
 उत्त० पुटभेदनम्। बृह० १८१ आ। पुटभेदनं-  
 प्रधाननगरम्। उत्त० ४७५।  
**पुडा-** पुटा-पुटिका। भग० ७१३।  
**पुडिया-** पुटिका। आव० ३९९।  
**पुढ-** पृथग्भूतः-व्यवस्थितः। सूत्र० ५५।  
**पुढवाए-** पुटपाकाः-कुष्ठिकानां  
 कणिकावेष्टितानामग्निना पचनानि, अथवा पुटपाकाः-

पाकविशेषनिष्पन्ना। जाता० १८१।  
**पुढवि-** भगवत्यां द्वादशशतके रत्नप्रभापृथिवीविषयः।  
 तृती-योदशकः। भग० ५५२। पृथिवी-लोष्टादिरहिता।  
 दशवै० १५२।  
**पुढविकाइया-** पृथिव्येव कायो येषां ते पृथिवीकायिकः,  
 पृथिवीकायिका, पृथिव्येव वा काया-शरीरं सो यस्य  
 अस्ति ते पृथिवीकायिकाः। स्था० ५३।  
**पुढविसत्थ-** पृथ्वीशस्त्रम्। आव० ५१४।  
**पुढविसिलावट्टय-** पृथिवीशिलारूपः पट्टकः- आसनविशेषः।  
 पृथिवीशिलापट्ट कः। भग० १२७। पृथिवीशिलापट्टकः-  
 आसनविशेषः। जम्बू० २८०।  
**पुढवी-** पृथिवी, पृथ्व्याः प्रथमभेदः। आचा० २९।  
 पृथिवीधूलिः। आचा० ५१। इशानदेवेन्द्रस्य  
 प्रथमाऽग्रमहिषी। स्था० २०४। भग० ५०५। भगवत्यां  
 त्रयोदशशतके प्रथमचतुर्थउद्देशकौ। भग० ५९६।  
 पृथिवीति-भामा सत्यभामावत् शुद्धपृथिवी च  
 नदीतटभित्त्यादिरूपा। प्रजा० २७।  
 पृथिवीकेदारद्युपरिवर्तिनी शुष्ककोपट्टिका  
 श्लहणाखटिका निमित्ता वा। बृह० १६१ आ। पृथ्वी  
 रत्नप्रभादिः। अनुयो० १७३।  
**पुढवीओ-** पृथिव्यः भगवत्याः प्रथमशतके पञ्चमोद्देशकः।  
 भग० ६।  
**पुढवीकाय-** पृथिवीकायः-उदयभूधरशिरः। अस्तमयभूधर-  
 शिरो वा। सूर्य० ४७।  
**पुढवीवडंसय-** पृथिव्यवतंसकं-रोहीटकनगरे उद्यानम्।  
 विपा० ८२।  
**पुढवीसिरी-** पृथिवीश्रीः-इन्द्रपुरनगरे गणिका। विपा० ८८।  
**पुढेगत्तं-** पृथक्कालदेशभेदेन कदाचित्क्वचिदित्यर्थः।  
 स्था० ३८४।  
**पुढो-** पृथक्-प्रत्यक्षज्ञानी परोक्षज्ञानी च। आचा० ३६।  
 पृथग्भेदेन। उत्त० १८१। पृथग्-विभिन्नम्। आचा० ३५।  
 पृथग् प्रत्येकम्। आचा० १२१। पृथग्-विभिन्नम्। आचा०  
 १४१।  
**पुढोछंदा-** पृथग्-भिन्नः छन्दः-अभिप्रायः येषां ते पृथ-  
 ग्छन्दाः। आचा० २०५।  
**पुढोजण-** पृथग्जनः-प्राकृतपुरुषः अनार्यकल्पः। सूत्र० ८१।  
**पुण-** पुनः। प्रश्न० १५५। पुनः-एवकारार्थः। आचा० १०।

पुनः-द्वितीयवारापेक्षः। व्यव० १५७ अ। पुनः शब्दः-  
केवलार्थः। व्यव० ११ अ।  
पुणउत्ति- (देसी) भासते वुच्चंति। निशी० १२१ अ।  
पुणङ्गा- साधुवादानङ्गीकरणेन यत्पुण्यार्थकृतम्। दशवै०  
१७३।  
पुणनन्द- श्रेयांसजिनप्रथमभिक्षादाता। आव० १४७।  
पुणभव- पुनर्भवः-संसारः। प्रज्ञा० १०८।  
पुणभवलया- पुनर्भवः लता। मरण०।  
पुणभद्र- चंपायां चैत्यम्। उपा० १।  
पुणरावत्ती- पुनरावृत्तिः-परावृत्तिः सुस्थता। आव० ८६३।  
पुनरावृत्तिः। दशवै० ९४।  
पुणरावि- पुनरपिः भूयोऽपि। उत्त० ३३६।  
पुणरुत्त- शब्दार्थयोः पुनर्वचनं पुनरुक्तम्,  
सूत्रदोषविशेषः। आव० ३७४। पुनरुक्तं  
शब्दतोऽर्थतश्चपुनर्वचनम्। अनुयो० २६१।  
अर्थादापन्नस्य स्वशब्दस्य पुनर्वचनम्। आव० ३७५।  
पुणव्वसु- पुनर्वसुः-नारायणवासुदेवपूर्वभवः। आव० १६३।  
नक्षत्रम्। स्था० ७७। शीतलनाथप्रथमभिक्षादाता। सम०  
१५१। अष्टमबलदेवपूर्वभवनामा। सम० १५३।  
पुणव्वसू- पुनर्वसुः। सूर्य० १३०। शीतलजिनप्रथमभिक्षा-  
दाता। आव० १३७।  
पुणोपुणो- करेति एवं प्रसङ्गः। निशी० २३३ अ।  
पौनःपुण्येन-यावृत्त्या। आचा० २०१।  
पुण्डरीकः- औत्पत्तिक्यां स्त्रीलम्पटः। नन्दी० १५४।  
व्याघ्रः। उत्त० १३५। सूत्रकृताङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्धे  
प्रथममध्ययनम्। स्था० ३८७।  
पुण्डरीकदलं- श्वेतपद्मम्। जीवा० १९१।  
पुण्ड्र- तिलकः। सम० १३९। तिलकः। जीवा० १७५।  
पुण्ड्रप्रभा- वापीनाम्। जम्बू० ३७१।  
पुण्ड्रा- वापीनाम्। जम्बू० ३७१।  
पुण्ण- प्रणति-शुभीकरोति पुनाति वा-  
पवित्रीकरोत्यात्मान-मिति पुण्यं-शुभकम्म। स्था० १७।  
पुण्यं-पुण्यहेतुभूतं शुभानुष्ठानम्। उत्त० ३८८। पुण्यः-  
षष्ठो दक्षिणनिकायेन्द्रः। भग० १५७। पूर्णः। जीवा०  
१७०। पुण्यार्थं यत्र बहु रन्ध-यित्वा श्रमणानां दीयते,  
अथवा पूर्णं यद्-गृहस्थैर्बहुभिस्तत्। ओघ० १५६। पूर्णः-  
सम्भूतः। जीवा० २६५। पूर्णः-क्षोदोदे समुद्र।

पूर्वाद्धाधिपतिर्देवः। जीवा० ३५५। महर्षिकः। बृह० १७०  
अ। भूतो जलस्य भग० ८३। पुण्या-पवित्रा। ज्ञाता० १३९।  
पुण्यं-श्रुतचारित्रभूतं शुभकर्म। भग० ९०।  
यत्स्वरकलाभिः पूर्णं गीयते तत्पूर्णम्। जीवा० १९४। यत्  
स्वरकलाभिः पूर्णं गीयते तत् पूर्णम्। जम्बू० ४०। स्वर-  
कलाभिः सर्वाभिरपियुक्तं कुर्वतः पूर्णम्। अनुयो० १३२।  
पुण्यकूटं-वैताढ्यकूटः। जम्बू० ३४१।  
पुण्णकलस- पूर्णकलशः-अनार्यग्रामः। आव० २०७।  
पुण्णघोस- जम्ब्वैरवत आगामिन्यां उत्सर्पिण्यां  
तीर्थकरः। सम० १५४।  
पुण्णणंद- श्रेयांसनाथप्रथमभिक्षादाता। सम० १५१।  
पुण्णपत्त- पूर्णपात्रं-अक्षतभृतपात्रम्। उत्त० ३८१।  
पुण्णप्पभ- पूर्णप्रभः-क्षोदोदे समुद्रे  
पश्चिमार्द्धाधिपतिर्देवः। जीवा० ३५५।  
पुण्णप्पमाण- पूर्णप्रमाणः-स्वप्रमाणं यावज्जलेन पूर्णः।  
जीवा० ३२२। पूर्णप्रमाणः-पूर्णं वा जलेनात्मनो प्रमाणं  
यस्य, मानं वा यस्य पूर्णमात्मनः। भग० ८३।  
पुण्णभद्र- पूर्णभद्रः-चम्पायां यक्षविशेषः। आव० २२५।  
पुण्यभद्रः-दक्षिणनिकाये तृतीयो व्यन्तरेन्द्रः। भग०  
१५८। पुण्यभद्रं-रविविषयप्रश्ननिर्णये चम्पानगर्या  
चैत्यम्। भग० २०६। पूर्णभद्रः। अन्त० १९। पूर्णभद्रं-  
चम्पायां चैत्य-विशेषः। उत्त० ३२१।  
सौधर्मकल्पवासिदेवः। निर० ३६। सौधर्मकल्पे  
विमानविशेषः। निर० ३६। चंपानगर्या उत्तरपूर्वार्था  
चैत्यः। ज्ञाता० ३। धातकिखण्डभरतचम्पायां चैत्यम्।  
ज्ञाता० २२२। चंपायां चैत्यम्। उपा० १९। निशी० २३ अ।  
पूर्णभद्रः-चम्पानगर्या चैत्यविशेषः। प्रश्न० १। पूर्णभद्रः-  
यक्षेन्द्रः। जीवा० १७४। चम्पायां चैत्यम्। ज्ञाता० २५२।  
जितशत्रुराजोः चंपानगर्या चैत्यम्। ज्ञाता० १७३।  
मणिपतिकानगर्या गाथापतिः। निर० ३६।  
पुण्णभद्रकूड- पूर्णभद्रनाम्नो व्यन्तरेणस्य कूटं  
पूर्णभद्रकूटम्। जम्बू० ३३८। पूर्णभद्रनाम्नो देवस्य  
निवासभूतं कूटं पूर्णभद्रकूटम्। जम्बू० ७७।  
पुण्णमासी- पूर्णो मासो यस्यां सा पोर्णमासी, पूर्णोमाः-  
चन्द्रमा अस्यामिति वा पोर्णमासी। जीवा० ३०५।  
पुण्णरत्ता- परिपूर्णमधुरा। उपा० २८।  
पुण्णस्स- तीर्थकरणधरार्चार्थादिना येन प्रकारेण

पुण्यवान् सुरेश्वरचक्रवर्तिमाण्डलिकादिः। आचा०  
१४५।  
पुण्णा- धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य नवममध्ययनम्।  
जाता० २५२।  
पुण्यं- शुभम्। आव० ५९२।  
पुता- नातिमन्दा नातित्वरिता। बृह० २५६ अ।  
पुताई- उद्भ्रामिका। बृह० २११ आ।  
पुत्तंजीव- वृक्षविशेषः। भग० ८०३।  
पुत्तंजीवय- पुत्रजीवकः वृक्षविशेषः। प्रजा० ३१।  
पुत्त- पुनाति पितुराचारानुवर्तितयाऽऽत्मानमिति पुत्रः।  
उत्त० ३८। पुनाति पितर पाति वा पितृमर्यादामिति  
पुत्रः-सूनुः। स्था० ५१६। पुत्रः-पुत्रमांसोपमया  
भोक्तव्यम्, साधो-भोक्तव्य उपमा। दशवै० १९।  
वस्त्रम्। बृह० २८ अ। परिधानवस्त्रम्। बृह० २५३ अ।  
पुत्तगो- पुत्तलकः। बृह० १४८ अ।  
पुत्तजम्म- पुत्रजन्म। आव० ३४४।  
पुत्तभंड- पुत्रभाण्डम्। आव० २०५। आव० २७३।  
पुत्तलपिंड- असद्भावस्थापनायां दृष्टान्तः। ओघ० १२९।  
पुत्तलिका- पुस्तकर्मविशेषः। ओघ० १२९।  
पुत्ता- पूर्णभद्रजक्षस्य प्रथमा अग्रमहिषी। स्था० २०४।  
पुत्ताणुपुत्तियं- पौत्रानुपुत्रिकां- पुत्रपौत्रादियोग्यम्।  
जाता० ३९।  
पुत्तिया- चतुरिन्द्रियजीवः। उत्त० ६९६।  
चतुरिन्द्रियजन्तु-विशेषः। जीवा० ३२।  
पुत्थ- पुस्तं- वस्त्रकृतम्। आव० ७६७।  
पुत्थारा- तुन्नाकविशेषः।-शिल्पाचार्यः। प्रजा० ५६।  
पुत्थी- पुस्ती-पोतस्य ज्येष्ठा सुता, ब्रह्मदत्तराजी।  
उत्त० ३७९।  
पुद्गलोद्देशः- भगवत्यामुद्देशकः। आव० १०६।  
पुधोवणं- पुणो पुणो धोवणं पुधोवणं। निशी० ११८।  
पुत्र- प्रथमो द्विपकुमारेन्द्रः। स्था० ८४। पूर्णः-  
द्वीपकुमारा-णामधिपतिः। प्रजा० ९४। पूर्ण-भृतं  
प्लुतम्। जाता० ७१। पूर्ण-स्वरकलाभिः। स्था० ३९६।  
पुण्यं पुण्यहेतुत्वात्। सूत्र० ४०३।  
पुन्नभद्र- चम्पायां जक्षायतनम्। भग० ४८४। भग० ६१८।  
शुद्धपाणके देवः। भग० ६८०। पूर्णभद्रः-चम्पायां चैत्यवि-  
शेषः। अन्त० १। पूर्णभद्रः-अन्तकृद्दशानां षष्ठवर्गस्य

एका-दशममध्ययनम्। अन्त० २३। पूर्णभद्रं  
चम्पानगर्यामुद्यानम् तत्रैव यक्षश्च। विपा० ९५।  
महापद्मस्य सेनाकर्मकरदेवः। स्था० ४५९। द्वितीयो  
जक्षेन्द्रः। स्था० ८५। पुण्यभद्रः वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो  
देवः। भग० २००। चंपायां चैत्यः। जाता० १९३। चम्पायां  
चैत्यः। निर० १९। पुष्पिकायाः पञ्चममध्ययनम्।  
निर० २१। चम्पानगर्यां चैत्यम्। निर० ४। चम्पायां  
चैत्यम्। अन्त० १। पूर्णभद्रः चम्पायां चैत्य-विशेषः।  
अन्त० २५। विपा० ३३। पूर्णभद्रः-अन्तकृद्दशानां  
षष्ठवर्गस्य एकादशममध्ययनम्। अन्त० १८।  
पुन्नरक्ख- पुण्यरक्षः वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। भग०  
२००।  
पुन्नरूप- पूर्णरूपः पुण्यरूपो वा  
विशिष्टरजोहरणादिद्रव्यलिङ्गसद्भावात् सुसाधुरिति।  
स्था० २७९।  
पुन्नसेण- पुण्यसेनः-अनुत्तरोपपातिकदशानां  
द्वितीयवर्गस्य त्रयोदशममध्ययनम्। अनुत्त० २।  
पुन्ना- जक्षेन्द्रस्याग्रमहिषी। भग० ५०४।  
पुन्नाग- लताविशेषः। आचा० ३०। वृक्षविशेषः। भग०  
८०३। पुन्नागः-एकास्थिकवृक्षविशेषः। प्रजा० ३१।  
पुप्फ- विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम० ३८।  
पुष्पं-कुन्दकलिका। जीवा० १६३। पुष्पशिखावलिरचिता  
चङ्गेरी पुष्पचङ्गेरी। आव० ४१। पुष्पः-नक्षत्रविशेषः।  
सूर्य० १३०। पुष्पं-अच्छोदकम्। निशी० १५० अ। पुष्पं-  
विकसितं अग्रथितम्। अनुयो० २४। पुष्पं-  
वर्णगन्धोपेतम्। आचा० ३५२।  
पुप्फकंत- विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम०  
३८।  
पुप्फक- पुष्पकः-देवविमानः। औप० ५२।  
पुप्फकरंड- पुष्पकरंडकं-हस्तिशीर्षनगरे उद्यानम्।  
विपा० ८९।  
पुप्फकरंडगहत्थगय- पुष्पकरंडकहस्तगतः। आव० ३७०।  
पुप्फकरंडय- पुष्पकरंडकं राजगृह उद्यानम्। आव० १७२।  
पुप्फकुंथुत- पुष्पकुन्थुः पुष्पकीटः। आव० ८३२।  
पुप्फकेउ- पुष्पकेतुः- सप्ताशीतितममहाग्रहः। स्था० ७९।  
जम्बू० ५३५। जम्बूवैरवते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां  
सप्तम-तीर्थकरः। सम० १५४। पुष्पकेतुः-

पुष्पभद्रनगराधिपतिः। आव० ६८८। पुष्पकेतुः-पुष्पपुरे राजा। बृह० २१८आ।

**पुष्पग-** बुध्नम्। ओघ० ११७।

**पुष्पचंगेरिया-** पुष्पचङ्गेरिका। जम्बू० ३९०।

**पुष्पचंगेरी-** पुष्पचङ्गेरी। जीवा० २१४, २३४।  
पुष्पचङ्गेरी। जम्बू० ४१०।

**पुष्पचूल-** पुष्पचूलः-वैनयिक्यां पुष्पसेनराजपुत्रः। आव० ४२९। पुष्पचूलः-पुष्पभद्रनगराधिपतिः पुष्पकेतोः पुत्रः। आव० ६८८। पुष्पचूलः-अङ्गेषु चम्पास्वामी, यो ब्रह्म-पत्न्याश्चुलिन्या भ्राता। उत्त० ३७७।

**पुष्पचूला-** पार्श्वनाथस्य प्रथमा शिष्या। सम० १५२।  
पुष्पचूला-वैनयिक्यां पुष्पसेनराजपुत्री। आव० ४२९।  
आर्विकालाभद्वारे आर्या। आव० ५३७। पुष्पभद्रनगरे पुष्पकेतोः पुत्री। आव० ६८८। निरयावलिकायाः चतुर्थवर्गे साध्वीविशेषः। निर० ३८। पार्श्वनाथस्य शिष्या। ज्ञाता० २५३। पुष्पकेतोः दारिया। बृह० २१८आ।

**पुष्पचूलिया -** पुष्पितायाः अधिकृतार्थविशेषप्रतिपादिका पुष्पचूडाः। नन्दी० २०८। निरयावल्युपाङ्गस्य चतुर्थो वर्गः। निर० ३।

**पुष्पच्छज्जिया-** छाद्यते-उपरि स्थग्यते इति छाद्या छाद्यैव छाद्यिका-पुष्पैर्भूता छाद्यिका पुष्पच्छाद्यिका। जम्बू० ३९०।

**पुष्पच्छज्जिया-** पुष्पच्छज्जिका द्वारशाखा। आव० ५१४।  
पुष्पज्झय- विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम० ३८।

**पुष्पतंबोल-** पुष्पताम्बूलम्। आव० ८३१।

**पुष्पथामं-** पुष्पस्थानम्। दशवै० ८७।

**पुष्पदंत-** हस्तिराजा। स्था० ३०३। पुष्पदन्तः-क्षीरवर-द्वीपेऽपराद्धाधिपतिर्देवः। जीवा० ३५३।

**पुष्पदत्त-** पुष्पदत्तः-अणगारविशेषः। विपा० ९५।

**पुष्पपडलग-** पुष्पपटलकं-पुष्पाधारभाजनविशेषः। जम्बू० ३९०।

**पुष्पपडलय-** पुष्पपटलकम्। जीवा० २३४।

**पुष्पपभ-** विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम० ३८।

**पुष्पपुंजोवयार-** पुष्पपुञ्जोपचारः। जम्बू० ३९०।

**पुष्पपुडिया-** पुष्पपुटिका। आव० ६७९।

**पुष्पपुर-** पुष्पकेतो राजधानी। बृह० २१८आ।

**पुष्पपूयय-** पुष्पशेखरम्। ज्ञाता० २०५।

**पुष्पबेंटिया-** त्रीन्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४२।

**पुष्पभद्रं-** पुष्पभद्रं-गङ्गातटे नगरम्। आव० ६८८।  
पुष्पभद्र पारिणामिकी दृष्टान्ते नगरम्। आव० ४२९।

**पुष्पमाणव-** पुष्पमाणवः-लक्षणविशेषः। जीवा० १८९।

**पुष्पमाला-** पुष्पमाला अधोलोकवास्तव्या सप्तमा दिक्कुमारी। जम्बू० ३८३। पुष्पमाला-अधोलोकवास्तव्या दिक्कुमारी। आव० १२१।

**पुष्पय-** पुष्पकः-ईशानेन्द्रस्य विमानकारी देवः। जं० प० ४०५।

**पुष्पयविमाण-** पुष्पकविमानम्। आव० १४४।

**पुष्पलेस-** विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम० ३८।

**पुष्पवई-** पुष्पवती-पुष्पकेतो राज्ञी। बृह० २१८आ।  
पुष्पकेतोः देवी। बृह० २१८आ। पुष्पवती-पारिणामिक्यां पुष्पभद्रनगरे पुष्पसेनराज्ञी। आव० ४२९।

**पुष्पवण्ण-** विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम० ३८।

**पुष्पवती-** धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य चतुर्विंशतितममध्ययनम्। ज्ञाता० २५३।  
किम्पुरिसेन्द्रस्य चतुर्थी अग्रमहिषी। स्था० २०४।  
मल्लिनाथस्य प्रथमा शिष्या। सम० १५२। पुष्प-वती-गङ्गातटे पुष्पभद्रनगरे पुष्पकेतुराज्ञी। आव० ६८८।  
किम्पुरुषस्य चतुर्थाऽग्रमहिषी। भग० ५०४। पुष्पवतिकं-तुङ्गिकानगर्यां चैत्यम्। भग० १३६।

**पुष्पवद्दलं-** पुष्पवर्द्धलं यैः क्षितिविभूषा। आव० २३०।

**पुष्पवद्दलयं-** पुष्पवर्द्धलं। आव० १२२।

**पुष्पवासा-** पुष्पवर्षा-कुसुमवर्षणम्। भग० १९९।

**पुष्पवुड्डी-** पुष्पवृष्टिः। भग० १९९।

**पुष्पशाल-** पुष्पशालः-मगधविषये गूबरग्रामे गाथापतिः। आव० ३५५। पुष्पशालः-श्रोत्रेन्द्रियोदाहरणे सुस्वरो गान्धर्वकः। आव० ३९८।

**पुष्पशालसुय-** पुष्पशालसुतः-पुष्पशालगाथापतिपुत्रः। आव० ३५५।

**पुष्पसिंग-** विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम० ३८।

**पुष्पसालसुय-** पुष्पसालसुतः-पुष्पशालगाथापतिपुत्रः।

आव० ३५५।

**पुष्पसिंग-** विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम० ३८।

**पुष्पसिद्ध-** विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम० ३८।

**पुष्पसुहुमं-** पुष्पसूक्ष्मं-वटोदुम्बराणां पुष्पाणि। दशवै० २३०। पुष्पसूक्ष्मं वटोदुम्बराणां पुष्पाणि तानि तदवर्णानि सूक्ष्माणि। स्था० ४३०। वडउंबरादीणि संति पुष्काणि सुहुमाणि। दशवै० १२१।

**पुष्पसेन-** पुष्पसेनः-पारिणामिकीबुद्धिदृष्टान्ते पुष्पभद्रनगरे राजा। आव० ४२९।

**पुष्पावकिर्ण-** पुष्पाणीव इतस्तोऽवकीर्णं विप्रकीर्णं पुष्पाव-कीर्णम्। जीवा० ३९८।

**पुष्पावत्त-** विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम० ३८।

**पुष्पासव-** पुष्पासवः। प्रजा० ३६४। पुष्पासवः-पुष्परस-सारः। जीवा० ३५१।

**पुष्पाहार-** पुष्पाहारकः। निर० २५।

**पुष्पिआ-** पुष्पिता-यासु ग्रन्थपद्धतिषु गृहवासमुत्कलन-परित्यागेन प्राणिनः संयमभावपुष्पिताः सुखिता उषिता भूयः संयमभावपरित्यागतो दुःखावाप्तिमुकुलनेन मुकुलिताः पुन-स्तत्परित्यागेन पुष्पिताः प्रतिपद्यन्ते ताः पुष्पिताः। नन्दी० २०७।

**पुष्पिया-** निरयावल्युपाङ्गस्य तृतीयो वर्गः। निर० ३, २१।

**पुष्पुत्तर-** पुष्पोत्तरं-विमानविशेषः। उत्त० २९९। विमानवि-शेषः। आचा० ४२१। पुष्पोत्तरः-शर्कराभेदः। जम्बू० ११८।

**पुष्पुत्तरवडिसंग-**

विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। सम० ३८।

**पुष्पुत्तरा-** पुष्पोत्तरा-आस्वादविशेषः। प्रजा० ३६४।

**पुष्कुत्तरि-** पुष्पोत्तरावतंसकः-विमानविशेषः। आव० १७७।

**पुष्फोत्तरा-** पुष्पोत्तरा। जीवा० २७८।

**पुष्फोवयार-** पुष्पोपचारः-पुष्पप्रकारः। सम० ६१।

**पुष्फोवयारसंठित-** पुष्पोपचारसंस्थितः-शतभिषानक्षत्रसं-

स्थितः। सूर्य० १३०।

**पुयलि-** पुततटिं-पुतप्रदेशम्। भग० ६७९, ६८४।

**पुयावइत्ता-** प्लावयित्वा अन्यत्र नीत्वाऽऽर्यरक्षितवत्, पूतं वा दूषणव्यपोहेन कृत्वा या सा पूतयित्वा। स्था० २७६। 'प्लुङ्गतौ' इति प्लावयित्वा-अन्यत्र नीत्वा आर्यरक्षितवद् या प्रव्रज्या दीयते सा। स्था० १२९।

**पुरंदर-** पूश्च शरीरमप्युच्यते तद्विकृष्टतपोऽनुष्ठानतो, दारयतीव दारयतीति पुरन्दरः। उत्त० ३५१।

असुरादिपुराणां दारणात् पुरन्दरः-इन्द्रः। भग० १७४।

पुरन्दरः-लोकोक्त्या च पूर्दारणात् पुरन्दरः। उत्त० ३५०।

**पुरंदरजसा-** कुम्भकारकटे देवी। व्यव० ४३२अ।

पुरन्दरयसा-जितशत्रुराजकन्या। उत्त० ११४।

**पुरंदरा-** चंपाणामणगरी तत्थ खंदगो राया तस्य भगिणी। निशी० ४४अ।

**पुर-** नगराद्येकदेशभूतं प्राकारावृतम्। स्था० २९४। निशी० २६५अ।

**पुरओ-** पुरतः-अग्रतः। ज्ञाता० १९२।

**पुरओकाउं-** अग्रे विधाय पुरस्कृत्य वा प्रधानीकृत्य वा। भग० १२३।

**पुरकम्म-** भिक्षायाः पुरतः-प्रथममेव यत्कृतं कर्म कडुच्छुका-दिप्रक्षालनादि तत् पुरःकर्म। ओघ० १७०। पुरःकर्म-अप्कायभक्षिते प्रथमभेदः भक्तादेर्दानात्पूर्वं चत्साध्वर्थं कर्म हस्त-मात्रादेर्जलप्रक्षालनादि क्रियते तत्पुरः-कर्म। पिण्ड० १४९।

**पुरक्कार-** पुरस्कारः-सद्भूतगुणोत्कीर्तनम्।

वन्दनाभ्युत्थाना-सनप्रदानादिव्यवहारश्च। आव० ६५८।

पुरस्करः-अभ्यु-त्थानासनादिसम्पादनम्। उत्त० ८३।

पुरस्कारः-सर्वकार्येष्वग्रतः स्थापनम्। आचा० २१६।

पुरस्कारः-राजादिकृता-भ्युत्थानादिः। भग० ३९।

पुरस्करणं-पुरस्कारः-गुणवान-यमिति गौरवाध्यारोपः।

उत्त० ५८०। पुरस्कारः-अभिमा-नविशेषः। ज्ञाता० १४०।

**पुरकखड-** पुरस्कृतः-परोवर्त्ती। भग० २६।

पुरस्कृतः-पुरोवर्त्ती भविष्यन्। भग० २११। पुरस्कृतः-अतीसमयः। सूर्य० १९९।

**पुरच्चरण-** पुरश्चरणम्। उत्त० २६३।

**पुरच्छिम-** पूर्वदिक्। स्था० ६८। पौरस्त्यः। भग० ६।

पूर्वस्याम्। जम्बू० ७३।

पुरतोउदया- पुरत उदया। सूर्य० ९५।  
 पुरत्थरुयग- पौरस्त्यरुचकम्। ज्ञाता० १२७।  
 पुरत्थि- प्रातः। सूत्र० ४२२।  
 पुरत्थिम- पूर्वादिक। जम्बू० ४७।  
 पुरत्थिमतुंगार- पूर्वतुङ्गारः। आव० ३८७।  
 पुरत्थिमसत्तासुय- पूर्वसत्त्वासुकः। आव० ३८६।  
 पुरवर- नगरैकदेशभूतम्। प्रश्न० ९२। राजधानीरूपम्।  
 प्रश्न० ६९।  
 पुरवरधम्म- पुरवरधर्मः प्रतिपुरवरं भिन्नः क्वचित्  
 क्वचि-द्विशिष्टोऽपि पौर भाषाप्रदानादिलक्षणः  
 सद्वितीया योषिद्-गेहान्तरं गच्छतीत्यादिलक्षणो वा।  
 दशवै० २२।  
 पुरसमाणवो- मागधः। ज्ञाता० १३३।  
 पुरा- पूर्वभवः। ज्ञाता० २०५।  
 पुराकाउं- पुरस्कृत्य-आश्रित्य पुरस्कृत्य-मुख्यतयाऽङ्गी-  
 कृत्य। उत्त० २८३।  
 पुराण- पच्छाकडो। निशी० १२० अ। पच्छाकडो। निशी०  
 ३२५ अ। पश्चात्कृतः। बृह० १२७ अ। प्रभूतवर्षघृतः।  
 उत्त० २९४। चिरन्तनम्। स्था० २९४। पुराणो-पुरातनम्।  
 ज्ञाता० ३। बृह० २९३ अ। वृद्धः-शास्त्रविशेषः। स्था०  
 ४५२। बहुकालीनम्। स्था० ३६४। पुराणः-अग्रेतनः।  
 प्रज्ञा० ५०३। पुराणः। आव० ४०८। पुरातनवस्तुविषयम्।  
 स्था० ४५०। जूर्णम्। ओघ० १३८। अनेकभवो-  
 पात्तत्वेन। चिरन्तनम्। उत्त० ८।  
 पुराणकुम्मास- पुराणकुलमाषं-  
 बहुदिवससिद्धस्थितकुलमाषम्। आचा० ३१५।  
 पुराणगहणं- प्राग्वृहित-चोलपट्टादेः कर्पूरादिनाग्रहणम्।  
 बृह० २८५ आ।  
 पुराणसंविग्ग- प्राक्संविग्गः पश्चात्पार्श्वस्थः। बृह० १४२  
 अ। यस्तु संविग्गमुण्डितत्वात् पूर्वं संविग्गः  
 पश्चाद्वसन्नीभूतः स पुराणसंविग्गः। बृह० २०७ आ।  
 पुराणसङ्घ- पुराणश्राद्धः। आव० ७६९।  
 पुराणिय- पौराणिकम्। आव० ४३२।  
 पुरिमंतरंजि- पुरमन्तरञ्जि  
 त्रैराशिकनिहनवोत्पत्तिस्थानम्। आव० ३१२।  
 पुरिम- कर्दममयं कुण्डिकारूपं अनेकछिद्रं पुष्पस्थानम्।  
 दशवै० ८७। आदिमम्। आव० ५६३। पूर्वाः-पूर्व

क्रियमाणतया तिर्यक्कृतवस्त्रप्रस्फोटनात्मका  
 क्रियाविशेषः। उत्त० ५४१। पुरिमम्। ओघ० १०८।  
 पूरिमम्। ओघ० १०८। पूरिमं-यत् पूरणतो भवन्ति  
 कनकादियप्रतिभावत्। ज्ञाता० १७९।  
 पुरिमङ्घ- पुरिमाङ्घ-  
 प्रथमप्रहरद्वयकालावधिप्रत्याख्यानम्। आव० ८५२।  
 पुरिमताल-महाबलराजधानी। विपा० ५५। विनीतानगर्या  
 उद्यानस्थानं-पुरिमतालम्। आव० १४७, २१०। चित्र-  
 जन्मस्थानम्। उत्त० ३८२। उदितोदयराजः पुरः। नन्दी०  
 १६६। उदितोदयस्य राजधानी। नन्दी० १६६। नगरम्।  
 भग० ६५३। पुरिमतालः नगरविशेषः। जम्बू० १५०।  
 पुरिमतालं-पुरविशेषं ऋषभदेवस्य  
 केवलोत्पत्तिस्थानम्। आव० १३९।  
 पुरिमपुर- द्रव्यव्युत्सर्गे गान्धारविषये नगगतिराजधानी।  
 आव० ७२०।  
 पुरिमयाल- पुरिमतालं- पारिणाभिक्यां नगरविशेषः।  
 आव० ४३०।  
 पुरिमा- भरतैरावतेषु चतुर्विंशतेरादिमाः। स्था० २९६।  
 उसभसामिणो सिस्सा। निशी० ३५३ अ।  
 पुरिमाङ्घ- पूर्वाहणलक्षणं प्रत्याख्यानविशेषः। स्था० २६८।  
 पुरिय- पुरिकानगरो। आव० २९४।  
 पुरिल्ल- पुरोवर्त्ती अभिधारित आचार्यः। बृह० १३२ अ।  
 पुरातनम्। व्यव० ३१ अ। पौरस्त्यः। आव० ३४८।  
 पुरिवट्टा- पुरिवर्त्ता आर्यसार्धपञ्चविंशतिजनपदे जनपदः।  
 प्रज्ञा० ५५।  
 पुरिसंतकड- पुरुषादपरः पुरुषः पुरुषान्तरं तत्कृतं वा  
 पुरुषान्तरकृतम्। आचा० ३२५।  
 पुरिस- पुरुषः-जन्तुः मनुष्यो वा। आचा० २४। पुरुषः-  
 सामायिकलाभे दृष्टान्तः। आव० ७५। पुरि शयनात्  
 पुरुषः। दशवै० ५५। पुरुषं-पारिणामिकादिरूपम्। दशवै०  
 ११५। पुरुषः-शङ्कुः पुरुषशरीरं वा। नन्दी० २०५। पूर्णः-  
 सुख-दुःखयोः पुरि-शयनाद्वा, पुरुषोजन्तुः। आचा०  
 १६८। पूर्णः-सुखदुःखानामिति पुरुषः। पुरि शयनाद्वा।  
 आव० ४६। पुरुषः पुरुषं ध्वन्नित्यादिवक्तव्यतार्थः  
 चतुस्त्रिंशत्तमं। भग० ४२५। पुरि शयनात्। पुरुषः-जीवः।  
 सूत्र० ४०२। पुरीषः। ज्ञाता० ४९।  
 पुरिसकार- पुरुषकारः-पौरुषाभिमानः। सूर्य० २८६। पुरु-

षकारः-साधिताभिमतप्रयोजनम्। सूर्य० २९६।

पुरुषकारः-अभिमानविशेषः। स्था० २३।

**पुरिसक्कार-** पुरुषकारः पौरुषाभिमानः पुरुषक्रिया वा।

भग० ५७। पुरुषकारः-पुरुषाभिमानः। भग० ३२३।

पुरुषकारः-कर्मशत्रून् प्रति स्ववीर्योत्कर्षलक्षणः। दशवै०

११०। पुरुष-कारः- अभिमानविशेषः। प्रजा० ४६३।

पुरुषकारः अभि-मानविशेषः। स्था० ११६। पुरुषाकारः-

पौरुषाभिमानः पुरुषक्रिया। जम्बू० १३०।

**पुरिसक्कारपरक्कम-** पुरुषाभिमानेन

साधितस्वप्रयोजनः। भग० ३११।

**पुरिसगार-** पुरुषकारः-अभिमानविशेषः। ज्ञाता० ७१।

**पुरिसच्छाया-** पुरुषच्छाया-प्रथमतः सूर्यस्योदयमानस्य

दृष्टिपथप्राप्तता। सूर्य० ५८।

**पुरिसजाता-** पुरुषजातानि पुरुषप्रकाशः। स्था० ११३।

**पुरिसजाया-** पुरुषजातानि पुरुषप्रकाराः। स्था० १३१।

**पुरिसजुग-** पुरुषयुगं-पुरुषकालम्। स्था० ४३१। पुरुषयुगं-

पुरिसजुगाइं पुरुषाः-शिष्यप्रशिष्यादिक्रमव्यवस्थिता

युगा-नीव-कालविशेषा इव क्रमसाधर्म्यात्पुरुषयुगानि।

सम० ६८।

**पुरिसजुगा-** पुरुषा-गुरुशिष्यक्रमिणः पितापुत्रक्रमवन्तो वा

युगानि इव पुरुषयुगानि। स्था० १७८।

**पुरिसनिवडण-** पुरुषनिपतनं महायुद्धादिकार्यभूतम्। भग०

१९७।

**पुरिसपुंडरीय-** पुरुषपुण्डरीकः-षष्ठो वासुदेवः। आव० १५९।

**पुरिसपुर-** पुरुषपुरं- नगगतिराजधानी। उत्त० ३०४।

**पुरिसयार-** पुरुषकारः-अभिमानविशेषः, पुरुषकर्तृव्यम्।

स्था० ३०४।

**पुरिसलक्खण-** त्रयोत्रिंशतमकला। ज्ञाता० ३८।

**पुरिसवरगंधहत्थि-** वरश्चासौ गन्धहस्ती च

वरगन्धहस्ती पुरुष एव वरगन्धहस्ती

पुरुषवरगन्धहस्ती, यथा गन्धहस्तिनो गन्धेनैव

सर्वगजा भज्यन्तो तथा भगवतस्तद्देशविहरणेन

ईतिपरचक्रदुर्भिक्षजनडमरकादीनि दुरितानि

शतयोजनमध्ये नश्यन्तीति अतस्तेन

पुरुषवरगन्धहस्तिनः। सम० ३।

**पुरिसवरगंधहत्थी-** पुरुषोवरगन्धहस्तीव

परचक्रदुर्भिक्षमारिप्र-भृतिक्षुद्रगजनिराकरणेनेति

पुरुषवरगन्धहस्ती। जीवा० २५५। पुरुष एव

वरगन्धहस्ती पुरुषवरगन्धहस्ती महावीरः। भग० ७।

**पुरिसवरपुंडरीय-** पुरुष एव वरं पुण्डरीकं प्रधानं

धवलसहस्र-पन्नं पुरुषवरपुण्डरीकं महावीरः। पुरुषाणां-

तत्सेवकजीवानां वरपुण्डरीकमिव-वरच्छत्रमिव। भग०

७। वरं च तत्पुण्ड-रीकं पुरुषवरपुण्डरीकम्। सम० ३।

पुरुषो वरपुण्डरीकमिव संसारजलासङ्गादिना

धर्मकलापेनेति पुरुषवरपुण्डरीकः। जीवा० २५५।

**पुरिसविचओ-** पुरुषविचयः पुरुषा विचीयन्ते-मृग्यन्ते

विज्ञानद्वारेणान्वेष्यन्ते येन सः। उत्त० ३१७।

**पुरिसविजय-** पुरुषविजयः-केषाञ्चिदल्पसत्त्वानां तेन

ज्ञान-लवेनातिधिप्रयुक्तेनानर्थानुबन्धिना विजयात्।

सूत्र० ३१८।

**पुरिसविज्जा-** उत्तराध्ययनेषु षष्ठमध्ययनम्। सम० ६४।

**पुरिसवेद-** पवणविकोवितपत्तिधणंतरजलिय

तिव्वएलालदव-ग्गिसमाणोवत्तलक्खणो चुरिसवेदो।

निशी० ३१ अ।

**पुरिसवेय-** पुरुषस्य वेदः पुरुषवेदः। पुरुषस्य स्त्रियं

प्रत्यभि-लाष इत्यर्थः, तद्विपाकवेद्यकर्मापि पुरुषवेदः।

प्रजा० ४६९। पुंसः स्त्रियामभिलाषः। पुंवेदः। जीवा० १८।

**पुरिसवेसिणी-** पुरुषद्वेषिणी देवदत्ता गणिका। दशवै०

१०८।

**पुरिससिंह-** पुरुषसिंहः-सिंह इव सिंह पुरुषश्चासौ

सिंहश्चेति पुरुषसिंहः। सम० ३। पुरुषाणां मध्ये

शौर्याधिक्येन सिंह इव सिंहः पुरुषसिंहः महावीरः। भग०

७। पुरुषसिंहः-तीर्थकरादिः। आव० १७९। पुरुषसिंहः-

पञ्चमो वासुदेवः। आव० १५९। पुरुषः सिंह इव

कर्मगजान् प्रति पुरुषसिंहः। जीवा० २५५।

**पुरिससेण-** पुरुषसेनः-अनुत्तरोपपातिकदशानां

प्रथमवर्गस्य चतुर्थाध्ययनम्। अनुत्त० १।

अन्तकृद्दशायां चतुर्थवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम्। अन्त०

१४।

**पुरिसादाणिय-** पुरुषश्चासौ पुरुषाकारवर्तितया

आदानीयश्च आदेयवाक्यतया पुरुषादानीयः। उत्त०

२७०। पुरुषैर्वाऽऽदानीयो ज्ञानादिगुणतया। उत्त० २७०।

पुरुषादानीयः- पुरुषाणां मध्ये आदानीयः-उपादेयः

पुरुषश्चासावादानीयश्चेति वा। स्था० ३६९।

**पुरिसादानीय-** पुरुषैरादीयते पुरुषादानीयः। निर० २२।  
पुरुषाणां मध्ये आदानीयः-आदेयः पुरुषादानीयः। भग०  
२४८।

**पुरिसुत्तम-** पुरुषोत्तमः-चतुर्थो वासुदेवः। आव० १५९।  
पुरुषाणामुत्तमः। जीवा० २५५। पुरुषाणां मध्ये तेन तेन  
रूपाद्यतिशयेन ऊर्ध्ववर्तित्वादुत्तमः पुरुषोत्तमः  
महावीरः। भग० ७।

**पुरिसोत्तम-** पुरुषाणां मध्ये तेन तेनातिशयेन  
रूपादिनोद्ग-तत्वाद् ऊर्ध्ववर्तित्वादुत्तमः  
पुरुषोत्तमः। सम० ३।

**पुरिसोवयार-** पुरुषोपचारः-कामशास्त्रप्रसिद्धः विपा० ४५।  
**पुरीष-** पची। ओघ० १५२। विट्। नन्दी० १५२। ज्ञाता० ४९।

**पुरुष-** शङ्कुः पुरुषशरीरं वा। नन्दी० २०५।

**पुरुषच्छाया-** चक्षुः स्पर्शः। जम्बू० ४४२।

**पुरुषविज्ञान-** किमयं प्रतिवादी पुरुषः साङ्ख्यः  
सौगतोऽन्यो वा प्रतिभादिमानितरो वेति परिभावनम्।  
उत्त० ३९।

**पुरुषवृषभा-** किंपुरुषभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।

**पुरुषा-** किंपुरुषभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।

**पुरुषोत्तमा-** किंपुरुषभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।

**पुरेकडं-** पुरा-पूर्वं तत्कालापेक्षया कृतं- विहितम्। उत्त०  
३३५।

**पुरेकम्म-** पुरः भोक्ष्याम इति पुरःकर्म। दशवै० २०३।

**पुरेकम्मकय-** पुरः-अग्रतः कृतं-प्रक्षालनादिकं कर्म-क्रिया  
यस्य। आचा० ३४१।

**पुरेकम्मिया-** पुरः कर्म यस्यामादौ सा प्राभृतिका पुरः-  
कर्मिका। आव० ५७६।

**पुरेखड-** पुरस्कृतः-अनागतकालभावी। प्रज्ञा० ५६३।  
पुराकृतं-पूर्वभवकृतम्। प्रश्न० २२।

**पुरेवाय-** मनाक् सन्नेहवाताः। भग० २१२।

**पुरेवाया-** पुरोवाताः-मनाक् स्नेहवाताः। ज्ञाता० १७१।

**पुरेसंखडी-** पुरःसङ्खडी पूर्वाहणसंखडी। बृह० १३५।  
पुव्वदिव्वे पुरे संखडी। निशी० ३१० अ।

**पुरेसंथुया-** पुरःसंस्तुताः भ्रातृव्यादयः। आचा० ३३६।  
पुरःसंस्तुताः-यदन्तिके प्रव्रजितस्तत्संबन्धिनः। आचा०  
३५३।

**पुरोसंखडी-** पूर्वाहणे या क्रियते-पुरःसङ्खडी। पूर्वाहणेया

संखडी। बृह० १७९ अ।

**पुरोहड-** गृहपुरतः। आव० १९४। अग्रद्वारः। ओघ० १९८।  
गिहस्स वा पासे अंगणं। निशी० १२७ अ। गृहप-  
श्चाद्भागः। बृह० ३१० अ। दुःशीलजनपरिवृतम्, बृह० ९  
अ। बृह० ४९ अ।

**पुरोहितअरयण-** पुरोहितरत्नं शान्तिकर्मकृत्। जम्बू०  
२६३।

**पुरोहित-** सपुरजणवयस्स रण्णो जो होमजावादिएहिं  
असिवादि पसमेति। निशी० २०९ अ। पुरोहितः-  
शान्तिकर्मकारी। स्था० ३९९।

**पुरोहिरयण-** पुरोहितः शान्तिकर्मकारी। स्था० ३९८।

**पुरोहिय-** पुरोहितः कार्यं प्रति प्रवर्तयिता। सूत्र० २८३।  
पुरोहितः-शान्तिकर्मकारी। प्रज्ञा० १०६। पुरोहितः  
शान्तिकर्मकारी। जीवा० ३९३। पुरोहितः शान्तिकर्ता।  
उत्त० ३९७। पुरोहितः शान्तिकर्मकारी। प्रश्न० ९६।  
पुरोधा-पुरोहितः शान्तिकारी। स्था० ४६२। पुरोहितः-  
शान्तिकर्मकारी। प्रश्न० ७९।

**पुलंपुलं-** पुलम्पुलं-अनवरतम्। औप० ४६। अनवरतम्।  
प्रश्न० ५०।

**पुलंपुलप्पभूया-** पुलम्पुलप्रभूता-अनवरतोद्भूता। औप०  
४६।

**पुलक-** पृथ्वीकायभेदः। जीवा० २३। ग्राहविशेषः। सम०  
१३५।

**पुलग-** पुलकः-लवः। सूर्य० ४। पुलकः-बिन्दूः। सूर्य० ४।  
पुलकः-ग्राहविशेषः। जीवा० ३६। पुलको-लवः। राज०  
५७। पुलको-द्रव्यत्वे सति बिन्दुः। राज० ५७। पुलकः  
रत्नविशेषः। ज्ञाता० ३४। पुलकः-लवः। निर० २।  
पुलकः-लवः। ज्ञाता० ९। पुलकः-लवः। विपा० ३४।

**पुलनिप्पुलाय-** पुलाकनिप्पुलाकः-संयमासारतापादकदोष-  
रहितः मुनिः। दशवै० २६८।

**पुलय-** पुलकः-लवः। भग० १२। पुलकः-लव, सारो वा  
वर्णातिशयः। औप० ८३। पुलककाण्डं-रत्नप्रभाखरकाण्डे  
पुलकानां सप्तमं, विशिष्टो भूभागः। जीवा० ८९।  
पुलकः। प्रज्ञा० २७। पुलकः-सारः वर्णातिशयः, बिन्दुः।  
भग० १२। पुलकः-लवः। जम्बू० १५। पुलकः- मणिभेदः।  
उत्त० ३८९।

**पुलया-** ग्राहविशेषः। प्रज्ञा० ४४।

**पुला-** पुलकिका लघुतरस्फोटिका। स्था० ४२१।  
**पुलाकत्वं-** ऋद्धिविशेषः। स्था० ३३२।  
**पुलाकादि-** साधुभेदविशेषः। भग० ४।  
**पुलाकिमिया-** पुलाकृमिः अपानवायुप्रदेशोत्पन्ना कृमिः। जीवा० ३१। पुलाकिमिया नाम अपानवायुप्रदेशोत्पन्नकृमिः। प्रज्ञा० ४१।  
**पुलाग-** असारः। उत्त० २५६। पुलाकः-निर्ग्रन्थे प्रथमभेदः। व्यव० ४०२ अ। असारं-निष्पावादीनि धान्यानि विकटपलांदुलसुणादीनि दुर्गन्धानि क्षीरचिंचिकाद्राक्षरसादीनि वा। बृह० २११ अ। पुलाकम्-असारं वल्लचनकादि। उत्त० २९५। पुलाकं-यवनिष्पावादि। आचा० ३१५।  
**पुलागलधिं-** लद्धिविसेसो। निशी० २७६ अ।  
**पुलात-** पुलाकः-आसेवापुलाकः। स्था० ३३७। पुलाकः-तंदुलकणशून्या पलंजि तद्वद् यः तपःश्रुतहेतुकायाः सङ्घा-दिप्रयोजने चक्रवर्त्यादेरपि चूर्णन समर्थाः लब्धेस्सजीवनेन जानाद्यतिचारसेवनेन वा संयमसाररहितः स पुलाकः। स्था० ३३६।  
**पुलाय-** पुलाकः-निस्सारो धान्यकणः पुलाकवत्पुलाकः संयमसारापेक्षया स च संयमवानपि मनाक् तमसारं कुर्वन् पुलाक इत्युच्यते। भग० ८९१।  
**पुलिन्द-** पुलिन्द्रः-शबरः-अनार्यविशेषः। भग० १७०। पुलिन्द्रः-चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। प्रश्न० १४। म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५। पुलिन्द्रः-भिल्लजातिविशेषः। आव० ८२९। पुलिन्द्रः। ओघ० २२३। पुलिन्द्रः-देश-विशेषः। ज्ञाता० ४१।  
**पुलिन्दि-** पुलिन्दीः धात्रीविशेषः। ज्ञाता० ४१।  
**पुलिन्दी-** म्लेच्छविशेषः। भग० ४६०।  
**पुलिअ-** पुलितं-गतिविशेषः। जम्बू० २६५।  
**पुलिन्द्र-** म्लेच्छविशेषः। आचा० ३७७।  
**पुलिन्द्रदेशजः-** पुलिन्दुयः। जम्बू० १९१।  
**पुलिय-** पुलितं-गतिविशेषः। भग० ४८०। औप० ७०। जम्बू० ५२९।  
**पुलिस-** पुरीषम्। उत्त० १३७।  
**पुलीन्द्र-** वनचरः। प्रश्न० ३८।  
**पुलुय-** पुलकः-ग्राहविशेषः। प्रश्न० ७।  
**पुव्वंगं-** पूर्वाङ्गं-चतुरशीतिवर्षशतसहस्राणि। जीवा० ३४५।

पूर्वाङ्गं-चतुरशीतिवर्षलक्षप्रमाणम्। जम्बू० ४८५।  
 चतुरशीतिवर्षलक्षप्रमाणं पूर्वाङ्गम्। स्था० ८६। पूर्वाङ्ग-चतुरशीतिवर्षलक्षानाम्। भग० २११, ८८८। पूर्वाङ्गः-प्रथमदिवसनाम। ज० ४९०। पूर्वाङ्गः। सूर्य० १४७।  
 चतुरशीतिः वर्षशतसहस्राणि यानीति गम्यते तदेकं पूर्वाङ्गम्। जम्बू० ९१। पूर्वाङ्गं-चतुरशीतिलक्षवर्षः। अनुयो० १००।  
**पुव्वन्ति-** प्लवन्ते-गच्छन्ति। भग० ६७०।  
**पुव्वभागा-** पूर्वभागानि चन्द्रस्याग्रयोगीनि। स्था० ३६८। सूर्य० १०४।  
**पुव्व-** पुरा-परिचिता मातृपित्रादयः पूर्वः। उत्त० २९०। पूर्वः-परिमाणं वर्षाणां सप्ततिकोटिलक्षाः षट् पञ्चाशच्च कोटिसहस्राः। आचा० २४६। पृ 'पालनपूरणयो' रित्यस्य धातोः पूर्यते प्राप्यते पाल्यते च येन कार्यं तत्पूर्वम्। नन्दी० १४१। विशिष्टं पूर्वोपलब्धं चिह्नं पूर्वम्। अनुयो० २१३। पूर्व-चतुरशीतिः पूर्वाङ्ग-शतसहस्राणि। जीवा० ३४५। पूर्वश्रुत-प्रत्याख्यानम्। आव० ४७९। पूर्व-कारणम्। दशवै० ८२। 'पृ पालनपूरणयो' रित्यस्य धातोः पूर्यते प्राप्यते च येन कार्यं तत्पूर्व औणादि-कोवक्प्रत्ययः, कारणमित्यर्थः। नन्दी० १४१। पूर्वाङ्गमेव चतुरशीतिलक्षगुणितं पूर्वम्। स्था० ८६। उस्सगो। निशी० १४६ अ। चतुरशीतिः पूर्वाङ्गश-तसहस्राणि यानीति गम्यते तदेकं पूर्वम्। जम्बू० ९१। चतुरशीत्या लक्ष्यैः पूर्वाङ्गैः पूर्वम्। अनुयो० १००। पूर्वः-अतीतः। प्रज्ञा० ५०९। पूर्वः-कालमानविशेषः। भग० २७५। पूर्वः। भग० ८८। पर्व्व-पौर्णमासिरमावासिश्च। भग० ५७७। पूर्व-अतिक्रान्तम्। आचा० १६७। पूर्वः-असंय-मोऽनादिभवाभ्यासात्तेन। आचा० १९२।  
**पुव्वकालिवयणं-** पूर्वकालिकवचनं वक्तुकामस्य वचनाद् यत् पूर्वतरमभिधीयते पराभिप्रायं लक्षयित्वा तत्पूर्वकालिकं वचनम्। प्रश्न० ३०।  
**पुव्वकीलिय-** स्र्यादिभिरेव पूर्वकालभावि दुरोदरादिरमणा-त्मकं पूर्वक्रीडितम्। उत्त० ४२६। पूर्वक्रीडितं-गृहस्था-वस्थायां द्यूतादिरमणलक्षणम्। स्था० ४४५। पूर्वक्रीडितं-गृहस्थावस्थाश्रयं द्यूतादिक्रीडनम्। प्रश्न० १४०।  
**पुव्वग-** श्रामण्यपूर्वकम्। ओघ० २०३।

**पुव्वगत-** सर्वश्रुतात्पूर्वं क्रियन्त इति पूर्वाणि उत्पादपूर्वादी चतुर्दशः तेषु गतः-अभ्यन्तरीभूतस्तस्य भावः पूर्वगतः।  
स्था० ४९१। पूर्वगतं दृष्टिवादाङ्गभागभूतानि तेषु गतं प्रविष्टं तदभ्यन्तरीभूतं तत्स्वरूपं यच्छ्रुतं तत्पूर्वगतम्।  
स्था० ११७।

**पुव्वगय-** तेषु गतं-प्रविष्टं यत् श्रुतं तत्पूर्वगतं-पूर्वाण्येव।  
स्था० २००। तीर्थकरः तीर्थप्रवर्तनाकाले गणधराणां सर्वसूत्राधारत्वेन पूर्व-पूर्वगतम्। सम० १२८।

**पुव्वड्डिया-** पूर्वस्थिताः-क्षेत्रप्रत्युपेक्षकाः। ओघ० ९४।

**पुव्वण्हिकाइकालाः-** पूर्वाहणादिकालः। उत्त० २२६।

**पुव्वण्हिय-** पौर्वाहणिकम्। आव० ३६६।

**पुव्वतरय-** पूर्वमेव। आव० ७२५।

**पुव्वतव-** पूर्वतपः-सरागावस्थाभावि तपस्या। भग० १३८।

**पुव्वतवसंजमा-** सामादियं छेदोवद्वावणियां परिहारविसुद्धियं सुहुमसंपरागं च, एते पुव्वतवसंजमा।  
निशी० ७अ।

**पुव्वदारयं-** यस्मिन् नक्षत्रे पूर्वस्यां दिशि गच्छतः प्रायः शुभमुपजायते तन्नक्षत्रं पूर्वद्वारकम्। सूर्य० १७४।

**पुव्वदारिआ-** अभिजिदादीनि सप्तदशनक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि, पूर्वदिशि येषु गच्छतः शुभं भवति।  
सम० १३।

**पुव्वदारिता-** पूर्वद्वारिकाणि पूर्वस्यां दिशि गम्यते येष्वित्यर्थः। स्था० ४१४।

**पुव्वदेस-** पूर्वदेशः। आव० २९५।

**पुव्वधर-** पूर्वाणि धारयतीति पूर्वधरः दशचतुर्दशपूर्ववित्।  
आव० ४८।

**पुव्वपक्ख-** पूर्वपक्षः। आव० ३१९।

**पुव्वपच्छिमं-** पूर्वपश्चिमम्। जीवा० २८६।

**पुव्वपडिलेहिए-** गहितो। निशी० १४७आ।

**पुव्वपरिच्चओ-** पूर्वपरिचयः। आव० ३४३।

**पुव्वमहाकडे-** यान्येकखण्डानि अतूर्णितानि च तानि यथा कृतानि पूर्व-प्रक्षालयति। ओघ० १३२।

**पुव्वरत-** पूर्वगतं-गृहस्थावस्थायां स्त्रीसम्भोगानुभवनम्।  
स्था० ४४५।

**पुव्वरत्त-** पूर्वरात्रः-रात्रेः पूर्वो भागः। १२७। रत्तीए पढमो जामो। दशवै० १६४आ।

**पुव्वरत्तावरत्त-** रात्रेः पूर्वभागे पश्चाद्भागे वेति,

पूर्वरात्रापररात्रकालसमयः। विपा० ८६।

**पुव्वरत्तावरत्तकाल-** रात्रौ प्रथमचरमौ प्रहरौ। दशवै० २८३।

**पुव्वरत्तावरत्तकालसमय-** प्रदोषसमयः-प्रातःसमयः।  
जीवा० १९३।

**पुव्वरयं-** पूर्वगतं-गृहस्थावस्थाभाविनी कामरतिः। प्रश्न० १४०।

**पुव्वराय-** पूर्वरात्रं-रात्रेः प्रथमो यामः। आचा० २१०।

**पुव्वव-** पूर्ववत्-पूर्वोपलब्धविशिष्टाचिह्णद्वारेण गमकमनुमानम्। अनुयो० २१३।

**पुव्वविढत्तं-** पूर्वोजितम्। आव० ५५८।

**पुव्वविदेह-** पूर्वस्यां दिशि विदेहः पूर्वविदेहः। स्था० ६८।  
नीलवर्षधरपर्वते कूटम्। स्था० ७२। पूर्वविदेहो यो मेरोर्ज-  
म्बूद्वीपगतः प्राग्विदेहः। जम्बू० ३२०।  
पूर्वविदेहाधिपकूटम्। जम्बू० ३७७। पूर्वविदेहः। आव० ११७।  
जम्बूद्वीपे पूर्वविदेहः। जाता० २४२।

**पुव्वविदेहकूड-** निषधवर्षधरपर्वते पूर्वविदेहपतिकूटम्।  
ज० ३०८।

**पुव्वविसारया-** पूर्वविशारदाः-पूर्वेषु विपश्चितः। आव० २६।

**पुव्ववेताली-** पूर्ववैताली पूर्वसमुद्रतीरम्। प्रज्ञा० ३२७।

**पुव्ववेतालीया-** पूर्ववैतालिका। दशवै० ५५।

**पुव्वसंगइय-** पूर्वसङ्गतिकः। ओघ० १५९। पूर्वसङ्गतिकः।  
आव० २९१।

**पुव्वसंगतिए-** पूर्वसङ्गतिकः। जाता० ३४।

**पुव्वसंगतिय-** पूर्वसङ्गतिकः-गृहस्थत्वे परिचितः। भग० १६७।

**पुव्वसंजोग-** पूर्वसंयोगः मातापित्रादिभिः। आचा० ४३।

पूर्वसंयोगः पूर्वमातृपित्रादिभिः संयोगः-सम्बन्धः  
पूर्वसंयोगः। उत्त० २९०।

**पुव्वसंठिती-** पूर्वसंस्थितिः-भवितव्यता। आव० ८२४।

**पुव्वसंथव-** पूर्वसंस्तवः-मात्रादिकल्पनया परिचयकरणम्।  
पिण्ड० १२१।

**पुव्वसंथुया-** पूर्व-वाचनादिकालदारतः संस्तुतः-परिचितः  
सम्यक्स्तुता वा पूर्वसंस्तुता। उत्त० ६५।

**पुव्वसंलत्त-** पूर्वसंलप्तः। आव० ७२५।

**पुव्वसूर-** पूर्वसूर्य-पूर्वाह्णः। आव० १३५।

**पुव्वहोत्त-** पूर्वाभिमुखः। आव० २९०।

**पुष्वा-** जिगमिषितदिशं गच्छतोऽभिमुखा दिक् पूर्वा।  
जम्बू० ५२७। पूर्वा। आव० ६३०।

**पुष्वाङ्-** पूर्वाणि-प्रभूतानि वर्षाणि। आचा० २४५।

**पुष्वाउत्त-** पूर्वमेव दण्डधारिघोषणानन्तरमुपयुक्तः।  
ओघ० २०३। आगमनात् पूर्व तुल्यमारब्धो रन्धनायाः।  
आगमनात् पूर्व गृहस्थैः स्वभावेन राध्यमानः। व्यव०  
वि० १३५ आ। पूर्वयुक्तं पूर्वतप्तम्। बृह० २९८ आ।

**पुष्वाआसाढा-** नक्षत्रम्। स्था० ७७।

**पुष्वाणुन्ना-** यो अवग्रहः पुरातनसाधुभिरनुज्ञापितः स  
यत्या-श्चात्यैरेवमेव परिभुज्यते। न भूयोऽनुज्ञाप्यते सा  
पूर्वानुज्ञा। बृह० १०८ आ।

**पुष्वाणुपुष्वि-** पूर्व श्च स पूर्वानुपूर्वः एत्थ णिदरिसणं  
एककगस्य दो अणु तेयगितस्स पुष्वादुग्गस्सतित्ति  
अणुतेयचउक्कगस्स पुष्वो अहवा पूर्व वा अनुपूर्वः स  
एव पूर्वानुपूर्वी-अणुपरि-वाडी। निशी० १३५ आ।

**पुष्वाणुपुष्वी-** पूर्वः प्रथमस्तस्मादारभ्यानुपूर्वी-अनुक्रमः  
परि-पाटीः-निक्षिप्यते-विरच्यते यस्यां सा पूर्वानुपूर्वी।  
अनुयो० ७३।

**पुष्वापोड्वता-** पूर्वा प्रौष्ठपदा। सूर्य० १३०।

**पुष्वाफगुणी-** पूर्वाफाल्गुनी। सूर्य० १३०।

**पुष्वालोङ्गयकवडो-** पूर्वालोचितकपटः। आव० ४०१।

**पुष्वावर-** पूर्वापरः। सूर्य० १५५।

**पुष्वावरणकालसमय-** प्रत्यपराहणकालसमयो-विकालः।  
जाता० ६०। पाश्चात्यापराहणकालसमयः-दिनस्य  
चतुर्थ-प्रहरलक्षणः। निर० २७।

**पुष्वावरसंजुतं-** पुष्वसुत्तनिबद्धो पच्छासुत्तेण  
अविरुज्झमाणो पुष्वावरसंजुतं। निशी० ३६ आ।

**पुष्वासाढाणकखत्तं-** पूर्वाषाढानक्षत्रम्। सूर्य० १३०।

**पुष्वाहारिय-** पूर्वाहतः-पूर्वकाल एकीकृतः सङ्गृहीतः  
अभव्य-हतो वा। भग० २३।

**पुष्वाहूत-** पूर्वमुखः। आव० २१५।

**पुष्विं-** पूर्व-पूर्वानुभूतम्। आचा० १६७।

**पुष्विआ-** पूर्विका कारणिका। नन्दी० १९०।

**पुष्वियावणं-** कान्दविकापणम्। आव० ४१७।

**पुष्वुच्चिय-** पूर्वाविचितः-प्राग्वृहीतः। आव० ५३७।

**पुष्वुडाङ्-** पूर्व-प्रव्रज्या अवसरे संयमानुष्ठानेनोत्थातुं  
शीलमस्येति पूर्वोत्थायी। आचा० २०९।

**पुष्पुद्धिङ्-** आयरिएण जीवं तेण उद्धिङ्गं तं। निशी० २९।

**पुष्पुवड्पुराण-** पूर्वमुपस्थ-उपस्थितः पूर्वोपस्थितः स  
चासौ पुराणश्च पूर्वोपस्थपुराणः। व्यव० ४४९ आ।

**पुष्कलः-** समर्थः। आचा० ४८।

**पुष्टका-** कम्बिका। जीव० २३७।

**पुष्पक-** यानविमानम्। प्रश्न० ९५।

**पुष्पकेतु-** पुष्पपुरनगरे राया। बृह० २१८ आ।

**पुष्पचूल-** पुष्पकेतोः पुत्रः। बृह० २१८ आ।

**पुष्पचूला-** पुष्पवत्याः पूत्री। नन्दी० १६६।

**पुष्पपुर-** पुष्पकेतो राजधानी। बृह० २१८ आ।

**पुष्पफलीकुसुम-** कूष्माण्डीकुसुमम्। जीवा० १९१।

**पुष्पमाण-** नाट्यविशेषः। जम्बू० ४१४।

**पुष्पमालिनी-** वापीनाम। जम्बू० ३७१।

**पुष्पमित्र-** तगरायामाचार्यस्य शिष्यः। व्यव० ३१७।

**पुष्पलम्बूसक-** गण्डूकः। राज० १०४। गण्डूकः। जीवा०  
२५३। गेन्दूकः। जम्बू० २७५।

**पुष्पवती-** वापीनाम। जम्बू० ३७१। पुष्पचूलामाता। नन्दी०  
१६६।

**पुष्पा(पुंस्फ)लिका-** सुवर्णयूथिका। प्रज्ञा० ३६३।

**पुष्पावलिः-** नाट्यविशेषः। जम्बू० ४१४।

**पुष्पोत्तर-** दशमदेवलोके विमानः। सम० १०६।

**पुष्पोतरा-** वापीनाम। जम्बू० ३७१।

**पुसकीइलगं-** पुंसकोकिलगं-पुमांश्चासौ कोकिलश्च  
परपुष्टः पस्कोकिलकः। स्था० ५०२।

**पुस्स-** सुविधिनाथप्रथमभिक्षादाता। सम० १५१। पुष्यः-  
सुविधिजिनप्रथमभिक्षादाता। आव० १४७।

**पुस्सभूती-** पुष्यभूतिः-सूक्ष्मेध्याने कूशल आचार्यः। व्यव०  
१९८ आ। २०० आ।

**पुस्सायण-** पूष्यायनं रेवतीगोत्रम्। जम्बू० ५००।

**पुस्सायणसगोत्त-** पौष्यायनसगोत्रं रेवतीनक्षत्रगोत्रम्।  
सूर्य० १५०।

**पुहत्त-** पृथक्त्वं-विस्तारः। दशवै० १६ आ। पृथक्त्वं-  
द्विप्रभृतिरानवभ्यः। जीवा० ४०। पृथक्त्वं-बहुः। जीवा०  
११९। पृथक्त्वं-द्विप्रभृतिरानवभ्यः। प्रज्ञा० २९६।

**पुहविविजयलंभ-** पृथ्वीविजयालाभमिति। जम्बू० २१३।

**पुहवी-** पृथिवी-शातवाहनस्याग्रमहिषी। व्यव० १६८ आ।  
सुपार्श्वनाथमाता। सम० १५१। तृतीयवासुदेवमाता।

सम० १५२। पृथिवी-पाश्चात्यरूचकवास्तव्या तृतीया  
दिक्कुमारी महत्तरिका। जम्बू० ३९१। पृथ्वी-  
पश्चिमरूचकवास्तव्या दिक्कुमारी। आव० १२२। पृथ्वी-  
सुपार्श्वमाता। आव० १६०। पृथ्वी-  
स्वयम्भूवासुदेवजननी। आव० १६२। पृथिवी-  
इन्द्राग्निवायूभूतीनां माता। आव० २५५।

**पुहुत्तं-** पृथक्त्वं-बहुत्वम्। भग० २३१। पृथक्त्वं-  
द्विप्रभृति-रानवभ्यः। आव० ३६३। पृथक्त्वं-  
एकद्रव्याश्रितानामुत्पा-दादिपर्यायाणां भेदः पृथुत्वं वा  
विस्तीर्णभावः। स्था० १९१। पृथक्त्वं-  
द्विप्रभृतिरानवभ्यः। भग० २९। पृथक्त्वं-द्विप्रभृ-  
तिरानवभ्यः। भग० ३१। पृथक्त्वं-अनेकत्वं  
यमलशङ्खादि-शब्दवत्। स्था० ४७१।

**पुहुत्तवियक्केसविआरी-** पृथक्त्वेन-  
एकद्रव्याश्रितानामुत्पा-दादिपर्यायाणां भेदेन वितर्को-  
विकल्पः पूर्वगतश्रुतालम्बनो नानानयानुसरणलक्षणे  
यत्र तत् पृथक्त्ववितर्क, तथा विचारः-अर्थाद्व्यञ्जने  
व्यञ्जनादर्थे मनःप्रभृतियोगानां चान्य-  
स्मादन्यतरस्मिन् विचरणं सह विचारेण यत्तत्स  
विचारि। औप० ४४।

**पूँठी-** चक्रपरिधिरूपं पृष्ठम्। जम्बू० २११।

**पुअ-** पूजां-वस्त्रपात्रादिभिः सपर्याम्। उत्त० ४१६। यं  
कणि-कादिमयम्। दशवै० १७६।

**पूअण-** पूजनं-विशिष्टवस्त्रादिभिः प्रतिलाभनम्। उत्त०  
६६८।

**पूअण्डा-** पूजार्थ-स्वपक्षपरपक्षाभ्यां सामान्येन पूजा  
भविष्यन्ति। दशवै० १८७।

**पूअणवत्तिया-** पूजनप्रत्ययं-अभ्यर्चननिमित्तम्। आव  
७८६।

**पूअफलि-** पूगफली-क्रमुक्ततरुः। जम्बू० ९८।

**पूआ-** पूजा-वस्त्रमाल्यादिजन्या। आव० ४०६।

**पूइतराणि-** पूत्यन्तराणि-देहस्य मध्ये पूतिविशेषान्।  
आचा० १३७।

**पूइअ-** पूजितं-सेवितं आचरितम्। दशवै० १८९। पूतनि-  
र्बुसीकृतम्। जम्बू० २४४।

**पूइकड-** पूतिकृतं-आधाकर्मादिसिक्थेनाप्युपसृष्टम्।  
सूत्र० ४१।

**पूइकम्म-** पूतिकर्म-  
सम्भाव्यमानाधाकर्मावयवसंमिश्रलक्षणम्। दशवै०  
१७४।

**पूइपिन्नाग-** पूतिपिन्नागं-कुथितखलम्। आचा० ३४८।  
पूतिपिण्याकं सर्षपखलम्। दशवै० १८५।

**पूइम-** पूज्यः। दशवै० २७५।

**पूइय-** वृक्षविशेषः। भग० ८०३। पूतिः-एकास्थिकवृक्षवि-  
शेषः। प्रजा० ३१। पूजितः पूष्पादिना। भग० ५८२।  
पूजितः सुगन्धिपुष्पप्रकरप्रक्षेपादिना। द्रव्यस्तवेन।  
नन्दी० १९२।

**पूइयपूता-** पूजितेन पूजा पूजितपूजा। आव० २३५।

**पूई-** पूति-कुथितं स्वस्वभावचलितम्। जीवा० २८२।  
पूतीः-परिपाकतः कुथितगन्ध पक्वरक्तं वा पूतिः।  
उत्त० ४५।

**पूईकम्म-** पूतिकर्म-पूतीकरणम्। पिण्ड० ८२।

**पूए-** समूर्च्छिममनुष्योत्पत्तिस्थानम्। प्रजा० ५०।

**पूगफलं-** तंबोलपत्तसहिया खायइ, तंबोलदत्तं। निशी०  
६० अ। आव० ८१९।

**पूजयामु-** पूजयामः-सत्कारयामः। सूत्र० ८७।

**पूजिय-** पूजितं श्लाघितम्। बृह० २८७ अ।

**पूज्ज-** पूजयितुमर्हः पूज्यः आचार्यादिः। उत्त० ६५।

**पूणभद्द-** चंपायां चैत्यम्। ज्ञाता० १५६।

**पूतणा-** पूतना-कृष्णपितृवैरिणी विकुर्वितगन्त्रीरूपा  
विद्याधर-योषित्। प्रश्न० ७५।

**पूतफलिवण-** पूगीफलवचनम्। जीवा० १४५।

**पूतरक-** उदकाश्रितजीवः। आचा० ४६।

**पूतरग-** बूतरकः-अप्काये जीवविशेषः। आव० ८३१।

**पूता-** पूजा स्तवादिरूपा। स्था० ३५८।

**पूतासक्कार-** पूजा-स्तवादिरूपा तत्पूर्वकः सत्कारो-वस्त्र-  
भ्यर्चनं, पूजायां वा आदरः पूजासत्कारः। स्था० ३५८।  
पूजासत्कारं-पुष्पार्चनवस्त्राद्यर्चनम्। स्था० ३८९।

**पूति-** वावण्णं-विण्डुं कुहितं। निशी० १२८ अ। पूतिः –  
कुथितः। उत्त० २८४।

**पूतिगन्धय-** अशुचिः। सम० १३६।

**पूतित-** अविसोधिकोटिदोसजुणं सम्मिस्सं पूतितं  
भण्णति। निशी० १२८ अ।

**पूतिय-** सिद्धत्थपिंडगो। दशवै० ८६। पूतिकं-जीर्णतया

कुथितप्रायम्। *जाता० १६०। शुद्धमपि*  
 कर्माद्यवयवैरपवित्री-कृतं पूतिकम्। *स्था० ४६०।*  
**पूपलिय-** पूपलिका। *बृह० ७५आ।*  
**पूपा-** अपूपः-भक्ष्यपिष्टपदार्थः। *पिण्ड० १५४।*  
**पूपिकापण-** आपणः। *नन्दी० १५०।*  
**पूय-** यद् आधाकर्मावयवसंपृक्तं शुद्धमप्याहारजातं पूति  
 भवति तद्। *सूत्र० १८०। रुतं। निशी० ६१आ। पूतिः-*  
 अशुचिविशेषः। *प्रज्ञा० ८०। पूतिकं-कुथितम्। भग० ४७०।*  
 पूयम्। *आचा० ३५२। पूयम्। जाता० ४९।*  
**पूयइ-** आपूपिकः। *नन्दी० १६५।*  
**पूयण-** पूजनं वस्त्रादिलाभरूपम्। *सूत्र० ७४। पूजनं-*  
 गन्धमा-ल्यादिभिः समभ्यर्चनम्। *जम्बू० ३९८। पूजनं-*  
 गन्धमा-ल्यादिभिरभ्यर्चनम्। *आव० ७८७।*  
 वत्थादिदाणं। *दशवै० १६३आ। पूजनं-*  
 गन्धमाल्यादिभिः-समभ्यर्चनम्। *राज० २७।*  
**पूयणा-** पूतना-दुष्टव्यन्तरी। *पिण्ड० १२६। पूतना-*  
 डाकिनी गड्डरिका वा। *सूत्र० १००। पूजना-कामविभूषा।*  
*सूत्र० १००। पूतना। निशी० ९५आ।*  
**पूयणिज्जं-** पूजनीयं पुष्पैः। *औप० ५। पूजनीयं-*  
 वस्त्रादिभिः। *सूर्य० २६७।*  
**पूयफल-** वृक्षविशेषः। *भग० ८०३।*  
**पूयफली-** वलयविशेषः। *प्रज्ञा० ३३।*  
**पूयरअ-** पूतरकः। *आव० ६२५।*  
**पूयलग-** पूपम्। *आव० ८१४। व्यव० १०७आ।*  
**पूयलिय-** पूपलिका। *आव० ६२१।*  
**पूयलियाखाओ-** पूपलिकाखादकः-अव्यक्तवाक्वृद्धः। *बृह०*  
*५९।*  
**पूया-** पूजनं पूजा-  
 द्रविणवस्त्रान्नपानसत्कारप्रणामसेवाविशेष-रूपा।  
*आचा० २६। पूता-पवित्रा पूजा वा भावतो देवता-र्चनम्,*  
 अहिंसायाः सप्तपञ्चाशत्तमं नाम। *प्रश्न० ९९। पूजा-*  
 प्रशस्तमनोवाक्कायचेष्टा। *आव० ५११। पुष्पादिपूजनम्*  
 । *स्था० ५१५। पूजा-उचितप्रतिपत्तिरूपा। उत्त० ३४४।*  
 असणपाणखातिमसातिमवत्थकम्बलाती जस्स वा जं  
 पाउग्गं तेण से पडिलाभणं पूया। *निशी० १३आ।*  
 पूजनार्ह-उपाध्यायः गुरुर्वी, गुरोः सम्बन्धिपितृव्यादिः।  
*बृह० २८१आ। पूजनार्हः-उपाध्यायः गुरुः पितृव्यादिर्वा।*

*बृह० १९आ। सादरस्निग्धमधुरभोजनादिरूपा। बृह०*  
*१२४आ। पूज्याः-स्वामिकलाचार्यादयः। बृह० २००आ।*  
 पूजा-पुष्पादिभिः। *स्था० १३७।*  
**पूयासंसम्पत्तोग-** पूजा-पुष्पादिपूजनं मे स्यादिति  
 पूजाशंसा-प्रयोगः। *स्था० ५१५।*  
**पूयाहिज्ज-** पूजाहार्यः। *स्था० ३४२। पूजाहार्यः-पूजित-*  
 पूजकः। *पिण्ड० १३१।*  
**पूरंती-** पूरयंती। *बृह० ५९आ।*  
**पूर-** पूरः-पूर्णता। *उत्त० ३०५। पूरः-क्षीरप्रवाहः। उत्त०*  
*६५३। पूर्णम्। आव० ८२६। पूरः-समूहः। प्रश्न० ६२।*  
**पूरण-** पूरणा-असुरकुमारगतिशक्तिप्ररूपणायां  
 विन्ध्यपादमूले 'बेभेले'-नामकसन्निवेशे गाथावती।  
*भग० १७१। पूरणः-अन्तकृद्दशानां द्वितीयवर्गस्य*  
 सप्तममध्ययनम्। *अन्त० ३। कर्णमलादिना भरणम्।*  
*आव० ७६४। अन्तकृद्दशायां प्रथम-वर्गस्य*  
 सप्तममध्ययनम्। *अन्त० ३। भगवत्यामभिहितो*  
 बालतपस्वी। *उपा० १५। महाबलबालवयंसकः। जाता०*  
*१२१।*  
**पूरणतापसः-** कूणिकजीवावस्थानान्तरम्। *भग० ३२२।*  
**पूरयंतीपर्षद्-** अधीतश्रुता। *बृह० ५०।*  
**पूरावेरय-** पूरः-पूर्णता अवरेको-रिक्तताऽनयोः समाहारे  
 पूरा-वेरकम्। *उत्त० ३०५।*  
**पूरिअ-** पूरितं-परिपूर्णव्याप्तम्। प्रभूतीकृतं  
 स्वप्रमाणमानीतं स्वव्यक्तौ समर्थीकृतं वा। *नन्दी०*  
*१८०।*  
**पूरितगण्डपार्श्व-** रूपवान्। *ओघ० १८३।*  
**पूरिम-** पूरिमं-मृन्मयमनेकछिद्रं, वंशशलाकादिपञ्जरं वा  
 यत्पुष्पैः पूर्यत इति। *स्था० २८६। येन*  
 वंशशलाकामयपञ्जर-कादि कूर्चादि वा पूर्यते। *भग०*  
*४७७। येन वंशशलाकादिम-यपञ्जरी पूर्यते। जीवा०*  
*२५३। यल्लघुच्छिद्रेषु पुष्पनिवेशेन पूर्यते। जीवा० २६७।*  
 पूरणेन निर्वृत्तं पुष्पपूरितवंशपञ्जरक-रूपशेखरकवत्।  
*प्रश्न० १६०। पूरिमं-यल्लघुच्छिद्रेषु पुष्प-निवेशेन पूर्यते।*  
*जम्बू० १०४। पूरिमं-येन वंशशलाका-*  
 मयपञ्जरकादिकूर्चादि वा पूर्यते। *जाता० ५३। पूरिमं-*  
 भरिमं-पित्तलादिमयप्रतिमावत्। *अनुयो० १२।*  
**पूरिमा-** गान्धारग्रामस्य तृतीया मूर्च्छना। *स्था० ३९३।*

गान्धारस्वरस्य तृतीया मूर्च्छना। जीवा० १९३।  
**पूरिमाणि**— यान्यन्तः पूरणेन पुरुषाद्याकृतीनि भवन्ति।  
 आचा० ४१४।  
**पूरी**— पूरिका-स्थूलशणगुणमयपदात्मिका। बृह० २२०।  
**पूरेइ**— पूरयति-व्याप्नोति। आचा० ८६। पूरयति-परिपूर्ण  
 करोति। भग० १२४।  
**पूरेसंथुया**— पूर्वसंस्तुताः-पितृव्यादयः। आचा० ३५१।  
**पूर्ण**— लोकपालः। स्था० २०५।  
**पूर्णभद्र**— यक्षभेदविशेषः। प्रजा० ७०।  
**पूर्वगत**— दृष्टिवादे तृतीयभेदः। सम० ४।  
**पूर्वदेश**— धान्यपूरकाभिधानसन्निवेशः। आचा० २०२।  
**पूर्वधरता**— लब्धिविशेषः। स्था० ३३२।  
**पूर्वपदव्याहृत**— गत्यागतिलक्षणभेदः। आव० २८१।  
**पूर्वपूर्व**— चतुर्दशानां पूर्वाणामाद्यम्। दशवै० ८५।  
**पूर्ववत्**— त्रिविधानुमाने प्रथममनुमानम्। भग० २२।  
**पूर्वानुपूर्वी**— आनुपूर्व्याः प्रथमो भेदः। स्था० ४।  
**पूर्वाषाढा**— तोयमित्यवरनाम नक्षत्रम्। जम्बू० ४९९।  
**पूलिय**— पूलिका। निशी० ३५० अ।  
**पूव**— आर्द्रखाद्यम्। बृह० १७८ अ। निशी० १४७।  
**पूविगा**— पूवलगादि। निशी० ४५ अ।  
**पूविय**— आपूपिकः। आव० ३५४।  
**पूवियसाल**— आपूपिकशाला। आव० ३९७।  
**पूव्व**— पूर्वशब्दः पूर्वानुपूर्वीवाचकः। व्यव० ११९ अ। पूर्वः-  
 पूर्वः-असंयमोऽनादिभवाभ्यासः। आचा० १९२। पूर्व-  
 अतिक्रान्तम्। आचा० १६७।  
**पूव्वपूरिस**— पूर्वपुरुषः-अतीतनयः। ज्ञाता० ३।  
**पूस**— षष्ठं नक्षत्रम्। स्था० ७७। पुष्पः-  
 सामुद्रिकपुरुषविशेषः। आव० १९९। पुष्यः-  
 प्रभासजन्मनक्षत्रम्। आव० २५५। पुष्यः-नक्षत्रविशेषः।  
 ज्ञाता० १३३।  
**पूसनंदी**— पुष्पनन्दी-वैश्रमणदत्तराजकुमारः। विपा० ८२।  
 पुष्पनन्दी-युवराजः। विपा० ८५।  
**पूसफलं**— । ओघ० १६०। पुष्पक(पुंस्फ)लम्। प्रजा० ३७।  
**पूसफलिका**— वनस्पतिविशेषः। भग० ८०३।  
**पूसफली**— वल्लीविशेषः। प्रजा० ३२।  
**पूसभूर्इ**— आर्यपुष्पभूतिः-ध्यानसंवरयोगविषये  
 शिम्बावर्द्धनगरे बहुश्रुत आचार्यः। आव० ७२२।

**पूसमाणव**— पुष्पमाणवः-मागधः। जम्बू० १४२। मागधः।  
 भग० ४८२। पुष्पमाणवः-नगनाचार्यः। ज्ञाता० ५८। पूष-  
 मानवः-मागधः। औप० ७३।  
**पूसमित्त**— पुष्पमित्रः-ध्यानसंवरयोगविषये आचार्य  
 पुष्यभूति-शिष्यो बहुश्रुतः। आव० ७२२। पुष्यमित्रः-  
 कौशिकजीवः, स्थूणायां ब्राह्मणः। आव० १७१।  
 पुष्यमित्रः-तगरायामाचार्यशिष्यः। व्यव० २५६ अ।  
 निशी० ३३२ अ।  
**पूसमीत्त**— पुष्यमित्रं सद्व्यवहारकाचार्यः। व्यव० २५६।  
**पूसियार**— तेतलीपुरनगरे पुष्यकारः श्रेष्ठी। आव० ३७३।  
**पृथक्त्ववितर्कसविचार**— शुक्लध्यानप्रथमभेदः। आव०  
 ६०३।  
**पृथक्त्वानुयोगः**— अनुयोगद्वितीयभेदः, यत्र क्वचित् सूत्रे  
 चर-णकरणमिव क्वचित् पुनर्धर्मकथैवेत्यादि। दशवै०  
 ४।  
**पृथग्भूत**— उन्मुक्तः प्राबल्यमुक्तः। आव० ५०८।  
**पृथग्विमात्राः**— पृथग् विविधा मात्रा येषूपसर्गेषु ते  
 पृथग्विमात्राः-हास्यादित्रयान्यतरारब्धाः। आचा० २५५।  
**पृष्ठ**— शरीराङ्गम्। आचा० ३८।  
**पृष्ठमांसकत्व**— परोक्षस्यावर्णवादित्वम्,  
 दशममसमाधिस्थानम्। प्रश्न० १४४।  
**पृष्ठवंश**— पृष्ठकरण्डकः। जीवा० १५४।  
**पेखोलमाण**— प्रङ्खोलमानः-चञ्चलम्। ज्ञाता० ३५।  
 पेङ्खोलमानं-दोलायमानम्। ज्ञाता० ३५।  
**पेंडिओ**— मरहद्विसए फलाण कयलकप्पमाणाओ  
 पेंडिओ। निशी० ३९ अ।  
**पेआल**— पेयालं-प्रमाणं सारः। आव० ४२३।  
**पेए**— पेचकः-पुच्छमूलः। स्था० २०९।  
**पेक्खणं**— प्रेक्षणं-रूढिवशात्साकारपश्यत्तायां  
 चिन्त्यमानायां प्रदीर्घकालं अनाकारपश्यत्तायां  
 चिन्त्यमानायां प्रकृष्टं परि-स्फुटरूपमीक्षणम्। प्रजा०  
 ५३०।  
**पेच्च**— प्रेत्य-जन्मान्तरे। आचा० १६।  
**पेच्चभव**— प्रेत्यभवः-जन्मान्तरम्। भग० ११५।  
**पेच्चा**— ज्योतिष्केन्द्रसूर्यस्य बाह्या वर्षत्। जीवा० १७६।  
**पेच्चाभाविय**— प्रेत्य जन्मान्तरे भवति शुद्धफलतया  
 परिणम-तीत्येवंशीलं प्रेत्यभाविकम्। प्रश्न० ११०।

पेच्येह- आक्रमथ। भग० ३८१।  
 पेच्छता- प्रेक्ष्यमाणा-दृश्यमाना। ज्ञाता० १३३।  
 पेच्छण- प्रेक्षणं-प्रेक्षणकम्। ज्ञाता० ९३।  
 पेच्छणघर- प्रेक्षणकगृहं-यत्रागत्य प्रेक्षणकानि विदधति  
 निरी-क्षन्ते च तत्। जीवा० २००।  
 पेच्छणयं- प्रेक्षणकम्। आव० ८१४।  
 पेच्छमाणी- प्रेक्षमाणा पश्यन्ती। ज्ञाता० ३८।  
 पेच्छणय- प्रेक्षणकम्। आव० ३६०।  
 पेच्छा- 'प्रेक्षा' इति पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात्  
 प्रेक्षागृहं-नाट्यगृहम्। जम्बू० १२१। प्रेक्षा-प्रेक्षणकं,  
 कौतुक दर्श-नोत्सुकजनमेलकः। जम्बू० १२३।  
 पेच्छागिहसंठिअ- प्रेक्षागृहसंस्थितः। जीवा० २७९।  
 पेच्छाघर- प्रेक्षागृहं वास्तुविद्याप्रसिद्धम्। सूर्य० ६९।  
 पेच्छाघरमंडव- प्रेक्षा-प्रेक्षणकं तदर्थं गृहरूपो मण्डपः  
 प्रेक्षा-गृहमण्डपः। स्था० २३०। प्रेक्षागृहमण्डपः। जीवा०  
 २२८। प्रेक्षागृहमण्डपः-रङ्गमण्डपः। जम्बू० ३२३।  
 प्रेक्षागृहमण्डपः-प्रेक्षाः प्रेक्षणकं-तदर्थं गृहरूपो मण्डपः।  
 स्था० २३२।  
 पेच्छाघरसंठिता- प्रेक्षागृहस्येव वास्तुविद्याप्रसिद्धस्य  
 संस्थितं संस्थानं यस्याः सा। सूर्य० ६९।  
 पेज्जंजमाण- शब्दायमानम्। राज० ३९।  
 पेज्ज- प्रियस्य भावः कर्म प्रेम-  
 अनभिव्यक्तमायालोभलक्ष-  
 णभेदस्वभावमभिष्वङ्गमात्रम्। स्था० २६। प्रेमः-  
 अनभिव्यक्तमायालोभस्वभावमभिष्वङ्गमात्रम्। भग०  
 ८०। प्रेयं-उष्णं सत् शीतम्। आव० ८५८। प्रेमः। औप०  
 ७९। प्रेयः-प्रकर्षणं वा इज्या-पूजाऽस्येति प्रेय्यं प्रेर्यम्।  
 औप० ९५। प्रियस्य भावः कर्म वा प्रेमः। स्था० २६।  
 प्रेमः- पूत्रादि-विषयः स्नेहः। भग० ५७३। दशमं  
 पापस्थानकम्। ज्ञाता० ७५।  
 पेज्जणिस्सिया- प्रेमनिःसृता-यदतिप्रेमवशाद्दासोऽहं तवे-  
 त्यादि वदतो भाषा। प्रजा० २५६।  
 पेज्जनिस्सिआ- प्रेमनिःसृता-मृषाभाषाभेदः। दशवै० २०९।  
 पेज्जवत्तिता- प्रेमः-रागो वृत्तिः-वर्तनं रूपं प्रत्ययो वा  
 हेतु-र्यस्याः सा प्रेमवृत्तिका प्रेमप्रत्यया वा। स्था० ९८।  
 पेम्मराग इत्यर्थः, प्रेमप्रत्ययिकी विंशतिक्रियामध्ये  
 अष्टादशी। आव० ६१२।

पेज्जा- पेया। आव० ८१४।  
 पेज्जामोल्लं- पेया (पोषण) मूल्यम्। आव० ४३३।  
 पेज्जायअ- पेयायायी। आव० ८१४।  
 पेडुक- वेणूकार्यविशेषः। सूत्र० ११७।  
 पेठीवंस- पृष्टवंशः-उपरितनस्तिर्यक्याती। बृह० ९२।  
 पेडा- पेटा-यस्यां तु साधुः क्षेत्रं पेटावच्चतुरस्रं, विभज्य  
 मध्यवर्तीनि गृहाणि मुक्ता चतसृष्वपि दिक्षु समश्रेण्या  
 भिक्षा-मटति सा पेटा। बृह० २५७ अ। पेटा-वंशदलमयं  
 वस्त्रा-दिस्थानम्। स्था० ३६६। पेडिका इव चउकोणा।  
 उत्त० ६०५।  
 पेडिया- पेटिका मञ्जूषा। आव० ५६१।  
 पेढ- पीठम्। आव० ५१३।  
 पेढाल- पेढालं-उद्यानविशेषः। आव० २१६। निशी० ४६  
 अ।  
 पेढालग- पेढालकः विद्यासिद्धः परिव्राजकः। आव० ६८५।  
 पेढालकः-विद्यासिद्धः परिव्राजकः। आव० ६५।  
 पेढालपुत्त- जम्बुद्वीपे  
 आगामिन्यामवसर्पिण्यामष्टमतीर्थकृत्। सम० १५३।  
 पेढालपुत्रः-अनगारः, अनुत्तरोपपातिकदशानां  
 तृतीयवर्गस्याऽष्टममध्ययनम्। अनुत्त० २।  
 पेढालपुत्रः-प्रधानः दर्शनवतोऽपि चारित्रेण विनाऽधरगतिं  
 नरकगतिं प्राप्तिः। आव० ५३२।  
 पेढालपुत्र- प्रद्वेषे दृष्टान्तः। आचा० १४६।  
 पेणि- प्रेणी-हरिणीविशेषः। प्रश्न० ७०।  
 प्रेम्माणुराग- सर्वज्ञप्रवचनप्रीतिलक्षणकुसुम्भादिरागेण  
 रक्ता इव रक्ता। ज्ञाता० १०९।  
 पेयकाइय- प्रेतकायिकः-व्यन्तरविशेषः। भग० १९८।  
 पेयदेवतकाइय- प्रेतदेवकायिकः-प्रेतसत्कदेवतानां  
 सम्बन्धी। भग० १९८।  
 पेया- महती काहला। राज० ४९। ओघ० ६७। यवागूः। बृह०  
 २३४ आ।  
 पेयाल- रहस्यम्। संस्ता०। प्रमाणं-सारः। नन्दी० १५९।  
 प्रमाणम्। नन्दी० ५०। सारः-प्रधानः। उपा० ६। पेयालः-  
 सम्यग्विपश्चतसूत्रार्थं इति तात्पर्यायः। व्यव० ३३७  
 आ। परिमाणम्। व्यव० २३७, २९२।  
 परंत- पर्यन्तः। बृह० १४२ आ। पर्यन्तम्। आव० ६७४।  
 पर्यन्तं-बहिःप्रदेशः। जीवा० १९२। पर्यन्तः। जीवा० २०४।

पेरंतचक्कपालं- पर्यन्तचक्रवालं बाह्यपरिधिः। प्रश्न०  
६१।

पेरुउ- पव्वदेससहितं। निशी० २३ अ।

पेलव- मृदुः। भग० ४७७। पेलवः-प्रतनुः। व्यव० ४०८ आ।  
पेलवत्वं मृदुत्वलघुत्वलक्षणः। ज्ञाता० २७। अट्टमम्।  
बृह० २२४ अ। पेलवं-कोमलम्। जम्बू० २७५।

पेलवगहणं- इमे अदिण्णदाणा जो आगच्छति तमो  
भासंति। निशी० १८४ अ।

पेलवसत्त- पेलवसत्त्वा-तुच्छधृतिबलः। बृह० ९० अ।

पेला- अभिग्रहविशेषः। निशी० १२ अ। ओघ० १६७।

पेलु- रुतपूणिका। आव० ४५६। रुतपूणिका। पिण्ड० ९२।  
वलितं। निशी० २२८।

पेलुगा- साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। प्रज्ञा० ३४।

पेल्ल- दरिद्रः। निशी० ४५ अ। डिम्भः। विपा० ५४।

पेल्लए- अनुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयवर्गस्य  
चतुर्थमध्ययनम्। अनुत्त० २।

पेल्लओ- प्रेरकः-प्रमाणभूतः। बृह० १२८ अ।

पेल्लण- प्रेरणं-विक्षेपणं आघातः। ओघ० १६२।  
अक्कमणं। निशी० ४८ आ।

पेल्लणा- बलामोटिका। बृह० ५८ अ।

पेल्लणया- प्रेरणा। बृह० ३०९ आ।

पेल्लवा- अणालोइयपुव्वावरक्कारिणो पेल्लवा। निशी०  
१२२ अ।

पेल्लिओ- प्रेरितः। आव० १७३।

पेल्लिज्जिहिइ- प्रेरयेत्। आव० ६४।

पेल्लितं- लुष्टितम्। आव० ८२२।

पेल्लितो- आक्रान्तः। निशी० १३७ अ।

पेल्लिय- पेल्लियः-शिशुः। आव० ६७०। पातितम्। व्यव०  
१८४ अ।

पेल्लियमुह- प्रेरितमुखः-चम्पितमुखावयवोष्ठनासिकः।  
पिण्ड० १२३।

पेल्लु- पूणिकया वलितं रुतम्। बृह० ११६ अ।

पेल्लेइ- प्रेरयति-उल्लंघयति। आव० ६१७।

पेल्लेज्जा- प्रेरयेत्-अतिक्रामयेत्। ओघ० १४९।

पेल्लेयव्व- प्रेरणीयः। ओघ० १५।

पेस- प्रेष्यः भृत्यादिः। आचा० ९१। प्रेष्यः-

बलाद्विनियोज्यः। आव० ८३५। प्रेष्यः-आरम्भेषु

व्यापारणीयः। सम० २०। सिन्धुविषय एव, सूक्ष्मचर्माः  
पशवः तच्चर्मनिष्पन्नम्। आचा० ३९४। प्रेष्यः-

प्रेषणयोग्यो भृत्यदेश्यः। सूत्र० ३३१।

प्रेष्यः- प्रेषणार्हो जनो दूतादिः। जम्बू० १२२। प्रेष्यः-शुद्रः।

सूत्र० ४०३। प्रेष्यः-प्रयोजनेषु प्रेषणीयः। प्रश्न० ९१।

प्रेष्यवर्जकः श्रावकस्य नवमी प्रतिज्ञा। आव० ६४६।

पेसण- प्रेषणम्। आव० ३०३। प्रेषणः-व्यापारः। बृह० ४  
अ। प्रेष्यः। उपा० १०।

पेसपरिणाय- अष्टमी उपासकप्रतिमा। सम० १९।

पेसल- पेशल-सुश्लिष्टं, प्राणिनामहिंसादिप्रवृत्त्या

प्रीतिकार-णम्। सूत्र० ९४। पेशलं आस्वादमनोजत्वात्।

जीवा० ३३१। पेशलं-शोभनम्। आचा० २५८। पेशलं-

अतिमनो-जम्। उत्त० २९८। पेशलः-मिष्टवाक्यो

विनयादिगुणसम-न्वितः। सूत्र० २३४। पेसलः-मनोजः।

जीवा० ३५१। सूक्ष्मचर्मपक्षोः-चर्मसूक्ष्मपक्षमनिष्पन्नम्।  
आचा० ३९४।

पेसला- पेशला-मनोज्ञा। प्रज्ञा० ३६४।

पेसवणप्पओग- प्रेष्यप्रयोगः-बलादिनियोज्यस्य प्रयोगः।  
आव० ८३४।

पेसारंभ- प्रेषारम्भः। आव० ६४७।

पेसिता- प्रेष्याः। निशी० २७७ अ।

पेसिया- पेशिका-खण्डम्। अनुत्त० ५।

पेसी- दीहागारा। निशी० १२४ आ। अर्बुदजाता। तन्दु०।

प्रलम्बानामूद्ध्वयिताः फालयः। बृह० १७९ आ।

मांसपेशिका आम्रपेशिका वा। बृह० ३०९ आ।

पेसुन- पैशुन्यं-पिशुनकर्म प्रच्छन्नं

सदसद्वोषाविर्भावनम्। स्था० २६।

पेसुन्न- पैशुन्यं-परोक्षे सतोऽसतो वा दोषस्योद्घाटनम्।

प्रज्ञा० ४३८। प्रच्छन्नं-असद्वोषाविष्करणम्। भग० ८०।

चतुर्दशमं पापस्थानकम्। ज्ञाता० ७५। पैशुन्यं-कर्णे-

जपत्वं, परगु-णासहनतया तद्वोषोद्घटनम्। सूत्र० २६३।

पेसेल्लिया- प्रेष्यिका। आव० ३९७।

पेस्स- प्रेष्यः-आदेश्यः। प्रश्न० ४१। प्रेष्यः-प्रेषणयोग्यः।

जीवा० २८०। प्रेष्यत्वं यस्य स प्रेष्यः। प्रज्ञा० १०६।

प्रेष्यः-ये तथाविधप्रयोजने नगरान्तरादौ प्रेष्यन्ते।

ज्ञाता० ८८। दासमादी। निशी० ६६ अ।

पेस्सजण- प्रेष्यजनः-प्रयोजनेषु प्रेषणीयो लोकः। प्रश्न०

३८।

पेहइ- पश्यति। उत्त० ४५२।

पेहति- पश्यति। प्रजा० ३०५। प्रतिलेखयति प्रस्थापयति वा। आव० ७५६।

पेहमाणे- प्रेक्षममाणः। आव० १२४।

पेहा- प्रेक्षयतेऽनयेति प्रेक्षा दृष्टिः। दशवै० ९३। आव० ७९८।

प्रेक्ष्य- आलोच्य प्रेक्षया वा। उत्त० ५८। प्रेक्षा-प्रत्युपेक्षणा। बृह० ६० अ। प्रेक्ष्य। निशी० २२ अ। निशी० २७४ अ। वित्ता। दशवै० ३८ अ।

पेहाए- प्रेक्ष्य। भग० ७५४। प्रेक्षितं-दृष्टम्। आचा० ३९५।

पेहावत्थं- प्रेक्षावस्त्रं प्रेक्षाऽऽलोकनं तत्पुरःसरं यद्वस्त्रादि याच्येत तत्। बृह० ९७ अ।

पेहाहि- प्रेक्षस्व-निरूपय लभस्वेति। सूत्र० ११६।

पेहि- कथय। सूत्र० १४४।

पेहिता- प्रेक्ष्य। आव० ७८४।

पेहिय- प्रेक्ष्य। सूत्र० ५५। प्रेक्षितं-अर्धकटाक्षनिरीक्षितादि। उत्त० ४२८।

पेहुजण- पृथग्जनो लोकः। बृह० ९ अ।

पेहुण- पिच्छम्। बृह० ६१ अ। मयूराङ्गिगिरिः। बृह० ३३। मयूराङ्गम्। प्रश्न० १६३। प्रश्न० ८। मयूरपिच्छम्। प्रश्न० १५२। जीवा० १९१। जम्बू० ३५। मयूराङ्गम्। प्रश्न० १६३। मयूरपिच्छम्। राज० ३३। निशी० ६०।

पेहुणकलाव- मयूरङ्गकलापः। ज्ञाता० ९५।

पेहुणमिजिया- पेहुणमिजिका- मयूरपिच्छमध्यवर्तिनीमिज्या। जीवा० १९१। पेहुणं- मयूरपिच्छं तन्मध्यवर्तिनी मिज्या पेहुणमिज्या। प्रजा० ३६१।

पेहे- पश्यति। ओघ० १२७। निरूपयति। ओघ० १३३।

पेहेति- पडिलेहित्ति। निशी० २०८ अ।

पौड- पौण्डं-फलम्। प्रश्न० ८२। पुण्डरीकं-पद्मम्। आव० ९६।

पौडमया- खोम्मा। निशी० २५४ अ।

पौडयं- पण्डगं-वनीफलादुत्पन्नं कार्पासिकम्। विपा० १२। पुण्डजम्। उत्त० ३४२। कप्पासो। निशी० १२१ अ।

पौडरिगिणी- अञ्जनपर्वते पुष्करणी। स्था० २३०। स्था० ८०।

पौडरिय- पुण्डरीकं-श्वेताम्बुजम्। राज० ८।

पौडरीअं- सप्तदशसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। सम० ३३।

पौडरीगिणी- जम्बूमहाविदेहे पुक्खलावतीविजये राजधानी। ज्ञाता० १९१।

पौडरीय- पुण्डरीकं-श्वेतपद्मम्। जम्बू० २६। पुण्डरीकं ज्ञातायां एकोनविंशतितमं ज्ञातम्। सम० ३६।

पौण्डरीकं-सिताम्बुजम्। जीवा० १७७। पुण्डरीकः- लोमपक्षिविशेषः। जीवा० ४१।

पौण्डरीयदल- पुण्डरीकदलं-सिताम्बुजपत्रम्। प्रजा० ३६१।

पौण्डरीयय- जलरुहविशेषः। प्रजा० ३३।

पौण्डरीया- लोमपक्षिविशेषः। प्रजा० ४९।

पौडा- कप्पासो। निशी० १९१ अ।

पोअए- पोतः-बोहित्यः। आव० १२८। प्रकर्षेण उतनं प्रोतः मुक्ताफलादीनां प्रोतनम्। आव० १२९।

पोअण- पोतनं-त्रिपृष्ठपुरम्। आव० १६२। पोतनं- पुरुषोत्तमवासुदेवनिदानभूमिः। आव० १६३। प्रोतनं- प्रवेशनम्। आव० ४७४।

पोअणपुरं- पोतनपुरं नगरम्। आव० १७४, १७६।

पोअया- पोतं-वस्त्रं-तद्वजरायुर्वर्जितत्वाज्जाताः, पोतादिव वा बोहित्थाज्जाताः पोतजाः। स्था० ११४।

पोआई- पोताकी-शकुनिका, पोतकीविद्या। आव० ३१८।

पोइय- पोतितं-निमग्नम्। ओघ० ६४।

पोइया- पोतिताः-त्रासिताः। बृह० ३१७ अ।

पोक्कण- पोक्कणः-चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। प्रश्न० १४।

पोक्खरं- पुष्करम्। आव० २९९।

पोक्खरकणिआ- पुष्करकर्णिका-पद्ममध्यभागः। सम० १३७।

पोक्खरगय- पुष्करं-मृदङ्गमङ्ग्यादिभेदभिन्नं तद्विषयकं विज्ञानं पुष्करगतम्। जम्बू० १३७। अष्टमिकला। ज्ञाता० ३८।

पोक्खरणी- पुष्करणी-वर्तुला पुष्करवती। ज्ञाता० ६३, ६७। पुष्करिणी पुष्करवती चतुष्कोणा वा। प्रश्न० ८।

पोक्खरत्थिमाय- पुष्करास्थिभागः कमलबीजविभागः। जम्बू० २८४।

पोक्खल- पद्मकेसरम्। आचा० ३४९। जलरुहविशेषः।

प्रज्ञा० ३३।

**पोकखलत्थिभूय**— जलरुहविशेषः। प्रज्ञा० ३३।

**पोकखलावती**— जम्बूमहाविदेहे विजयः। ज्ञाता० १९१।

**पोकखली**— श्रावस्त्यां श्रमणोपासकः। भग० ५५२।

**पोग्गल**— पुद्गलपरिणामनामाष्टमशतके प्रथमोद्देशकः।

भग० ३२८। पुद्गलविषयो द्वादशशतके चतुर्थोद्देशकः।

भग० ५५२। पुद्गलार्थाभिधायकः चतुर्दशशतके

चतुर्थोद्देशकः। भग० ६३०। पुद्गलः-पूरणगलनधर्मा।

आचा० २५७। पोग्गलं—मांसम्। पिण्ड० २२। पुद्गलः

जीवः। दशवै० ५०। पुद्गलं—मांसम्। आव० ७४०।

पुद्गलः-मूर्तः। भग० १५०। पुद्गलम्। आव० ८५४।

पुद्गलाः-पूरणगलनधर्माणः। स्था० ३४। पुद्गलाः-

पूरणगलनधर्माणः-परमा-

ण्वादयोऽनन्ताणुकस्कन्धपर्यन्ताः। अनुयो० ७४।

पुद्गलः-परमाणुः। भग० ६६। मांसम्। निशी० ३६ अ।

पौद्गलं-पुद्गलसमूहो मेघः। स्था० १४२।

**पोग्गलगती**— पुद्गलगतिः-विहायोगतेः पञ्चमो भेदः।

प्रज्ञा० ३२७।

**पोग्गलपरिअट्ट**— पुद्गलपरावर्तः-अनन्त

उत्सर्पिण्यवसर्पि-णीमानः। अनुयो० ९९।

**पोग्गलपरियट्ट**— पुद्गलानां-

रूपिद्रव्याणामाहारकवर्जितानां औदारिकादिप्रकारेण

ग्रहणतः एकजीवापेक्षया परिवर्तनं-सामस्त्येन स्पर्शः

पुद्गलपरिवर्तः, स च यावता कालेन भवति स

कालोऽपि पुद्गलपरिवर्तः। स्था० १५८।

अनन्तसमयात्मकः। भग० ८८८।

**पोग्गलपरियट्टा**— पुद्गलद्रव्यैः सह परिवर्तः-परमाणूनां

मीलनानि पुद्गलपरिवृत्ताः। भग० ५६८।

**पोग्गलरस**— पुद्गलरसः। आव० ८५७।

**पोग्गलादिण्णं**— पुद्गलं-मांसं तेन सर्वमाकीर्णं-व्याप्तम्

पुद्ग-लाकीर्णम्। आव० ७४०।

**पोग्गलिय**— पौद्गलिकः-शाल्यौदनः। पिण्ड० १००। दशवै०

१७५।

**पोच्चड**— पूर्णम्। निशी० ४३ अ। विलीनम्। ज्ञाता० १७७।

अतिनिबिडम्। प्रश्न० १४। असारम्। ज्ञाता० ९४।

**पोच्चडग**— श्रुत्यथत्वम्। निशी० २८९ अ।

**पोट्ट**— उदरम्। ओघ० १४८। उदरम्। आव० ३१८, ३५३,

४३४, ८१६। पृष्टः। उत्त० १९८। उदरम्। दशवै० ११।

उदरम्। जम्बू० १२५। जठरम्। उपा० २२। उदरं। दशवै०

१२३।

**पोट्टदरा**— कडपल्लादि पोट्टाणि चैव पोट्टदरा। निशी० १४७

आ।

**पोट्टल**— भरः। तन्दु०।

**पोट्टलग**— पोट्टलकः। ओघ० १००।

**पोट्टलय**— पोट्टलिकः। उत्त० २०९।

**पोट्टलिका**— वस्त्रैकदेशेन निबद्धं वस्तुजातम्। भग० ७९।

**पोट्टलिया**— पोट्टलिका। आव० ६९४।

**पोट्टशाल**— परिव्राजकविशेषः। बृह० १२४ अ।

**पोट्टसरणी**— अतिसारः। आव० ६९८, ८१३।

**पोट्टसाल**— पोट्टशालः। उत्त० १६८।

**पोट्टसूलं**— पोट्टशूलं-उदरशूलम्। ओघ० २१७।

**पोट्टिया**— पोट्टिकः महोदरः जलोदरी। आव० ६७८।

**पोट्टिल**— अनगारविशेषः। स्था० ४५६। राजपुत्रः। सम०

१०६। जम्बूभरते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां

नवमतीर्थकृतः। सम० १५३। प्रोष्ठिलः-

प्रियमित्रचक्रिधर्माचार्यः। आव० १७७।

**पोट्टिला**— कलादमूषिकारश्रेष्ठिसुता। विपा० ८८। पुष्पकार-

श्रेष्ठिदुहिता। आव० ३७३। भद्राकालकयोः पुत्री। ज्ञाता०

१८४।

**पोट्टिल्ल**— आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां चतुर्थतीर्थकृत

पूर्वभवनाम्। सम० १५४।

**पोट्टवया**— प्रोष्ठपदा उत्तरभाद्रपदा। सूर्य० ११४।

**पोट्टवात**— पोष्ठवए-पोष्ठपदः भाद्रपदः। सूर्य० १०७।

**पोडइ**— वृक्षविशेषः। भग० ८०३।

**पोडइला**— तृणविशेषः। प्रज्ञा० ३३।

**पोढ**— प्रौढः-समर्थः। बृह० ६१ अ।

**पोढा**— प्रौढा-समर्था। बृह० ६१ अ।

**पोत**— पोतं लघुबालोचितवस्त्रखण्डम्। पिण्ड० ९६।

अपक्व-जायओ पक्विसावो। दशवै० १२६ अ। पोतको-

बालक इति वस्त्रम्। स्था० ४६५। पोतजः-पोतमिव

वस्त्रमिव पोतादिव वा बोहित्यादिव जातः हस्त्यादिः।

प्रश्न० ९०। वस्त्रम्। बृह० २४१।

**पोतजा**— पोतजाः हस्तिवग्गुलीप्रभृतयः। स्था० ३८५।

**पोतनपुर**— शुद्धाहारगवेषणादृष्टान्ते नगरम्। पिण्ड० ७५।

पोतनपुरः-परतीर्थिकवादस्थानम्। व्यव० १८८आ।  
 पोतितं- देशीवचनत्वात्त्रासितम्। बृह० २३१आ।  
 पोत्त- पोत्तं-वस्त्रम्। आव० ३९९। वस्त्रम्। आव० ८२४।  
 वस्त्रम्। आव० ९०। वस्त्रम्। ओघ० ७२।  
 पोत्तग- ताड्यादिपत्रसङ्घातनिष्पन्नम्। आचा० ३९३।  
 पोत्ति- चिलिमिनीम्। ओघ० ९२। वस्त्रम्। उत्त० ८।  
 मुख-वस्त्रिका। ओघ० १३२।  
 पोत्तिय- पोतमेव पोतकं-कार्पासिकम्। स्था० ३३८।  
 कार्पासिकं-वस्त्रम्। बृह० २०१आ।  
 पोत्तिया- वस्त्रधारिणः तापसविशेषः। निर० २५।  
 पोत्ती- वस्त्रम्। आव० ३०७।  
 पोत्तीया- वस्त्रिका। आव० ६३।  
 पोत्तुल्ल- वस्त्रमयपुत्रिका। ज्ञाता० २३५।  
 पोत्थं- पोतं-वस्त्रम्। पुस्तकं-सम्पुटक रूपं, ताडपत्रादि।  
 अनुयो० १३। पोत्थं वस्त्रं प्रकृष्टोत्थानरूपम्। उत्त०  
 ४७५। पोत्था-प्रकृष्टोत्थानरूपा। उत्त० ४७५। लेप्पगं।  
 निशी० २आ। पुस्ते धीउल्लिकादि पुत्तलिकादि। ओघ०  
 १२९। पुस्तं-वस्त्रम्। ज्ञाता० १७९। पुस्तं-वस्त्रम्। प्रश्न०  
 १६०।  
 पोत्थकम्म- पोत्थ-पोतं वस्त्रमित्यर्थः, तत्र कम्म-  
 तत्पल्लव-निष्पन्नं धीउल्लिकारूपकमित्यर्थः, अथवा  
 पोत्थं-पुस्तकं तच्चेह संपुटक रूपं गृह्यते, तत्र कम्म-  
 तन्मध्ये वर्तिकालि-खितं रूपकमित्यर्थः, अथवा पोत्थं-  
 ताडपत्रादि तत्र कम्म-तच्छेदनिष्पन्नं रूपकम्। अनुयो०  
 १३। पुस्तकर्म-लेप्यकर्म। आचा० ४१४।  
 पोत्थकार- पोस्तकारः। अनुयो० १४९।  
 पोत्थपणय- पुस्तकपञ्चकं-गण्डी १ कच्छपी २ मुष्टि ३  
 संपुटफलक ४ सृपाटिका ५ पुस्तकलक्षणम्। आव० ६५२।  
 पोत्थयं- पोतं-वस्त्रम्। अनुयो० ३४। पुस्तकः-  
 पत्रकसङ्घातनिष्पन्नः। अनुयो० ३४।  
 पोत्थयपणगं- गंडी-कच्छपी-मुष्टिः-सम्पुटफलः  
 सृपाटिका रूपं पुस्तकपञ्चकम्। स्था० २३३।  
 पोत्थयरयणं- पुस्तकरत्नम्। जीवा० २३७।  
 पोत्रक- वृषणः। उपा० २२।  
 पोदकी- श्वापदविशेषः। उत्त० ४१७।  
 पोम्हं- अदसं। निशी० २४५आ।  
 पोय- पोतः शिशुः। आचा० २४८। पोतः-ब्रह्मदत्तराज्योः

पुरतीपिङ्गलयोः पिता। उत्त० ३७९।  
 पीयघाय- पोतघातः-शवघातकः। प्रश्न० १३।  
 पोयय- पोतजः-हस्त्यादिः। औप० ३७। पोतजः-वल्गु-  
 ल्यादिः। भग० ३०३।  
 पोयया- पोता एव जायन्त इति पोतजाः हस्तिवल्गुलीज-  
 लौकाप्रभृतयः। दशवै० १४१।  
 पोयवहणं- पोतवाहनं-नौ। उत्त० २२१।  
 पोयसत्थो- पोतसार्थः-बोहित्समुदायः शावकसमूहो वा।  
 प्रश्न० ३९।  
 पोयहंस- पोतहंसः-लोमपक्षिविशेषः। जीवा० ४१।  
 पोया- महती काहला। भग० २१६।  
 पोयागी- पोताकी-शकुनिका। उत्त० १६९।  
 पोयाल- मृगादिपोतलकः। ओघ० १५८। साण्डवृषभः।  
 व्यव० १८४अ।  
 पोर- अङ्गुष्ठपर्वः। ओघ० २१४, २१८। निशी० १६१।  
 पोरकव्वं- पुरःकाव्यं-पुरतः पुरतः काव्यं-शीघ्रकवित्वम्।  
 जम्बू० १३७।  
 पोरग- हस्तिविशेषः। प्रज्ञा० ३३।  
 पोरजाय- पर्वतजातम्। आचा० ३४९।  
 पोरपरिगगहं- पोरं-अङ्गुष्ठपर्व तस्मिन्नङ्गुष्ठपर्वणि  
 लग्नया प्रदेशि-न्या यद्भवति छिद्रं तद्यथा पूर्यते तेन  
 दण्डनकेन बाहयनिषद्या-द्वयरहितेन तथा कर्तव्यं।  
 अङ्गुष्ठपर्वप्रदेशिनीकुण्डलिकापूरणम्। ओघ० २१४।  
 पोरबीज- पर्वगबीजं-इक्ष्वादि। आचा० ३४९। पर्वबीजः-  
 इक्ष्वादयः। स्था० १८७। पर्वबीजः-इक्षुवंशवेत्रादि। आचा०  
 ५७। पर्वबीजं इक्ष्वादि। दशवै० १३९।  
 पोरवच्चं- पुरपतेः कर्म पौरपक्ष्यं-  
 सर्वेषामात्मीयानामग्रेसर-त्वम्। जीवा० १६२।  
 पोरान- तित्थयरभासितो जस्सत्थो गथो य  
 गणधरनिबद्धो तं पाययबद्ध। निशी० ३६अ। पुराणं-  
 प्रागुपात्तम्। दशवै० १७। पुराणम्। भग० १६३। पुरातनम्  
 । सम० ३८। पुराणः-जरठः, कक्खडीभूत इति। विपा०  
 ३८। अतीतकालभावि। ज्ञाता० २०५।  
 तीर्थकरगणधरलक्षणः पूर्वपुरुषः। बृह० १०३अ।  
 पोरानगा- पुराणतरा अज्ज, जस्स पपोत्तादिभावो।  
 निशी० २९आ।  
 पोरानय- पुरातनम्। मरण० ।

**पोराणिय-** पुराणामेव पौराणिकीम्। उत्त० ३०६।  
 पुराणामेव पौराणिकी-चिरन्तनीम्। उत्त० ३९७।  
**पोरायाम-** अङ्गुष्ठपर्वणि प्रतिष्ठितायाः प्रदेशिन्या  
 यावन्मात्रं शुषिरं भवति तदापूरकम्। ओघ० २१४।  
 पर्यायाम अङ्गुष्ठ-पर्वप्रदेशिन्यपान्तरालायामम्। बृह०  
 २३९ अ।  
**पोरिसि-** पुरुषप्रमाणा पौरुषी आत्मप्रमाणा वीथी। आचा०  
 ३०२।  
**पोरिसिअद्धा-** पौरुषीकालः। ओघ० ६७।  
**पोरिसिमंडल-** पुरुषः-शङ्कुः पुरुषशरीरं वा  
 तस्मान्निष्पन्ना पौरुषी, पौरुषी यत्राध्ययने व्यावर्ण्यते  
 तदध्ययनं पौरुषी-मण्डलम्। नन्दी० २०५।  
**पोरिसी-** पौरुषी। आव० ८५२।  
**पोरिसोच्छ्रया-** पुरुषे भवा पौरुषी तां पौरुषीं छायापौरुषी-  
 च्छाया। सूर्य० ९२।  
**पोरुष-** पुरुषाणां समूहः पौरुषम्। उत्त० २६५।  
**पोरुसं-** पोरुषेयं पदात्यादिपुरुषसमूहः। उत्त० २६५।  
 पौरुषेयं -पदातिसमूहः। उत्त० १८८।  
**पोरुसा-** पुरुषाणां चरमावस्थां प्राप्ताः, अत्यन्तवृद्धा एव  
 पौरुषाः। सूत्र० १५८।  
**पोरुसादा-** पौरुषादाः-प्रस्तावात्पुरुषसम्बन्धिमांसभक्षका  
 राक्षसा इति। उत्त० ३९४।  
**पोरेकचंच-** चतुर्दशकला। ज्ञाता० ३८।  
**पोरेवचंच-** पुरस्य पतिः पुरपतिः तस्य कर्म  
 पौरपत्यंसर्वेषामग्रे-सरत्वम्। प्रज्ञा० ८९। पुरोवर्तित्वं-  
 अग्रगामित्वम्। सम० ८६। पुरोवर्तित्वं-अग्रगामित्वम्।  
 भग० १५४। पुरस्य पतिः पुरपतिस्तस्य कर्म पौरपत्यं-  
 पुरपतेः कर्म, सर्वेषामग्रेसर-त्वम्। जीवा० २१७।  
**पोलंडे-** पोलंडेल्लि-प्रकर्षण द्वास्त्रिर्वोल्लंघयति। ज्ञाता०  
 ६१।  
**पोलास-** पोलासं-श्वेतविकायामुद्यानविशेषः। आव०  
 ३१५।  
**पोलासं-** चैत्यविशेषः। आव० २१६।  
 श्वेताम्ब्यामुद्यानविशेषः। उत्त० १६०।  
**पोलासपुर-** अतिमुक्तकुमारश्रमणवास्तव्यनगरम्।  
 अन्त० ६। विजयराजधानी। अन्त० २३। जितशत्रो  
 राजधानी। उपा० ३९।

**पोलिन्दी-** लिपिविशेषः, भाषार्थ अष्टादशमः। प्रज्ञा० ५६।  
**पोलियं-** पोलिका। उत्त० १४७।  
**पोल्ल-** अन्तःशुषिरः। उत्त० ४७८। ऊसिरं  
 जीवाश्रयस्थान-मित्यर्थः। निशी० ६० आ।  
**पोल्लक-** पोडल्लक-कटनिर्वर्तकमयोमयं चित्रसंस्थानम्।  
 रुत-पुणिकानिर्वर्तकं शलाकाशल्यकाङ्गरुहादिर्वा।  
 आव० ४५६।  
**पोल्लर-** शुषिरा। उत्त० ४७८।  
**पोल्लरुक्ख-** शुषिरवृक्षः। ज्ञाता० ६३।  
**पोल्लिया-** पोलिका। आव० ३५४।  
**पोवलिय-** पोलिका। आव० ३४३।  
**पोस-** अपानम्। प्रश्न० ८३। पोसः-अपानदेशः। जीवा०  
 २७७। पोसः-अपानदेशः। जम्बू० ११७। अधिष्ठानम्।  
 ओघ० १८४। तेन सेव्यमानेन पुष्यत इति पोषः,  
 आत्मानं वा तेन तेन पोषयतीति पोषः, तदर्थिनो वा तं  
 पोषयतीति पोषः मृगीपदमित्यर्थः। निशी० २५२ आ।  
 अपानदेशः। औप० १६।  
**पोसए-** उपस्था। स्था० ४५१।  
**पोसणं-** पोषणं-यवसादिदानतः पुष्टिकरणम्। प्रश्न० ३८।  
**पोसवत्थं-** कामं पुष्णातीति पोषं कामोत्कोचदारि शोभन-  
 मित्यर्थः, तच्च तद्वस्त्रं पोषवस्त्रम्। सूत्र० १०५।  
**पोससुद्ध-** पोषमासशुद्धः। ज्ञाता० १५२।  
**पोसह-** पोषधं पर्वदिनानुष्ठेयं तप उपवासादिः। जम्बू०  
 १९७। पौषधः-अष्टमादिपर्वदिनम्। औप० ८२। पौषधः-  
 पर्वोपवासः। प्रश्न० ३२। पौषधः-व्रताभिग्रहविशेषः। सूत्र०  
 ४०८। आव० ७९३। पोषं दधातीति पोषधम्। व्यव० २८  
 आ। पोषधः-पोषणं पोषः, स चेह धर्मस्य तं धत्त इति  
 पोषधः-आहारपोषधादिः। उत्त० २५१। पोषं-धर्मपुष्टिं  
 धत्त इति पौषधः अष्टम्यादितिथिषु व्रतविशेषः। उत्त०  
 ३१५। पौषधं-अभिमत-देवतासाधनार्थकव्रतविशेषो  
 अभिग्रहः। जम्बू० १९७। पौषधं पर्वम्। आव० ८३५।  
 पोषधं-अष्टम्यादि-पर्वः। प्रज्ञा० ३९९।  
 पोषधशब्दोऽष्टम्यादिपर्वेषु रुढः। उपा० ११। पौषधं-  
 पर्वदिनानुष्ठानम्। भग० १३६। पोषधप्रतिमा-श्रावकस्य  
 चतुर्थी प्रतिज्ञा। आव० ६४६। पौषधः-पर्वदिन-  
 मष्टम्यादि। स्था० १२६। पौषधः-अष्टम्यादिपर्वदिनं,  
 तत्रो-पवसनं-आहारशरीरसत्कारादित्यागः। सम० १२०।

पौषधं—पर्वदिनानुष्ठानमुपवासादि। ज्ञाता० ३४।  
**पोसहपडिमा**—पौषधकाले प्रतिमा, पञ्चमी श्रावकप्रतिमा।  
 आव० ६४६।  
**पोसहिय**—पौषधिकः-आसन्नपारितपौषधव्रतः। ज०  
 २१३। पौषधिकः-अष्टम्यादिषु पर्वेषु परं तपः कारयतः।  
 व्यव० ३९६ अ।  
**पोसहियतव**—पौषधिकः-अष्टमीपाक्षिकादिपौषधे भवं  
 पौषधिकं तच्च तत् तपश्च पौषधिकतपः। व्यव० २८  
 आ।  
**पोसहोववास**—पौषधः पर्वदिनमष्टम्यादि तत्रोपवसनं,  
 अभ-क्तार्थः-पौषधोपवासः। स्था० २३६। पौषधोपवासः  
 अष्ट-म्यादिषु पर्वदिनेष्वसनं  
 आहारशरीरसत्काराब्रह्मव्यापारपरि-वर्जनमित्यर्थः।  
 ज्ञाता० १३४। पौषधः रूढ्या पर्वः, पर्वणि—  
 अष्टम्यादित्थयः, पूरणात् पर्व,  
 धर्मोपचयहेतुत्वादित्यर्थः पौषधे उपवासन पौषधोपवासः  
 नियमविशेषाभिधानं चेदं पौषधोपवासम्। आव० ८३५।  
 पौषधोपवासः-पर्वदिनोपवसनम्। भग० २६८।  
 पौषधोपवासः-पर्वदिनोप-वसनम्। भग० ३२३।  
 पौषधोपवासः-अष्टम्यादिपर्वदिनेष्व-पवसनम्। औप०  
 १०१। पौषधोपवासः। आव० ८३५।  
**पोसहोववासनिरय**—पौष-पुष्टिं कुशलधर्मणां धत्ते  
 यदाहार-त्यागादिकमनुष्ठानं तत्पौषधं तेनोपवसनं-  
 अवस्थानमहोरात्रं यावदिति पौषधोपवास इति, अथवा  
 पौषधं-पर्वदिनमष्टम्यादि तत्रोपवासः-अभक्तार्थः  
 पौषधोपवास इति, इयं व्युत्पत्तिरेव, प्रवृत्तिस्त्वस्य  
 शब्दस्याहारशरीरसत्काराब्रह्मचर्यव्यापारपरि-  
 वर्जनेष्विति, तत्र पौषधोपवासे निरतः-आसक्तः  
 पौषधोप-वासनिरतः (यः) सः। श्रावकस्य चतुर्थी  
 प्रतिमा। सम० १९।  
**पोह**—गोमयं छगणपोहः। पिण्ड० ८३।  
**पोहत्तं**—पृथुत्वम्। भग० १३१। पृथुत्वं-विस्तारः। प्रज्ञा०  
 २९३।  
**पोहत्ति**—पृथुत्वसूत्रं-बहुवचनसूत्रम्। भग० २१८।  
**पोहव्वं**—वित्थारो। निशी० १३९ अ।  
**पौण्डक**—पौण्डजं-यद्वमनितिन्दुकोद्भवं यथा कर्पाससूत्रम्  
 । उत्त० ५७१।

**पौण्डरीक**—षष्ठं महाकुष्ठम्। प्रश्न० १६१।  
 सप्तमहाकुष्ठी पञ्चमः। आचा० २३५।  
**पौरुषघ्नी**—भिक्षाविशेषः। उत्त० २०।  
**प्पिणण**—अर्पणम्। आव० १०३।  
**प्र**—‘प्र’ शब्दः-अनुवृत्तार्थः। जम्बू० ४१५। ‘प्र’ शब्दः  
 आदिकर्मार्थः। जम्बू० २५। ‘प्र’ शब्दः आदिकर्मार्थत्वे।  
 स्था० १४३।  
**प्रकम्पित**—विधूतः, अपनीतः। आव० ५०७।  
**प्रकर**—धान्यस्य मर्दनम्। ओघ० ७५।  
**प्रकरण**—संखडी। ओघ० ४७। जिनवचनमुपादातुं प्रकारः।  
 आव० ६८। प्रकृतं, प्राघूर्णभोजनादिकम्। पिण्ड० १४८।  
 आचा० ३२८।  
**प्रकर्ष**—भावसारम्। दशवै० ११६।  
**प्रकर्षगति**—पारम्पर्यम्। आचा० १७४।  
**प्रकामशायी**—अतिनिद्रः। दशवै० २३५।  
**प्रकारकात्रस्यम्**—कतिचित्पर्यायान्वितम्। उत्तर०  
 ५५५।  
**प्रकाशः**—श्वेतता। सूर्य० ६। ओजः। सूर्य० ७।  
**प्रकाशक्षेत्र**—उदयास्तान्तरं तापक्षेत्रम्। जम्बू० ४५५।  
**प्रकाशदीप**—प्रकाशाय दीपः प्रकाशदीपः। आचा० २४७।  
**प्रकीर्णक**—चामरम्। प्रश्न० ७०।  
**प्रकीर्णकथा**—सा चोत्सर्गकथा, द्रव्यास्तिनयकथा वा,  
 कथायाः चतुर्थो भेदः। सम० २४।  
**प्रकृतिः**—प्रजा। आचा० ११, २८१।  
**प्रकृष्ट**—प्रधानः। सूर्य० ६। सर्वसूक्ष्मः-निरंशः। अनुयो०  
 ६७।  
**प्रेक्षते**—गणयति आलोचयति च। आव० ५२६।  
**प्रेक्षापूर्वकारिता**—। आव० ८५०।  
**प्रक्षेपक**—साधुनामेवार्थाय या वस्त्रस्थापना स। बृह०  
 १०२।  
**प्रगाढा**—प्रकर्षवती। स्था० ४६१।  
**प्रगुणं**—सरलम्। उत्त० १२६।  
**प्रगृहीततरं**—पूर्वस्थानाद्  
 भक्तपरिजेङ्गितमरणरूपात्प्रकर्षेण ग्रहोऽत्र  
 पादपोषगमने, प्रगृहीततरमेतदित्यर्थः। आचा० २९४।  
**प्रगृहीता**—षष्ठी पिण्डैषणा। आचा० ३५७।  
**प्रग्रहः**—रश्मिः। उत्त० ५०७।

प्रचय- कायः। स्था० २१७।  
 प्रचुरा- प्रशस्ता अतिशायिनी वा। स्था० ३३२।  
 प्रजन- प्रसवः। नन्दी० १६१। चिह्नम्। बृह० २४अ।  
 प्रज्ञप्ति- स्वसमयप्ररूपणा। व्यव० २८९। विद्यादेवी  
 नाम-निक्षेपः। ज० ९।  
 प्रज्ञा- स्वबुद्धिः। सूर्य० ३६८। बुद्धिः। स्था० ५१९। प्रकर्षण  
 जायते उत्सर्गापवादः तत्। बृह० १३०अ।  
 प्रज्ञापना- प्रज्ञापनोपाङ्गं तस्यैव प्रथमं पदं च। जीवा०  
 ४१६।  
 प्रज्ञाप्तं- प्रज्ञया भव्यजन्तुभिराप्तं-प्राप्तम्। अनुयो० २।  
 प्रणाला- जिह्विका। जम्बू० २९१।  
 प्रणालिका- रुढिः। जीवा० ८।  
 प्रणिधानं- प्रयोगः। आव० ८३४। प्रणिधानम्। भग० ५०।  
 प्रणिहितेन्द्रिय- पिहितेन्द्रियः। प्रश्न० १६०।  
 प्रतरपरिमण्डलं- विंशतिपरमाण्वात्मकं  
 विंशतिप्रदेशावगाढं च, तच्चैवं-प्राच्यादिषु चतसृषु दिक्षु  
 प्रत्येकं चत्वारश्चत्वारोऽणवः स्थाप्यन्ते विदिक्षु च  
 प्रत्येकमेकैकोऽणुः स्थाप्यन्ते। प्रज्ञा० १२।  
 प्रतरभेद- अभ्रपटलस्येव। स्था० ४७५। अभ्रपटलानामिव  
 यो भेदः। भग० २२४।  
 प्रतारयति- छलति। नन्दी० १५७।  
 प्रति- अनुरूपं-समानम्। नन्दी० ४३।  
 प्रतिकारविधिः- उपायविधिः। नन्दी० १६२।  
 प्रतिकृति- प्रतिमा। आचा० ८०। सदृशः। सूर्य० २६४।  
 प्रतिचारग- प्रतिचारकः। आव० २०९।  
 प्रतिच्छन्दभूतः- सदृशः। नन्दी० १४७।  
 प्रतिच्छन्ना- भूते नवमभेदः। प्रज्ञा० ७०।  
 प्रतिजिह्वा- शरीरावयवः। प्रज्ञा० ४७३।  
 प्रतिजिह्विक- आत्मोपघातकः। सम० ६७।  
 प्रतिज्ञप्त- वैयावृत्यकरणायापरै रुक्तः-अभिहितः।  
 आचा०।  
 प्रतिद्वन्द्वी- प्रतिपक्षी। नन्दी० १५०।  
 प्रतिनियत- प्रतिभक्तम्। प्रज्ञा० ३२९।  
 प्रतिनिर्यातव्य- समर्पणीयम्। व्यव० ३०७आ।  
 प्रतिपत्तिः-  
 सर्वातिशयनिधानमतीन्द्रियार्थोपदर्शनाव्यभिचारि चेदं  
 जिनप्रवचनमित्येवंरूपा प्रतिपत्तिः। सम० १२५। रीतिः।

आव० ४४१। कालः। प्रज्ञा० ३८५। नन्दी० १६७। वात्ता।  
 वारकः। नन्दी० ५१। उपमा। व्यव० २७४।  
 प्रतिपादनता- प्रतिपत्तय इति विग्रहः। सम० १२०।  
 प्रतिबोधक- गृहचिन्तकः। व्यव० २२२अ।  
 प्रतिभा- प्रकाशः। जीवा० १६४। मतिविशेषः। प्रज्ञा० ५९।  
 प्रतिमा- कायोत्सर्गः। आव० १४३।  
 प्रतिमाकल्पिकः- साधुभेदविशेषः। भग० ४।  
 प्रतिमानं- गुञ्जा, वल्लादि। स्था० १९८।  
 सुवर्णादिमानहेतुः गुञ्जादि। जम्बू० २२७।  
 प्रतिमाप्रतिपत्तिः- प्रतिज्ञा। स्था० ३८१।  
 प्रतिरूप- असाधारणं रूपं आकारो यस्य स। सूर्य० २।  
 प्रतिरूपयोगयोजन- औपचारिकविनयविशेषः। उत्त० ५०।  
 प्रतिरूपा- भूतद्वितीयो भेदः। प्रज्ञा० ७०।  
 प्रतिवचन- उत्तरम्। सूर्य० ११।  
 प्रतिविधान- उपायः। नन्दी० ६१।  
 प्रतिविशिष्ट- असाधारणम्। सूर्य० २।  
 प्रतिशठः- प्रतिपक्षी शठः। नन्दी० १५२।  
 प्रतिशब्दः- पडहवाची। नन्दी० १७३।  
 प्रतिशलाकापल्यः- सङ्ख्यापरिणामे द्वितीयः पल्यः।  
 अनुयो० २३७।  
 प्रतिश्रान्तः- विश्रान्तः। बृह० १५आ।  
 प्रतिष्ठा- गाथा निश्चितिश्च। आव० ८०४।  
 प्रतिष्ठानपुरं- विद्यामन्त्रद्वारविवरणे मुरुण्डराजधानी।  
 पिण्ड० १४२।  
 प्रतिसंलीन- गुरुसकाशेऽन्यत्र वा कार्यं विना न  
 यतस्ततश्चेष्टते। उत्त० ३४७।  
 प्रतिसंलीनताप्रतिमा- पञ्चप्रतिमायां चतुर्थी। सम० ९६।  
 प्रतिसेवक- कारणभावेऽपि पञ्चकादीनि  
 प्रायश्चित्तस्थानानि प्रतिसेवते। व्यव० ३११।  
 प्रतिसेवना- सम्यगाराधनविपरीता प्रतिगता वा सेवना।  
 स्था० ३३७।  
 प्रतिसेवनानुलोम्य- आलोचनानुलोम्यः, ये  
 यथाऽऽसेवितः। आव० ७८१।  
 प्रतिसेवमानः- प्रथमभङ्गवर्ती। व्यव० ८आ।  
 प्रतीत्यमहत्- आपेक्षिकम्। दशवै० १००।  
 प्रतोली- नगरद्वारम्। नन्दी० १४९। नगरस्यैव कपाटम्।  
 सम० १३८।

**प्रत्यञ्चा**— ज्या-धनुष्यारोप्यमाणा रज्जुः। भग० १९३।  
जीवादवरिकेति। सूर्य० २२। दवरिका। सूर्य० ४८। जीवा-  
दवरिका। सूर्य० २३३। धनुःसत्का जीवा। उत्त० ३११।  
**प्रत्यवस्था**— समाधानम्। आचा० १२।  
**प्रत्यवस्थान**— प्रतिवचनम्। बृह० १३६ अ। गुरुकथनम्।  
दशवै० २१।  
**प्रत्याख्याताशनादिभोजनं**— सप्तमः शबलः। प्रश्न० १४४।  
**प्रत्याख्यान**— कषायस्य द्वितीयो भेदः। आचा० ९१।  
**प्रत्याख्यानक्रिया**— सूत्रकृताङ्गद्वितीयश्रुतस्कंधे  
तृतीयमम-ध्ययनम्। स्था० ३८७।  
**प्रत्याख्यानत्रय**— संभोगोपकरणाहाराणां प्रत्याख्यानम्।  
उत्त० ५८८।  
**प्रत्याचक्षीत**— अपन्हुवीत। आचा० ४४।  
**प्रत्याचक्षे**— प्रतिषेधस्यादरेणाभिधानं करोमीति। आव०  
४५५।  
**प्रत्यात्मेन्द्रकाणि**— अहमिन्द्राणि। सम० ४३।  
**प्रत्यालीढ**— आलीढाद्विपरीतं स्थानम्, पञ्चस्थाने  
द्वितीयम्। उत्त० १०५। अग्रतो मुखमाधाय दक्षिणमुरुं  
पश्चान्मुखमप-सारयति अन्तरा चापि पादवोन्यं च  
पादास्ततः पूर्वप्रकारेण युध्यते तत्प्रत्यालीढम्। व्यव०  
४६ आ। तृतीयं योध-स्थानम्। आचा० ८९। स्था० ३।  
**प्रत्यावर्त्तः**— नाट्यविशेषः। जम्बू० ४१४।  
**प्रत्युत्पन्न**— लोकरूढम्। स्था० ४९७।  
**प्रत्युपेक्षितं**— आलोकितम्। आचा० ४२८।  
**प्रत्युपेक्षेत**— पर्यालोचयेत्। आचा० ३५१।  
**प्रत्यूषः**— गोषः। आव० ७८१।  
**प्रत्येकबुद्धाः**— प्रतीत्यकं किञ्चित् वृषभादिकं  
अनित्यतादि-भावनाकारणं वस्तु बुद्धाः-बुद्धवन्तः  
परमार्थमिति प्रत्येक-बुद्धाः। स्था० ३३।  
**प्रथमानुयोग**— तीर्थकरादिपूर्वभावादिव्याख्याग्रन्थः। स्था०  
४९१। दृष्टिवादे चतुर्थो भेदः। सम० ४१।  
**प्रदर्शन**— चिह्ननम्। आव० ८३०।  
**प्रदर्शयन्ते**— उपमाप्रदर्शनेन। नन्दी० २१२।  
**प्रदानं**— यः सम्प्राप्तो धनोत्सर्गः, उत्तमाधममध्यमः।  
प्रतिदानं तथा तस्य, गृहीतस्यानुमोदनम्। स्था० १५२।  
**प्रदीपित**— ज्वालितम्। उत्त० ३७८।  
**प्रदेशनिष्पन्न**— द्रव्यप्रमाणे प्रथमो भेदः। स्था० १९८।

**प्रदेशार्थता**— प्रकृष्टो देशः प्रदेशो निरवयवोऽंशः, स  
चासावर्थ-श्चेति प्रदेशार्थः, तस्य भावः प्रदेशार्थता-  
गुणपर्यायाधारा-(रता) अवयवलक्षणार्थतेतियावत्।  
स्था० ११। निरंशदे-शार्थता परमाणुत्वमितिभावः।  
अनुयो० ६७।  
**प्रदेशोदीरणा**— प्राप्तोदयैर्नियतपरिमाणकर्मप्रदेशैः  
सहाप्राप्तो-दयानां नियतपरिमाणानां कर्मप्रदेशानां  
यद्वेदनं सा। स्था० २२१।  
**प्रदोषसमयः**— प्रातःसमयः। जीवा० १९३।  
**प्रद्युम्न**— कृष्णस्य अहमधन्यत्वे दृष्टान्तः। स्था० ४३३।  
**प्रद्धोतः**— गणिकाभिरभयकुमारवञ्चकः। सूत्र० ३२९, ३१३।  
वारत्रकमहर्षेरुपहसिता। बृह० ३०६ आ।  
**प्रद्वेषः**— वैरम्। उत्त० २६५।  
**प्रधानः**— महान् प्रभूतो वा। आव० ५९६।  
**प्रधानक्षत्रिय**— संकरक्षत्रियः-द्विजेन क्षत्रिययोषितो  
जातः। आचा० ८।  
**प्रधानफरक**— वरफलकम्। प्रश्न० ४७।  
**प्रधानाग्र**— सचित्तादि। आचा० ३१८।  
**प्रधावसि**— प्रकर्षेण प्रकृतो वा धावसि। बृह० १९१ आ।  
**प्रपञ्चते**— व्यक्तीकरोति। स्था० ५२०।  
**प्रपञ्चयति**— संसयति विस्तारयति। स्था० ५२०।  
**प्रपञ्चितज्ञः**— विनेयविशेषः। उत्त० ४७। प्रज्ञा० ४२५।  
**प्रपुन्नाटा**— स्वापविबोधवत्तयौषधिः। आचा० ६६।  
**प्रबध्नाति**— ग्रन्थिबन्धं करोति। भग० २०२।  
**प्रभञ्जन**— लोकपालविशेषः। स्था० २०५। रत्नसञ्चयकूट-  
द्वितीयनाम। स्था० २२४।  
**प्रभव**— जम्बूस्वामिशिष्यः परम्परागमवान्। आव० ५७।  
तालोद्घाटिन्यवस्वापिन्यादिभिरुपेतः चौरः। व्यव०  
२४०। चतुर्दशपूर्वी। उत्त० २४०। अनाचीर्णे दृष्टान्तः।  
बृह० १६६ अ।  
**प्रभवा**— प्रभवति। उत्त० ३५२।  
**प्रभविष्णुः**— सहिष्णुः। बृह० १७६ अ।  
**प्रभा**— आकारम्। जम्बू० ३१९।  
**प्रभावति**— उदायनराज्ञी। प्रश्न० ८९।  
**प्रभाविच्छुरितं**— । नन्दी० १६७।  
**प्रभास**— वृत्तवैतादये देवः। स्था० ७१।  
**प्रभूतः**— महान् प्रधानो वा। आव० ५९६।

प्रभूताग्रं- द्वितीयं भावाग्रम्। आचा० ३१८।  
 प्रभूतविटपितार्थ- लब्धार्थः। सूर्य० १९२।  
 प्रमर्द- चन्द्रः मध्येन तेषां गच्छतीत्येवंलक्षणम्। सम० १४।  
 प्रमहंता- परिणतवया। निशी० २६७ अ।  
 प्रमाणं- निश्चितं निर्गमः। स्था० ४३५।  
 स्वाङ्गुलेनाष्टोत्तर-शताङ्गुलोच्छ्रयता। भग० ११९।  
 शास्त्रीयोपक्रमे तृतीयः। आव० ५६। शास्त्रीयोपक्रमे तृतीयः। स्था० ४। स्वलक्ष-णम्। स्था० ४९३।  
 प्रमादनिष्ठ- प्रमादपरः। आव० ५८८।  
 प्रमादबहुलः- प्रमादैर्बहुलो व्याप्तः। उत्त० ३३६।  
 प्रमेयरत्नमञ्जूषा- जम्बूद्वीपप्रजप्तिवृत्तिनाम। जम्बू० १, ८८। जम्बूद्वीपप्रजप्तिवृत्तिः। जम्बू० ४२४।  
 जम्बूद्वीपप्रजप्तिटीका। जम्बू० ५४६। जम्बू० १।  
 प्रमोद- विनयप्रयोगः  
 वन्दनस्तुतिवर्णवादवैयावृत्त्यकरणादिभिः  
 सम्यक्त्वज्ञानचारित्रतपोऽधिकेषु साधुषु  
 पदात्मोभयकृतपू-जाजनितः सर्वेन्द्रियाभिव्यक्तो मनः  
 प्रहर्षः। व्यव० २१७।  
 प्रमोदविजय- गृहविशेषः। जम्बू० २०९।  
 प्रयत्न- आदरः। जम्बू० १९२।  
 प्रयोगमतिसम्पत्- आत्मपुरुषक्षेत्रवस्तुविज्ञानात्मिका।  
 उत्त० ३९।  
 प्रयोजन- करणम्। नन्दी० १४४।  
 प्रलंब- प्रकर्षेण लंबते प्रलंबं मूलम्। बृह० १३५ अ। मूलम्।  
 बृह० ३५ अ।  
 प्रलप्तं- भाषणम्। राज० ५।  
 प्रलयीभूता- नष्टाः। उत्त० २६३।  
 प्रलेपः- चित्रादौ। आव० ८८।  
 प्रवादः- किंवदन्ती। नन्दी० ६१। संलापः। आव० २४१।  
 प्रवाल- वंशः, आवलिका। जम्बू० २५८। सन्तानः। आव० ६०१। आचा० ३४१। वंशः, आवलिका। जम्बू० १६६।  
 प्रवीचारः- परिचारः मैथुनोपसेवनम्। प्रजा० ५४९।  
 प्रवेशः- आगमनम्। स्था० २९४।  
 प्रवाजनाचार्य- दीक्षादाताचार्यः। स्था० २९९।  
 प्रवाजयति- समस्तं लोचं करोतीति भावः। व्यव० ६९।  
 प्रवाजयितुं- सामायिकार्पणतः। व्यव० २१९ अ।

प्रश्न- अङ्गुष्ठादिप्रश्नविद्या, विद्याविशेषश्च। प्रश्न० १। संशयापत्तौ अशंसयार्थं विद्वत्सन्निधौ  
 स्वविवक्षासूचकं वाक्यम्। आव० ६८।  
 प्रश्नवाहन- कुलविशेषः। अनुयो० २७१।  
 प्रश्नव्याकरण- प्रश्नाः अङ्गुष्ठादिप्रश्नविद्या  
 व्याक्रियते अभिधीयन्तेऽस्मिन्निति। प्रश्न० १।  
 प्रश्रवण- मूत्रम्। स्था० ३४३। प्रजा० १०५।  
 प्रश्रेणि- नाट्यविशेषः। जम्बू० ४१४।  
 प्रसङ्ग- आसेवनारूपः। आव० ६६०।  
 प्रसभं- प्रसभम्। ओघ० १२६।  
 प्रसरं- समन्ततः। पिण्ड० १३६।  
 प्रसृता- जङ्घा। प्रश्न० ७०।  
 प्रसेनजित्- श्रेणिकपिता। नन्दी० १५०।  
 प्रस्खलन्ति- गत्या प्रपतन्ती। स्था० ३२८।  
 प्रस्फोटका- चक्षुषा निरूप्य परावर्त्य। स्था० ३६२।  
 प्रहरणं- अस्त्रम्। भग० ९४।  
 प्रहसनिका- हासः। प्रश्न० १३९।  
 प्रहेणक- फलिकम्। स्था० १४८। औप० ३९।  
 प्रहेलिका- कुहेटका। वक्रोक्तिविशेषरूपा। बृह० २१३ अ।  
 प्रहेलिकादानं- क्रीडादानम्। उत्त० ४७।  
 प्रन्हुत- प्रप्लुतम्। प्रश्न० १९।  
 प्रांशुत्व- महाकायः। सूत्र० २७७।  
 प्राकारकोष्ठकं- अट्टालकम्। उत्त० ३११।  
 प्राकृत- सामान्यः। भग० ८।  
 प्राग्विदेह- निषधपर्वते चतुर्थकूटम्। स्था० ७२।  
 प्राचुर्य- उत्पूरम्। प्रश्न० ४३।  
 प्राजनकः- तोत्रम्। उत्त० ६२। तोत्रम्। उत्त० ५४८।  
 प्राजिता- सारथिः। भग० ३२२।  
 प्राजाप्त- प्राजात्-तीर्थकरादाप्तं प्राजाप्तं गणधरैरिति  
 गम्यते, अथवा प्राजैः गणधरैराप्तं प्राजाप्तम्। नन्दी० ६५।  
 प्राणतकल्प- देवलोकः। आव० १७७।  
 प्राणापानपर्याप्ति- यया पुनरुच्छ्वासप्रायोग्यानि  
 दलिकान्या-दायोच्छ्वासरूपतया परिणमय्यालम्ब्य  
 मुञ्चति सा। बृह० १८४ अ।  
 प्रातःसमय- प्रदोषसमयः। जीवा० १९३।  
 प्रादोषिका- सूत्रपौरुषीम्। ओघ० २२।

प्रादोशिकादिः— कालविशेषः। उत्त० ५८३।  
 प्राप्तख्यातिः— लब्धशब्दः। प्रश्न० ७१।  
 प्राप्ति— देशान्तरविषया पर्यायान्तरविषया च। प्रज्ञा०  
 ३२८।  
 प्राबल्येन मुक्तः— उन्मुक्तः पृथग्भूतः। आव० ५०८।  
 प्राभूतं— पूर्वान्तरगतः श्रुतविशेषः। आव० ६८। प्राभूतं—  
 इष्टः श्रुतस्कंधः। व्यव० ७८ अ।  
 प्राभृतिका— दानार्थं कल्पिता वसतिरिह गृह्यते। आचा०  
 ३६९। भिक्षा। आव० ४७८।  
 प्रायश्चित्त— दानादित्रिप्रकारं प्रायश्चित्तम्। बृह० ४८  
 आ।  
 प्रायसः— उत्सन्नं। आव० २८५।  
 प्रायिकत्वं— कादाचित्कत्वम्। स्था० ५६।  
 प्रायोगिक— कुसुम्भरागादिः, नोकर्मद्रव्यरागभेदः। आव०  
 ३८७।  
 प्रार्थयति— निरुपयति। ओघ० ७९।  
 प्रार्थित— लब्धुमाशंसितः। ज्ञाता० ३४।  
 प्रार्थिका— प्रार्थिका मातृमातुः पितृमातुर्वा माता। दशवै०  
 २१६।  
 प्रावचनः— कालापेक्षया बहवागमः पुरुषः। भग० ६१।  
 प्रावीण्यं— कुशलत्वम्। उत्त० १४३।  
 प्रासाद— उच्छ्रितं गृहम्। आव० ८२६।  
 प्रासादबहुल— प्रासादीयः। सूर्य० २।  
 प्राहारिकपुरुष— रक्षकपुरुषः। उत्त० ३५१।  
 प्राहुणक— प्रादेशः। उत्त० २७५।  
 प्रियङ्कर— आधाकर्मरहितशुद्धाहारगवेषकः क्षपकः।  
 पिण्ड० ७५।  
 प्रियङ्गु— पुष्पविशेषः। जीवा० १३६।  
 प्रियङ्गुरुचिका— गोचरविषयोपयुक्ततायां गुणसेनपत्नी।  
 पिण्ड० ७८।  
 प्रियङ्गुलतिका— गोचरविषयोपयुक्ततायां  
 गुणचन्द्रपत्नी। पिण्ड० ७८।  
 प्रियङ्गुसारिका— गोचरविषयोपयुक्ततायां  
 गुणशेखरपत्नी। पिण्ड० ७८।  
 प्रियङ्गुसुन्दरी— गोचरविषयोपयुक्ततायां गुणचूडपत्नी।  
 पिण्ड० ७८।  
 प्रियमति— परग्रामदूतीत्वदोषविवरणे धनदत्तस्त्री।

पिण्ड० १२७।

प्रीति— बाह्या प्रतिबन्धः। उत्त० ३९४।  
 प्रीतिदानं— यत्पुनः स्वनगरे भगवदागमननिवेदकाय  
 नियुक्ताय वा हर्षप्रकर्षाधिरूढमानसैर्दीयते तत्। बृह०  
 १९९ अ। आव० २३०।  
 प्रेतभूमिः— श्मशानम्। उत्त० ६६५।  
 प्रेत्य— मृत्वा पुनर्जन्म-परलोकः। आव० २४२।  
 प्रेत्यसञ्ज्ञा— प्राक्तनी घटादिविज्ञानसञ्ज्ञा। आव० २४३।  
 प्रेरयति— विनयति अतिवाहयति च। प्रश्न० ६४।  
 प्रेहा— प्रेक्ष्य। निशी० २२ आ।  
 प्रोथः— घ्राणम्। जम्बू० २३७।  
 प्रोषितः— विदेशप्राप्तः। नन्दी० १६३।  
 प्रोषितपिता— श्रोतेन्द्रियनष्टः। भक्त०।

- X - X - X -

। इति तृतीयो विभागः समाप्तः ।

नमो नमो निम्मलदंसणस्स  
पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागरगुरूभ्यो नमः

# आगम-सागर-कोषः ३

[मूल शब्दसंकलनकर्ता:- पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज]



(प्राकृत-संस्कृत-शब्द एवं तेषाम् ससंदर्भ-व्याख्या सह)

कोष-रचयिता

## मुनिश्रीदीपरत्नसागरजी महाराज

[M.com. \_M.Ed. \_Ph.D. \_श्रुतमहर्षि]